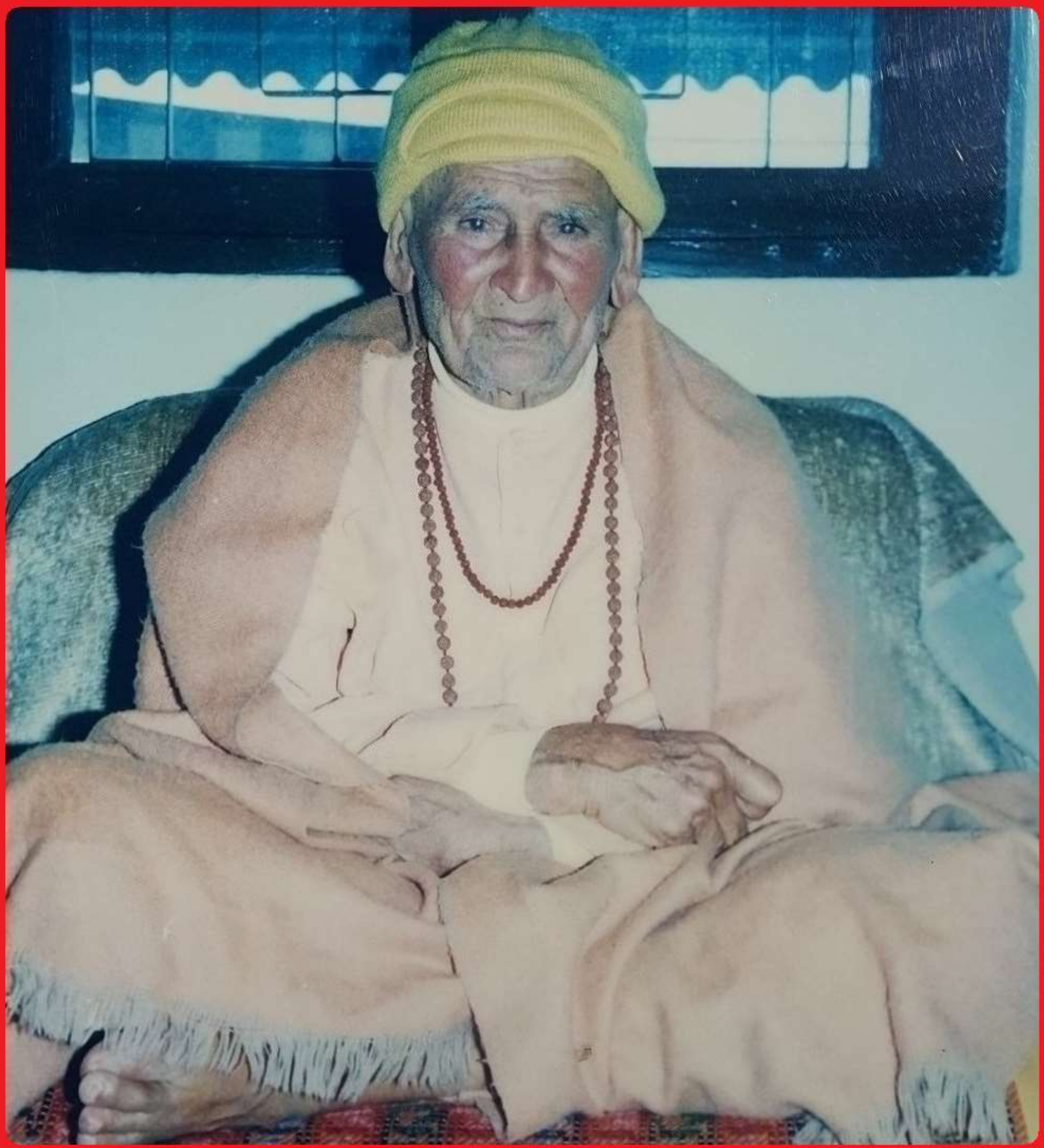


ब्रह्मज्ञानी परमपूज्य श्री १००८ खप्तडबाबा-तत्पूरुषका

करकमल बाट पोखिएको अमृतको ग्रन्थ

"आरोग्य-विज्ञान"

विषय सूची

प्रथम खण्ड

सि.नं.	विषय	पृष्ठ
१.	आयुर्वेदका मूल सिद्धान्तहरू	१
२.	रोग परीक्षा	३
३.	दोष, धातु र मलहरूको वृद्धि एवं क्षयका लक्षणहरू	२०
४.	रसहरूको परिचय	२३
५.	रसहरूका गुणहरू	२५
६.	द्रव्यहरूका गुणहरू	२८
७.	अहितकारी संयोगका कारण विरुद्ध द्रव्यहरू	३०
८.	मनुष्यमात्रले याद राख्न योग्य कुराहरू	३२
९.	परिभाषाहरू	३६
१०.	औषधी सम्बन्धी नियमहरू	४२
११.	प्रतिनिधि द्रव्यको प्रयोग	४४
१२.	औषधी परीक्षा	४८
१३.	औषधीहरूको दुष्प्रभाव कम पार्ने (मारक) द्रव्यहरू	५०
१४.	साधारण औषधीहरूको गुण	५२
१५.	विभिन्न उपयोगी अर्कहरू	८४
१६.	विभिन्न उपयोगी द्रव्यहरूको शोधन	८५
१७.	विशेष उपयोगी पदार्थहरू	८६
१८.	रोग-विज्ञान	८८
१९.	अष्टविध परीक्षा	८९
२०.	रोग र परिणाम	१०३

द्वितीय खण्ड

सि.नं.	विषय	पृष्ठ
१.	**ज्वर रोग (ज्वरो सम्बन्धी रोगहरू)** ..... (निज ज्वर, वात ज्वर, पित्त ज्वर, कफ ज्वर, सन्निपात ज्वर, आगन्तुक ज्वर, साम वा आम ज्वर, विषम ज्वर, प्रलेपक ज्वर, वातबलासक ज्वर, शीत ज्वर, मलेरिया ज्वर, नरसिंह ज्वर वा अर्ध नारीश्वर ज्वर, जीर्ण ज्वर, मसूरिका ज्वर, सूतिका ज्वर, शीतला ज्वर, निमोनिया ज्वर, प्रवाहिका (Dysentry), अतिसार आदि)	११२
२.	**ग्रहणी रोग (पाचन विकार संबन्धी रोग)** ..... (वातज ग्रहणी, पित्तज ग्रहणी, कफज ग्रहणी, त्रिदोषज ग्रहणी, संग्रहणी, घटीयन्त्र ग्रहणी आदि)	१६१
३.	**अर्श रोग (अल्काई)** ..... (वातार्श, पित्तार्श, श्लेष्मार्श वा कफज अर्श, त्रिदोषज अर्श, रक्तार्श, सहज अर्श आदि)	१६६
४.	**अग्निमान्द्य रोग (मन्दाग्नि)** ..... (विषम अग्नि, तीक्ष्ण अग्नि, मन्दाग्नि आदि)	१७४
५.	**अजीर्ण रोग (अपच)**..... (आम अजीर्ण, विदग्ध अजीर्ण, विष्टब्ध अजीर्ण, रसशेष अजीर्ण, दिनपाकी अजीर्ण, प्राकृत अजीर्ण आदि)	१७७
६.	**विसूचिका रोग (हैजा)**	१८०
७.	**अलसक रोग (अपचको प्रकार)**	१८४
८.	**कृमि रोग (जुका, चुर्ना आदि)** ..... (अङ्कुशमुख कृमि, गण्डूपद कृमि, स्फीत कृमि (फिते जुका) सूत्र वा तन्तु कृमि आदि)	१८५
९.	**अरुचि रोग (नरुच्ने)**.....	१९१
१०.	**छर्दि रोग (वमन)**	१९३
११.	**तृष्णा रोग (प्यास)**	१९५

१२. **अम्लपित्त रोग (ग्याष्ट्रिक)** १९८
(उर्ध्वग अम्लपित्त, अधोग अम्लपित्त, वाताधिक अम्लपित्त, कफाधिक अम्लपित्त, कफपित्त रोग आदि)

१३. **शूल रोग (तीव्र पेट दुखाई)** २०२
(परिणाम शूल, अन्नद्रव शूल, पार्श्व शूल, कुक्षिशूल आदि)

१४. **उदावर्त रोग (वायुसंबन्धी पेटको विकार)** २१५
(मलजन्य उदावर्त, मूत्रज उदावर्त, डकार जनित उदावर्त, छिक्का जनित उदावर्त, वमन जनित उदावर्त, वीर्य जनित उदावर्त, रुक्षादि अपथ्य जनित उदावर्त आदि)

१५. **आनाह रोग (कब्जियत)** २२०
(आमज आनाह, पुरीषज आनाह आदि)

१६. **गुल्मरोग (गानुगोला)** २२२

१७. **उदर रोग (पेट संबन्धी रोग)** २३१

१८. **यकृत् रोग (कलेजो संबन्धी रोग)** २३९

१९. **राजयक्ष्मा (क्षयरोग)** २४२

२०. **श्वास रोग (दम, धम्की)** २४६
(महाश्वास, ऊर्ध्वश्वास,छिन्नश्वास, तमकश्वास आदि)

२१. **कास रोग (खोकी)** २५४
(वातज, पित्तज, कफज, क्षतज र क्षयज कास, बालकहरूको लहरे खोकी आदि)

२२. **हिक्का रोग (बाङुकी)** २६९
(अन्नजा हिक्का, यमला हिक्का, छुद्रा हिक्का, गंभीरा हिक्का, महती हिक्का आदि)

२३. **स्वरभेद (बोली बस्नु)** २७१

२४. **हृदय रोग (मुटु संबन्धी)** २७४

२५. **उरोग्रह रोग (छातीभारी हुने रोग)** २७७

२६. **रक्तपित्त रोग (मुख, नाक आदिबाट रगत जाने रोग)** २७८

२७. **पाण्डु रोग (रक्ताल्पता)** २८२

२८. **कामला रोग (जण्डिस)** २८५
(कोष्ठाश्रय कामला, शाखाश्रय कामला, कुम्भ कामला आदि)

२९. **प्रमेह रोग (दूषित पिसाब संबन्धी)** २८८
(इक्षुमेह, सिकतामेह, मूत्रकृच्छ, उदकमेह, मधुमेह (डाइबिटिज), सुरामेह आदि)
३०. **स्वप्न दोष (रात्रीस्खलन)** ३०९
(शुक्रदोष वा धातु रोग, नपुंसकताको चिकित्सा, वीर्यस्तम्भन गर्ने औषधीहरू, आनन्ददायक लेप आदि)
३१. **सूजाक रोग (गोनोरिया)** ३१७
३२. **उपदंश वा आतशक रोग (भिरिङ्गी)** ३२३
३३. **मूत्रकृच्छ रोग (कष्टका साथ पिसाब हुने रोग)** ३२८
(आगन्तुक वा शल्यज मूत्रकृच्छ, पुरीषज मूत्रकृच्छ, अश्मरीज मूत्रकृच्छ, शुक्रज मूत्रकृच्छ आदि)
३४. **मूत्राघात (पिसाब रोकिने रोग)** ३३३
३५. **अश्मरी रोग (पत्थरी)** ३३४
३६. **मेदोरोग (मोटोपना)** ३३९
(शरीरको दुर्गन्ध र पसिना हटाउने उपायहरू, शीतका कारण हात खुट्टामा आउने पसिना हटाउने उपाय आदि)
३७. **काश्र्य रोग (दुब्लोपना)** ३४२
३८. **वातव्याधि (वातरोग)** ३४३
(गद्गदत्व, मूकत्व, मिन्मिनत्व, प्रलाप, रसाज्ञान, मन्यास्तम्भ, अंसशोष, अववाहुक, विश्वाची, क्रोष्टकशीर्ष, खञ्जता (लंगडो), कलायखञ्ज, वातकण्टक, खल्ली, पाददाह, पादहर्ष, कुब्जत्व, तन्द्रा, कम्पवात, आक्षेपक, अपतन्त्रक, अपतानक, दण्डापतानक, धनुस्तम्भ, अन्तरायाम, बाह्यायाम आदि)
३९. **पक्षाघात (प्यारालाइसिस)** ३४८
(अर्दित (अनुहार टेढो हुने) रोग, सर्वाङ्ग वात, गृध्रसी, उर्ध्ववात, आध्मान, प्रत्याध्मान, वाताष्ठीला, प्रत्यष्ठीला, तूनी, प्रतितूनी, मूत्र ग्रह, जिह्वास्तम्भ, हनुग्रह, जृम्भा, मूत्र निग्रह, त्रिकशूल, सर्वाङ्गवात, बहुमूत्रता आदि)
४०. **वातरक्त रोग (दूषितरक्तबाट हुने वातरोग)** ३७८
४१. **उरुस्तम्भ रोग (तिघ्रा बढी दुख्ने रोग)** ३८६
४२. **आमवात रोग (जोर्नी वात)** ३८९

४३. **मूर्च्छा रोग (बेहोसी)** ३९५
(रक्तज मूर्च्छा, मद्यज मूर्च्छा, विषज मूर्च्छा, संन्यास रोग, भ्रमरोग, तन्द्रा आदि)

४४. **मदात्यय (मद्यपानबाट हुने रोग)** ४०१

४५. **दाह रोग (शरीर पोल्ने)** ४०३
(पित्तज दाह, रक्तज दाह, तृष्णानिरोधज दाह, रक्तपूर्णकोष्ठज दाह, धातुक्षयज दाह, क्षतज दाह, मर्माभिघातज दाह आदि)

४६. **उन्माद रोग (पागलपन)** ४०६
(विषज उन्माद, भूतोन्माद, देवग्रहाविष्ट, दैत्याविष्ट, गन्धर्व, यक्ष, पितृग्रह, सर्पग्रह, राक्षस ग्रह, ब्रह्मराक्षस पीडितको लक्षण र उपचार आदि)

४७. **अपस्मार रोग (छारे रोग)** ४१५

४८. **योषापस्मार (हिस्टिरिया)** ४२०

४९. **शोथ रोग (जिउ सुनिने रोग)** ४२२
(अभिघातज शोथ, विषज शोथ आदि)

५०. **वृद्धि रोग (अण्डकोष आदि फुल्ने रोग)** ४२६
(रक्तज वृद्धि, मेदोज वृद्धि, मूत्रज वृद्धि, अन्त्र वृद्धि, एकशिरा तथा वातशिरा, अण्डकोश वृद्धि आदि)

५१. **गलगण्ड रोग (गलगाँड)** ४३१

५२. **गण्डमाला र अपची रोग (कण्ठमाला र गाँठा पाक्ने रोग)** .. ४३३

५३. **ग्रन्थि रोग (गाँठो)** ४३४
(श्लैष्मिक ग्रन्थि, मेदोज ग्रन्थि, सिराज ग्रन्थि आदि)

५४. **अर्बुद रोग (क्यान्सर)** ४३५

५५. **श्लीपद रोग (हात्तिपाइले)** ४३६

५६. **विद्रधि रोग (पिलो)** ४३८
(रक्तज विद्रधि, आगन्तुज विद्रधि, अन्तर्विद्रधि, स्तन विद्रधि (थुनेलो) आदि)

५७. **व्रणशोथ र व्रण (फोडा र घाउ)** ४४१
(रक्तज व्रण, दष्ट व्रण, शुद्ध व्रण, आगोले पोलेको घाउ आदि)

५८. **नाडीव्रण (भित्रसम्म जाने घाउ)** ४४५

५९. भगन्दर रोग (गुदद्वारमा हुने नाडी व्रण) ४४७

६०. भग्न (हाड भाँचिनु)..... ४४९

(काण्ड भग्न (Fracture), सन्धि भग्न आदि)

६१. कुष्ठ रोग (कोर) ४५१

(कापाल कुष्ठ, औदुम्बर कुष्ठ, मण्डल कुष्ठ, ऋष्यजिह्व कुष्ठ, पुण्डरिक कुष्ठ, सिद्ध कुष्ठ, काकणक कुष्ठ, एक कुष्ठ, चर्म कुष्ठ, किटिभ कुष्ठ, विपादिका कुष्ठ, अलसक कुष्ठ, दद्रुमण्डल (दाद) कुष्ठ, चर्मदल कुष्ठ, पामा (लुतो) कुष्ठ, कच्छू कुष्ठ, विस्फोट कुष्ठ, शतारु कुष्ठ, विचर्चिका कुष्ठ, उकवत, श्वित्र र किलास आदि)

६२. शीतपित्त (उदर्द, कोठ, उत्कोठ) रोग (चाला डाबर उठ्ने रोग) ४६०

६३. स्नायुक रोग (नाडीव्रण जस्तै फोका हुने रोग) ४६२

६४. विस्फोटक रोग (शरीरमा फोका उठ्ने रोग) ४६२

६५. क्षुद्र रोगहरू (अवशिष्ठ विभिन्न रोगहरू) ४६४

(व्यङ्ग (कालो पोतो), मुखदूषिका (डण्डिफोर), मषक (मुसा), तिलकालक (कोठी), इन्द्रलुप्त (केश झर्ने रोग), अरुंषिका (कपालमा हुने खटिरा), वृषण कच्छू (अण्डकोष वरिपरिको काछ), कक्षा (कखौरी), दारुणक रोग (चायाँ) आदि)

तृतीय खण्ड

सि.नं.	विषय	पृष्ठ
१.	मुखरोग (मुखको रोग)	४६९
	(मुखरोग, ओठको घाउ, दाँत संबन्धी रोग, बालकहरूको दाँत दुखाई, अपूर्व दन्त मञ्जन, जिभ्रो संबन्धी रोग, तालु संबन्धी रोग आदि)	
२.	कण्ठरोग (घाँटीका रोग)	४७२
३.	कर्णरोग (कानका रोग)	४७३
	(कानको दुखाई, कान चिलाएमा, कानमा किरा पसेमा, कानको घाउ, बहिरोपनमा आदि)	
४.	नासारोग (नाकका रोग)	४७६
५.	नेत्ररोग (आँखा संबन्धी रोग)	४७७

(रतन्धो भएमा, आँखा र परेला चिलाएमा, आँखामा फुलो आदि भएमा,
मोतिया विन्दु, नेत्र ज्योति बढाउने उपायहरू आदि)

६. **शिरोरोग (टाउको संबन्धी रोगहरू)** ४८४

(रक्तज शिरोरोग, क्षयज शिरोरोग, कृमिज शिरोरोग,
सूर्यावर्त शिरोरोग, अनन्तवात शिरोरोग, अर्धावभेदक
(आधा टाउको दुख्ने) शिरोरोग, शंखक शिरोरोग आदि)

७. **स्त्रीरोग (महिला संबन्धी सामान्य रोग)** ४९०

(प्रदर रोग, असाध्य प्रदर, शुद्ध रज, मासिक स्राव आदि)

८. **योनिरोग (महिलाको जननेन्द्रिय संबन्धी रोगहरू)** ४९५

(उदावर्ता, वन्ध्या, विप्लुता, परिप्लुता, वातला, लोहित क्षया, वामिनी,
प्रस्रंसिनी, पुत्रघ्नी, पित्तला, अत्यानन्दा, कर्णिनी, अचरणा, अतिचरणा,
श्लेष्मला, षण्ढी, अण्डली, विवृता, सूचीवक्त्रा, त्रिदोषजा, योनि संकोचन योग,
रोमनाशक औषधी, मासिक धर्म जारी गर्ने औषधी आदि)

९. **बन्ध्यत्व (बाँझी हुनु)** ५०४

(वीर्यको परीक्षा, वीर्य शुद्धि, रजशुद्धि, गर्भप्रद औषधी, गर्भरहेको लक्षण,
गर्भनिरोधक औषधीहरू, गर्भिणीको रोग, गर्भस्राव र गर्भपात,
गर्भको स्थानान्तरण, शीघ्रप्रसव गराउने उपाय, पेटभित्र मृत बालकका
पहिचान आदि)

१०. **सूतिका रोग (सुत्केरी संबन्धी रोगहरू)** ५१३

(मक्कल शूल, स्तन थुनेलो भएमा, दूध संबन्धी रोगहरू,
दूषित दूधको पहिचान, दूध बढ्ने उपायहरू आदि)

११. **बालरोग (बालकका रोग)** ५१६

(तालुकण्टक रोग, महापद्मक रोग, कुकूणक रोग,
नाभितुण्डी रोग, गुदपाक, अहिपूतन, अजगल्लिका,
पारगर्भिक, दन्तोद्भेदजन्य रोगहरू, दूधको वमन,
मुखस्राव र मुख पाक, पेटको रोग, माटो खाने बानी भएमा,
अजीर्ण वा अपचमा, बालकहरूको अतिसारमा,
बढी तिर्खा लाग्ने भएमा, दिसा रोकिएमा, हिक्का रोगमा,
खोकीमा, निमोनिया भएमा, बालकको मूत्राघातमा,
सुकेनाश भएमा, घाउ भएमा, नहरू वा बाला भएमा,
बिबिरा भएमा, लुतो भएमा, ओठ फुटेमा, पैताला फुटेमा,
कपालमा जुम्रा भएमा, आँखाका रोगमा, रतन्धो भएमा,

बहिरो भएमा, दाँत निस्कन गाह्रो भएमा,
बालकले दाँत कटकटाएमा, ताते बोली भइरहेमा,
मुबारकी रोगमा, पेट ठूलो भएमा, लू लागेमा,
कानको दुखाइमा, बालकको डर र रोदन रोक्न,
बच्चा छिटो बढ्ने उपाय, बालकलाई बलियो पार्ने उपाय आदि) ·

१२. **विषजन्य रोग (विषको प्रभावबाट हुने रोग)** ५२६

(विषको उत्पत्ति, स्थावर विषका अधिष्ठानहरू,
जङ्गम विषका अधिष्ठानहरू, कन्दविषहरूको सेवनबाट
हुने रोगका लक्षणहरू, स्थावर विषको लक्षण, उप विषहरू,
कृत्रिम विष, सामान्य विषनाशक योगहरू आदि)

१३. **स्थावर (खनिज एवं वनस्पति संबन्धी) विषको लक्षण र चिकित्सा** ... ५२९

(वत्सनाभ विष, संखिया विष, आँकको विष, सिउँडीको विष,
लाङ्गलीको विष, करवीरको विष, धतुरोको विष, रातीगेडीको विष,
भलायोको विष, भाँगको विष, जयपालको विष, अफिमको विष,
कुचिलाको विष, रक्सीको नशा, पारोको विष, हरितालको विष,
गर विष आदिको विषजन्य रोग र उपचार)

१४. **जङ्गम (विषालु जीव संबन्धी) विषको लक्षण र चिकित्सा** ... ५३६

(सर्प, बिच्छी, मुसो, लामखुट्टे, खजुरो, कमिलो, बिरालो, न्याउरीमुसा,
मानिस, माउसुली, कुकुर, उडुस, बाघ, ब्वाँसो, भालू आदिको
विषजन्य रोग र उपचार)

परिशिष्ट - १ ..... ५४९

(अंग्रेजी (डाक्टरी) तौलहरू (तुलनात्मक))

परिशिष्ट - २ ..... ५५०

(जडीबुटीहरूका संस्कृत, देशी (हिन्दी) र नेपाली नामहरू)

परिशिष्ट - ३ ..... ५५४

(यस ग्रन्थमा प्रयुक्त केही शब्दहरूको अर्थ)

परिशिष्ट - ४ ..... ५७०

(ALPHABETICAL LIST OF MEDICINAL PIANTS....)

परिशिष्ट - ५ ..... ५८०

(बाबाको स्वहस्तलिखित आरोग्य विज्ञानको उर्दू पाण्डुलिपिबाट
उद्धृत गरिएको केही अंश)

ॐ श्री गुरुपरमात्मने नमः

आरोग्य विज्ञान

प्रथम खण्ड

१. आयुर्वेदका मूल सिद्धान्तहरू

शरीर, इन्द्रिय, मन र आत्माको संयोग वा मिलनको अवस्थालाई आयु भनिन्छ । जुन शास्त्रमा आयुसम्बन्धी ज्ञान निहित हुन्छ र जसको ज्ञानबाट आयु प्राप्त हुन्छ त्यसलाई आयुर्वेद भनिन्छ । अथवा जसमा आयुका लागि हित गर्ने र अहित गर्ने पदार्थको वर्णनका साथै रोगको निदान एवं शमनको वर्णन गरिन्छ, त्यसलाई विद्वान्हरूले आयुर्वेद भन्छन् ।

आयुर्वेदको उत्पत्तिबारे अनेकौं विद्वान्हरूले तर्क गरे र अझै पनि गर्दैछन् तर वास्तविक सफलता आजसम्म कसैले पाएको छैन, सबैको मतमा एकता पनि छैन । वेदहरूमा आयुर्वेदको वर्णन पाइन्छ । वेदहरू अनन्त मानेको खण्डमा आयुर्वेदलाई अनन्त मान्न सकिन्छ ।

यसको परम्परा ब्रह्माबाट प्रारम्भ हुन्छ । ब्रह्माले आयुर्वेदको सार-सर्वस्व लिएर एउटा ग्रन्थ "ब्रह्मसंहिता" नामको रचना गरे । जुन अहिले अप्राप्य छ । यसपछि ब्रह्माजीले संसारको उपकारका लागि दक्ष प्रजापतिलाई आयुर्वेदको शिक्षा दिए । दक्ष प्रजापतिले दुवै अश्विनीकुमारहरूलाई यसको शिक्षा दिए । अश्विनीकुमारहरूबाट इन्द्रले यो विद्या सिके । इन्द्रबाट आत्रेय मुनिले ग्रहण गरे । उनीबाट अग्निवेश, भेल, हारीत आदिलाई शिक्षा दिइयो । फेरि उनीहरूले आयुर्वेदमा पारङ्गत भएपछि आफ्नो आफ्नो नामबाट बेग्लाबेग्लै ग्रन्थहरूको रचना गरे - अग्निवेशतन्त्र, भेलतन्त्र आदि । अग्निवेश, हारीत आदि ऋषिहरूको सार मर्म लिएर तथा आफ्नो तर्फबाट केही थपघट गरेर चरक आचार्यले आफ्नो नामको एक ग्रन्थ रचे जुन आज चरक संहिता नामले प्रसिद्ध छ, भनिन्छ -

"निदाने माधवः श्रेष्ठः सूत्रस्थाने तु वाग्भटः ।
शारीरे सुश्रुतः प्रोक्तः चरकस्तु चिकित्सिते ॥"

(रोगहरूको निदानको वर्णन गर्ने व्यक्तिका रूपमा माधव श्रेष्ठ छन्, सूत्रस्थानको विषयको वर्णनमा वाग्भट श्रेष्ठ छन्, शारीर स्थानको वर्णनको लागि सुश्रुत श्रेष्ठ छन्, चिकित्सा विषयको वर्णनमा चरक श्रेष्ठ छन् ।)

चरकपछि सुश्रुतको स्थान छ । उनी महात्मा विश्वामित्रका छोरा थिए । उनले आफ्ना पिताको आज्ञा लिएर प्राणीहरूको उपकार निम्ति एकसय जना ऋषिपुत्रहरूका साथ काशी गएर काशीराज दिवोदासबाट आयुर्वेदको ज्ञान प्राप्त गरेका थिए । काशीराज दिवोदास भगवान् धन्वन्तरिका अवतार थिए र इन्द्रको आज्ञाले यस लोकमा जन्म लिएका थिए । काशीराज दिवोदासले सबै ऋषिपुत्रहरूलाई आयुर्वेदको शिक्षा दिए । ती ऋषिपुत्रहरूमध्ये सुश्रुत अत्यन्त प्रतिभाशाली थिए । उनले आफ्नै नामबाट सुश्रुत ग्रन्थ लेखे जसमा शल्यक्रियालाई धेरै राम्रोसँग वर्णन गरिएको छ ।

चरक र सुश्रुतपछि वाग्भटको स्थान छ । वाग्भट महाभारतकालीन थिए । उनी महाराज युधिष्ठिरका प्रधान वैद्य थिए भनिन्छ । उनले चरक र सुश्रुत ग्रन्थलाई आधार बनाएर आयुर्वेदको सुन्दर ग्रन्थ लेखे जसलाई अष्टाङ्गहृदय भनिन्छ । यस ग्रन्थलाई वाग्भट पनि भनिएको छ । चरक, सुश्रुत र वाग्भट यी तीनद्वारा लिखित तीन ग्रन्थहरूलाई वृद्धत्रयी वा बृहत्त्रयी पनि भनिन्छ ।

वाग्भटपछि माधवनिदानको स्थान छ । यसका लेखक माधवकर हुन् । माधवनिदान सातौँ शताब्दीको रचना हो । यसमा रोगहरूको परिचय दिइएको हुनाले यसको नाम रोगविनिश्चय पनि छ । माधव निदानपछि वंगसेनको स्थान छ । यसका रचयिता विक्रम संवत्को बाह्रौँ शताब्दीका हुन् । उनले चरक, सुश्रुत र वाग्भटको आधारमा लेखेको ग्रन्थ वंगसेन नामले प्रसिद्ध छ । उनको चिकित्सा पद्धति उत्तम छ ।

वंगसेनपछि शार्ङ्गधरको स्थान छ । उनको समय तेह्रौँ शताब्दीको पूर्वार्ध मानिएको छ । उनले शार्ङ्गधर संहिता भन्ने ग्रन्थ लेखेका छन् । त्यस ग्रन्थमा वर्णित योगहरू परीक्षित हुन् ।

शार्ङ्गधरपछि भावप्रकाशको स्थान छ । यसका रचयिता भावमिश्रको समय सोह्रौँ शताब्दी हो । भावप्रकाशको निघण्टु भागमा महत्त्वपूर्ण सामग्री पाइन्छ ।

माधवनिदान, शार्ङ्गधरसंहिता र भावप्रकाशलाई लघुत्रयी भनिन्छ ।

यी ग्रन्थरत्नहरू बाहेक चक्रदत्त, वैद्य विनोद, भैषज्यरत्नावली, लोलिम्बराजकृत वैद्यजीवन, आयुर्वेद विज्ञान आदि ग्रन्थ पनि उत्तम छन् ।

आयुर्वेदको विकास भारतमा भएर त्यसको प्रचार विश्वका विभिन्न देशहरूमा भएको हो । विभिन्न देशहरूमा त्यहाँको परिस्थिति अनुसार परिवर्तन भएर अनेक किसिमका चिकित्सापद्धतिहरूको विकास भएको हो ।

२. रोग परीक्षा

केही उपयोगी कुराहरू

रोगको परीक्षा गर्दा रोग साध्य वा असाध्य कस्तो हो विचार गरेर मात्र चिकित्सा सुरु गर्नुपर्दछ, होइन भने असाध्य रोग हातमा लिनाले विना कारण बदनामी लिनुपर्छ ।

रोगीको आयुको विचार गर्नु वैद्यको सबैभन्दा पहिलो काम हो । अरिष्ट चिह्नहरूद्वारा पहिले आयुको विचार गर्नुपर्छ । जसको उमेर पुगिसकेको छ उसको उमेरलाई वैद्यले बढाउन सक्दैन ।

रोगको तत्त्वलाई पहिचान गर्नु र रोगीको पीडालाई कम पार्नु यही वैद्यको धर्म हो । वैद्य आयुको स्वामी हुँदैन । जसरी बत्ती र तेल हुँदाहुँदै पनि हावाको वेगले दियो निभ्न सक्छ त्यस्तै आयु बाँकी छँदा नै रोगी चिकित्सा नपाई मर्न सक्छ । आयु नै शेष नभएपछि चिकित्साको कुनै महत्त्व हुँदैन ।

जुन वैद्यले अरिष्ट चिह्नहरूलाई राम्ररी पहिल्याउँछ र साध्य-असाध्य रोगको परीक्षाद्वारा निर्णय गर्न निपुण हुन्छ त्यही उत्तम वैद्य ठहरिन्छ ।

रोगीको समीप गएर यति कुराको विचार अवश्य गर्नुपर्दछ-

- रोगीको आयु अल्प छ, मध्यम छ वा दीर्घ छ ? अरिष्ट चिह्नहरूबाट आयुको ज्ञान हुन्छ ।
- आयु शेष छ भने रोगी कुन रोगले ग्रस्त छ भन्ने विचार गर्नुपर्दछ । साथै रोगको कारण के हो ? रोग पूर्ण रूपमा प्रकट हुनुभन्दा पहिले कुन कुन लक्षणहरू देखिएका थिए ? भनी बुझ्नुपर्छ ।
- रोगको निदानपछि रोग साध्य हो वा असाध्य हो भन्ने विचार गर्नुपर्छ, साथमा कुनै अरिष्ट चिह्न छ कि ? भनेर बुझ्नुपर्छ ।
- रोग साध्य छ र अरिष्ट पनि छैन भने बुद्धिमानीका साथ चिकित्साको योजना बनाउनुपर्छ ।
- रोगको विचार गर्दा रोग कुन ऋतुमा उत्पन्न भएको हो ? उक्त ऋतुमा कुन दोषको प्रकोप हुन्छ ? त्यसमा रोगीको वात आदि दोष शान्त हुने हो वा कुपित हुने (बढ्दै जाने) हो ? अर्थात् ऋतुतुल्यता (सम्बन्धित ऋतु र दोष मिल्ने किसिमको हुनु) छ कि ? भन्ने विचार राख्नुपर्छ । वर्षा ऋतुमा वायुसम्बन्धी रोग, शरद्मा पित्त सम्बन्धी रोग भएमा त्यो कष्टसाध्य हुन्छ ।

- रोगीको अग्नि कस्तो छ ? अग्नि तीक्ष्ण छ कि मन्द ? सम छ अथवा विषम छ ?
- रोगीको उमेर कति छ ? रोगी युवक छ वा बालक छ ? अथवा वृद्ध छ ? त्यस अवस्थामा कुन दोषको वृद्धि हुने गर्छ ? रोगीलाई लागेको रोग यस अवस्थामा चाप्छ ? अथवा शिथिल भएर जान्छ ? अर्थात् सामान्य साध्य रहन्छ वा कष्टसाध्य ?

बालक तथा वृद्ध रोगीहरूमा सावधानी चाहिन्छ किनभने यिनीहरू कोमल एवं निर्बल हुन्छन् ।

- रोगीको शरीर मोटो छ अथवा दुब्लो छ ? अथवा मध्यम छ ?
- रोगीमा कति बल छ ? रोगी बलवान् छ कि छैन ? कमजोर रोगीलाई धेरै कडा औषधी दिंदा हानि गर्छ । यसकारण दुर्बल रोगीलाई हल्का औषधी दिनुपर्छ । कडा औषधी दिनुपर्ने भए कम मात्रामा पटक-पटक गरी दिनुपर्छ ।

महिलाहरूको विषयमा उक्त कुराहरूमा विशेष ध्यान दिनुपर्छ । किनकि उनीहरूको मन अस्थिर, चञ्चल, नरम, उदार र डरले आत्तिने हुन्छ ।

- रोगीको आन्तरिक-मानसिक अवस्था पनि बुझ्नुपर्छ । अर्थात् उसमा दुःख सहने क्षमता कति छ भन्ने विचार गर्नुपर्छ । आत्मासँग मनको संयोग हुनाले मनले शरीरको पालन र पोषण गर्छ । सत्त्व अर्थात् मनको बल तीन प्रकारको हुन्छ- उत्तम, मध्यम र हीन । उत्तम बल भएको मानिस निकै कष्ट हुँदा पनि आत्तिंदैन । मध्यम सत्त्व हुने मानिस सुरुमा आत्तिंदैन, रोगको कष्ट बढ्दै जाँदा आत्तिन्छ तर सम्झाएपछि कुरा बुझेर ढुक्क हुन्छ । हीन सत्त्व भएको मानिसको शरीर भारी भए पनि मामुली पीडा पनि सहन सक्दैन र आत्तिन्छ ।

सात्म्यको परीक्षा पनि गर्नुपर्छ - रोगीलाई कुनचाहिं आहार वा विहार अनुकूल हुन्छ ? जुन मानिसलाई घिउ, दूध, तेल, अमिलो, पिरो आदि छ ओटै रसहरू अनुकूल हुन्छन् त्यो बलवान् कष्ट सहन सक्ने र दीर्घजीवी हुन्छ ।

त्यस्तै प्रकृतिको परीक्षा पनि गर्नुपर्छ । रोगीको प्रकृति वात, पित्त अथवा कफ कुन प्रधान छ ? उसमा प्रकृति - तुल्यता छ कि छैन ? अर्थात् रोगीको जुन दोष प्रधान प्रकृति छ त्यही दोषबाट उत्पन्न रोग त छैन ? भन्ने विचार राख्नुपर्छ । कसैको पित्त प्रकृति छ तर कफ सम्बन्धी रोग लागेको छ भने त्यो प्रकृति - तुल्यता होइन, त्यसो हुँदा रोग सुखसाध्य हुन्छ ।

तीनवटा दोषहरू

कुपित अवस्थामा शरीरलाई दूषित गर्ने शरीरका घटकहरूलाई दोष भनिन्छ । वायु, पित्त र कफलाई दोष मानिएको छ । उक्त तीन दोषहरूमा वायु नै प्रधान हो ।

वायु नभए प्राण एक क्षण पनि रहन सक्दैन र मानिस जीवित रहन सक्दैन । यो शीतल, रुक्ष र योगवादी हुन्छ अर्थात् यो जोसँग मिल्छ उसकै जस्तो गुण प्रकाशित गर्छ । सूर्यसँग मिल्यो भने दाह उत्पन्न गर्छ, चन्द्रमासँग मिल्यो भने शीतलता दिन्छ । यो वायु शरीरभित्र पित्तसँग मिलेर पित्तजस्तो काम गर्छ र कफसँग मिलेपछि कफजस्तो काम गर्छ । शरीरमा हुने पित्त, कफ, धातु, र मलहरू वायुको सहयोग नभएसम्म कुनै काम गर्न वा यता-उता जान सक्दैनन् । अतः लंगडा जस्तै हुन्छन् । आकाशमा जसरी वायु चल्दा त्यसको वेगअनुसार बादल चल्छ त्यस्तै शरीरका पित्त, कफ, मल, र धातुहरू पनि वायुको प्रेरणा भए अनुसार चारैतिर गतिशील हुन्छन् ।

वायुको स्थान- पक्वाशय, कम्मर, गोडा, कान, हाड, छाला यी वायुका प्रमुख स्थानहरू हुन् । वायुको सञ्चार शरीरभित्र सबै स्थानमा भए पनि त्यसको स्वस्थ वा विकृत अवस्थाको लक्षण यी अङ्गहरूमा विशेष देखिन्छ ।

प्रकारहरू- शरीरमा वायुको स्थान अनुसार फरक-कामको आधारमा ५ भेद मानिएको छ- प्राण, अपान, समान, व्यान, उदान । हृदयमा रहेर श्वास-प्रश्वास, मुटुको गतिको सञ्चालन गर्ने वायुलाई प्राण वायु भनिन्छ । घाँटीदेखि माथिका अङ्गहरूमा रहने, बोली, गीत आदि गराउने वायुलाई उदान वायु भनिन्छ । जसले खाएको अन्नको पाचन गर्छ, सार र निस्सार (मल) छुट्याउँछ, पाचनक्रिया राम्रो राख्छ त्यसलाई समान वायु भनिन्छ । यसको स्थान पक्वाशय हो । सम्पूर्ण शरीरमा गतिशील हुने र शरीरका सबै अङ्गहरूको कामलाई सञ्चालन गर्ने वायुलाई व्यान वायु भनिन्छ । कम्मर वरिपरि रहेका मलवाहक अङ्गहरूको मार्गबाट शरीरको पोषणपछि बाँकी रहेको, काम नलाग्ने मल, मूत्र, आदि निकाल्न प्रेरणा दिने वायुको नाम अपान छ ।

पित्तको स्वरूप

पित्त एक किसिमको पातलो द्रव्य हो । यसको रङ्ग आम (बिग्रिएको) अवस्थामा निलो, हरियो हुन्छ, आमरहित अवस्थामा पहेंलो हुन्छ । यो उष्ण, सर (चारैतिर फैलने), तीक्ष्ण, हलुंगो र स्नेह अर्थात् चिल्लोसहित हुन्छ । यो सामान्य अवस्थामा अमिलो र विकृत हुँदा तिक्त (तितो) हुन्छ । अग्न्याशय, यकृत्, फियो, आँखा, छाला यसका मुख्य स्थान हुन् ।

पित्तका ५ प्रकारहरू- स्थान र कर्म अनुसार पित्त ५ किसिमको हुन्छ- पाचक, रञ्जक, साधक, आलोचक र भ्राजक । अग्न्याशयमा पाचक पित्त रहन्छ, यकृत् र फियोमा रञ्जक पित्त हुन्छ, हृदयमा साधक पित्त हुन्छ, दुवै आँखाहरूमा आलोचक पित्त हुन्छन्, सारा शरीरको छालामा भ्राजक पित्त हुन्छ ।

पाचक पित्त- पाचक पित्तले आमाशय र पक्वाशयमा रहेर ६ प्रकारको आहारलाई पचाउने काम गर्छ र शेष अरू अग्नि अर्थात् रञ्जक आदि पित्त एवं

धातुहरूमा रहेको अग्निको बल बढाउँछ। शरीरको पोषणका लागि आवश्यक तत्त्वहरू रसको रूपमा र हानिकारक एवं नचाहिने दूषित पदार्थहरू मल-मूत्र, पसिनाको रूपमा दिनदिनै छुट्याउने काम गर्छ। आफ्नो स्थान आमाशय र पक्वाशयमा रहेर नै आफ्नो शक्तिद्वारा शरीरका शेष यकृत्, प्लीहा, आँखा, त्वचा आदि स्थानहरू र सम्पूर्ण शरीरको पोषण गर्छ। पाचक पित्तलाई जठराग्नि पनि भनिन्छ। यो अग्नि काँचको भाँडामा राखेको दीपक समान हुन्छ। यसैले अनेक प्रकारका व्यञ्जनहरू पचाउँछ। ठूलो शरीर भएका जीवहरूमा यो अग्नि जौको समान हुन्छ। सानो शरीर भएका जीवहरूमा तिलसमान र अझ साना जीवहरू कीरा फटचांग्रा आदिमा रौँ बराबर हुन्छ।

रञ्जक पित्त- यसको काम रसलाई रक्तमा बदल्नु हो।

साधक पित्त- यसले मेधा र स्मरणशक्तिको वृद्धि गर्छ।

आलोचक पित्त- यसको काम रूपको ग्रहण अर्थात् ज्ञान गर्नु हो। यसले आँखालाई हेर्ने शक्ति दिन्छ।

भ्राजक पित्त- यो पित्त कान्ति र तेजको कारण हुन्छ। यसले छालामा लगाएको लेप तथा पानी, तेल आदिलाई भित्र सोस्ने र सुकाउने काम गर्छ।

कफको वर्णन

कफको स्वरूप- कफ सेतो, भारी, चिप्लो, कोमल, शीतल र मधुर हुन्छ। विदग्ध अर्थात् अग्निको विशेष संयोग भएको अवस्थामा नुनिलो हुन जान्छ।

कफ पनि स्थान र कर्म अनुसार पाँच किसिमको हुन्छ - क्लेदक, अवलम्बक, बोधक, तर्पक र श्लेषक। क्लेदक कफ आमाशयमा हुन्छ, अवलम्बक हृदय प्रदेशमा, बोधक जिभ्रोमा, तर्पक शिरमा र श्लेषक सन्धि अर्थात् जोर्नीहरूमा रहेको हुन्छ।

(क) **क्लेदक कफ** - क्लेदक कफले अन्नलाई गिलो पार्छ, आफ्नो शक्तिले शरीरका अन्य स्थानहरूमा पनि जलकर्म अर्थात् पोषण गर्ने स्निग्धता, कोमलता ल्याउने काम गर्छ।

(ख) **अवलम्बक कफ**- रसयुक्त वीर्यबाट हृदयको भागलाई अवलम्बन अर्थात् धान्ने काम गर्छ, त्रिक स्थानको हाडको पनि धारण गर्छ। टाउको र दुई हातहरू जोडिने सन्धिलाई त्रिक भनिन्छ।

(ग) **बोधक कफ** - यो मुखमा हुन्छ। यसले मुखलाई भिजाएर राख्छ र जिभ्रोद्वारा स्वादको अनुभव गर्न मद्दत गर्छ।

(घ) **तर्पक कफ** - यसले चिल्लोपन दिएर शिरमा रहेका इन्द्रियहरूलाई तृप्त पार्छ (पोषण गर्छ)।

(ङ) श्लेषक कफ - सबै सन्धि अर्थात् जोर्नीहरूलाई राम्ररी जोडेर राख्छ ।

सप्त धातुहरू

रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा र शुक्र यी ७ लाई धातु भनिन्छ । यी सबै शरीरको निर्माण गर्ने र शरीरमा रहने तत्त्वहरू हुन् । शरीरको धारणा गर्ने अर्थात् शरीरका अङ्गहरूको रूपमा रहने र आआफ्नो कामद्वारा शरीरलाई जीवित र सक्रिय राख्ने हुनाले यी सबैलाई धातु भनिएको हो ।

धातुहरूको निर्माण - खाएको अन्न पचेपछि त्यसको सार भागबाट रस धातु बन्छ । त्यस्तै रसबाट रक्त (रगत), रक्तबाट मांस (मासु), मांसबाट मेद (बोसो), मेदबाट अस्थि (हाड), अस्थिबाट मज्जा (मासी) र मज्जाबाट शुक्र (वीर्य) बन्छ । धातुहरू बन्ने प्रक्रिया यस्तो हुन्छ -

खाएको अन्न जठराग्नि (पाचक रस) द्वारा पाचन हुँदा दुई भागमा बाँडिन्छ - सार भाग र निस्सार (सार नभएको शरीरलाई काम नलाग्ने) भाग । अन्नको सार भागबाट रस धातु बन्छ । असार भाग विष्ठा र मूत्र भएर जान्छ । रसको पनि अग्निद्वारा पाचन हुँदा सार भागमा सूक्ष्म अंशबाट रक्त धातुको निर्माण हुन्छ, स्थूल अंशबाट रस धातुको पोषण हुन्छ, मलको रूपमा कफ बन्छ । रक्तको अग्निद्वारा पाक भएपछि सार भागको सूक्ष्म अंशबाट मांस धातुको निर्माण हुन्छ, स्थूल अंशले रक्तको पोषण गर्छ, मलको रूपमा पित्त बन्छ । मांस धातुको अग्निद्वारा पाक हुँदा सार भाग अन्तर्गत सूक्ष्म अंशबाट मेद धातु बन्छ, स्थूल अंशबाट मांसको पोषण गर्छ र मलको रूपमा नाक, कानको मल बन्छ । मेद धातुको अग्निद्वारा पाक भएपछि सार भागको सूक्ष्म अंशबाट अस्थि धातु बन्छ, स्थूल अंशबाट मेद धातुको पोषण हुन्छ, मलको रूपमा पसिना बन्छ । अस्थि धातु पाक भएपछि सार भाग अन्तर्गत सूक्ष्म अंशबाट मज्जाको निर्माण हुन्छ, स्थूल भाग अस्थि धातुको रूपमा रहन्छ र मलको रूपमा कपालका रौं र नङ्गहरू बन्छन् । मज्जा धातुको पाक भएपछि त्यसको सार भागमध्ये सूक्ष्म अंशबाट शुक्र धातु बन्छ, स्थूल अंश मज्जाको रूपमा रहन्छ र मलको रूपमा आँखाको चिप्रा बन्छ । शुक्र धातुको पाक हुँदा सूक्ष्म भागबाट ओज बन्छ र स्थूल भाग शुक्र धातुकै रूपमा रहन्छ । जसरी सुनलाई जति पटक जतिसुकै आगोमा राखे पनि त्यसमा मयल देखिन्न त्यस्तै शुक्र धातुको पनि कुनै मल हुँदैन ।

धातुहरूले गर्ने कामहरू

- पहिलो रस धातुले तृप्त पार्ने र रगतको पोषण गर्ने काम गर्छ ।
- रक्त धातुले वर्ण अर्थात् शरीरको रङ्ग राम्रो पार्छ, मांस धातुको पोषण गर्छ, जीवन दिन्छ ।

- मांस धातुले शरीरलाई पुष्ट बनाउँछ, मेदको पोषण गर्छ ।
- मेद अर्थात् बोसोले शरीरमा चिल्लोपन ल्याउँछ, पसिना निकाल्छ, शरीरलाई दृढ (दरो) बनाउँछ, हाडको पोषण गर्छ ।
- अस्थि अर्थात् हाडहरूले शरीरलाई धारण गर्छन्, मज्जाको पोषण गर्छन् ।
- मज्जा धातु अस्थिको भित्र रहेर शरीरमा चिल्लोपना ल्याउने, बल दिने, मन प्रसन्न बनाउने काम गर्छ, वीर्य उत्पन्न गर्छ ।
- वीर्य धातुले हर्ष उत्पन्न गर्छ, धैर्य एवं बल दिन्छ, सन्तानको उत्पादन गर्ने कारण बन्छ ।

उपधातुहरू

शरीरको पोषणमा उपयोगी तर अरू धातुहरूको निर्माण नगर्ने पोषक तत्त्वहरूलाई उपधातु भनिन्छ । महिलाहरूको आर्तव (मासिक स्राव), स्तनमा हुने दूध, वसा, त्वचा (छाला), ओज आदिलाई उपधातु मानिएको छ । रस धातुबाट स्तन्य (आमाको स्तनमा हुने दूध) उत्पन्न हुन्छ, रक्त धातुबाट महिलाहरूमा रज (मासिक स्राव भएर जाने रगत) उत्पन्न हुन्छ, शुक्र धातुबाट ओज उत्पन्न हुन्छ । ओज सोमात्मक (जलतत्वप्रधान) हुन्छ र सम्पूर्ण शरीरमा रहन्छ । यो शीतल र चिल्लो हुन्छ । यसले शरीरलाई पुष्ट र बलियो बनाउँछ, रोगहरूबाट मुक्त बनाउँछ ।

मलहरू

शरीरको पाचन आदि कामहरू हुँदैजाँदा बन्ने र बढी उपयोग हुन नसक्ने र शरीर आदिलाई मैलो पार्ने वस्तुहरूलाई मल भनिन्छ । मलहरू शरीरका विभिन्न मार्गहरू (छाला, नाक, मुख, मलद्वार, मूत्रमार्ग)बाट बाहिर फ्याँकिन्छन् । पसिना, विष्ठा, मूत्र, आँसु-चिप्रा, सिंगान, ज्याल, कफ, कानेगुजी, पिप यी सबै मलहरू हुन् ।

दोष, धातु र मलहरू आफ्नो निश्चित मात्रामा रहेर शरीरका सबै कामहरू स्वाभाविक रूपमा भइरहेको अवस्थालाई तिनीहरूको सम अवस्था दोषसाम्य, धातुसाम्य अथवा स्वास्थ्य भनिन्छ । दोष, धातु र मलहरू आफ्नो निश्चित मात्राभन्दा निकै बढी अथवा घटी भएको अवस्थालाई दोषवैषम्य, धातुवैषम्य र विकार भनिन्छ ।

दोषका विभिन्न अवस्थाहरू

दोषहरूका तीन अवस्थाहरू हुन्छन् - साम्य, वृद्धि र क्षय । दोषहरू शरीरको काम राम्ररी सञ्चालन हुने गरी रहेको अवस्थालाई साम्य अवस्था भनिन्छ । दोषहरू बढेको र तिनीहरूद्वारा शरीरमा गरिने काम पनि बढेको वा बिग्रेको अवस्थालाई वृद्धि भनिन्छ । दोषहरू आफ्नो निश्चित मात्रा भन्दा घटेको र तिनीहरूद्वारा गरिने काम पनि कम हुँदै गएको वा हराएको अवस्थालाई क्षय भनिन्छ । दोषहरू जस्तै धातुहरूको

र मलहरूको पनि अवस्थाभेद हुन्छ - धातुसाम्य, धातुवृद्धि, धातुक्षय, मलवृद्धि, मलक्षय ।

प्रकृतिको विचार

गर्भावस्थामा शरीरको निर्माण हुने बेलामा शरीरका तत्त्वहरूको अनुपातमा केही थप-घट हुँदा त्यसको प्रभाव जीवनभरी रहिरहन्छ । त्यही अनुसार मानिस-मानिसको शरीरको बनोट, बढ्ने क्षमता, पाचनशक्ति, विचार गर्ने शक्ति आदि फरक हुन जान्छ । यसरी प्रत्येक मानिसको बनोट आदिको आधारमा शरीरको रचना अनुसार मुख्य तीन किसिमका प्रकृतिहरू हुन्छन् - वात प्रकृति, पित्त प्रकृति र कफ प्रकृति । प्रकृतिको निर्माण पुरुषको वीर्य, स्त्रीको आर्तव (स्त्रीबीज-Ovum), गर्भावस्थाको भोजन (उचित वा कम पोषण), रहन-सहन, व्यवहार अनुसार जुन दोषको प्रधानता हुन्छ त्यही अनुरूप हुन्छ ।

(क) वात प्रकृति - वात प्रकृति हुने मानिसको शरीरको रङ्ग कालो हुन्छ, शरीर दुब्लो हुन्छ, स्वभाव चञ्चल हुन्छ, केशहरू कम हुन्छन्, दाँतहरू साना हुन्छन् । त्यो मानिस धेरै बोल्ने र लोभी हुन्छ । त्यसमा सत्त्व गुण निकै कम हुन्छ । त्यसले अमिलो कुरा बढी रुचाउँछ, तेल आदि मालिस गर्दा सुखको अनुभव गर्छ ।

(ख) पित्त प्रकृति - पित्त प्रकृति हुने मानिसमा शरीरको रङ्ग गोरो हुन्छ अथवा पहेंलोमा सेतो मिसिएको हुन्छ, आँखाहरू अलि पहेंला देखिन्छन्, शरीर कोमल हुन्छ । त्यसको स्वभाव कडा र चाँडै रिसाउने हुन्छ तर कुरा बुझाउँदा छिट्टै नरम भएर जान्छ । त्यसले आफ्नो तारीफ मन पराउँछ, शीतल पदार्थ बढी रुचाउँछ, पिरो, अमिलो कुरा त्यति रुचाउँदैन ।

(ग) कफ प्रकृति - कफ प्रकृति हुने मानिसको शरीरको रङ्ग श्याम, सुन्दर र चिल्लो देखिन्छ, शरीर मोटो हुन्छ । आँखा सेता हुन्छन्, केशहरू काला र घना हुन्छन् । त्यो व्यक्ति गम्भीर कुरा गर्ने, संङ्गीत मन पराउने, सहनशील र भोगी हुन्छ ।

(घ) अन्य प्रकृतिहरू - जसमा वात र पित्त प्रकृति दुवैका लक्षण हुन्छन् त्यसलाई वातपित्त प्रकृति भनिन्छ । जसमा वात र कफ प्रकृतिका लक्षण हुन्छन् त्यसलाई वातकफप्रकृति भन्दछन् । जसमा पित्त र कफ प्रकृतिका लक्षणहरू हुन्छन् त्यसलाई पित्तकफप्रकृति भनिन्छ । जसमा तीन ओटै दोषका लक्षणहरू हुन्छन् त्यो मानिसको प्रकृति त्रिदोषज मानिन्छ । शुद्ध वात, शुद्ध पित्त र शुद्ध कफ प्रकृति भएको मानिस विरलै पाइन्छ, दुई दोष मिलीजुली बन्ने प्रकृतिहरू नै बढी भेटिन्छन् ।

केही विद्वान्हरूले यस्तो पनि लेखेका छन् - शरीरको रङ्ग पूर्वाचार्यहरूको भनाइ अनुसार प्रत्यक्ष अनुभव गर्न पाइन्न । यो कुरा अलि युक्तिसंगत भन्न पनि गाह्रो

छ । त्वचाको रङ्ग पृथ्वी तत्त्वमा निर्भर गर्छ - यूरोपियन, कश्मीर आदि शीत देशका बासिन्दाहरू गोरा हुन्छन् । मद्रास तथा अबीसिनियाका बासिन्दा काला हुन्छन् । चीनिया र जापानीहरू पहेँला हुन्छन् । जहाँ सबै रङ्गका मानिस हुन्छन् त्यहाँ रङ्गको विचार गर्नुपर्छ । जहाँ सबै गोरा अथवा काला हुन्छन् त्यहाँ प्रकृति परीक्षा गर्ने बेलामा शरीरको रङ्गको मात्र विचारको आधारमा प्रकृतिको ज्ञान हुँदैन । प्रकृतिको विचार गर्न सहायक अनेक तथ्यहरूमा रङ्ग पनि हुन्छ ।

जसरी विषबाट उत्पन्न भएको जीव (कीट) विषद्वारा पीडित हुँदैन त्यस्तै प्रकृतिको रूपमा रहेको दोषले उक्त प्रकृति हुने मानिसलाई खासै पिर्दैन । प्रकृतिको रूपमा रहेको दोषको प्रकोप अथवा शमन हुँदैन, त्यसमा जीवन अवधिभित्र कुनै परिवर्तन पनि हुँदैन । त्यो मृत्युकालसम्म प्रकृतिको रूपमा रहीरहन्छ । उक्त दोषका कारण सम्बन्धित मानिसलाई कुनै ठूलो रोग त लाग्दैन तर हात-खुट्टा फुट्ने (वात), बढी पसिना आउने (पित्त), धेरै निद्रा लाग्ने (कफ) जस्ता लक्षणहरू भइरहन्छन् ।

बलपरीक्षा

रोगको उपचारका लागि औषधीको प्रयोग गर्दा रोगीको बलको पनि बिचार राख्नुपर्छ । दुर्बल रोगीलाई कडा औषधी दिएमा त्यसले हानि पुऱ्याउन सक्छ, मृत्यु गराउन पनि सक्छ । बलवान् रोगीलाई हल्का औषधी दिए पनि ठीक गर्दैन किनकि रोग बढेर जान्छ । यसकारण रोगीको बलको पनि परीक्षा गर्नुपर्दछ ।

बलको परीक्षाका लागि चरकसंहितामा ८ प्रकारका सारहरूको वर्णन गरिएको छ । ती सारहरूको परीक्षा गर्नाले बलको यथार्थताको अर्थात् रोगी यतिसम्म बलियो छ - अति, मध्यम, कम भन्ने ज्ञान हुन्छ ।

(क) त्वक्सार - त्वक्सार हुने पुरुषको त्वचा चिल्लो, पातलो, नरम, सूक्ष्म र कान्तियुक्त हुन्छ । यो गुण हुनाले त्यो मानिस सुखी, सौभाग्यशाली, ऐश्वर्यशाली, बुद्धिमान्, विद्वान्, निरोगी र दीर्घायु हुन्छ ।

(ख) रक्तसार - रक्तसार हुने पुरुषको कान, आँखा, मुख, जिभ्रो, नाक, ओठ, हातगोडाका नङ्, निधार र लिङ्गको रङ्ग रातो, शोभायुक्त हुन्छ । यस्ता पुरुषहरू सुखी, उन्नतिशील, कोमल, दानी, पण्डित, मध्यम बल भएका र कष्ट सहन गर्ने शक्ति सामर्थ्य राख्ने हुन्छन् ।

(ग) मांससार - मांससार पुरुषका कन्चट, निधार, घाँटी, पछाडिको भाग, आँखा, गाला, चिउँडो, काखी, छाती, हात-गोडा र शरीरका जोर्नीहरू मांसल (मासु टम्म मिलेका) हुन्छन् । तिनीहरू क्षमतावान्, धैर्यवान्, निर्लोभ, धनी, सुखी, निरोगी, बलवान् र दीर्घायु हुन्छन् ।

(घ) **मेदःसार** - मेदःसार पुरुषको वर्ण, स्वर, नेत्र, केश, रौं, नङ्, दाँत, ओठ, मल, मूत्र यी सबैमा विशेष चिल्लोपना हुन्छ । यस्तो पुरुष धनी, ऐश्वर्यशाली, सरल स्वभावको र सुशील हुन्छ ।

(ङ) **अस्थिसार** - अस्थिसार पुरुषको कुर्कुच्चा, घुँडा, नाडी, पाता, मस्तक, सारा जोर्नीहरू, नङ् र दाँत सबै स्थूल हुन्छन् । त्यो पुरुष उद्योगी, किसिम- किसिमको काम गर्ने, कष्ट सहन सक्ने, बलियो र दीर्घायु हुन्छ ।

(च) **मज्जासार** - मज्जासार पुरुषको शरीर पातलो भए पनि बलवान् हुन्छ । स्वर तथा वर्ण चिल्लो हुन्छ, उसका सारा सन्धिहरू स्थूल, लामा र गोल हुन्छन् । यस्तो मानिस दीर्घायु हुन्छ ।

(छ) **शुक्रसार** - शुक्रसार पुरुषको शरीर टम्म मिलेको हुन्छ, वर्ण र स्वर प्रसन्न तथा स्निग्ध हुन्छन्, अनुहारमा चमक हुन्छ, नितम्बको भाग फैलिएको-पुष्ट हुन्छ । यस्ता पुरुषहरू महिलाहरूले मन पराउने गरी आकर्षणयुक्त हुन्छन् । साथै ज्ञानी, धनी, पुत्रवान् हुन्छन् । तिनीहरूको भित्रबाट प्रसन्नताको झलक पाइन्छ ।

(ज) **सत्त्वसार** - सत्त्वसार पुरुष ऐश्वर्यसम्पन्न, शक्तिसम्पन्न, भक्ति राख्ने, उत्साही, चतुर, धीर र गम्भीर बुद्धि भएको हुन्छ ।

(झ) **सम्पूर्ण सार** - त्वक्सार आदि आठ ओटै सारहरू मिलेर बनेको मानिस अत्यन्त बलवान्, गौरवशाली, कष्ट सहन गर्ने, सबै कामहरू आफैं पूरा गर्ने, आशावान्, कल्याणकारी, विषयहरूमा मन लगाउने, हृष्टपुष्ट शरीर र स्थिर गति भएको हुन्छ । त्यस्तो मानिसलाई बुढ्यौली निकैपछि आउँछ, रोग पनि छिटो लाग्दैन, लागे पनि छिटै निको हुन्छ । उसका सन्तानहरू उसकै जस्तो गुणवाला हुन्छन् ।

यी सारहरूको गुण नभएको अथवा विपरीत गुण भएको मानिसलाई असार भनिन्छ । केही कम लक्षण भएको मानिसलाई मध्यसार भन्छन् ।

संहनन अथवा संगठन

शरीरको गठन हेरेर पनि बलको अन्दाज गर्न सकिन्छ । जसका हाडहरू समान हुन्छन्, जोर्नीहरू टम्म मिलेका हुन्छन् र जो रगत र मासुले परिपूर्ण हुन्छ त्यसको शरीरलाई सुसंहत भनिन्छ । त्यस्तो मानिस बलवान् हुन्छ । विपरीत लक्षण हुने मानिस दुर्बल हुन्छ । बीचको लक्षण हुने मानिस मध्यबली हुन्छ । अति मोटो र अति दुब्लो यी दुवै मानिस निन्दित हुन्छन् । मध्यम शरीर हुने मानिस श्रेष्ठ हुन्छ । अति मोटो भन्दा केही दुब्लो नै राम्रो हुन्छ ।

अग्नि-

शरीरको पोषण र संरक्षणमा अग्निको विशेष महत्त्व हुन्छ। शरीरमा मुख्य अग्नि जठराग्नि मानिएको छ। त्यसका साथ शरीरमा ७ धात्वग्नि र ५ भूताग्निहरू पनि हुन्छन्। जठराग्निद्वारा अरू अग्निहरूको पोषण र संवर्धन हुन्छ।

जठराग्नि आफ्नो मात्रा र कामको आधारमा चार किसिमको हुन्छ - सम, विषम, तीक्ष्ण र मन्द। ती सबैमा एउटा सम अग्नि निर्दोष हुन्छ, अरू तीन अग्निहरू सदोष अर्थात् विकारयुक्त हुन्छन्।

हारीतसंहिता अनुसार वात, पित्त र कफ सम अवस्थामा रहेको अवस्थामा अग्नि सम हुन्छ। दोषहरू विषम (घटे-बढेको-असमान) रहेको अवस्थामा वायुको प्रकोप हुँदा अग्नि विषम हुन्छ। पित्त अधिक भएमा तीक्ष्ण अग्नि हुन्छ, कफको अधिकता भएमा मन्द अग्नि हुन्छ।

(क) **समाग्नि** - यस अग्निले स्वभाव अनुसार ठीक समयमा खाएको भोजनलाई पचाइदिन्छ। सबै रस आदि धातुहरूलाई बढाउँछ, साथै दोषरहित हुन्छ। सम अग्नि हुने मानिस सदा प्रसन्न, हृष्टपुष्ट, र सचेष्ट हुन्छ। यस अग्निको सधैँ रक्षा गर्नुपर्छ जसले यो मन्द, तीक्ष्ण अथवा विषम हुन नपाओस्।

(ख) **विषम अग्नि** - यसले कहिले भोजनलाई पचाइदिन्छ, कहिले पचाउँदैन। वायुको प्रकोपद्वारा विषम भएर हैजा, वात आदि रोग, अतिसार प्लीहाको रोग र अजीर्णको कारण बन्छ। यस अग्निलाई चिल्लो, अमिलो तथा नुनिलो आहार एवं औषधी दिएर सम अवस्थामा ल्याउनुपर्छ। अग्नि दीपन गर्ने आहार लिनुपर्छ। भोजनमाथि भोजन गर्ने अथवा असमय भोजनबाट बच्नुपर्छ।

(ग) **तीक्ष्ण अग्नि** - जब प्रकृतिभन्दा बढी खाँदा पनि तृप्ति हुँदैन, शरीरमा दाह भइरहन्छ र बल घटेर जान्छ त्यस अवस्थामा हुने अग्निलाई तीक्ष्ण अग्नि भनिन्छ। यो अग्नि बढेको अवस्थामा खाने कुरा बारम्बार खाइरहे पनि पच्छ, फेरि पनि खाउँ-खाउँ लागिरहन्छ। भोजन पचिसकेपछि घाँटी, तालु र ओठ सुक्छन्, शरीरमा डाह हुन्छ, आँखा पहेँला हुन्छन् र बल पनि घटेर जान्छ। त्यस्तो अवस्थालाई भस्मक रोग भनिन्छ।

तीक्ष्ण अग्नि हुने मानिसलाई गुलियो, चिल्लो तथा शीतल आहार दिनुपर्छ। अथवा जुलाफ (विरेचन औषधी) खाएर प्रतिकार गर्नुपर्छ। भैँसीको दूध, दही, घिउ आदि खान दिनुपर्छ।

(घ) **मन्द अग्नि** - मन्द अग्नि हुने मानिसले थोरै खाए पनि राम्ररी पच्दैन, पच्नुभन्दा पहिले पेटमा भारीपन, टाउको भारी हुने, खोकी लाग्ने, न्याल चुहुने,

वाकवाक लाग्ने, शरीर थाक्ने जस्ता उपद्रवहरू हुन्छन् । मन्द अग्नि हुँदा कफको वृद्धि हुन्छ र गुल्म रोग उत्पन्न हुन्छ ।

वय अर्थात् उमेरको विचार

मानिसको शरीर उमेर अनुसार पहिले बढ्दै जाने र पछि क्रमशः घट्दै जाने हुन्छ । त्यस्तै कुनै बेलामा रोगले सजिलै चाप्ने र कहिले कम असर गर्ने हुन्छ । अतः रोगीको परीक्षा गर्दा उमेरको पनि विचार गर्नुपर्छ ।

उमेर अनुसार शरीरका तीन अवस्थाहरू हुन्छन् – (१) बाल अवस्था, (२) मध्य अवस्था, (३) वृद्ध अवस्था । बालक जन्मेदेखि १६ वर्षसम्म बाल अवस्था, १६ वर्षदेखि ७० वर्षसम्म मध्य अवस्था र ७० वर्षभन्दा माथिको अवस्थालाई वृद्ध अवस्था भनिन्छ ।

बालक ३ प्रकारका हुन्छन् – १ वर्षसम्म दूध खाने बालक, २ वर्षसम्म अन्न र दूध दुवै खाने बालक र २ वर्षमाथि केवल अन्न खाने बालक हुन्छन् ।

मध्य अवस्था पनि चार खण्डमा बाँडिएको हुन्छ – (१) किशोर अवस्था (२) यौवन अवस्था, (३) परिपूर्णताको अवस्था, र (४) घट्दै जाने अवस्था । २० वर्षसम्म किशोर अवस्था रहन्छ अर्थात् शरीरको विकास भइरहन्छ । ३० वर्षसम्म यौवन अवस्था अर्थात् जवानी रहन्छ, ४० वर्षसम्म सबै धातु – उपधातु पूरा हुने, सबै इन्द्रियहरूले आफ्नो काम राम्ररी गर्ने, बल पनि पर्याप्त हुने हुन्छ । ४१ वर्षदेखि ७० वर्षसम्म शरीरमा भएका गुणहरू क्रमशः कम हुँदै जान्छन् । ७० वर्षपछि धातुहरूको विशेष मात्रामा ह्रास आउन थाल्छ, इन्द्रियहरूको शक्ति, शरीरको बल, पराक्रम, उत्साह क्रमशः घट्दै जान्छ, शरीरमा चाउरी देखिन थाल्छ, सारा केश, रौंहरू सेता भएर जान्छन् । दम-खोकी आदि रोगले घेर्न थाल्छन् । यस अवस्थामा वायुसम्बन्धी विकारहरू बढी हुन्छन् । बाल्यावस्थामा कफको प्रधानता रहन्छ, मध्य अवस्थामा पित्तको र वृद्धावस्थामा वायुको प्रधानता हुन्छ ।

शार्ङ्गधरसंहितामा शार्ङ्गधरले भने अनुसार बालक जन्मेदेखि १० वर्षसम्म बालकपना रहन्छ, २० वर्षको उमेरसम्म शरीर बढ्ने- अगलो हुने क्रम चलिरहन्छ, त्यसपछि वृद्धि हुँदैन । ३० वर्षसम्म शरीर मोटो हुँदै जान्छ, कान्ति पनि राम्रो हुन्छ । त्यसपछि कान्ति घट्दै जान्छ । ४० वर्षपछि स्मरणशक्ति कम हुन थाल्छ । ५० वर्षपछि शरीर शिथिल हुँदै जान्छ, ६० वर्षपछि दृष्टि कमजोर हुँदै जान्छ । ७० वर्षपछि वीर्य कम हुन थाल्छ, ८० वर्षपछि पराक्रम रहँदैन, ९० वर्षपछि बुद्धिको ह्रास हुनथाल्छ, १०० वर्ष पुगेपछि हात-गोडा आदि कर्मेन्द्रियहरूले काम गर्न छोड्छन्, १२० वर्ष पुग्दासम्म शरीर छोडिसक्छ ।

बाल्यावस्थामा कफ, जवानीमा पित्त र वृद्ध अवस्थामा वायुको प्रकोप बढी हुने हुनाले यस कुरालाई ध्यानमा राखी चिकित्सा गर्नुपर्छ । बालक र वृद्धलाई कडा

जुलाफ अथवा वमन हुने औषधी दिनुहुँदैन । दूध खाने बालकलाई कुनै औषधी दिंदा कम मात्रामा दिनुपर्छ, नत्र त्यस्ता बालकहरूलाई औषधी नदिएर दूध खुवाउने आमालाई नै औषधी खुवाए राम्रो हुन्छ । साना बालकहरूलाई पहिलो महिनामा आमाको दूधमा अथवा महमा वा गाईको घिउमा मिसाएर औषधी दिनुपर्छ ।

देशको विचार

मानिस जुन ठाउँमा जन्मेको अथवा हुर्केको हुन्छ त्यस ठाउँको भौगोलिक अवस्था, जलवायु र खानपिन गरिने अन्नादि अनुसार स्वास्थ्य उत्तम वा मध्यम हुनसक्छ । कुनै मानिस जन्मेको वा हुर्केको ठाउँलाई देश भनिन्छ । त्यस्तै सम्बन्धित व्यक्तिको शरीरलाई पनि देश भनिएको छ । देश तीन प्रकारका हुन्छन् - (१) आनूप, (२) जांगल र (३) साधारण ।

(क) आनूप देश - जहाँ धेरै तलाउहरू, छाँगाहरू, ताल, नदी, नाला हुन्छन्, वर्षा बढी भइरहन्छ, अनेक पर्वत र ठुल्ठुला रुखहरू हुन्छन्, कोमल र सुन्दर शरीर हुने नरनारीहरू बढी हुन्छन्, जहाँ कफ र वायुसम्बन्धी रोगहरू बढी देखिन्छन् त्यस देशलाई आनूप देश भनिन्छ । आनूप देश कफ-प्रधान हुन्छ, त्यहाँ हुने जीवहरू, औषधीहरू, अन्न जल आदि पनि कफप्रधान हुन्छन्, बङ्गाललाई यस देश अन्तर्गत लिन सकिन्छ ।

(ख) जांगल देश - सुश्रुतसंहिता अनुसार जुन ठाउँ अग्लो - होचो नभएर प्रायः समतल हुन्छ, जहाँ काँडाघारी प्रशस्त हुन्छन्, वर्षा निकै कम मात्रामा हुन्छ, जलाशयहरू पनि कम मात्रामा हुन्छन्, तातो हावा बढी लाग्छ, साना साना डाँडासम्म हुन्छन् र जहाँ पातलो र बलियो शरीर भएका मानिस बढी हुन्छन् त्यसलाई जाङ्गल देश भनिन्छ । त्यस्ता ठाउँमा वायु र पित्तसम्बन्धी रोगहरू बढी हुन्छन् । त्यहाँ हुने जीव-जन्तु, अन्न औषधी आदि वायुप्रधान हुन्छन् । राजपूताना यस अन्तर्गत पर्छ ।

(ग) साधारण देश - जुन देशमा आनूप र जांगल देशको लक्षण बढी मात्रामा पाइन्छ, जहाँ धेरै खुल्खा वा चिसोपना हुँदैन, जल ठिक्क मात्रामा हुन्छ, वर्षा धेरै हुँदैन तर मारवाड जस्तो सुख्खा पनि हुँदैन त्यस्तो देश साधारण हुन्छ । युक्त प्रान्त (उत्तर प्रदेश आदि) यस अन्तर्गत पर्छन् । यस्तो देश समदोषयुक्त (सबै दोषहरूको सन्तुलन मिलेको) हुन्छ । त्यहाँ हुने जीवजन्तु, अन्न, औषधी सबै समदोषयुक्त (स्वस्थ) हुन्छन् । चिकित्सा गर्दा रोगी कुन देशसँग सम्बन्ध राख्छ र त्यस देशमा कुन दोष बलवान् हुन्छ यो पनि ध्यानमा राख्नुपर्छ ।

ऋतुविचार

१ वर्षको अवधिभित्र २-२ महिनाका जम्मा ६ ऋतुहरू हुन्छन् । साउनदेखि पुसमहिनासम्मका ६ महिनाहरूको अवधिलाई दक्षिणायन भनिन्छ । माघदेखि असारसम्मको

अवधिलाई उत्तरायण भनिन्छ । दक्षिणायनमा तीन ऋतु र उत्तरायणमा तीन ऋतु हुन्छन् । दक्षिणायनका तीन ऋतुमा वर्षा, शरद र हेमन्त पर्छन् । ती ऋतुहरूमा क्रमशः साउन-भदौ, असोज-कार्तिक, मार्ग- पुष यी महिनाहरू पर्छन् । दक्षिणायनमा चन्द्रमा बलवान् हुन्छन्, अमिलो-नुनिलो र गुलियो यी तीन रसहरू कर्मले बलवान् हुन्छन् (आफ्नो पोषण गर्ने काम राम्ररी गर्छन्) । प्राणीहरूको बल पनि उत्तरोत्तर एकपछि अर्को ऋतुमा बढ्दै जान्छ ।

उत्तरायणका तीन ऋतुमा शिशिर, वसन्त र ग्रीष्म पर्छन् । ती ऋतुहरू अन्तर्गत क्रमशः माघ-फागुन, चैत-वैशाख, ज्येष्ठ र असार महिना हुन्छन् । उत्तरायणका तीन ऋतुहरूमा सूर्य बलवान् हुन्छन्, पिरो, टर्रो र तितो यी रसहरू कर्मले बलवान् हुन्छन्, उत्तरोत्तर प्राणीहरूको बल घटेर जान्छ । चन्द्रमाले पृथ्वीलाई रसिलो बनाउँछन्, सूर्यले त्यस रसलाई सुकाउँछन्, वायुले प्राणीहरूको पालन गर्छन् ।

(क) दोषहरूको सञ्चय, प्रकोप र शान्ति - ग्रीष्म ऋतु (वैशाख-जेष्ठ) भरि वायुको सञ्चय हुन्छ, प्रावृट्मा (आषाढ-श्रावण) प्रकोप हुन्छ र शरद् (कार्तिक -मार्ग) ऋतुमा शान्ति (शमन) हुन्छ ।

पित्तको वर्षा ऋतुमा (भाद्र-असोज) सञ्चय हुन्छ, शरद् (कार्तिक-मार्ग)मा प्रकोप हुन्छ र हेमन्त ऋतुमा शान्ति हुन्छ ।

कफको शिशिर ऋतुमा सञ्चय, वसन्तमा प्रकोप र ग्रीष्म ऋतुमा शमन हुन्छ ।

माधव निदान अनुसार कुपित पित्तबाट हुने रोगको शान्ति हेमन्त ऋतुमा स्वतः हुन्छ, कफबाट हुने रोगको शान्ति ग्रीष्म ऋतुमा आफैं हुन्छ, कुपित वायुबाट हुने रोगको शान्ति शरद् ऋतुमा आफैं हुन्छ ।

वंगसेन अनुसार वर्षा ऋतुमा वायु कुपित हुन्छ, शरद्मा पित्त कुपित हुन्छ र वसन्तमा कफ कुपित हुन्छ । फेरि हेमन्तमा वायु कुपित हुन्छ अर्थात् वर्षा, हेमन्त र शिशिरमा वायु कुपित हुन्छ, शरद् र ग्रीष्ममा पित्त र वसन्त ऋतुमा कफ कुपित हुन्छ ।

(ख) दिन र रातमा ऋतुविभाग - दिनको पहिलो भाग वसन्त अर्थात् कफको कोप हुने समय हो । दिनको दोस्रो प्रहर ग्रीष्म, तेस्रो प्रहर प्रावृट् र चौथो प्रहर वर्षा ऋतु हुन्छ । आधी रात शरद् ऋतुको समय हुन्छ र त्यसमा पित्तको प्रकोप हुन्छ । रातको पछिल्लो भाग हेमन्त हो । सामान्य ऋतु विभाग अनुसार माघ-फागुन शिशिर, चैत-वैशाख वसन्त, ज्येठ-असार ग्रीष्म, श्रावण-भाद्र वर्षा, असोज-कार्तिक शरद् र मार्ग-पौष हेमन्त ऋतु अन्तर्गत पर्छन् । दोषहरूको सञ्चय, प्रकोप र शमन हुने समयको आधारमा विद्वान्हरूले ऋतुहरूको विभाग यसरी गरेका छन् - वैशाख-जेठ ग्रीष्म,

असार-श्रावण प्रावृट्, भाद्र-असोज वर्षा, कार्तिक-मार्गशीर्ष शरद्, पौष-माघ हेमन्त, फागुन-चैत्र शिशिर ।

वंगसेनको मतानुसार दिनको प्रथम भाग कफको प्रकोपको समय, मध्य भाग पित्तको (प्रकोप हुने) समय, र अन्तिम भाग वायुको समय हुन्छ । त्यस्तै रातको प्रथम भाग कफको समय, मध्य भाग पित्तको समय र अन्तिम भाग वायुको समय हुन्छ । त्यस्तै बिहानको ६ बजेदेखि १० बजेसम्म सदा वसन्त ऋतु रहन्छ । यसै भएर उक्त समयमा कफ कुपित रहन्छ । दिनको १० बजेदेखि २ बजेसम्म सदा ग्रीष्म (गर्मीजस्तो) ऋतु रहन्छ, उक्त समयमा पित्त कुपित हुन्छ । दिनको २ बजेदेखि साँझको ६ बजेसम्म वर्षाकाल जस्तो हुनाले वायु कुपित हुने समय हुन्छ । यही रीतले रातको तीन खण्डको विषयमा बुझ्नुपर्छ अर्थात् क्रमशः कफ, पित्त र वायुको प्रकोप हुने समय सम्झनुपर्छ । यो विभाग सरल तथा उपयोगी छ ।

(ग) ऋतुहरूमा मनुष्यको अग्निबल – शीतकाल अर्थात् जाडोमा शीतल वायुको स्पर्शले शरीरभित्र जमेर बसेको प्राणीहरूको अग्नि बलवान् हुन्छ । त्यसैले शीत कालमा मानिसले गुरु द्रव्य (ढिलो गरी पच्ने आहार) तथा ठूलो मात्रा पचाउन सक्ने हुन्छ । अर्थात् यस मौसममा अग्नि तेज हुन्छ । जाडोमा बलवान् अग्निलाई यथेष्ट आहार मिलेन भने त्यसले शरीरमा भएको रस धातुलाई सुकाइदिन्छ । रस सुकेर जाँदा शरीर रुखो हुन्छ, अनि शरीरको वायु कुपित हुन्छ । त्यसै भएर मानिसले शीतकालमा चिल्लो भएको (दूध, दही, घिउ आदि), अमिलो, नुनिलो र गुलियो रस भएको, शरीरको पोषण गर्ने विभिन्न किसिमका अन्नका परिकारहरू (चामल, दाल, तरकारी, आदि), मांसहरू मद्य र मह आदि विधिपूर्वक सेवन गर्नुपर्छ ।

हेमन्त-शिशिर ऋतुमा शीतका कारण सञ्चित (जम्मा) भएर रहेको कफ वसन्त ऋतुको सूर्यको किरण पर्दा पग्लन्छ र त्यसले अग्निलाई मन्द बनाउँछ । यसैले वसन्त ऋतुमा अनेक किसिमका कफजन्य रोगहरू लाग्ने गर्छन् ।

ग्रीष्म ऋतुमा सूर्यको ताप र भयानक गर्मीका कारण मानिसको शरीर दुर्बल हुन्छ, जठराग्नि पनि कमजोर हुन्छ ।

गर्मीको मौसममा शिथिल भएको अग्नि वर्षा ऋतुमा दूषित वायु आदिका कारण झन् दुर्बल हुन्छ । वर्षा ऋतुमा आकाशबाट वर्षा भइरहने, पृथ्वीबाट वाफ निस्कने र पानी अमिलो (दूषित, भारी) भएर जाने हुनाले अग्निको बल कम हुन्छ र वायु कुपित हुन्छ । वर्षा ऋतुपछिको शरद् ऋतुमा सूर्यको किरणको गर्मी बढ्दा पहिलेदेखि सञ्चित भएको पित्त कुपित हुन्छ ।

(घ) कुन मौसममा कुन दिशाको हावा राम्रो हुन्छ–

– शिशिर ऋतु अर्थात् माघ-फागुनमा पूर्वको हावा राम्रो हुन्छ ।

- हेमन्त अर्थात् मार्ग र पौष महिनामा आग्नेय दिशाको हावा राम्रो हुन्छ ।
- वसन्त ऋतु अर्थात् चैत्र-वैशाख महिनामा दक्षिणको हावा राम्रो हुन्छ ।
- ग्रीष्म ऋतु (ज्येष्ठ-असार)मा नैर्ऋत्यको हावा राम्रो हुन्छ ।
- शरद् ऋतु (असोज-कार्तिक)मा वायव्य दिशाको हावा राम्रो हुन्छ ।
- वर्षा ऋतु (श्रावण-भाद्र)मा पश्चिमको हावा राम्रो हुन्छ ।

मार्ग, पौष, कार्तिक, माघ, फागुन, चैत्र र वैशाखमा उत्तरको हावा पनि राम्रो हुन्छ ।

(ङ) ऋतुसन्धि - २-२ ऋतुहरूको अन्तिम तथा सुरुका ७-७ दिनलाई ऋतुसन्धि भनिन्छ । अर्थात् पूरा हुन लागेको ऋतुको अन्तिम सप्ताह र नयाँ लाग्ने ऋतुको पहिलो सप्ताह गरी जम्मा १४ दिनको समयलाई ऋतुसन्धि भनिन्छ । ऋतुसन्धिको १४ दिनमा चलिरहेको ऋतुको विधिलाई क्रमशः छोड्दैजानुपर्छ र आउने ऋतुको विधि सेवन गर्दैजानुपर्छ । अर्थात् ग्रीष्म ऋतुका अन्तिम ७ दिनहरूदेखि ग्रीष्म कालका आहार-विहारहरूको क्रमशः त्याग गर्दै वर्षा ऋतुमा अनुकुल आहार-विहारहरूको सेवन गर्दै जानुपर्छ ।

(च) यमदंष्ट्रा (प्राणनाशक समय) - कार्तिक महिनाका अन्तिम आठ दिन र मार्गको आरम्भ हुने आठ अर्थात् कार्तिक अष्टमीबाट मार्ग कृष्ण अष्टमीसम्मको १६ दिनलाई यमदंष्ट्रा अर्थात् यम (काल)को बंगारा भन्छन् । उक्त दिनहरूमा जसले थोरै खान्छ त्यो निरोगी रहन्छ । जसले बढी खान्छ अथवा हेमन्त ऋतुमा वर्णित पथ्य-अपथ्यको विचार गर्दैन, त्यसले भयानक रोग लागी दुःख भोग्छ ।

दोषहरूको वृद्धि

दोषहरूको वृद्धि दुई किसिमको हुन्छ - चय र कोप । दोषको आफ्नो मुख्य स्थानमा हुने वृद्धिलाई चय भनिन्छ, जस्तै - पक्वाशयमा वायु बढेर जम्मा हुनु, पित्ताशयमा पित्त बढ्नु आदि । दोषको निकै मात्रामा वृद्धि भएर त्यो आफ्नो स्थानभन्दा पर अरू ठाउँमा पनि पुग्ने र आफ्नो विशेष लक्षण देखाउने अवस्थालाई कोप भनिन्छ ।

(क) वायुको कोपका कारणहरू - रुखा, हलुका र शीतल पदार्थहरूको बढी मात्रामा र सधैँ सेवन गर्नु, टर्रो, तितो, कुरा बढी खानु, बढी परिश्रम तथा मैथुन गर्नु, मल-मूत्र, छिक्का र हाईको वेग रोक्नु, रातमा जाग्राम बस्नु, विषम आसन अर्थात् शरीर सोझो नराखी निहुरेर वा टेढो -मेढो हुने गरी बस्ने, हिंड्ने गर्नु, बढी वमन वा दिसा हुनु, शरीरबाट रगतको स्राव हुनु, घबडाहट, डर र चिन्ता बढी हुनु यी सबै वायुको वृद्धि तथा कोपका कारण हुन्छन् । यी सबै

मानिसको आहार-विहार सम्बन्धी कारण हुन् । यी बाहेक प्राकृतिक कारण पनि हुन्छन् - जस्तै वातावरण अतिशीत हुनु वायुको वृद्धि तथा कोपको कारण हुनसक्छ ।

(ख) वायुको वृद्धिका लक्षणहरू - त्वचा (छाला) कठोर हुनु, कालो हुनु, दुब्लो देखिनु, अंगहरू फर्फराउनु, तातो आहार-विहारको इच्छा, निन्द्रा लाग्नु, बल घट्दै जानु, मलमा कडापन आउनु यी लक्षण हुन् ।

(ग) कुपित वायुको शमन गर्ने उपाय - गुलियो, अमिलो, नुनिलो र गरम द्रव्यको प्रयोगद्वारा कुपित वायुको शमन गर्न सकिन्छ । गहुँ, मुगी, घिउ, नयाँ माषको दाल, लशुन, दाख, गुलियो अनार, पाकेको आँप, अमला, कुठ, गोमूत्र (गहुँत) हर्रो, मिश्री-चिनी, गाईको दूध, सिंधे नुनको सेवन गर्नाले वायुको शमन हुन्छ । तेलको मालिस गर्नु, पसिना आउने गरी आगो वा घाममा बस्नु, कम हावा लाग्ने ठाउँमा सुत्नु, टाउकोमा तेल लगाउनु, मनतातो पानी खानु यी सबै वायुको कोप शान्त गर्ने उपायहरू हुन्छन् ।

(घ) वायुको कोप हुने समय - वृद्ध अवस्थामा वायुको चाप रहन्छ, अतः यस अवस्थामा प्रायः वायुको कोप हुन्छ । जो सावधान हुन्छन्, वायुको कोप गराउने आहार-विहारबाट बच्छन् र वायुको शमन गर्ने आहार-विहारको सेवन गर्छन् उनीहरू सुखी रहन्छन् । दिनको अन्त तथा रातको अन्त अर्थात् दिनको २ बजे तथा रातको २ बजेपछि वायुको कोपको समय हुन्छ । भोजन पचीसकेपछि पनि वायुको कोप हुन्छ ।

वर्षा याम वायुको कोप हुने प्रधान समय हो । हेमन्त र शिशिर ऋतुमा पनि वायुको कोप हुन्छ र साथै शरीरमा रुखापन रहन्छ । एक ऋतुको अन्तिम ८ दिन र दोस्रो ऋतुको आरम्भको आठ दिन अर्थात् ऋतुसन्धिमा वायु सविष अर्थात् विषालु हुन्छ ।

(ङ) पित्तकोपका कारणहरू - बढी पिरो र अमिलो कुराको सेवन गर्नु, गहत, सर्स्यू, आलस, माछा, चौपायाहरूको मासु, अमिलो दही, काँजी, सबै किसिमको मदिरा तथा अमिलो फल आदिको बढी सेवन गर्नु पित्तको कोपको कारण हुन्छ । त्यस्तै बढी घाम वा आगोको सम्पर्कमा रहनु, अतिमैथुन गर्नु, उपवास बस्नु यी पनि पित्तकोप गर्ने कारण हुन्छन् ।

(च) पित्तको प्रकोप हुने समय - यौवन अवस्थामा पित्तको बल बढ्छ । दिनको मध्याह्न र आधा रातमा, भोजन पच्ने समयमा, गर्मीको मौसम र शरद् ऋतुमा विशेष रूपमा पित्त कुपित हुन्छ ।

(छ) पित्तकोपको लक्षण - शरीरमा आगोले पोलेको जस्तो जलन हुन्छ, धुवाँ निस्केको जस्तो लाग्छ, अमिलो डकार आउँछ, भित्रपट्टि डाह भएजस्तो हुन्छ, पसिना बढी आउँछ, शरीरबाट दुर्गन्ध आउँछ, रातो रातो डाबर अथवा खटिरा

आउँछन्, मुखको स्वाद तितो हुन्छ, आँखाको अगाडि हरियो पहेंलो देखिन्छ, दिसा पातलो हुन्छ, प्रलाप अर्थात् बर्बराउने हुन्छ ।

(ज) पित्तको शान्ति हुने उपाय – कुपित पित्तको शोधनका लागि विरेचन अर्थात् जुलाफ लगाउनु सर्वोत्तम उपाय हुन्छ । विरेचन गर्ने औषधीले आमाशयमा पुगेर विकार गर्ने पित्तरूपी मूललाई पूर्णरूपमा नष्ट पार्छ ।

पित्तको शमनका लागि देश, काल, परिस्थिति अनुसार मधुर, तिक्त, कषाय (टर्रो) रस भएका शीतल औषधीहरूको सेवन गर्नुपर्छ । मुनक्का, केरा, अमला, अनार, छोकडा, काँक्रो, करेला, पुरानो चामल, गहुँ, मिश्री, चिनी, मख्खन, जौ, चना, मुँग, मुसुरो, कुठकी, निशोथ, पित्तपापडा, त्रिफला, शतावरी र अन्य मिठा कुराहरूको सेवन गर्नुपर्छ । जुनेली रातमा खुला ठाउँमा बस्नु, नदीको किनारमा बस्नु, स्नान गर्नु, मोतीको माला लगाउनु, असल मित्र, पत्नी र सन्तानको मिलन हुनु यी पित्तको शमन गर्ने उपाय हुन् ।

कफकोपका कारणहरू

गुलियो, अमिलो, नुनिलो रस भएको शीतल, चिल्लो तथा गुरु (ढिलो गरी पच्ने) आहार जस्तै चामल, गहुँ, मासको दाल, तिल, दूध, दही, खिचडी, खिर, माछा, बोसो, सिंघाडा, अम्बा, गुलिया अरू फलहरू (केरा, कटहर आदि) बढी मात्रामा सेवन गर्नु, एक समय भोजन गरेको अन्न नपच्दै अर्को पटक भोजन गर्नु यी कफ कोप हुने कारण हुन् । त्यस्तै दिनमा सुत्ने बानी, बिना काम गरी बसी राख्नु, आलस्य गर्नु कफको प्रकोप हुने कारण हुन्छन् । शीतल ठाउँ र बढी शीत हुने समयमा कफको प्रकोप हुन्छ ।

(क) कफको प्रकोप हुने समय – कफ शीत कालमा विशेष गरी वसन्त ऋतुमा कुपित हुनसक्छ । त्यस्तै दिनको पहिलो भाग र रातको पहिलो भाग अर्थात् बिहान र बेलुका (६–१० बजेसम्म) कफ कुपित हुने समय हो । बाल्यावस्था अर्थात् १६ वर्षसम्म कफ बढ्ने र कुपित हुने मुख्य समय हो ।

(ख) कफको वृद्धिको लक्षण – शरीरमा कफ बढेर गएको समयमा आँखा, समस्त शरीरका अंगहरू तथा मल–मूत्रहरूको रङ्ग सेतो हुन्छ, जाडो लाग्छ, शरीरमा भारीपना महसूस हुन्छ, अवसाद (खिन्नता), तन्द्रा (उँघ्ने) र निद्रा बढी हुन्छ, जोर्नीहरूमा खुकुलोपन आदि लक्षण हुन्छ ।

(ग) कफ कुपित भएको अवस्थामा – भोजन नगरे पनि पेट भरेको भान हुन्छ, निद्रा तथा आलस्य बढी लाग्छ, मुखको स्वाद गुलियो हुन्छ, मुखमा बारम्बार पानी भरिएर आउँछ, डकार आइरहन्छ, बढी दिसा लाग्ने हुन्छ, गलामा कफ टाँसिएको जस्तो लाग्छ, अग्नि मन्द हुन्छ ।

(घ) कफको शान्ति (शमन) गर्ने उपायहरू – कुपित कफको उपचारका लागि वमन गराउनु सबैभन्दा उत्तम उपाय हो । वमन गराउने औषधीले आमाशयमा गएर विकार उत्पन्न गर्ने कफलाई जरैदेखि उखेल्ने वा निकाल्ने काम गर्छ ।

कफको शमनका लागि पिरो, टर्रो, तितो, तीक्ष्ण, तातो र सुख्खा पदार्थको प्रयोग गर्नुपर्छ । शिरोविरेचन (नसको प्रयोगद्वारा शिरका अंगहरूमा रहेका विकारहरू निकाल्ने उपाय) तथा व्यायाम, परिश्रम गराउनु पर्छ । कफ कुपित भएको अवस्थामा साठी चामल, चना, मुँगको दाल, लशुन, प्याज, नीम, निशोथ, कुठकी र त्रिफलाको सेवन गर्नु, बढी परिश्रमको काम गर्नु, तातो-न्यानो कपडाको प्रयोग गर्नु, कम मात्रामा पानी पिउनु, दतिउनको प्रयोग र कुल्ला गरेर मुख सफा पार्नु, पानीमा मह मिसाएर सेवन गर्नु, न्यानो घरमा बस्नु यी सबै पथ्य हुन्छन् ।

३. दोष, धातु र मलहरूको वृद्धि एवं क्षयका लक्षणहरू

दोषहरूको वृद्धि

(क) वायुको वृद्धिको लक्षण – वायुको वृद्धि भएको बेलामा त्वचा (छाला)मा कठोरता, दुब्लोपन, कालोपन, अंगहरू फड्किनु, तातो खान-पिन र वातावरणको चाहना हुनु, मल कडा हुनु यी लक्षणहरू हुन्छन् ।

(ख) पित्तको वृद्धिको लक्षण – पित्तको वृद्धि भएमा प्रत्येक वस्तु पहेंलो देखिनु, शरीरको ताप बढ्नु (सन्ताप), शीतल आहार-विहारको चाहना हुनु, निद्रा कम हुनु, बलको ह्रास हुनु, मल-मूत्र तथा आँखा पहेंला हुनु यी लक्षणहरू हुन्छन् ।

(ग) कफको वृद्धिको लक्षण – शरीर चिसो हुनु, भारी हुनु, आलस्य, तन्द्रा र निद्रा बढी हुनु, मल – मूत्र, आँखा सेता हुनु यी सबै लक्षण देखिन्छन् ।

धातुहरूको वृद्धि

(घ) रस धातुको वृद्धिको लक्षण – रस धातुको वृद्धि भएमा वाकवाकी लाग्ने, मुखबाट च्याल चुहुने तथा कफ बढ्दा हुने लक्षणहरू हुन्छन् ।

(ङ) रक्त धातुको वृद्धिको लक्षण – रगतको वृद्धि हुँदा शरीर तथा आँखामा रातोपन हुन्छ, नसाहरू रगत बढी भएर फुल्छन् ।

(च) मांस वृद्धिको लक्षण – मांसको वृद्धि भएमा कम्मर, काँध, गाला, ओठ, लिङ्ग, हात र तिघ्रा यी अंगहरू मोटाउँछन् र शरीर भारी हुन्छ ।

(छ) मेद वृद्धिको लक्षण – मेद अर्थात् बोसोको वृद्धि भएमा शरीरमा चिल्लोपन बढ्छ, पेट र कम्मर ठूलो हुन्छ, मानिस मोटो देखिन्छ, अलिकति परिश्रम गर्दा पनि बढी थकाई लाग्ने, सास बढ्ने पसिनामा दुर्गन्ध आउने लक्षणहरू हुन्छन् ।

(ज) अस्थि वृद्धिको लक्षण – अस्थि धातु बढ्दा हाडहरूको आकार बढ्ने, दाँतहरू ठूला हुने हुन्छ ।

(झ) मज्जा वृद्धिको लक्षण – मज्जाको वृद्धि भएमा आँखा र शरीरमा भारीपन हुन्छ ।

(ञ) शुक्र वृद्धिको लक्षण – वीर्यको वृद्धि भएमा मैथुनको चाहना बढ्ने, वीर्यको स्राव बढी हुने अथवा वीर्यको अश्मरी बन्न जाने हुन्छ ।

उपधातुहरूको वृद्धि

(क) आर्तव वृद्धिको लक्षण – आर्तवको वृद्धि भएमा महिलाहरूको शरीरमा बढी थकान हुन्छ, मासिक रजस्राव बढी हुन्छ । कमजोरी हुन्छ ।

(ख) दुग्ध वृद्धिको लक्षण – दूध बढी उत्पन्न भएमा सुत्केरी महिलाले स्तन बढेर दुख्न थाल्छ र दूध आफैं चुहुन्छ ।

(ग) गर्भको वृद्धिको लक्षण – गर्भको विशेष वृद्धि भएमा पेट निकै ठूलो भएर असजिलो हुन्छ, शरीरमा शोथ हुनसक्छ ।

मलहरूको वृद्धि

(क) विष्ठाको वृद्धिको लक्षण – विष्ठा (दिसा)को वृद्धि भएमा खाएको कुरा नपच्ने, पेट दुख्ने, शूल हुने र भारी हुने हुन्छ ।

(ख) मूत्र वृद्धिको लक्षण – मूत्रको वृद्धि हुँदा बारम्बार पिशाव लाग्ने जननेन्द्रिय तथा मूत्रमार्गमा दुख्ने वा पोल्ने हुन्छ ।

(ग) पसिना वृद्धिको लक्षण – पसिनाको वृद्धि भएमा छालामा चिलाउने र शरीरमा दुर्गन्ध आउने हुन्छ ।

दोषहरूको क्षय

(क) वायुको क्षयको लक्षण – शरीरको चेष्टा (हलचल) मन्द हुन्छ, शरीर शिथिल हुन्छ, मन उदास वा दुःखी हुन्छ, बोली कम हुन्छ, स्मरणशक्ति घट्छ, प्रसन्नता पनि हुँदैन ।

(ख) पित्तको क्षयको लक्षण – शरीरमा पित्तको क्षय भएमा अग्नि मन्द हुन्छ, शरीरको ताप घट्छ र कान्तिको पनि ह्रास हुन्छ । वायुको घटबढ भएजस्तै विभिन्न कारणहरूबाट पित्तको पनि घटबढ हुनसक्छ ।

(ग) कफको क्षयको लक्षण – शरीरमा कफको कमी भएमा शरीर रुखो भएको देखिन्छ, शरीरभित्र दाह (जलन) हुन्छ, आमाशय आदि अंग र शिरमा शून्यता अर्थात् खाली भएको भान हुन्छ, शरीरका जोर्नीहरू शिथिल हुन्छन्, बढी प्यास लाग्छ, शरीर दुर्बल हुँदै जान्छ, निद्रा लाग्न छोड्छ ।

धातुहरूको क्षय

(क) रसक्षयको लक्षण – रस धातुको क्षय भएमा हृदयमा मन्थन गरेजस्तो तीव्र वेदना हुन्छ । मुटुको स्पन्दन बढेर आउँछ , कडा वा ठूलो स्वर सहन सक्दैन, एक्लोपनको अनुभव हुन्छ । हल्का परिश्रम गर्दा पनि आँखाको अगाडि अँध्यारो देखिन्छ ।

(ख) रक्तक्षयको लक्षण – शरीरमा रगतको कमी भएमा छाला खस्रो हुँदै जान्छ, अमिलो र चिसो कुरा खाने चाहना हुन्छ । नसाहरूमा खुकलोपना हुन्छ ।

(ग) मांसक्षयको लक्षण – मांस धातु (मासु)को क्षय वा कमी हुँदा शरीरमा कम्मर, गाला, ओठ, तिघ्रा, पिडौँला, छाती, पेट, तथा घाँटीको भाग सुकेर पातलो हुँदैजान्छ । ती अङ्गहरूमा दुख्ने हुन्छ । अङ्ग प्रत्यङ्गहरू थाक्छन्, नाडीहरूमा शिथिलता उत्पन्न हुन्छ ।

(घ) मेद क्षयको लक्षण – मेद अर्थात् बोसोको क्षय हुँदा फियो बढ्छ, जोर्नीहरूमा सुख्खापन हुन्छ, जोर्नीहरूमा दुख्ने हुन्छ, दुवै आँखाहरू थाक्ने हुन्छन् ।

(ङ) अस्थिक्षयको लक्षण – हाडहरूको क्षय हुँदा हाडहरू दुख्ने, नङ् र दाँतहरू भाँचिने हुन्छन् । शरीरमा रुखोपन देखिन्छ । दाँत, केश र नङ्हरू झर्छन् ।

(च) मज्जाक्षयको लक्षण – मज्जाको क्षय हुँदा जोर्नी र हाडहरूमा दुख्ने भइरहन्छ, हाडहरू दुर्बल हुन्छ, वायुको वृद्धि भइरहन्छ, वीर्य कम भएर जान्छ ।

(छ) शुक्रक्षयको लक्षण – शुक्र अर्थात् वीर्यको क्षय हुँदा लिङ्ग तथा अण्डकोषहरूमा दुख्ने भइरहन्छ, मैथुनको शक्ति रहन्छ, वीर्य ढीलो गरेर तथा कम मात्रामा निस्कन्छ । कहिलेकाहीं वीर्य नै नआउने अथवा रगत मिसिएर आउने हुनसक्छ ।

उपधातुहरूको क्षय

(क) आर्तवक्षयको लक्षण – महिलाहरूको मासिक स्रावको रूपमा जाने रगतको क्षय भएमा समयमा मासिक स्राव (महिनावारी) हुँदैन, ढिलो हुन्छ अथवा चाँडै चाँडै (कम समयको अन्तरमा) हुन्छ, रगत कम मात्रामा आउँछ र योनिमा पीडा हुन्छ ।

(ख) दुग्ध क्षयको लक्षण – सुत्केरी महिलाको स्तनमा आउने दूध कम भएमा स्तनहरू पुष्ट नभएर झोलिन्छन्, तिनबाट दूध आउँदैन ।

(ग) गर्भक्षयको लक्षण – गर्भको क्षय अर्थात् समय अनुसार राम्रो विकास हुन नसकेको अवस्थामा गर्भ पेटमा घुम्दैन वा कम घुम्छ, पेट पनि धेरै बढ्दैन ।

(घ) ओजक्षयको लक्षण – ओजको क्षय भएमा प्राणी सदा भयभीत हुन्छ, त्यसको शरीर कमजोर हुन्छ, हर समय चिन्ता भइरहन्छ, सारा इन्द्रियहरू व्यथित (आफ्नो काम राम्ररी गर्न नसक्ने) हुन्छन्, शरीर कान्तिरहित र रुखो हुन्छ ।

सुश्रुत अनुसार ओजको विकार तीन किसिमको हुन्छ –

(१) विस्रंस-पतन (२) व्यापत् – बिग्रेर जानु (३) क्षय– कम हुँदै जानु । ओजको पतन भएको बेलामा जोर्नीहरू शिथिल हुन्छन्, अङ्गहरू थाक्छन्, दोषहरूको स्राव भइरहन्छ, शरीरका विभिन्न कामहरूमा अवरोध हुन्छ – ती अङ्गहरूले आफ्नो काम राम्ररी गर्न सक्दैनन् ।

ओज बिग्रेको अवस्थामा शरीर भारी हुन्छ, शरीर गल्ने, उँघ्ने, बढी निद्रा लाग्ने हुन्छ ।

ओजको क्षय हुँदै गएपछि मांसक्षय (मासु सुक्दै जाने), मूर्च्छा पर्ने, बर्बराउने हुन्छ र व्यक्तिको मृत्यु हुन्छ । **ओजक्षयको कारण –**

बढी क्रोध गर्नाले, पीर गर्नाले, भोक लागेको बेलामा भोजन नमिल्नाले, बढी परिश्रम गर्नाले ओजको क्षय हुन्छ । **मलहरूको क्षय**

(क) विष्ठाको क्षयको लक्षण – विष्ठा अर्थात् दिसाको क्षय भएमा मुटुको नजिक र कोखामा दुख्ने हुन्छ, डकार आउँछ, पेटमा वायु घुमेको भान हुन्छ ।

(ख) मूत्रक्षयको लक्षण – मूत्रको क्षय भएमा वस्तिस्थान अर्थात् तल्लो पेट र पिसाबको थैलीमा दुख्ने हुन्छ, पिशाव कम मात्रामा आउँछ, पिसाबको रङ्ग मैलो धमिलो हुनजान्छ ।

(ग) स्वेदक्षयको लक्षण – स्वेदको क्षय अर्थात् पसीना कम भएमा छालामा सुख्खापन आउँछ, रौंहरूको जरामा कडापन हुन्छ, छालामा छोएको थाहा हुँदैन, पसिना आउँदैन ।

४. रसहरूको परिचय

स्वास्थ्य राम्रो राख्न सधैँ खाइने आहार र रोग लागेको बेलामा तिनलाई निको पार्न प्रयोग गरिने औषधीहरू चिन्ने र प्रयोग गर्ने आधार त्यसमा भएको रस अर्थात् स्वाद मुख्य हुन्छ । आयुर्वेदमा रसको संख्या ६ ओटा मानिएको छ – मधुर, अम्ल, लवण, कटु, तिक्त र कषाय । यी सबैको समूहलाई षड्रस भनिन्छ ।

मधुरको अर्थ गुलियो हुन्छ । ६ ओटा रसहरूमा मधुर रस उत्तम हुन्छ । यसको उत्पत्ति पृथ्वी र जल तत्त्वबाट हुन्छ । पृथ्वीको गुण भारीपन र जलको गुण चिल्लोपन (स्नेह) हो । त्यसैले मधुर रस पनि भारी तथा चिल्लो हुन्छ । यो रस शीतल हुन्छ र यसले बढेको वायु र पित्तलाई कम गराउँछ ।

अम्लको अर्थ अमिलो हुन्छ । यसको उत्पत्ति पृथ्वी र अग्निबाट भएको हो । अग्नि उष्ण (तातो) हुनाले अम्ल रस पनि उष्ण हुन्छ । यसले बढेको वायुलाई कम पार्छ तर पित्त र कफलाई बढाउँछ ।

लवणको अर्थ नुनिलो हुन्छ । यसको उत्पत्ति जल र अग्निबाट हुन्छ । यसको गुण उष्ण (तातो) हुन्छ । यसले वायुको शमन गर्छ, पित्त र कफ बढाउँछ ।

कटुको अर्थ पिरो हो । यसको उत्पत्ति वायु र अग्निबाट हुनाले यसको गुण उष्ण हुन्छ । यसले कफलाई घटाउँछ, वायु र पित्तलाई बढाउँछ ।

तिक्तको अर्थ तितो हो । यसको उत्पत्ति वायु र आकाशबाट हुन्छ । अतः यसको गुण शीत र लघु हुन्छ । यसले पित्त र कफलाई घटाउँछ तर वायु बढाउँछ ।

कषायको अर्थ टर्रो हुन्छ । यसको उत्पत्ति पृथ्वी र वायुबाट हुन्छ । अतः यो गुणमा रुक्ष (रुखो), शीतल र भारी हुन्छ । यसले वायु बढाउँछ, पित्त र कफलाई घटाउँछ । बगिरहेको रगत रोक्न मद्दत गर्छ ।

उक्त ६ रसहरूमा पहिलेका रसहरू पछिका रसहरूको दाँजोमा बढी बल दिने हुन्छन् । जस्तै- मधुर रस भएको द्रव्यले अम्ल रस हुने द्रव्यको दाँजोमा बढी बल दिन्छ, अम्ल रस भएको द्रव्यले लवण रस भएको द्रव्यभन्दा बढी बल दिन्छ । यसरी मधुर रस भएको द्रव्यले सबैभन्दा बढी बल दिन्छ, कषाय रस भएका द्रव्यहरूले सबैभन्दा कम बल दिन्छन् ।

मधुर, अम्ल र लवण रस भएका द्रव्यहरूले वायुको शमन गर्छन् । कटु, तिक्त र कषाय रस भएका द्रव्यहरूले वायु बढाउँछन् । गुलियो, तितो र टर्रो रस हुने द्रव्यहरूले पित्तको शमन गर्छन्: अमिलो, नुनिलो र पिरो रस हुने द्रव्यहरूले पित्तलाई बढाउँछन् । पिरो, तितो र टर्रो स्वाद हुने द्रव्यहरूले कफको शमन गर्छन् । गुलियो, अमिलो र नुनिलो स्वाद हुने द्रव्यहरूले कफलाई बढाउँछन् ।

गुलियो, अमिलो, नुनिलो यी तीन स्वाद हुने कुराहरू चिल्ला र भारी हुन्छन् । पिरो, तितो र टर्रो स्वाद भएका द्रव्यहरू रुखा र हलुका हुन्छन् । तितो, टर्रो र गुलियो तीन रसहरू शीतल हुन्छन्, पिरो, अमिलो र नुनिलो यी तीन रसहरू गरम हुन्छन् ।

जुन रस वायुको शमन गर्ने भनिएको छ त्यो रस भएको द्रव्यमा रुखोपन, शीतलता र हलुकापन भएमा त्यसले वायुको शमन गर्न सक्दैन । जुन रस पित्तको

शमन गर्ने भनिएको छ त्यो रस भएको द्रव्यमा तीक्ष्णता, उष्णता (तातोपन) र हलुकापन भएमा त्यसले पित्तको शमन गर्दैन । जुन रस कफको शमन गर्ने भनिएको छ त्यो रस भएको द्रव्यमा चिल्लोपन, भारीपन र शीतलताको गुण भएमा त्यसले कफको शमन गर्न सक्दैन ।

पिरो, तितो र टर्रो रस हुने द्रव्यहरूले वायु बढाउँछन् । अतः वायु बढेको बेलामा ती रस हुने द्रव्यहरूको सेवन गर्नुहुँदैन । अमिलो, पिरो र नुनिलो स्वाद हुने द्रव्यहरूले पित्त बढाउँछन् । पित्त बढेको बेलामा त्यस्ता कुराहरू खानुहुँदैन । गुलियो, अमिलो र नुनिलो खाने कुराले कफ बढाउँछ । कफ बढेको बेलामा त्यस्तो स्वाद हुने कुराहरू खानुहुँदैन ।

सम्पूर्ण मधुर रस हुने पदार्थहरू कफकारक हुन्छन् तर जौ, मूँग, मह, सुख्खा ठाउँमा हुर्केका जीवहरूको मासु कफकारक हुँदैनन् । सबै अमिला खाने कुराहरू पित्त बढाउने हुन्छन् तर अमला र अनार अमिलो रस भए पनि पित्तकारक हुँदैनन् । सबै किसिमका नुनहरू आँखाका लागि हानिकारक भएपनि सिधैंनुन हानिकारक हुँदैन ।

सबै पिरो र तितो रस भएका द्रव्यहरू वायुलाई बढाउने तथा वीर्यलाई हानि पुऱ्याउने हुन्छन् तर सुठो, पिप्ला, लशुन, पर्वर र गुर्जो यी द्रव्यहरू पिरा र तिता भए पनि वीर्यलाई हानि पुऱ्याउँदैनन् । चरकको मत अनुसार सुठो र पिप्लाले वीर्य बढाउने काम गर्छन् तर अरू पिरा द्रव्यहरू वीर्यका लागि हानिकारक हुन्छन् । सबै टर्रो रस हुने द्रव्यहरू प्रायः शरीरमा स्तम्भन (मल आदि रोक्ने) गर्ने हुन्छन् तर हर्रो टर्रो भए पनि स्तम्भन हुँदैन ।

यी रसहरूमा छुट्टाछुट्टै पाइने सामान्य गुणहरू हुन् । रसहरूको आपसमा मिश्रणबाट भिन्न किसिमका गुणहरू प्रकट हुनसक्छन् । मह र घिउ बराबर मात्रामा मिश्रण गरिएमा विष हुनजान्छ । सर्पले टोकेको अवस्थामा अर्को विषको सेवन गर्न दिंदा अमृत जस्तो काम गर्छ ।

५. रसहरूका गुणहरू

मधुर रस-

सुश्रुतको मत अनुसार यो रस हुने द्रव्यले रस, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा, वीर्य, र ओजको वृद्धि गर्छ, महिलाको स्तनमा दूधको वृद्धि गर्छ, आँखा र केशका लागि हितकारी हुन्छ, रूपलाई राम्रो बनाउँछ, भाँचिएका हाडहरू जोड्न मद्दत पुऱ्याउँछ, इन्द्रियहरूका साथ मनलाई प्रसन्न बनाउँछ, कफलाई बढाउँछ, बालक, वृद्ध तथा रोग लागी दुर्बल भएका मानिसहरूका लागि हितकारी हुन्छ ।

मधुर रसको अति सेवनबाट हानि-

मधुर रस (गुलियो) भएको खाने कुरा मात्रै बढी मात्रामा सेवन गरिरहेमा खोकी, दम, अलसक (अपचबाट हुने रोग), वमन, कृमि, अर्बुद, गलगण्ड आदि कफजन्य रहेगहरू हुन्छन्। मुख गुलियो भइरहने, स्वर बस्ने, आँखाबाट पानी बग्ने भइरहन्छ।

अम्ल रस -

अमिलो रस भएको द्रव्य गरम र पाचक हुन्छ, त्यसले रुचि बढाउँछ, पित्त, कफ र रगत बढाउँछ, मोटोपनलाई घटाउँछ, छुँदा शीतल हुन्छ। त्यसले वायुको शमन गर्छ, दिसा लगाउँछ, चिल्लो र तीक्ष्ण हुन्छ। वीर्य र दृष्टि (आँखाको हेर्ने शक्ति) कम बनाउँछ, विबन्ध हटाउँछ, रोमाञ्च गराउँछ, दाँत कुँडयाउँछ, आँखा र आँखीभौंलाई खुम्च्याइदिन्छ।

अम्ल रसको अतिमात्रामा सेवनबाट हानि -

अमिलो रस मात्रै बढी सेवन गरी रहेमा भ्रम, प्यास, दाह, अन्धकार देखिने, ज्वर आउने, जिउ चिलाउने, कमलपित्त, विसर्प, शोथ, विस्फोटक र कुष्ठ रोग उत्पन्न गराउने कारण बन्छ। सुश्रुतको भनाइ अनुसार अम्लको अति सेवनबाट दन्तहर्ष (दाँत सिरिङ्ग हुने), आँखा चिलाउने, शरीरमा विमिरा देखिने, शरीर गल्ने, घाँटी र छातीको भागमा पोल्ने हुन्छ।

लवण रस -

यो रस पनि गरम हुन्छ। यसले रुचि बढाउने, पाचन गर्ने, कफ र पित्तलाई बढाउने काम गर्छ। शोथनमा मद्दत गर्छ, शरीरमा खुकुलोपन र कमलोपन ल्याउँछ, वायुको शमन गर्छ, पुरुषत्वलाई कम पार्छ, आँखा, नाक र मुखबाट जलस्राव गराउँछ, गाला र गलामा जलन उत्पन्न गर्छ।

लवण रसको अतिसेवनबाट हानि -

यस्तो रस बढी मात्रामा सेवन गर्नाले नेत्रपाक (आँखा पाक्ने), रक्तपित्त, कुष्ठ, घाउहरू, विसर्प जस्ता रोगहरू उत्पन्न हुन्छन्, प्यास बढी लाग्छ, शरीरमा चाउरी पर्ने, असमयमा केश फुल्ने र झर्ने हुन्छ। सुश्रुतको मत अनुसार जिउ चिलाउने, शरीरमा खाटा उत्पन्न हुने, शोथ हुने, रूप बिग्रने, इन्द्रियहरूको काम कमजोर हुने, मुखपाक, नेत्रपाक, रक्तपित्त र वातरक्त रोगहरू उत्पन्न हुने हुन्छ। पुरुषत्वको नाश हुन्छ।

कटु रस -

यो रस पनि गरम हुन्छ। यसले वायु र पित्त दुवै बढाउँछ। रुखो हुनाले मेद अर्थात् बोसो घटाई मोटो पन कम गर्छ, स्तनको दूधको मात्रा पनि घटाउँछ, आँखामा आँसु ल्याउँछ, नाक - मुख - जिभ्रोमा पर्परा उने पोल्ने गराउँछ, बुद्धि बढाउँछ, मललाई रोक्ने-सुकाउने काम गर्छ।

कटु रसको अधिक सेवनबाट हानि -

कटु (पिरो) रस मात्र बढी मात्रामा सेवन गरी रहेमा भ्रम (रिँगटा लाग्ने) र दाह अर्थात् जिउ पोल्ने हुन्छ, मुख, तालु तथा ओठ सुकाउँछ, घाँटी आदि दुख्ने बनाउँछ, प्यास बढाउँछ, बल र कान्ति घटाउँछ, मूर्च्छा गराउँछ । सुश्रुतको मत अनुसार शरीरमा कम्पन ल्याउँछ र हात-खुट्टा, कोखा र पिठ्यूँमा वायुको वृद्धि गराई शूल गराउँछ ।

तिक्त रस -

यो रस शीतल हुन्छ । स्वयं स्वादमा नराम्रो हुन्छ तर अरू खाने कुराहरूमा रुचि उत्पन्न गर्छ । पित्त र कफको शमन गर्छ । प्यास ज्वर र मूर्च्छा कम पार्छ । कण्ठ (घाँटी) र महिलाको स्तनको दूधलाई शुद्ध बनाउँछ । यो रुक्ष (रुखो), हल्का र अग्निवार्धक हुन्छ । यसले मल, मूत्र, पानीको अंश, बोसो, चिल्लोपन र पिप सोस्ने काम पनि गर्छ ।

तिक्त रसको अधिक सेवनबाट हानि -

तितो रस मात्र बढी सेवन गरिरहेमा टाउको दुख्ने, घाँटी घुमाउन नसकिने गरी कक्रक्क पर्ने, बढी थकाइ लाग्ने, कम्पन हुने, बढी प्यास लाग्ने हुन्छ । शरीरको जलको अंश र वीर्य घट्दै जान्छ । अर्दित रोग उत्पन्न हुन्छ । मुखको स्वाद बिग्रिएर जान्छ ।

कषाय रस -

यो रस शीतल, रुखो र हल्का हुन्छ । यसले पित्त र कफको शमन गर्छ, वायुलाई बढाउँछ । रगतको दोष हटाउँछ, स्रावहरू कम पार्छ । घाउ भर्न मद्दत गर्छ, वर्ण अर्थात् शरीरको रङ्ग सफा पार्छ । घाउहरूमा उठेको मासुलाई बसाउँछ, मज्जालाई सुकाउँछ । जिब्रोलाई जड (स्वाद थाहा नपाउने) बनाउँछ ।

कषाय रसको अति सेवनबाट हानि -

कषाय अर्थात् टर्रो रस मात्र बढी सेवन गरिरहेमा पेट फुल्ने, मुटु दुख्ने, आक्षेपक (जिउको अंग तन्किने झटका हान्ने) तथा कम्पन हुने हुन्छ । सुश्रुतको मत अनुसार मुख सुक्ने, राम्ररी बोल्न नसक्ने, घाँटीका नसा कडा हुने, अङ्गहरू फर्फराउने, झमझम गर्ने, खुम्चने हुन जान्छ ।

मधुर पदार्थ -

दुध, घिउ, बोसो, चामल, जौ, गहुँ, मास, काँक्रो, ककडी, सिंघाडा, खर्बुजा, चिरौँजी, किसमिस, छोहरा, खिरनी, नरिवल, उखुको रस, चाकु, सख्खर, चिनी, बला, काउसोको बियाँ, विदारीकन्द, दूधको तर, मेवा, कुभिण्डो, स्याउ, ओख्खर, काजु आदि मधुर पदार्थ हुन् ।

अमिलो पदार्थ -

अनार, अमला, कागती, अमिली, बयर, अमलवेत, निबुवा, दही, मही, मह र काँजी आदि अमिला पदार्थहरू हुन् ।

क्षारीय (नुनिला) पदार्थ -

सिधें नुन, कालो नुन, बिरे नुन, मनियारी नुन, साँभर नुन, समुद्री नुन, यवक्षार, स्वाग, शोरा आदि क्षारीय (नुनिलो) पदार्थ हुन् ।

पिरा पदार्थहरू -

सहिजन, मूला, लशुन, कपूर, कुठ, देवदारु, बावची, खुरासानी, ज्वानो, गोकुल धुप, नागरमोथा, सुठो, अदुवा, मरिच, पिप्ला, चितु, खुर्सानी आदि कटु द्रव्यहरू हुन् ।

तिता पदार्थहरू -

हलेदो, चुत्रो, इन्द्रजौ, कण्टकारी, बिही, निशोथ, करेलो, शंखपुष्पी, अपामार्ग, कुटकी, गिनेरी, मालकागती, तितेपाती, नीम आदि तिता पदार्थ हुन् ।

कषाय (टर्रा) पदार्थहरू -

त्रिफला, जामुन, मौलसिरी, पाखनवेद, जीवन्ती, पालुंगो, लुँडे, जामुनु, कोइरालो आदि टर्रो रस हुने द्रव्यहरू हुन् ।

६. द्रव्यहरूका गुणहरू -

द्रव्यहरूमा पाइने २० गुणहरूमध्ये ५ गुणहरूको विशेष महत्व हुन्छ । ती यस प्रकार छन् - लघु (हल्का), गुरु (भारी), स्निग्ध (चिल्ला), रुक्ष (रुखा) र तीक्ष्ण (तिखो) । हल्का गुण भएका द्रव्यहरू अत्यन्त पथ्य, कफनाशक र चाँडै पच्ने हुन्छन् । भारी पदार्थहरू वातनाशक, पुष्टिकारक, कफवर्धक र अबेर गरी पच्ने हुन्छन्, तिनीहरूले वीर्य र बल बढाउँछन् । रुखा द्रव्यहरू अत्यन्त वायु बढाउने र कफ कम गर्ने हुन्छन् । तीक्ष्ण द्रव्यहरू बढी पित्तकारक, वायु र कफ शमन गर्ने हुन्छन् ।

वीर्य -

सारा संसार नै अग्नि र चन्द्रमासँग सम्बन्धित हुन्छ । त्यसैले कुनै चीजमा गर्मी र कुनै चीजमा सर्दी गर्ने गुण हुन्छ । अतः पदार्थहरूमा उष्ण र शीत २ किसिमको वीर्य मानिएको छ । उष्ण वीर्य हुने द्रव्यद्वारा वायु र कफको शमन हुन्छ तर पित्त बढ्छ । शीत वीर्य हुने द्रव्यले पित्तको शमन गर्छ र वायु र कफ बढाउँछ । उष्ण वीर्य बढी भएमा भ्रम, तृष्णा (प्यास लाग्ने), ग्लानि हुने, पसिना आउने र दाह हुने हुन्छ । शीत वीर्य हुने द्रव्यको प्रयोग गर्दा आनन्द हुन्छ, जीवन मिल्छ, मल आदिमा रुकावट हुन्छ, रगत शुद्ध हुन्छ ।

विपाक –

कुनै पनि द्रव्यको जठराग्नि अर्थात् पाचक पित्तसँग संयोग हुँदा जुन गुलियो, अमिलो रूपमा परिणाम अर्थात् परिवर्तन हुन्छ त्यसलाई विपाक भनिन्छ । विपाक तीन किसिमको हुन्छ – मधुर (गुलियो), अम्ल (अमिलो) र कटु (पिरो) । गुलियो अमिलो द्रव्यको विपाक गुलियो हुन्छ । अमिलो रस हुने द्रव्यको प्रायः अमिलो विपाक हुन्छ । पिरो, तितो र टर्रो द्रव्यको प्रायः कटु विपाक हुन्छ । कहिलेकाहीं यस नियमको विपरीत पनि हुन्छ । जस्तो कि चामल गुलियो हुन्छ तर पचेर गएपछि त्यसको विपाक अमिलो हुन्छ । हर्रोको मुख्य रस टर्रो भएपनि त्यसको विपाक गुलियो हुन्छ ।

मधुर विपाक हुने द्रव्यले कफ बढाउँछ र वायु तथा पित्तको शमन गर्छ । अम्ल विपाकले पित्त बढाउँछ भने वायुसम्बन्धी रोग निको पार्छ कटु विपाक हुने द्रव्यले वायुलाई उत्पन्न गर्छ तथा पित्त र कफलाई घटाउँछ । रसभन्दा विपाक विशेष रूपमा बलवान् हुन्छ ।

प्रभाव –

रस, गुण, वीर्य तथा विपाकमा समानता भएपनि कुनै द्रव्यले अर्को समान द्रव्यभन्दा फरक र विशेष किसिमको काम गर्छ त्यो उसको प्रभावका कारण हुन्छ । अतः द्रव्यमा रहेको अरू समान द्रव्यहरूको दाँजोमा फरक किसिमको काम गर्ने शक्तिलाई प्रभाव भनिन्छ । दन्ती र चित्रक दुवै रस आदिमा समान हुन्छन् तर दन्तीले रेचन गर्छ (खूब पखाला चलाउँछ) चितुले त्यस्तो गर्दैन । दाख र महुवा वीर्य एवं विपाकमा समान हुन्छन् तर दाखमा पखाला लगाउने शक्ति बढी हुन्छ । घिउ, दूध रस आदिमा समान हुन्छन् तर अग्नि दीपनको शक्ति बढी हुन्छ । कहीं यौटै द्रव्यले पनि आफ्नो प्रभावले काम गर्छ । जस्तै – सहदेवीको जरा टाउकोमा बाध्नाले शीतज्वर निको हुन्छ ।

जुन औषधीहरूको फल प्रत्यक्ष छ र जुन आफ्नो गुणका लागि प्रसिद्ध छ त्यस्तो द्रव्यको सम्बन्धमा रस आदिको विचार गर्नु आवश्यक हुँदैन । तर त्यस्तो अवस्थामा विरुद्ध गुण भएको औषधीको मेल भएमा रस आदिमा कम – बेसी हुनसक्छ । यसको कारण यो हो – रसलाई विपाकले जित्छ, रस र विपाकलाई वीर्यले जित्छ, फेरि रस, विपाक र वीर्यलाई प्रभावले जित्छ ।

स्वभावैले हित गर्ने खाद्य पदार्थ –

चामलहरूमा रातो चामल, साठी चामल, भूस हुने अन्नमा जौ र गहुँ, दालहरूमा मूँग, मुसुरो र रहर स्वभावैले हित गर्ने हुन्छन् ।

रसहरूमा मधुर रस हितकारी हुन्छ, नुनहरूमा सिंधे नुन उत्तम हुन्छ, फलहरूमा अनार, अमला, दाख, खजूर, छोहरा, फालसा र बिमिरो हितकारी

हुन्छन् । सागहरू बेथे, जीवन्ती, पोई (उपोदिका), पर्वर तथा कन्दहरूमा जिमीकन्द (सूरण, ओल) हितकारी हुन्छन् । जङ्गली जीवहरूमा कालो, रातो तथा बुट्टा भएको मृगको मासु, पंक्षीहरूमा तित्रा र लवाको मासु, माछामा रेहु माछाको मासु हितकारी हुन्छ । पानीका लागि सफा पानी, दूधहरूमा गाईको दूध, घृतहरूमा गाईको घिउ, तेलहरूमा तिलको तेल र उखुको रसबाट बनेका खाद्यहरूमा मिश्री हितकारी हुन्छ ।

हितकारी विहार – ब्रह्मचर्य, निर्वात स्थान (बाहिरको हुरी बतास आदि नआउने ठाउँ)मा सुत्नु, मनतातो पानीले स्नान गर्नु, राती ठीक मात्रामा सुत्नु, केही व्यायाम गर्नु यी सबैलाई सुश्रुतले अत्यन्त हितकारी भनेका छन् ।

विशेष – जुन द्रव्यले वायुको शमन गर्छ त्यसले पित्तलाई कुपित पार्न सक्छ । जसले पित्तको शमन गर्छ वायुलाई कुपित बनाउन सक्छ । यसै भएर कुनै पनि द्रव्य सबैका लागि हितकर वा अहितकर हुन सक्दैन । सबै द्रव्यहरू आफ्नो प्रकृति अर्थात् स्वभाव अथवा संयोगले तथा देश, काल, अवस्थाका कारण हितकारी वा अहितकारी हुन्छन् ।

७. अहितकारी संयोगका कारण विरुद्ध द्रव्यहरू

- दूधसँग माछा र आनूप देशका जीवहरूको मासु खानुहुँदैन ।
- परेवाको मासु तेलमा भुटेर खानु हुँदैन ।
- माछालाई खुदो, चिनी, सख्खर वा महसँग खानुहुँदैन ।
- मांस र दूधका साथ सातु खानुहुँदैन ।
- गरम पदार्थसँग दही खानुहुँदैन ।
- केरा दही, मही वा बेलफलसँग खानुहुँदैन ।
- काँसको भाडामा १० दिनसम्म राखेको घिउ खान योग्य हुँदैन ।
- घिउ र मह बराबर मात्रामा मिसाएर खानुहुँदैन ।
- काँढालाई फेरि तताएर खानुहुँदैन ।
- धेरै किसिमका मासुहरू मिसाउँदा परस्पर विरुद्ध हुनजान्छन् । त्यस्तै मह, घिउ, बोसो, तेल, पानी र दूध आपसमा मिसाउँदा परस्पर विरुद्ध हुन्छ ।
- सुश्रुतको मत अनुसार बेलको फल, तोरियाँ, टेंटी, कागती आदि अमिलो फल, सबै प्रकारका नुन, दही, माछा, सुकेको साग, बाखा तथा भेडाको मासु, मदिरा आदिलाई दूधसँग सेवन गर्नुहुँदैन ।
- बोसो, मह, दूध, गुड (सख्खर), माष यी सबैका साथ ग्राम्य पशु (घरपालुवा जीवहरू)को मासु र पानीमा हिँड्ने जीवहरूको मासु खानुहुँदैन ।

यसबाट बहिरोपन, लाटोपन, कम्प, जडता आदि रोग लाग्दछन् ।

- चरकको मत अनुसार मह र दूधसँग कुटकी र पुष्करपत्रको साग खानुहुँदैन । परेवाको मासु तोरीको तेलमा भुटेर खानुहुँदैन । त्यस्ता विरुद्ध खाद्यहरू खाँदा छारेरोग, गलगण्ड आदि अनेक किसिमका रोगहरू उत्पन्न हुन्छन् ।
- मुला, लशुन, सहिजनको साग, तुलसी, सेतो तुलसी वा वनतुलसी आदि खाएर दूध खानाले कुष्ठ रोग हुन्छ ।
- कुनै किसिमको साग, पाकेको कटहर, मह र दूधसंग एकै पटकमा खानुहुँदैन । यसो गर्नाले बल, वर्ण, वीर्य र तेजको हानि हुन्छ, नामर्दी आदि रोगहरू हुन्छन् ।
- अमिलो फल र मुला तथा खटाई (अमिलो अचार) दूधसँग खानाले रोग उत्पन्न हुन्छ ।
- सातु पानीमा मिसाएर खाएपछि खिर खानुहुँदैन, त्यसो गर्दा अत्यन्त कफ कुपित हुन्छ ।
- पोइको सागलाई तेलमा पकाएर खाएमा अतिसार हुन्छ ।
- बकुल्लाको मासु बँदेलको बोसोमा भुटेर खाएमा तत्काल मृत्यु हुन्छ ।
- मकोय (काली कवै) महसँग खानु घातक हुन्छ ।
- महलाई तताएर खानु उचित हुँदैन ।
- पसिना निकाल्नका लागि बाफ लिएको मानिसले महलाई तताएर खानुहुँदैन ।
- समान भागमा मह र घिउ, मह र आकाशको पानी, मह र कमलगट्टा, मह खाएर तातो पानी पिउनु, भलायो खाएपछि तातो पानी पिउनु यी सबै विरुद्ध हुन्छन् ।
- मकोयलाई पिप्ला र मरिचसँग खानु, कुखुराको मासु र दही एकै साथ खानु, मदिरा, तिल, चामलको खिचडी र खिर एकसाथ खानु, गुडका साथ मकोय, महसँग मुला यी सबै संयोग विरुद्ध हुन्छन् । यी सबैको सेवनबाट नामर्दी, अन्धोपन, मूर्च्छा, उन्माद, छारे रोग, भगन्दर, कुष्ठ आदि अनेक रोग लाग्छन् ।

यस्ता विरुद्ध द्रव्यहरूको सेवनबाट उत्पन्न भएका रोगहरू निको पार्न वमन अथवा विरेचन गराउनुपर्छ । अथवा त्यस्ता द्रव्यहरूको असर मेटाउने कुराहरू खान दिनुपर्छ ।

विरुद्ध आहारहरूको सेवन गर्ने अभ्यासका कारण तत्काल कुनै विकार नदेखिए पनि पछि गएर भयानक रोग अवश्य उत्पन्न हुन्छ ।

८. मनुष्यमात्रले याद राख्न योग्य कुराहरू

१. **अन्न** – जीवन धान्न चाहिने कुराहरूमा सर्वोत्तम हुन्छ ।

२. **जल** – प्यास मेट्न सबैभन्दा राम्रो हुन्छ ।

३. **मदिरा** – थकाइ मेट्ने काममा सबैभन्दा राम्रो हुन्छ ।

४. **नुन** – रुचिकारक द्रव्यहरूमा सबैभन्दा राम्रो हुन्छ ।

५. **अम्ल पदार्थ** – हृदयलाई हित गर्ने कुरामा उत्तम हुन्छ ।

६. **कुखुराको मासु** – बल बढाउने द्रव्यहरूमा उत्तम हुन्छ ।

७. **गोहीको वीर्य** – वीर्य बढाउने धेरै द्रव्यहरूमध्ये उत्तम हुन्छ ।

८. **मह** – कफ र पित्तको शमन गर्ने द्रव्यहरूमा उत्तम हुन्छ ।

९. **घिउ** – वातपित्तनाशक द्रव्यहरूमा उत्तम हुन्छ ।

१०. **तेल** – वायु र कफको शमन गर्ने द्रव्यहरूमा उत्तम हुन्छ ।

११. **वमन** – कफको विकारमा शोधन गर्ने उपायहरूमध्ये सबैभन्दा राम्रो हुन्छ ।

१२. **विरेचन** – पित्तको शोधनद्वारा नाश गर्ने उपायहरूमा उत्तम हुन्छ ।

१३. **वस्ति** – वायुको शमन गर्ने उपायहरूमा सबैभन्दा राम्रो हुन्छ ।

१४. **स्वेदन** – शरीरलाई नरम पार्ने उपायहरूमा सर्वोत्तम हुन्छ ।

१५. **व्यायाम** – शरीरलाई बलियो पार्ने उपायहरूमा उत्तम हुन्छ ।

१६. **मैथुन** – शरीरलाई दुर्बल पार्ने उपायहरूमा सबैभन्दा बढी हुन्छ ।

१७. **क्षार** – पुरुषत्व नाश गर्ने द्रव्यहरूमा सबैभन्दा कडा हुन्छ ।

१८. **तिन्दुकफल** – अन्नमा अरुचि गराउने कुराहरूमा सबैभन्दा बढी हुन्छ ।

१९. **काँचो खयर** – स्वरभंग गराउने कुराहरूमा सबैभन्दा कडा हुन्छ ।

२०. **भेडीको घिउ** – मुटुलाई हानि पुऱ्याउने द्रव्यहरूमध्ये सबभन्दा बढी हुन्छ ।

२१. **बाख्राको दूध** – शोषनाशक, रक्तस्राव रोक्ने, रक्तपित्तनाशक र दूध बढाउने द्रव्यहरूमा उत्तम हुन्छ ।

२२. **भेडीको दूध** – पित्त र कफ बढाउने द्रव्यहरूमा उत्तम हुन्छ ।

२३. **भैंसीको दूध** – निद्रा लगाउने द्रव्यहरूमा सबभन्दा उत्तम हुन्छ ।

२४. **दही** – अभिष्यन्दी (स्रोतहरूमा अवरोध गराउने) द्रव्यहरूमा सबभन्दा बढी हुन्छ ।

२५. **उखु** – पिसाब लगाउने द्रव्यहरूमा सर्वश्रेष्ठ हुन्छ ।

२६. **जौ** – मलको मात्रा बढाउने द्रव्यहरूमा उत्तम हुन्छ ।

२७. **जामुन** – वायु बढाउने द्रव्यहरूमा उत्तम हुन्छ ।

२८. **तिलको पिना** - पित्त र कफ बढाउने द्रव्यहरूमा उत्तम हुन्छ ।

२९. **गहत** - अम्लपित्त रोग उत्पन्न गर्ने द्रव्यहरूमा उत्तम हुन्छ ।

३०. **मास** - पित्त र कफ उत्पन्न गर्ने द्रव्यहरूमा उत्तम हुन्छ ।

३१. **मदनफल** - वमन, आस्थापन र अनुवासनलाई उपयोगी द्रव्यहरूमा सर्वश्रेष्ठ हुन्छ ।

३२. **निशोथको जरा** - सजिलोसित दिसा लगाउने द्रव्यहरूमा उत्तम हुन्छ ।

३३. **अडेर** - नरम जुलाफ गर्ने द्रव्यहरूमा उत्तम हुन्छ ।

अडेरको तेल(caster oil) - यसको मात्रा युवक मानिसका लागि ४ तोलासम्म (५० मि.लि.) हुन्छ । ८ तोला (१०० ग्राम) त्रिफलालाई कुठेर राती एउटा भाँडोमा पानी (१ लिटर) राखी भिजाइदिनु । बिहान त्यसलाई उमालेर काढा बनाउनु । त्यसैमा एरण्ड तेल मिसाएर खाँदा सर्वोत्तम जुलाफ हुन्छ । यो जुलाफ बालक, वृद्ध, क्षीणभन्दा क्षीण सबैका लागि सुखदायी हुन्छ ।

३४. **सिउँडीको दूध** - कडा किसिमका जुलाफ गर्ने (दिसा लगाउने) द्रव्यहरूमा उत्तम हुन्छ ।

३५. **अपामार्गको बियाँ** - शिरोविरेचन गर्ने (नस राख्दा शिरमा भएको दोष निकाल्ने) द्रव्यहरूमा उत्तम हुन्छ ।

३६. **वायुविडंग** - कृमिनाशक द्रव्यहरूमा उत्तम हुन्छ ।

३७. **शिरीषको बियाँ** - विषनाशक द्रव्यहरूमा उत्तम हुन्छ ।

३८. **खयर** - कुष्ठ रोग निको पार्ने द्रव्यहरूमा उत्तम हुन्छ ।

३९. **रास्ना** - वायुसम्बन्धी रोग निको पार्ने द्रव्यहरूमा उत्तम हुन्छ ।

४०. **अमला** - यौवन अवस्था पछिसम्म कायम राख्ने द्रव्यहरूमा उत्तम हुन्छ ।

४१. **हर्रो** - पथ्य कुराहरूमा उत्तम हुन्छ ।

४२. **अडेरको जरा** - शुक्रबर्धक र वायु शमन गर्ने द्रव्यहरूमा उत्तम हुन्छ ।

४३. **पिप्लामूल** - पाचन गर्ने र आनाह रोग निको पार्ने द्रव्यहरूमा उत्तम हुन्छ ।

४४. **चितुको जरो** - दीपन-पाचन गर्ने, गुदद्वारमा हुने शोथ र शूल निको पार्ने द्रव्यहरूमा उत्तम हुन्छ ।

४५. **नागरमोथा**- दीपन - पाचन र ग्राही द्रव्यहरूमा उत्तम हुन्छ ।

४६. **कुष्ठ (कुठ)** - वातशामक, अभ्यङ्ग र उपनाहका लागि उपयोगी द्रव्यहरूमा उत्तम हुन्छ ।

४७.**पुष्करमूल** – हिक्का, श्वास, कास, पार्श्वशूल निको पार्ने द्रव्यहरूमा उत्तम हुन्छ ।

४८. **अनन्तमूल** – ग्राही र रक्तपित्त रोग निको पार्ने द्रव्यहरूमा उत्तम हुन्छ ।

४९.**गुर्जो** – पखाला रोक्ने, वायुको शमन गर्ने, अग्नि दीपन गर्ने, कफ र रगतको विबन्ध (अवरोध) रोक्ने द्रव्यहरूमा उत्तम हुन्छ ।

५०.**काँचो बेलको फल** – मललाई गाढा पार्ने, अग्नि दीपन गर्ने, वायु र कफ शमन गर्ने द्रव्यहरूमा उत्तम हुन्छ ।

५१. **अतिविषा (अतीस)** – दीपन, पाचन, संग्राहक र सबैदोष शमन गर्ने द्रव्यहरूमा उत्तम हुन्छ ।

५२.**कमल र कुमुदिनीको केशर** – संग्राहक र रक्तपित्तनाशक द्रव्यहरूमा उत्तम हुन्छ ।

५३.**दुरालभा (जवासा)** – पित्त र कफको शमन गर्ने द्रव्यहरूमा उत्तम हुन्छ ।

५४.**गन्धप्रियङ्ग (दैकाम्लो)** – बढेको रक्तपित्त रोग निको पार्ने द्रव्यहरूमा उत्तम हुन्छ ।

५५.**कुटज (वनखिर्रो)को बोक्रा** – कफ र पित्तको शमन गर्ने, रगत रोक्ने र शोषण गर्ने द्रव्यहरूमा उत्तम हुन्छ ।

५६.**विदारिगन्धा (शालपर्णी)** – वृष्य (वीर्य बढाउने) र सबै दोषहरूको शमन गर्ने द्रव्यहरूमा उत्तम हुन्छ ।

५७.**बला(बलु)** – संग्राहक, बल बढाउने र वायुको शमन गर्ने द्रव्यहरूमा उत्तम हुन्छ ।

५८.**गोखुर** – मूत्रकृच्छ रोग र वायुको शमन गर्ने द्रव्यहरूमा उत्तम हुन्छ ।

५९.**हिङ** – छेदन, दीपन गर्ने, अनुलोमन गर्ने साथै वायु र कफको शमन गर्ने द्रव्यहरूमा उत्तम हुन्छ ।

६०.**अम्लवेत** – भेदन, दीपन, अनुलोमन गर्ने एवं वायु र कफको शमन गर्ने द्रव्यहरूमा उत्तम हुन्छ ।

६१. **यवक्षार** – स्रंसन, पाचन गर्ने तथा अर्श (अल्काई) रोग निको पार्ने द्रव्यहरूमा उत्तम हुन्छ ।

६२.**तक्र अर्थात् मही खाने बानी** – ग्रहणीको दोष र अर्श रोग निको पार्ने तथा घिउको अजीर्णबाट हुने रोग निको पार्ने द्रव्यहरूमा उत्तम हुन्छ ।

१. भोजनपछि भुटेको जिरा र सिंधे नुन मिसाएर गाईको मही पिउनाले खूब भोक लाग्छ । यौटा सफा हाँडीमा चितुको जरा पानीमा पिनेर लेप गर्नु र सुकाउनु । त्यस हाँडीमा गाईको दूध जमाएर बनाएको दही फेटेर मही बनाउनु र नित्य पिउने गर्नु । यो हर्षाको लागि रामबाण औषधी हुन्छ ।

६३. **मांसाहारी जीवहरूको मासु खाने बानी** – ग्रहणीदोष, शोष रोग, अर्श रोग निको पार्ने द्रव्यहरूमा उत्तम हुन्छ ।

६४. **दूध र घिउ सधैँ खाने बानी** – वृद्धावस्था आउन रोक्ने (रसायन) द्रव्यहरूमा उत्तम हुन्छ ।

६५. **जौको सातु र गाईको घिउ समान भाग मिसाई खाने बानी** – वृष्य र उदावर्त रोग निको पार्ने उपायहरूमा उत्तम हुन्छ ।

६६. **तेलको कुल्ला गर्ने बानी** – दाँत बलियो पार्ने, रुचि बढाउने उपायहरूमा उत्तम हुन्छ ।

६७. **चन्दन र दुम्री** – दुवै दाह शमन गर्ने लेपका द्रव्यहरूमा उत्तम हुन्छन् ।

६८. **रास्ना र अगरु** – शीतको असर हटाउने लेपहरूमा उत्तम हुन्छन् ।

६९. **उशीर (खस)** – दाह, छालाको दोष, पसिना कम पार्ने लेपका द्रव्यहरूमा उत्तम हुन्छ ।

७०. **जेठीमधु** – वीर्यबर्धक, आँखा, केश, घाँटी स्वस्थ राख्ने, शरीरको रङ्ग राम्रो पार्ने, घाउ निको पार्ने द्रव्यहरूमा उत्तम हुन्छ ।

७१. **वायु** – प्राण (जीवन) र संज्ञा (होश–चेतना) दिने द्रव्यहरूमा उत्तम हुन्छ ।

७२. **अग्नि** – आमदोष, स्तम्भ (शरीर जकडिनु), शीत, शूल र कम्पन निको पार्ने उपायहरूमा उत्तम हुन्छ ।

७३. **पानी** – स्तम्भन (रगत आदि रोक्ने काम) गर्न उपयोगी द्रव्यहरूमा उत्तम हुन्छ ।

७४. **फलामलाई तताएर रातो पारी चोपेको (अथवा राम्ररी उमालेको पानी)**– बढी प्यास लागेको शमन गर्ने उपायहरूमा उत्तम हुन्छ ।

७५. **अति मात्रामा भोजन गर्नु** – आमदोष उत्पन्न गर्ने कारणहरूमा मुख्य कारण हुन्छ ।

७६. **पाचनशक्ति (अग्नि) अनुसार भोजन गर्नु** – अग्नि दीप्त गर्ने उपायहरूमा उत्तम हुन्छ ।

७७. **मल–मूत्र आदिको वेग रोक्नु** – रोगका कारणहरूमा मुख्य हुन्छ ।

७८. **मद्यको अतिसेवन** – बुद्धि, विवेक र स्मरणशक्ति नष्ट गर्ने प्रमुखकारण हुन्छ ।

७९. **दिनको एकपटक भोजन गर्नु** – पाचनक्रिया राम्रो पार्ने उपायहरूमा उत्तम हुन्छ ।

८०. **स्त्रीसम्पर्कमा अति गर्नु** – शोष रोग उत्पन्न गर्ने कारणहरूमा बढी महत्त्वको हुन्छ ।

८१. **ब्रह्मचर्य**-आयु बढाउने उपायहरूमा उत्तम हुन्छ ।

८२. **सङ्कल्प (स्त्रीसम्पर्कको चाहना)** - बाजीकरणका उपायहरूमा उत्तम हुन्छ ।

८३. **दौर्मनस्य (मनमा खिन्नता)** - बाजीकरणमा बाधा पुऱ्याउने प्रमुख कारण हुन्छ ।

८४. **स्नान गर्नु** - थकाइ मेट्ने उपायहरूमा उत्तम हुन्छ ।

८५. **सन्तोष गर्नु** - पुष्ट बनाउने उपायहरूमा उत्तम हुन्छ ।

८६. **सर्वरसाभ्यास (सबै रसहरू नियमित खाने बानी)** - बल बढाउने उपायहरूमा उत्तम हुन्छ ।

८७. **यौटै रस मात्र खानु** - दुर्बल पार्ने कारणहरूमा उत्तम हुन्छ ।

८८. **मनको प्रसन्नता** - गर्भधारण हुने कारणहरूमा मुख्य हुन्छ ।

८९. **गर्भवती महिला** - विशेष रूपमा तीक्ष्ण औषधी, व्यायाम र पुरुषको संसर्गबाट बच्नुपर्ने हुन्छिन् ।

९०. **जलौकाहरू (जुकाहरू)** - अनुशस्त्रहरूमा मुख्य हुन्छन् ।

९१. **हिमालय पर्वत** - उत्तम औषधीहरू उत्पन्न हुने स्थानहरूमा उत्तम छ ।

९२. **मरुभूमि** - स्वास्थ्य राम्रो हुने स्थानहरूमा उत्तम हुन्छ ।

९३. **सोमलता** - औषधीहरूमा उत्तम हुन्छ ।

९४. **आनूप देश** - स्वास्थ्यलाई अहित गर्ने देशहरूमा मुख्य हुन्छ ।

९५. **नास्तिक मानिस** - संगत गर्न नहुने मानिसहरूमा मुख्य हुन्छ ।

९६. **असमर्थता** - आफू कमजोर हुनु भय उत्पन्न गर्ने मुख्य कारण हुन्छ ।

९७. **विषयका विज्ञहरूसँग छलफल गर्नु (तद्विद्यसम्भाषा)** - बुद्धि बढाउने उपायहरूमा उत्तम हुन्छ ।

९८. **चिकित्सक** - चिकित्साका अङ्गहरूमा उत्तम हुन्छ ।

९९. **आयुर्वेद** - अमृत अर्थात् जीवन दिने उपायहरूमा उत्तम छ ।

९. परिभाषाहरू

१. **चार स्नेहहरू** - घिउ, तेल, बोसो र मज्जा यी चार स्नेह अर्थात् चिल्लो पदार्थहरू हुन् ।

२. **पाँच लवणहरू** - सौंचल नुन, कालो नुन, सिंधे नुन, बीरे नुन र समुद्री नुन यी पाँच किसिमका नुन हुन्छन् ।

३. **आठ मूत्रहरू** – भेडाको मूत्र, बाख्राको मूत्र, भैँसीको मूत्र, उँटको मूत्र, गधाको मूत्र, हात्तीको मूत्र, गाईको मूत्र र घोडाको मूत्र यी आठ प्रकारका मूत्रहरू रोगहरूको उपचारमा प्रयोग हुन्छन् ।

बाख्राको मूत्र त्रिदोषनाशक हुन्छ । गोमूत्र कृमिनाशक छ, त्यसले कुष्ठ र जिउ चिलाउने रोगमा आराम दिन्छ, पिउँदा त्रिदोषजन्य उदर रोग निको पार्छ । भैँसीको मूत्रले मलको निष्कासन गर्छ, अर्श शोथ (जिउ सुनिने) र उदर रोग निको पार्छ । उँटको मूत्रले अल्काई, श्वास र कास रोग निको पार्छ । गधाको मूत्रले उन्माद (बौलाउने) र छारे रोगमा हित गर्छ । हात्तीको मूत्रले कृमि र कुष्ठरोग निको पार्छ । त्यसले रोकिएको मल-मूत्रलाई निकाल्छ, विषको विकार, कफसम्बन्धी रोग र अर्श रोगमा हित गर्छ ।

४. **आठ दूधहरू** – भेडी, बाख्रा, गाई, भैँसी, उँटनी, घोडी, हात्तिनी र स्त्रीको दूध यी आठ किसिमका दूधहरू विशेष उपयोगी हुन्छन् ।

५. **पञ्चकोल** – पिप्ला, पिप्लाको जरा, चावो, चितु, सुठो यी पाँचै द्रव्यहरू एक-एक कोल अर्थात् १००- १०० ग्राम (वा समान भाग) लिएर मिसाएमा उक्त मिश्रणलाई पञ्चकोल भनिन्छ ।

६. **चतुर्बीज** – मेथी, चंसुरको बियाँ, कालो जिरा र ज्वानो यी चारको मिश्रणलाई चतुर्बीज भनिन्छ ।

७. **षड्षण** – पिप्ला, पिप्लाको जरा, चावो, चितु, सुठो र मरिचको मिश्रणलाई षड्षण भनिन्छ ।

८. **त्रिजातक** – दालचिनी, सुकमेल र तेजपातको समान मात्रामा राखी गरिएको मिश्रणलाई त्रिजातक भनिन्छ ।

९. **चतुर्जातक** – त्रिजातकका द्रव्यहरूका साथ नागकेशर पनि समान भाग मिसाएर बनाएको योगलाई चतुर्जातक भनिन्छ ।

१०. **सर्वगन्ध** – दालचिनी, तेजपात, सुकमेल, नागकेशर, कपूर, शीतलचिनी, अगर, लोबान, केशर, कस्तूरी, चन्दन, कचूर, मरिच र ल्वांगको मिश्रणलाई सर्वगन्ध भनिन्छ ।

११. **महती त्रिफला** – हर्रो, बर्रो र अमला समान भागमा राखी गरिएको मिश्रणलाई महती त्रिफला भनिन्छ ।

१२. **स्वल्पत्रिफला** – गम्भारीको फल, फल्सा र खजूर यी तीन फलहरूलाई स्वल्पत्रिफला भनिन्छ ।

१३. **त्र्यूषण** – पिप्ला, सुठो र मरिचको समान भागमा गरिने मिश्रणलाई त्र्यूषण भनिन्छ । यसैलाई त्रिकटु र कटुत्रिक तथा व्योष पनि भनिन्छ ।

१४. **पञ्चपल्लव** – आँप, जामुन, कैथ, बिमिरो र बेलको पातलाई पञ्चपल्लव भनिन्छ ।

१५. **क्षीरि वृक्ष** – डुम्री, वर, पिपल, पाखुरी आदि दूध आउने वृक्षहरूलाई क्षीरि वृक्ष भनिन्छ ।

१६. **महत् पञ्चमूल** – बेल, टटेलो, गिनेरी, पाढल र गम्भारी यी पाँचको जरालाई महत् पञ्चमूल भन्दछन् ।

१७. **लघु पञ्चमूल** – शालपर्णी, पृश्निपर्णी, बिंही, कण्ठकारी र गोक्षुर यी पाँचलाई लघु पञ्चमूल भनिन्छ ।

१८. **दशमूल** – महत् पञ्चमूलका ५ र लघु पञ्चमूलका ५ द्रव्यहरू मिसाए त्यो दशमूल हुन्छ ।

१९. **पञ्च तृण मूल** – कुश, काश, शरदर्भ र उखु यी पाँचको जरालाई तृणपञ्चमूल भनिन्छ ।

२०. **वल्ली पञ्चमूल** – विदारीकन्द, मेषश्रृङ्गी, बेसार, अनन्तमूल र गुर्जो यी पाँचलाई वल्लीपञ्चमूल भनिन्छ ।

२१. **कण्टक पञ्चमूल** – करञ्ज, गोखुरु, तालमखाना, सैरयक र शतावरी यी ५ लाई कण्टकपञ्चमूल भनिन्छ ।

२२. **अष्टवर्ग** – ऋद्धि, वृद्धि, मेदा, महामेदा, ऋषभक, जीवक, काकोली, र क्षीरकाकोली यी आठको समूहलाई अष्टवर्ग भनिन्छ ।

२३. **जीवनीय गण** – अष्टवर्गका ८ द्रव्यहरूका साथ मुद्गपर्णी, माषपर्णी, जीवन्ती र जेठीमधु मिल्दा जीवनीय गुण हुन्छ ।

२४. **श्वेतमरिच** – सजिवन (शोभाञ्जन) को बियाँलाई श्वेतमरिच भनिन्छ ।

२५. **ज्येष्ठाम्बु** – चामल पखालेको पानी अर्थात् चौलानिलाई ज्येष्ठाम्बु भनिन्छ ।

औषध-कल्पनाहरू

१. **स्वरस** – ताजा रसयुक्त द्रव्यलाई ल्याई पखाली तत्काल कुठेर मिच्दा जति रस आउँछ त्यो रसलाई स्वरस भनिन्छ । ताजा द्रव्य नपाइएको खण्डमा सुख्खा द्रव्य आधा किलो चूर्ण पारी १ लिटर पानीमा २४ घण्टा भिजाएर राखेपछि छानेर रस निकाल्नू । यसरी स्वरसको काम लिन सकिन्छ ।

अथवा सुकेको द्रव्यलाई ८ गुणा बढी पानीमा पकाएर चौथाई पानी रहँदा उतारेर छानी लिनू। यो पनि स्वरस जस्तै प्रयोग गर्न सकिन्छ।

२. **शृत** – कुटेको द्रव्यलाई पानीसँग पकाएर फेरी कपडछान गरी राखेको काढापानीलाई शृत (क्वाथ) अथवा कषाय भनिन्छ।

३. **शीत** – ८ तोला (१०० ग्राम) द्रव्यलाई कुटेर ४८ तोला (६०० मि.लि.) पानीमा एक रात भिजाई राख्नू, बिहान त्यसलाई हातले मिचेर छान्नू। त्यसलाई शीत भनिन्छ।

४. **फाण्ट** – ८ तोला द्रव्यलाई कुटेर माटोको भाँडामा चौबर पानीसँग केहीबेर राखी छान्नु। यसलाई फाण्ट भनिन्छ।

५. **क्वाथ** – ४ तोला औषधीलाई ६४ तोला पानी राखी माटाका भाँडामा मन्द आँचमा पकाउनू, पानी आधा (अथवा चौथाई) बाँकी रहेपछि उतारेर छान्नु र सेवन गराउनु। यसलाई क्वाथ (काढा) भनिन्छ। काढा पकाउने बेलामा भाँडोमा बिर्को नलगाउनू, होइन भने काढा भारी हुन जान्छ।

पथ्य कल्पनाहरू

६. **मन्थ** – आठ तोला (१०० ग्राम) औषधीलाई राम्ररी कुट्नू, एउटा भाँडोमा ३२ तोला पानी राखी त्यसमा कुटेको औषधी राख्नू, त्यसपछि मदानीले मथ्नू। जब राम्ररी फींज आउँछ अनि छानी लिनू। यसलाई मन्थ भनिन्छ। यसको मात्रा फाण्टको जस्तै २ पल वा १६ तोलाको (१००-२०० मि.लि.) हुन्छ।

७. **शुद्ध मण्ड** – शुद्ध चाममलाई १४ गुणा पानी राखेर उमाल्नू, जब चामल पाकेर आउँछ तब छानेर माँड निकाल्नू। यसमा सुठो र सिंधे नुनको धूलो मिसाएर खान दिएमा अन्नको पाचन राम्रो हुन्छ र अग्निको दीपन हुन्छ।

८. **अष्टगुण मण्ड** – धनियाँ, सुठो, पिप्ला, मरिच, सिंधे नुन, मूँग चामल, हिंग र तेल यी ९ द्रव्यहरूद्वारा यो तयार हुन्छ। पहिले ८ तोला मूँग र १६ तोला चाममलाई हिंग फुराएको तेलमा भुट्नु। त्यसपछि धनियाँ, सुठो, मरिच, पिप्ला र नुन ठिक्क हुने गरी राख्नू। फेरी १४ गुणा पानी राखेर पकाउनू। सबै पाकेपछि उतारेर छान्नू। यस भाँडामा आठ गुणहरू हुन्छन्- यसलाई पिउनाले अग्निदीपन हुन्छ, वस्तिको शोधन हुन्छ, बल बढ्छ, रगतको वृद्धि हुन्छ। ज्वर, कफ, पित्त र वायुको शमन हुन्छ।

९. **लाजा मण्ड** - धान भुटेको लावा अथवा चाममलाई भुटेर १४ गुणा पानीमा राखेर पकाएपछि छान्नू र माड निकाल्नू। त्यसलाई लाजामण्ड भनिन्छ। यसबाट कफ र पित्तको प्रकोप शान्त हुन्छ, संग्रहणी र अतिसारको पखाला रोकिन्छ, बढी प्यासका साथ आउने ज्वर पनि कम हुँदै जान्छ।

१०. **वाटच मण्ड** - राम्रो जौ लिएर कटठ्नू र कराहीमा राखी भुट्नू, अनि १४ गुणा पानी राखेर पकाउनू। पाकेपछि माड निकाल्नू। यही वाटचमण्ड हो। यस माडको सेवन गर्नाले कफ र पित्तको प्रकोप शान्त हुन्छ, कण्ठको लागि हित गर्छ, रक्तपित्तको रोग पनि निको पार्छ।

११. **आम्रादि यवागू** - आँप, अमला जामुन यी तीनैको रुखको बोक्रा कुल १६ तोला (२०० ग्राम) जौकुट गरी ६४ गुणा अर्थात् पौने १३ सेर (१२.७ ली.) पानीमा पकाऊ, आधा पानी बाँकी रहेपछि उतारेर छान्नु, फेरी त्यस पानीमा १६ तोला चामल राखी पकाउनू, पाक्दै जाँदा जब गाढा भएर आउँछ तब उतार्नू। यस यवागूको सेवन गर्दा संग्रहणी रोग निको हुन्छ।

१२. **पञ्चमूली क्षीर पाक** - शालपर्णी, पृश्निपर्णी, कण्टकारी, बिंही र गोखुर यी लघु पञ्चमूलका द्रव्यहरूलाई जौकुट गरी ८ गुणा दूध र दूधको चौबर पानी मिलाएर पकाउनु, पाक्दै जाँदा पानी जति जलेर दूधमात्र बाँकी हुँदा उतारेर छान्नू। यसलाई पिउनाले श्वास, खोकी, मस्तकशूल, कोखा दुख्ने, ठण्डी र जीर्ण ज्वर आराम हुन्छन्। यो दूध सबै किसिमका जीर्ण ज्वरहरूमा परीक्षित अत्यन्त उत्तम औषधी हो।

सन्धान कल्पनाहरू

१३. **काञ्जी** - गहत अथवा चाममलाई पानीमा राखी पकाउनु र माँड निकाल्नु। त्यस माँडमा सुठो, रायो, जिरा, हिङ, सिंधेनुन र बेसार राखी भाँडोमा मुख बन्द गरेर ३-४ दिन रहन दिनू। त्यसरी राख्दा अमिलिएको तरललाई काञ्जी (काँजी) भनिन्छ।

१४. **तुषाम्बु** - काँचो जौ भूस सहित आगोमा भुटेर कुनै भाँडोमा राख्नू, माथिबाट पानी भरेर मुख बन्द गरी मुद्रा दिनु। केही दिनपछि काममा ल्याउनू। यसलाई तुषाम्बु भनिन्छ।

१५. **सौवीर** - जौको बोक्रा (भूस) फालेर आगोमा भुट्नु, फेरी त्यसलाई एउटा भाँडोमा राखी पानीले भर्नू। अब मुख बन्द गरी मुद्रा दिनु र केही समय रहन दिनू। यही सौवीर हो।

१६. **सण्डाकी** - मूलालाई टुक्राटुक्रा पारी एउटा भाँडोमा राख्नु र माथिबाट पानी राख्नु, फेरी बेसार, हिङ, रायो, सिंधे नुन, जिरा र सुठोको धूलो राखी बन्द गरी मुद्रा दिनू। ३-४ दिन त्यसै राखी छोड्नु, यही सण्डाकी हो।

१७. **आसव** - औषधी अथवा फलहरूको रसलाई धेरैवेर नपकाई जुन पेय सन्धानद्वारा बनाइन्छ त्यसलाई आसव भनिन्छ।

१८. **अरिष्ट** - औषधी अथवा मधुर रसयुक्त द्रव्यहरू क्वाथको रूपमा पकाएपछि जुन मद्य तयार हुन्छ त्यसलाई अरिष्ट भन्छन्।

१९. **सीधु** - उखुको रसलाई पकाएपछि सन्धान गरेर बनाएको पेयलाई सीधु भन्छन्।

विविध कल्पनाहरू

२०. **नस्य** - जुन औषधी तरल वा चूर्णको रूपमा नाकमा राखिन्छ त्यसलाई नस्य भनिन्छ। नस्यको प्रयोग रुखो भएको टाउकोलाई चिल्लो पार्न, घाँटी, कुम, छाती बढाउन पनि प्रयोग गरिन्छ। विशेष रूपमा नाक, शिर र घाँटीको रोगमा नस्यको प्रयोग गरिन्छ। नस्यका विभिन्न भेदहरू छन् - स्नेह, प्रधमन, अवपीड आदि।

२१. **प्रधमन** - ६ अंगुल लामो २ मुखे खाली नलीमा कडा औषधीको चूर्ण भर्ने र त्यसको अर्को मुख बिरामीको नाकमा पुऱ्याई बिस्तारै फुक्ने। यसरी नाकबाट औषधी पुऱ्याउने विधिलाई प्रधमन (नस्य) भनिन्छ।

२२. **अवपीड नस्य** - कडा औषधीलाई कुटेर रस निकाली नस्यको रूपमा प्रयोग गर्नुलाई अवपीड नस्य भनिन्छ। घाँटीको रोग, सन्निपात, विषम ज्वर, उन्माद आदि रोगहरूमा अवपीड नस्यको प्रयोग गरिन्छ।

२३. **शलाका** - सीसा आदि धातुबाट बनेको सलाईको काँटी जस्तै पातलो र एक बित्ता लगभग लामो सिन्को जस्तो यन्त्रलाई शलाका भनिन्छ। त्रिफला आदि आँखालाई हित गर्ने द्रव्यहरूको काढामा चोपेको सीसा धातुको सलाईलाई आँखामा लगाउनाले आँखाका अनेक रोगमा फाइदा गर्छ यस सलाईलाई फेर्दा जब दोष हट्छ, आँखाबाट पानी निस्कन्छ तब रोगीले क्षणभर पानीमा एकटक हेर्नुपर्छ, अनिपछि पानीले धुनुपर्छ। जबसम्म दोष हट्दैन आँखालाई पानीले धुनुहुँदैन।

२४. वाजीकरण – जुन द्रव्यको प्रयोगबाट स्त्रीका साथमा रमण गर्न उत्साह आउँछ, मैथुन शक्ति बढ्छ, त्यसलाई वाजीकरण तथा वृष्य भन्छन् । जस्तै अश्वगन्धा, मुसली, शतावरी, दूध, मिश्री आदि । वाजीकरण दुई प्रकारको हुन्छ – एउटा वीर्यलाई रोक्ने (स्तम्भन), अर्को वीर्यको वृद्धि गर्ने । दूध, मिश्री, आदिले वीर्यको वृद्धि गर्छन् । अफीम, भाँग, जाइफल आदिले वीर्यलाई स्खलित हुनबाट रोक्छन् । दूध, माष, शुद्ध भलायोको बीजको गुदी र अमला यी सबैले आफ्नो प्रभावबाट चाँडै नै रस-रक्त आदि धातुहरूको उत्पादन गरी वीर्य पनि बढाउने काम गर्छन् त्यसको पोषण पनि गर्छन् । नागबला, काउसोको बीज आदिले वीर्य बढाउँछन्, स्त्रीहरू वीर्यको स्राव गराउने कारण (प्रवर्तक) हुन्छन्, जाइफलले वीर्यलाई रोक्ने काम गर्छ, कुटज (वनखिर्रो)ले वीर्यको क्षय गराउँछ ।

१०. औषधीसम्बन्धी नियमहरू

जुन औषधी उत्तम देशमा उम्रेको छ, असल मौसममा उखेलिएको वा टिपिएको छ, थोरै मात्रामा दिए पनि बढी काम गर्छ, अलिकति बढी भएपनि कुनै हानि गर्दैन । त्यस्तो औषधी विचार पुऱ्याएर दिएमा गुण अर्थात् फाइदा गर्छ ।

विन्ध्याचलको आसपासमा उम्रने औषधीहरू स्वभावमा गरम र हिमालयमा उत्पन्न हुने औषधीहरू स्वभावमा शीतल हुन्छन् अर्थात् विन्ध्याचलको औषधीमा गर्मीको अंश बढी हुन्छ र हिमालयको औषधीमा शीतलताको अंश बढी हुन्छ ।

आफू बस्ने गरेको ठाउँबाट उत्तर दिशाको औषधी लिनु राम्रो हुन्छ । हिमालय नेपालको उत्तरतिर पर्ने हुँदा हामीले हिमालयकै औषधीहरू संग्रह गर्नुपर्छ ।

धमिराको गोलो, फोहोर ठाउँ, अनूप देश (पानी जम्ने ठाउँ), मसान, पर्ती ठाउँ, बाटो आदिमा उत्पन्न, कीरा लागेको, आगो लागेर डढेको वा हिउँ परेर ढुसी लागेको औषधी प्रयोग गर्न योग्य हुँदैन ।

शरद् ऋतुमा औषधीहरूमा पर्याप्त रस हुन्छ । अतः सामान्य रूपमा सबै औषधीहरू शरद् ऋतुमा संकलन गर्नुपर्छ तर वमन विरेचनका औषधीहरूलाई वसन्त ऋतुको अन्तमा संकलन गर्नुपर्छ ।

जुन वृक्षहरूको जरा धेरै मोटो हुन्छ तिनीहरूको बोक्रा मात्र लिए पुग्छ । जसको जरा पातलो छ त्यसको पुरै अङ्ग (फल, फूल, पात, डाँठ र जरा) लिनुपर्छ । जस्तै - बर, नीम आदिको बोक्रा, बिजयसाल आदिको भित्री काठ, तालीसपत्र आदिको पात र त्रिफला आदिको फल लिनुपर्छ । त्यस्तै - चितुको जरा, सूरण- अदुवाको कन्द, नीम र असुरोको पात, त्रिफलाको फल, धयाँरोको फूल, कण्टकारीको सबै

अङ्ग, खयरको सार र दूध आउने रुखहरूको बोक्रा र दूध लिइन्छ । कुनै समय नीमको पात पाइएन भने बोक्राले काम चलाउनुपर्छ, बेलको काँचो फल तथा अमलतासको पाकेको फल लिनुपर्छ ।

जहाँ औषधीको कुन अंश लिने भनी वर्णन गरिएको छैन त्यहाँ उक्त वृक्षको जरा लिनुपर्छ । मिश्रण गर्नुपर्ने औषधीको परिमाण नलेखेको भए समभागमा मिश्रण गर्नुपर्छ । जहाँ पात्र वा भाँडोको बारेमा लेखिएको छैन त्यहाँ माटाको भाँडा उपयोग गर्नुपर्छ । औषधीको सेवन गर्ने समय नभनेको भए प्रातःकाल मात्र सम्झनुपर्छ । अनुपान द्रव्य नभनेको भए पानीमात्र सम्झनू ।

औषधीको लागि प्रयोग गरिने वस्तु प्रायः नयाँ नै लिनुपर्छ, तर वायुविडंग, पिप्ला, गुड, चामल, घिउ, मह, पान र काँजी यी सबै पुराना लिनुपर्छ । पुरानो गुडले रगत शुद्ध बनाउँछ, वायुको अनुलोमन तथा पित्तको शमन गर्छ । यो शुद्ध तथा मधुर हुन्छ । यी सबैलाई १ वर्षपछि पुरानो सम्झनुपर्छ ।

सबै योगहरूमा ताजा र सुख्खा द्रव्य लिनु राम्रो हुन्छ । कुनै सुख्खा द्रव्यको अभाव भएमा ताजा द्रव्य लिनुपर्दा ग्रन्थमा भनेको मानभन्दा दुईगुणा मात्रामा लिनुपर्छ । केही औषधीहरू यस्ता पनि छन् जसलाई सधैँ ताजा (नसुकेको अवस्थामा) लिनुपर्छ तर दुई गुणा गर्नुपर्दैन । जुन द्रव्य सुख्खा (सुकेको) अवस्थामा प्रयोग गर्ने भनिएको छ त्यो द्रव्य ताजा अवस्थामा लिनुपर्ने भएमात्र दुईगुणा लिनुपर्छ ।

गुर्जो, कुटज (वनखिर्रो) असुरो, कुभिण्डो, शतावरी (कुरिलो), अश्वगन्धा, सैरेयक, सूप, प्रसारिणी यी ९ द्रव्यहरू सधैँ ताजा अवस्थामा लिनु उचित हुन्छ । असुरो, नीम, पर्वर, केतकी, बला, शतावरी, सुठो, कुटज, गन्धप्रसारिणी, गुर्जो, इन्द्रवारुणी (इन्द्रेणी), नागबला, गुग्गुलु र सूप यी द्रव्यहरू ताजा लिंदा दुई गुणा लिनुपर्दैन ।

घिउ, तेल, पानी, काढा, भोजन आदि आगोमा तयार गरी शीतल भएपछि फेरी आगोमा तताइयो भने विषतुल्य भएर जान्छन् । पुरानो घिउ आवश्यक भएको ठाउँमा त्यसलाई फेरी पकाउनुहुँदैन, त्यसलाई फेरी पकाउँदा हीनवीर्य हुनजान्छ । तेल पकाएको वा नपकाएको पुरानो राम्रो हुन्छ ।

कुनै योगमा यौटै औषधी २ पटक लेखिएको भए त्यसलाई त्रुटि नसम्झी दुई गुना पारी मिसाउनुपर्छ ।

जहाँ नुन मात्र लेखिएको छ त्यहाँ सिंधे नुन नै लिनुपर्छ, जहाँ चन्दन लेखिएको छ त्यहाँ रातो चन्दन लिनुपर्छ । चूर्ण, अवलेह, आसव, तेलको योगमा चन्दन मात्र लेखिएको छ भने सेतो चन्दन नै लिनुपर्छ, किन्तु काढा वा लेपका लागि रातो चन्दन नै लिनुपर्छ । कहीं यस नियमभन्दा फरक व्यवस्था पनि पाइन्छ । जस्तै- एलादि

चूर्णमा रातो चन्दन प्रयोग गरिन्छ, त्यस्तै कुनै काढा वा लेपमा सेतो चन्दन पनि प्रयोग हुन्छ । लवङ्गादि चूर्ण, चन्दनादि चूर्ण, लाक्षादि तैल, कुमारी आसव, च्यवनप्राशमा प्रायः सेतो चन्दनकै प्रयोग हुन्छ ।

औषधीको निर्माण गर्दा सम्बन्धित विषयको विज्ञले कुनै योगमा राख्ने भनिएका अनेक द्रव्यहरूमध्ये कुनै औषधी रोग वा रोगीको अवस्था अनुसार दिन नमिल्ने ठहराएमा त्यसको सट्टा अरू औषधीको मिश्रण गर्नसक्छ ।

११. प्रतिनिधि द्रव्यको प्रयोग

कुनै योगको निर्माण गर्दा त्यसमा राख्नुपर्ने द्रव्य नपाइएमा त्यसको सट्टा समान गुण भएको अर्को द्रव्य प्रयोग गर्न सकिन्छ । त्यस्तो द्रव्यलाई प्रतिनिधि द्रव्य भनिन्छ । त्यसमा पनि योगको प्रधान औषधीको प्रतिनिधि कदापि लिनुहुँदैन, त्यसका लागि प्रधान औषधी नै लिनुपर्छ । विभिन्न औषधीहरूका प्रतिनिधिहरू यस प्रकार हुन्छन् –

द्रव्य	प्रतिनिधि
१. चितु	दन्ती वा अपामार्गक्षार
२. धमासा	जवासा
३. तगर	कुठ
४. मूर्वा	जिंगिणीका बोक्रा
५. लक्ष्मणा	मयूरशिखा
६. मौलसिरी	रातो वा निलो कमल
७. नीलकमल	कुमुदिनी
८. चमेलीको फूल	ल्वाँग
९. आँककको दूध	आँककको पातको रस
१०. पुष्करमूल	कुठ
११. चावो	पिप्लामूल
१२. कलिहारी	कुठ
१३. बाकुची	टाप्रेको बियाँ
१४. दारुहल्दी	हलेदो
१५. रसाञ्जन	दारुहल्दी (चुत्रो)
१६. सूरतको माटो	फिटकिरी, खरीमाटो
१७. तालीसपत्र	स्वर्ण तालीस
१८. भारङ्गी	कण्टकारीको जरा

१९. कालो नुन	साँचर नुन, सिंधे नुन
२०. जेठीमधु	धयेंरोको फूल
२१. अमलवेत	चूक
२२. कागती	चूक
२३. दाख	कुम्भेरफल (खमारी)
२४. कुम्भेरफल	बन्धूकको फूल
२५. नरव	ल्वाँगको फूल
२६. कस्तूरी	कङ्कोल (शीतलचिनी)
२७. कंकोल	चमेलीको फूल
२८. कपूर	सुगन्धी मोथा
२९. गठौन(केसर)	कुसुमको नयाँ फूल
३०. सेतो चन्दन	कपूर, रातो चन्दन
३१. रातो चन्दन	ताजा खस
३२. उत्तीस	मोथे
३३. हर्रो	अमला
३४. नागकेशर	कमलकेशर
३५. मेदा	शतावरी (कुरिलो)
३६. महामेदा	,,
३७. जीवक	विदारीकन्द
३८. ऋषभक	,,
३९. काकोली	अश्वगन्धा
४०. ऋद्धि	वाराहीकन्द (गिठो)
४१. भलायो	चितु
४२. उखु	नरिवल
४३. स्वर्ण(सुन)	स्वर्णमाक्षिक
४४. चाँदी	रौप्यमाक्षिक
४५. स्वर्णमाक्षिक	पहेंलो माटो
४६. रौप्यमाक्षिक	,, ,,
४७. स्वर्ण भस्म	कान्त लौह भस्म
४८. चाँदी भस्म	,, ,, ,,
४९. कान्त लौह	तीक्ष्ण लौह
५०. मोती	मोतीको सिपी

५१. मह	पुरानो गुड
५२. मिश्री	सेतो खाँड (सख्खर)
५३. आकाशबेल(ऐजेरु)	निशोथ, पित्तपापडा
५४. बज्र (हीरा)	मुँगा
५५. अगर	दालचिनी
५६. ल्वाँग	केशर
५७. अंगूर	मुनक्का
५८. अञ्जिर	मुनक्का
५९. अजमोदा	खुरासानी अजवायन
६०. ज्वानो	कालो जिरा
६१. अदुवा	मरिच
६२. अनानास(भैँकटहर)	स्याउ
६३. मिठो अनार	अमिलो अनार
६४. इसबगोल	बिंहीदाना
६५. अफीम	खुरासानी अजवायन
६६. रहर (दाल)	मसुरो
६७. अश्वगन्धा	कुठ
६८. आमा हल्दी	बाकुची
६९. सत्यानाशी	कुठ
७०. कण्टकारी	कुठ
७१. दूध	मूँग वा मुसुरोको झोल
७२. घिउ	ताजा घिउ
७३. चिराइतो	चन्दन
७४. चोपचिनी	उशवा
७५. मही	दही
७६. जमालगोटा	एरण्ड
७७. तज	दालचिनी
७८. तालमखाना	सालममिश्री (पाँचऔँले)
७९. तिल	आलसको बियाँ
८०. दही	दहीको पानी
८१. बाख्राको दूध	गाईको दूध
८२. गाईको दूध	बाख्राको दूध

८३. छिंके झार	मैनफल, मरिच
८४. नख	चिराइतो
८५. निलो तुथो	स्वाग
८६. प्याजको बियाँ	शलगमको बियाँ
८७. पालकको बियाँ	कुल्फाको बियाँ
८८. पित्तपापडा	सनायपत्ता
८९. पिप्लामूल	बालछड
९०. पोस्तदाना	अफीम
९१. बथुवा	पालुँगो
९२. बनप्सा	निलोफर (नीलकमल)
९३. बिजौरा(बिमिरो)	कागती, सुन्तला
९४. मुला	शलगम
९५. कालो मुसली	सेतो मुशली
९६. मेंहदी	मुण्डी
९७. बदामको तेल	पोस्ताको तेल
९८. अडेरको तेल	जैतुनको तेल
९९. लोबान	मस्तगी
१००. अपामार्ग	मुण्डी
१०१. सिमलको जरा	शतावरी (कुरिलो)
१०२. जूही	चमेली
१०३. मयूर	खरायो, हंस, मुसा
१०४. कंकोल (शीतलचिनी)	जाइफल
१०५. भलायो	रक्तचन्दन
१०६. पुष्करमूल	कुठ
१०७. आलुबखडा	अमिली
१०८. इन्द्रजौ	तोदरी, जाइफल, बहमन सुर्ख
१०९. इन्द्रेणी	नीलको बियाँ
११०. उभाव	लिसोडा, मुँगा
१११. उशवा	चोपचिनी
११२. एलुवा(मुसन्वर)	निशोथ (विरेचनका लागि)
,,	रसाञ्जन (शोथमा)
११३. कचूर	अञ्जीर, अदुवा

११४. कतीरा	बबूलको गुँद, सेतो खयर, गेरु
११५. कपूर	सेतो चन्दन, वंशलोचन
११६. सिन्दुरे	वायुविडङ्ग
११७. काउसोको बियाँ	उटंगनको बियाँ
११८. कसेरु	कमलगट्टा
११९. कालो जिरा	जिरा, सूप
१२०. काला दाना	इन्द्रायणको जरो
१२१. काहूको बियाँ	पोस्तको बियाँ
१२२. खुलन्जान	दालचिनी, शीतलचिनी
१२३. केरा	मिश्री, गुड
१२४. केशर	मिश्री, तज
१२५. कमलगट्टा	अमलाको बियाँ
१२६. गुर्जो	गुर्जोको सत्त्व
१२७. गुलाबजल	सुपको काढा
१२८. गुलाफको फूल	बनप्सा (घट्टेघाँस)
१२९. गहत	आलस
१३०. गोखुर	काँक्राको बियाँ

१२. औषधी परीक्षा

रोगहरूको उपचारका लागि प्रयोग गरिने औषधी आफ्नो स्वाभाविक गुण पूरा मात्रामा भएमा रोग निको पार्न उपयोगी हुन्छ, गुणहरू पूरा नभएमा अथवा भएको गुण नष्ट भएपछि उपयोगी हुँदैन र हानिकारक पनि हुनसक्छ । अतः कुनै पनि औषधी प्रयोग गर्नुभन्दा पहिले त्यसमा गुणहरू पूरा भएनभएको, द्रव्य सक्कली भएको, नबिग्रिएको, हानि नगर्ने आदि कुराहरू राम्ररी बुझ्नु आवश्यक हुन्छ । अतः कुनै पनि औषधीलाई हेरेर, छामेर, चाखेर वा पानीमा घोल्ने, आगोमा बाल्ने आदि प्रक्रियाद्वारा जाँच्ने गरिन्छ । त्यस्तो कामलाई औषधीको परीक्षा भनिन्छ ।

उदाहरणहरू-

१. हर्रो - नयाँ, चिल्लो, भारी, गोलाकार, पानीमा डुब्ने, गुदी धेरै र बियाँ सानो भएको हर्रो राम्रो हुन्छ । यी गुणबाहेक हर्रोको तौल २ तोला (२५ ग्राम) भएमा श्रेष्ठ मानिन्छ ।

२. भलायो - पानीमा राख्दा डुबेर जाने भलायो उत्तम हुन्छ ।

३. वाराहीकन्द - बँदेलको टाउको जस्तो पुष्ट भएको छ भने उत्तम हुन्छ ।

४. सोंचर नुन - काँचको समान निर्मल भएमा राम्रो मानिन्छ ।

५. स्वर्णमाक्षिक (सानामुखी) - सुनको जस्तो कान्ति भएको उत्तम हुन्छ ।

६. मन:शिला - इन्द्रकमल जस्तो देखिने मन:शिला उत्तम हुन्छ ।

७. शिलाजीत - यसको रङ्ग कालो हुन्छ, गोमूत्र जस्तो गन्ध हुन्छ, तितो - टर्रो स्वाद हुन्छ, नरम र हल्का हुन्छ । जमीनमा पर्दा नफैलिने, आगोमा राख्दा धुवाँ हुँदैन बरू लिंगाकार भएर माथि उठ्छ । पानी भरिएको भाँडोमा राख्दा धागो जस्तो भएर पींधसम्म पुग्ने भएमा उत्तम हुन्छ ।

८. सेतो चन्दन - भारी तथा बास्ना राम्रो आउने उत्तम हुन्छ ।

९. रातो चन्दन - अधिक रातो रङ्गको भए उत्तम हुन्छ ।

१०. अगर - कागको चुच्चोजस्तै चिल्लो र भारी भए राम्रो हुन्छ ।

११. देवदारु - वास्ना भएको, हलुंगो र रुखो भएमा उत्तम हुन्छ ।

१२. सरल (सल्लो) - बढी चिल्लो र सुगन्धित भए राम्रो हुन्छ ।

१३. जाइफल - भारी, चिल्लो, गोल तथा भित्रबाट सेतो भएको उत्तम हुन्छ ।

१४. दाख - गाईको थुन जस्तो पुष्ट र लामो आकारको भए उत्तम हुन्छ । करौंदा जस्तो मध्यम हुन्छ ।

१५. दारुहरिद्रा (चुत्रो) - अत्यन्त पहेंलो राम्रो हुन्छ ।

१६. मह - मह त्यही उत्तम हुन्छ जुन गाईको घिउ समान रुचिकारक र सुगन्धित हुन्छ । शुद्ध मह कुकुरले खाँदैन, त्यसमा बत्ती भिजाएर बाल्दा राम्रो बल्छ, कागजमा राख्दा कागज भिज्दैन । तेलको रङ्गको मह सबैभन्दा उत्तम हुन्छ ।

१७. केशर - यो काश्मिरको राम्रो हुन्छ । यो हलुंगो हुन्छ, त्यसैले तौलमा बढी चढ्छ । यो पहेंलो मिश्रित रातो रङ्गको र सुगन्धित हुन्छ । स्वादमा तितो वा अलिकति क्षारीय हुन्छ । यो थोरै जिब्रोमा राख्दा टाउकोमा गर्मी ल्याइदिन्छ ।

१८. चन्दनको तेल - यो तेललाई कागजमा लगाएर आगोनेर लैजानाले कागज एकदम सफा र सेतो देखिन्छ, आगो चम्कन्छ । असली तेल भए कागजबाट तेल मात्र उडेर जान्छ, कागजमात्र रहन्छ । असली तेल नभएमा कागज चिल्लो (तेलयुक्त) नै रहन्छ ।

१९. कस्तूरी - सियोमा धागो उनेर त्यसलाई लशुनको बियाँ (पोटी) बाट छिराउनू । पछि त्यस धागोलाई कस्तूरीको बिनाबाट छिराउनु ।

धागोमा कस्तूरीको बास्ना आयो भने कस्तूरी शुद्ध हो। लशुनको गन्ध आयो भने अशुद्ध हुन्छ।

१३. औषधीहरूको दुष्प्रभाव कम पार्ने (मारक) द्रव्यहरू -

कुनै औषधीको प्रयोग गर्दा त्यसबाट कुनै हानि हुनसक्ने अवस्थामा त्यसबाट बच्ने उपाय पनि जानी राख्नुपर्छ। त्यसो भएमा कुनै पनि औषधीबाट तत्काल वा पछि कुनै कष्ट उत्पन्न भएमा त्यसको उपचार गर्न सकिन्छ। त्यसै भएर यहाँ केही द्रव्यहरूबाट नराम्रो असर भएको खण्डमा त्यसलाई हटाउन उपयोगी द्रव्यहरूको संकेत प्रस्तुत गरिँदै छ -

द्रव्यको नाम	त्यसको नराम्रो असर हटाउने अर्को द्रव्य
१. हीराकसीस	मही (तक्र)
२. हीरा	ताजा घिउ -दूध, वमन गराउनु।
३. हिङ	वनप्सा, कतीरा
४. हल्दिया (विष)	घिउ, वमन गराउनु
५. सानो (जंगी) हर्रो	मह र घिउ
६. हल्दी (हलेदो)	निबुवा वा बिमिरोको रस
७. सिंघाडा	नुन तथा गरम द्रव्य
८. शिलारस	मस्तगी
९. शिलाजीत	घिउ
१०. शतावरी	मह
११. मण्डूर	कतीरा, मह
१२. रस कपूर	गाईको दूध
१३. मुर्दासँग	वमन, घिउ, बादाम रोगन
१४. भलायो	ताजा नरिवल, सेतो तिल, जौ
१५. भिण्डी	गरम मसला
१६. बयर	गुलकन्द
१७. बैंगन (भण्टा)	घिउ
१८. बदाम	खाँड
१९. बाजरा	दूध, घिउ, खाँड
२०. बेथे	गरम मसला

२१. वत्सनाभ	निर्विषी
२२. पारो	दूध, चिल्लो जूस
२३. प्याज	सिरका, नुन, मह
२४. पपीता (मेवा)	खाँड (सख्खर-खुदो)
२५. नासपाती	महको शर्वत
२६. काँचो नरिवल	खाँड (सख्खर), मिश्री, अमिलो फल
२७. सुन्तला	नुन, गुड
२८. गाईको दूध	मह, खाँड
२९. बाख्राको दूध	मह वा सूप
३०. सिउँडी	ताजा दूध
३१. दही	नुन, सुठो, पुदीना, जिरा
३२. शहतूत	मह
३३. तिल	आगोमा भुट्नु, मह
३४. तर्बुजो	मह, गुड
३५. तमाखु	ताजा दूध
३६. जौ	घिउ
३७. जाइफल	धनियाँ, मह, वनप्सा
३८. जामुन	नुन
३९. जमालगोटा	दूध, चिनी
४०. जुनेलो	गुलकन्द
४१. लुँडेको साग	गरम मसला
४२. चुन	घिउ, बदामको तेल
४३. चिरौँजी मह	कागतीको शर्बत
४४. अंगूर	सूप, गुलकन्द
४५. चामल	घिउ, सख्खर, दूध
४६. चरस	गाईको दूध
४७. चना	पोस्त, गुलकन्द
४८. राती गेडी	सुख्खा धनियाँ, ताजा दूध
४९. भोगटे	खाँड (सख्खर)
५०. गुलाबजामुन	स्याउ

५१. गाँजा,	गाईको घिउ, अमिलो
५२. खिरनी (फल)	गुलकन्द, मही
५३. खर्बुजा	मह, सिकञ्जबीन
५४. कुचिला	वमन, घिउ, मिश्री
५५. काला दाना	बदामको तेलमा भुटेको हर्रो
५६. कसेरु	कसेरुको बोक्रा, खाँड
५७. करौंदा	नुन, अमिलो
५८. करमकल्ला (बन्दाकोपी)	घिउ, नुन
५९. कपूर	केशर, कस्तूरी
६०. करवीर	मह, घिउ
६१. अमिली	उन्नाव, वनप्सा
६२. आलु	गरम मसला
६३. आँप	जामुन, पानी, सिकञ्जबीन
६४. अम्बा	सुठोको मुरब्बा, सूप
६५. अफीम	केशर, दालचिनी
६६. अमिलो अनार	गुलियो अनार
६७. भैंकटहर	खाँड, सुठोको मुरब्बा
६८. ओखर	अनारको रस

१४. साधारण औषधीहरूको गुण

१. ज्वानु

यो पाचक, उत्तेजक, वायु अनुलोमक हुन्छ । यसको फूल (सत्त्व), अर्क, तेल सबै बजारमा पाउन सकिन्छ ।

ज्वानु, सिंधे नुन, हिङ, जङ्गी (सानो) हर्रो यी प्रत्येकको ३०-३० रत्ती (लगभग ३ ग्राम) कुटी मसिनो धुलो पारी छानेर मिसाई चूर्ण तयार पार्ने । यो चूर्ण भोजनपछि ५ लालको (६२५ मि.ग्रा.) मात्रामा दिनको २-३ पटक खानू । यसले अजीर्ण, गानुगोला तथा शूललाई निको पार्छ । ज्वानुको तेल ५ थोपा, बबूलको गुँद ३० थोपा दुवैलाई राम्ररी मिलाई १/२ औंस पानीमा मिसाएर खानाले अजीर्ण र वायुविकारमा फाइदा गर्छ ।

शुद्ध हीराकसीस १/२ लाल (६२ मि.ग्रा.) ज्वानुको अर्क २.५ तोला (३० मि.लि.), चिराइतोको काढा पानी २.५ तोला सबलाई मिलाएर दिनमा २ मात्रा गरी खानाले रगतको वृद्धि भइ शरीरको बल बढ्छ। २० भाग उम्लीरहेको पानीमा ३ भाग चिराइतोको धुलो १५ मिनेटसम्म रहन दिनाले चिराइतो पानी तयार हुन्छ।

ज्वानुको चूर्ण, सुकमेलको चूर्ण, मरिच र सुठोको चूर्ण सबैको ३-३ ग्राम मिसाएर ३ मासाको मात्रा गरी दिनमा २ पटक पानीसँग खाँदा पाचन राम्रो भएर वायुको शमन हुन्छ।

२. मुसब्बर

यो खयर वा बदामी रङ्गको डल्लाको रूपमा बजारमा पाइन्छ। यसको स्वाद तितो हुन्छ र अलिअलि बास्ना पनि आउँछ। यसलाई १२ घण्टासम्म उमालेको पानीमा भिजाएर राख्नू, पछि सफा कपडाले छानेर छायामा सुकाउनू। यो खाएमा जुलाफ लागेर अलिअलि पित्त निस्कन्छ, कहिलेकाहीं पेट पनि दुखाउँछ। प्रायः यो औषधी खाएको १५-२० घण्टा पछि दिसा लाग्न थाल्छ। यो औषधी बच्चालाई, गर्भिणी महिला, अल्काई रोगी, यकृत् रोगीलाई दिनुहुँदैन।

मुसब्बर र हिङ १-१ माशा (१ ग्राम) मिसाएर त्यसमा मह थपेर १२ ओटा गोली पार्नु। १-१ गोली दिनमा २ पटक खाएमा हिस्टीरिया, मूर्च्छा रोग र अजीर्णजन्य वायु रोगमा फाइदा गर्छ।

३. ठूलो सुप

यो सुगन्धित, पाचक र उत्तेजक हुन्छ। सुपको धुलो १.५ माशा (१.५ ग्राम), जंगी हर्रोको चूर्ण ३ माशा (३ ग्राम), चिनी ३ ग्राम सबैको १ मात्रा गरेर रातमा सुत्ने समयमा खानाले दिसा सफा हुन्छ।

भुटेको सुपको धूलो र भुटेको जिराको धुलो हरेक १२ ग्राम मिसाउनू। ३ ग्राम अथवा सानो चम्चाको १ चम्चा भोजनपछि खानाले अजीर्णको समस्या शान्त पार्छ।

४. असुरो (वासक)

यसको पात र जराले खोकी एवं दममा फाइदा गर्छ। यसको पातलाई पकाएर त्यस पानीद्वारा कुल्ला गर्नाले दन्तशूललाई फाइदा गर्छ। छायामा सुकाएको यसको पातको धूलो गुदद्वारमा लगाउनाले अल्काई र बेर्नु निस्कनेमा फाइदा गर्छ।

यसको पातमा नुन बेरी कपडमाटो गरी आगोमा पोल्नु। पाकी सकेपछि माटो फालेर भित्र रहेको पातलाई मसिनो हुने गरी पिनेर १ रत्तीको मात्रामा खाएमा खोकीलाई अवश्य फाइदा गर्छ।

पातलाई पिनेर भगन्दरमा बाँध्नाले फाइदा हुन्छ।

ताजा असुरोको रस र मह हरेक २.५ तोला मिसाएर १-२ चम्चाको मात्रामा दिनमा ३ पल्ट खानाले खोकीलाई फाइदा गर्छ ।

असुरोको सुकेको पातको धूलोलाई देशी कागजमा बेरेर चुरोट जस्तै सर्को तानेर खानाले दम र खोकी दुवैलाई फाइदा गर्छ ।

५. हिङ

यो सुगन्धित द्रव्य हो । यो गरम हुन्छ । यसलाई शुद्ध गरेर प्रयोग गर्नुहुन्छ । यसले अजीर्ण, हैजा, पेट फुल्ने रोगमा हित गर्छ, मूर्च्छा पर्ने समस्या पनि हराउँछ ।

हिङ ५ लाल (६२५ मि.ग्रा. लगभग), तातो पानी १५ तोला (२०० मि.लि.) मा मिसाएर गुदद्वारमा पिचकारी दिएमा अपान वायु बन्द भएर शूल भएकोमा फाइदा गर्छ ।

हिङ, सुठो, मरिच, पिप्ला, ज्वानु, प्रत्येक ५ ग्राम मिसाई पिनेर कपडछान गर्नू । यसलाई हिंगादि पाचक भनिन्छ । यो १/२ ग्रामदेखि १ ग्रामको मात्रामा मनतातो पानीसँग खाएमा अजीर्ण र अग्निमान्द्य निको हुन्छ । हिङ, ज्वानु, सिंधे नुन, जंगी हर्रो प्रत्येक १० ग्राम मात्रामा पिनेर कपडछान गरी मिसाउनू । यो चूर्ण ५ ग्राम मात्रामा मनतातो पानीसँग खान दिएमा अजीर्ण सम्बन्धी शूल निको हुन्छ ।

हिङ र मुसब्बर दुवै समभाग मिलाएर १ लालको (१२५ मि.ग्रा.) गोली बनाई नित्य बिहान- बेलुका महका साथ कुभिण्डोको रससँग एक महिनासम्म खाएमा हिस्टेरिया रोग निको हुन्छ ।

६. अशोकको बोक्रा -

यो सङ्कोचक हुन्छ । यसले अल्काई र पाठेघरबाट हुने रक्तस्रावमा फाइदा गर्छ । पाठेघरमा भएको विकार - शोथ आदि निको पार्छ ।

सुकेको अशोकको बोक्रा ५ तोला (५० ग्राम), दूध ५० मि.लि., पानी २०० मि.लि. सबैलाई मिसाएर १५ मिनेट उमाल्नू र पातलो कपडाले छान्नु । यो नित्य ताजा बनाउनुपर्छ । यो ५० मि.लि. मात्रामा दिनको २ पटक खान दिनुपर्छ । गर्भाशयबाट हुने रक्तस्रावमा हित गर्छ ।

७. अतीस -

औलोको ज्वर तथा बालकहरूको पखाला रोगमा यसले आराम दिन्छ । रोग निको भएपछि तागतका लागि समेत राम्रो हुन्छ । अतीसको धुलो १५ लालको (१.५ ग्राम) १ मात्राका दरले दिनमा तीन पल्ट मनतातो पानीसँग खान दिएमा औलोको ज्वरोमा फाइदा गर्छ ।

बालकलाई दिसा लागिरहेमा - अतिसलाई आमाको दूधमा घोटेर दिनमा २-३ पटक खान दिनू, ठीक हुन्छ ।

लहरेखोकीमा - अतिस, काकडासिंगी, दालचिनी, अलैंचीको बियाँ समभाग लिएर पिनेर छान्नु । एकलाल (१२५ मि.ग्रा.) चूर्ण १ ग्राम महमा मिसाएर चटाउनाले कफ निस्केर खोकीको कष्ट आराम हुन्छ ।

८. वायुविडङ्ग -

यसका ससाना दाना हुन्छन् । यसले फित्ताजस्तो लामो जुकामा फाइदा गर्छ । वायुविडङ्गको धुलो र चिनी दुवै ३-३ ग्राम मिसाई १ मात्रा गर्नु र रातमा भोजन नगरी खाली पेट नै ख्वाउनु । फित्ता जुगा मर्छ ।

९. बबूलको बोक्रा

यो सङ्कोचक हुन्छ । यसको बाहिरी प्रयोग हुन्छ । बबूलको बोक्रा २.५ तोलालाई (३० ग्राम) पानी आधा लिटरमा राखी ३० मिनेट जति पकाएर छानी राख्नू । त्यस पानीले बाहिर निस्केको अल्काई र बेर्नुलाई सेकनाले फाइदा गर्छ । पुरुषहरूको गनोरिया नामक धातुमेह र महिलाहरूको श्वेतप्रदरमा उक्त पानीको पिचकारी दिएमा आराम हुन्छ ।

१०. बोझो

बोझोको धुलो ३० ग्राम, उमालेको पानी २५० मि.लि.मा ६ घण्टासम्म भिजाएर राख्नू । त्यो पानी २.५ तोला (३० मि.लि.) मात्रामा दिनमा ३ पटक खानाले खोकी तथा स्वरभंग(बोली बस्नु)मा फाइदा गर्छ, तागत पनि दिन्छ ।

बोझो ३० ग्राम, चिराइतो ३० ग्राम, उमालेको पानी ५०० मि.लि.मा ६ घण्टासम्म भिजाई छान्नू । त्यो पानी ३० मि.लि.को मात्रामा दिनको ३ पटक सेवन गर्नाले पूरा तागत दिन्छ ।

बोझो ६० ग्राम, धनिया ३ ग्राम, मरिच १.५ ग्राम र पानी ५०० मि.लि. सबलाई पकाउनू २५० मि.लि. जति बाँकी छँदा उतार्नू । यो पानी २.५ तोलाको (३० मि.लि.) हिसाबले दिनमा ३ पटक खाएमा पुरानो अतिसारलाई फाइदा गर्छ । बच्चालाई सानो चम्चाको १ चम्चा (५ मि.लि.) दिनू ।

११. बेल -

यसको काँचो फलले कब्जियत गर्छ, पखालामा फाइदा गर्छ । पाकेको फल रेचक हुन्छ । बेलपत्रको रस मधुमेहको औषधी हुन्छ ।

१२. सुपारी -

यसले कब्जियत गर्छ, जुका मार्न उपयोगी हुन्छ र दाँतको मञ्जनमा काम लाग्छ । सुपारी डढाएर बनाएको धुलो ६ ग्राम, खयरको धुलो ६ ग्राम, दालचिनीको धुलो १२.५ ग्राम मिसाएर मञ्जन तयार गरी दाँत माझ्ने गरेमा दाँत बलियो हुन्छ ।

१३. रामतोरियाँ

कमलो रामतोरियाँलाई पानीमा उमाल्दा पातलो, लेसिलो गूँदजस्तो झोल तयार हुन्छ । त्यसको सेवन गर्नाले शरीरमा शीतलताको अनुभव हुन्छ, पिसाब खलास हुन्छ, खोकी पनि निको हुन्छ ।

रामतोरिया ७५ ग्रामलाई पानी ५०० मि.लि.मा २० मिनेटसम्म उमालेर छान्नू । यो पानी ६०-१०० मि.लि. मात्रामा दिनको ४-५ पटक खानाले पिसाब पोल्ने र धातु बग्ने रोगमा फाइदा गर्छ ।

१४. कुबेराक्ष

यसको बियाँ आधा इञ्च लामो बदामको आकारको हुन्छ । रङ्ग खरानी जस्तो हुन्छ । यसको भित्रको गुदी औषधीको काममा आउँछ । गुदीलाई गाईको घिउमा भुटेर प्रयोग गर्नुपर्छ । कुबेराक्षको बियाँको चूर्ण ५०० मि.ग्रा.मरिचको चूर्ण २५० मि.ग्रा. मिसाई एक मात्राको दरले दिनको २ पटक खान दिएमा १ दिन, २ दिन, ३ दिन छोडेर आउने ज्वर निको पार्छ र कमजोरी पनि हराउँछ ।

१५. लोध

यसको पात खानाले जुका निस्कन्छ । लोधको पातको चूर्ण ३० ग्रामलाई पानी ५०० मि.लि. मा २० मिनेटसम्म उमाली छान्नू । यो पानीको मात्रा ५० मि.लि. हुन्छ । पहिलो दिन अडेरको तेल (Caster oil) को तेल जुलाफ लिनु, रातमा खाली पेट यो काढा खानु र बिहान फेरी अडेरको तेल (२५ मि.लि.) खान दिनू । जुका अवश्य निस्कन्छ । हरेक जुकाको औषधीमा अघि-पछि जुलाफ गर्नुपर्छ ।

१६. लशुन

यो गरम हुन्छ । यसले कब्जियत गर्छ, टुटेको हाड आदिलाई जोड्ने काम गर्छ, घाँटीलाई हित गर्छ, बल र बुद्धि बढाउँछ । आँखालाई हित गर्छ । यसले हृदय रोग, जीर्ण ज्वर, गुल्म (गानु), अरुचि, खोकी, शोथ, बाथको रोग, श्वास, जुका र कफको बिकार निको पार्छ ।

१७. पलाशको बियाँ

यसले जुकालाई बेहोश पार्छ । यसलाई पानीमा भिजाई बोक्रा निकाली गुदीमात्र सुकाएर चूर्ण बनाई प्रयोग गर्नुपर्छ । यसको चूर्ण १ ग्राम, चिनी ०.५ ग्राम मिसाई १ मात्रा बनाई दिनमा २-३ पटक २-३ दिनसम्म सेवन गराएपछि १ मात्रा अडेरको तेल (Caster oil) खान दिनू । जुका आफैं झर्न थाल्छ ।

१८. कपूर

यसको सेवन गर्दा वायुको अनुलोमन हुन्छ, अजीर्णमा आराम हुन्छ, शरीरबाट

पसिना आउँछ । तागत पनि दिन्छ । शरीरमा लगाउँदा शोथ र जोर्नीहरू दुखेको आराम हुन्छ । कपूर २.५ तोला (३० ग्राम), तोरीको तेल १० तोला (१२५) मि.लि.) अफीम १/२ तोला मिसाई मालिस गर्नाले सुन्निएको, दुखेको, र मर्केको ठाउँमा दुख्न छोड्छ ।

कपूर १८० मि.ग्रा., अफीम ६० मि.ग्रा. महुवाको पातलो गुँदमा गोली पार्नू । यसको सेवन गर्नाले लिङ्ग कठोर हुने, धातु जाने, वातको रोग र शूलमा हित गर्छ ।

कपूर ६० मि.ग्रा., अफीम ६० मि.ग्रा., हिङ ६० मि.ग्रा. मिलाएर १ गोली पार्नु । यो गोली नित्य २ पटक खानाले पखालाको लागि रामबाण औषधी हुन्छ ।

कपूर ६० मि.ग्रा., कस्तूरी ६० मि.ग्रा., मह ६० मि.ग्रा. मिसाई १ गोली बनाउनू । यसको सेवनले ज्वरो वा अर्को कुनै रोगले शीतांग भएको अवस्थामा २-२ घण्टामा शरीर नतातेसम्म दिनुपर्छ ।

कपूर ६० मि.ग्रा., जिंक अक्साइड ६ ग्राम, स्वागको चूर्ण ६ ग्राम, गहुँको मसिनो पिठो ६ ग्राम सबलाई मिसाएको चूर्ण पसिना आई ससाना बिमिरा उठ्नेको (घमौरा)मा छरिदिनाले अथवा बिस्तारै दलिदिनाले अत्यन्त फाइदा हुन्छ ।

१९. जिरा

यो अग्निदीपक र भोक जगाउने तथा सुगन्धयुक्त हुन्छ । जिरा, हर्रो, मरिच, सुठो, पिप्ला, धनियाँ प्रत्येकको धुलो बनाई १२५ मि.ग्रा. मात्रामा मिसाई बिहान-बेलुका खान दिएमा वमन भइरहेको रोकिन्छ ।

अथवा - जिरा, कालो नुन, मरिच यी प्रत्येकको चूर्ण १२५ मि.ग्रा. मिसाएर खाए पनि वमन रोकिन्छ ।

२०. खयर

यसले कब्जियत गर्छ । घाउ, मुखको खटिरा र घाँटी दुखेकोमा फाइदा गर्छ ।

खयर १५ ग्राम, उमालेको पानी १ मानामा (आधा लिटर) मिसाई लोशन बनाउनू । यो लोशन स्तनको मुन्टामा घाउ वा मुखमा खटिरा आएकोमा लगाउँदा फाइदा गर्छ ।

खयरको चूर्ण ३ ग्राम, खरी माटो ३ ग्राम, फिटकिरी ३ ग्राम, हीराकसीस १.५ ग्राम, माजूफल ३ ग्राम सबैलाई मसिनो गरी पिनेर कपडछान गरेर मञ्जन बनाउनू । यो मञ्जन दाँत सफा राख्न र बलियो पार्न उत्तम छ । यसले दन्तहर्ष पनि निको हुन्छ ।

२१. ब्राह्मी (घोटताप्रे)

यो शीतल र हलुको हुन्छ । यसले स्वर राम्रो बनाउँछ । बुद्धि, स्मरण शक्ति र आयु बढाउँछ । बिहान उठेपछि स्नान गरी यसको ३ ओटा पात गाईको घिउसँग ३ महीनासम्म खाएमा बुद्धि तथा स्मरणशक्ति निकै बढ्छ ।

२२. लुँडेको जरा

यो खेत आदिमा सर्वत्र पाइन्छ । यो केही सुख्खा र भारी हुन्छ । लुँडेको जरा टाउकोमा बाँध्दा विषमज्वर निको हुन्छ ।

२३. काठको कोइला

यो विषनाशक हुन्छ । यसले दुर्गन्धलाई नाश गर्छ । यसको चूर्ण ३०० मिलीग्राम, पदमचालको जराको चूर्ण २.५ लाल (३०० मि.ग्रा.) मिसाई १ मात्रा गर्नू । यो औषधी भोजनपछि दिनको २ पटक खाएमा पेटमा भएको वायुको वृद्धिलाई कम पार्छ ।

२४. चालमोग्राको तेल

यो बजारमा पाइन्छ । बिग्रीसकेको घाउमा लगाउँदा यसले फाइदा गर्छ । यो तेल खान पनि हुन्छ ।

चालमोग्रा तेल, नीमको तेल प्रत्येक ५० मि.ली मात्रामा मिसाई महारोगको (कुष्ठ) खटिरामा लगाउँदा फाइदा गर्छ ।

चालमोग्राको तेल ५ थोपा, मिसिलेज अर्थात् पानीमा भिजाइएको बाक्लो गूँद ३ ग्राम, चिनीको पाक ३ ग्राम, पानी १२० मि.लि. सबै तयार पारी पहिले खलमा तेल राख्नू । पछि गूँद राखी राम्ररी घोट्नु, फेरी चिनीको पाक राख्नू, फेरी सबैलाई पानीमा मिसाउनू । यी सबैको १ मात्रा हुन्छ । यो प्रतिदिन भोजनपछि खानाले कुष्ठ रोगमा फाइदा गर्छ ।

चालमोग्रा तेल ३ ग्राम, वैसलीन ३० ग्राम मिसाएर मलम बनाउनू । यो मलम कुष्ठको घाउमा लगाउनाले फाइदा गर्छ । चालमोग्राको तेल ५ थोपा, कर्डलिवर आयल २० थोपा, बाक्लो गूँद ३ ग्राम, पानी ३० मि.लि. माथि उल्लेख भए अनुसार घोटेर १ मात्रा तयार गर्नू । भोजनपछि दिनमा ३ पटक सेवन गराउनू । यसले कुष्ठरोगमा फाइदा गर्छ ।

२५. चिराइतो

यसले अजीर्ण, पित्तसम्बन्धी रोग, कलेजोको रोग तथा ज्वरोपछि हुने नातागतलाई निको पार्छ । चिराइतोको चूर्ण ३० ग्राम उमालेको पानी आधा लिटरमा घोलेर ६ घण्टासम्म राख्नू । त्यसपछि छानेर त्यो पानी ३० मि.लि. मात्रामा

दिनको ३ पटक दिएमा त्यसले लिवरको रोग निको पार्छ, रुचि बढाउँछ र तागत पनि दिन्छ ।

२६. मुनक्का

यो सुकाएको कालो दाख हो । यो बढी मात्रामा काबुलबाट (प्रायः) आउँछ । रातो रङ्ग भएको दाखलाई 'आवजूस' र कालोलाई 'मुनक्का' भन्छन् । मुनक्काको जस्तो फाइदा आवजूसले दिंदैन । यसैले राम्ररी पहिचान गरेर मात्र लिनुपर्छ । मुनक्काको चूर्ण ३ ग्राम, सुकेको अमलाको चूर्ण २५० मिलिग्राम, छोकडाको धुलो २ ग्राम सबलाई मिसाएर खूब घोट्नू । त्यसमा घिउ ३ ग्राम र मह ६ ग्राम मिसाएर बालकलाई नित्य चटाएमा खोकी हराएर जान्छ ।

२७. बदाम

यो कागजी र हाडे दुई प्रकारको हुन्छ । कागजीमा बढी गुण हुन्छ । बदामलाई राती पानीमा भिजाई बिहान बोक्रा निकाली दिनू र मिश्रीको साथमा खूब मसिनो पारी पिनेर खान दिनू, जस्तो सुकै कमजोर मानिसलाई पनि तागत आउँछ । आफ्नो शक्ति अनुसार २ देखि २५-३० सम्म बढाउँदै जानुपर्छ ।

२८. अदुवा

यो सर्वत्र पाइन्छ । सुकेको अदुवालाई सुठो भनिन्छ । अदुवाको रस २ तोला (२४मि.ली) मह ५ ग्राम दुवैलाई मिसाएर बिहान-बेलुका खानाले कफलाई निकाल्छ र दम, खोकी एवं रुघा निको पार्छ ।

अदुवाको रसमा कालो नुन मिसाई पिउनाले कफको खोकी निको हुन्छ ।

भोजनभन्दा पहिले सिधेनुन र अदुवा खाएमा भोक बढ्छ, जिब्रो र घाँटी सफा हुन्छ, अरुचि घट्छ ।

२९. चोपचिनी

यो मुख्यतया चीनबाट आउँछ र बजारमा यही नामले पाइन्छ । यसले रगत शुद्ध पार्छ र शरीरमा तागत दिन्छ । चोपचिनी ३० ग्राम, आधा लिटर पानीमा पकाउनु, आधा पानी बाँकी रहेपछि उतारेर छान्नू । यो पानी ३० मि.लि. मात्रामा दिनको ३ पटक खानाले रगत शुद्ध हुन्छ, बल पनि बढ्छ ।

३०. दालचिनी

यो बजारमा सर्वत्र पाइन्छ । धेरै बाक्लो र खस्रो खालको राम्रो हुँदैन, मसिनो र पातलो राम्रो हुन्छ । यसको गुण सुकमेलको जस्तै हुन्छ अर्थात् भोक जगाउने, पाचन गर्ने, तागत दिने र वायुको शमन गर्ने हुन्छ । यसले मन्दाग्नि, अजीर्ण, पखाला, आम र ज्वरमा पनि फाइदा गर्छ ।

दालचिनी ३ ग्राम, सुपको चूर्ण १ ग्राम, जेठीमधुको चूर्ण ३ ग्राम, मिश्री ३ ग्राम, बियाँ निकालेको मुनक्का ३ ग्राम, बोक्रा निकालेको काबुली बदाम ३ ग्राम, तितो बदाम ३ ग्रामलाई मसिनो गरी पिनेर २५० मि.ग्रा.को ९० गोली तयार पार्नू। १ गोली दिनमा ५-१० पटकसम्म सेवन गर्नाले इन्फ्लुएञ्जा अर्थात् रुघाको ज्वरोमा फाइदा गर्छ।

सुठोको चूर्ण ५०० मि.ग्रा., दालचिनीको चूर्ण ५०० मिलीग्राम र सुकमेलको चूर्ण ५०० मिलीग्राम मिसाई १ मात्रा गर्नू। यो दिनको २ पटक भोजनभन्दा पहिले खान दिएमा अजीर्ण भई पेट फुलेकोमा अति फाइदा गर्छ।

३१. चाकु (गुड)

यो जति पुरानो हुन्छ, त्यत्तिकै राम्रो हुन्छ। पुरानो गुड ५ ग्राम, सुठोको चूर्ण १२५ मि.ग्रा. तथा मरिचको चूर्ण १२५ मि.ग्रा. मिसाई खान दिएमा खोकी र रुघालाई ठीक गर्छ।

३२. ल्वाङ

यो उत्तेजक हुन्छ, रुचि बढाउँछ, तागत पनि दिन्छ। यसले अजीर्ण, शूल तथा अम्लपित्तमा फाइदा गर्छ।

ल्वाङको चूर्ण ३० ग्राम, खाने सोडा १२.५ ग्राम, उमालेको पानी १०० मि.लि. सबलाई मिसाई २५ मिनेट राखेपछि भोजनभन्दा पहिले खाएमा अजीर्णबाट उत्पन्न पेटको गडबडी निको हुन्छ। भोजनको आधा घण्टापछि खाएमा अम्लपित्त रोगमा फाइदा गर्छ।

३३. धनियाँ

यो सुगन्धित हुन्छ। यसले पाचन तथा वायुको शोषण गर्छ। धनियाँ ६ ग्राम, सुकमेल ६ ग्राम, जिरा ६ ग्राम सबैलाई बेग्लाबेग्लै भुटेर चूर्ण बनाई मिसाउनू। यसरी तयार भएको चूर्ण १ चम्चा मात्रामा खानापछि खाएमा अजीर्ण र मन्दाग्निमा अति फाइदा गर्छ।

३४. कालमेघ

यसको स्वाद तितो हुन्छ। यसले पित्तको विकार र पुरानो ज्वरमा हित गर्छ। खान नरुच्ने र नपच्ने भएमा पनि फाइदा गर्छ। कालमेघ ७५ ग्राम, हीराबोल १२ ग्राम, ब्राण्डी आधा लिटर (नपाएमा असली हिस्की) मिसाई ७ दिनसम्म राख्नू। त्यसपछि चलाएर कुटेर कपडछान गर्नु र सिसीमा सुरक्षित राख्नू। यो १ चंचाको मात्रामा दिनको २-३ पल्ट खान दिएमा अजीर्णमा फाइदा गर्छ।

३५. अजयपाल (जमालगोटा)

यसको ताजा बियाँ राम्रो हुन्छ, पुरानो राम्रो हुँदैन । यो कडा जुलाफ हो, यसले आन्द्रामा जलन उत्पन्न गर्छ । यसको तेल पनि हुन्छ । खाली तेल लगाएमा छालामा छालो (खाटा) पार्छ, अर्को तेल (नरिवल आदि) मिसाएर लगाएमा फाइदा गर्छ । यसलाई शुद्ध गरी प्रयोग गर्नुपर्छ । अजयपालको तेल २ ग्राम (२ मि.लि.) नरिवलको तेल ६० मि.लि. मा मिसाएर मालिस गर्नाले पुरानो वातरोगमा फाइदा गर्छ ।

३६. गहुँ

१/२ पाउ (१००ग्राम) गहुँ रातभरी पानीमा भिजाएर सिलौटोमा पिनी मिश्री मिसाई ७ दिनसम्म पिउनाले प्रमेह रोग निको हुन्छ ।

३७. कबाबचिनी

यसको दाना (फल) मरिचको जस्तो हुन्छ । यो बजारमा किन्न पाइन्छ । यसले पिसाब खुलाउँछ, विषको विकार नाश गर्छ, कफलाई खुकुलो पारी निकाल्छ, वायुको शोषण गर्छ, यसको चूर्ण २ ग्राममा फिटकिरीको चूर्ण ३०० मिलीग्राम मिसाएर १ मात्रा गरी दिनमा ३ पल्ट दिएमा पुरानो प्रमेह र पिशाव पोल्ने समस्या जान्छ ।

३८. धतुरो

पीडा घटाउने र वायुको शोषण गर्ने काममा आउँछ । दमलाई पनि फाइदा गर्छ । धतुरोको सुकेको पातको चूर्ण ७.५ लाल, सोडा २.५ लाल मिसाई पातलो कागजमा राखी चुरोट जस्तो सर्काएर अथवा चिलिममा राखी तमाखु खाए जस्तो खाएमा दमलाई फाइदा गर्छ ।

धतुरोको हरियो पातलाई पानीसँग पिनेर गहुँको पिठोमा मिसाई पुल्टिस बनाई लगाएको खण्डमा दुखेको, सुन्निएको वा पाक्न लागेको खटिरा आदि स्थानमा अति नै फाइदा गर्छ ।

धतुरोको पात र बेसार मसिनो गरी पिनेर लेप गर्नाले स्तन सुन्निएर दुखेको निको हुन्छ ।

३९. वनमुंग्रेलो –

यसको चूर्ण १० लाल (१२ ग्राम) र सुकाएको बेलको चूर्ण ३ ग्राम मिलाई १ मात्रा गर्नू । दिनमा ३ मात्रा दिएमा आउँको रोग निको हुन्छ ।

४०. माजूफल

यसले कब्जियत गर्छ । बेर्नु निस्कने, अल्काई तथा खटिराबाट रगत बग्ने भएमा

प्रयोग गर्दा फाइदा गर्छ । माजूफलको चूर्ण ७.१।२ ग्राम, शुद्ध अफीम १.५ मिलीग्राम, दालचिनी ३०० मिलीग्राम र मह आवश्यक मात्रामा मिसाएर १ गोली पार्नू । यसको सेवन गर्नाले अजीर्ण र पुरानो अतिसारमा फाइदा गर्छ ।

माजूफल ६ ग्राम, शुद्ध अफीम १८५ ग्राम र भ्यासलिन ३० ग्राम सबलाई मिसाई मलम बनाउनू र अल्काईको रोगीको गुदद्वार भित्र आँलाले लगाउन दिनु, आराम हुन्छ ।

४१. गर्जन तेल

यो बजारमा पाइन्छ । यसको बियाँ खाएमा फोक्सोको रोग र मूत्ररोगमा फाइदा गर्छ । तेलले मालिस गरेमा कुष्ठ रोगको घाउमा फाइदा गर्छ । गर्जन तेल २५ मि.लि., भ्यासलिन १०० ग्राममा मिसाई कुष्ठ रोगको घाउमा लगाउनाले फाइदा गर्छ ।

गर्जन तेल ३० थोपा, बाक्लो गूँद ३ ग्राम, चूनको पानी १५ मि.लि. र पानी ३० मि.लि. खलमा राखी मिसाएर १ मात्रा गर्नू । यसलाई दिनमा २ पल्ट खान दिएमा कुष्ठ रोगमा फाइदा गर्छ ।

४२. सुठो

सुकेको अदुवालाई सुठो भनिन्छ । यो सुगन्धित, उत्तेजक र पाचक हुन्छ । सुठोको काढा पिउनाले अजीर्ण तथा पेट फुलेको अवस्थामा फाइदा गर्छ ।

सुठोलाई गाईको दूधमा चन्दन जस्तो गाढा हुने गरी घोटेर निधारमा लेप गर्नाले टाउको दुखेकोमा फाइदा गर्छ ।

बढी पसिना आई शीताङ्ग भएको अवस्थामा जहाँ बढी पसिना आएको छ त्यहाँ सुठोको चूर्ण राम्ररी घस्नाले पसिना बन्द भएर जान्छ ।

पखाला र हैजा लागेको अवस्थामा पिडौँला फर्केकोमा यो चूर्ण घस्नाले फाइदा गर्छ ।

सुठो, मरिच, पिप्ला, हिंग, बोझो, कालो नुन, हर्रो यी सबैको समभाग चूर्ण मिसाएर राख्नू । यो चूर्ण ३-६ ग्रामको मात्रामा दिनको २ पटक तातो पानीसँग खानाले अतिसारको बेथा हराउँछ ।

सुठो, अतीस, नागरमोथा, सुगन्धवाल र इन्द्रजौको समभाग चूर्ण राखी बनाएको काढा खान दिएमा सबै किसिमको दिसा बढी लाग्ने भएकोमा फाइदा गर्छ । यसको मात्रा ५०० मि.ग्रा. देखि २ ग्राम सम्म उमेरको विचार गरेर दिन सकिन्छ ।

सुठो, मरिच, सिंधे नुन, पुरानो गुड समभाग लिएर काढा बनाउनु र मनतातो गरी बालकलाई खवाउनू, खोकीलाई अवश्य फाइदा गर्नेछ । मात्रा ५ लाल (६२५

मि.ग्रा.) देखि माथि उमेरअनुसार दिन सकिन्छ ।

४३. गुर्जो –

यो स्वादमा तितो हुन्छ । यसले पित्तको शमन गर्छ, रगतलाई सफा गर्छ, पिशाव खोल्छ, ज्वर कम गर्छ र शरीरलाई तागत दिन्छ ।

गुर्जोको ताजा रस (अथवा घन) १०० मि.लि. मह १ ग्राम र सिंधे नुन १ ग्राम यी सबैलाई मसिनो गरी मिसाई छानेर आँखामा गाजल जस्तै गरी लगाएमा आँखाको तिमिर रोग, आँखा चिलाउने, मोतीविन्दु जस्ता अनेक रोगहरूमा फाइदा गर्छ ।

अभ्रक भस्म २ रत्तीलाई गिलोयको रस र मिश्रीसँग खाई माथिबाट गाईको ताजा दूध पिउनाले प्रमेह रोग अवश्य जान्छ । गुर्जोको रस २ तोला (२० मि.लि.), मह ६ ग्राम, बेसार ७५० मि.ग्रा., सेतो चन्दनको धुलो ३ रत्ती (३७५ मि.ग्रा.) सबलाई मिसाएर बिहान बेलुका खाएमा जलनसहितको प्रमेह रोगमा फाइदा गर्छ ।

गुर्जोको डाँठ ल्याई कुठेर पानीमा भिजाइ राख्दा त्यसको सेतो धुलो जम्न थाल्छ । त्यसलाई सुकाइ दिएमा गुर्जोको सत्त्व (गिलोय सत) तयार हुन्छ । त्यसले तागत दिन्छ, पिशाब पोल्ने समस्या पनि हटाउँछ । यसको मात्रा ३ ग्रामसम्म दिनमा २ पटक चिनीयुक्त दूधसँग दिन सकिन्छ ।

४४. ईसबगोल

यो बजारमा सर्वत्र पाइन्छ । पानीमा भिजाइराख्नाले एक प्रकारको लेसिलो रस बन्छ । यो खाएमा पेटलाई ठण्डा राख्छ र दिसा कब्ज (सारो) भएकोमा खलास गराउँछ, पिशाब पोलेकोमा पनि फाइदा गर्छ ।

ईसबगोलको भूस ३ ग्राम, इन्द्रजौ (ठूलो कुरो) को चूर्ण ३०० मि.ग्रा. मिसाई एक मात्रा गर्नू । यो दिनमा ३ पटक खान दिएमा आउँ परेकोमा अति फाइदा गर्छ ।

ईसबगोलको भूस ३ ग्राम, खाने सोडा ६२५ मि.ग्रा., कबाबचिनीको चूर्ण ९०० मि.ग्रा. मिसाई १ मात्रा गर्नू । यो दिनको २-३ पल्ट खानाले प्रमेह रोगमा फाइदा गर्छ ।

ईसबगोलको भूस ६ ग्राम ५०० मि.लि. (आधा लिटर)पानी मा १० मिनेट पकाउनू । यो ५ तोलाको मात्रामा (६० मि.लि.) दिनको ३ पटक खान दिएमा पिसाब पोल्ने समस्या हराउँछ ।

४५. जङ्गली पीखवान

यसको गुण डाक्टरी 'एपिकाक' जस्तै हुन्छ । यो वमन गराउन, कफ फटाउन र आउँ रोग निको पार्न उपयोगी हुन्छ । यसको जराभन्दा पातमा बढी गुण हुन्छ । जङ्गली पीखवानको पातको चूर्ण ५ लाल (६२५ मि.ग्रा.) अफीम १/२ लाल

(६२ मि.ग्रा.), गाढा गूँद ३ माशा (३ ग्राम), पानी २.५ तोला (३० मि.लि.) खलमा घोटेर १ मात्रा गर्नू। दिनमा ३ पल्ट खाएमा पखाला र आउँलाई फाइदा गर्छ।

विष आदिको विकारमा यसको पातको चूर्ण २ ग्राम तातोपानीसँग दिएमा तत्काल वमन भएर विष निस्कन्छ। यो मात्रा युवक मानिसलाई हो।

४६. जटामसी

यसले हिस्टीरिया र छारे रोगमा फाइदा गर्छ। वायुको शमन तथा अजीर्णमा हित गर्छ। जटामसीको चूर्ण १ माशा, कपूर १.५ लाल, दालचिनी चूर्ण १.५ लाल मिसाई १ मात्रा गर्नू। यो मात्रामा दिनको २ पल्ट ख्वाएमा हिस्टेरिया, छारे रोग र शरीर खुम्चिने रोगमा फाइदा गर्छ।

जटामसी १२.५ तोला, ब्राण्डी वा असली रक्सी १ मानामा ३ दिन भिजाई छान्नू। यो १ चम्चा वा ३ माशाको मात्रामा प्रयोग गर्न सकिन्छ। यस औषधीका साथ पोटाशियम ब्रोमाइड ५ लाल र टिंक्चर वेलेरियम १० थोपा मिसाई दिनमा २-३ पल्ट ख्वाउनू। हिस्टीरियालाई फाइदा गर्छ।

जटामसी चूर्ण ६ माशा, उमालेको पानी १ पाउ ५ तोलामा भिजाएर १।२ घण्टापछि छान्नू। यसको मात्रा २.५ तोला (३० मि.लि.) हुन्छ। यो पानी दिनको ३ पल्ट ख्वाएमा हिस्टीरिया र टिटानस (शरीर खुम्चने रोग)मा निकै आराम दिन्छ।

४७. काला दाना

यो बजारमा सर्वत्र पाइन्छ र रेचक हुन्छ। यसको चूर्ण १ माशा मरिचको चूर्ण ७.५ लाल मिसाई १ पुरिया बनाउनू। यो मिश्रण दिनमा ३ पल्ट दिनाले ज्वरोमा फाइदा गर्छ।

४८. कवै

बजारमा सर्वत्र पाइन्छ। यसबाट पिक्रो - टाक्सिन नामक सत्त्व तयार हुन्छ। यो सत्त्व खाएमा सारा शरीर खुम्चिने र फड्कने हुन्छ, यसै भएर यो बाहिर छालामा लगाउने मात्र गर्नुपर्छ। काकमाचीको बियाँको चूर्ण ५ लाल (६२५ मि.ग्रा.) अथवा तेल ३ माशा (३ ग्राम), भ्यासलिन वा नरिवलको तेल २.५ तोलामा (३० मि.लि) मिसाएर लगाउनाले उकुजमा फाइदा गर्छ।

४९. सिन्दूरे वा कमिला

यसको फलको धुलो बजारमा सर्वत्र पाइन्छ। चर्मरोग र लामो जुगा निको पार्न यसको प्रयोग गरिन्छ।

५०. काकडासिंगी

यो सानो सानो माजूफलको दाना जस्तो हुन्छ। यसले कफ खुकुलो पारी

निकाल्छ, पाकस्थली र मूत्राशयलाई शीतलता दिन्छ । यसको चूर्ण २.१।२ लाल (३१० मि.ग्रा.) अतीस चूर्ण २.१/२ लाल, पिप्लाको चूर्ण २.१/२ लाल र मह १ माशा सबलाई मिसाएर दिनमा २ पटक चटाउनाले बच्चाहरूको खोकी ठीक हुन्छ ।

५१. इन्द्रजौ र यसको बोक्रा

यो बजारमा सर्वत्र पाइन्छ । यसले आउँको रोगमा निकै फाइदा गर्छ । इन्द्रजौ (कुटज-वनखिर्रो)को बोक्राको चूर्ण २.१/२ लाललाई आधा पाकेको बेलको काढासँग दिनमा २-३ पटक ख्वाएमा आउँको रोगमा हित गर्छ ।

५२. जौ

यसले प्रमेह रोगीलाई निकै फाइदा गर्छ, यो अनुभव भएको कुरो हो । जौको रोटी महसँग खानाले प्रमेह रोगमा लाभ हुन्छ । महमा मिसाएर जौको सातु खानु एकदम लाभदायक छ । जब प्रमेह रोगीको पिसाब सफा भएर लस्सारहित हुन्छ, तब रोग ठीक भएको सम्झनुपर्छ ।

५३. गोखरु

बेलको जरा र गोखरुलाई पिनेर समभाग गरी १ तोला मनतातो पानीमा भिजाई अलिकति मिश्री पनि मिसाई पिउनाले १२ दिनमा प्रमेह रोग निको हुन्छ ।

५४. तेजपात

तेजपात, दालचिनी, सुकमेल र नागकेशर समभाग गरी कटेर, छानेपछि मिसाई राख्ने । यो मिश्रण सुँघ्नाले रुघा कम हुन्छ ।

५५. चितु (चित्रक)

यसलाई शरीरमा कहीं लगाउनाले फोका उठेर घाउ बनाउँछ । चितुको गिलो जरा पिनेको १ तोला २ माशा, चामलको पिठो २.५ तोला र पानी आवश्यकतानुसार मिसाई गाढा लेदो तयार पार्नू र कपडामा प्लास्टर जस्तो बनाउनू र दुखेको जोर्नीमा अथवा सुन्निएको ठाउँमा १० देखि २० मिनेटसम्म राख्नू । अर्थात् १/२ घण्टा बढी नराख्नू अथवा फोका उठ्न लागेपछि तुरुन्त निकाल्नु र तातो पानीमा कपास भिजाएर उक्त ठाउँलाई पुछिदिनू । त्यस ठाउँमा घिउ अथवा भ्यासलिन हल्कासँग मलिदिनू । दुखेको वा सुन्निएको निको हुँदैजान्छ ।

५६. गन्धवेना

यो घाँस जस्तो हुन्छ । पानीमा उमाल्दा यसबाट तेल निस्कन्छ जुन अति सुगन्धित हुन्छ । यो तेल दुखेको ठाउँमा मालिस गर्नाले दुख्न कम हुन्छ । खाएमा वायु शोषण गर्छ, उत्तेजक पनि छ । यसले हैजाको वमनमा फाइदा गर्छ ।

गन्धवेनाको तेल २.५ लाल, बाक्लो गुँद १.५ माशा, दालचिनीको पानी १ तोला २ माशा सबलाई खलमा घोटेर १ मात्रा गर्नू । दिनमा २-३ पल्ट खानाले वमन, वायु र पेटको शूलमा फाइदा गर्छ ।

गन्धवेनाको तेल १० तोला, तोरीको तेल १० तोला मिसाई मालिस गर्नाले वात रोग तथा कम्मर दुखेको निको हुन्छ ।

५७. कागतीको रस

नीमको पातलाई पिनेर कागतीको रसमा मिसाएर अति नै दुखेको ठाउँमा लेप गर्नाले तत्काल दुख्न कम हुँदै जान्छ ।

५८. आलस

यसलाई पानीमा भिजाउँदा लस्सा जस्तो आउँछ । उक्त पानी ख्वाउनाले शीतल गर्छ ।

सफा आलस २ तोलालाई २ तोला पानीमा ५-१० मिनेट पकाएर छान्नू र त्यसमा अलिकति मिश्री मिसाएर राख्नु । यो १-२ माशा मात्रामा दिनमा २ पल्ट सेवन गर्नाले खोकी र पिशाब पोल्नेमा फाइदा हुन्छ ।

पुल्टिस - आलसलाई भुटेर खलमा पिन्नू, फेरि तातो पानी मिसाएर राम्ररी घोटेर पकाउनू । अलि अलि गाढा र साह्रो भएपछि सहन योग्य तातो अवस्थामा एउटा कपडामा १ अम्मल बाक्लो हुने गरी फिंजाएर दुख्ने अथवा खटिरा आएको स्थानमा लगाईदिनू । जुन ठाउँमा लगाउनू छ त्यहाँ पहिले अलिकति तेल अथवा घिउ बिस्तारै मलेर मात्र पुल्टिस लगाउनू । खटिरा सञ्चो हुन्छ । चूनको पानी ५ तोला, आलसको तेल ५ तोला मिसाएर राम्ररी चलाउनू तथा आगोले पोलेको ठाउँमा लगाउनाले सञ्चो हुन्छ ।

५९. जेठीमधु

यसले खोकीलाई फाइदा गर्छ , घाँटी र पेटलाई ठण्डा गर्छ । भुटेको आलस १ तोला, जेठी मधु १ तोलाको काढा बनाई नित्य दुई पटक सेवन गर्दा प्रमेहलाई जरैदेखि उखेली दिन्छ । जेठीमधुको चूर्ण ३ माशा, कपूर चूर्ण ३ माशा, हिंग चूर्ण ३ माशा, बबूलको गुँदको चूर्ण ३ माशा र पानी आवश्यकता अनुसार मिसाई खलमा घोटेर १०-१० लालको गोली पार्नू । चानचुन ४८ गोली हुन्छ । १ गोली दिनको २-३ पल्ट खान दिनू । रुघा र खोकीलाई फाइदा गर्छ ।

६०. म्याङ्गोस्टिन (Mangostine)

यो ठुलठुला बजारमा मात्र पाइन्छ । फल तथा फलको बोक्रा समेत औषधीमा काम लाग्छ । यो आउँ र पखालाको औषधी हो । म्याङ्गोस्टीनको सुकेको फलको

चूर्ण ५ लाल, दालचिनी चूर्ण २.५ लाल, सुकमेल चूर्ण ५ लाल मिसाई १ पुरिया बनाउनु । दिनमा ३ पुरिया ख्वाउनाले आउँलाई फाइदा गर्छ ।

म्याङ्गोस्टीनको चूर्ण ५ लाल, कदाबचिनीको चूर्ण ५ लाल, फिटकिरी ५ लाल, बबूलको गूँदको चूर्ण ५ लाल मिसाई १ मात्रा गर्नू । दिनमा ३ पटक दिएमा प्रमेहलाई फाइदा गर्छ ।

६१. सिमल

सिमलको फूललाई घिउ र सिंधे नुनमा पकाएर खान दिएमा प्रदर रोग निको हुन्छ । सिमलको पात २ तोला, मरिच २ माशा पिनेर १ पाउ पानीमा मिसाई छानेर पिउनाले प्रमेह र शरीरको गर्मीलाई नाश गर्छ । सिमलको कमलो जराको रस २ तोलामा अलिकति मिश्री मिसाएर पिएमा ७ दिनमा स्वप्नदोष हटेर वीर्य गाढा हुँदैजान्छ ।

६२. बर्रो

यसको फल बजारमा सर्वत्र पाइन्छ । यसको गुण रेचक र कफनिवारक हुन्छ । यसले दिसा खलास गराउँछ र कफलाई खुकुलो पारेर निकाल्छ ।

बर्रो १ तोला ३ माशा, सिंधे नुन १ तोला ३ माशा, पिप्ला १ तोला ३ माशा, मरिच १ तोला ३ माशा, मह आवश्यकतानुसार मिसाएर खलमा घोटी चटनी जस्तो बनाएर राख्नू । २ माशाको मात्रामा दिनको २-३ पल्ट सेवन गराएमा कफको विकार शान्त हुन्छ ।

६३. अमला

यसको ताजा फलको गुण मलको शोधन गरी शरीरलाई शीतल राख्नु हो । सुकेको फल केही अंशमा कब्ज गर्ने हुन्छ, आउँ तथा पखालामा फाइदा गर्छ ।

अमलाको चूर्ण १ तोला २ माशा, जंगी हर्रोको चूर्ण १ तोला २ माशा, पदमचालको जराको चूर्ण ३ माशा सबलाई १ माना पानीमा १० मिनेट पकाई छान्नू र ५० मि.लि. मात्रामा दिनमा २-३ पटक खान दिनू । अजीर्ण र कब्जियतमा फाइदा गर्छ । अमलाको चूर्ण १ तोलामा मह आवश्यकताअनुसार मिसाई दिनको २ पटक खाने गरेमा प्रमेह रोग नष्ट हुन्छ ।

६४. हर्रो

यसले रगत सफा गर्छ, रुचि बढाउँछ र दिसा खलास गराउँछ । जंगी हर्रो, पर्वर, इन्द्रजौ, अनन्तमूल, नीम, गुर्जो, सुगन्धवाल सबै ३ तोला ३ माशा लिएर जौकुट गरेर काढा बनाउनू । यो काढा २५-५० मि.लि. मात्रामा दिनको २ पटक खान दिएमा हर समय रहने ज्वरोलाई नाश गर्छ ।

जंगी हर्रो १ तोला ३ माशा, पिप्लाको चूर्ण १ तोला ३ माशा, सिंधे नुन १ तोला २ माशा मिसाएर दिनमा २-३ पल्ट खाएमा अजीर्ण भई झाडा लागेको र पेट फुलेकोमा फाइदा गर्छ ।

जंगी हर्रोको चूर्ण १ तोला ५ माशा, पदमचाल चूर्ण ३ माशा, पानी १० तोला मिसाई १० मिनेट पकाएर छान्नू । यो १ मात्रा हो । जुलाफका लागि राम्रो काम गर्छ ।

जंगी हर्रोको चूर्ण ३ माशा, सूपको चूर्ण ३ माशा, सिंधे नुन ३ माशा सबैलाई मिसाई १ माशाको मात्रा गर्नू र भोजनभन्दा पहिले दिनू । यसबाट पित्त बढेको शान्त हुन्छ र खाएको हजम हुन्छ ।

६५. त्रिफला

एउटा हर्रो, २ वटा बर्रो र ४ वटा अमला मिसाएमा त्रिफला हुन्छ । नेत्ररोगमा त्रिफलाको पानीले अति फाइदा गर्छ । त्रिफलाको चूर्णलाई महमा मिसाएर खानाले प्रमेहलाई नाश गर्छ । त्रिफला १/२ पाउ, गोखुर १/२ पाउ पिनेर कपडछान गर्नू । ३ माशादेखि १ तोलासम्मको मात्रा महमा मिसाई दिनमा २ पल्ट सेवन गर्नाले पिसाब रातो, पहेंलो र सेतो हुने प्रमेह रोग कम भएर जान्छ ।

अथवा - त्रिफला र त्रिकटु (सुठो, मरिच, पिप्ला) कुटेर कपडछान गरी समभाग मिसाएर राख्नू । यो चूर्ण ६ माशा मात्रामा महमा मिसाई खानाले सबै किसिमको प्रमेह रोग निको भएर जान्छ । त्रिफलाको चूर्ण ६ माशा, मह ६ माशा र घिउ ४ माशा सबै मिसाई नित्य खाने गर्नाले नेत्ररोगलाई हित गर्छ ।

६६. तुलसी -

तुलसीको पातको रसमा ज्वानु पिनेर खाने गर्नाले पेटको किरा (जुका आदि) सजिलै निस्कन्छ ।

६७. रुदिलो -

यसको रसमा कछुवाको हाड घोटेर बच्चालाई ख्वाउनाले बच्चालाई स्वाँ स्वाँ भएको अवस्थामा खुबै चमत्कारको रूपमा फाइदा हुन्छ ।

६८. बोल वा हीराबोल -

यो गूँदको रूपमा हुन्छ र बजारमा पाइन्छ । यसले कफलाई फटाउँछ, मासिक स्राव खलास गराउँछ, रगत सफा गराउँछ, यो पानीमा घुल्दैन तर असल रक्सीमा घुलेर जान्छ ।

हीराबोल चूर्ण १/२ लाल (६२ मि.ग्रा.), हीरा कसीस चूर्ण १/२ लाल (६२ मि.ग्रा.) गोली पार्नू । दिनमा २ पटक १-१ गोली खाएमा रगत सफा हुन्छ र महिलाको मासिक धर्म पनि खलास गराउँछ ।

६९. नीम

यसको मुख्य गुण बोक्रामा हुन्छ । यसले ज्वरो, कमलपित्त र मधुमेह रोगमा फाइदा गर्छ । बोक्रा तथा पातलाई पकाएको पानीले घाउ धुने गर्नाले फाइदा हुन्छ ।

नीमको बोक्राको चूर्ण १ माशा ५ लाल, दालचिनी चूर्ण २.५ लाल मिसाएर १ मात्रा गरी दिनमा २ मात्रा खाएमा ज्वरोलाई फाइदा गर्छ । यसले रगत सफा गर्छ र तागत पनि दिन्छ । नीमको पात वा बोक्रा पकाएको पानीले धुने गर्नाले कुष्ठ र आतशको घाउलाई समेत फाइदा गर्छ । त्यसका लागि १० तोला (१२० ग्राम) नीमको बोक्राको चूर्णलाई १.५ माना (७५० मि.लि.) पानीमा १० मिनेट उमाल्नुपर्छ ।

नीमको तेल र भ्यासलिन (Vacceline) मिसाएर घाउमा लगाएमा धेरै फाइदा गर्छ ।

७०. जाइफल

यो सुगन्धित र पाचक हुन्छ । यसले वायुको शमन गर्छ । यसको बाहिर हुने खोललाई जाइपत्री भन्छन् । जाइफल ३ माशा, तोरीको तेल २.५ तोलामा अलिकति कपूर पनि मिसाएर मालिस गरेमा पुरानो वातरोगलाई फाइदा गर्छ ।

अलिकति जाइपत्री खानदिनाले शीतला राम्ररी निस्कन्छ, भित्रको सन्ताप कम हुन्छ ।

७१. अफीम –

यसले शरीरको कुनै पनि भागमा हुने दुखाइलाई मेट्छ, निद्रा पनि लगाउँछ । यसको मात्रा १/२ लालदेखि १ लालसम्म हुन्छ । यसको फललाई कुटेर पानीमा पकाई त्यस पानीमा कपडा चोपी निचोरेर दुखेको ठाउँमा सेक्नाले राम्रो फाइदा गर्छ ।

७२. मेवा (पपीता)

यसको हरियो बोक्रालाई चक्कुले अलिअलि ताछ्दा दूधजस्तो सेतो रस आउँछ । मेवाको दूध ३ माशा, चिनी ३ माशा मिसाई ३ भाग गर्नू । एक भागको १ मात्राका दरले दिनमा ३ पटक खान दिनु । यसले फियो बढेको रोगीलाई आराम दिन्छ ।

काँचो मेवालाई काटेर टुक्रा टुक्रा पारी दादमा नित्य दल्नाले दाद हराएर जान्छ ।

७३. मरिच –

यसको गुण उत्तेजक तथा पाचक हुन्छ । मरिच र हलेदो दुवैको समान भाग राखी चूर्ण बनाउनु । त्यसबाट ६ माशा लिएर त्यसमा ३ माशा मह र ६ माशा मिश्री

मिसाई चाटेमा सबै प्रकारको दम तथा पेट फुलेको फाइदा गर्छ ।

मरिच चूर्ण ६ माशा, जिराको चूर्ण १ तोला २ माशा, मह १० तोला मिसाएर राम्ररी घोट्नू । मात्रा पौने १ चम्चा (३/४) देखि १ चम्चासम्म खान दिनु । यो पाचक हुन्छ ।

मरिच र सुठो समभाग लिई चूर्ण बनाएर मिसाउनू । त्यसलाई गुड मिसाई अलिकति सिउँडीको दूध पनि राखी घोट्नु र गोली बनाउनू । यो गोली दिनको २ पल्ट खानाले दम र खोकीमा फाइदा गर्छ ।

मरिचको चूर्ण, हलेदोको चूर्ण र कालो नुनको चूर्ण सबै समान भाग लिएर पानीमा पकाउनू । आधा पानी बाँकी भएपछि उतारेर छानी तात्तातै खान दिएमा रुघा र टाउको दुखेको अवश्य निको हुन्छ ।

मरिच, जिरा, कालो नुन हरेकको चूर्ण १-१ लाल महमा मिसाई खाएमा वमन तत्काल रोकिन्छ ।

७४. पिप्ला

यो दीपन, पाचन हुन्छ । यसले वायु र कफको शमन गर्छ । पिप्लाको चूर्ण, सुठोको चूर्ण, मरिचको चूर्ण, दालचिनीको चूर्ण, जिराको चूर्ण हरेक ६-६ माशा मिसाई छान्नू । ७.५ लालदेखि ३ माशासम्मको मात्रामा दिनमा २-३ पटक सेवन गर्नाले खोकीलाई अति फाइदा गर्छ ।

७५. निशोथ वा पिठौली

यो बजारमा सर्वत्र पाइन्छ । यो कडा जुलाफ हो । निशोथ १.५ माशा, सुठो चूर्ण ५ लाल मिसाई १ मात्रा गर्नू । दिनमा १ मात्रा भन्दा बढी नदिनू । यसबाट पखाला लागी भित्र जमेको मल राम्ररी निस्कन्छ । यसमा सिंधे नुन ५ लाल र मरिच ५ लाल मिसाउँदा झन् राम्रो हुन्छ ।

७६. केरा

यसको काँचो फलले दिसा बढी लागेको रोक्न मद्दत गर्छ । पाकेको फलले दिसा खलास गर्छ । यसले पुरानो आउँ र पखालामा फाइदा गर्छ । पाकेको केरा १ कोसा, मनतातो दूध १० तोला राम्ररी मिसाई दिनमा २-३ पल्ट खान दिएमा पखालामा फाइदा गर्छ ।

काँचो केराको तरकारीसँग भात खान दिएमा पखाला लागेको रोकिन्छ ।

७७. आँप

काँचो आँपको कोयाभित्रको गुदीलाई कुटेर त्यसलाई दहीको पानीसँग खान दिएमा आउँ - पखालामा फाइदा गर्छ । काँचो आँपको चटनी बनाएर खाएमा

कण्ठरोग, वायुसम्बन्धी प्रमेह, योनिविकार, घाउ र अतिसारलाई फाइदा गर्छ। काँचो आँपको कोयालाई आगोमा पोलेर खाए पनि पखाला रोक्न मद्दत गर्छ।

पाकेको आँपको रसमा अलिकति सुठोको चूर्ण मिसाएर खाएमा वीर्य, कान्ति र बल बढ्छ।

७८. अनार

यसको रस अत्यन्त बलवर्धक हुन्छ, शरीरलाई ठण्डा राख्छ, सबै प्रकारका रोग र कमजोर भएको अवस्थामा फाइदा गर्छ। यसले पखाला रोक्न मद्दत गर्छ। आउँ र जुकाको समस्या पनि कम गराउँछ। अनारको बोक्रा ४ माशा, जेठीमधु २ माशा, बर्रो २ माशा, पानी २ पाउमा पकाउनू, आधी रहँदा उतार्नू। त्यसमा १ तोला मिश्री मिसाई खानाले सुख्खा खोकीलाई फाइदा गर्छ। यदि खोकीको चाप बढी छ भने २ माशा जवारवार र ४ माशा मह मिसाई चाट्ने गर्नू, कफलाई राम्ररी काट्छ।

अनारको जराको बोक्रा कुटेको ५ तोलालाई १ माना पानीमा उमाल्नू। आधा पानी बाँकी भएमा छानेर खाली पेटमा खान दिनू। यही किसिमले आधा आधा घण्टामा बराबर २-२ तोला दिनू। यसरी ४ मात्रा अर्थात् आठ तोला ख्वाएपछि दोस्रो दिन अडेरको तेल ख्वाउनाले लामो जुका (राउण्डवर्म) मरेर निस्कन्छ।

७९. दारुहल्दी वा चुत्रो

यसको जरा कुटेर १५ तोला, पानी २ मानामा उमाल्नू, आधा बाँकी रहँदा निकालेर छान्नू। यो काढा ४ तोलाको मात्रामा ४-४ घण्टामा खान दिनाले पसिना निकाली ज्वरो कम पार्छ, रुचि बढाउँछ, केही तागत पनि दिन्छ।

उक्त काढालाई फेरि पकाई त्यसमा गाई अथवा बाख्राको दूध बराबर मिसाई पकाएर गाढा लेदोको रूपमा तयार गरी राखेको कल्पलाई रसाञ्जन भनिन्छ। यसको स्वाद तितो हुन्छ, यसको सेवन गर्नाले रुचि बढाउँछ, पाचन पनि राम्रो पार्छ, बढी मात्रामा खाँदा पखाला चलाउँछ। बजारमा पाइने रसाञ्जन त्यति सफा हुँदैन। त्यसलाई सफा गर्ने रसाञ्जनको चार गुना बढी तातो पानी राखी घोलेपछि कपडाले छान्नू। त्यसपछि त्यसमा गाई अथवा बाख्राको दूध मिसाई मन्द आँचमा पकाएर बाक्लो लेदोको रूपमा आएपछि उतार्नू। यो १ देखि ३ माशाको मात्रामा प्रयोग गर्दा प्रदर, अल्काइमा फाइदा गर्छ।

८०. दादमर्दन वा टाप्रे

यसले दाद, दिनाई र अन्य चर्मरोगमा फाइदा गर्छ। दादमर्दनको बोटको ताजा पात अथवा बियाँ सफा गरी धोएर पिनेर र बोरिक मलम हरेक १२ माशा मिसाएर लगाउनाले दाद र अरू चर्मरोगमा फाइदा गर्छ।

ताजा दादमर्दनको सफा पात २.५ तोलामा कागतीको रस आवश्यकतानुसार मिसाई गाढा पारी लगाउनाले दादलाई फाइदा गर्छ ।

८१. अडेरको तेल (Caster oil)

शुद्ध अडेरको तेल लिएमा राम्रो हुन्छ । बच्चाहरूको पखाला र ठूलो मानिसको अजीर्णका कारण उत्पन्न पखाला तथा आउँ रोगको आरम्भमै यो तेल सेवन गराउनाले धेरै फाइदा गर्छ ।

अडेरको तेल १० थोपा, गाढा गूँद १० थोपा, पानी ३ माशा ल्याई पहिले खलमा तेल र गूँदलाई राम्ररी घोट्नू, फेरि अलिअलि गरेर पानी मिसाउँदै जानू । यो १ मात्रा तयार हुन्छ । दिनमा ३-४ पटक दिनाले बच्चाहरूको पखाला चल्ने अथवा दाँत आउने बेलामा पातलो दिसा-पखाला चलेकोमा दिनाले धेरै फाइदा गर्छ ।

८२. श्रीखण्ड (चन्दन)को तेल

यो तेल चन्दनको धुलोलाई पानी मिसाएर अर्क विधिबाट पकाउँदा तयार हुन्छ । यो तेल उत्तेजक हुन्छ, विषको असर शमन गर्ने र कफलाई फटाएर निकाल्ने काम गर्छ । श्रीखण्डको तेल ५ थोपा, गाढा गूँद ३० थोपा, पानी २.५ तोला ल्याई खलमा पहिले गूँद राखेर पछि तेल राख्ने बित्तिकै घोट्दै जानुपर्छ । जब दुवै राम्ररी मिसिएर जान्छन् । अनि पानी राख्दै घोट्नुपर्छ । यो एक मात्रा इमल्शन (मिश्रण) तयार हुन्छ । यो दिनमा ३-४ पल्ट दिनू । यसले पिसाब पोल्ने र धातु बग्ने भएकोमा अति फाइदा गर्छ ।

८३. अनन्तमूल (साल्सा) वा कृष्णसारिवा

यो खाएमा रगत सफा हुन्छ र पसिना निस्की छाला स्वस्थ हुन्छ । अनन्तमूलको जरा कुटेको २.५ तोला, उमालेको पानी २५ तोलामा मिसाई १ घण्टा राखीदिनू । पछि तातो दूध ५ तोला र केही चिनी मिसाउनु । यो २.५ तोलादेखि ५ तोलासम्मको मात्रामा दिनको २ पटक खान दिनू । सबै औषधी एकै पटक दूधमा नमिसाउनू । औषधी खाने बेलामा मात्र भने बमोजिम (बराबर) दूधका साथ चिनी मिलाउनू र खानू । यसले रगत सफा गर्छ र बल पनि बढाउँछ ।

८४. सजिउन वा शोभाञ्जन

यो उत्तेजक, पाचक र मूत्रवर्धक हुन्छ । ज्वरो कम भएपछि दिंदा बल बढाउँछ । यसको बियाँको तेल सुगन्धित हुन्छ ।

सजिउनको जराको चूर्ण २.५ तोला, उमालेको पानी १ मानामा मिसाई २ घण्टा राख्नू र छान्नू । यही यसको काढा (इन्फ्युजन) हुन्छ । ५ तोलाको मात्रामा दिनमा ३ पल्ट खानाले जलग्रह (जलोदर), हात-खुट्टा सुन्निएकोमा फाइदा गर्छ ।

खाने सोडा ५ लाल, सजिउनको काढा ५ तोलामा मिसाएर एक मात्रा गर्नू । यो दिनमा २-३ पल्ट खान दिएमा पत्थरी भएको, जिउ सुन्निएको, जोर्नीहरू दुखेको, बाथ सबैमा फाइदा गर्छ । सजिउनको बियाँको तेल र तोरीको तेल मिसाई मालिस गर्नाले बाथको रोगमा अति फाइदा गर्छ ।

८५. सनायपत्ता

यो जुलाफको राम्रो औषधी हो । सनायपत्ताको कपडछान गरेको मसिनो चूर्ण ५ तोला, वोरीसोप चूर्ण (सूप) २.५ तोला, जेठीमधुको चूर्ण ५ तोला, शुद्ध गन्धकको चूर्ण २.५ तोला, चिनी १५ तोला सबैलाई बेग्लाबेग्लै कपडछान गरी मिसाउनु । मात्रा १-२ माशासम्म राती सुत्ने समय अथवा बिहान खाली पेटमा मनतातो पानीसँग खानाले दिसा खलास हुन्छ । यो औषधी खानमा गुलियो, गुणमा राम्रो र हल्का हुन्छ । यसको अंग्रेजी नाम पल्व ग्लिसराइजा कम्पाउण्ड हो ।

८६. सोमराजी (बाकुची)

यो जुकाको राम्रो औषधी हो । सोमराजीको बियाँ ३ माशा, मह ६ माशा मिसाई १ मात्रा गर्नू । यो बिहान खाली पेटमा र फेरि २ घण्टापछि १ मात्रा अरू दिनू । दोस्रो दिन बिहान अडेरको तेलको जुलाफ दिनू । जुका जति निस्कनेछ ।

८७. तालमखाना

यसको बोटको पात, जरा र बियाँ औषधीको रूपमा उपयोग हुन्छ । यसले शरीरलाई शीतलता दिन्छ, पिसाब सफा गर्छ, बल पनि दिन्छ ।

तालमखानको पात २.५ तोला, पानी १ माना मिसाएर १० मिनेटसम्म पकाउनू र छान्नू, मात्रा २.५ तोलाको दरले दिनमा ३ पल्ट दिएमा जलोदर (जलग्रह) र हातगोडा सुन्निएको ठीक गर्छ, पिसाब पनि सफा गर्छ ।

८८. हलेदो

यसले अजीर्ण तथा मन्दाग्निलाई फाइदा गर्छ । यो गरम, रुखो हुन्छ । यसले कफ र वायुको शमन गर्छ, शरीरको रङ्ग सुन्दर र सफा पार्छ । चर्मरोग, प्रमेह, शोथ तथा घाउमा फाइदा गर्छ ।

हलेदोलाई पानीमा घोलेर चन्दन जस्तो लेदो बनाई सुन्निएको स्थानमा लेप गर्नाले ठीक हुन्छ ।

काटिएको ठाउँमा हलेदोको चूर्ण (बेसार) लगाउनाले तत्काल फाइदा हुन्छ ।

हलेदो, दालचिनी, वायुविडङ्ग, नागकेशर हरेक ३ माशा, हिङ १ माशा, कस्तूरी १.५ रत्ती सबलाई पिनेर कपडछान गरी माषको गेडा बराबर गोली तयार पार्नू। बच्चाको अवस्था अनुसार १ गोली, १/२ वा १/४ गोली महमा घोटेर चटाउनाले अत्यन्त दु:ख दिने खोकी पनि ठीक हुन्छ।

मरिचको चूर्ण, हलेदो चूर्ण, कालो नुन समभाग लिएर १ पाउ पानीमा पकाउनू र आधा जति बाँकी हुँदा छानेर तात्तातै पिउन दिनू। नयाँ पुरानो रुघा तथा रुघाको कारण टाउको दुखेको निको हुन्छ।

हलेदोको चूर्ण १ तोला ४ माशा, भाँगको पात १ तोला ४ माशा, आलसको तेल आवश्यकतानुसार मिसाई खलमा घोटेर चन्दन जस्तो मसिनो लेप बनाएर लगाउनु। यसले अल्काई तथा हर्षामा अत्यन्त फाइदा गर्छ।

८९. आँक

यो ग्रीष्म ऋतुमा प्रशस्त मात्रामा पाइन्छ र वर्षामा सुकेर जान्छ। यसको जरालाई मरिचको साथ पिनेर गोली पारी खानाले खोकी ठीक हुन्छ।

यसको जराको बोक्रा बाख्राको दूधमा पिनेर लगाउनाले कण्ठमालालाई ठीक गर्छ। बाख्राको दूधमा पिनेर नाकमा राख्नाले छारे रोग निको हुन्छ।

यसको दूधलाई बारुलाले टोकेको स्थानमा लगाउनाले विषको असर जान्छ।

यसको पातसँग बेसार खान दिएमा शरीरभरिको सूजन कम हुन्छ।

यसको पातमा खयर र चून राखी खानाले दमको रोगमा आराम हुन्छ।

यसको पहेंलो पातमा घिउ लगाई आगोमा तताएर रस निकाल्नु र आधा कपाल दुखेको अवस्थामा जतापट्टि दुखेको छैन उतापट्टिको कानमा त्यो रस २-४ थोपा राख्नु, आराम हुन्छ।

९०. अपामार्ग

यसको जराको काढा खानाले गर्भ रहन्छ। जरालाई पिनेर स्तनमा लेप लगाएमा राम्ररी दूध आउँछ।

यसको खरानी खाने र लगाउने गर्नाले कण्ठमालामा आराम हुन्छ।

यसको जरा आइतवारका दिन उखेलेर हातमा बाँध्नाले चार-चार दिनमा फर्कने चौथा ज्वर फेरि आउँदैन।

यसको जरालाई पिनेर प्रसव वेदनाको समयमा स्त्रीको पैतालामा लेप गर्नाले बच्चा छिट्टै जन्मन्छ।

यसको बियाँको खीर खानाले धेरै दिनसम्म भोक लाग्दैन र तागत पनि हराउँदैन।

उक्त बियाँ चिलिममा राखी तमाखु जस्तै धुवाँ तान्ने गर्नाले दमको अवस्थामा आराम हुन्छ ।

यसको पातको रस घाउमा लागाउनाले घाउ छिट्टै निको हुन्छ ।

यसको डाँठको खरानी मह र पिप्लासँग खानाले दमको खोकीमा आराम हुन्छ ।

९१. काउसो

यसको जरा प्रमेह, नामर्दपना र मैथुनमा चाँडै स्खलन हुने समस्याको औषधी हुन्छ । यसको जराको काढाले योनि नित्य धुनाले त्यसको खुकुलोपन जान्छ । सहवासको बेलामा यसको जरा मुखमा राख्नाले यौनक्रिया गर्ने क्षमता बढ्छ । यसको पात खानाले पेटमा भएको जुका मर्छ । यसको बियाँ प्रमेह, नपुंसकता, स्वखलन निको पार्ने प्रसिद्ध औषधी हो ।

९२. पुनर्नवा

यसको सेवनले अल्काई र काम शक्तिको कमीमा फाइदा गर्छ । जरालाई पिनेर गर्भवती महिलालाई प्रसवको व्यथा लागेको बेलामा ख्वाउनाले बच्चा चाँडै जन्मन्छ । बौलाहा कुकुरले टोकेको अवस्थामा गुड मिसाएर ख्वाउनु, आराम हुन्छ । यसको काढा पिउनाले सूजन कम हुन्छ ।

९३. भृङ्गराज

यसको चूर्ण खानाले केश काला हुन्छन्, दृष्टि तेज हुन्छ, मन्दाग्नि र टाउको दुखेकोमा आराम हुन्छ । यसको पञ्चाङ्गको शर्बतले मूत्राघातामा फाइदा गर्छ र कामशक्ति बढाउँछ ।

९४. अंगूर

यसको पातलाई पिनेर लेदो बनाई लगाएमा गुदद्वारको रोगमा फाइदा गर्छ र फलले रक्तविकारमा फाइदा गर्छ ।

९५. अञ्जिर

यसको दूधले दादमा फाइदा गर्छ ।

९६. घिउकुमारी

यसको पातलाई आगोमा तताई रस निकाली कानमा राख्नाले कानको शूल र कान पाकेर पिप आउनेलाई ठीक गर्छ । यसको गुदी खानाले मूत्रघातलाई फाइदा गर्छ ।

९७. चना

यसको साग खानाले रतन्धोलाई फाइदा गर्छ । सुकेको चना पानीमा भिजाई बिहान खाने गर्नाले कामशक्ति बढाउँछ । चना भिजाएको पानी स्तनपान गराउने महिलाले खाने गरेमा दूध बढ्छ ।

९८. चमेली

यसको पात सुँघेमा टाउकोको दुखाई कम भएर जान्छ । कोपिला खानाले गर्भ रहँदैन । पातको रस पिउनाले मूत्ररोगमा फाइदा गर्छ । पातलाई पिनी बनेको लेदो टिकिया वा चक्की आकारमा बनाई घिउमा पकाएर आँखामा बाँध्नाले आँखाका सबै रोगमा फाइदा गर्छ ।

९९. छोहरा (छोकडा)

यसको धूलो दहीसँग खाएमा संग्रहणीमा आराम हुन्छ, कामशक्ति बढ्छ ।

१००. निम

यसको जराको धुवाँ पार्नाले महिलाको मासिक स्राव खलास हुन्छ ।

१०१. प्याज

यसको रस कानमा हाल्नाले बहिरोपन कम हुन्छ । आँखामा लगाउनाले नेत्रशूल तथा फुलोलाई फाइदा गर्छ । लिङ्गमा लगाएमा त्यसको शिथिलता हराउँदैजान्छ, रस पिउनाले जलोदर रोगमा आराम हुन्छ ।

१०२. बकाइनो

यसको बोक्राको धूलो खानाले अल्काइमा आराम हुन्छ । बियाँ पिनेर खाएमा प्रमेहलाई कम गराउँछ, बोक्रा पिनेर लेप गर्नाले योनिमा संकोच (कसावट) हुन्छ । जराको काढा खाएमा पेटको किरा (जुका आदि) मर्छन् ।

१०३. बयर

बयरको चूर्ण खानाले अतिसार र संग्रहणीमा फाइदा गर्छ । बियाँको गुदीले कामशक्ति बढाउँछ । पातको काढाले गोडा धोएमा कपाल दुखेको आराम हुन्छ । बोक्रा पिनेर लगाउनाले अण्डकोष वृद्धि र सूजन (सुनिएको) मा फाइदा गर्छ । बोक्राको काढा खानाले ज्वरोमा आराम हुन्छ ।

१०४. बेथे

यसले नयाँ रगत (शुद्ध) उत्पन्न गर्छ, जलोदर र अल्काई भएकोमा आराम दिन्छ ।

१०५. बेल

यसको जरा र बोक्रा मिलाई काढा बनाउनु र खानु । यो उन्माद (पागलपन)मा हितकारी हुन्छ ।

फललाई आगोमा पोलेर खाएमा संग्रहणीमा राम्रो फाइदा गर्छ ।

पातको काढा खानाले दमलाई फाइदा गर्छ ।

१०६. भण्टा (बैगन)

यसको जरालाई पानीका साथ पिनेर खान दिनाले लडेर चोटपटक लागेकोमा

फाइदा गर्छ । यसले धतुरोको विषको असर पनि कम पार्छ । फलको धुलो योनिभित्र राख्नाले योनिमा कसावट आउँछ ।

१०७. मकोय (काली कवै)

शरीरमा सुन्निएको ठाउँमा यसको पात पिनेर लगाईदिनू र स्वरस पनि खान दिनू । सुन्निएको कम भएर जान्छ ।

यसको हरियो पात चपाएमा जिब्रो शुद्ध हुन्छ ।

१०८. मुला

मुलाको पातको रस खान दिएमा जलोदर रोगमा फाइदा गर्छ । यसको बियाँलाई तोरीको तेलमा पकाएर लिङ्गमा मल्नाले नामर्दपना कम हुन्छ । मुलाको टुक्रालाई राती ओसमा राखेर बिहान खानाले मूत्राघातमा फाइदा गर्छ ।

१०९. मेथी

यसको काढाले अल्काइलाई फाइदा गर्छ । साग खाने गर्नाले संग्रहणी रोगमा हित गर्छ । बियाँको चूर्ण मनतातो पानीसँग खान दिएमा हिक्का रोग (बाङुकी लागी राख्ने) निको हुन्छ ।

११०. रिठ्ठा

यसको गुदी चूर्ण बनाई खान दिएमा दमलाई फाइदा गर्छ । यसको फिंज आँखामा लगाउँदा नेत्ररोगमा हित गर्छ, बोक्रालाई पिनेर नस लिनाले हिस्टीरिया रोगमा फाइदा गर्छ ।

१११. सिमल

यसको बोक्रा, पात र फूलको चूर्णले प्रमेहमा रामबाणको काम गर्छ, यसको बियाँ खानाले बिफर हुँदैन । गूँदले संग्रहणीमा फाइदा गर्छ ।

११२. सुर्ती

यसको पातलाई आगोमा तताएर बाँध्नाले अण्डवृद्धि (अण्डकोष फुलेको अवस्था)मा फाइदा गर्छ, शोथ र पीडा हटाउँछ । यसको फूल पिनेर लगाउनाले दादमा आराम दिन्छ । यसको रसको सेवन गर्नाले जलोदरमा फाइदा गर्छ । यसको रसमा पारदको गोली पनि बनाइन्छ ।

११३. धतुरो

यसको बियाँ शुद्ध गरेर प्रयोग गर्नुपर्छ । त्यसको सेवनले कामशक्ति बढाउँछ, स्वखलनलाई रोकी रुकावट पनि गर्छ । यसको पातलाई अल्काई, भगन्दर र ठूलो खटिरामा बाँध्नाले फाइदा हुन्छ ।

११४. इन्द्रजौ

यसको बियाँलाई पानीसँग घोटेर लगाउनाले अल्काई निको हुन्छ । खाएमा

फियो र जलोदरमा फाइदा गर्छ । यसको जराको चूर्ण २ ग्राम महीसँग खाने अथवा जरा पिनेर तल्लो पेटमा लगाउनाले पिसाब खुलेर आउँछ । आतशकका लागि यो ब्रह्मास्त्र नै मानिन्छ ।

जराको चूर्ण योनिमा राख्नाले दूषित भई बसेको रगत सबै निकाली दिन्छ, रोकिएको रज पनि जारी गर्छ । रुखको बोक्राको चूर्ण आधा चम्चा (२ ग्राम) बिहान बेलुका खान दिने र त्यसको काढाले सुत्ने बेलामा योनिमा डुश दिने गर्नाले प्रसवपछि हुने योनिको शिथिलता हराएर जान्छ ।

११५. तारपीनको तेल

यसको शुद्ध तेल डाक्टरी पसलहरूमा पाइन्छ । कपूर चूर्ण १ तोला ३ माशा, तारपीन तेल १ पाउ, नरम साबुन २.५ तोला ल्याउनू । पहिले साबुनलाई पानीमा भिजाई नरम पारी खलमा घोट्नू, फेरि तारपीन तेल र कपूर राख्दै घोट्दै जानू । राम्ररी सबै मिलेपछि मालिस तयार हुन्छ । वातरोगमा, जोर्नीहरू दुखेकोमा अथवा छाती र कम्मर दुखेकोमा मालिस गर्दा राम्रो फाइदा हुन्छ । खोकीले छातीमा कफ जमेको वा दर्द भएको बेलामा यसको मालिसले फाइदै फाइदा गर्छ ।

११६. सिर्का

गुलियो फलको रस निकालेर सिसीमा बन्द गरेर १०-१२ दिन घाममा राखेमा त्यसमा अमिलोपन उत्पन्न भएर सिर्का तयार हुन्छ । यसले शरीरलाई ठण्डा राख्छ, खानामा रुचि बढाउँछ । सिर्का, स्प्रिट र पानी हरेक २ तोला ६ माशा मिसाई लोसन तयार पार्नू । टाउको दुखेको, चोट लागेको, बिच्छी - बारुला आदिले टोकेको ठाउँमा लगाउनाले आराम दिन्छ ।

११७. सिंधे नुन

यो पाचक र रोचक हुन्छ । सिंधे नुन ४ तोला, शुद्ध आँकको दूधमा फेटेर सुकाउनु । १ माशा मात्रामा बिहान - बेलुका खान दिनू । क्षयको खोकी निको हुन्छ ।

११८. बिरे नुन

सिंधे नुनमा अमलाको रस मिसाएर बिरे नुन तयार गरिन्छ ।

११९. खाने नुन

तातो पानी १ मानामा ३ माशा नुन मिसाई खाएमा वमन गराउँछ । तातो पानीमा मिसाएर घाउ धोएमा र अल्काइमा गुदद्वारमा पिचकारी दिएमा घाउ तथा अल्काईमा फाइदा गर्छ । हैजा लागेको, जुका-चुर्ना परेको अवस्थामा पनि गुदद्वारमा पिचकारी गर्नाले फाइदा गर्छ । यसको लागि नुन पानीको मात्रा ठूलो मानिसलाई १-२ माना, १०-१५ वर्षको बालकलाई २०-२२ तोला र त्यसभन्दा कम उमेरका बच्चालाई १०-१२ तोलासम्म प्रयोग गर्नुपर्छ ।

१२०. घिउ

यो ताजा राम्रो हुन्छ, यसले अमृत बराबर गुण गर्छ । तातो दूधमा मह मिसाउनु हुँदैन, चिसो भएपछि हुन्छ । घिउ र मह पनि बराबर मात्रामा मिसाउनुहुँदैन ।

घिउ, मरिच, सिंधे नुन, घिउकुमारीको गुदी यी सबै समभाग मिसाएर दिनको १ पटक सेवन गराएमा प्रमेहलाई नाश गर्छ ।

घिउ, दूध र डुम्रीको फलको रसका साथमा विदारीकन्दको धूलो पनि खाने गरेमा बूढो पनि युवकजस्तै सुन्दर र बलियो हुन्छ ।

घिउ, दूध, मिश्री, पिप्ला र मह मिसाई सेवन गरेमा विषमज्वर नाश हुन्छ । यसलाई पञ्चसार भन्छन् । यसले क्षय, खोकी र हृदयरोगमा पूरा फाइदा गर्छ ।, पुरानो ज्वरो पनि निको पार्छ । यसमा मह १ भाग, घिउ २ भाग, पिप्ला ४ भाग, मिश्री ८ भाग र दूध ३२ भाग गरेर मिसाउनुपर्छ ।

दूधमा तालमखाना पकाएर खानाले अथवा तालमखानाको धुलोमा मुसलीको धुलो र गोखुरको धुलो समभाग मिसाई फाँकेर माथिबाट मिश्रीयुक्त दूध पिउनाले धातुरोगमा अपूर्व चमत्कार देखाउँछ ।

अदुवाको रसको साथमा घिउ मिसाएर पकाउनू, घिउमात्र बाँकी रहँदा निकाल्नु । त्यस घिउको १ चम्चा गाईको तातो दूधमा मिसाई खाएमा हूपिंग कफ अर्थात् लहरेखोकीलाई फाइदा गर्छ ।

तातो दूधमा १०-१५ वटा मरिचको धुलो मिसाई पिउनाले रुघामा अवश्य फाइदा गर्छ ।

१२१. मह

यसले शरीरको रङ्गलाई सफा पार्छ, बुद्धिको विकास गर्छ, धातुलाई पुष्ट पार्छ, रेचक पनि हुन्छ । खोकी, पित्त, कफ , प्रमेह, कृमि, प्यास, वमन, दम, हिक्का, अतिसार, हृदयरोग तथा जलन आदिका लागि हितकारी हुन्छ ।

तेलको रङ्गको मह राम्रो हुन्छ । मह जति पुरानो भयो त्यति नै राम्रो हुन्छ ।

कण्टकारीको फूलको केशर १ रत्ती पिनेर त्यसमा मह मिसाई चटाउनाले बच्चाहरूको जस्तोसुकै पुरानो खोकी नाश हुन्छ ।

दाख, पिप्ला, सुठो १-१ माशामा ६ माशा मह र ३ माशा घिउ राखेर चटनी जस्तो बनाई चटाउनाले ५ किसिमको खोकीलाई फाइदा गर्छ ।

मह र चिनी बराबर भाग मिसाएर बच्चाको तालुमा लेप गर्नाले प्यास कम हुन्छ ।

अमलाको रस ४ तोला, मह ६ माशा, बेसार १ माशा मिसाई दिनको २ पटक

८० दिनसम्म सेवन गरेमा पित्तप्रमेह जरैदेखि ठीक भएर जान्छ ।

धानको लावालाई पानीमा भिजाएर खूब मल्नू, त्यसमा मह र सेतो कण्टकारीको रस मिसाई खानाले जस्तो सुकै कडा प्यास पनि शान्त भएर जान्छ ।

शुद्ध शिलाजीत २ माशा, मह १ तोला मिसाई २१ दिनसम्म चाट्नाले सबै किसिमको भयङ्कर प्रमेह पनि एकदम शान्त भएर जान्छ ।

१२२. कस्तूरी

यसले ज्वरो, कमजोरी र पुरानो खोकीलाई फाइदा गर्छ । यो खानेबित्तिकै शरीर तातेर आउँछ, नाडी पनि राम्ररी चल्न थाल्छ । कस्तूरी १/२ लाल, कपूर १/२ लाल, मिसाई गोली पार्नू शरीर सुकेको, शीतांग र कमजोरी भएको अवस्थामा खान दिनू, राम्रो फाइदा गर्छ ।

१२३. मयूरको प्वाँख

मयूरको प्वाँखको धुँवा दिनाले सबै किसिमको ज्वरो र ग्रहबाधा हटेर जान्छ ।

१२४. बिरालो

बिरालोको विष्ठाको धुवाँ दिनाले विषमज्वरका कारण उत्पन्न कम्पमा हित गर्छ ।

१२५. रातोमाटोको पानी

असल रातो माटोमा अलिकति कपास, जिरा, रातो खुर्सानी, घिउ, तिलको तेल, नुन, बेसार राखी राम्ररी कुटेर पानी मिसाई ७ वटा गोली पार्नू । ती गोलीहरू आगोमा राखी पोलेर रातो पार्नू, रातो भइसकेपछि एउटा भाँडोमा पानी राखेर त्यस पानीमा एउटा एउटा गरी गोली राख्दै प्रत्येक पटक बिर्कोले छोप्दै जानु । सातवटै गोलीहरू हालीसकेपछि तातो भएको पानी तात्तातै खानु । ३ रात यसरी पानी खाएपछि जस्तै कडा खोकी पनि आराम हुन्छ ।

१२६. अष्टमांश अवशेष पानी

रुघा, खोकी, ज्वर आउनाले रोगी कमजोर छ भने सुरुमा २-३ दिन लङ्घन (उपवास वा हल्का भोजन) गराउनू । लङ्घन गरेको बेलामा राती सुत्ने बेलामा अष्टमांश अवशेष पानी बनाएर खान दिनू । त्यसका लागि ४ माना पानी भर्सक माटोको भाँडामा मुख खुला राखी (नछोपीकन) पकाउनू - १/२ माना बाँकी छँदा ग्लासमा खन्याएर छोपी दिनु मनतातो भएपछि पिउनू । यो अत्यन्त गुणकारक जल हो । यो परीक्षित हो । यसले पित्त र कफलाई सजिलै फटाउँछ । यस पानीको

सेवनले दिशा पनि खलास हुन्छ । २-३ दिनसम्म अवश्य सेवन गर्नुपर्छ । २-३ दिन लङ्घन भइसकेपछि फेरि अर्को २ दिनसम्म नरम भात, मूँगको दाल, चंसुर, मेथीको साग, पर्वर आदि भोजनमा कम मात्रामा घिउ राखेर खान दिनू । यी दुईदिनमा पनि अष्टामांश अवशेष पानी पिउन दिनू, अरू कुनै औषधी खानुपर्दैन ।

१२७. फिटकिरी

यो बजारमा सर्वत्र पाइन्छ । यसमा फलामको पनि केही अंश हुनाले केही पहेंलो हुन्छ तर बेलायती फिटकिरी डल्लाको रूपमा आउँछ र पानीमा राख्नेबित्तिकै पग्लेर जान्छ । यसको स्वाद टर्रो हुन्छ । आँखा, कान, लिङ्ग र गुदद्वारका रोगहरूमा तथा चर्मरोगमा फाइदा गर्दछ । । रक्तस्राव, पखाला, दम र खोकीमा पनि फाइदा गर्छ । त्यसका लागि फिटकिरीलाई शुद्ध गरी प्रयोग गर्नुपर्छ ।

- फिटकिरी ६ ग्राम र माजूफल ६ ग्राम राखी पानी १ माना पकाउनू । त्यसरी बनाएको काढामा कपडा भिजाई अल्काई र बेर्नु निस्कने ठाउँमा सेक्ने अथवा बाँध्ने गर्नाले फाइदा गर्छ ।
- महिलाहरूको सेतो पानी जाने रोगमा यसको पिचकारी गर्नाले फाइदा हुन्छ ।
- फिटकिरी ६२५ मिलिग्राम टिंकचर ओपियम ७ थोपा र पानी ३० मिली. सबैको १ मात्रा गर्नू । पेट अथवा मुखबाट रक्तस्रावको अवस्थामा दिनको २-३ पटक सेवन गर्नाले फाइदा हुन्छ ।
- फिटकिरीको डल्लोलाई बिच्छीले टोकेको ठाउँमा रगड्नाले फाइदा गर्छ ।
- फिटकिरी ६ माशा (६ग्राम), दूध आधा लिटर दुवैलाई १५ मिनेटसम्म पकाउनू । जब दूध फाट्छ अनि त्यसलाई छानेर पानी निकाल्नू । त्यो पानी ३०-६० मिलीलिटरको मात्रामा ३-३ घण्टामा खान दिनाले अतिसार, रक्तवमन, मधुमेह (सुगर), अल्ब्युमिन युरिया रोगमा फाइदा गर्छ ।

१२८. नौसादर

यो बजारमा सर्वत्र पाइन्छ । रङ्ग अलि मैलो हुन्छ । यसलाई पनेर मननातो पानीमा पगालेपछि छानेर सुकाएमा शुद्ध हुन्छ । त्यसलाई सिसीमा सुरक्षित गरी राख्नुपर्छ । यसलाई खोकीमा र श्वासनली दुखेर आएमा प्रयोग गर्दा फाइदा हुन्छ । यसको बाफ लिएमा बढी फाइदा हुन्छ ।

- अजीर्ण रोग र पित्त जमेर बसेको अवस्थामा नौसादर खानाले फाइदा हुन्छ ।
- कपाल अथवा तिघ्रा पछाडीको नाडीमा (साइटिक) दुख्ने भएमा यसको प्रयोगले फाइदा गर्छ ।
- नौसादर ८०० मिलीग्राम, कपूरको पानी ३० मिलीलिटर मिसाई १

मात्रा गर्नू । यसको सेवन गर्नाले कपाल दुखेको निको हुन्छ ।

- नौसादर ६ ग्राम र पानी (उमालेको) आधा लिटर मिसाएर गाँठा-गुठी फोडा तथा जोर्नी दुखेकोमा सेक्नाले फाइदा गर्छ ।
- नौसादार १० लाल (१२.५० मि.ग्रा.) र अनन्तमूलको काढा २.५ तोला (३० मि.लि.) मिसाई १ मात्रा गर्नू । दिनमा २ मात्रा खानाले वातरोगमा फाइदा गर्छ र जमेको पित्त पनि निकाल्छ ।

१२९. गेरु (रातोमाटो)

यसले रक्तविकार निको पार्छ । शरीरमा फोका-विविरा (फुन्सी) भएर चिलाउने गरेमा यसको धूलो दल्नाले फाइदा हुन्छ ।

गेरुलाई पिनेर अदुवाको रस मिसाई लगाउनाले वातरक्त सम्बन्धी छालाको समस्याहरूमा निकै फाइदा हुन्छ ।

१३०. निलोतुथो

यो संकोचक र वमनकारक हुन्छ । निलो तुथो चूर्ण ३ लाल, (३७५ मिलीग्राम) र मह आवश्यक मात्रामा मिसाएर १२ ओटा गोली बनाएर राख्नू । यो १ गोलीको मात्रामा पुरानो पखालाको रोगमा दिनको २-३ पटक खान दिनू । आराम हुन्छ । निलो तुथोको चूर्ण ३ ग्राम, गुलाफ जल १५ तोलामा (१५० मि.लि.) मिसाएर आतशकको (भिरङ्गी) घाउ धोएमा आराम हुन्छ ।

निलोतुथो र फिटकिरीको पानीको पिचकारी दिनाले महिलाहरूको प्रदर रोग निको हुन्छ । त्यसका लागि निलोतुथो र फिटकिरी १२५ मि.ग्रा.- ३० मिलीलिटर पानीमा मिसाउनुपर्छ र छानेर प्रयोग गर्नुपर्छ ।

१३१. चुना

यो सुख्खा ढुंगा जस्तो हुन्छ । पानीमा भिजाएपछि यो कमलो र सेवन गर्न उचित हुन्छ । यो सङ्कोचक हुन्छ र अम्लपना हटाउँछ । भिजेको चुन ३० ग्राम, पानी ५०० मि.लि.मा मिसाई राम्रोसँग चलाएर राखी दिनू । १२ घण्टापछि चुनजति तल बस्नेछ । माथिको पानी बिस्तारै निथार्नू । यो पानिलाई दूधमा मिसाई दिनाले दही चाँडै जम्दैन । यो दूध खान दिएमा अम्लपित्त अर्थात् मुखमा अमिलो पानी आउने र छाती पोल्ने व्यथामा आराम गर्छ । वमनको अवस्थामा सेवन गर्नाले वमन पनि रोकिन्छ ।

भिजाइएको चुन ५ तोला (५० ग्राम), मिश्रीको चूर्ण ५० ग्राम र पानी ५ तोला (५० मि.लि.) मिसाई राम्ररी चलाउनू र राखी दिनू । १२ घण्टा पछि छानेर बोतलमा राख्नू । मात्रा २० थोपा, दिनमा २-३ पटक दिएमा अम्लपित्त र अजीर्णलाई फाइदा गर्दछ । बच्चाहरूको पखाला र वमनलाई रोक्छ । बच्चाहरूलाई दूधमा मिसाएर अथवा त्यसै दिए पनि हुन्छ ।

१३२. खाने सोडा

यो खानाले पिसाब खुलेर आउँछ, शरीरबाट पसिना पनि आउँछ । सोडा १२ ग्राम, रामतोरिया (भिण्डी) उमालेको पानी ५ तोला (६० मि.लि.) मिसाई १ मात्रा गर्नू । यो दिनमा ३ पटक सेवन गर्न दिएमा प्रमेह र पिसाब पोल्ने समस्या हराउँछ ।

खाने सोडा ६२५ मि.ग्रा., शोभाञ्जन (सहिजन)को पात भिजाएको वा पकाएको ३० मि.लि. मिसाई १ मात्रा बनाउनू । यो दिनमा ३ पटक खान दिएमा जलग्रह र शोथलाई फाइदा गर्छ ।

१३३. गन्धक

यसलाई शुद्ध गरेर खानुपर्छ । सामान्य लुतो र विशेष गरी पाक्ने लुतोमा लगाउनाले बढी फाइदा गर्छ । गन्धक ३ ग्राम, तोरी अथवा नरिवलको तेल अथवा भ्यास्लिन (Vacceline) २.१/२ तोला (३० मि.लि.) मिसाई लगाउनाले पाक्ने लूतोलाई अति फाइदा गर्छ ।

गन्धक ३० ग्राम, नीमको तेल २५० मि.लि. मिसाएर पुरानो बाथको रोगले जोर्नीहरू दुखेको ठाउँमा मालिस गर्नाले फाइदा हुन्छ ।

गन्धक, स्वाग, खयर प्रत्येक ३ ग्राम र भ्यासलिन (Vacceline) ३० मि.लि. राम्ररी मिसाएर लगाउनाले पाक्ने लूतो, दाद आदिमा फाइदा गर्छ ।

१३४. हीराकसीस

यसको सेवनले रगतको शुद्धिका साथ वृद्धि पनि हुन्छ । रक्तस्राव भएको ठाउँमा लगाउनाले रगत बग्न छोड्छ ।

शुद्ध हीराकसीसको चूर्ण १.५ ग्राम, मुसब्बर १.२५ ग्राम र मह आवश्यतानुसार मिसाएर २४ गोली पार्नू । मात्रा - १ गोलीको दरले दिनको २-३ पटक खाएमा बल बढ्छ र रगत पनि शुद्ध हुन्छ । हीराकसीस २५० मिलीग्राम, चिराइतो भिजाएको पानी ३० मि.लि. मिसाई १ मात्रा गर्नू । यो दिनमा ३ पटक खानाले रक्ताल्पता (रगतको कमी)लाई हटाउँछ र तागत पनि दिन्छ ।

हीराकसीस १ ग्राम २५० मिलीग्राम, दालचिनीको चूर्ण १ ग्राम ६२५ मिलीग्राम, मरिचको चूर्ण १ ग्राम ६२५ मिलीग्राम तथा मह आवश्यकतानुसार मिसाएर १२ गोली पार्नू । यो १ गोली दिनमा २ पटक भोजनपछि खानाले रक्तस्राव बन्द हुन्छ र ताकत पनि दिन्छ ।

हीराकसीस ३७५ मिलीग्राम, पानी ५ तोलामा मिसाई गुदद्वार अथवा योनिमा पिचकारी दिएमा रक्तस्रावलाई रोक्न मद्दत गर्छ । नाक अथवा घाँटीबाट हुने रक्तस्रावमा यो लोशन लगाउनाले तुरून्त रगत रोकिन्छ ।

१५. विभिन्न उपयोगी अर्कहरू

१. अदुवाको अर्क – ज्वरो, दाह कम गर्छ, रुचि बढाउँछ, अग्निदीपन गर्छ।

२. अपामार्गको अर्क – वमन, कफ र मेदको विकार तथा वातव्याधिमा हित गर्छ ।

३. अमलाको अर्क – रक्तपित्त र मोहको नाश गर्छ ।

४. असुरोको अर्क – ज्वर, वमन, प्रमेह, कुष्ठ र क्षयरोग निको पार्छ ।

५. कण्टकारीको अर्क – खोकीलाई आराम गर्छ, पाचक पनि हुन्छ, शोथ पनि कम पार्छ ।

६. कपासको अर्क – कानको रोगमा उत्तम हुन्छ ।

७. काकजङ्घाको अर्क – ज्वर, लुतो, विष र कृमिको नाशक हुन्छ ।

८. काकमाची(मकोप)को अर्क – आँखालाई हित गर्छ, वमन र हृदयरोग निको पार्छ ।

९. कुष्माण्डको अर्क – महमा मिसाएर खान दिएमा पागलपनलाई कम गर्छ ।

१०. कुरिलोको अर्क – पित्त, रक्तविकार, क्षय र खोकीमा खूब फाइदा गर्छ।

११. गोखुरुको अर्क – पत्थरी, प्रमेह, नामर्दी र हृदय रोगमा उत्तम काम गर्छ।

१२. गुर्जोको अर्क – दीपन हुन्छ, दम खोकी, पाण्डुरोग र ज्वरमा हितकारी हुन्छ ।

१३. घिउकुमारीको अर्क – गाँठागुठी (गुल्म), आगोले पोलेको र ठूलो खटिरामा हित गर्छ ।

१४. चिराइतोको अर्क – प्यास, कुष्ठ, ज्वर, व्रण, कृमिरोग नाश गर्छ ।

१५. जिराको अर्क – ग्राही हुन्छ, गर्भाशयको शोधन गर्छ ।

१६. ज्वानुको अर्क – वायु तथा कफको शमन गर्छ, वस्तिको शोधन गर्छ ।

१७. धतुरोको अर्क – मलरोधक, शीतल, अग्निवर्धक हुन्छ, व्रण दाहको शमन गर्छ । लेप गर्नाले कृमि नाश गर्छ, शोथ कम पार्छ ।

१८. नीमको अर्क – श्रम, तिर्खा, खोकी, ज्वरो, वमन तथा अरुचिमा फाइदा गर्छ ।

१९. पिप्लाको अर्क – दम, खोकी, आमवात, अल्काई, ज्वर तथा शूल निको पार्छ ।

२०. पाखनवेद (पाषाणभेद)को अर्क – योनिरोगमा, दम र गुल्ममा फाइदा गर्छ ।

२१. पुनर्नवाको अर्क - सबै प्रकारका नेत्ररोगहरूमा हितकारी हुन्छ ।

२२. बकैनोको अर्क - गुल्म रोगमा हित गर्छ, मुसाको विषहरण गर्न उत्तम हुन्छ ।

२३. बरको पातको अर्क - गर्मी नाश गर्छ, योनिरोग एवं मूत्ररोग निकोपार्छ ।

२४. बर्रोको अर्क - तृष्णा, वमन, कफ र खोकीलाई शान्त गर्छ ।

२५. बाँसको अर्क - कफ, पित्त, कुष्ठ, व्रण र सूजनमा अति हितकारी हुन्छ ।

२६. ब्राह्मीको अर्क - ६ महीनासम्म खाएमा कुशल पण्डित बन्नेछ ।

२७. भृङ्गराजको अर्क - केशलाई लामो पार्छ, दाँतलाई हित गर्छ । टाउको वा केशसम्बन्धी रोगमा हित गर्छ ।

२८ मरिचको अर्क - दम, खोकी, कृमि र कफसम्बन्धी रोग निको पार्छ, अग्नि दीपन गर्छ ।

२९. मेथीको अर्क - कफ, वात, ज्वर, र आउँलाई नाश गर्छ ।

३०. शङ्खपुष्पीको अर्क - यसले विषलाई हटाउँछ - त्यसको असर कम पार्छ, बुद्धि बढाउँछ र रक्तशुद्धि गर्छ ।

३१. हर्रोको अर्क - शूल, मुत्रकृच्छ, कामला र अनाहलाई नाश गर्छ ।

३२. हलेदोको अर्क - आतशक (उपदंश), व्रण, चर्मरोगमा हित गर्छ, पाण्डुरोग पनि निको पार्छ ।

१६. विभिन्न उपयोगी द्रव्यहरूको शोधन

१. निलो तुथो - निलो तुथो कागतीको रसमा एक पटक खल गरेर लघुपुटमा पाक गर्नू र पछि ३ दिनसम्म दहीको पानीमा भावना दिनू । निलो तुथो शुद्ध हुन्छ ।

२. स्वागको शुद्धि - फलामको कराही आगोमा राखी तात्न दिनू । त्यसपछि स्वाग राख्नू त्यो फुलेर आएपछि सेलाउन दिनू । स्वाग शुद्ध हुन्छ ।

३. समुद्रफेन - यो कागतीको रसमा पिन्नाले शुद्ध हुन्छ ।

४. हीराकसीस - यसको चूर्णलाई ज्यामीरको रसमा भिजाएर दिनभरि राख्नू र बेलुका सफा गरी छानेर सिसीमा राख्नू । शुद्ध हुन्छ ।

५. फिटकीरी - आगोमा राखी फुलाएपछि शुद्ध हुन्छ ।

६. हिङ - गाईको घिउ तताई त्यसमा फुराएपछि हिङ शुद्ध हुन्छ ।

७. कुबेराक्ष - यसको बोक्रा ताछी गाईको घिउमा भुटेपछि शुद्ध हुन्छ ।

८. नौसादर - यसलाई तातो पानीमा घोली मोटो (बाक्लो) कपडाले कपडछान गर्नू । त्यसपछि पानी सेलाउन दिनू । पानी सेलाइसकेपछि

नौसादर भाँडाको पींधमा जमेको पाइन्छ । त्यसलाई निकालेर सुकाउनू । यही शुद्ध नौसादार हो ।

९. गन्धक - फलामको भाँडोमा गाईको घिउ तताउनु र त्यसमा गन्धकको चूर्ण राख्नू । त्यो पग्लेपछि पानी मिसाएको गाईको दूधमा राख्नू । अब तातो पानीले पखालेर सुकाउनू । गन्धक शुद्ध हुन्छ ।

१०. हरिताल - कुभिण्डोको रस, चूनको पानी र तिलको तेल राखी त्यसमा हरितालको पोटली डुब्नेगरी दोलायन्त्रमा १-१ पटक पकाउनू । हरिताल शुद्ध हुन्छ । अथवा पत्रे हरिताललाई ७ दिनसम्म चूनको पानीको भावना दिनाले शुद्ध हुन्छ ।

११. जयपाल (जमालगोटा) - यसको बियाँभित्र जुन पातलो पात हुन्छ, त्यसलाई झिकेर दोलायन्त्रमा गोमूत्रमा राखी पकाउनू । शुद्ध हुन्छ ।

१२. धतुरोको बियाँ - यसलाई कुटेर गोमूत्रमा दिनभरी भिजाइ दिएमा शुद्ध हुन्छ ।

१३. अफीम - अदुवाको रसमा १२ पल्ट भावना दिनाले शुद्ध हुन्छ ।

१४. कुचिला - गाईको घिउमा भुटिदिएमा कुचिला शुद्ध हुन्छ ।

१५. शिलाजीत - असल शिलाजीत लिएर पहिले त्यसलाई ४ घडी (१.५ घण्टा)सम्म तातो पानीमा भिजाइराख्नू । फेरि कपडछान गरी दिनभरि घाममा राख्नू । बेलुकातिर पानीमाथि जमेको तर बिस्तारै निकाल्नू र अर्को भाँडामा जम्मा गर्नू । एवं रीतले नित्य बेलुका जम्मा गर्नू । यही शुद्ध शिलाजीत हो । अथवा पहिलो दिन गाईको दूधको भावना दिनू र सुकाउनू । दोस्रो दिन त्रिफलाको काढाको भावना दिएर सुकाउनू । तेस्रो दिन भृङ्गराजको रसको भावना दिएर सुकाउनू । यस प्रकार शुद्ध गरिएको शिलाजीत गरम हुन्छ । यो उत्तम शिलाजीत हुन्छ ।

१७. विशेष उपयोगी पदार्थहरू

विषमारक पदार्थहरू

हलेदो, मजिठो, रास्ना, सुकमेल, रातो चन्दन, निर्मलीको फल, सरेस, निर्गुण्डी आदि ।

दूध बढाउने द्रव्यहरू

खसको जरो (उशीर), शाली धान, कुशको जरो, काँसको जरो, गन्धतृण, साठी धान आदि ।

दूध शुद्ध गर्ने द्रव्यहरू

सुठो, देवदारु, मोथे, इन्द्रजौ, चिराइतो, कुटकी, अनन्तमूल ।

दूध खाने नियम

बिहान भन्दा बेलुका खाएको दूध हल्का हुन्छ । त्यसले वायु र पित्तको शमन गर्छ । दिउसो दूध खानाले बल बढ्छ, शरीर पुष्ट हुन्छ र अग्नि बढाउँछ ।

रात्रिमा दूध खान दिएमा बच्चाहरूको शरीर राम्ररी बढ्छ, वृद्ध-वृद्धाहरूमा बल बढ्छ, क्षयरोग नाश हुन्छ । आँखालाई हित गर्छ ।

रातमा दूध खाने मानिसले दूध मात्रै सेवन गर्नू, भोजन छोडी दिनू । भोजन पनि गरे अजीर्ण हुन्छ, त्यसैले भोजन नगर्नू । दिनमा खाइएका डाहकारक पदार्थबाट भएको विकारलाई रातमा खाएको दूधले शान्त गर्छ । दूध खाँदा रङ्ग बिग्रेको, स्वाद नमिठो वा अमिलो भएको, दुर्गन्ध आउने, नुन राखेको, नततार्इ त्यसै राखी छोडेको दूध पिउनुहुँदैन ।

दही खाने नियम

- रातमा दही खानुहुँदैन ।
- मंसिर, पुष, माघ र फागुनमा दही खानु उत्तम हुन्छ ।
- साउन, भदौमा दही खानु अति उत्तम हुन्छ ।
- असोज, कात्तिक, जेठ, असार, चैत्र र वैशाखमा दही कदापि खानुहुँदैन । नियम विरुद्ध दही खाएमा ज्वर, रक्तविकार, कुष्ठ, भ्रम आदि विकारहरू उत्पन्न हुन्छन् ।

छाछ (मही) खाने नियम -

भैंसीको खूब गाढा र अमिलो दही लिएर त्यसमा एक चौथाई पानी मिसाई माटोको अथवा काठको भाँडा (ठेकी आदि)मा राखेर राम्ररी मथ्नू र त्यसमा फुराएको हिङ, भुटेको जिरा, सिंधे नुन र रायोको गेडा पिनेर मिसाउनू र खानू । यसले रुचि बढ्छ, अत्यन्त पाचन र अग्नि दीपन गर्छ, तृप्तिकारक हुन्छ र पेटका अनेक रोग शान्त गर्छ ।

पानी-पानी बढी खाएमा अन्न पच्दैन, कम खाए पनि अन्न पच्दैन । थोरै थोरै मात्रामा अनेक पटक गरी पानी खानाले अग्नि दीप्त हुन्छ । परिश्रम पछि, मैथुन पछि, स्नानगरेपछि, फलफूलको सेवनपछि तत्काल पानी पिउनुहुँदैन ।

फोहोर पानी तथा सूर्य र चन्द्रको किरण नपर्ने ठाउँको पानी हानिकारक हुन्छ । कुनैबेला खराब पानी खान परेमा तत्काल प्याज खाइहाल्नू यसबाट पानीको खराब असर हुन पाउँदैन ।

राती सुत्ने बेलामा उमालेको पानी खानू अत्यन्त लाभदायक हुन्छ । यसले कफ, वायु, आउँ र मेदको नाश गर्छ, अग्निदीपन गर्छ, वस्तिको शोधन गर्छ । दम, खोकी र ज्वरलाई नाश गर्छ ।

शक्ति दिने र शक्ति हरण गर्ने वस्तुहरू – ताजा मासु, नयाँ अन्न, १६ वर्षकी बाला नारी, दूध घिउको सेवन, तातो पानीले स्नान गर्नु यी अमृत जस्तै तत्काल शक्ति दिने कुराहरू हुन् । दुर्गन्ध आउने मासु, बुढी आइमाई, एक रातको बासी दही, बिहानीपख मैथुन वा निदाउनु यी सबै तत्काल शक्ति हरण गर्ने वस्तुहरू हुन् ।

१८. रोग-विज्ञान

कुनै पनि रोगको सही किसिमको उपचार गर्न त्यसको पहिचान पहिले गर्नुपर्छ । रोगको पहिचान भन्नाले रोग कुन के हो ? रोग कुन कारणबाट भएको हो ? त्यसबाट शरीरमा के कस्तो असर परेको छ भनेर बुझ्नु हो । कारण र लक्षण तथा रोगबाट प्रभावित हुने अङ्गहरू धेरै किसिमका हुन्छन्, त्यही अनुसार रोग पनि अनगिन्ती हुन्छन् । एक कारणबाट अनेक किसिमका रोग हुन सक्छन् र अनेक कारणहरू मिलेर एक रोग पनि हुनसक्छ । अतः चिकित्सा गर्न चाहने मानिसले रोगको सही पहिचान गर्न विशेष प्रयत्न गर्नुपर्छ ।

निदान पञ्चक – रोगको पहिचान गर्ने पाँच मुख्य आधारहरू छन् । तिनीहरूलाई निदान-पञ्चक भनिन्छ । ती यस प्रकार छन् – निदान, पूर्वरूप, रूप, उपशय र सम्प्राप्ति । यी ५ बाट रोग चिनिन्छ । अतः यी पाँचलाई रोग चिन्ने आधार मानिन्छ ।

निदान – जुन आहार अथवा विहारबाट शरीरका दोषहरू वात, पित्त र कफको वृद्धि अथवा क्षय भई रोग उत्पन्न हुन्छ त्यसलाई रोगको निदान वा कारण भनिन्छ । निमित्त, हेतु, आयतन, प्रत्यय, उत्थान, कारण यी निदानका पर्यायवाची शब्दहरू हुन् । जस्तो कि दूषित पानी खानाले पखाला लाग्यो भने दूषित पानी रोगको निदान मानिन्छ ।

पूर्वरूप – जुन लक्षणबाट कुनै रोग उत्पन्न हुन लागेको थाहा पाइन्छ त्यसलाई पूर्वरूप भनिन्छ । ज्वरो आउनु भन्दा पहिले थकान महसूस हुन्छ, मुखको स्वाद बिग्रिन्छ । त्यो ज्वरको पूर्वरूप हो ।

रूप – जब रोगका सबै लक्षणहरू देखिन थाल्छन् तब ती सबै लक्षणहरूलाई रूप भनिन्छ । पूर्वरूप रोग उत्पन्न गर्ने दोषको सूक्ष्म चिह्न हो । रूपमा रोगका सारा चिह्नहरू प्रकट हुन्छ । जस्तै – पित्त ज्वर हुने बेलामा आँखा पोल्न थाल्छ । यो पित्त ज्वरको पूर्वरूप हो । यसबाट पित्त ज्वर हुन लागेको बुझ्नुपर्छ । जब जोडले ज्वर आउँछ, दिसा पातलो भएर जान्छ, निद्रा कम भएर जान्छ, वमन हुन्छ, पसिना आउन थाल्छ, घाँटी-ओठ, नाक, मुख आदि पाक्छ अनि यी लक्षणहरूबाट पित्त ज्वर भएको बुझ्नुपर्छ । यसैलाई रूप भनिन्छ ।

उपशय - औषधी, आहार, विहार यी तीनैको रोगीको प्रकृति अनुसार प्रयोग भएको छ भने त्यसलाई उपशय अथवा सात्म्य भन्छन् । उपशयको उद्देश्य हो- औषधी, आहार, विहारद्वारा रोगको पहिचान गर्नु । जुन औषधी, आहार अथवा विहारले रोगीको रोग घटाउँछ र उसलाई आराम दिलाउँछ त्यही उपशय हुन्छ । यदि कसैलाई शीतल अन्न र औषधीबाट लाभ हुन्छ भने त्यस अवस्थामा उसलाई गर्मीको रोग (पित्तसम्बन्धी) भएको छ भनी बुझ्नुपर्छ । किनकि गर्मीबाट उत्पन्न रोग नै शीतल आहार आदिबाट शान्त हुन्छ ।

सम्प्राप्ति - जब वात आदि दोषहरू कुपित भएर आफ्नो आफ्नो स्थान छोडी तल-माथि, दायाँ-बायाँ बढेर शरीरमा विचरण गर्न थाल्छन् तब तिनीहरूको विचरणबाट रोग उत्पन्न हुन्छ । यसरी रोग उत्पन्न हुने क्रमलाई सम्प्राप्ति भनिन्छ । जस्तो कि मिथ्या आहार विहारका कारण वात, पित्त र कफ कुपित भएर आमाशयमा प्रवेश गर्छन् र त्यस स्थानमा घुमेर रसवाहिनी नाडीहरूलाई छेक्छन् र पक्वाशयमा रहने अग्निलाई बाहिर निकालिदिन्छन् । त्यस जठराग्निका कारण सारा शरीर पोल्न थाल्छ । यही ज्वर हो । यसरी कुनै पनि रोग विशेष कारणबाट कुपित दोषद्वारा शरीर कुनै अङ्गमा विकृति ल्याएपछि उत्पन्न हुन्छ यस्तो निश्चय गर्नु सम्प्राप्ति हो ।

रात, दिन, ऋतु र आहार यी चारबाट वात आदि दोषहरूबाट उत्पन्न रोगहरू घट्ने-बढ्ने समय जान्नुपर्छ । यसका लागि रात-दिनको तीन भाग गरिन्छ- पहिलो चार घण्टा, दोस्रो चार घण्टा, तेस्रो चार घण्टा रात र दिनको पहिलो भाग कफको हो, दोस्रो भाग पित्तको र तेस्रो भाग वातको (बढ्ने) समय हो ।

मौसमको पनि ३ भाग गर्नुपर्छ - वसन्त, ग्रीष्म र वर्षा । वसन्त ऋतुमा कफको प्रकोप हुन्छ, ग्रीष्म तथा शरद् ऋतुमा पित्तको प्रकोप हुन्छ, वर्षामा वायुको प्रकोप हुन्छ ।

भोजनको समयलाई पनि तीन भागमा विभाजन गर्नुपर्छ । भोजन गर्ने समयमा कफको वृद्धि हुन्छ, भोजन पच्ने समयमा पित्तको वृद्धि र पचीसकेपछि वायुको वृद्धि हुन्छ । यसको ज्ञानले निकै फाइदा हुन्छ । जुन जुन दोषको (वात, पित्त, कफ) जुन जुन बढ्ने समय बताइएको छ त्यसलाई जान्नाले चिकित्सा गर्न निकै सुविधा हुन्छ ।

१९. अष्टविध परीक्षा

रोग लागेको अवस्थामा त्यसद्वारा शरीरमा आएको परिवर्तन कस्तो किसिमको छ र त्यो कति मात्रामा छ भनी बुझ्न तथा खास-खास रोगको पहिचान गर्न रोगीको शरीरसँग सम्बन्धित आठ कुराहरूको परीक्षा गर्नुपर्छ - नाडी, मूत्र, मल, जिह्वा, शब्द, स्पर्श, नेत्र र आकृति ।

नाडी परीक्षाबाट वात, पित्त र कफ अर्थात् सर्दी, गर्मी तथा साध्य-असाध्यको ज्ञान अवश्य नै हुन्छ तर यसबाट सारा रोगहरूको ज्ञान हुँदैन । वैद्य-विनोदकारको भनाइ छ - वैद्यले निदान पञ्चकबाट रोगको ज्ञान भएपछि नाडी, मूत्र र जिह्वाको परीक्षा गर्नुपर्छ । योगचिन्तामणिका लेखक भन्छन् - जुन वैद्यले नाडी, मूत्र र जिह्वाको परीक्षा जान्दैन त्यसले मनुष्यको जीवन नष्ट गर्छ र सफलता र यश पनि पाउँदैन ।

स्त्रीको बायाँ अङ्गको नाडी हेरिन्छ र पुरुषको दाहिने अङ्गको नाडी हेरिन्छ । यसको कारण यो छ कि महिलाहरूको नाभिमा कूर्म नाडीको मुख माथितिर हुन्छ जबकि पुरुषको कूर्म नाडीको मुख तलतिर हुन्छ ।

नाडी हेर्ने नियम

सुतिराखेको, व्यायामबाट भर्खर फर्केको, तेल मालिस गरिसकेको, भोकाएको, तिर्खा लागेको, आगो तापेर आएको, भोजन गरिराखेको वा भर्खर भोजन सकिएको, घाममा हिंड्दै आएको अथवा भर्खरै कुनै परिश्रमबाट फर्केको मानिसको नाडी हेर्नुहुँदैन । यस्तो अवस्थामा नाडीको सही ज्ञान हुँदैन ।

नाडी हेर्ने बेलामा ३ पटकसम्म नाडीमा छामेर हात छोडीदिनुपर्छ अर्थात् ३ पटक नाडी हेर्नुपर्छ, अनि मात्र रोगको पक्का निर्णय गर्नुपर्छ ।

रोगी मरणासन्न छ भने हातको नाडीको चाल हुँदैन । त्यस बेलामा पैतालाको कुर्कुच्चा, नाक, घाँटी तथा लिङ्गको नाडी पनि हेर्नुपर्छ ।

नाडी हेर्ने रीति

जुन रोगीले मलमूत्र त्यागिसकेको छ, सुखले बसेको छ र दुवै तिघ्राको बीचमा दुवै हातहरू राखी छोडेको छ त्यस्ता पुरुषको नाडी राम्ररी हेर्नुपर्छ ।

वैद्यले आफ्नो बायाँ हातले रोगीको हात समाई दायाँ हातका ३ औंलाले रोगीको दायाँ हातको मणिबन्ध अर्थात् बुढी औंलाको तलको भागमा समाएर नाडीको विचार गर्नुपर्छ । हातको बुढी औंलाको मुनिको धमनी नाडी जीवको साक्षी हुन्छ अर्थात् त्यसले जीवन भए-नभएको संकेत गर्छ र शरीर स्वस्थ वा अस्वस्थ भएको पनि जनाउँछ ।

कसैले यो भनेका छन्- वैद्यले आफ्नो दायाँ हातको तर्जनी (चोर औंला), मध्यमा (माझी औंला) र अनामिका (साहिंली औंला) रोगीको नाडी हुने ठाउँमा राख्नुपर्छ र बायाँ हातले त्यस हातको कुहिनोको नाडीलाई थिच्नुपर्छ । नाडीमा तर्जनीको मुनि वायुको स्थान छ, त्यसबाट दोस्रो पित्तको र तेस्रो कफको स्थान हुन्छ । यदि रोगीलाई वातले सताएको छ भने वैद्यको तर्जनी औंलामुनि नाडी फड्कन्छ, पित्त

अधिक छ भने मध्यमा औँलामुनि र कफ अधिक छ भने अनामिका औँलामुनि नाडी फड्कन्छ । वात र पित्तको चाप भए तर्जनी र मध्यमाको बीचमा, वात र कफको प्रकोप छ भने तर्जनी र अनामिकाको बीचमा नाडी फड्कन्छ, सन्निपात छ भने तीन ओटै औँलामुनि नाडी चलेको थाहा पाइन्छ ।

नाडीको चाल

वातको प्रकोप हुँदा नाडीको चाल जुका र सर्पको जस्तो हुन्छ, पित्तको कोप हुनाले कुलिङ्ग (भँगेरो) र भ्यागुताको जस्तो हुन्छ, कफको कोपमा हाँस र परेवाको चाल जस्तै हुन्छ । कसैको मत यस्तो पनि छः वायुको कोप हुँदा नाडीको चाल बाङ्गो-टिङ्गो भएर जान्छ, पित्तकोपमा नाडी छिटो गतिले चल्छ र कफको कोपमा मन्द गतिले चल्छ । कसैको अर्को मत अनुसार वायुको प्रकोप हुँदा नाडीको गति बाङ्गो, पित्तको कोपमा चञ्चल र कफको कोपमा नाडीको गति स्थिर हुन्छ । यी सबैको आशय यौटै छ, भन्ने तरीकामात्र फरक छ ।

दुई दोषहरूको प्रकोपको अवस्थामा नाडीको चाल बेग्लै खालको हुन्छ । वात र पित्तको कोप भएको बेलामा नाडी कहिले सर्पको चालमा र कहिले भ्यागुताको चालमा चल्छ । वायु र कफको प्रकोप हुँदा नाडी कहिले सर्प र कहिले हाँसका चालमा चल्छ । पित्त र कफको प्रकोप भएको बेलामा नाडीको गति नाडी कहिले भ्यागुताको जस्तो उफ्री उफ्री चल्छ भने कहिले हाँस र मयूर जस्तो बिस्तारै चल्छ । तिनै ओटा दोषहरू प्रकोप हुँदा नाडी लावा, तित्रा र बट्टाईको जस्तै चालमा चल्छ अर्थात् वायुको कोपले सर्पको जस्तो, पित्तका कारण भ्यागुतो जस्तो, कफले गर्दा हाँसको चालले चल्छ । यदि नाडीमा हात राख्ने बित्तिकै पहिले सर्पको चाल, त्यसपछि भ्यागुताको चाल र अन्तमा हाँसको जस्तो चाल हुन्छ भने रोगलाई साध्य सम्झनुपर्छ, यसको विपरीत चाल भए रोगीलाई असाध्य सम्झनुपर्छ । काठ फोर्ने चराले जसरी आफ्नो चुच्चाले रुखको हाँगामा जोडले ठुँग्ने गर्छ त्यस्तै प्रकारले सन्निपातको रोगीको नाडी सुस्तरी तर ठक्कर दिएर चल्दछ ।

विभिन्न रोगहरूमा नाडीको चाल

ज्वरो आउनुभन्दा पहिले

ज्वरो चढ्नुभन्दा पहिले नाडी २-३ पटक भ्यागुतोका चालले चल्छ । यदि उक्त चाल बराबर कायम रहन्छ भने त्यो दाह ज्वर भनी बुझ्नुपर्छ । सन्निपात ज्वर हुनुभन्दा पहिले नाडी सुरुमा बट्टाई जस्तो, त्यसपछि तित्राको जस्तो र अन्तमा हाँसको जस्तै विस्तारै चल्छ ।

ज्वरोको वेग हुँदा नाडी तातो र वेगवान् हुन्छ अर्थात् छिटोछिटो चल्छ। यसमा यो कुरा याद राख्नुपर्छ - मैथुन गरिसकेपछि अथवा मैथुन गरेका रातमा बिहानसम्म र अत्यन्त बढी मात्रामा भोजन गर्नाले पनि नाडी गरम रहन्छ तर यस्तो नाडीमा ज्वरोको जस्तो गति (तीव्र) हुँदैन। **वात ज्वरमा नाडी**

साधारणतया वात ज्वरमा नाडीको चाल वातको अधिकतम भएजस्तैहुन्छ।

अन्तर्गत (भित्री) ज्वरमा

शरीर छुँदा शीतल लाग्छ तर नाडी अत्यन्त गरम हुन्छ।

काम आतुरता, क्रोध, भारी चिन्ता र भयमा नाडी क्षीण गतिले चल्छ। मन्दाग्नि र धातु क्षीण भएका मानिसको नाडी मन्द-मन्द भएर चल्छ। रक्तकोपमा (हाइब्लड प्रेशरमा) नाडी केही गरम र भारी हुन्छ। आम रोगमा नाडी भारी हुन्छ।

जसको अग्नि दीप्त हुन्छ, उसको नाडी हल्का हुन्छ र ठीक चालमा छिटोछिटो चल्छ।

सुखी मानिसको नाडी स्थिर चालले चल्छ र बलवान् हुन्छ।

भोको मानिसको नाडी चञ्चल र अघाएको मानिसको नाडी स्थिर हुन्छ।

दुई दोषहरूको कोपमा नाडी कहिले मन्द र कहिले द्रुत गतिले चल्छ। यस्तो समयमा नाडीको वेग अनुसार सूक्ष्म तरीकाले विचार गरेर कुपित भएका दुई दोषहरूको अवस्था बुझ्नुपर्छ।

बुढी औंलाको तल मणिबन्धमा नाडी समान गतिले चल्छ भने नाडीमा कुनै दोष छैन भन्ने संझनुपर्छ।

ज्वर चढ्दा नाडी गरम हुन्छ र द्रुत गतिले चल्छ। भय, क्रोध, चिन्ता र आत्तिएको अवस्थामा पनि नाडी गरम हुन्छ र द्रुत गतिले चल्छ।

कफ र प्रदर रोगमा नाडी स्थिर रहन्छ।

अजिर्ण रोगमा नाडी कठिन र भारी हुन्छ।

भोक लाग्दा नाडी प्रसन्न, हल्का तथा द्रुत गतिले चल्छ।

प्रमेह, मलवृद्धि अर्थात् कब्जियत र अजीर्ण (अपच) मा नाडी छिटोछिटो चल्छ।

गर्भवती अवस्थामा नाडी भारी तथा वायुमय भएर जान्छ।

वातज्वरमा नाडी बाङ्गो र चपलतापूर्वक चल्छ र स्पर्श गर्दा शीतलताको आभास हुन्छ ।

पित्त ज्वरमा नाडी सोझो हुन्छ, छिटोछिटो चल्छ ।

नाडी सुरुमा मन्द र पछि प्रचण्ड वेगले चल्छ भने जाडोको ज्वर अथवा कम्प ज्वर भनी बुझ्नुपर्छ । सन्तत, तृतीयक र चतुर्थक (एक दिन, तीन दिन, चार दिन)मा चढ्ने विषमज्वरमा यस्तो नाडी हुन्छ ।

भूत-प्रेतको बाधा भएको अवस्थामा नाडीको गति थाहा पाइँदैन । सुतिराखेको मानिसका नाडी द्रुत गतिमा चल्छ ।

रक्तपित्त रोगमा नाडी मन्द, कठिन हुन्छ तथा सोझो भएर चल्छ । कफको प्रकोप तथा खोकी हुँदा नाडी स्थिर हुन्छ र मन्द गतिले चल्छ ।

राजयक्ष्मा रोगमा - नाडीको गति हात्तीको चाल समान हुन्छ ।

नशालु पदार्थ सेवन गर्ने मानिसको नाडी कठिनताका साथ सूक्ष्म गतिले चल्ने गर्छ ।

बबासीर अर्थात् अल्काई रोगमा नाडी स्थिर र मन्द हुन्छ, कहिले बाङ्गो कहिले सोझो भएर चल्छ ।

अतिसार रोगमा नाडी यस्तो मन्द भएर जान्छ, जस्तो हिउँदमा जुकाको हाल हुन्छ ।

मूत्राघातमा नाडी बारम्बार छिनेको जस्तो चल्छ ।

कमलपित्तमा नाडी चञ्चल र तीक्ष्ण भएर जान्छ । कहिले गति थाहा पाइन्छ, कहिले थाहा पाइँदैन ।

कुष्ठ रोगमा नाडी कठिनताले चल्छ र चाल पनि एक समान रहँदैन ।

असाध्य नाडी - रोग असाध्य भएपछि नाडी कहिले मन्द, कहिले द्रुत गतिमा, कहिले चल्दा चल्दा खण्डित भएर अर्थात् बीचबीचमा रोकिँदै चल्छ । कहिले सूक्ष्म, कहिले स्थूल यस प्रकारले घरी-घरी चाल फेरेर चल्न थाल्छ ।

असाध्य नाडी छालाको माथिबाट नै देखिन्छ । नाडीको चाल अत्यन्त चञ्चल भएर जान्छ र केही दबेको जस्तो रहन्छ । हातमा आएर पनि चिप्लेर जान्छ ।

जुन नाडी रोकी रोकी चल्छ अर्थात् अलिवेर चल्छ, रोकिन्छ फेरि चल्छ त्यो नाडी प्राणनाशक हुन्छ ।

अतिशीतल र अतिक्षीण नाडी पनि प्राणनाशक हुन्छ । जुन रोगीको नाडी अतिसूक्ष्म र अतिशीतल हुन्छ, त्यो बाँच्न सक्दैन । जुन नाडी एकदम द्रुत अथवा शीतल भएर जान्छ त्यसले निश्चय नै प्राणनाश गर्छ ।

यदि कुनै अवस्थामा रोगी प्रलाप गर्छ, बर्बराउँछ, प्रलापपछि नाडी शीघ्र गतिमा चल्छ, मध्याह्न वा सन्ध्याको समय आगो जस्तो ज्वर हुन्छ भने त्यो रोगी एक दिनभरी त बाँच्ला तर अर्को दिन अवश्य मरेर जान्छ ।

जसको नाडी स्थिर छ र अनुहारमा चमक-दमक पनि छ त्यो एक दिन बाँचेर अर्को दिन मर्नसक्छ ।

सन्निपातमा जसको नाडी मन्द मन्द, बाङ्गो-टिङ्गो, काम्दै, बीचमा रोकिँदै चल्दै, जान्छ, कहिले नाडी चलेको थाहा पाइँदैन । अथवा जुन नाडी आफ्नो स्थानबाट हटेर जान्छ अर्थात् नाडी हेर्ने मानिसलाई आफ्नो औंलामा नाडी चलेको थाहा नहोस्, फेरि केही बेरमा नाडीको गतिको आभास् होस् यस्तो लक्षण हुने सन्निपातको रोगी पनि मर्छ । नाडी छाम्ने ठाउँमा अघिल्लो भागमा नाडी द्रुत गतिले चल्ने कहिले शीतल भएर जाने, चिल्लो पसिना पनि आउने भएमा सात दिनमा रोगीको मृत्यु हुन्छ ।

शरीर चिसो छ, सास राम्ररी चलेको छ, नाडी अत्यन्त गरम र द्रुत गतिमा चलेको छ भने यस्तो रोगी १५ दिनमा मर्छ ।

नाडी रोकिँदै रोकिँदै चल्न थाल्छ अथवा एकदम चाल थाहा नहुने गरी वेगका साथ चल्न थाल्छ भने रोगी १ दिनमात्र बाँच्छ ।

यदि नाडी कहिले मन्द र कहिले द्रुत गतिले चल्छ भने त्यसलाई दुई ओटा दोषको प्रकोपको लक्षण सम्झनुपर्छ । यदि दुई दोषको नाडी पनि आफ्नो स्थानबाट भ्रष्ट भएर गएको छ अर्थात् कहिले यहाँ कहिले वहाँको स्थिति छ भने रोगीको अन्त हुने बेला बुझ्नुपर्छ ।

यदि कुनै रोगीको नाडी अलिबेर द्रुत भएर फेरि मन्द हुन्छ तथा शरीरमा शोथ हुँदैन भने त्यस रोगीले साताँै वा आठाँै दिनमा संसारबाट विदा लिनेछ ।

जसको नाडी आफ्नो स्थानबाट आधा जौको बराबर पनि हटेर गएको छ, उसको मृत्यु ३ दिनमैं हुन्छ ।

सन्निपात ज्वरमा जसको शरीर बढी गरम हुन्छ तर नाडी भने शीतल छ उसको मृत्यु ३ दिनपछि हुन्छ ।

यदि नाडी ३-३ पल्ट द्रुत गतिमा चलेर केही बेर बेपत्ता हुन्छ र फेरि उस्तै द्रुत गतिले चल्न थाल्छ, यो अवस्था बारम्बार दोहोरिन्छ भने रोगीका आफन्तहरूलाई अन्तिम बेला आएको सूचना दिए हुन्छ ।

जुन रोगीको छातीमा जलन छ र उसको नाडी आफ्नो स्थान अर्थात् बुढी औंलाको मूलबाट सरेर थोरैथोरै समय चल्छ त्यसको छातीमा जबसम्म जलन रहन्छ तबसम्म उसको जीवन रहन्छ, जलनको शान्ति हुँदाहुँदै उसको मृत्यु हुन्छ ।

मृतक व्यक्तिको लक्षण – नसा र नाडीहरूको गति बन्द भएर जानु, इन्द्रियहरू चल्न-काम गर्न छोड्नु, दुवै नाकबाट वायु आउन जान छोड्नु यी लक्षण भएमा व्यक्तिको मृत्यु भइसकेको बुझ्नुपर्छ ।

डाक्टरी मत अनुसार नाडीको परीक्षण – डाक्टरहरू नाडीमा हात राखेर १ मिनेटमा नाडी कति पटक चल्छ हेर्छन् । स्वस्थ मानिसको नाडी १ मिनेटमा ६० देखि ७५ सम्म चल्छ, कसैकसैको नाडी ५० पटक मात्र र कसैको ९० पटक पनि चल्छ । यसको साधारण नियम यो छ कि बालक जन्मनेबित्तिकै उसको नाडी एक मिनेटमा १६० पटक अथवा केही बढी पटक चल्छ । एक वर्षको उमेरसम्म एक मिनेटमा १३०-१४० पटक, २ वर्षको उमेरसम्म ११०-११५, ३ वर्षको उमेरसम्म ९९-१००, ७ वर्षको उमेरसम्म ९०-९५, ७ देखि १४ वर्षसम्मको उमेरमा १ मिनेटमा ७५-८० सम्म, १४ देखि ३० वर्षसम्म ८० पटक, ३० देखि ५० वर्षसम्म ७५ पटक, ५० देखि ८० वर्षसम्म ६० पटक नाडी चल्दछ । कुनै कुनै वृद्धको नाडी १ मिनेटमा ५० देखि ६५ पटकसम्म पनि चल्छ । कसैको नाडी उमेरको हिसाबले जति कम चल्छ त्यति नै सर्दी सम्झनुपर्छ र जति बढी चल्छ त्यति नै गर्मी सम्झनुपर्छ । सर्दी हुनाले नाडी कम चल्छ भने गर्मी हुँदा बढी चल्छ । जस्तो एक युवक मानिसको नाडी १ मिनेटमा ८० पटक चल्नु स्वभाविक हो । यदि त्यो ७० पटक चल्छ भने १० अंश सर्दी बढिराखेको छ भनी बुझ्नुपर्छ । यस्तै ९० पटक चल्छ भने १० अंश गर्मी बढेको हुन्छ । यसको तापमान थर्मोमीटरद्वारा थाहा पाउनुपर्छ ।

तापमान – थर्मोमिटरमा हेर्दा स्वस्थ व्यक्तिको तापमान ९८.४ हुन्छ । २६ वर्षभन्दा कम उमेरको मानिसको तापमान ९७.४ हुन्छ । घाममा हिंडेर आउँदा, आगोनजिक बसेर आउँदा र व्यायामपछि तापमान १ डिग्री बढेर जान्छ । दिउसो सुतेर उठेपछि, आरामपूर्वक बसीरहँदा तत्काल थर्मोमीटर लगाउँदा साधारण भन्दा कम गर्मी देखिन्छ । तन्दुरुस्त शरीरमा पनि रातमा तापमान कम हुन्छ र बिहानदेखि बढ्न थाल्छ, मध्याह्नसम्म बढी रहन्छ । रिसाहा व्यक्तिको तापमान स्वस्थ अवस्थामा पनि ९८.४ देखि ९९ डिग्रीसम्म रहन्छ । त्यसभन्दा बढी तापक्रम भएमा कुनै विशेष रोग सम्झनुपर्छ ।

ज्वरोमा तापमान – रुघाको ज्वरोमा तापमान १००° F डिग्री, मामूली ज्वरोमा १०१.५° F सम्म, अधिक ज्वरोमा १०४° F र मारक ज्वरमा १०५° F देखि १०६° F सम्म हुन्छ । अभिन्यास ज्वरोमा १०६° F देखि १०७° F राजयक्ष्मामा १०२° F वा १०३° F तापमान रहन्छ । ज्वरोमा १०५° F देखि बढी तापमान भएमा भय हुन्छ । १०६° F भन्दा बढी तापमान हुने बित्तिकै मृत्युको आशङ्का पक्का भएर जान्छ र १०८° F भन्दा माथि पुगेमा रोगीको मृत्यु निश्चित हुन्छ ।

कुनै ज्वरोयुक्त रोगमा यदि ज्वरोको तापमान १०१-१०४ सदा रहन्छ भने आराम हुने सम्भावना कमै हुन्छ । अर्थात् १०० वा १०५° F तापमान बराबर रहन्छ भने रोग आराम हुन मुस्किल हुन्छ ।

राजयक्ष्मा रोगमा, यकृत्मा घाउ भएमा ताप १०२-१०३ रहन्छ, जसो- जसो घाउ बढ्छ त्यही अनुपातमा ताप पनि बढ्दै जान्छ । रोग आराम हुँदै गएको अवस्थामा ज्वरो पनि घट्दै जान्छ । हैजा लागेको बेलामा अथवा मृत्यु नजिक आएपछि शरीरको ताप घटेर ७७ देखि ७९° F सम्म हुन आउँछ । नयाँ ज्वर, विषम ज्वर, पुरानो क्षय रोगमा तापमान ९८° F भन्दा कम हुन्छ ।

मूत्रपरीक्षा – रोगहरूको निदानका लागि नाडीपरीक्षा नै प्रधान भए पनि धेरै जसो रोगहरूमा अन्य परीक्षाहरू विना काम चल्दैन । जस्तो कि प्रमेह आदिमा मूत्रपरीक्षा[1], अतिसार आदिमा मलपरीक्षा, आमवातमा जिह्वा परीक्षा, कामला आदिमा नेत्रपरीक्षाको आवश्यकता पर्छ । आयुर्वेदका वंगसेन, वैद्यविनोद, योगचिन्तामणि आदि ग्रन्थहरूमा मूत्रपरीक्षाको विशेष उल्लेख पाइन्छ ।

मूत्र लिने विधि – रोगीलाई बिहान सूर्योदयभन्दा पहिले उठाएर पिसाब फेर्न लगाउनुपर्छ । पहिलो धार गएपछि बीचको धारको पिसाब काँचको सफा सिसीमा राखी बिर्को लगाई परीक्षाका लागि सुरक्षित गर्नुपर्छ ।

परीक्षा गर्ने विधि - बिहान घाम लागेर उज्यालो भएपछि घाममा पिसाब राखेको सिसी वा कुनै भाँडो राखी मूत्रको परीक्षा गर्नुपर्छ ।

मूत्रबाट रोगहरूको पहिचान - वायुको प्रकोपको अवस्थामा मूत्र पानी जस्तो सफा र बढी मात्रामा हुन्छ । पित्तको प्रकोप छ भने मूत्र पहेंलो वा रातो हुन्छ । त्यसको मात्रा पनि कम हुन्छ । कफको प्रकोप भएमा मूत्र सेतो, गाढा र चिल्लो हुन्छ । दुई वा तीन दोषको प्रकोप भएमा कुपित दोष अनुसार दुई दोष वा तीनै दोषका लक्षण देखिन्छन् ।

वैद्यविनोद ग्रन्थमा भने अनुसार वायुको कोप भएमा पिसाब निलो, सेतो र पहेंलो पनि हुनसक्छ । पित्तको प्रकोप भएमा पिसाब निकै तातो र पहेंलो रंगको हुन्छ । कफको प्रकोपमा पिसाब चिल्लो, सेतो र शीतल हुन्छ । त्रिदोषको प्रकोप भएको खण्डमा पिसाब बाक्लो, तातो, रङ्गमा रातो वा धूमिल हुन्छ ।

अन्य एक वैद्यराजको भनाइ यस्तो छ - वायुबाट दूषित पिसाब कालो वा अरुण (केहीरातो) हुन्छ, पित्तबाट दूषित मूत्र रातो र कफबाट दूषित मूत्र फिंजयुक्त र मैलो हुन्छ ।

---

१. यूनानी चिकित्सामा यसको धेरै चलन छ । त्यस पद्धति अन्तर्गत मूत्रपरीक्षालाई 'कारूरा' भनिन्छ ।

ज्वरोमा सेतो वा पहेंलो ठूलो धारा हुन्छ । महाज्वरमा (सन्निपात) रातो धारा हुन्छ, कालो धारा छ भने रोगीको मृत्यु निश्चित सम्झनुपर्छ ।

सन्निपातमा पिसाबको रङ्ग कालो हुन्छ, जलोदरमा पिसाब घिउको जस्तो दानादार हुन्छ, आमवातमा पिसाब मही जस्तो हुन्छ ।

अजीर्णमा पिसाबको रङ्ग सेतो वा रातो हुन्छ अथवा बाख्राको मूत्र जस्तै हुन्छ ।

क्षयरोगमा मूत्रको रङ्ग कालो हुन्छ । यस रोगमा मूत्रको रङ्ग सेतो भएमा रोग असाध्य हुन्छ ।

ज्वरोको अधिकतामा मूत्रको रङ्ग रातो र स्वच्छ हुन्छ । कहिलेकाहीं धुवाँको रङ्ग जस्तो पनि हुन्छ । पित्त ज्वरमा पिसाब पहेंलो तर तलतिर अलि कालो हुन्छ ।

सन्निपात ज्वरमा मूत्र कालो तर निर्मल हुन्छ । सन्निपातमा पित्त प्रधान भएमा पिसाब माथि पहेंलो र तल रातो हुन्छ ।

रसाधिक्य (रस धातुको वृद्धि) हुँदा मूत्र उखुको रस समान हुन्छ र नेत्र रातो पहेंलो हुन्छ । आहार बढी भएर पेट फुलेको अवस्थामा मूत्र तेलसमान चिल्लो हुन्छ ।

रुधिरकोप अर्थात् रगत दूषित भै बढेको अवस्थामा पिसाब तलमाथि दुवैतिर रातो हुन्छ, रक्तवातमा पिसाबको रङ्ग रातो हुन्छ, रक्तपित्तमा पिसाबको रङ्ग कुसुमको रङ्ग समान (पहेंलो) हुन्छ । कुनै रक्तविकारमा पिसाब रगत समान रातो हुन्छ ।

मूत्रातिसारमा पिसाब बढी मात्रामा हुन्छ । त्यसलाई सिसीमा केहीबेर राखेर हेर्ने हो भने तलतिर रातो हुन्छ । बहुमूत्र रोगमा पिसाब बारम्बार हुन्छ । यस रोगमा पिसाब फेर्दा दुख्दैन, पिसाब पनि निर्मल, शीतल र गन्धहीन हुन्छ । सूजाक रोगमा पिसाब गर्दा अति पोल्छ र त्यसले गर्दा रोगी कहिलेकाहीं रुन थाल्छ, पिसाब गर्ने विचार मात्रले डराउँछ । यसमा पिसाब थोपा-थोपा भएर निस्कन्छ । हैजामा पिसाब रोकिन्छ, त्यो खराब लक्षण हो ।

सोम रोगमा शरीरका धातुहरू पिसाबको बाटो भएर बग्छन् । यसमा पिसाबको वेग हुने बित्तिकै बग्न थाल्छ र लगाएको लुगा भिज्छ ।

वात ज्वरमा पिसाब केशरजस्तो पहेंलो, पित्त ज्वरमा सफा पहेंलो र कफ ज्वरमा सेतो तथा बाक्लो पिसाब हुन्छ । घोर सन्निपातमा पिसाब कालो हुन्छ, यो खराब लक्षण हो ।

धातुहरूको समानता भएमा (स्वस्थ व्यक्तिको) पिसाब कुवाको पानी जस्तो सफा हुन्छ । पानीको जस्तो, बिमिरोको रस जस्तो अथवा काञ्जी जस्तो पिसाब निर्दोष हुन्छ ।

पित्त प्रकृति हुने मानिसको तेलजस्तो (पहेंलो) पिसाब हुन्छ, कफ प्रकृति हुने मानिसको पिसाब हिलोको पानीजस्तो (अलि मैलो) हुन्छ, वात प्रकृति हुने मानिसको पानी समान तर बढी मात्रामा पिसाब हुन्छ ।

उदकप्रमेह रोगमा पिसाब स्वच्छ, अति सेतो, केही बाक्लो, तथा चिल्लो हुन्छ । त्यो शीतल, गन्धरहित र पानीजस्तो हुन्छ ।

इक्षु प्रमेह रोगमा पिसाब उखुको रसजस्तै अत्यन्त गुलियो हुन्छ । सुरा प्रमेह रोगमा पिसाब सुरा (रक्सी) जस्तै माथिबाट निर्मल तर तलतिर गाढा हुन्छ । पिष्ट प्रमेह रोगमा पिसाब चामल पिनेको पानी जस्तो सेतो र अधिक मात्रामा हुन्छ ।

शुक्रमेह रोगमा पिसाबका साथ वीर्य पनि निस्कन्छ । सिकतामेह रोगमा पिसाबमा बालुवाको जस्तो कण हुन्छ । शीत मेह रोगमा पिसाब गुलियो र अतिशीतल हुन्छ । रोगीले बारम्बार पिसाब फेर्छ ।

शनैर्मेह रोगमा बिस्तारै बिस्तारै (ढिलो लाग्ने गरी) पिसाब हुन्छ । लालमेह रोगमा पिसाब ज्याल जस्तो तारयुक्त र चिप्लो हुन्छ ।

नीलमेह रोगमा पिसाब निलो वा कालो रङ्गको अथवा कोइलीको प्वाँखको समान हुन्छ । क्षारमेह रोगमा पिसाब क्षार मिसिएको पानीसरह हुन्छ । कालमेह रोगमा पिसाब मसीजस्तो कालो हुन्छ । हारिद्रमेह रोगमा पिसाब बेसारको रङ्ग जस्तो र पोल्ने हुन्छ । माञ्जिस्ठ मेह रोगमा पिसाब दुर्गन्धित र मजिठोको रङ्गको हुन्छ । रक्तमेह रोगमा पिसाब दुर्गन्धित, तातो, भारी र रगतजस्तै रातो रङ्गको हुन्छ । रगत मिसिएको हुनसक्छ ।

वसामेह रोगमा पिसाब बोसोजस्तो चिल्लो हुन्छ । मज्जामेहमा पिसाब मज्जायुक्त जस्तो हुन्छ । क्षौद्र मेहमा पिसाब गुलियो, टर्रो तथा चिल्लो हुन्छ । हस्तिमेह रोगमा पिसाब मत्ता हात्तीको समान निरन्तर, वेगरहित हुन्छ । रोगीले पिसाब रोकी रोकी गर्छ, एकै पटकमा गर्दैन ।

तेलद्वारा मूत्रपरीक्षा – योगरत्नाकर ग्रन्थमा मूत्रपरीक्षा गर्ने अर्को विधि पनि छ । त्यसमा कुनै सफा पात्रमा रोगीको पिसाब राखी घाममा राख्नुपर्छ । त्यसपछि मूत्रमाथि १ थोपा तिलको तेल राखी त्यसमा के कस्तो परिवर्तन हुन्छ सावधानीका साथ हेर्नुपर्छ । त्यसबाट रोगको प्रकार, रोग निको हुने वा नहुने अथवा मृत्यु हुने कुरा थाहा पाउन सकिन्छ । तेल पर्ने बित्तिकै पिसाबमा फोकाहरू उठ्न थाल्यो भने पित्त विकार भएको बुझ्नुपर्छ । तेलका थोपाहरू कालो जस्तो देखिए भने वायुको विकार बुझ्नुपर्छ । तेलका थोपाहरू पिसाबमाथि रहन्छन् । तेल काँचसमान अथवा पानी जस्तो भएर आउँछ भने कफको विकार सम्झनुपर्छ । यस

अवस्थामा तेल पिसाबमा मिलेर जान्छ । तेलको थोपाहरू राख्दा पिसाबको रङ्ग पहेंलो र रायोको तेल जस्तो भएर जान्छ भने वातपित्तको विकार सम्झनुपर्छ ।

तेलका थोपाहरू पिसाबमा परेपछि फिंजीएर गयो भने रोग साध्य छ भन्ने बुझ्नुपर्छ । थोपा नफिंजेर थोपाकै रूपमा रह्यो भने रोग असाध्य हुन्छ ।

तेलको थोपा पिसाबमा परेपछि पूर्व, पश्चिम वा उत्तरतर्फ फिंजेर जान्छ भने रोगी रोगबाट मुक्त हुन्छ । तेलको थोपाहरू दक्षिण, ईशान[१], आग्नेय[२], वायव्य[३] वा नैर्ऋत्य[४] दिशातर्फ फैलिन्छन् भने रोग असाध्य हुन्छ ।

तेल पिसाबमा परेपछि त्यो फैलिंदा अनेक किसिमको आकार बन्न सक्छ । यदि त्यसको आकार हाँस वा छाता जस्तो देखिएमा रोगीलाई आराम भइ दीर्घजीवन मिल्ने बुझ्नुपर्छ । विभिन्न खालका विकृत मूर्ति जस्तै हलो, कछुवा, गधा, ऊँट जस्तो आकार देखिएमा रोग असाध्य भनी बुझ्नुपर्छ ।

तेलका थोपाहरू पिसाबमा परेपछि चक्कर खान थालेको वा त्यसको बीचमा छिद्र भएको देखियो अथवा तलवार, धनुष, लङ्गी आदिको आकार बन्यो भने रोगीको मृत्यु निश्चित सम्झे हुन्छ । तेलको थोपा फोका भएर उठ्छ भने देवदोष सम्झनुपर्छ ।

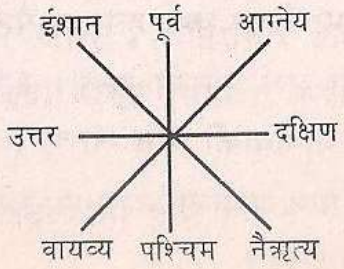
तेलको थोपाको आकार तलाउ, हात्ती अथवा तोरणको आकारमा आउँछ भने रोगी दीर्घायु हुन्छ ।

वैद्य विनोद ग्रन्थ अनुसार पिसाबमा हालिएको तेलको थोपा फैलिएर गएमा रोग साध्य हुन्छ, फैलिएन भने रोग कष्टसाध्य हुन्छ । तलतिर डुबेर बस्यो भने रोग साध्य हुन्छ । तेल पूर्व वा उत्तरतिर विशेष फैलिएमा रोगीलाई चाँडै आराम हुन्छ, दक्षिणतिर फैलिन्छ भने बेर गरेर आराम हुन्छ, पश्चिमतिर फैलिएर गएमा आयुको नाश हुन्छ ।

पिसाबमा राखेको तेलको थोपाको आकार कमल, शंख, चँवर जस्तो भएर आउँछ भने आरोग्य हुने संकेत बुझ्नुपर्छ । सर्प, सिंह, गोरु, बिच्छी, कछुवा आदिको समान भएर आउँछ भने रोगीको जीवन संकटमा छ भन्ने बुझ्नुपर्छ । तेलको थोपाको आकार त्रिशूल, धनुष, वज्र, कटार, लङ्गी, बाण र छुरीको आकारको देखिएमा रोगीको मृत्यु हुन्छ ।

---

१. ईशान = उत्तर-पूर्व ।
२. आग्नेय = पूर्व-दक्षिण ।
३. वायव्य = पश्चिम-उत्तर ।
४. नैर्ऋत्य = दक्षिण-पश्चिम ।



वायुको विकार भएमा तेलको थोपाको आकार सर्पसमान भएर आउँछ, पित्तविकारमा त्यसको आकार छाताको जस्तो गोलाकारमा फैलिन्छ। कफको विकारमा मोतीको जस्तो भएर आउँछ।

तेलको आकार चालनीसमान वा दुई टाउको भएको मानिसको समान भएर आउँछ भने भूतबाधा सम्झनुपर्छ।

यूनानी मत – मूत्रको परीक्षा बिहानको समयमा गर्नुपर्छ। मूत्र परीक्षाका लागि रोगीको पिसाब बिहानको पहिलो हुनुपर्छ र त्यो पूरै संकलन गरी सिसीमा राख्नुपर्छ। परीक्षा गर्ने बेलामा रोगीको पिसाब कुनै सफा भाँडामा राखी हेर्दै गर्नुपर्छ।

त्यसरी हेर्दा पिसाब पहेंलो भए पित्तको अधिकता सम्झनुपर्छ। रातो छ भने रक्तको अधिकता हुन्छ। हरियो छ भने वातको अधिकता सम्झनुपर्छ। सेतो छ भने कफ अथवा बोसो मिसिएको सम्झनुपर्छ। गर्मी भएमा पिसाब रातो, पहेंलो तथा मात्रामा कम आउँछ र जलन पनि हुन्छ। सर्दी भएमा पिसाब सेतो हुन्छ, बढी मात्रामा र बिना जलन आउँछ।

मलपरीक्षा – वायुको कोप हुँदा मल गिलो, फिंजयुक्त र धुवाँको रङ्गको हुन्छ। कफको प्रकोप हुँदा रातो-पहेंलो हुन्छ। वातपित्तको प्रकोपमा मल कसिलो, कहिले सजिलो पहेंलो-कालो हुन्छ। कफ-पित्तको कारण पहेंलो, कालो, केही गीलो र चिप्लो हुन्छ। त्रिदोषका कारण कालो, पहेंलो, गिलो, सेतो र कस्सिएको मल हुन्छ। वात आदि दोष क्षीण भएमा मल गाढा हुन्छ।

वात रोगमा मल कस्सिएको, सुख्खा र धुमिल रङ्गको हुन्छ। पित्त रोगमा पहेंलो र पातलो हुन्छ। कफ रोगमा सेतो, गाढा तथा बढी मात्रामा हुन्छ। दुई दोष वा तीन दोषवालाको मल कालो, कम मात्रामा र केही गरम हुन्छ।

तीक्ष्ण अग्निवाला रोगीको मल सुख्खा हुन्छ र मन्दाग्निवालाको मल पातलो हुन्छ।

अजीर्ण रोगमा मल दुर्गन्धित र पातलो भएर जान्छ। जलोदरवालाको मल सेतो तर धेरै नै सडेको हुन्छ।

क्षय रोगमा मलको वर्ण कालो हुन्छ। आमवातमा कम्मरमा दुख्ने र पहेंलो मल आउने हुन्छ। यसमा दिसा कम हुन्छ र पेट फुलीरहन्छ।

अतिसार रोगमा मल पातलो हुन्छ। कृमिरोगमा (पेटमा जुका पर्दा) पनि मल पातलो हुन्छ साथै वाकवाकी पनि लाग्छ।

हैजामा पानी समान पखाला चल्छ त्यसमा मल हुँदैन। संग्रहणीमा नपचेको अन्न जस्ताको तस्तै निस्कन्छ।

वातज्वरमा कब्जियत रहन्छ अथवा मल सुख्खा र कम मात्रामा हुन्छ । पित्त ज्वरमा दिसा पातलो र पहेंलो हुन्छ । आम ज्वरमा दिसा सेतो रङ्गको हुन्छ ।

धेरै कालो, धेरै सेतो, धेरै पहेंलो र धेरै रातो मल अथवा अत्यन्त तातो मल भएमा रोगीको मृत्यु हुनसक्छ । जसको मल सडेको, दुर्गन्धित हुन्छ । त्यो रोगी असाध्य हुन्छ ।

शब्दपरीक्षा – कफ रोगीको स्वर भारी हुन्छ । पित्तको रोगी सफासँग बोल्छ । वायुको रोगीले बोल्दा स्वर घर्घराउँछ, घुरघुर आवाज आउँछ ।

स्पर्शपरीक्षा – पित्तको प्रकोप हुँदा शरीर तातो हुन्छ । वायु अथवा कफको प्रकोप हुँदा शरीर शीतल हुन्छ । कफको रोगमा चिप्लो र पानीले भिजेको जस्तो हुन्छ ।

कुनै पनि ज्वरमा शरीर तातो रहन्छ । शीताङ्ग सन्निपातमा शरीर हिउँ जस्तो शीतल भएर जान्छ, अन्तक सन्निपातमा शरीर आगो जस्तो तातो हुन्छ ।

वर्णपरीक्षा – वायुसम्बन्धी रोगहरूमा शरीर रुखो, धुँवाको रङ्गको जस्तो हुन्छ । अभ्र रोग पुरानो भयो भने पहेंलो भएर जान्छ । वात ज्वरमा शरीर रुखो हुन्छ ।

पित्त रोगीको शरीर पहेंलो रहन्छ, पित्तज्वरमा पनि शरीर केही पहेंलो नै रहन्छ । पाण्डुरोग र कमलपित्तमा पनि शरीर पहेंलो हुन्छ । हलीमक रोगमा शरीर कालो, पहेंलो, अथवा हरियो रङ्गको भएर जान्छ ।

कफ रोगीको शरीर चिल्लो र सेतो हुन्छ ।

प्रायः सबैजसो दीर्घरोगहरूमा शरीर पहेंलो भएर जान्छ ।

जिह्वा परीक्षा – वायुको कोपको अवस्थामा जिब्रो फाटेको र जडवत् हुन्छ । त्यो हरियो रङ्गको हुन्छ र त्यसबाट च्याल बग्छ । वायुको रुक्ष गुणका कारण रुखो र गाईको जिब्रो जस्तै खस्रो हुन्छ ।

पित्तको प्रकोप भएको अवस्थामा जिब्रो रातो रङ्गको तितो, जलेको जस्तो, दाहयुक्त, काँडा वा बिबिराले युक्त हुन्छ ।

कफको प्रकोप हुँदा जिब्रो स्थूल, भारी, मोटो, अतिकफले युक्त हुन्छ । रक्ताधिक्य र दाहमा जिब्रो तातो र हेर्दा रातो हुन्छ । हैजामा मूर्च्छा रोगमा, श्वास रोकिएर जाँदा जिब्रो शीतल भएर जान्छ । घाँटीभित्र दाह भएमा जिब्रो कालो हुन्छ । ज्वरोमा (बढेको बेलामा) जिब्रो नीरस (सुख्खा) हुन्छ । नयाँ ज्वरमा जिब्रो सेतो हुन्छ ।

आमजीर्ण र आमवातमा जिब्रो सेतो हुन्छ ।

सन्निपात ज्वरमा जिब्रो मोटो, सुख्खा र निभिसकेको आगेको कोइला जस्तो हुन्छ ।

यकृत् दोषमा वा पित्त रोकिएको अवस्थामा जिब्रो हरियो मिश्रित पहेंलो र मल लेस्सिएको हुन्छ ।

यकृत् रोग, कमल पित्त आदिको अन्तिम अवस्थामा र क्षय रोगमा भित्री यन्त्रहरूको पीडाबाट मर्ने समयमा जिब्रोमा घाउ उत्पन्न हुन्छ ।

अति कमजोरी र जलन हुँदा जिब्रो ठूलो, मोटो हुन्छ । निरोगी मान्छेको जिभ्रो सदा भिजेको र गुलाबी रङ्गको हुन्छ ।

जँडचाहाको जिब्रो कालो तथा फाटेको हुन्छ ।

मुख परीक्षा – वायुको प्रकोप भएको बेलामा मुखको स्वाद नीरस (खल्लो) हुन्छ । पित्तको प्रकोप हुँदा तितो वा पिरो हुन्छ । कफको प्रकोप हुँदा गुलियो स्वाद हुन्छ । त्रिदोषको प्रकोप हुँदा तीनै थरी लक्षण कहिले एउटा, कहिले अर्को हुन्छ ।

अजीर्णमा चिल्लो र मन्दाग्निमा टर्रो स्वाद हुन्छ । अन्य मत अनुसार वायुको कोप हुँदा मुखको स्वाद नुनिलो, पित्तको कोप हुँदा तितो र कफको कोपमा गुलियो हुन्छ ।

अनुहारको परीक्षा – वायुको प्रकोप हुँदा अनुहार रुखो, स्तब्ध (निश्चल) र टेढो हुन्छ । पित्तको कोप हुँदा रातो, पहेंलो र तातो हुन्छ । कफको कोपले अनुहार भारी, चिल्लो र सुन्निएको जस्तो हुन्छ ।

नेत्र परीक्षा – वात रोगमा नेत्र भयानक, रुखो, धुवाँ जस्तो रङ्गको, टेढो, चञ्चल र भित्रबाट कालो हुन्छ । पित्त रोगमा नेत्र पहेंलो, रातो र दीपक आदि चम्किलो-तेजिलो कुरा देख्न सक्दैन, हेर्दा नसहने दुख्ने हुन्छ । कफ रोगमा नेत्र(आँखा) ज्योतिहीन (हेर्दा मलिन), सेतो, पानीले भरिएको र भारी हुन्छ, दृष्टि अर्थात् हेर्ने शक्ति कम भएर जान्छ ।

त्रिदोष अथवा सन्निपातमा नेत्र तन्द्रा र मोहबाट व्याकुल, श्यामवर्ण, रुखा, भयानक र राता हुन्छन् । त्रिदोषको प्रकोपको अवस्थामा नेत्रहरू रोगीका वशमा हुँदैनन्, क्षणभरमा नेत्र खुल्ने, क्षणभरमा बन्द हुने भइरहन्छन् । कहिले हर समय बन्द रहन्छन्, कहिले हर समय खुला नै रहन्छन् । कालो नानी लुप्त भएर जान्छ, नेत्रको रङ्ग अनेक प्रकारको भई विकृत भएर जान्छ । त्यसको चेष्टा पनि अनेक किसिमको हुन्छ । यस्तो नेत्र भएको मानिस बाँच्दैन ।

जसको नेत्र प्रसन्न (सफा) र आफ्नो स्वाभाविक अवस्थामा हुन्छ तथा हेर्दा सुन्दर देखिन्छ त्यो रोगीले शीघ्र आराम पाउँछ ।

जुन रोगीको नेत्र कम्पमान, तन्द्रा र मोहद्वारा व्याकुल, भित्र गडेको र हेर्दा भयानक हुन्छ त्यसको मृत्यु नजिक आएको बुझ्नुपर्छ ।

कामला रोगमा आँखाको रङ्ग बेसार जत्तिकै पहेंलो हुन्छ । पित्त ज्वरमा आँखा केही अंशमा पहेंलो हुन्छ । हलीमक रोगमा आँखा हरिया हुन्छन् । राजयक्ष्मा असाध्य अवस्थामा पुतदा नेत्र बिल्कुल सेतो हुन्छ । हैजामा आँखाको गोलक भित्र गडेर जान्छ । आँखाको रङ्ग रातो हुन्छ, केही मात्रामा धुवाँको जस्तो पनि देखिन्छ ।

सन्निपातमा नेत्रहरूमा सबै रङ्गहरूको मिश्रण हुन्छ । आमरोगमा परेला बन्द गर्न कष्ट हुन्छ । बढी रक्तस्रावको अवस्थामा आँखा भित्र गडेर जान्छन् र धूमिल अथवा राता हुन्छन् । मस्तकमा रगत जम्नाले दुवै आँखा रगत जस्तै राता राता हुन्छन् । अफीमको विष चढ्नाले आँखाका नानीहरू खुम्चेर जान्छन् । बढी ज्वरोको चापमा रोगीले एकटक हेरिरहन्छ । छारे रोगमा आँखा माथिपट्टी फर्किन्छन् र परेलाहरू काम्छन् । संन्यास रोगमा आँखाका नानीहरू खुम्चन्छन् ।

२०. रोग र परिणाम

साध्य रोगहरूको लक्षण – जुन रोगीका नेत्रहरू, कान र अनुहार सौम्य हुन्छन्, जसले गन्ध र रसहरूको अनुभूति (अनुभव) गर्न सक्छ, त्यस्तो रोगी साध्य हुन्छ ।

जसका हात र खुट्टा ताता हुन्छन्, शरीरमा दाह हुँदैन, जिभ्रो कोमल हुन्छ त्यो रोगी मर्दैन, साध्य हुन्छ । जुन रोगीलाई ज्वरमा पसिना आउँदैन, सास नाकबाट चल्छ, घाँटीमा कफले घर्घर गर्दैन, त्यस्तो रोगी अवश्य बाँच्छ ।

जुन रोगीलाई सुखपूर्वक निद्रा लाग्छ, जसको शरीर कान्तियुक्त हुन्छ, इन्द्रियहरू प्रसन्न हुन्छन्, त्यो रोगी बाँचीरहन्छ ।

असाध्य रोगको लक्षण – अश्मरी (पत्थरी), कुष्ठ, अल्काई, मूढगर्भ, भगन्दर, वातरोग र उदर रोग यी आठ रोगहरूलाई महारोग भन्छन् । यी सबैको चिकित्सा कठिन हुन्छ । साथमा बल घट्दै जाने, मासु सुक्दै जाने, श्वास, बढी प्यास लाग्ने, वमन, ज्वर, मूर्च्छा, अतिसार, हिक्का आदि उपद्रव पनि भएमा यी रोगहरू झन् असाध्य हुन जान्छन् । अनि वैद्यले चिकित्सामा यश पनि पाउँदैन ।

ज्वर – जुन ज्वरको रोगीको जिभ्रो खस्रो र निलो-पहेंलो भएर गएको छ र श्वास अत्यन्त तातो भएर आउँछ, शरीरका रौंहरू ठाडा हुन्छन्, आँखा निला, पहेंला वा राता हुन्छन्, घाँटीमा घर्घर भइरहन्छ त्यो रोगी निश्चय मर्छ ।

जुन ज्वरको रोगीको श्वास छिटोछिटो चल्छ, दाँतको पंक्ति कालो भएर

आउँछ, आँखा टाढा भएर जान्छन् र शरीरमा बल हुँदैन भने त्यो जीवित रहँदैन ।

जुन ज्वरको रोगीका नेत्रहरू धुवाँको रङ्ग जस्तै हुन्छन्, जसलाई होस हुँदैन, जसको रगत-मासु क्षीण भएका छन्, अत्यन्त तन्द्रा पनि छ त्यो रोगी बाँच्दैन ।

जुन ज्वरको रोगीलाई धेरै नै वमन हुन्छ, आँखाबाट आँसु आइरहन्छ, अरुचि हुन्छ, भित्र डाह पनि हुन्छ र जिब्रो कालो भएर आएको छ त्यो बाँच्दैन ।

जुन रोगीलाई बिहान ज्वरो बढेर आउँछ, साथमा सुख्खा खोकी हुन्छ, बल र मांस क्षीण भएर गएको छ त्यस रोगीलाई मरेतुल्य सम्झनुपर्छ- (चरक) ।

जुन कफ ज्वरको रोगीको अनुहारमा बिहानको समयमा अत्यन्त पसिना आउँछ त्यो रोगी बाँच्न गाह्रो हुन्छ - (वंगसेन) ।

जुन रोगी ज्वरले गर्दा क्षीण भइसकेको छ अथवा जसको शरीर सुन्निएको छ, त्यो रोगी बाँच्न गाह्रो पर्छ ।

अतिसार - जुन मानिसलाई सुरुमा अतिसार भएर पछि श्वास र शोष भएको हुन्छ त्यो रोगी बाँच्न गाह्रो पर्छ ।

जसलाई श्वास, शूल र प्यासले सताइराखेको हुन्छ, जो क्षीण हुन्छ, जसलाई ज्वरले पनि सताएको छ भने यस्तो वृद्ध रोगीको मरण निश्चय हुन्छ ।

जसलाई अतिसार, शोथ, अरुचि र शूल भइरहन्छ त्यो रोगी अनेक उपचार गर्दा पनि निको हुन गाह्रो हुन्छ ।

शोथ - बालक, अतिवृद्ध, विकल (रोगले आत्तिएका) मानिसको सारा शरीरमा शोथ (सूजन) भएमा निश्चय नै मरण सम्झनू ।

जसको पेटबाट शोथ उत्पन्न भई सारा शरीरमा फैलिन्छ, उसको जीवन अनिश्चित हुन्छ ।

जसको दुवै गोडाहरूमा शोथ भएर पिडौंलाहरू गलेर जान्छन्, दुवै तिघ्रा नचल्ने हुन्छ त्यो रोगी बाँच्न गाह्रो हुन्छ । जसको हात-खुट्टा, गुदद्वार, तथा पेटमा शोथ छ साथै शरीरको वर्ण (रङ्ग), बल, आहार आदि बिग्रदै गएको छ त्यसलाई असाध्य सम्झे हुन्छ ।

जुन सूजन तलको अङ्गमा सुरु भएर माथितर्फ बढ्दै जान्छ त्यो असाध्य हुन्छ ।

अन्य रोगको उपद्रवको रूपमा उत्पन्न नभएको शोथ खुट्टाबाट सुरु भएर पछि मुख आदि माथिको अङ्गसम्म बढ्दै गएमा त्यसलाई उल्टो शोथ भनिन्छ । पुरुषलाई यस्तो शोथ भएमा जीवन संकटमा छ भनी बुझ्नुपर्छ ।

जुन सूजन (शोथ) पहिले अनुहारमा उत्पन्न भएर पछि खुट्टासम्म पुग्छ त्यो सुज महिलाहरूका लागि घातक हुन्छ ।

जुन शोथ (सुज) पहिला गुदद्वारमा उत्पन्न भएर त्यहाँबाट सबतिर फैलिन्छ, त्यो स्त्री-पुरुष दुवैका लागि घातक हुन्छ ।

शूल – जुन रोगीलाई पेट फुल्ने, शूल हुने, श्वास बढ्ने, बढी प्यास लाग्ने, टाउको दुख्ने र मूर्च्छा यी सब उपद्रवहरू हुन्छन् त्यो शूलरोगी बाँच्दैन ।

जुन शूल रोगीको मांस, बल र अग्नि क्षीण भइसकेका छन्, त्यसको रोग असाध्य हुन्छ ।

पाण्डु रोग – जुन रोगीका दाँत, नङ र आँखा तीनैवटा पहेंला भइसकेका छन् र जसले सबै कुरा पहेंलो देख्छ त्यो पाण्डुरोगी बाँच्दैन ।

जुन पाण्डुरोगीको सारा शरीरमा शोथ भइसकेको छ, जसले सबै कुरा पहेंलो देख्छ, जसको पिसाब पनि पहेंलो नै हुन्छ त्यो पनि बाँच्दैन ।

जुन पाण्डु रोगीको हात-गोडा र टाउकोमा सुज छ तर बीचको भाग पातलो छ अथवा जुन रोगीको शरीरको बीचको भागमा सुज छ र बाँकी भाग सुकेर गएको छ तथा लिङ्ग र गुदद्वारमा सुज छ भने त्यो रोगी बाँच्दैन ।

कामला – जसको मल कालो र मूत्र पहेंलो छ, शरीरमा सुज छ, आँखा, अनुहार वमन हुँदा रातो देखिन्छ, साथै मोह पनि छ त्यस्तो कामलाको रोगी बाँच्दैन ।

जुन कामला रोगीलाई दाह, अरुचि, प्यास, पेट फुल्ने, तन्द्रा, मोह र मन्दाग्नि छ तथा अरूको कुनै कुरा तत्काल बिर्सेर जान्छ त्यस्तो कामला रोगी बाँच्दैन ।

राजयक्ष्मा – जसका आँखा सेता छन्, जसलाई अन्नको नाम लिंदा पनि घृणा जाग्छ, दमले हर्दम चाप्ने गर्छ, अत्यन्त पीडाका साथ बारम्बार पिसाब आउँछ त्यस्तो क्षयरोगीको मृत्यु निश्चित हुन्छ । जो रोगी राम्ररी खाए पनि दिन-परदिन दुब्लाउँदै जान्छ, त्यो असाध्य हुन्छ । जसलाई अतिसार (पखाला) लागिरहन्छ त्यो पनि असाध्य हुन्छ ।

जुन राजयक्ष्माको रोगीको पेट र अण्डकोष सुन्निएका छन् त्यसलाई आराम हुने निश्चित हुँदैन ।

श्वास रोग – जुन श्वास रोगीको मुखबाट आउने सास शीतल र नाकबाट निस्कने सास तातो हुन्छ, नाडी छिटोछिटो चल्छ, हिंड्ने शक्ति हुँदैन त्यस्तो श्वासरोगी धेरै समय बाँच्दैन ।

जुन श्वास रोगीका अङ्गहरू काम्छन्, जो हिंड्न सक्दैन, जसको अनुहार केशरको जस्तो पहेंलो देखिन्छ र दिसा गर्दा वायु निस्कन्छ, त्यस्तो श्वास रोगी पनि बाँच्दैन ।

उदर रोग – जुन उदर रोगको रोगीको कोखामा अति पीडा हुन्छ, अन्न खाने इच्छा हुँदैन, सुज तथा पखालाबाट हैरानी हुन्छ, कुनै प्रकारले पेटको पानी निकाले पनि फेरि पेट बढेर जान्छ भने त्यो रोगी असाध्य हुन्छ ।

जुन उदर रोगीको आँखामा सुज हुन्छ, लिङ्ग बाङ्गिएर जान्छ, पेटको छाला पातलिएको हुन्छ, शरीरको बल, अग्नि (पाचन शक्ति) रगत र मासु निकै घटिसकेका हुन्छन् त्यो पनि असाध्य हुन्छ ।

गुल्म रोग – जुन गुल्म रोगीको श्वास लिंदा पीडा हुन्छ, कोखा, हृदय, तल्लो पेट मध्ये कुनै एकमा शूल चल्छ, प्यासले सताउँछ, अन्न कत्ति रुच्दैन, शरीर अत्यन्त कमजोर हुँदैजान्छ, साथै गुल्मको उल्लो अकस्मात् हराएर जान्छ, त्यो रोगी बाँच्दैन । रोगीलाई वमन चल्ने, पखाला पनि लाग्ने भएमा, छाती, नाभि र हात-खुट्टामा सुज हुने, साथै ज्वर र दम पनि हुने भएमा मृत्यु निश्चित हुन्छ ।

रक्तपित्त – जसको जिब्रो, दुवै ओठ, आँखाहरू राता भएर गएका छन्, अथवा तिनीहरूबाट रगतको स्राव हुन्छ, मूत्रमा पनि रगतको स्राव हुन्छ, त्यस्तो रक्तपित्तको रोगी असाध्य हुन्छ ।

जुन रक्तपित्तमा नाक, कान, मुख आदि अङ्गभन्दा बढी लिङ्ग, गुदद्वार आदि अङ्गहरूबाट रक्तस्राव भइरहन्छ, त्यो अधोमार्गी रक्तपित्त असाध्य हुन्छ ।

जुन रोगीले रगतको वमन गर्छ, जसका आँखा राता हुन्छन् र जसले सबै वस्तुहरू राता देख्छ त्यो रोगी धेरै बाँच्दैन ।

जुन रक्तपित्तमा मासु पखालेको पानी अथवा बासी पानी जस्तो र कालो वा निलो रङ्गको वमन हुन्छ र मुर्दाको जस्तो दुर्गन्ध आउँछ, साथमा श्वासको उपद्रव पनि हुन्छ अथवा जसको रक्तपित्तमा हुने स्रावको रङ्ग इन्द्रधनुषको समान हुन्छ त्यो असाध्य हुन्छ ।

अल्काई वा हर्षा – जुन अल्काईका रोगीको अनुहारमा सूजन हुन्छ, भ्रम र अरुचिका साथै पेटको शूल पनि हुन्छ, त्यो रोगी बाँच्दैन । जुन अल्काईको रोगीलाई बढी प्यास लाग्छ, अन्नको इच्छा हुँदैन, शूल चल्छ, रक्तस्राव बढी मात्रामा हुन्छ, पखाला पनि चल्छ तथा जसको हात, खुट्टा, गुदद्वार, नाभि, अनुहार र अण्डकोषमा शोथ तथा गुदद्वारमा दुख्ने हुन्छ त्यो असाध्य हुन्छ ।

जुन बबासीर (अल्काई) रोगीको गुदद्वारमा पहेंला खटिराहरू उत्पन्न भएका छन्, मनमा मोह, वमन, हृदय र कोखामा दुखाइ पनि हुन्छ त्यो असाध्य हुन्छ ।

विद्रधि (पिलो) – जुन विद्रधि रोगीको पेट फुलेको छ, पिसाब रोकिएर आउँछ, वमन भइरहन्छ, हिक्का चल्छ, प्यास बढी लाग्छ, कोख आदिमा शूल हुन्छ त्यो असाध्य हुन्छ ।

भगन्दर – जुन भगन्दर रोगीको घाउबाट मूत्र, विष्ठा, वीर्य निस्कन्छ अथवा कीरा निस्कन्छ त्यो असाध्य हुन्छ ।

पत्थरी – जुन रोगीको नाभि र अण्डकोषमा सूज हुन्छ, पिसाब रोकिएर हुन्छ, शूल चल्छ त्यस्तो पत्थरीको रोगी असाध्य हुन्छ ।

मूढगर्भ – जुन महिलाको बच्चा जन्मने बेलामा गर्भाशयमैं अड्केर बस्छ, बाहिर निस्कदैन र शूलका साथ खोकी, श्वास आदि उपद्रव हुन्छ त्यो महिला बाँच्न गाह्रो हुन्छ ।

जुन गर्भिणीको टाउको तलतिर लत्रेर आउँछ, देह शीतल हुन्छ, होस हराएको हुन्छ, जसको कोखामा हरियो निलो नसा देखिन्छ, यस्तो अवस्थामा गर्भको बच्चा र महिला दुवैको जीवन रहँदैन ।

अपस्मार (छारे रोग) – सुश्रुतको वर्णन अनुसार जसलाई बारम्बार अपस्मारको वेग आइरहन्छ, जो कमजोर छ, जसका आँखिभौंहरू चलायमान छन् र आँखा पनि वेगले चल्छन् जसको अन्नदेखि घृणा, शरीरमा सूज र अतिसार पनि हुन्छ, त्यो रोगी बाँच्दैन ।

कुष्ठ रोग – जुन रोगीको शरीरको छाला फुटेर गएको छ, अङ्गहरूबाट स्राव भइरहन्छ, नेत्र राता देखिन्छन्, स्वरभङ्ग (घाँटी बस्ने) हुन्छ, वमन विरेचन गर्दा लाभ देखिँदैन, कुष्ठ अस्थिगत भएको छ त्यो असाध्य हुन्छ ।

उन्माद रोग – जुन उन्मादको रोगीले सधैं टाउको निहुराएर राख्छ अथवा सदा उठाएर राख्छ, जसको मांसबल क्षीण छ, रातदिन जागरणको स्थिति हुन्छ, कुनै कुराको होस रहँदैन भने यस्तो पागल बाँच्दैन ।

जुन उन्माद रोगीको आँखा भयानक भएर आउँछन् र बढी झिम्किने भइरहन्छन्, मुखबाट फिंज आउँछ , निद्रा बढी लाग्छ, सधैं शिथिल रहन्छ र काम्ने गर्छ त्यो असाध्य हुन्छ ।

जुन रोगी हात्ती, पर्वत, रुख, देवमन्दिर आदिबाट खसेर उन्मादग्रस्त भएको छ त्यो पनि असाध्य हुन्छ । १३ वर्षको उमेरपछि लागेको उन्माद पनि असाध्य हुन्छ ।

विसूचिका – जुन रोगीका दाँत, नङ् र ओठ काला देखिन्छन्, होस कम भएको हुन्छ, वमन गर्दा गर्दा आत्तिएको हुन्छ, आँखा भित्र गडेका हुन्छन्, स्वर मन्द (सानो) हुन्छ, हातगोडाका जोर्नीहरू शिथिल भएर जान्छन् त्यस्तो हैजाको रोगी बाँच्दैन ।

हिक्का – जसको शरीर हिक्काको वेग (बाडुकी) आउँदा तन्केर जान्छ, दृष्टि कमजोर हुन्छ, मोह हुने, शरीर दुर्बल भएर जाने हुन्छ, भोजनमा मन लाग्दैन र छयाँ बढी आइरहन्छ यस्तो रोगी असाध्य हुन्छ ।

यमला हिक्का लागेको रोगी प्रलाप (बकबाद) गर्ने, शरीरमा पीडा, मोह र श्वासले पीडित भएमा असाध्य हुन्छ ।

छर्दि – शरीर क्षीण भएको रोगीलाई बारम्बार वमन भइरहने, खोकी, श्वास, ज्वर, हिक्का, प्यास र बेहोसीका साथ हृदय रोग, आँखा अगाडि अँध्यारो देखिने आदि उपद्रव पनि छन्, वमनमा रगत पनि मिसिएको छ अथवा वमनको रङ्ग मयूरको प्वाँखको चन्द्र (टल्किने पहेंलो भाग) समान छ भने यस्तो वमनको रोग असाध्य हुन्छ ।

मदात्यय – जुन मदात्यय रोगीको तल्लो ओठ माथिको ओठभन्दा लामो भएर जान्छ, शरीरको बाहिरी भागमा बेसरी जाडो लाग्छ, भित्रबाट अत्यन्त दाह हुन्छ, अनुहार तेलले पोतेको जस्तो हुन्छ । जिभ्रो, ओठ, दाँत कालो वा निलो भएको हुन्छ, आँखा पहेंला वा रगत जस्तै राता हुन्छन् यस किसिमको मदात्ययको (अधिक मदिरापानबाट हुने) रोग असाध्य हुन्छ ।

दाह – हृदय, शिर वा तल्लो पेटमा चोट लागेर उत्पन्न दाह रोग असाध्य हुन्छ । जुन रोगीलाई दाहको अनुभव भइरहेको छ त्यसको शरीर शीतल प्रतीत भएमा त्यस्तो रोगीलाई आराम हुँदैन ।

वातरक्त – घुँडासम्म पुगीसकेको वातरक्त असाध्य हुन्छ । जुन वातरक्त रोगीको छाला फुटेर गएको छ, त्यहाँबाट स्राव पनि हुन्छ । साथै मांसक्षय, निद्रानाश, अरुचि, श्वास, ज्वर, मोह, लङ्गडोपना, सियोले घोचेजस्तो दुख्ने, भ्रम, औंलाहरू बांगिने, खटिरा आउने, मर्मस्थानहरूमा दुख्ने, गाँठो बन्ने यी उपद्रव पनि हुन्छन्, त्यो रोगी असाध्य हुन्छ । वातरक्त रोगका साथ यी मध्ये यौटै उपद्रव मात्र भए पनि असाध्य सम्झनुपर्छ ।

उरुस्तम्भ – गोडाहरू लाटो भएर जानु, उचाल्दा- राख्दा दुख्ने हुनु, तिघ्रा र पिंडौलाहरू बढी दुख्नु, दिनरात निरन्तर दुख्ने भइरहनु कुनै पनि स्पर्शको अनुभव नहुनु यी उरुस्तम्भका लक्षणहरू हुन् । जुन उरुस्तम्भ रोगीलाई दाह, शूल, चिथोरेको जस्तो पीडा र कम्प हुन्छ त्यो जीवित रहँदैन ।

उदावर्त – जुन उदावर्त रोगमा प्यास र शूल बढी हुन्छ, रोगी क्षीण हुन्छ, मलको जस्तो दुर्गन्धित वमन हुन्छ त्यस्तो उदावर्त रोग असाध्य हुन्छ ।

श्लीपद (हात्तीपाइले) – यो रोग कफकारक आहारविहारबाट उत्पन्न भएमा, अथवा कफ प्रकृति भएको मानिसलाई लागेको खण्डमा र स्रावयुक्त भएमा असाध्य हुन्छ ।

व्रण – जुन व्रण अर्थात् घाउ मर्मस्थानहरूमा उत्पन्न भएको छ, अत्यन्त दुख्ने गर्छ, बाहिरबाट शीतल भए पनि भित्र पोल्ने हुन्छ, जसमा पिप रगत आदिको स्राव भइरहन्छ र धेरै उपचार गर्दा पनि आराम हुँदैन, त्यो असाध्य हुन्छ ।

उपदंश – जुन उपदंशबाट अनेक प्रकारको स्राव हुन्छ, साथमा पीडा हुन्छ, त्यस्तो त्रिदोषज उपदंश रोग असाध्य हुन्छ ।

अरिष्ट लक्षण – रोगीको दायाँबायाँ, अगाडि वा पछाडि, तल वा माथिको कुनै अङ्गमा स्वाभाविक भन्दा फरक विकारको रङ्ग देखियो भने त्यसलाई अरिष्ट अर्थात् मृत्युको चिन्ह सम्झनुपर्छ ।

यदि शरीरको एक भागमा प्रसन्नता अर्को भागमा ग्लानि, एकतिर खस्रोपन र अर्कोतिर चिल्लोपन देखिन्छ भने त्यो अरिष्ट हुन्छ ।

रोगीको ओठ पाकेको जामुन जस्तै निलो भएर गएको छ भने उसको मृत्यु निश्चित सम्झनुपर्छ ।

यदि रोगीले आफ्नो बानीको विपरीत यस्तो वाक्य बोल्छ जस्तो उसको मुखबाट पहिले कसैले सुनेको थिएन भने त्यस्तो रोगीको मृत्यु निश्चित बुझ्नुपर्छ ।

जसको शरीरबाट दिनरात अनेक प्रकारको वृक्ष र फूलहरूको जस्तै सुगन्ध आउने गर्छ त्यसलाई पुष्पित भनिन्छ । यस्तो रोगी एक वर्षभित्र अवश्य मर्छ ।

जसको शरीरबाट कहिले चन्दन, फूलहरूको सुगन्ध र कहिले मलमूत्रको दुर्गन्ध आउँछ उसलाई मृत्युको नजिक पुगेको वा पुग्न लागेको सम्झनुपर्छ ।

जुन मानिसको शरीरबाट पशुपक्षीको जस्तो सुगन्ध वा दुर्गन्ध स्थायी रूपमा आउँछ त्यो मानिस एक वर्ष पनि बाँच्दैन ।

यदि रोगीको आँखा बाहिर आउँछ अथवा भित्र गडेर जान्छ, अथवा बाङ्गो भएर जान्छ वा एउटा ठूलो अर्को सानो भएर जान्छ, अथवा एउटा खुला अर्को बन्द हुन्छ, दिनमा सबै वस्तु सेतो देखिन्छ वा कालो देखिन्छ, आँखाबाट अत्यन्त आँसु आइरहन्छ, आँखा आगो समान रातो, निलो, पहेंलो, हरियो र सेतो यी मध्ये कुनै एकबाट अत्यन्त युक्त हुन्छ भने त्यो रोगी बाँच्दैन ।

यदि रोगीका नङ्हरू मांस तथा रगत नभएर पाकेको जामुन जस्तै सेतो भएर गएका छन् भने रोगीको मृत्यु निश्चित हुन्छ ।

जुन रोगीका औंलाहरू तान्दा पटपट बज्दैनन् त्यो रोगी बाँच्दैन ।

जुन रोगीले आकाशलाई पृथ्वी जस्तै संघट्ट (ठोस) र पृथ्वीलाई आकाशको जस्तै शून्य देख्छ त्यो छिट्टै मर्छ ।

जुन रोगीले जाग्रत अवस्थामा प्रेत, राक्षस र पिशाचहरूलाई देख्छ अथवा अन्य प्रकारका अद्भुत वस्तुहरू देख्छ त्यो बाँच्दैन ।

जुन रोगीले निर्मल सूर्य र चन्द्रमालाई कालो कपडाले बेरिएको देख्छ त्यो बाँच्दैन ।

जुन रोगीले आफ्नो औंलाहरूले दुवै कान बन्द गरिराखेको अवस्थामा प्राणघोष सुन्दैन, त्यो बाँच्दैन ।

यदि ज्वर अथवा अरू कुनै रोगका सारा अथवा धेरैजसो पूर्वरूपहरू देखिन्छन् भने रोगी बाँच्दैन ।

जो रोगी स्वप्नमा कुकुर, गधा वा ऊँटमा चढेर दक्षिण दिशातिर जान्छ त्यो राजयक्ष्मा रोगका कारण मर्छ ।

जो रोगी स्वप्नमा मरिसकेका मानिसहरूसँग बसेर मदिरापान गर्छ अथवा जसलाई कुकुरले घिसारेको देखिन्छ त्यसको मृत्यु घोर ज्वरबाट हुन्छ ।

जुन मानिसले स्वप्नमा रातो कपडा वा रातो फूलको माला लगाउँछ अथवा जसलाई रातो शरीर भएकी महिलाले हाँस्दै घिसारेको देखिन्छ त्यसको रक्तपित्त रोगका कारण मृत्यु हुन्छ ।

जसले स्वप्नमा मुटुमा काँडासहित लहरो उत्पन्न भएको देख्छ त्यसको मृत्यु गुल्मरोगबाट हुन्छ ।

जसले सपनामा नाङ्गो भएर सारा शरीरमा घिउ दलेर ज्वाला नभएको आगोमा हवन गरेको देख्छ अथवा छातीमा कमल उत्पन्न भएको देख्छ त्यो कुष्ठरोगका कारण मर्छ ।

जुन रोगीले आफ्नो छायालाई चाँदनी, घाम, दीपक, जल, अथवा ऐनामा बिग्रेको, टुटेको, छिन्न-भिन्न भएको टाउको विनाको देख्छ त्यसको मृत्यु हुन्छ ।

जुन रोगीको दुवै आँखामा कामला (पहेंलोपन) छ, मुख भारी छ, दुवै गालामा बढी मासु छ, कञ्चट बसेको छ, हात-खुट्टामा जलन हुन्छ, शरीर तातो छ भने उसको मृत्यु हुन्छ ।

जुन रोगीको अर्धश्वास चल्छ, घाँटी घ्यारघ्यार गर्छ, बल घटेर गएको छ, रङ्ग बिग्रेको छ, आहार कम भएर गएको छ त्यो बाँच्दैन ।

जुन रोगी रोगका कारण दु:खी छ र उसको नाकको बाँसा (दुवै आँखाबीचको भाग) मोटो भएर आएको छ अथवा सुन्निएको देखिन्छ भने त्यो रोगी बाँच्दैन ।

जसको मुख, कान र दुवै ओठ अत्यन्त काला, राता, सेता वा निला भएर जान्छन्, त्यो रोगी बाँच्दैन ।

जुन रोगीले लामो श्वास लिंदालिंदै मन्द गतिमा श्वास लिएर मूर्छित हुन्छ त्यो बाँच्दैन ।

रोगीको आयु बाँकी नरहेको अवस्थामा उसका दुवै हात खुट्टा नसा, तालु सबै अत्यन्त शीतल अथवा कठोर हुनजान्छन् ।

जब रोगीले दुवै तिघ्रालाई आपसमा घर्षण गर्छ, खुट्टालाई उठाएर पछार्छ, टाउको यताउति घुमाउँछ त्यो बाँच्दैन ।

जुन रोगीको हात-खुट्टा आदि अङ्ग कान्तियुक्त छ तर शरीर सुकेर गएको छ,

बल क्षीण भएर गएको छ भने उसलाई प्रबल राजयक्ष्मा भएको छ भन्ने सम्झनु, त्यो बाँच्दैन ।

जुन राजयक्ष्मा रोगीको दुवै कोखा दुख्छन्, हिक्का चल्छ, रक्तस्राव हुन्छ, पेट फुलेको हुन्छ, दुवै कुममा पीडा हुन्छ, त्यो बाँच्दैन ।

जसको कफ, मल र वीर्य पानीमा डुब्छ त्यसको आयु पुगेको सम्झनुपर्छ ।

जसको कफमा अनेक प्रकारका रङ्गहरू देखिन्छन्, कफ पानीमा डुब्छ भने त्यो रोगी नबाँच्ने लक्षण हो । जसको मुखबाट फींजयुक्त रगत बारम्बार आउँछ तथा कोखामा शूल चल्छ भने उ बाँच्दैन ।

यदि वायु दुवै गोलीगाँठोलाई शिथिल पारी, नाकलाई बङ्ग्याई शरीरमा घुम्छ भने त्यो रोगी बाँच्दैन ।

जसका आँखिभौंहरू आफ्नो स्थानबाट झर्छन्, भित्र अति दाह हुन्छ, हिक्का पनि चल्छ त्यो रोगी बाँच्दैन ।

जसको दाँत चुन जस्तै सेतो भएर गएको छ, मुखमा थाकेको जस्तो देखिन्छ, पसिना आइरहन्छ, रौंहरू ठाडा भएका छन् भने त्यो रोगी तत्काल मर्न सक्छ ।

जुन रोगी आफ्ना नातेदारहरू नजिकमा बस्दा पनि देख्दैन, नाम लिएर बोलाउने गर्छ, विस्मित भै माथितिर हेर्दछ, नजिकमा बसेका मानिसलाई देख्ने तर नचिन्ने होस् त्यो रोगी बाँच्दैन ।

यदि रोगीले आफ्नो वरिपरि केही खोजिरहे जस्तो गर्छ र खोज्दा खोज्दै मूर्छित हुन्छ भने त्यसको जीवन अन्त हुनेबेला आयो भनी बुझ्नुपर्छ ।

ॐ आरोग्यम्

द्वितीय खण्ड

रोग, लक्षण र चिकित्सा

१. ज्वर रोग (ज्वरो सम्बन्धी रोगहरू)

परिचय – ज्वर एउटा व्यापक रोग हो। यो सबै रोगहरूभन्दा बलवान् हुन्छ। यसले शरीरको तापमान बढाइदिन्छ, मनमा छटपटी र ग्लानि ल्याउँछ। इन्द्रियहरूलाई आ-आफ्ना विषयहरूको अनुभव गर्न नसक्ने बनाइदिन्छ। यसले बुद्धि, बल, वर्ण, हर्ष र उत्साहलाई कम पार्छ, शरीरलाई थकाइ दिन्छ, बेहोश बनाउँछ, भोजन गर्ने इच्छा पनि मारिदिन्छ।

रोगीको सामान्य लक्षण – पसिना नआउनु, शरीर बढी तात्नु, सबै अङ्गहरू दुख्नु ज्वरको सामान्य लक्षण हो। यस्तै अन्न रुच्न छोड्नु प्यास बढी लाग्नु पनि हो।

ज्वरका भेदहरू – आफ्नो आश्रय, कारण, वेग, दूष्य, आमका साथ सम्बन्ध, ज्वर उत्पन्न हुने समय, साध्य वा असाध्य अवस्थाको आधारमा ज्वरका अनेक किसिमका भेदहरू हुन्छन्।

आश्रयको विचार गर्दा ज्वर शरीर (शरीरमा हुने) र मानस (मनमा हुने) दुई किसिमको हुन्छ। कारणको विचार गर्दा पनि दुई किसिमको हुन्छ – निज र आगन्तुज। निजज्वर सात किसिमको हुन्छ – वातज, पित्तज, कफज, वातपित्तज, वातकफज, पित्तकफज र त्रिदोषज (सन्निपात) ज्वर। आगन्तुज ज्वर चार किसिमको हुन्छ – अभिघातज, अभिचारज, अभिशापज र अभिषङ्गज। अभिषङ्गज पनि ७ किसिमको हुन्छ – विषज, ओषधिगन्धज, कामज, शोकज, भयज, क्रोधज र भूतज।

वेगका आधारमा ज्वर दुई किसिमको हुन्छ– अन्तर्वेग र बहिर्वेग। त्यस्तै सम र विषम ज्वर पनि वेगकै आधारमा हुन्छ। रस, रक्त आदि दूष्य धातुहरूसंगको सम्बन्धका आधारमा ज्वरका ७ भेदहरू हुन्छन्। रसज, रक्तज, मांसज, मेदोज, अस्थिज, मज्जागत, शुक्रगत। आमको सम्बन्धका आधारमा ज्वर साम र निराम दुई किसिमको हुन्छ। ज्वर उत्पन्न हुने समयका आधारमा ज्वर प्राकृत र वैकृत दुई किसिमको हुन्छ। त्यस्तै सुरुका अवस्था र पुरानो भएको हिसाबले नवज्वर र जीर्ण ज्वरको रूपमा भेद हुन्छ। ज्वर आएको ७ दिनसम्म तरुण (नव) ज्वर, १२ दिनसम्म मध्यम र १२ दिनपछि पुरानो ज्वर भन्नुपर्छ।

विषम ज्वर ५ किसिमको हुन्छ, सन्तत, सतत, अन्येद्युष्क, तृतीयक र चतुर्थक ।

निज ज्वर परिचय – वात, पित्त र कफ दोषको प्रकोपबाट उत्पन्न हुने ज्वरलाई निज ज्वर भनिन्छ । यसमा कुपित दोषहरूले आमाशयमा गएर अग्निलाई प्रभावित पार्छन्, रसादि धातुमा गएर त्यसको तापलाई पूरै शरीरमा फैलिने स्थिति ल्याउँछन् र ज्वर उत्पन्न गर्छन् ।

(क) निज ज्वरको सामान्य पूर्वरूप – शरीर थाक्नु, मन बेचैन हुनु, शरीरको वर्ण(रङ्ग) फेरिनु, मुखको स्वाद बिग्रिनु, आँखामा आँसु आउनु, घरी तातो घरी चिसोको चाहना हुनु, कहिले मन-नपर्नु, हाइ आउनु, शरीर भारी हुनु, जीउ सिरिङ्ग हुनु, अरुचि हुनु, अँध्यारो देखिनु, आनन्द नहुनु र शीत (चिसो) को अनुभव हुनु यी सबै किसिमका निज ज्वर लाग्नुभन्दा पहिले देखिने लक्षणहरू हुन् ।

(ख) विशेष पूर्वरूप – वातज ज्वर आउनुभन्दा पहिले हाइ बढी आउँछ । पित्तज ज्वर आउनुभन्दा पहिले आँखा पोल्ने गर्छ । कफज ज्वर आउनुभन्दा पहिले अन्न छोड्छ । सन्निपातज ज्वर आउने भयो भने केही समयपहिले हाइ हाइ आउने, आँखा पोल्ने, भोजनमा अरुचि हुने गर्दछ ।

वात ज्वरको लक्षण – वात ज्वरमा शरीरमा रौंहरू सिंरिङ्ग हुन्छन्, शरीर काम्छ, ओठ र घाँटी सुक्छ । छ्यूँ आउँदैन, मुखको स्वाद नमिठो र अनुहार रुखो हुन्छ ।

नाडीको गति सर्प र जुका जस्तै हुन्छ, नाडी छिटो-छिटो चल्छ तर बाङ्गो टिङ्गो हुन्छ ।

दिसा साह्रो र कम मात्रामा हुन्छ ।

पिसाबमा कालोपना (मैलो) हुन्छ । शरीर सुख्खा र तातो हुन्छ ।

स्वर खरखराउँछ । जिभ्रो साह्रो, फाटेको, सुख्खा गाईको जिभ्रो जस्तो हरियो रङ्गको हुन्छ ।

आँखा सुख्खा, धुमिल रङ्गको र चञ्चल हुन्छ ।

साधारणतया भोजन पचिसकेपछि, सन्ध्याको समय र असार महिनामा वातज ज्वरको उत्पत्ति र वृद्धि हुन्छ । यो ज्वरो सात दिनमा ओर्लन्छ ।

वातज ज्वरको चिकित्सा – वातज ज्वरमा लंघन अर्थात् उपवास मनाही छ । ज्वरको वेग घटेको बेलामा अलिकति हल्का आहार दिन सकिन्छ ।

एकलिटर पानिलाई उमालेर आधा लिटर बाँकी रहेपछि सेलाउन दिने र मनतातो भएपछि खान दिने गर्नुपर्छ । यसले वातज्वरमा हित गर्छ ।

गुर्जो, पिप्लाको जरा, सुठो र इन्द्रजौको काढा बनाएर सातौं दिनमा खान दिनुपर्छ ।

पिप्ला, लशुन, गुर्जो, सुठो, कण्टकारी, चिराइतो, नागरमोथा र सिंधे नुन राखी बनाएको काढा खान दिनुपर्छ ।

त्रिपुर भैरव रस – शुद्ध वत्सनाभ विष १ भाग, सुठो २ भाग, पिप्ला ३ भाग, मरिच ४ भाग, ताम्र भस्म ५ भाग, शुद्ध हिंगुल ६ भाग सबलाई खलमा राखी अदुवाको रसमा घोटेर ६० मिली ग्रामको गोली बनाउने । यो औषधी १ गो. मनतातो पानीसँग खान दिएको खण्डमा सबै किसिमको ज्वरो निको भएर जान्छ ।

कल्पतरु रस – शुद्ध पारो १० ग्राम, शुद्ध गन्धक १० ग्राम, शुद्ध विष १० ग्राम, शुद्ध मनशिला १० ग्राम, स्वर्णमाक्षिक १० ग्राम, टङ्कण १० ग्राम, सुठो २० ग्राम, पिप्ला २० ग्राम, मरिच ८० ग्राम यी सबै लिएर पहिले खलमा पारद र गन्धकको कज्जली बनाउने, त्यसमा अरू द्रव्यहरूको चूर्ण राखी ६ घण्टासम्म मर्दन गर्ने । त्यसपछि १ रत्तीको (१२५ मिलीग्राम) गोली बनाएर राख्ने । यो औषधी १ गोलीको मात्रामा बिहान बेलुका अदुवाको रससँग खान दिने । यसले वातज्वर, कफज्वर श्वास, कास यी रोगहरू निको पार्छ ।

यसको नस लिनाले कफ-वायुको प्रकोपबाट उत्पन्न टाउको दुख्ने रोग चाँडै नै निको हुन्छ ।

पित्त ज्वरको लक्षण – पित्तज ज्वरमा मुख रातो हुन्छ, टाउको रिँगाउँछ, बत्तीको उज्यालो अथवा कुनै किसिमको स्वर नराम्रो लाग्छ ।

- शरीर तातो हुन्छ, बान्ता हुँदा पित्त देखिन्छ ।
- कुनै बेला कब्जियत हुन्छ, कुनै बेलामा पखाला चल्छ ।
- पिसाब कम मात्रामा र रातो रङ्गको हुन्छ । प्रायः पहेंलो हुन्छ ।
- नाडी काग अथवा भ्यागुताको जस्तो उफ्री-उफ्री चल्छ, गति छिटो हुन्छ ।
- पित्तको समय नहुँदा केही मन्द भएर चल्छ, पित्त कुपित हुने समय अर्थात् शरद् ऋतु, भोजन पच्ने बेला, मध्याह्न र आधा रातको समयमा अतितीव्र गतिले चल्छ ।
- स्वर सफा हुन्छ, शरीरको रङ्ग केही पहेंलो देखिन्छ ।
- जिब्रो रातो, जलेको जस्तो, पोल्ने र काँडै काँडाले भरिएको भान हुन्छ ।
- मुखको स्वाद तितो हुन्छ । आँखा पहेंलो वा रातो हुन्छ ।
- यो ज्वरो १० दिनमा पाक्छ ।

पित्तजज्वरको चिकित्सा – पित्तज ज्वरमा रोगीलाई २-३ दिन लंघन गराई हल्का भोजन दिनुपर्छ ।

पानीलाई उमालेर सेलाएपछि रोगीलाई दिनुपर्छ ।

पित्तज्वरनाशक योगहरू – अमलातासको गुदी, कुटकी, हर्रो ३-३ ग्राम, सुगन्धवाला, दाख, नागरमोथा र पित्तपापडा ६-६ ग्राम यी सबैको २.१/२ तोला (२५ ग्राम) लिएर काढा बनाउने र बिहान-बेलुका चिनी मिसाई पिउने गर्नाले दाहसहित पित्तज्वर निको हुन्छ । यो काढाले दिसा लगाउँछ ।

गुर्जो, अमला, पित्तपापडा, समभाग लिएर काँडा बनाई खानाले दाह, मुख सुक्ने र रिँगटा लाग्ने लक्षण भएको पित्त ज्वर जान्छ ।

- पित्तपापडाको काढामा पिप्लाको चूर्ण मिसाई खानाले पित्त ज्वर शान्त हुन्छ ।
- पित्तपापडा, रातो चन्दन, खस, सुठो यी सबैको काढाले पित्त ज्वर शान्त हुन्छ । यो उत्तम योग हो ।
- रातमा धनियाँ (गेडा) भिजाई बिहान त्यसको काढा बनाई मिश्री मिसाएर खानाले दाहसहित पित्त ज्वर शान्त हुन्छ ।
- अमला र गुर्जो दुवैलाई राती नयाँ माटाको भाँडामा ६ गुणा पानीमा भिज्न दिने । बिहान त्यसलाई मिचेर छान्ने र मिश्री मिसाइ खान दिने । यसले प्यास, दाहसहित पित्तज्वर निको हुन्छ ।
- हर्रोलाई पिनेर चूर्ण बनाई ३ ग्राम मात्रालाई मह मिसाएर चटाउनाले दाह, खोकी, ज्वरो, दमसहित वमन निको हुन्छ ।
- हरेक किसिमको ज्वरोमा दाह अवश्य हुन्छ । दाह असह्य भएमा सय पटक पखालिएको घिउ शरीरमा दल्नुपर्छ, दाह हराउँछ, यो परीक्षित उपाय हो ।
- पित्त ज्वर भएको बिरामीलाई उत्तानो पारी सुताएर उसको नाभिमा तामाको गहिरो खाले भाँडा राख्नु । त्यस भाँडामा चिसो पानीको धारा यसरी राख्नु कि पानी त्यस भाँडोमा नै परोस् । यसले तत्काल दाह शान्त हुन्छ ।

एक लिटर पानीलाई उमाली तीन भाग बाँकी रहेपछि सेलाउन दिने । त्यो पानी रोगीलाई खान दिएमा हित गर्छ ।

उखु चुस्नाले र शर्करोदक पिउनाले बाँकी रहेको पित्त शान्त हुन्छ ।

कफ ज्वरोको लक्षण – पसिना आउने, कानले अस्पष्ट सुनिने, आँखा सेता देखिने हुन्छ ।

- नाडी हाँस, हात्ती अथवा गजगामिनी स्त्री जस्तै बिस्तारै झुम्दै चल्छ । कफको समय अर्थात् वसन्त ऋतु, प्रातः काल, सन्ध्यापछिको रातको पहिलो पहरमा, भोजन गर्न थालेको बेलामा नाडी यही रीतले चल्छ । नाडीलाई छुँदा पानीले भिजाएको चिसो धागो जस्तै बिस्तारै र शीतल

लाग्छ । यस्तै अजीर्णमा पनि वेगले चल्दैन ।

- कफ ज्वरमा दिसा सेतो र बढी मात्रामा हुन्छ ।
- पिसाब बढी, अलि सेतो, गाढा र चिल्लो पनि हुन्छ ।
- स्वर भारी हुन्छ ।
- शरीर कम तातो, पानीले भिजे जस्तो र सेतो हुन्छ ।
- जिभ्रो मोटो, भारी हुन्छ ।
- मुखको स्वाद गुलियो हुन्छ । अनुहार भारी र सुन्निएको जस्तो हुन्छ ।
- आँखाको रङ्ग सेतो हुन्छ र आँसु आइरहन्छ ।
- यो ज्वर १२ दिनमा पाक्छ ।

कफ ज्वरको चिकित्सा – यसमा ज्वरको पाक नभएसम्म लंघन गराउनुपर्छ । त्यसबेलामा तातो पानी खान दिनुपर्छ । पाचनका लागि बिमिरोको (बीजपूर) जरा, सुठो, गुर्जो र पिप्पलीमूलको काढा (१५ मि.लि.) मा यवक्षार २ रत्ती (२५० मि.ग्रा.) मिसाई खान दिनुपर्छ ।

कफज्वरनाशक योगहरू – नीमको बोक्रा, सुठो, गुर्जो, कुरिलो, कचूर, चिराइतो, पुष्करमूल, बृहतीमूल (बिंहीजरा) यी प्रत्येक ३-३ ग्राम लिएर जम्मा २४ ग्राम औषधी ४०० मि.लि.पानीमा पकाई ५० मि.लि. बाँकी रहेपछि खान दिने । यसले कफज्वरको शमन गर्छ । औषधी खाने बेलामा ४ ग्राम जति मह मिसाइदिएमा अझ राम्रो काम गर्छ ।

- नीमको बोक्रा, सुठो, गुर्जो, कण्टकारी, पुष्करमूल, कुटकी, कचूर, असुरो, काफल, पिप्ला र कुरिलोको काढा त परीक्षित नै हो ।
- काफल, पिप्ला, काकडासिंगी, पुष्करमूल समभाग लिएर कुठेपछि छान र २-२ ग्रामको मात्रा बनाऊ । यो योग ४-४ घण्टामा १-१ ग्रामको मात्रा मह मिसाएर ख्वाऊ । यसले ज्वर, श्वाससहित कफविकारको शमन हुन्छ । कफज्वरमा खुट्टाहरू बलै नभएजस्तो गलेको र कानले नसुन्ने जस्तो भयो भने २० मि.लि. सिमालीको पातको काढामा ३ ग्राम पिप्लाको चूर्ण मिसाई खान देऊ । यसले फाइदा दिन्छ । परीक्षित योग हो ।
- महमा पिप्लाको चूर्ण मिसाई खाएमा श्वास, खोकी, ज्वर फियोको रोग, हिक्काको शमन हुन्छ । परीक्षित हो । विशेष गरी बालकहरूका लागि उपयोगी हुन्छ ।
- पिप्ला, हर्रो, बर्रो, अमला समभाग लिएर चूर्ण बनाऊ, यसलाई महमा मिसाई खानाले श्वास, खोकी सहित कफज्वर निश्चय नै ठीक हुन्छ ।

- अथवा-ज्वानु, पिप्ला, असुरो, भाँगको डाँठ ६-६ ग्राम लिइ काढा बनाई खानाले श्वास, खोकी, कफ ज्वर ठीक हुन्छ ।
- असुरो, कटेरी (कण्टकारी), गुर्जो आठ-आठ ग्राम लिएर काढा बनाई ख्वाउनाले ज्वरो र खोकी ठीक हुन्छ ।

दशमूल र असुरोको काढामा मह मिसाई खाएमा कफज्वर नाश गर्छ ।

कुटकी, नीम, उत्तीस, त्रिकटु, इन्द्रजौको काढा खाएमा खोकी सहित घोर कफज्वर शान्त हुन्छ ।

सिंधे नुन, सुठो, कालो मरिच, पिप्लामूल, रायोलाई अदुवाको रसमा पिनेर अथवा जिरा, सख्खर र अनारको रसमा मह मिसाई मुखमा राख्नाले कफज्वरमा हितकारी हुन्छ, रुचि बढाउँछ ।

पथ्यापथ्य – कफ ज्वरमा पानी १ लिटरलाई पकाई १ चौथाई अर्थात् २५० मि.लि. भएपछि खान दिनुपर्छ । चिसो पानी खान दिनुहुँदैन । पुरानो चामलको भात मूँगीको दालसँग खान दिनुपर्छ ।

वातपित्तज्वरको लक्षण – बेहोश हुनु, भ्रम, दाह, निद्रा नलाग्नु, टाउको दुख्नु, घाँटी र मुख सुक्नु, वमन हुनु, रौंहरू ठाढा हुनु अरुचि हुनु, आँखा अगाडि अँध्यारो हुनु, जोर्नीहरू दुख्नु र हाइ आउनु यी वातपित्त ज्वरका लक्षण हुन् । यसमा नाडी चञ्चल, तरल स्थूल र कठोर हुन्छ । नाडी बारम्बार सर्पको जस्तो टेढोमेढो र भ्यागुताको जस्तो उफ्रीउफ्री चल्छ । यसमा दिसा कडा हुन्छ, कहिले पहेंलो अथवा कालो पनि हुन्छ ।

उपयोगी औषधीहरू – वातपित्त ज्वरमा पाँचौं दिनमा औषधी दिनुपर्छ । चिराइतो, अमला, दाख, कचुर, कालो मरिच, सुठो र गुर्जो यी सबैको काढामा चाकु मिसाई खानाले वातपित्त ज्वर नष्ट हुन्छ ।

गुर्जो, पित्तपापडा, नागरमोथा, चिराइतो, सुठोको काढा वात-पित्त ज्वरका लागि परीक्षित औषधी हो ।

हर्रो, बर्रो, सिमलको बोक्रा, रास्ना, अमलतासको गुदी, असुरोको काढाले पनि वातपित्त ज्वरलाई नाश गर्छ । यो बनाउन प्रत्येक औषधी ३-३ ग्राम लिएर ४०० मि.लि. जति पानीमा पकाई २५ मि.लि. पानी बाँकी भएपछि छानेर राख्नुपर्छ ।

पथ्यापथ्य – यस ज्वरमा मुगी, तितेकरेला आदि वातकफनाशक पदार्थ दिनुहुँदैन । मुगी र अमलाको झोल अथवा अनार र अमलाको रस दिनुपर्छ । दाह बढी भएमा चनाको झोल (यूष) दिनुपर्छ ।

वातकफज्वरको लक्षण – यसमा जाडो लाग्ने, जोर्नीहरू दुख्ने, रुघा-खोकी लाग्ने, निद्रा बढी लाग्ने, पसिना धेरै आउने हुन्छ । शरीरको ताप मध्यम

हुन्छ । यदि कफको अंश कम र वायुको अंश बढी भयो भने नाडी तीव्र गतिले बराबरसँग चल्छ । यो नाडी कुनैबेला सर्पको चालले र कहिले हाँस वा हात्तीको चालले चल्छ । यस ज्वरको पाक सात दिनमा हुन्छ ।

उपयोगी औषधीहरू – राजवृक्षको फलको गुदी, कुटकी, ठूलो हर्रो, पिप्लाको जरो, नागरमोथा यी सबै ६-६ ग्राम लिएर काढा बनाई पिउनाले वातकफज्वर, आमशूल तत्काल नष्ट हुन्छ । यसबाट दिसा सफा हुन्छ ।

कण्टकारी, सुठो, गुर्जो, अडेरको जरा प्रत्येक ६-६ ग्राम लिएर काढा बनाई खान दिएमा वातकफज्वर नष्ट हुन्छ ।

पिप्ला, पिप्लाको जरा, चावो, चितु र सुठो यी पाँचलाई 'पञ्चकोल' भनिन्छ । यी प्रत्येक द्रव्य ६-६ ग्राम राखी ५०० मि.लि. पानीमा पकाई ५० मि.लि. जति बाँकी भएपछि छानेर खान दिएमा वातकफ ज्वर शान्त हुन्छ । यसले फियोको रोग, गानुगोला, अजीर्ण र शूलमा पनि हित गर्छ ।

कण्टकारी, गुर्जो, सुठो, पुष्करमूल र चिराइतोको काढाले वातकफज्वरका साथै अरू ज्वरलाई पनि ठीक पार्छ ।

- खाली पिप्लाको काढाले पनि वातकफज्वर निको पार्न सकिन्छ ।
- चिराइतो, नागरमोथा, गुर्जो, सुठोको काढा पनि वातकफज्वरमा उपयोगी हुन्छ ।

नीमको बोक्रा, गुर्जो, सुठो, देवदारु, काफल, कुटकी, बोझो यी सबै राखी बनाएको काढाले वातकफज्वरको शमन गर्छ र जोर्नीहरू दुख्ने, टाउको दुख्ने र खोकी लाग्ने, अरुचि हुने अवस्थामा पनि हित गर्छ ।

पित्तकफज्वरको लक्षण – यसमा निद्रा बढी लाग्छ, मुख तितो र कफले लेसिएको हुन्छ, घाँटी सुक्छ, प्यास बढी लाग्छ, खोकी लाग्छ, खानेकुरामा रुचि हुँदैन, शरीर कुनै बेला तातो र कुनै बेला चिसो भइरहन्छ, पसिना आइरहन्छ, रोगी मूर्च्छा पर्न सक्छ । पित्तकफज्वरमा नाडी सूक्ष्म, शीतल भई मन्द वेगले चल्छ । कफ र पित्तको प्रकोप हुनाले दिसा पहेंलो, कालो अथवा हल्का निलो र चिल्लो हुन्छ । यो ज्वर १० दिनमा पाक्छ ।

पित्तकफज्वरमा उपयोगी औषधीहरू

गुर्जो, नीमको बोक्रा, कुटकी, नागरमोथा, इन्द्रजौ, सुठो, पर्वरको पात, रातो चन्दन यी सबैको काढा बनाई पिप्लाको काढा मिसाई पिउनाले पित्तकफज्वर नाश गर्छ, परीक्षा गरिसकेको छ ।

सुठो, खस, बेलगिरी, नागरमोथा, धनियाँ, मोचरस, सुगन्धवालको काढा पनि पित्तकफज्वरका लागि परीक्षित हो। यो मलरोधक पनि छ। अतः जुन रोगीलाई पखाला लागेको छ उसलाई यो खान दिनुपर्छ।

कुटकी ६ ग्राम र सख्खर ६ ग्राम दुवैलाई पानी राखी मसिनो गरी पिनेर लेदो पार र तातो पानीसँग खान देऊ, यसले पनि पित्तकफज्वर ठीक हुन्छ।

असुरोको पात र फूलको रस २ तोला (२५ ग्राम), मिश्री ३ ग्राम र मह ३ ग्राम मिसाएर खान दिनू, यसबाट अम्लपित्त र कामलासहित पित्तकफज्वर ठीक हुन्छ। चिनी वा मिश्री नमिसाई प्रयोग गर्दा श्वास र खोकी निको हुन्छ, परीक्षित छ।

पटोलपत्र र अदुवाको काढाले पनि पित्तकफज्वरमा आराम दिन्छ। कण्टकारी, गुर्जो, सुठो, पुष्करमूल र चिराइतो यी सबैको काढाले आठै प्रकारको ज्वर नष्ट गर्छ, परीक्षित भैसकेको छ।

इन्द्रजौ, पित्तपापडा, धनियाँ, पटोलपत्र, नीमको बोक्राको काढामा मिश्री र मह मिसाएर पिउनाले पित्तकफज्वर निको भएर जान्छ।

पथ्यापथ्य – यसमा पानी पकाएर चिसो पारी दिनुपर्छ। पटोलपत्र र धनियाँ राखी पकाएको पानीमा सिद्ध गरेको अन्न (जाउलो) रोगीलाई दिनुपर्छ। यो पित्तकफज्वरनाशक हुन्छ।

सन्निपातज्वरको लक्षण – त्रिदोषकारक आहार-विहारका कारण कुपित वात, पित्त, कफहरू आमाशयमा पुग्छन् रस धातुलाई दूषित पारी भित्रको अग्निलाई बाहिर निकाल्छन्, अनि ज्वर आउँछ।

सन्निपात ज्वरमा छिनमा गर्मी लाग्ने, छिनमा जाडो लाग्ने हुन्छ। जोर्नी, हाडहरू र टाउको दुख्ने हुन्छ। आँखा मलिन वा राता र भित्र गडेका वा बाङ्गा देखिन्छन् तथा आँसुले भरिएका हुन्छन्।

- कान कराउने, दुख्ने भइरहन्छ।
- घाँटीमा कुनै कुरा अड्केजस्तो वा झुसले घोचेजस्तो भइरहन्छ।
- तन्द्रा (उँघ्ने), मूर्च्छा पर्ने वा बकबक बर्बराउने हुन्छ।
- जिभ्रो आगोले पोलेको जस्तो देखिन्छ र खस्रो हुन्छ।
- शरीरका सबै अङ्गहरू गल्छन् र बढी थकाइ लाग्छ।
- थुक्दा कफका साथ रगत वा पित्त मिसिएको आउँछ।
- घरी-घरी टाउको दायाँ-बायाँ घुमिरहन्छ।
- प्यास बढी लाग्छ, राम्रो निद्रा लाग्दैन। कहिले निद्रा लाग्ने, कहिले नलाग्ने हुन्छ।

- मुटु वरिपरि दुख्न थाल्छ ।
- पसिना, मल, मूत्र कम-कम मात्रामा ढिलो गरी निस्कन्छन् ।
- यसमा शरीर धेरै दुब्लाउँदैन, घाँटी घ्यार-घ्यार भइरहन्छ
- शरीरमा काला अथवा राता डाबर वा फोकाहरू देखिन्छन् ।
- रोगी कम बोल्ने अथवा मसिनो स्वरमा बोल्ने हुन्छ, कि बोल्दै बोल्दैन ।

सन्निपात ज्वरलाई कसैले १३ प्रकारको, कसैले ३ प्रकारको र कसैले ५२ प्रकारको भनेका छन् । मुख्य सन्निपातका १३ भेद नै हुन् ।

१. सन्धिक (अवधि ७ दिन)
२. तन्द्रिक (अवधि १० दिन)
३. रुग्दाह (अवधि २० दिन)
४. चित्तभ्रम (अवधि २४ दिन)
५. शीताङ्ग (अवधि १५ दिन)
६. कण्ठकुब्ज (अवधि १३ दिन)
७. भुग्ननेत्र (अवधि ८ दिन)
८. रक्तष्ठीवी (अवधि १० दिन)
९. प्रलापक (अवधि १४ दिन)
१०. जिह्वक (अवधि १६ दिन)
११. अभिन्यास (अवधि १६ दिन)
१२. कर्णग्रह(कर्णिक) (अवधि ९० दिन)
१३. अन्तक (अवधि २५ दिन)

उक्त सन्निपातका भेदहरूमा सन्धिक, तन्द्रिक, कर्णिक, कण्ठकुब्ज, चितभ्रम र जिह्वक यी उचित उपचार गर्दा साध्य हुन्छन्, बाँकी ७ सन्निपातहरू असाध्य र मारक हुन्छन् ।

सन्निपात ज्वरको आरम्भदेखि अन्तसम्म दुई किसिमको पाक हुन्छ - मलपाक र धातुपाक । मलपाक भएको छ भने वातप्रधान ज्वर सातौं दिनमा, पित्तप्रधान ज्वर १० औं दिन र कफप्रधान ज्वर बाह्रौं दिन घोरतम भएपछि शान्त भएर जान्छ ।

धातुपाक भएको खण्डमा पित्तको वृद्धि हुँदा १० दिन, कफको वृद्धि हुँदा १२ दिन र वायुको वृद्धिबाट ७ दिनमैं धातुपाक हुन्छ र रोगीको मृत्यु हुन्छ । निद्रा नलाग्नु, छाती दुख्नु, दिसा नहुनु, शरीर भारी हुनु, अरुचि हुनु, छटपटी र आलस्य हुनु यी सबै धातुपाकका लक्षणहरू हुन् ।

नाभिको माथि र मुटुको तल छुँदा अथवा थिच्दा दुख्छ भने धातुपाक भयो भनेर जान्नुपर्छ । ती दुवै ठाउँमा दुखेन भने मलपाक भएको बुझ्नुपर्छ । यदि

दोषहरूको स्वभावमा परिवर्तन आएको छ । अर्थात् वात आदि दोषहरूका कारण हुने दाह, तन्द्रा, तिर्खा आदिको चाप घटेर गएको छ, ज्वर कम हुँदै छ, शरीर हल्का छ, इन्द्रियहरूमा निर्मलता छ भने मलपाक सम्झनुपर्छ ।

सन्निपात ज्वरको चिकित्सा – सन्निपात ज्वरमा पहिलो वात-कफलाई कम पार्ने क्रिया गर्नुपर्छ । कफको क्षय भएपछि वायु र पित्त सजिलै शान्त भएर जान्छन् । यसो हुनाले वैद्यले पहिले कफलाई घटाउने वा सुकाउने उपाय गर्नुपर्छ, पित्तलाई शान्त गर्नुहुँदैन । किनकि कफ र वायुको अधिकता भएको रोगीलाई ज्वरले मार्न सक्छ । त्यसैले जब कफ कम भएर जान्छ अनि वायुको शमन गर्न थाल्नुपर्छ । पित्तको प्रकोप सम्झेको खण्डमा त्यसलाई शान्त पार्नु उचित हुन्छ, तर वायु र कफलाई सुकाउनु वा कम पार्नु अत्यावश्यक छ । पित्तलाई पूरै शान्त गर्नु उचित हुँदैन ।

सन्निपात ज्वरको लक्षण अनुसार उपचार

रोगीलाई जौ, बयर, गहत, मुग, अमला, धनियाँ, सुठो यी सबै राखी पकाएर बनाएको यूष (झोल) खान दिनुपर्छ । यो वातकफको नाशक छ । यसले सन्निपात ज्वर, आमदोष पनि निको पार्छ । घाँटी, मुख र हृदयलाई शुद्ध बनाउँछ ।

ठूलो कागतीको रस, अदुवाको रस, सिंधे नुन, बीरे नुन, खाने नुन, सबलाई मिलाएर बारम्बार नस लिनाले कफ पातलो भई बगेर जान्छ । घिउ, मह र दाख सबलाई पिनेर लेदो बनाई जिब्रोमा लेप गर्नाले जिब्रो नरम तथा ठीक हुन्छ ।

जिब्रो जड (लाटो) भएमा सिंधे नुन र त्रिकुट (सुठो, मरिच, पिप्ला)को चूर्णमा अम्लवेत मिसाई जिब्रोमा लगाउनुपर्छ । परीक्षित हो । सन्निपातको रोगीलाई चिसो वा नउमालेको पानी दिनुहुँदैन । समुद्रफल पानीमा घोटेर अञ्जन गर्नाले निकै आराम मिल्छ । चिराइतो, कुटकी, कुठ, ज्वानो, इन्द्रजौ, कचूर यी सबैको चूर्ण शरीरमा खास गरी जोर्नीहरूमा दल्नाले कफको कारण जमेको वा बसेको घाँटी खुल्छ ।

मनःशिला र बोझोलाई लसुनको रसमा पिनेर अञ्जन गर्नाले होस आउँछ । लशुन, पिप्ला, मरिच, टटेलोका बियाँ, सिंधे नुन यी सबलाई गोमूत्रमा पिनेर अञ्जन गर्नाले सन्निपातका सारा दोषहरू हराउँछन् ।

सन्निपातमा पसिना धेरै आउँछ, त्यसमा भुटेको गहतको चूर्ण पिनेर शरीरमा दल्नाले पसिना आउन छोड्न । पसिना रोकिएन भने रोगीको जीवन संकटमा हुन्छ ।

सन्निपातको अन्त्यमा कान सुनिएर आउँछ, यो सूजबाट कोही कोही मात्र बाँच्छन् । यसरी सुनिएको खण्डमा लेप लगाएर पाकेपछि फोर्नू र निचोर्नू ।

सबभन्दा राम्रो उपाय जुकाको माध्यमबाट रगत निकाल्नुपर्छ । जुका लगाईसकेपछि पहिले नीमको पात बाँध्नुपर्छ त्यसपछि लेप लगाउनुपर्छ ।

रोगीलाई ज्वरनाशक काढा तथा पुरानो चामलको भात अथवा जाउलो दिनुपर्छ । यी पचेर गए भने रोगी बाँच्छ ।

जसको टाउकोमा पसिना आउँछ, सारा शरीर चिसो हुन्छ, रोगी जाडो भएर आत्तिएको हुन्छ, कफको चाप हुन्छ । घाँटीसम्म पसिना आउँछ तर छातीमा पसिना देखिँदैन यस्तो रोगी निश्चय मर्छ ।

सर्व सन्निपातज्वरनाशक योगहरू– दशमूलको काढा सबै किसिमका सन्निपात ज्वरहरूका लागि परम औषधी हो । यसमा पिप्पलीको चूर्ण मिसाएर पिउनाले हृदय र घाँटीको खसखस, तन्द्रा, वातकफको विकार, कोखा दुख्ने सहित सन्निपात ज्वरलाई आराम गर्छ । यो तन्द्रा र मोहसहित सन्निपात ज्वरका लागि रामबाण हो ।

दशमूलको काढामा त्यति नै अदुवाको रस, काफलको बोक्रा, पुष्करमूल, काकडासिंगी, सुठो, मरिच, पिप्ला, जवासा, ज्वानोको चूर्ण मिसाई पिउनाले घोर सन्निपात निको हुन्छ ।

दशमूलको काढामा गुर्जो मिलाई पिउनाले सबै किसिमको सन्निपात ठीक गर्छ । यी सबै औषधीहरू परीक्षित हुन् ।

पिप्लाको जरा, इन्द्रजौ, देवदारु, वायुविडंग, भार्ङ्गी, भृङ्गराज, चित्रक, सुठो, मरिच, पिप्ला, काफल, पुष्करमूल, हर्रो, चिराइतो, बिंही, जटामसी, रास्ना, बोझो, ज्वानू, पाठा र गुग्गुलु यी सबै राखी बनाएको काढा सन्निपातका लागि रामबाण औषधी हुन्छ ।

आँकको जरा, जवासा, चिराइतो, देवदारु, रास्ना, सिमाली, बोझो, गिनेरी, शोभाञ्जन, पिप्पलीमूल, पिप्ला, चव्य, चितु, सुठो, अतीस र भृङ्गराजको काढा बनाई खान दिएमा कठिन सन्निपात पनि ठीक पार्छ । यसले सूतिकाको वातव्याधिमा समेत फाइदा गर्छ । परीक्षित विधि हो ।

असुरो, पित्तपापडा, नीम, जेठीमधु, धनियाँ, सुठो, देवदारु, बोझो, इन्द्रजौ, गोखुर र पिप्पलीमूलको काढाले पनि सन्निपात ज्वर निको पार्छ ।

काफल, त्रिफला, देवदारु, रातो चन्दन, फालसा, त्रिकटु, पद्मक र खसको काढाले सन्निपात ज्वरका साथै दाह र अत्यधिक तिर्खा लाग्ने हराउँछ । परीक्षित हो ।

पञ्चबक्त्र रस – शुद्ध गन्धक, शुद्ध पारद, शुद्ध टंकण (स्वाग), मरिच, शुद्ध विष (वत्सनाभ) सबै समभाग लिएर धतुरोको रसमा १ दिनभरि खल गरी सुकाई सिसीमा राख । यो औषधी १ रत्ती (१२५ मिलीग्राम) मात्रामा अदुवाको रससँग ख्वाएमा घोर सन्निपातलाई ठीक पार्छ ।

पथ्य – यसमा पथ्य दही र भात दिनुपर्छ ।

अमृत वटी – शुद्ध वत्सनाभ विष २ भाग, कौडी भस्म ५ भाग, कालो मरिच ९ भाग सबलाई अदुवाको रसमा खल गरी मुग बराबरको (६० मि.ग्रा) गोली बनाएर राख्नु । यस अमृत वटीले कफ, मन्दाग्नि र सन्निपातलाई ठीक पार्छ ।

सन्निपातनाशक रस (उन्मत्त रस) – पारद र गन्धक समभाग लिएर धतुरोको फलको रसमा १ दिन पूरै खल गरी कज्जली बनाउनू, त्यसको बराबर सुठो, मरिच र पिप्लाको चूर्ण मिसाउनू, उन्मत्त रस तयार हुन्छ । यसलाई नसको रूपमा लिनाले त्रिदोष ज्वरको शमन हुन्छ । परीक्षित हो ।

सिंधे नुन, शोभाञ्जनको बियाँ, सर्स्यू, कुठ सबलाई बाख्राको मूत्रमा पिनेर नस लिनाले तन्द्रा हराउँछ ।

कल्पतरु रसको नस लिनाले कफसम्बन्धी रोग, वायुको प्रकोपबाट उत्पन्न टाउको दुखाइ, प्रलाप र मोह नष्ट हुन्छ, परीक्षित हो ।

चाकु, सुठो, पिप्ला यी सबैलाई चूर्ण बनाई, अदुवाको रसमा मिसाई नस लिनाले चित्तभ्रम सन्निपात निको हुन्छ ।

मरिच, पिप्ला, जिरा र सिंधे नुनलाई तातो पानीमा पिनेर नस दिनाले सन्निपातको पीडा हराउँछ ।

दूबोको रस अथवा अनारको फूलको रस अथवा त्रिफलाको काढामा दूबोको रस मिसाएर नस दिनाले रगतको स्राव रोकिन्छ । रक्तष्ठीवी सन्निपातमा मुखबाट हुने रक्तस्राव पनि यसले रोक्छ ।

शोभाञ्जनको जराको रसमा मरिचको चूर्ण मिसाएर नाकमा चढाउँदा मूर्च्छित मानिसको होस आउँछ ।

तुलसीको रस, मह, शालधूप, त्रिकटु, सिंधे नुन, सबलाई मिसाएर चाट्नाले बढी राखेको कफ कम हुँदै जान्छ र चैतन्य हुन्छ ।

अमलालाई पकाएपछि पिनेर दाख र सुठोको चूर्ण मिसाई महका साथ चाट्नाले श्वास, खोकी र मूर्च्छा ठीक हुन्छ ।

अदुवाको रसमा सिंधेनुन र त्रिकटुको चूर्ण मिसाई गोली बनाई मुखमा राख्नाले घाँटीमा अड्केको कफ बाहिर आउँछ र शरीर हलुंगो हुन्छ । साथै ज्वरो आउने, मुखबाट च्याल बग्ने हराउँछ, परीक्षित हो ।

बिमिरोको केसामा सिंधेनुन र त्रिकटुको चूर्ण मिसाई गोली बनाई मुखमा घाँटीमा अड्केको कफ बाहिर आउँछ र शरीर हलुंगो हुन्छ । साथै ज्वरो आउने, मुखबाट च्याल बग्ने हराउँछ, परीक्षित हो ।

बिमिरोको केस्रामा सिंधे नुन र मरिच मिसाई मुखमा राख्नाले जडता, मुख सुक्ने र अरुचि नष्ट हुन्छ ।

पसिना धेरै आएमा – चिराइतो, कालो जिरा, कुटकी, बोझो, काफल यी सबैलाई मसिनो हुने गरी पिनेर शरीरमा दल्नाले त्रिदोष ज्वरमा हित गर्छ ।

चिराइतो, अजमोदा, कुटकी, पिप्ला, काफल, बोझो यी सबैलाई पिनेर छानेपछि शरीरमा दल्नाले बढी पसिना आउने सन्निपातमा हित गर्छ । परीक्षित योग हो ।

सुठो, मरिच, पिप्ला, चाबो, हर्रो र सिंधे नुन यी सबैको चूर्णलाई दाँत, तालु र जिब्रोमा दल्नाले घाँटी सफा हुन्छ, कफ निस्कन्छ । मुखको स्वाद राम्रो भई रुचि बढ्छ, थुक्ने बानी हट्छ ।

सन्निपातनाशक अञ्जन – शिरीषको बियाँ, पिप्ला, मरिच, कालो नुन सबलाई गोमुत्र राखी पिनेर अञ्जन बनाऊ, यसलाई आँखामा लगाउनाले तन्द्रा हराई चैतन्य आउँछ ।

लशुन, मनःशिला, बोझो, मसिनो गरी पिनेर छानी राख अथवा मनःशिला र बोझोको चूर्णलाई लशुनको रसमा घोटेर राख । यसको अञ्जन गर्नाले होस आउँछ, पूर्व परीक्षित हो ।

सिंधे नुन, कपूर, मनःशिला र पिप्पली (पिप्ला) यी सबैलाई घोडाको न्याल र महमा घोटेर अञ्जन गर्नाले तन्द्रिक सन्निपात ज्वर ठीक हुन्छ । परीक्षित योग हो ।

पिप्ला पानीमा घोटेर अञ्जन गर्नाले भुग्न नेत्र सन्निपात निको हुने कुरा परीक्षित छ ।

ज्वरमा पथ्यापथ्य – रोगी बस्ने ठाउँ वा कोठा सफा-सुग्घर हुनुपर्छ, त्यहाँ धेरै मानिस हुनुहुँदैन ।

- बाहिरको शुद्ध हावा आउने तर तीव्र गतिले नआउने हुनुपर्छ ।
- पंखा हम्कनुपर्दा मयूरको प्वाँखले बनेको पंखाले हम्कनु राम्रो हुन्छ ।
- भर्खर सुरु भएको ज्वरमा चिसो पानीले नुहाउने, व्यायाम गर्ने, तेलको मालिस, दिउसो सुत्ने गर्नुहुँदैन, मैथुन पनि वर्जित छ ।
- दूध-घिउ, दाल, मासु, रक्सी, गुलियो र ठोस पदार्थ पनि खानु राम्रो हुँदैन ।
- वातज्वरमा हल्का भोजन गर्नुपर्छ, भारी भोजन गर्नुहुँदैन । नयाँ ज्वरमा दूध दिनुहुँदैन, पुरानो ज्वरमा दूधले धेरै फाइदा गर्छ । घिउ पनि नयाँ ज्वरमा १२ दिनसम्म दिनुहुँदैन, नयाँ ज्वरमा घिउ विषतुल्य हुन्छ । पुरानो ज्वरमा घिउ अमृत समान हुन्छ ।

ज्वरमा यवागू (गिलो भात), रातो शाली चामल, घैयाँ चामलको भात हितकारक हुन्छ । मुगी, मुसुरो, चना, गहत र सुठोको झोलले हित गर्छ । भण्टा, पर्वर, करेलो, मूला र गुर्जोको पातको साग पथ्य हुन्छ । मासु सेवन गर्नेहरूका लागि १ हप्तापछि तित्रा, कालो हरिण, चित्तल, खरायो तथा सबै जातका हरिणहरूको मासुको झोल दिन सकिन्छ । अमिलोमा कागती, अनार र अमला दिन सकिन्छ ।

नयाँ ज्वरमा, रुघा, करङ्को दुखाइ, दम, खोकी र हिक्का आदिमा चिसो पानी खानुहुँदैन । उमालेर चिसो गरेको पानी खानुपर्छ ।

अत्यन्त पित्त प्रकोपमा प्रलाप र अतिसारयुक्त ज्वरमा तातो पानी दिनुहुँदैन । तातो पानीले दाह, प्रलाप र अतिसार बढेर जान्छ । शीतल उपचारले त्यसमा हित गर्छ ।

जब पानी उमाल्दा उमाल्दा फिंजरहित र निर्मल हुन्छ तब त्यो उमालेको पानी हुन्छ । उमाल्दाखेरि पानीलाई छोप्नुहुँदैन । एकपटक उमालिसकेको पानीलाई फेरि अर्को पटक उमाल्नुहुँदैन । यसै गरी काढा वा भोजन आदिलाई दोस्रो पटक उमाल्नुहुँदैन, हानि गर्छ । जुन पानी उमालिसकेपछि छोपेर राखिन्छ र आफैं सेलाउँछ त्यो त्रिदोषनाशक हुन्छ । रातमा उमालेको पानी दिनमा र दिनमा उमालेको पानी रातमा भारी हुन्छ, त्यो नखानु बेस हुन्छ ।

रातमा १ लिटर पानीलाई उमाल्दा उमाल्दा १/२ पाउ, १ पाउ अथवा १/२ लिटर जति बाँकी राख्यो भने यस्तो पानीलाई उष्णोदक भनिन्छ । यस्तो तातो पानी राती खानाले पित्त, कफ, वात, आमदोष आदि नष्ट हुन्छन् । श्वास, खोकी र ज्वरमा आराम मिल्छ । उष्णोदक पाचक र पथ्य पनि हुन्छ ।

१ लिटर पानीलाई उमाली आधा बाँकी भएको सदा पथ्य हुन्छ । यसले कफको विकार, खोकी र दम निको पार्छ । एक लिटर पानीलाई उमाली ३/४ बाँकी राखेमा त्यो पानी पित्तनाशक हुन्छ, आधा बाँकी राखेको पानी वातशामक हुन्छ, १/४ भाग बाँकी राखेको पानी कफशामक हुन्छ । यो अग्निदीपक पनि हुन्छ ।

वात-कफ ज्वरमा तिर्खा लाग्दा रोगीलाई तातो पानी नै दिनुपर्छ । पित्त ज्वर भएको अथवा रक्सीको मात लागेको बेलामा तातो पानी कहिल्यै दिनुहुँदैन । पित्तज प्रलापमा वायुको दोष सम्झेर तातो पानी खान दिएमा प्रलाप (बरबराउने) बढेर जान्छ । प्रलाप दुई किसिमको हुन्छ - एउटा वात-कफको अर्को पित्तको । वातकफको प्रलापमा रोगीलाई होस हुँदैन, उसले बेहोशीमा बरबराउंछ, पित्तको प्रलापमा रोगीलाई सबै ज्ञान हुन्छ आफूले बरबराएको बुझ्न सम्झन सक्ने हुन्छ ।

आगन्तुक ज्वर - आठौं ज्वर आगन्तुक ज्वर हो । यसमा पहिले पीडा (ज्वरको लक्षण) हुन्छ, त्यसपछि दोषको प्रकोप हुन्छ । यो चार किसिमको हुन्छ- अभिघातज, अभिचारज, अभिषङ्ज र अभिशापज ।

(१) तरवार, लठ्ठी आदिले हिर्काउँदा, ठोकिंदा, माथिबाट लड्दा हुने ज्वरलाई 'अभिघातज' भनिन्छ ।

(२) उल्टो मन्त्रको जप अथवा टुनामुनाको असरबाट हुने ज्वरलाई 'अभिचारज' भनिन्छ ।

(३) काम, क्रोध, शोक र भयका कारण उत्पन्न हुने ज्वर 'अभिषङ्गज' हुन्छ ।

(४) देवता, ऋषि वा मान्य जनहरूको श्रापबाट हुने ज्वर 'अभिशापज' हुन्छ । विषम ज्वर, औषधीगन्धज ज्वर, काम ज्वर, भय ज्वर, क्रोध ज्वर, भूत ज्वर र अभिशापज ज्वर यी आगन्तुज ज्वरहरू हुन् ।

आगन्तुक ज्वरको चिकित्सा – विषज्वरमा विषशामक र पित्तशामक उपायहरू गर्नुपर्छ । काम, शोक र भयबाट उत्पन्न ज्वरमा वायुको प्रकोप हुन्छ, क्रोधबाट उत्पन्न ज्वरमा पित्तको प्रकोप हुन्छ, भूतज ज्वरमा तीनै दोषहरू कुपित हुन्छन् । तिनीहरूमा कुपित दोष अनुसार ज्वरको उपचार गर्नुपर्छ । धेरै लामो हिंडाइबाट आएको ज्वरमा सम्पूर्ण शरीरको मालिस गर्नुपर्छ । दूध, मांसरस (मासुको झोल) आदि पोषिलो खाना दिनुपर्छ ।

ज्वरका अन्य अवस्था भेदहरू

साम वा आम ज्वर – जठराग्नि मन्द भएको अवस्थामा आमाशयमा रहेको र नपचेको हुनाले दोषयुक्त रस नै आम भनिन्छ । ज्वर उत्पन्न गर्ने वातादि दोषका साथ आमको सम्बन्ध भएको अवस्थालाई साम अथवा आम ज्वर भनिन्छ ।

आम ज्वरको लक्षण

- खाने कुरामा रुचि नहुनु ।
- खाएको अन्न राम्ररी नपच्नु ।
- पेट भारी हुनु ।
- हृदय प्रदेशमा भारीपनको अनुभव ।
- तन्द्रा-उँघ्ने भइरहनु ।
- आलस्य हुनु - काम गर्ने जाँगर हराउनु ।
- ज्वर आइरहनु ।
- दोष र मलहरू बाहिर ननिस्कनु ।
- मुखबाट न्याल चुहुनु ।
- वाकवाकी लाग्नु ।
- मुखको स्वाद नमिठो हुनु ।
- अङ्गहरूमा भारीपन, शून्यता हुनु, कऋक्क पार्नु ।

- पिसाब बढी हुनु ।
- आम (नपचेको मल) निस्कनु ।
- ग्लानि नहुनु ।

आम ज्वरको अवस्थामा रोगीलाई उपवास गराउनुपर्छ, ज्वरनाशक औषधी प्रयोग गर्नुहुँदैन । आम ज्वरको अवस्थामा ज्वर निको पार्ने औषधी प्रयोग गर्दा ज्वर निको नभएर अझ विकृत रूपमा देखिन्छ । विषम ज्वर उत्पन्न हुन्छ ।

पच्यमान ज्वर – आम ज्वर लागेपछि विस्तारै आमको पाक हुँदै गएको अवस्थाको ज्वरलाई पच्यमान ज्वर भनिन्छ । यसमा ज्वरको वेग बढी हुन्छ, प्यास लाग्छ, प्रलाप (बरबराउनु) र भ्रम हुन्छ । वाकवाकी लाग्ने र मलहरू निस्कने हुन्छ ।

निराम ज्वर – ज्वरको प्रभावले आमको पाक भइसकेपछि आम हराई ज्वरमात्र बाँकी रहेको अवस्थालाई निराम ज्वर भनिन्छ । त्यस अवस्थामा भोक लाग्न थाल्छ, शरीर हलुंगो हुन्छ, ज्वरको वेग कम हुन्छ, मलहरूको निष्कासन राम्ररी हुन्छ, मनमा उत्साह उत्पन्न हुन्छ ।

विषम ज्वर – पहिले कुनै किसिमको ज्वरो आएको र औषधी-उपचारले ठीक भैसकेपछि, एक्काइसौं दिनपछि अथवा जीर्ण ज्वरको अवस्थामा अपथ्य सेवन गर्दा वात आदि दोषहरू पुनः कुपित भई धातुहरूमा आश्रित भएमा विषम ज्वर उत्पन्न हुन्छ । त्यसमा कहिले जाडो हुने, कहिले गर्मी हुने, कहिले कम, कहिले वेगले ज्वर आउने हुन्छ ।

विषम ज्वर मुख्य पाँच किसिमको हुन्छ– सन्तत, सतत, अन्येद्युष्क तृतीयक र चतुर्थक । यी बाहेक वातबलासक, प्रलेपक, श्लैपदिक, औपद्रविक र जीर्ण सततक भेद कालज्वरलाई समेत विषम ज्वर अन्तर्गत मान्न सकिन्छ ।

कुपित दोषहरू आमाशयमा रहँदा सतत ज्वर उत्पन्न गर्छन् । यो ज्वर एक दिनरात अर्थात् २४ घण्टामा दुई पटक आउँछ ।

दोषहरू उरःप्रदेश अर्थात् छातीको भागबाट आमाशयमा पुगेपछि अन्येद्युष्क ज्वर उत्पन्न हुन्छ । दोषहरू कण्ठ प्रदेशबाट उरःप्रदेश हुँदै आमाशयमा पुगेपछि तृतीयक ज्वर आउँछ ।

शिरमा रहेका दोषहरू कण्ठ, उरःप्रदेश हुँदै आमाशयमा पुगेपछि चतुर्थक ज्वर उत्पन्न हुन्छ । दोषहरू सन्धिहरूमा पुग्दा प्रलेपक ज्वर उत्पन्न हुन्छ ।

जब दोष आफ्नो स्थान टाउको, घाँटी, छातीबाट आमाशयमा पुग्छ अनि ज्वरो तेज गतिले आउँछ । आमाशयबाट दोष जति टाढा हुन्छ त्यति नै समयको अन्तर ज्वर चढ्नमा लाग्छ । त्यसैले तृतीय, चतुर्थक आदि ज्वरमा ज्वरो आउनमा एक-दुई दिनको अन्तर हुन्छ । दोष जोडदारको छ भने ज्वरो पनि जोरले आउँछ, दोष कमजोर भयो

भने ज्वरो पनि हलुका हुन्छ । आमाशयमा हुने दोषलाई धेरै चल्नुपर्दैन, यसैले यसले दुईपटक जोर गर्छ । एक दिनरातमा दुई पटक चढ्ने ज्वरो सतत ज्वर हुन्छ ।

(१) **सतत ज्वर** - यसलाई अंग्रेजीमा रेमिटेन्ट फीवर (Remitent fever) भन्छन् । यो दिनरातमा दुई पटक आउँछ र दुईपटक ओर्लन्छ । यो आउने समय निश्चित हुँदैन, जुनसुकै बेलामा आउन सक्छ । सबै विषम ज्वरहरू प्राय त्रिदोषज हुन्छन् ।

(२) **अन्येद्युष्क ज्वर** - यो दिनरातमा एक पटक आउँछ । मांसमा आश्रित दोषद्वारा यो ज्वर उत्पन्न हुन्छ । यो आफू बढ्ने समय छाडी अर्को समयमा आउँछ किनकि पहिलो पटक दोषको स्थिति हृदयमा हुन्छ ।

(३) **सन्तत ज्वर** - जुन ज्वर ७ दिन वा १२ दिनसम्म एकनासले रहन्छ र ओर्लदैन त्यसलाई सन्तत ज्वर भन्छन् । यो ज्वर त्रिदोषज हुन्छ । वातप्रधान विषमज्वर ७ दिन, पित्त प्रधान १० दिन, कफ प्रधान भए १२ दिनसम्म आइरहन्छ ।

(४) **तृतीयक ज्वर** - यस ज्वरमा कफ र पित्तको बल बढी भयो भने त्रिकस्थानमध्ये कम्मरको पछाडि दुखेर ज्वर चढ्छ । वात र कफको चाप भयो भने पिठ्यूँ दुखेर पछि ज्वरो चढ्छ । वात र पित्तको चाप भयो भने टाउको दुखेपछि ज्वरो बढ्छ । यसको अर्थ यो हो तृतीयक ज्वरमा ज्वरो आउनुभन्दा पहिले टाउको आदि स्थान जकडिएको वा भारी भएको आभास हुन्छ ।

(५) **चतुर्थक वा चतुर्थिक ज्वर** - यो दुई प्रकारको हुन्छ जुन ज्वर कफप्रधान हुन्छ त्यो दुवै तिघ्रा र पिडौंला दुखेपछि बढेर आउँछ । वातप्रधान चातुर्थिक ज्वरमा पहिले टाउको दुख्छ, त्यसपछि ज्वर आउँछ ।

प्रलेपक ज्वर - कुपित दोषहरू सन्धिहरूमा पुगेपछि प्रलेपक ज्वर उत्पन्न हुन्छ । यसमा मन्द ज्वर हुन्छ । ज्वरो आउँदा निस्केको पसिना घामको असरका कारण शरीरमा भारीपन र गर्मी भइरहन्छ । छाला चिसो हुन्छ, रोगीलाई जाडोको अनुभव हुन्छ । यसको ज्वरो लगातार आइरहन्छ तर बिहान ज्वरोको वेग कम हुन्छ र दिउसो वा साँझमा बढेर आउँछ । यो प्रलेपक रोग राजयक्ष्माका रोगीहरूका लागि विशेष रूपमा कष्ट दिने हुन्छ । यो ज्वर कफ र पित्तबाट उत्पन्न हुन्छ[१] ।

---

१. यूनानी पद्धतिमा यसका लक्षणहरू - अलि अलि जाडो भएर ज्वरो आउँछ । ज्वरो मन्द मन्द रहिरहन्छ । हत्केला र पैतालाहरू बढी ताता हुन्छन् । भोक कम लाग्छ, जिब्रो मैलो हुन्छ । रातमा पसिना बढी आउँछ, कहिले कहीं दिसा बढी लाग्छ ।

बातबलासक ज्वर – यो ज्वर वायु र कफको अधिकताबाट उत्पन्न हुन्छ । यसमा दिनहुँ मन्द ज्वर आइरहन्छ । शरीर रुखो र सेतो हुन्छ तथा सुनिएर आउँछ । यो कष्टसाध्य रोग हो ।

नरसिंह ज्वर अथवा अर्धनारीश्वर ज्वर – यो ज्वर लागेको रोगीको शरीरको आधा भाग तातो र आधा भाग चिसो हुन्छ । जब दूषित पित्त कम्मरमा र दूषित कफ हात-खुट्टामा रहन्छ तब शरीर तातो रहन्छ तथा हात खुट्टाहरू चिसा हुन्छन् । त्यस्तै जब दूषित कफ कम्मरमा रहन्छ र दूषित पित्त हात-खुट्टामा रहन्छ तब शरीर ठण्डा र हात-खुट्टा ताता हुन्छन् । जसको वात-कफ समान र पित्त क्षीण हुन्छ उसलाई विशेष गरी रात्रिमा ज्वर हुन्छ, त्यस्तै जसको वात-पित्त समान (बढेका) कफ क्षीण (कम मात्रामा बढेको) हुन्छ उसलाई विशेष गरी दिनमा ज्वरो आउँछ । जब वायु कफसँग मिलेर नसाहरूमा जान्छ तब ज्वरोको सुरुमा जाडो लाग्छ, जब पछि गएर वायु कफबाट अलग हुन्छ तब कफ शान्त भएर जान्छ । त्यस समय वायु पित्तका साथमा नसाहरूमा बग्न थाल्छ, तब पित्तका कारण शरीरमा दाह हुन थाल्छ । त्यसै भएर जाडो भएर आउने ज्वरका अन्तमा बढी तिर्खा लाग्छ ।

जब वायु पित्तका साथमा नसाहरूमा बग्दछ तब ज्वरको सुरुमा दाह हुन्छ र पछि पित्त शान्त भएपछि जब वायु कफसँग नसामा बग्छ तब कफले आफ्नो स्वभाव अनुसार शरीरमा चिसोपन ल्याउँछ ।

विषम ज्वरको चिकित्सा – वातप्रधान विषम ज्वरमा घिउ खान दिएपछि विरेचन गराउनुपर्छ ।

पित्तप्रधान विषमज्वरमा पित्तशामक द्रव्यहरूका साथ पकाएको दूध वा घिउ ख्वाएर विरेचन गराएपछि तिक्त रस एवं शीतल द्रव्यहरूको सेवन गर्न दिनुपर्छ ।

कफप्रधान विषम ज्वरमा पहिले वमन गराई चिल्लो नभएको अन्नपात र तातो औषधीहरूको काढा दिनुपर्छ । वातप्रधान ज्वरमा तातो कुरा खान दिनुपर्छ, कफप्रधान ज्वरमा शीतल पदार्थको सेवन गराउनुपर्छ ।

वातप्रधान विषम ज्वरमा सेवन गरिने काढामा सोह्रौं भाग (१/१६) मह, पित्तप्रधान ज्वरमा दिइने काढामा आठौं (१/८) भाग मह, कफप्रधान ज्वरका लागि दिइने काढामा एक चौथाई भाग (१/४) मह मिसाउनुपर्छ । मिश्री राख्ने भए यसको विपरीत गर्नुपर्छ अर्थात् वात-प्रधान ज्वरमा एकचौथाई (१/४) भाग मिश्री राख्नुपर्छ । पित्त-प्रधान ज्वरमा (१/८) आठौं भाग र कफप्रधान ज्वरमा सोह्रौं भाग (१/१६) मिश्री राख्नुपर्छ ।

वमन र विरेचनद्वारा शरीर शुद्ध भएपछि विषम ज्वर हट्छ । निशोथ, पिप्ला वा हर्रो मध्ये कुनै एकमा मह मिसाई चाट्नाले विषम ज्वर नाश हुन्छ ।

यदि रोगीका आँखा र नङ् बेसार जस्तै पहेंला छन् भने पित्तप्रधान ज्वर सम्झनुपर्छ । यस्तो हालतमा विरेचन गराई, दूध र तिक्त द्रव्य (गुर्जो, त्रिफला) आदि राखी तयार गरिएको औषधीद्वारा चिकित्सा गर्नुपर्छ ।

विषमज्वरनाशक योगहरू – सोनामुखी (सनाय), जङ्गी हर्रो, कालो दाख र जिरा यी सबैका काढा ज्वरको पाचनका लागि दिनु उत्तम हुन्छ। परीक्षित हो । गुर्जो, नागरमोथा, अमलाको काढालाई चिसो पारी मह मिसाई पिउनाले विषमज्वर नष्ट हुन्छ । यसका लागि हरियो (नसुकाएको) गुर्जो लिनुपर्छ ।

कांगियोको जरा र सुठोको काढा बनाई सेवन गर्नाले जाडो, कम्प र दाहयुक्त सबै किसिमका विषमज्वरहरूलाई २–३ दिन मैं नष्ट गर्दछ । यो पनि परीक्षित नै हो ।

नागरमोथा, अमला, गिलोय, सुठो र कटेरी यी सबैको काढा बनाई पिप्पलीको चूर्ण र मह मिसाएर पिउनाले विषम ज्वर जान्छ । (परीक्षित)

लशुनको पोटीलाई तिलको तेल र नुन मिलाएर बिहान पहिलो प्रहरमा सेवन गर्नाले विषमज्वर र वातसम्बन्धी सबै रोगहरूलाई शान्त गर्दछ । (परीक्षित)

तुलसीका पातहरूको रसमा मरिचको चूर्ण मिसाई खानाले विषम ज्वर जान्छ ।

कालो जिरा र पुरानो चाकु समभाग लिएर त्यसमा अलिकति मरिचको चूर्ण मिलाई खानाले विषमज्वर निश्चय नै ठीक हुन्छ ।

सुठो, जिरा, चाकु, यी सबैलाई पिनेर तातो पानीसँग पिउनाले शीतज्वर तत्काल जान्छ ।

द्रोणपुष्पीको रसमा मिश्री र जिरा मिसाई ४ तोलासम्म (५० मि.लि.) रस पिउनाले प्रबल विषम ज्वर पनि नष्ट हुन्छ । (परीक्षित)

चौलाई (लुँडे)को जरा टाउकोमा बाँध्नाले विषम ज्वर छिटै हराउँछ । उत्तम गुर्जोको कपडामा छानेको चूर्ण १०० तोला (१ किलो), चाकु १६ तोला (१६०ग्राम), मह १६० ग्राम, घिउ २०० ग्राम सबलाई मिसाई लड्डु बनाउनु, अनि अग्निबलको विचार गरी खानु यसको सेवनले कुनै पनि रोग लाग्न पाउँदैन, बुढ्यौली पनि आउँदैन, केश पनि फुल्दैन । विषम ज्वर, वातरक्त र नेत्ररोग कहिल्यै लाग्दैन । यो त्रिदोषशामक, मेधाजनक उत्तम रसायन योग हो ।

पिप्ला, मिश्री, मह, उमालेको दूध र नौनी घिउ यी सबैलाई मिसाई खानाले विषमज्वर जान्छ ।

महमा हर्रोको चूर्ण मिसाई सेवन गर्दा विषम ज्वर शान्त हुन्छ ।

वर्धपान पिप्पलीको सेवन पनि लाभदायक हुन्छ ।

हर्रो, जिरा र ज्वानुको चूर्ण सेवन गर्नाले पनि विषम ज्वर नष्ट हुन्छ ।

सेतो करवीरको जरा आइतवारका दिन कानमा बाँध्नाले सबै विषम ज्वर ठीक हुन्छन् ।

पटोलपत्र, इन्द्रजौ, देवादारु, त्रिफला, नागरमोथा, देवदारु, जेठीमधु, गुर्जो, असुरो यी सबैको काढा बनाई चिसो भएपछि मह मिसाई पिउनाले नयाँ ज्वर, विषम ज्वर र सबै किसिमका ज्वरहरूमा आराम मिल्छ । (परीक्षित)

बोझो, हर्रो र घिउ यी तीनैलाई आगोमा हाली धूनी दिनाले विषम ज्वर जान्छ ।

आँकको जरा २० ग्राम, कालो मरिच १० ग्राम लिएर बाखाको दूधमा पिनेर चनाको गेडा बराबर गोली बनाउनु र ज्वर आउनुभन्दा पहिले यो १ गोली खुवाउनु, जाडोको ज्वर भाग्छ ।

सिमालीको पातको स्वरस कपडामा छानी त्यसको नस लिनाले विषमज्वर जान्छ ।

तृतीयक र चतुर्थक ज्वरनाशक योगहरू

आइतवारका दिन अपामार्गको जरालाई रातो धागोमा बाँधी कम्मरमा बाँध्नाले तृतीयक ज्वर जान्छ ।

शालपर्णी, अमला, देवदारु, हर्रो, असुरो, सुठो, यिनको काढा बनाई त्यसमा मह र मिश्री मिसाई पिउनाले चतुर्थक ज्वर ठीक हुन्छ ।

अगस्तिको पातको स्वरसको नस लिनाले चतुर्थक ज्वर नष्ट हुन्छ, परीक्षित हो । यो रस नाकमा राख्नाले आधा टाउको दुख्ने रोग पनि निको हुन्छ । (परीक्षित)

शिरीषको फूल, हलेदो र दारुहरिद्राको कल्कमा घिउ मिसाई नस लिनाले घोर चतुर्थक ज्वर पनि हराएर जान्छ ।

हिङ्लाई पुरानो घिउमा फुराई त्यसको नस लिनाले चतुर्थक ज्वर नष्ट हुन्छ । (परीक्षित)

सहदेवीको जरालाई आइतवारका दिन हात अथवा घाँटीमा बाँध्नाले तृतीयक र चतुर्थक दुवैथरी ज्वर ठीक हुन्छन् । (परीक्षित)

कुमारीले कातेको धागोले अपामार्गको जरा आइतवारका दिन रोगीको हातमा बाँध्नाले चतुर्थक ज्वर आउँदैन । (परीक्षित)

नौसादर (**Ammonium chloride**) ३७५ मिलीग्राम र मरिच २ दाना पिनेर शुक्रवारका दिन खाएमा चतुर्थक ज्वर नष्ट हुन्छ । (परीक्षित)

२५० मिलीग्राम नौसादर दिनमा २-३ पटक खानाले फियो बढेको कम भएर जान्छ । कलेजो सुनिएको वा दुखेको पनि निको भएर जान्छ । महिलाहरूको

छातीको सूजन र बालकहरूको अण्डकोष सुनिएर जाने र रातो हुने-दुख्ने भएमा पनि नौसादर पानीमा घोली लेप गर्नाले आराम हुन्छ ।

फिटकिरी फुराएर त्यस बराबरको मिश्री मिसाई १/२ देखि २ ग्राम सम्म खानाले तृतीयक ज्वर जान्छ, परीक्षित औषधी हो । जसलाई खोकी पनि लागेको छ उसलाई यो औषधी दिनुहुँदैन ।

पुरानो बोरा (पाट)को खरानी मह वा घिउमा मिसाएर खानाले तृतीयक, चतुर्थक र दिनमा २ पटक आउने ज्वरमा आराम हुन्छ, यो परीक्षित उपाय हो ।

शीत ज्वर – शुद्ध कुचिला १ रत्ती महमा मिसाई चाट्नाले शीतज्वर र सूतिका ज्वरमा आराम हुन्छ । शुद्ध कुचिला ३ भाग, मूँग १ भाग अदुवाको रसमा घोटी १-१ रत्तीको गोली बनाउनू । यो १ गोली महमा मिसाई दिनदिनै दुईपटक खान दिएमा शीत ज्वर, पेट काट्ने र दिसामा रगत आउने समस्या हराउँछ ।

ज्वरहर वटी – शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, शुद्ध गोदन्ती हरिताल, शुद्ध संखिया समभाग लिएर पहिले पारद र गन्धक खलमा राखी घोटेर कज्जली बनाऊ । फेरि त्यसमा गोदन्ती हरिताल र शुद्ध संखिया मिसाई १ प्रहरसम्म (३ घण्टा) खलमा घोट र घाममा सुकाऊ । अर्को दिन अदुवाको रस मिसाई फेरी त्यसैगरी १ प्रहरसम्म घोट । एवंरीतले ७ दिनसम्म गर । अब पहेंलो सर्स्यूको गेडा जत्रो गोली (१५ मिलीग्राम) पार । यो सबै प्रकारका नयाँ र पुराना ज्वरहरूका लागि उत्तम औषधी हो । यसको मात्रा अग्निबल अनुसार १ देखि ४ गोलीसम्म हो । यो औषधी १ ग्राम वा २ ग्राम मिश्रीको धुलोसँग घोटी चिसो पानीसँग ख्वाउनुपर्छ । साना बालबालिका, अशक्तहरू, गर्भवती महिला र पित्तप्रकृति वाला रोगीलाई यो औषधी दिनुहुँदैन । दिनु नै परेको खण्डमा बडा होसियारका साथ सानो मात्रामा दिनुपर्छ । यो औषधी सेवन गर्दा गर्मी, बान्ता आदि हुन थाल्यो भने टाउकोमा गाईको घिउ अथवा काँचो दूधले मल्नुपर्छ । खानलाई अङ्गुर, सुन्तलाको सर्बत आदि दिनुपर्छ । जुन ज्वरो एकनासले रहिरहन्छ, घटबढ हुँदैन त्यस्तो अवस्थामा यो औषधी दिनुहुँदैन । सविराम अर्थात् घट्ने-बढ्ने भइरहने तथा नयाँ मलेरिया आदि ज्वरमा विलक्षण प्रभाव देखाउँछ ।

प्रलेपक ज्वरको चिकित्सा – यस ज्वरमा स्वर्णमालती वसन्त रस २ रत्ती (२५० मिलीग्राम), गुर्जोको सत्त्व २ ग्राम, पिप्ला २५० मिलीग्राम, सुकमेल १२५ मिलीग्राम सबलाई महमा मिसाई खाने गर्नाले जीर्ण ज्वर नाश हुन्छ । तागत बढ्छ ।

सितोपलादि चूर्णले यो ज्वर जान्छ । यसलाई महमा मिसाएर चाट्नुपर्छ ।

वर्धमान पिप्पलीको सेवन गर्नाले यो ज्वरका साथ, जीर्ण ज्वर र विषम ज्वर नष्ट हुन्छ ।

यो प्रलेपक ज्वर प्रायः राजयक्ष्मामा हुन्छ । यसको उपचारको लागि निरोगी गाईको दूधमा पानी मिलाएर पकाउनुपर्छ र पाक्दा पाक्दै घिउ र मिश्री मिसाई दिनुपर्छ । दूधमात्र बाँकी भएपछि चुल्होबाट उतारेर चिस्याई मह र मरिचको चूर्ण मिसाएर खान दिनुपर्छ । यस ज्वरका लागि यी सबै योगहरू परीक्षित हुन् ।

मलेरिया ज्वर – सबै किसिमका पुराना ज्वरहरूमा मलेरिया ज्वर प्रधान हो । आयुर्वेदमा यसलाई विषम ज्वर भनिन्छ । डाक्टरहरूले यसलाई **Intermittent fever** भन्छन् । यसमा प्रायः कुनैनका योगहरू दिइन्छन् ।

आयुर्वेद अन्तर्गत यस रोगमा तुलसीको पात र मरिचको चूर्ण समभाग राखी घोटी गोली पारी दिनुपर्छ । यी गोली कुनैनभन्दा कम छैनन् । यसले ज्वरलाई तुरुन्त शान्त पार्छ । गर्मीको चाप बढी छ भने गुर्जोको सत् २ ग्राम पनि दिनुपर्छ ।

मण्डूर भस्म, नौसादर (अमोनियम क्लोराइड) र पिप्ला समभाग पिनेर राख्नू । यो चूर्ण ४-४ रत्ती अर्थात् ५०० मिलीग्राम मात्रामा बिहान बेलुका तातो पानीसंग खानाले यकृत्वृद्धि सहितको मलेरिया ज्वरमा लाभ हुन्छ ।

यवक्षार ३७५ मिलीग्राम, पिप्लाको चूर्ण ३७५ मिलीग्राम दुवैलाई पुरानो चाकु ७५० मिलीग्राममा मिसाई दिनमा २ पटक खानाले यकृत् (कलेजो) सहित फियो पनि सुनिएको मलेरिया ज्वर नष्ट हुन्छ ।

मलेरिया ज्वरमा कलेजो वा फियो बढेको भए आलसको पुल्टिस लगाउने वा सर्स्यूंको पिनालाई पानीसँग पिनेर पोटली बनाई तातो पारेर सेक्नुपर्छ । यो क्रिया दोहोऱ्याएर फेरि अर्को पटक गर्नुपर्छ । जब पहिलो पोटली चिसो हुन्छ तब दोस्रो तातो पोटलीले सेक्नुपर्छ । यस किसिमले दिनको दुई तीन पटक सेक्नुपर्छ ।

कुनैन २ रत्ती (२५० मिलीग्राम), अमिलीको सत् वा टार्टरिक एसिड १० रत्ती (२.५ ग्राम), मिश्री, १/२ छटाक (२५ ग्राम) लिई पहिले मिश्रीलाई पानीमा घोल्नू । त्यसको सर्बतमा कुनैन र अमिलीको सत्त्व मिसाई ज्वरो आउनुभन्दा पहिले ख्वाउनू । यसले जाडो लागेर आउने ज्वर निश्चय नै छुट्छ । परीक्षित हो ।

रोगीलाई डाह भएर बढी प्यास लागेमा मिश्रीको सर्बत बनाई पिउन दिनू, दुधमा साबुदाना पकाएर खान दिनू ।

घिउकुमारीको गुदी १० माशा (१० ग्राम) तातो पानीसँग पिनेर ख्वाउनाले वमन भएर कफ सुक्छ र विषम ज्वर निको हुन्छ । यो पनि परीक्षित हो ।

नीमको बोक्राको काढामा धनियाँ र सुठोको चूर्ण मिसाई खान दिनाले मलेरियामा कुनैन भन्दा फाइदा गर्छ । परीक्षित हो । कालो तुलसीको पात ४ ओटा, बबूलको पात ४ ओटा ज्वानु १ माशा (१ ग्राम) सबलाई पानीमा पकाई चिसो

पारी ज्वरो आउनुभन्दा पहिले ख्वाउनाले बालबालिकाको मलेरिया ज्वर छुट्छ ।

गिलोय, धनियाँ, नीमको बोक्रा, पदमचाल, रातो चन्दन सबैको काढा बनाई खानाले अग्नि प्रदीप्त भई ज्वरो हराउँछ । परीक्षित हो ।

प्लीहाको विकार र त्यसको उपचार – पेटको बाँयातर्फ अलिमाथि फियो हुन्छ । जब त्यसमा कुनै विकार हुँदैन तबसम्म हातले छाम्दा भेटिदैन । मलेरिया आदि रोग लाग्दा त्यो बढेर जान्छ र हातले छाम्दा भेटिन्छ । त्यस अवस्थामा सदा मन्दमन्द ज्वरो आउँछ । अथवा दिनपिच्छे कुनै एक समयमा ज्वरो आउँछ, फियोमा दुख्छ, दिसा सफा हुँदैन । तिर्खा लाग्ने, बान्ता आउने हुन्छ । आँखा अगाडि अँध्यारो देखिन्छ । आँखा र औंलाहरू पहेंला हुन्छन् । पिसाब रातो र कम मात्रामा हुन्छ । भोक लाग्दैन । फियो निकै बढेको छ भने बेहोशी आदिको लक्षण पनि देखिन्छ । त्यस अवस्थामा ज्वरोको वेग बढी छ भने फियोको औषधी बन्द गरी ज्वरको चिकित्सा गर्नुपर्छ । ज्वर निको भएपछि नागफलीका (सिउँडीको प्रकार) पातहरूलाई चक्कुले ताछेर ससाना टुक्रा पार्नू । १ तोलाको (१२ ग्राम) टुक्रा बिहान र १ तोलाको टुक्रा बेलुका सिंधे नुनसँग ख्वाउनू । यस उपायले १०-१२ दिनमा आराम हुनेछ ।

आँककका पातहरूलाई नुन मिसाई खरानी पारी राख्नू । त्यस खरानीलाई अग्निबल अनुसार महमा मिसाई सेवन गर्नू । यसबाट घोर फियो पनि ठीक हुन्छ ।

पिप्लाको चूर्ण ३ रत्ती (३७५ मि.ग्रा.) महसँग केही दिन लगातार खानाले ताप, फियो, हिक्का, श्वास, खोकी र ज्वर निको पार्छ । परीक्षित हो ।

२ तोला अञ्जीर सिर्कामा डुबाई बिहान-बेलुका लगातार केही दिनसम्म खानाले फियो निश्चय नै ठीक हुन्छ ।

२ रत्ती नौसादर हर दिन खानाले फियोलाई गाल्छ । यो परीक्षित हो । यदि रक्त अल्पता छ भने पाकेको गाईको दूध १ पाउमा ६ माशा (६ ग्राम) घिउ, १० ग्राम मह र २५ ग्राम मिश्री, १२५ मिलीग्राम पिप्ला र ५ गेडा मरिच सबलाई मिसाई खानाले रगत बढ्छ र फियो पनि ठीक हुन्छ । परीक्षित हो ।

जीर्ण ज्वरको लक्षण एवं उपचार – जुन ज्वरो १२ दिनपछि पनि रहिरहन्छ अथवा वातज्वर १४ दिनपछि, पित्तज्वर १० दिनपछि र कफज्वर २८ दिनपछिसम्म रहन्छ भने त्यसलाई जीर्ण ज्वर भनिन्छ । जुन ज्वरो मन्द मन्द आइरहन्छ, जसमा रुखोपना, शरीरमा शोथ र कत्रक्क पर्ने र कफ बढ्ने हुन्छ त्यो वातबलासक जीर्ण ज्वर हुन्छ । यो कष्टसाध्य हुन्छ ।

जीर्ण ज्वरमा उपवास गर्नुहुँदैन । ज्वरोबाट कमजोर रोगीलाई वमन र विरेचन पनि गराउनु हुँदैन । उसलाई इच्छा अनुसार दूध खान दिनुपर्छ । इनिमा दिएर मल निकाल्नुपर्छ ।

वर्धमान पिप्पली – गाईको दूधमा ५ ओटा पिप्ला राखी कलई भएको भाँडो वा फलामे कराहीमा पकाउनू । दूध पाकेपछि पिप्पली खाएर त्यो दूध पिउनू । दोस्रो दिन ३ ओटा बढाई आठ ओटा पिप्ला दूधमा पकाउनू र उक्त पिप्ला खाएर दूध पिउनू । तेस्रो दिन ११, चौथो दिन १४, पाँचौं दिन १७, छैठौं दिन २०, सातौं दिन २३ पिप्ला पकाएर खानू । आठौं दिनदेखि हरेक दिन ३-३ ओटा घटाई (२०, १७, १४, ११, ८, ५ दरले) खाएपछि चौधौं दिन ३ मा पुऱ्याउनू । यसलाई वर्धमान पिप्पली कल्प भनिन्छ । यसबाट जीर्ण ज्वर, खोकी, कमलपित्त, अल्काई, प्रमेह र वात रोग नष्ट हुन्छन् । परीक्षित हो । पाण्डुरोगका लागि त यो रामबाण नै हो । गाईको दूध ४ तोला, पानी १६ तोला, पिप्ला ३ ओटा सबलाई मिलाएर पकाउनू । पानी जति सुकेर दूधमात्र बाँकी छँदा उतार्नू । पिप्ला चबाएर पछिबाट पकाएको दूध पिउनू ।

चिनी, घिउ, सुठो, छोकडा, कालोदाख, सबको २.१/२ तोला (३० ग्राम) लिएर १ पाउ जति (२५० मि.लि.) गाईको दूध र १ सेर जति (१ लिटर) पानी मिलाई पकाऊ । जब दूध मात्र बाँकी रहन्छ उतारेर मलेर फेरि छान्नू । सेलाएपछि त्यसमा ३ ग्राम मह मिसाई रोगीलाई खान दिनू । यसबाट तिर्खा, दाह, जीर्ण ज्वर नष्ट हुन्छ, दिसा पनि सफा हुन्छ । परीक्षित हो ।

मह, घिउ, दूध, चिनी , पिप्ला सबलाई एकैचोटि मथेर खान दिएमा विषम ज्वर, खोकी तथा क्षय रोग निको हुन्छ । यो पञ्चसार नामक एक परीक्षित योग हो ।

घिउकुमारीको गुदी ३ ग्रामदेखि १२ ग्रामसम्म तथा कालो मरिच र जिरा प्रत्येक ४ रत्ती (५००मिलीग्राम) मिसाई खानाले प्रमेह र जीर्ण ज्वरमा आराम हुन्छ । परीक्षित हो ।

कुटकी, चिराइतो, नागरमोथा, पित्तपापडा, र गुर्जोको काढा सेवन गर्नाले असाध्य जीर्ण ज्वर पनि शान्त हुन्छ ।

गुर्जोका निम्नलिखित योग पनि उपयोगी छन्-

गुर्जोको रस १० मि.लि.मा पिप्लाको चूर्ण ५०० मि.ग्रा. र मह ३ ग्राम मिसाएर खान दिने ।

गुर्जोको काढामा पिप्लाको चूर्ण र मह मिसाएर खान दिने ।

अमला, चितु, हर्रो, पिप्ला, सिंधे नुन सबैको चूर्ण बनाई सेवन गर्नाले सबै किसिमको ज्वरो नष्ट हुन्छ ।

तुलसीको रस, मरिचको चूर्ण र मह मिसाएर पिउनाले जीर्ण ज्वर नष्ट हुन्छ, परीक्षित हो ।

कण्टकारी, गुर्जो, सुठो, यी सबै राखी पकाएको काढामा पिप्लाको चूर्ण राखी पिउनाले जीर्ण ज्वर, खोकी निको हुन्छ, परीक्षित हो ।

१ भाग भुटेको जिरा, २ भाग पुरानो चाकु मिसाई सेवन गर्नाले विषम ज्वर, जीर्ण ज्वर नष्ट हुन्छन् । परीक्षित हो ।

३ माशा (३ ग्राम) चिराइतो, २ तोला पानीमा रातमा भिजाउनू, बिहान त्यसलाई मलेर छानेपछि २५० मिलीग्राम कपूर र २५० मि.ग्रा शुद्ध शिलाजितमा ६ ग्राम मह मिसाई ७ दिनसम्म खान दिनू । जीर्ण ज्वरको परीक्षित औषधी हो । यसले तागत पनि दिन्छ ।

सितोपलादि चूर्ण ३ ग्राम युवकहरूका लागि ३ ग्राम महमा मिसाई चटाउनू र माथिबाट धारोष्ण गाईको दूध १२५ मि.लि. पिउन दिनू । यसबाट बिस्तारै जीर्ण ज्वर निश्चय ठीक हुन्छ । यसको सेवन गर्दा बिरामीलाई पखाला चल्यो भने दूधको सट्टा अनारको रस दिनुपर्छ ।

शोथज्वर – दशमूलका औषधीहरू ३ ग्राम लिएर काढा बनाउनू, चौथाइ पानी बाँकी हुँदा मलछान गरी मह मिसाई बिहान खान दिनू । यसले शोथसहित ज्वर नष्ट हुन्छ । अनेक किसिमको वात रोग, सूतिका रोग र सन्निपात ज्वर पनि निको हुन्छ । साथमा खोकी पनि छ भने पिप्लाको चूर्ण मिसाई दिनू । यदि श्वास (दम) छ भने १ ग्राम बर्रोको चूर्ण र ६ ग्राम मह मिसाई दिनुपर्छ ।

शोथमा लेप गर्नु आवश्यक भए पुनर्नवा र काली कवै एकै ठाउँमा पिनेर तातो पारी सुन्निएको ठाउँमा लेप गर्नुपर्छ । उक्त काढा खान दिने र लेप पनि लगाउने गर्दा शोथ चाँडै नष्ट हुन्छ ।

पानीको सट्टा काली कवैको अर्क वा काढा खान दिनुपर्छ । शोथ रोगमा पानी उमालेर अथवा फलामले झानेर दिनुपर्छ । फलामले झान्ने तरीका - फलामको डण्डीलाई रातो हुने गरी तताई पानीमा डुबाउनुपर्छ ।

शोथ भएको मानिसलाई धेरै पानी वा नुन पनि खान दिनुहुँदैन ।

मसूरिका ज्वर

यसमा अत्यन्त वेगका साथ ज्वरो बढ्छ र चाँडै ओर्लदैन, गर्मी बढी हुन्छ, तिर्खा बढी लाग्छ, छाती, घाँटी तथा सारा शरीरमा स-साना मोती जस्ता दाना देखिन्छन् । सुरुमा २¼ दिनसम्म ज्वरो रहन्छ । त्यसपछि दानाहरू निस्कन्छन् ।

नागरमोथा पित्तपापडा, जेठीमधु, कालो दाख, यी सबैको काढा मह मिसाई दिनाले मसूरिकामा आराम हुन्छ, परिक्षित हो ।

पुदीना, तुलसी, कालो तुलसी यी तीनैलाई पानी नराखी पिनेर स्वरस निकाली मिश्री मिसाएर खान दिनुपर्छ। अथवा गुर्जोको काढामा मह मिसाएर दिनुपर्छ। यो मसूरिका ज्वरमा आराम दिने परीक्षित उपाय हो।

दाख, असुरो र हर्रोको काढामा मह र मिश्री मिसाएर पिउन दिएमा दम, खोकी र मसूरिका ज्वर निको भएर जान्छ।

गर्भिणीको ज्वरको चिकित्सा

रातो चन्दन, अनन्तमूल, लोध, दाख यिनको काढामा मह र मिश्री मिसाई पिउनाले गर्भिणीको ज्वर निश्चय नै शान्त हुन्छ।

अडेरको जरा, गुर्जो, मजिठो, रातो चन्दन, देवदारु, पद्मक, यी सबैको काढा गर्भवतीको ज्वर निको पार्ने परीक्षित औषधी हो।

बाखांको दूधसँग सुठो पिउनाले गर्भिणीको विषमज्वर शान्त हुन्छ।

सूतिका ज्वरको लक्षण र चिकित्सा

बच्चालाई जन्म दिएको दोस्रो वा तेस्रो दिन सुत्केरी महिलालाई यो ज्वर आउँछ, ज्वरोमा तापमान १०२ डिग्री फारेनहाइटदेखि १०६ डिग्रीसम्म पुग्छ, गर्भाशयमा कम वा बढी दुखाई हुन्छ, पछि यो दुखाई पूरा शरीरमा फैलिएर जान्छ। रोगी महिला बरबराउने हुन्छिन्। आँखा भित्र गड्छन्। भ्रम (रिँगटा) र नातागतको अनुभव हुन्छ, दिसा पातलो हुन्छ, बान्ता आउँछ, छातीको दूध सुकेर जान्छ। अन्त्य समयमा जिभ्रो सुख्खा र कालो भएर जान्छ। यस ज्वरमा गर्भाशयमा शोथ हुन्छ र त्यो खुम्चेर जान्छ वा फेरि बढ्छ।

यसमा वातनाशक औषधी दिनुपर्छ। दशमूलको तातो काढामा घिउ राखी पिउनाले ज्वर आदि सूतिका रोगहरू नष्ट हुन्छन्।

दशमूलका औषधीहरूलाई दूधमा पकाएर मिश्री मिसाई पिउनाले सूतिकासम्बन्धी सबै रोगहरू शान्त हुन्छन्।

तताएर रातो पारिएको फलामले मुग दालको झोललाई झानेर पिउन दिएमा सूतिका रोग नष्ट हुन्छ।

नीमको अन्तरछाल (भित्री बोक्रा) ल्याई त्यसको सानो सानो टुक्रा बनाऊ र पानीमा हाली पकाएर त्यसको बाफ रोगी महिलालाई लाग्ने व्यवस्था गर र पसिना आउन देऊ। आएको पसिनालाई सफा कपडाले पुछ। चिसो हावा शरीरमा नलागोस् भन्ने ख्याल गर। यसले पसिना निकाली शरीरको रोग निको पार्छ।

खानामा पुरानो चामलको भात, पर्वर, काँचो केरा, मसुरो, अनार आदि वातनाशक भोजन दिनुपर्छ । दिनदिनै तेलको मालिस गरी पसिना निकाल्ने गर्नुपर्छ । वात-कफ नाशक औषधीहरूका साथमा उमालेको दूध दिनुपर्छ । शुण्ठीपाक खान दिनुपर्छ ।

स्तन्यज अर्थात् दूधको ज्वर (थुनेलो)

दूध रोकिनाले अथवा सर्दी-गर्मी आदि अरू कारणहरूले रगतको प्रवाह राम्रो नहुनाले सुत्केरी महिलाको छातीमा स्तनहरू सुनिएर आउँछन् । रोगी महिलालाई कम्पन भएर ज्वर आउँछ, हात-खुट्टा, टाउको र पिठ्यूँमा दुख्ने हुन्छ, दुवै स्तन राता भएर टन्कने, दुख्ने हुन्छन् । यस्तो अवस्थामा रोगीले प्रलाप पनि गर्न सक्छ । तिर्खा अत्यन्त बढ्छ । पछि पसिना आएर ज्वरो आफैं ओर्लन्छ ।

बेसार र धतुरोको पातको पिनेर बनाएको लेदो लेप गर्नाले थुनको पीडा शान्त भएर जान्छ । परीक्षित हो ।

६ माशा (ग्राम) नौसादरलाई ½ छटाक (२५ ग्राम) पानीमा घोलेर थुनमा लगाउनुपर्छ । यसले थुनमा परेको गाँठोलाई चाँडै नरम पारी दिन्छ र शोथ पनि नष्ट भएर जान्छ ।[१]

जेठीमधु, नीम, बेसार, सिमाली र धयेंरोको फूल सबलाई मसिनो पारी पिनेर थुनको घाउमा छर्नाले घाउ भरिन्छ ।

यदि दूध बढी आउँछ भने दूध कम गर्ने औषधी लगाउनुपर्छ । थुनको रोगमा पित्तनाशक शीतल पदार्थहरूको प्रयोग गर्नुपर्छ । जुका लगाई दूषित रगत निकाली दिनुपर्छ । सेक्नु अथवा पसिना निकाल्ने उपाय गर्नुहुँदैन । थुनको पीडा हराएपछि दूधको ज्वर पनि जान्छ ।

शीतला ज्वरोको लक्षण र चिकित्सा

यसलाई मसूरिका र माता पनि भन्छन् । यसका तीन प्रकार हुन्छन्-

(१) वातज मसूरिका- यसमा शरीरमा कालो वा रातो रङ्गका र कडा खालका ठ्यौलाहरू हुन्छन्, तिनमा धेरै दुख्ने हुन्छ, ती चाँडै पाक्दैनन् । रोगीलाई खोकी लाग्ने, तिर्खा बढी लाग्ने, रुचि नहुने हुन्छ । मुखभित्र ओठ, तालु र जिभ्रो सुख्खा हुन्छ । शरीर काम्छ ।

---

१. खुट्टा मर्केको वा आफैं भएको शोथमा पनि यो लेप उत्तम हुन्छ । परीक्षित हो ।

(२) **पित्तज मसूरिका-** यसमा सेता, पहेंला वा रातो रङ्गका पिडकाहरू हुन्छन्, तिनीहरूमा दाह र पीडा विशेष रूपमा हुन्छ र ती चाँडै पाक्छन्। साथमा दिसा पातलो हुने, शरीर दुख्ने हुन्छ। शरीरमा दाह हुन्छ र बढी प्यास पनि लाग्छ। अरुचि, नेत्रपाक (आँखा पाक्नो) र मुखपाक (मुखभित्र खटिरा आउने) हुन्छ। ज्वरो अत्यन्त वेगले आउँछ।

(३) **कफज मसूरिका** - यसमा सेता, चिल्ला र मोटा खालका पिडका वा ठ्यौलाहरू हुन्छन्, तिनीहरूमा बढी चिलाउने हुन्छ, मन्द वेदना हुन्छ। पाक ढिलो हुन्छ। साथमा मुखबाट कफ निस्कने, शरीर भारी हुने हुन्छ। टाउको दुख्ने र वमन हुने गर्छ। खानमा रुचि हराउँछ। निद्रा बढी लाग्ने, अल्छी लाग्ने भइरहन्छ।

(४) **त्रिदोषज मसूरिका-** यसमा निलो रङ्गका, चेष्टा र बीचमा अलि दबेका ठ्यौलाहरू हुन्छन्, तिनीहरूबाट दुर्गन्धयुक्त पिप निस्कन्छ।

(५) **रोमान्तिका-** यसमा रौंका छिद्रहरू जस्तै अतिमसिना र राता दानाहरू शरीरमा देखिन्छन्। खोकी र अरुचि हुन्छ। सबैभन्दा पहिले ज्वरो आउँछ। **माता अथवा मसूरिकाका तीन अवस्थाहरू हुन्छन्-**

पहिलो तिनीहरू (ठेउला) निस्कने अवस्था हुन्छ, दोस्रो अवस्थामा तिनीहरू पाक्छन्, तेस्रो अवस्थामा तिनीहरू हराएर जान्छन्। यी तीन अवस्थाहरू ३-३ दिनमा, कहिले ५-५ दिनमा हुन्छन् तर २१ दिनभन्दा बढी कहिले पनि लाग्दैन।

चिकित्सा एवं पथ्यापथ्य- पहिलो र दोस्रो अवस्थामा घिउ तेल आदि कहिले पनि दिनुहुँदैन।

चैतको महिनामा, दुधे बच्चाहरूलाई माता भएमा वा दाँत भएका बच्चाहरूमा पित्तपापडाको अर्क अथवा शरपुंखा (साकिनु)को अर्क रक्तशोधनका लागि दिनुपर्छ। तेल, घिउ, मासु र अमिलो बार्नुपर्छ।

नीमका कलिला पातहरू पानीसँग घोलेर ख्वाउनाले वात, पित्त र कफबाट उत्पन्न मसूरिकाहरू शान्त हुन्छन्।

यदि बच्चा आमाको दूध खाइरहेको छ र 'माता' आउने मौसम छ भने दूध ख्वाउने आमालाई हरेक दिन ४ तोला जति नरिवलको पानी खान दिनुपर्छ। यो उपाय गर्नाले कि त 'माता' निस्कँदै निस्कन्न, निस्क्यो भने धेरै दु:ख दिँदैन। यो राम्रो उपाय हो।

अथवा जेठीमधु ६ ग्राम, अनारदाना ६ ग्राम दुवैको काढा बनाई छानेर पिउन दिनुपर्छ र माथिबाट पित्तपापडाको अर्क पिउन लगाउनुपर्छ। यो परीक्षित उपाय हो।

नीमको बियाँ, बर्रोको वियाँ र बेसार समभाग लिएर चिसो पानीसँग घोटेर छानेपछि (१० मि.लि. मात्रामा) केही दिनसम्म दिनको एकपटक पिउने मानिसलाई शीतलाको भय हुँदैन । बच्चाहरूका लागि परीक्षित नै हो । ऋतुहरू फेरिने बेलामा अवश्य पिउन दिनुपर्छ ।

महिलाको दायाँ र पुरुषको बायाँ हातमा हर्रोको बियाँ बाँध्ने गर्नाले 'माता' को डर कम हुन्छ ।

पटोलपत्र, गुर्जो, नागरमोथा, धनियाँ, जवासा, चिराइतो, नीम, कुटकी र पित्तपापडा यिनको काढा बनाई खानाले नपाकेको मसूरिका नष्ट हुन्छ, पाकेको मसूरिका शुद्ध भएर जान्छ, परीक्षित हो ।

तिते करेलाको पातको चूर्ण र बेसार मिसाई खानाले रोमान्तिका (दादुरा), मसूरिका र ज्वर नष्ट हुन्छन् ।

अलिकति जाइपत्री दिनको ३-४ पटक खान दिएमा निस्कन नसकेको माता निस्कन्छ । माता बाहिर निस्केन भने काञ्चनार (कोइरालो)को बोक्राको काढा बनाई त्यसमा सोनामुखीको चूर्ण मिसाई ख्वाउनाले माता निस्कन्छ ।

माता आएको बिरामीलाई दूध अथवा पानीमा साबुदाना बनाएर र दूधमा चामल राखी खीर बनाएर दिनुपर्छ । पानी चिसो नै दिनुपर्छ । माता बिलकुल शान्त भैसकेपछि मसुरोको छाँटा र खर्बुजाको बियाँको गुदी दुवै समभाग पिनेर मुखमा लेप लगाउनुपर्छ । त्यसपछि मुख धुनका लागि पानीमा नागरमोथा पकाएर मात्र धुनुपर्छ । यो योग मुखलाई राम्रो पार्न धेरै राम्रो छ ।

ज्वरका उपद्रवहरूको चिकित्सा

हिक्का, श्वास, मूर्च्छा, अरुचि, वमन हुनु, तिर्खा लाग्नु, पातलो दिसा हुनु कहिले कब्जियत हुनु, कास र दाह यी ज्वरका दस उपद्रवहरू हुन् । उपद्रव र मूल रोगको चिकित्सा सँगसँगै गर्नुपर्छ तर परस्परविरोधि चिकित्सा कहिले पनि गर्नुहुँदैन । जस्तो कि सन्निपातमा दाहको वेग देखिएमा चिसो पानीले रोगीलाई नुहाइदिनु हुँदैन, यसबाट रोगीको मृत्यु हुन्छ ।

(१) श्वासको चिकित्सा

वायु कुपित हुनु नै यसको मुख्य कारण हुन्छ । चाँडै उपाय गरिएन भने यसले जीवनमा खतरा पार्छ । यो छातीमा कफ सुकेर गएमा हुन्छ । कफलाई पातलो गराई वायु (प्राणवायु) आउने जाने मार्ग (अर्थात् श्वास प्रणाली) खुलाउनु नै यसको उत्तम उपाय हो ।

सानो पिप्ला, काकडासिंगी, काफलको बोक्रा समभाग लिएर मसिनो

चूर्ण बनाउनू । यो चूर्ण ४ देखि ८ रत्तीसम्म (५०० मि.ग्रा. देखि १ ग्राम) मात्रामा महमा मिसाई बिहान बेलुका २-३ दिन चाट्न दिनू । श्वासका लागि परीक्षित औषधी हो ।

अदुवाको रसमा मह मिसाई खान दिनाले श्वास, खोकी र रुघामा धेरै लाभ हुन्छ । सुठोको काढामा मह मिलाई खानाले श्वासमा लाभ हुन्छ ।

यदि गलामा कफको घर्घर हुन्छ भने अदुवाको रसमा १/४ रत्ती कस्तूरी घोटेर ख्वाउनू, धेरै नै आराम हुन्छ । जबसम्म श्वास हराउँदैन तबसम्म हलुका मात्रामा दिन-रातमा ३-४ पटक दिनु बेस हुन्छ । परीक्षित हो ।

सुठोलाई तावामा अलिअलि भुटेर, मसिनो गरी पिनी छातीमा मल्न लगाउनू, श्वासमा धेरै लाभ हुन्छ । यो पनि परीक्षित हो ।

हिक्का र श्वासमा पुष्करमूल, यवक्षार र मरिचको चूर्ण सबैलाई पानीसँग सेवन गर्नाले राम्रो फाइदा हुन्छ ।

विना धुवाँको राम्रो बलेको आगोमा डढाएको मयूरको प्वाँखको खरानी २५० मिलीग्राम र पिप्लाको चूर्ण २५० मिलीग्राम महमा मिसाई चाट्न दिएमा श्वास रोग निको हुन्छ, परीक्षित हो ।

(२) खोकीको उपचार

बर्रो र पिप्लाको चूर्ण महमा मिसाई चाट्न दिनाले सबै किसिमको खोकीलाई आराम दिलाउँछ ।

पिप्ला, कचूर, पुष्करमूल, हर्रो, सुठो, नागरमोथा सबै समभाग लिएर मसिनो चूर्ण बनाएपछि चाकुमा मिसाई (१ ग्रामसम्मको) गोली बनाउनू । यसको सेवनले अनेक किसिमको खोकी र श्वासलाई निको पार्छ ।

कण्टकारीको काढामा (५० मि.लि.) पिप्लाको चूर्ण २५० मिलीग्राम मिसाई खानाले सबै किसिमको खोकीमा आराम हुन्छ ।

गुर्जोको चिनी (गिलोय सत्) २ ग्राम, त्रिकटुको चूर्ण २ ग्राम मिसाई महसँग चाट्नाले खोकी र श्वास रोग शान्त हुन्छ । परीक्षित हो ।

पानमा राख्ने खयर १ भाग, छायामा सुकाएको असुरोको पात २ भाग, त्रिकटुको चूर्ण ३ भाग सबलाई कुटी छानी चूर्ण बनाऊ । यो चूर्ण १ ग्राम मात्रामा महमा मिसाई चाट्नाले खोकीमा आराम हुन्छ । परीक्षित हो ।

(३) हिक्काको उपचार

हिक्का एक कष्ट दिने रोग हो । ज्वर र हिक्का साथमा भएको खण्डमा मृत्युको पूर्व संकेत बुझ्नुपर्छ । श्वास र हिक्का यी दुई रोगहरूले चाँडै नै प्राण हरण

गर्छन् । यसैले यसको निवारणका लागि सकभर छिटो उपाय गर्नुपर्छ ।

बाखाको दूध अथवा पानी १०० मि.लि. मा सुठोको चूर्ण ६ ग्राम राखी पकाऊ । त्यो दूध अथवा पानी रोगीलाई खान देऊ । हिक्का ठीक हुन्छ ।

जेठीमधुलाई महमा मिसाई सुँघ्न देऊ, अथवा-पिप्लाको चूर्णलाई चिनीमा मिसाई सुँघाऊ, अथवा-सुठोलाई चाकुमा मिसाएर सुँघ्न देऊ अथवा बलेको आगोमा हिङ राखी त्यसको धुवाँ नाकले सुँघ्न लगाऊ ।

यी सबै उपायमध्ये कसै न कसैबाट हिक्का बन्द हुन्छ ।

हिङ र माषलाई पिनेर आगोमा हाली त्यसको धुवाँ सुँघ्नाले निश्चय पनि सबै किसिमको हिक्का ठीक हुन्छ ।

चिलिममा तमाखु राखी खाए जस्तै मेन्थोल (Menthol–पिपरमेन्ट) को धुवाँ सुँघ्नाले हिक्का ठीक हुन्छ ।

मह मात्र चाट्नाले अथवा बिमिरोको रसमा मह र कालो नुन मिसाई पिउनाले हिक्का शान्त हुन्छ ।

सुठो, धाइरोको (धातकी) फूल, पिप्ला सबैको चूर्ण ५००-५०० मिलीग्राम लिएर महमा मिसाई चाट्नाले हिक्का ठीक हुन्छ ।

महिलाको दूध नाकमा राखे पनि हिक्का शान्त हुन्छ ।

चिलिमको आगोमा बेसार र माषको चूर्ण हाली पिउनाले धेरै नै बढेको हिक्का पनि शान्त हुन्छ ।

सिंधे नुनलाई पानीमा मिसाई नस लिनाले हिक्का शान्त हुन्छ । (परीक्षित)

मयूरको प्वाँखको खरानी २५०-३७५ मिलिग्राम मात्रामा महमा मिसाई चाट्नाले हिक्का निश्चय नै ठीक हुन्छ ।

(४) अरुचिनाशक उपायहरू

अदुवाको रसमा मह मिसाई चाट्नाले अन्न रुच्न थाल्छ ।

कागतीलाई काटेर त्यसमा अलिकति मरिच र बिरे नुनको धूलो छर्केर आगोमा तताई चुस्न दिनू । यसबाट अरुचि हटेर जान्छ । यदि खोकीको चाप छ भने यो नदिनू ।

भोजनभन्दा पहिले अदुवाको टुक्राहरूमा सिंधे नुन लगाई खानाले अरुचि हट्छ ।

अमला र दाखलाई पिनेर मुखमा राखे पनि अरुचि हट्छ । साथमा ज्वर पनि छ भने बिहान बेलुका गिलोयको सत् ५०० मिलीग्राम महसँग चटाऊ, ज्वर जान्छ ।

गुर्जोको सत्त्व (गिलोय सत्) ५०० मि.ग्रा. अथवा १ ग्राम मात्रामा अनारको रससँग खान दिएमा ज्वरो अवश्य हराउँछ । (परीक्षित)

(५) तिर्खा शमन गर्ने उपायहरू

ज्वर बढेको अवस्थामा बढी तिर्खा लाग्ने र घाँटी, तालु, ओठ, मुख सुक्ने हुन्छ । त्यस अवस्थामा बरको जटा, अमला, कुठ र कमलगट्टाको गुदी समभाग लिएर चूर्ण बनाऊ, फेरि छानेर मह मिसाई गोली पार । यी गोली मुखमा लिइराख्नाले तिर्खा शान्त हुन्छ ।

चौलानीमा मह मिसाई खानाले तिर्खा शान्त हुन्छ ।

पुदिना १० ग्राम, अलैंची ६ ग्राम, ल्वाँग ५ दाना र मरिच ९ दाना सबलाई २.१/२ पाउ (३०० मि.लि.) पानीमा पकाई चिसो पार्नू । छानेर रोगीलाई अलि अलि ख्वाउनू । यसले वमन रोक्छ र तिर्खा पनि शान्त पार्छ ।

(६) वमनको समस्या भएमा

पित्तपापडा २५ ग्राम लिएर ४०० मि.लि. पानीमा पकाउनू, चौथाइ बाँकी हुँदा उतारेर सेलाएपछि त्यसमा मह मिसाई खान दिनू । ज्वरसहित वमन ठीक हुन्छ ।

सानो हर्रोको चूर्ण महमा मिसाई चाट्न दिएमा अनेक किसिमको वमन ठीक हुन्छ ।

चन्दनको चूर्ण पानीमा उमालेर सेलाएपछि त्यसमा मह र मिश्री मिसाई खानाले पित्तको वमन हराएर जान्छ ।

पानीमा पुरानो चामल भिजाइदिनू, एक घण्टापछि चाललाई मिचेर बाहिर निकाल्नू, त्यस पानीमा अलिकति मिश्री मिसाई खान दिनू, वमन हुन छोड्छ ।

पिपलको रुखको बोक्रालाई जलाई खरानी पार्नू र तत्काल पानीमा राख्नू । त्यो पानी अलिअलि गरी रोगीलाई ख्वाउनू, कठिनभन्दा कठिन वमनको समस्या हराउँछ । (परीक्षित)

वमनका साथ दाह र तिर्खा पनि छ भने दाखको रसमा मह मिसाई ख्वाउनू ।

चामल पखालेको पानी अथवा चौलानीमा अलिकति जाइफल घोटेर ख्वाउनाले हिक्का र वमन बन्द भएर जान्छ ।

गुर्जोको काढा बनाई चिसो पारी मह मिसाएर पिउनाले वमन भइरहेको थाम्छ ।

(७) कब्जियत हटाउने उपाय

वात ज्वर र वातप्रधान सन्निपात ज्वरहरूमा बढी कब्जियत हुन्छ । त्यस अवस्थामा कालो निशोथको चूर्ण ३-६ ग्राम, महमा मिसाई चटाइदिनू ।

यदि दिसा कडा छ भने त्यही चूर्ण ६-८ ग्राम मात्रामा महमा मिसाई चटाइदिनू । ज्वरहरूमा दिसा लगाउन यो राम्रो औषधी हो । यसबाट विषमज्वर र कब्जियत पनि ठीक हुन्छ ।

३० ग्राम (मि.लि.) अडेरको तेल (Caster oil) १ पाउ (२०० मि.लि.) तातो दूधमा मिलाएर खान दिनू। यो निकै हल्का जुलाफ (दिसा लगाउने औषधी) हो, बालक तथा गर्भवती महिला आदि सबैलाई दिनसकिन्छ।

हरियो सनायपत्ति, सुठो, सूप, हर्रो, कालो नुन, समभाग लिएर कुटी छानी चूर्ण बनाउनू। यसबाट ४-६ ग्रामसम्म राती सुत्ने समयमा फाँकी माथिबाट तातो पानी खान दिनू। एक वा दुई पटक दिसा अवश्य हुनेछ।

समुद्री (साधारण) नुन, अदुवा, सर्स्यूं र मरिच समभाग पिनेर मसिनो पारी पानीमा घोटेर मोटो औंला जति कपडाको बत्ती बनाएर त्यसमा उक्त औषधीको लेदो लगाउनू। त्यसपछि त्यस बत्तीमा अथवा रोगीको गुदद्वारमा घिउ लगाई बत्तीलाई गुदद्वारमा पसाउनू। यसबाट दिसा सफा भएर आउनेछ।

(८) अतिसारनाशक उपाय

ज्वरमा पखाला पनि चल्छ, यसलाई छिटो रोक्नु पनि हुँदैन। धेरै दिनसम्म बन्द भएन भने अतिसारको जस्तै उपचार गर्नुपर्छ।

गुर्जो, इन्द्रजौ, नागरमोथा, चिराइतो, नीम, अतीस, सुठो सबै समभाग लिएर काढा बनाई ख्वाउनाले ज्वरातिसारमा आराम हुन्छ।

धनिया, सुठो, काँचो बेल, खस, नागरमोथा, सबैको समभाग लिएर काढा बनाई पिउनाले शूलसमेत आमातिसार ठीक हुन्छ।

अर्को पिप्ला, ठूलो पिप्ला, धनिया इनको काढामा मह वा मिश्री मिसाई खानाले ज्वर अतिसार, वमन, तिर्खा सबलाई आराम गर्छ। दशमूलको काढासँग सुठोको चूर्ण सेवन गर्नाले ज्वर अतिसार शोथ एवं संग्रहणी समेतमा आराम हुन्छ। सुठोको मात्रा अग्निबल अनुसार ६ ग्राम देखि १२ ग्रामसम्म लिनुपर्छ।

(९) मूर्च्छा निवारण गर्ने उपायहरू

मूर्च्छाका ३ अवस्थाहरू हुन्छन् - मूर्च्छा, भ्रम र तन्द्रा।

सुख वा दुःख कुनै अनुभव नहुने अवस्थालाई मूर्च्छा भनिन्छ। यसमा पित्त दोष र तमोगुणको अधिकता हुन्छ।

भ्रम - यसमा आफ्नो शरीर र सबै चीजहरू घुमेको जस्तो देखिन्छ। यस्तो अवस्था वायु र पित्त दोष तथा रजोगुण बढेपछि हुन्छ।

तन्द्रा - निद्राको जस्तै विषयहरूको ज्ञान कम हुने अवस्थालाई तन्द्रा (उँघ्नु) भनिन्छ। यसमा शरीरमा गह्रुंगोपन, थकाइ लाग्ने, हाइ आउने हुन्छ र आँखाहरू आधा खुलेका हुन्छन्। यो अवस्था वायु र कफ दोष तथा तमोगुण बढ्नाले हुन्छ।

मूर्च्छालाई हटाउन कडा नस दिनु हितकारी हुन्छ । पिप्लाको चूर्ण ८ देखि १० रत्ती सम्म महमा मिसाई चाट्न दिनाले मूर्च्छा नष्ट हुन्छ । नाक र मुखबाट श्वास रोकी दिनाले होश आउँछ ।

मरिच, जेठीमधु, सिंधे नुन, खस, काफल, पिप्लालाई तातो पानीमा पिनेर नस दिनाले सन्निपातको मूर्च्छामा लाभ हुन्छ । लशुन, मेन्थोल, बोझ्को समभाग लिई कुठेर छान्ने, पिन्ने, आँखामा अञ्जन गर्नाले बेहोसी खुल्छ ।

शिरीषको बियाँ, पिप्ला, मरिच, कालो नुन, समभाग लिई गोमूत्रमा पिनेर आँखामा अञ्जन गर्नाले बेहोसी (मूर्च्छा) खुल्छ । छायामा सुकाएको करवीरका पात ६ ग्राम, कालो मरिच ४ दाना र देशी बदाम (Almond) एउटा, सबलाई कुठी कपडाले छानेर मसिनो चूर्ण बनाउनू, यसको नस दिनाले जस्तै मूर्च्छा परेको मानिस पनि व्यूँझन्छ । (परीक्षित)

चन्दन अथवा काँक्रो सुँघाए पनि होस आउँछ । गर्मी भएर निकै टाउको दुखेको पनि निको हुन्छ ।

श्रीखण्ड चन्दनको धुलो, धनियाँ, कपूर, तीनैको ६-६ ग्राम चूर्ण लिएर कपडामा राखी पोको बनाऊ । एउटा ठूलो मुख भएको भाँडोमा गुलाब जल राख । त्यसमा उक्त औषधीहरूको पोको भिजाई बारम्बार रोगीलाई सुँघाऊ ।

सुठो, पिप्ला, बेझ्को, सिंधे नुन समभाग लिई मसिनो चूर्ण बनाऊ । यसको नस दिनाले घोर तन्द्रा पनि हराउँछ ।

शिर:शूल (टाउको दुख्ने) निवारण गर्ने उपायहरू

वातज शिर:शूल – कुनै स्पष्ट कारण नदेखिई टाउको दुख्न थाल्यो र रातमा बढी भयो, टाउकोमा कपडा बाँध्दा अथवा सेक्दा दुखाइ कम भयो भने त्यो शिर:शूल वातज हो भन्ने सम्झनू ।

मुचुकुन्दको फूल पिनेर टाउकोमा लगाउनाले वातज शिर:शूल ठीक हुन्छ । कुठ, अडेरको जरा, र सुठोलाई महीमा पिनेर तातो पारी टाउकोमा (निधारमा) लेप लगाउनाले वातज शिर:शूल निको हुन्छ ।

पित्तज शिर:शूल – टाउको छुँदा तातो छ, आँखा र नाकबाट तातो बाफ आएको अनुभव हुन्छ, रातमा अथवा सर्दी लाग्दा टाउको दुख्न कम हुन्छ भने त्यो पित्तज (पित्तका कारण उत्पन्न) शिर:शूल बुझ्नुपर्छ ।

चन्दन, खस, जेठीमधु, बला, नखी, कमल सबलाई दूधसँग पिनेर लेप गर्नाले पित्तज शिर:शूल निको हुन्छ ।

जेठीमधु, दाख, मिश्री समभाग पिनेर नस दिनाले पित्तज शिर:शूल ठीक हुन्छ ।

अथवा दालचिनी, मिश्री र तेजपातलाई चामलसँग पिनेर नस दिनाले पित्तज शिर:शूल निको हुन्छ ।

दूध र घिउ मिसाई नस दिनाले पित्तज र हाइब्लडप्रेशरको शिर:शूल आराम हुन्छ ।

पानी राखी सय पल्ट धोएको गाईको (अथवा भैंसीको) घिउ टाउकोमा दल्नाले पित्तज शिर:शूल निको हुन्छ ।

पित्तपापडाको रस, तिते करेलाको रस, र गाईको घिउ सबलाई मिसाएर टाउकोमा दल्नाले टाउको दुखेको तत्काल आराम हुन्छ ।

चन्दन र कपूर पिनेर टाउकोमा दल्नाले पित्तज शिर:शूल निको हुन्छ ।

कफज शिर:शूल – टाउको कफले भरेजस्तो लाग्ने, भारी हुने, जकडेजस्तो हुने, छाम्दा चिसो अनुभव हुने, मुख र आँखा सुनिएको भएमा साथै टाउको दुख्ने भएमा कफज शिर:शूल भनी बुझ्नुपर्छ ।

त्यसमा बोझोलाई पिनेर कपडामा पोको पारी सुँघ्नाले रुघा र टाउको दुखेकोमा आराम हुन्छ ।

मिश्रित योग – सुठोलाई पानीमा पिनेर दूधमा मिसाई सुँघ्नाले सबै किसिमको शिर:शूलमा आराम हुन्छ

पिप्ला र सिंधे नुनको चूर्ण पानीमा घोटेर २-३ थोपा नाकमा राख्नाले टाउको दुखेकोमा तत्काल आराम हुन्छ ।

मिश्री, केशर, दाख समभाग लिएर चूर्ण बनाई सबैको चौथाई मख्खन (नौनीघिउ) मिसाई घोटी नस दिनाले सूर्यावर्त र आधा कपाल दुख्ने व्यथा एवं वातपित्तज शिर:शूलमा आराम हुन्छ ।

भाँगको रस र बाखाको दूध समभाग लिएर दुवैलाई घाममा तताएर नस दिनाले सूर्यावर्तको[1] शिर:शूल निको हुन्छ ।

प्याजलाई कुटेर सुँघ्नाले गर्मीका कारण टाउको दुखेकोमा आराम हुन्छ । केसरलाई घिउमा मिसाई सुँघ्नाले आधा कपाल दुखेको र रुघा लागेकोमा आराम हुन्छ ।

छोकडा (छुहाडा)को बियाँ घोटेर टाउकोमा लगाउनाले शिर:शूलमा आराम हुन्छ ।

---

१. बिहान सूर्य उदाएदेखि दुख्न सुरु हुने, दिउसो बढ्ने र साँझदेखि कम भएर जाने गरी टाउको दुख्ने रोगलाई सूर्यावर्त भनिन्छ ।

तिलको तेलमा नुन मिसाई तताएर सुँघ्नाले आधा कपाल दुखेकोमा आराम हुन्छ ।

कृमिज शिरःशूल – टाउकोमा सियोले घोचेको जस्तो दुख्ने र नाकबाट पिप तथा किरा निस्कने भइरहेमा टाउकोमा जीवाणुहरू पुगेको कारणबाट दुखेको बुझ्नुपर्छ ।

त्यस्तो अवस्थामा सुठो, मरिच, पिप्ला, करञ्ज र शोभाञ्जनको बियाँ समभाग लिएर बाखाको पिसाबमा पिनेर सुघ्न दिनू, किराहरू नष्ट हुन्छन् ।

ज्वरमुक्तका लक्षणहरू – पसिना आउनु, शरीर हलुंगो हुनु, मस्तक चिलाउनु, मुखभित्र खटिरा आउनु, छ्यूँ आउनु, भोजनमा रुचि हुनु यी ज्वरमुक्ति अर्थात् ज्वरले छोड्न लागेको अवस्थामा देखिने लक्षणहरू हुन्छ । यी लक्षणहरू भएपनि टाउको भारी नै छ भने ज्वरो फेरि आउन सक्छ भनी बुझ्नू ।

नबाँच्ने रोगीको लक्षण वा ज्वरको अरिष्ट –

जसको जिब्रो निलो, पहेंलो र खस्रो हुन्छ । मुखबाट अत्यन्त तातो सास निस्कन्छ, रोमाञ्च हुन्छ, आँखा निलो, रातो वा पहेंलो भएर गएको हुन्छ र घाँटीबाट घ्यार-घ्यार आवाज आइरहन्छ त्यो रोगी बाँच्दैन ।

जसको मुखबाट छिटोछिटो श्वास चल्छ, दाँतहरू काला भएर जान्छन्, आँखाहरू बाङ्गिएर गएका हुन्छन्, शरीर अररो हुन्छ त्यो रोगी बाँच्दैन । जसलाई वमन भइरहन्छ, आँखाबाट आँसु बग्छ, अरुचि र भित्र दाह हुन्छ, जिभ्रो कालो हुन्छ, त्यो रोगी बाँच्दैन ।

जुन ज्वरमा रोगी निकै कमजोर भएर जान्छ र शरीर सबै सुनिएर जान्छ त्यो असाध्य हुन्छ । जसलाई रोमाञ्च हुन्छ, हृदयमा शूल हुन्छ, अङ्गहरूमा दाह हुन्छ, बेहोसी हुन्छ, श्वास आधा वा अधुरो हुन्छ, टाउकोमा पसिना आउने तर छातीमा पसिना नआउने हुन्छ, सारा शरीर चिसो हुन्छ त्यो रोगी बाँच्दैन ।

यमघण्ट योग अथवा मृत्यु योगमा बिरामी भएको रोगी पनि बाँच्दैन–

रविवार – मघा, सोमवार – विशाखा, मङ्गलवार – आर्द्रा, बुधवार – मूल, बिहिवार – कृत्तिका, शुक्रवार – रोहिणी, शनिवार – हस्ता नक्षत्र हुँदा यमघण्ट योग हुन्छ ।

रविवार–अनुराधा, सोमवार – उत्तरा, मङ्गलवार – मघा, बुधवार – अश्विनी, बिहीवार – मृगशिरा, शुक्रवार – अश्लेषा, शनिवार– हस्ता नक्षत्र छ र नवमी, षष्ठी वा द्वादशी तिथी छ भने मृत्युयोग भनी जान्नुपर्छ ।

निमोनिया ज्वर– यो निमोनिया ज्वर सन्निपात ज्वरको एक अवस्थाविशेष हो । यो प्रायः ऋतुपरिवर्तन हुने बेलामा ठण्डी लाग्दा उत्पन्न हुन्छ । यसमा जाडो लागि ज्वरो आउँछ, टाउको दुख्छ, वमन हुनसक्छ, रोगीले प्रलाप गर्ने (बर्बराउने), हात-खुट्टा बजार्ने गर्छ । जब रोग पूरा चढ्छ अनि छातीमा छुने बित्तिकै दुख्छ, सास

फेर्न गाह्रो हुन्छ, खोकी बेसरी लाग्छ। मैलो, बाक्लो, लेसिलो कफ आउँछ, कहिलेकाहीं कफसँग रगत पनि निस्कन्छ।

एक सातापछि पिसाब र पसिना बढी आउँछ। नाडीको चाल एक मिनेटमा ९० देखि १२० सम्म पुग्छ, तापमान १०३ F देखि १०४ F डिग्रीसम्म पुग्छ। साना बालक, बूढा, गर्भिणी महिला, रक्सी बढी खाने मानिसमा यो रोग असाध्य हुन्छ। रक्तष्ठीवी सन्निपात जस्तै यसको चिकित्सा गर्नुपर्छ।

ज्वरहरूको रस चिकित्सा

कस्तूरी भैरव रस – शुद्ध हिंगुल (काँचो सिम्रिक), शुद्ध वत्सनाभ विष, शुद्ध टंकण, जाइपत्री, जाइफल, मरिच, पिप्ला, असल कस्तूरी सबै समभाग लिई पानीमा खल गरी १-१ रत्तीको गोली बनाउनू। सन्निपात वा निमोनियामा अग्निबल अनुसार यी गोलीहरू (१-२) अदुवाको रससँग दिनुपर्छ।

हिंगुलेश्वर रस – सानो पिप्ला, शुद्ध हिंगुल र शुद्ध वत्सनाभ विष समभाग लिएर पानीसंग खल गरी आधा आधा रत्ती (६२ मिलीग्राम)को गोली पार्नू। अदुवाको रस र महसँग दिंदा वातज्वरनाशक हुन्छ।

त्रिपुरभैरव रस – शुद्ध विष (वत्सनाभ) १ तोला, शुद्ध टङ्कण २ तोला, शुद्ध गन्धक ३ तोला, शुद्ध ताम्र भस्म ४ तोला, जमालगोटाको बियाँ ३ तोला सबैलाई दन्तीमूलको काँढामा ३ घण्टा घोटेर १-१ रत्तीको गोली पार्नू। यसले ज्वर, आमवात, शोथ, अल्काई र कृमिरोगमा आराम गराउँछ। यसको अनुपान त्रिकटुको चूर्ण अथवा अदुवाको रस र चिनी हो।

ज्वरधूमकेतु रस – शुद्ध पारद १ तोला, समुद्रफेन १ तोला, शुद्ध हिंगुल १ तोला, शुद्ध गन्धक १ तोला सबैलाई अदुवाको रसमा ३ दिनसम्म घोटेर २-२ रत्तीको गोली पार्नू। यसबाट नयाँ ज्वर शान्त भएर जान्छ।

महाज्वराङ्कुश रस – शुद्ध पारद १ भाग, शुद्ध गन्धक १ भाग, शुद्ध वत्सनाभ १ भाग, शुद्ध कालो धतुरोको बियाँको चूर्ण ३ भाग, सुठोको चूर्ण ३ भाग, मरिचको चूर्ण ३ भाग, पिप्लाको चूर्ण ३ भाग सबैलाई ज्यामीरको रसमा ३ घण्टासम्म घोटी २-२ रत्तीको गोली पार्नू। यसको सेवनले सबै किसिमका ज्वरहरूमा लाभ हुन्छ। गोली पार्नू अघि कागतीको रसमा घोटेपछि ३ घण्टा अदुवाको रसमा पनि घोट्नू अनि गोली पार्नू।

सर्वज्वरनाशक वटी – वंशलोचन, सुकमेल, गिलोय सत्, गुलबनप्सा, गावजवान, गुलाफको फूल, उन्नाव, शीरखिस्त सबै १-१ भाग, अभ्रक भस्म ३ भाग, मूँगा भस्म ३ भाग सबलाई मिसाई खलमा घोट्नू र ३-३ रत्तीको (३७५ मिलीग्राम)

गोली बनाउनू। यो गोली सबै किसिमका नयाँ तथा पुराना ज्वरहरूका लागि परीक्षित हो। यो अचूक छ। कमजोर, वृद्ध, बालक रोगी र गर्भिणी सबैको ज्वरका लागि रामबाण हुन्छ। यो ज्वर निकै बढेको बेलामा पनि दिन सकिन्छ। रुघाखोकी र इन्फ्लुएञ्जामा पनि निकै काम लाग्छ।

शीतज्वरारि वटी (परीक्षित) – शुद्ध मिठो विष, शुद्ध टङ्कण (स्वाग), मकरध्वज, कौडी भस्म, मूँगा भस्म, लौह भस्म प्रत्येक ३-३ माशा (ग्राम), मरिच १ तोला, सुकमेल १ तोला, दालचिनी १ तोला सबलाई यथोचित रूपमा कूट-छान गरी कागतीको रसमा घोटेर एक-एक रत्तीको गोली बनाऊ। यो गोली अधिक ज्वर आएको बेलामा दिनुहुँदैन। दिने बेलामा यो गोली महमा घोटेर दिनुपर्छ। एक दिनमा ४-५ गोलीसम्म दिन सकिन्छ। यो गोली जाडो लागेर आउने ज्वरो, कफ-खोकी, मुटुको कमजोरी, मलेरिया, यकृत् वा फियो बढेर जाने ज्वरहरूका लागि रामबाण हो। जहाँ कुनेन फेल हुन्छ त्यहाँ यो फेल हुँदैन।

यकृत्प्लीहोदरारि लौह – लौह भस्म १ तोला, अभ्रक भस्म ६ माशा रस सिन्दूर ३ माशा, त्रिफला ४.१/२ तोला सबलाई ३३.१/२ तोला पानीमा राखेर पकाउनू। जब आठौं भाग अर्थात् ४ तोला ८ माशा २ रत्ती पानी बाँकी रहन्छ, तब उतार्नू। फेरि त्यसमा ४ तोला ८ माशा २ रत्ती घिउ, ३ तोला शतावरीको चूर्ण (कुरिलो), ३ तोला गाईको दूध मिसाई फेरि पकाउनू। सुरुमा पकाउँदा लौह भस्म आधा मात्र राख्नू र आधा बाँकी राख्नू। दोस्रो पटक दूध राखी पकाउँदा बाक्लो भएर आएपछि बाँकी आधा लौह भस्म राख्नू र चलाइदिनू। पछि त्यसमा मिश्री, वनकपास, चव्य (चाबो), वायुविडंग, लोध, शरपुंखा (साकिनू), सुठो, पाँचै ओटा नुन, यवक्षार, वृद्धदारक, ज्वानु, मैन हरेक १.१/२ तोला मिसाइदिनू। यो १.१/२ देखि ३ माशा(१.५-३ ग्राम) सम्म तातो पानीसंग खान दिनू। यसबाट फियो र कलेजो बढेको, वायुगोला आदि रोग नष्ट हुन्छन्।

अथवा आगोमा फुराएको फिटकिरी र स्वाग २-२ तोला लिएर मसिनो चूर्ण बनाई मिसाइ राख्नू। त्यसबाट बिहान-बेलुका २-२ रत्ती बंगला पानमा राखी २१ दिनसम्म खानाले धेरै नै बढेको फियो र वायुगोलाको रोग नष्ट हुन्छ।

मृतसञ्जीवनी वटी – पिप्लाको चूर्ण १ तोला, शुद्ध वत्सनाभ विष १ तोला, शुद्ध हिंगुल २ तोला सबलाई जामुनको पातको रससँग खल गरेर मूलाको बियाँ बराबरको गोली बनाऊ। यसलाई चिसो पानीसँग सेवन गर्नाले ज्वर, अतिसार, हैजा र सन्निपात ज्वर आराम हुन्छन्।

गगनसुन्दर रस – शुद्ध टङ्कण (स्वाग), शुद्ध हिंगल, शुद्ध गन्धक, अभ्रक भस्म समभाग लिएर तीन दिनसम्म आँककको पातको रसमा खल गरी २-२ रत्तीको

गोली बनाऊ । यो औषधी १-२ गोली राल अर्थात् शालधूपको चूर्ण २ रत्ती र महसँग खान दिनू । यसबाट बढेको ज्वर, अतिसार, आमशूल तथा रक्तातिसार निको हुन्छ । अग्नि बढ्छ । भोजनमा बाखाको दूध र महीसँग भात दिनुपर्छ ।

अमृतारिष्ट – गुर्जो लहरो १२.१/२ सेर, दशमूल १२.१/२ सेर, दुवैलाई २५६ सेर अथवा ६ मन १६ सेर पानीमा राखी पकाऊ । पानी जति जलेर २४ सेर बाँकी भएपछि चुल्होबाट उतारी छान्नू । त्यो छानिएको पानीमा ३१.१/२ सेर १ वर्ष पुरानो चाकु, धातकी पुष्प (धयेंरो) १ सेर, कालो जिरा २ सेर, पित्तपापडा १ पाउ, सप्तपर्ण बोक्रा (छतिवन) ४ तोला, सुठो ४ तोला, मरिच ४ तोला, पिप्ला ४ तोला, नागरमोथा ४ तोला, नागकेशर ४ तोला, कटठकी ४ तोला, अतीस ४ तोला, इन्द्रजौ ४ तोला सबलाई दरदरे हुने गरी कुटेर मिसाइदिनू र माटाको ठूलो भाँडोमा भरी मुख राम्ररी बन्द गरेर एक महिनासम्म राखी दिनू । त्यसपछि छानेर प्रयोग गर्नू । यस अरिष्टबाट सबै किसिमका ज्वरहरू शान्त हुन्छन् ।

औषधीसम्बन्धी केही नियमहरू –

सबै कामहरूका लागि नयाँ पदार्थ लिनुपर्दछ तर वयुविडङ्ग, पिप्ला, चाकु, चामल, घिउ, मह, धनिया र हीङ पुरानो लिनुपर्छ । यी सबैलाई १ वर्षपछि पुरानो मानिन्छ । चाकु पुरानो पाइएन भने नयाँलाई १२ घण्टा घाममा राखेर मात्र काम चलाउनू ।

काँढा बनाउनुपर्दा काँढामा पर्ने जति औषधीहरू छन्, सबैलाई बराबर भागमा १ पटकका लागि २ तोला जति लिएर पानीमा राखी पकाउनुपर्छ ।

ज्वरमा अनुपानको व्यवस्था – वातज ज्वरमा मह, गुर्जोको रस वा चिराइतोको काँढा अनुपान गर्नुपर्छ । पित्त ज्वरमा पित्तपापडाको रस, गुर्जोको रस र नीमको बोक्राको काँढा अनुपानको रूपमा दिनुपर्छ । कफज ज्वरमा मह, तुलसीको पात, अदुवाको रस र पानको रस अनुपानको रूपमा दिनुपर्छ । विषम ज्वरमा पिप्लाको काँढा, तुलसीको पातको रस, मरिचको चूर्ण, मह र बेलको पातको रस अनुपान हुन्छ ।

अतिसार – अहित आहारको सेवन आदि कारणहरूले बढेको कफले अग्निलाई मन्द बनाएपछि खाएको अन्न राम्ररी पच्न पाउँदैन, त्यो कफ मलका साथ पातलो भएर बारम्बार पखालाको रूपमा बढी मात्रामा निस्कन्छ । त्यस्तो अवस्थालाई अतिसार भनिन्छ ।

अतिसार ६ प्रकारको हुन्छ – वातज, पित्तज, कफज, त्रिदोषज, शोकज र आमज ।

१. **वातज अतिसारको लक्षण** – यसमा पेट दुख्ने, पेटमा गडगड आवाज आउने हुन्छ । गुदद्वार बाहिर निस्कला जस्तो हुन्छ, कम्मर, पिंडौला र तिघ्रा, पिठ्यूँ

दुख्छन्, दिसा अलिअलि मात्रामा बारम्बार फींजसहित हुन्छ । मलको रङ्ग केही रातो हुन्छ र मल निस्कँदा शब्द पनि हुन्छ ।

२. पित्तज अतिसारको लक्षण – यसमा मल पहेंलो, हरियो वा कालो पित्तसहित हुन्छ । मल दुर्गन्धयुक्त र तातो हुन्छ । मल वेगका साथ निस्कन्छ । शरीरमा दाह हुन्छ, प्यास बढी लाग्छ, मूर्च्छा हुनसक्छ । गुदद्वार तात्ने-पाक्ने हुन्छ ।

३. कफज अतिसारको लक्षण – यसमा सेतो, बाक्लो, कफमिश्रित मल आउँछ । रोमाञ्च हुन्छ, वाकवाक लाग्ने, आलस्य र निद्रा भइरहने हुन्छ । अरुचि हुन्छ, अग्नि मन्द हुन्छ, दिसा गरेपछि पनि पुनः दिसा हुने जस्तो लागिरहन्छ ।

४. त्रिदोषज अतिसारको लक्षण – यसमा मल बँदेलको बोसो अथवा मासु पकाएको पानी जस्तो अनेक रङ्गको हुन्छ । त्यो अति चिल्लो दुर्गन्धित र कम कम मात्रामा निस्कन्छ । साथमा प्यास बढी लाग्ने, शरीरमा दाह हुने, ज्वर आउने हुन्छ । पेट बढी दुख्ने अथवा नदुख्ने हुन्छ । बालक र वृद्ध रोगीमा यो असाध्य हुन्छ, अरूमा कष्टसाध्य हुन्छ ।

५. शोकज अतिसार – कुनै प्रिय व्यक्तिको शोक परेपछि त्यसको असरबाट हुने अतिसारलाई शोकज अतिसार भनिन्छ । यसमा मलको रङ्ग राती गेडीको जस्तो रगत मिसिएको हुन्छ, अथवा रगतमात्र हुन्छ । त्यसमा गन्ध हुन वा नहुनसक्छ । यो कष्टसाध्य हुन्छ ।

६. भयज अतिसार – भय अर्थात् डरका कारण वायु र पित्तको प्रकोप भएमा भयज अतिसार उत्पन्न हुन्छ । यसमा वातज र पित्तज अतिसारका लक्षणहरू देखिन्छन् । तातो र पानीजस्तो मल प्रवाहको रूपमा निस्कन्छ । यसका लागि वातनाशक चिकित्सा गर्नुपर्छ ।

अतिसारको अवस्थाभेद – अतिसारको उपचार गर्दा त्यो कुन अवस्थाको भन्ने विचार पुऱ्याएर गर्नुपर्छ । त्यसको प्रारम्भिक अवस्थालाई आम अतिसार र पछिको अवस्थालाई पक्व अतिसार भनिन्छ ।

१. आम अतिसार – वात आदि दोषयुक्त मल यदि पानीमा हाल्दा डुब्छ, बढी दुर्गन्धित छ र चिल्लो पनि छ भने त्यस अवस्थालाई आम अतिसार भनिन्छ ।

२. पक्व अतिसार – यदि मल पानीमा राख्दा नडुबी माथि नै उत्रन्छ, दुर्गन्धित हुँदैन र रोगीको शरीरमा हलुंगो भएको आभास हुन्छ भने त्यस अवस्थालाई पक्व अतिसार भनिन्छ ।

रक्तातिसार – पित्तज अतिसार रोग लागेको मानिसले बढी पित्तकारक (अमिलो, नुनिलो, पिरो-तातो) पदार्थहरू खाइरहेमा रक्तातिसार रोग उत्पन्न हुन्छ । यसमा पातलो मलका साथ रगत पनि आउन थाल्छ ।

प्रवाहिका (Dysentry) – अपथ्य खाने कुराहरू खाइ रहने मानिसको वायु कुपित भएर कफलाई तल पुऱ्याउँछ । त्यसले गर्दा दिसा बस्ने बेलामा बल गरेपछि अलिकति दिसा पटक-पटक हुन्छ, दिसामा कफ मिस्सिएको चिप्लो हुन्छ ।

अतिसार र प्रवाहिकामा भिन्नता – अतिसारमा अनेक प्रकारका धातुहरू निस्कन्छन्, प्रवाहिकामा कफ, पित्त र रक्त निस्कन्छन् । प्रवाहिकामा पेट काटेपछि आम र रगतसहित दिसा हुन्छ । यो रोग आन्द्रामा घाउ हुनाले उत्पन्न हुन्छ ।

प्रवाहिका चार किसिमको हुन्छ – वातज, पित्तज कफज र रक्तज । वातज प्रवाहिकामा शूल बढी हुन्छ । पित्तज प्रवाहिकामा दाह विशेष हुन्छ । कफज प्रवाहिका कफ अर्थात् चिल्ला दिशा पटक पटक आउने हुन्छ रक्तज प्रवाहिकामा दिसासँगै रगत आउँछ ।

अतिसारका उपद्रवहरू – शोथ, ज्वर, शूल, तिर्खा, खोकी, श्वास, अरुचि, वमन, मूर्च्छा, हिक्का, यी अतिसारमा उपद्रवका रूपमा देखिने लक्षण हुन्छ । यी सम्पूर्ण उपद्रवसहित अतिसार भएमा त्यो असाध्य हुन्छ ।

अतिसारको असाध्य अवस्था – जसको गुदद्वार बाहिर निस्कन्छ, मलत्याग गरेपछि पुनः आफ्नो अवस्थामा पुग्दैन, शरीर क्षीण हुँदैजान्छ, शूल र अजीर्ण भइरहन्छ, शरीरका अङ्गहरू चिसा हुन्छन्, जठराग्नि पनि मन्द भएर गएको हुन्छ त्यो रोगी बाँच्दैन । जसका हात-खुट्टा, सन्धि र औंलाहरू सुनिएका हुन्छन्, पिसाब रोकिन्छ, मल अति तातो हुन्छ त्यो रोगी पनि बाँच्दैन ।

जुन रोगीको मल धेरै कालो अथवा अति सेतो अथवा अति पहेंलो वा बढी रातो र तातो हुन्छ त्यो पनि बाँच्दैन ।

जसको मल सडेको, अति दुर्गन्धित, मयूरको प्वाँखको चाँद (पहेंलो भाग) जस्तो रङ्गको हुन्छ त्यो रोगी असाध्य हुन्छ ।

यदि रोगीले पथ्यको सेवन नगरी अपथ्य सेवन गर्छ भने ऊ बिस्तारै कमजोर हुँदै जान्छ, उसको शरीर सुन्निएर आउँछ, बेहोसी हुन थाल्छ, जिब्रो सेतो हुन्छ अनि रोग असाध्य हुन्छ ।

अतिसार एवं अन्य रोगहरूको पहिचान – रक्तातिसारमा पखाला चल्दा मलमा मिसिएर रगत आउँछ तर अल्काइमा गुदद्वारबाट रगत आउँछ ।

अल्काइमा दिसा कब्जा भएर कडा हुन्छ । दिसा गर्नुभन्दा अघि अथवा पछि रगतको धार आउँछ, रक्तपित्तमा पनि रगतको धारा बग्छ तर रक्तातिसारमा रगत आम अथवा मलसँगै आउँछ अर्थात् यदि पखालासँगै रगत पनि मिसिएर आउँछ भने रक्तातिसार अथवा डिसेन्ट्री सम्झनुपर्छ ।

दिसामा रगत वा पिप बढी मात्रामा खस्छ भने कलेजोमा घाउ भई त्यसको

स्राव आन्द्रामा पुगेको भनी संझनुपर्छ ।

जुन रोगीको खुट्टाको नाडी हाँसको जस्तो र हातको नाडी भ्यागुताको जस्तो चल्छ त्यसलाई मन्दाग्नि अथवा संग्रहणी रोग लागेको बुझ्नुपर्छ ।

अतिसारमा नाडी शीतकालको जुका जस्तै मन्द भएर चल्छ, अर्थात् बलहीन भएर चल्छ ।

अतिसारको चिकित्साको सिद्धान्त

अतिसारको चिकित्सामा पहिले मल आम हो वा पक्व हो भनी निर्णय गर्नुपर्छ । आम अवस्थामा सुरुमा पखाला रोक्ने कडा औषधी दिनु हुन्न । त्यस अवस्थामा पेट भित्रको काँचो मललाई रोकिदिनाले कामला, अम्लपित्त, फियोको रोग, प्रमेह आदि अनेक रोग हुने सम्भावना हुन्छ ।

सामान्यतया सबैको आम अतिसार रोक्नुहुँदैन तर बालक, वृद्ध, क्षीण तथा गर्भिणीको अतिसारलाई तुरुन्त रोक्नुपर्छ । उपचार गर्ने क्रममा रोगीको जिभ्रो बराबर हेर्दै गर्नुपर्छ । यसबाट रोगीलाई आराम भएको वा नभएको थाहा भइरहन्छ । यदि जिभ्रो मैलो नै छ भने पाचन शक्तिमा गडबडी छ ।

यदि जिभ्रो मुस्किलले बाहिर आउँछ, रोगीको इच्छा अनुसार भित्र जाँदैन, रोगी दु:खी र निर्बल छ, । रोगले चाप्दै लगेको छ, अझ जिभ्रो पनि खटिरा आई पाके जस्तो भयो भने खतराको संकेत हो ।

मृत्युको समय जिभ्रो खस्रो, दाउरा जस्तो कडा र गतिरहित हुन्छ । जिब्रो कडा भएर जानु मृत्युको सङ्केत हो ।

हरेक रोगमा जिभ्रो सुकेपछि फेरि रसिलो हुन लाग्यो भने रोग निको हुन लागेको सम्झनू ।

अतिसारमा आम र पक्व अवस्थाको निश्चय भएपछि त्यही अवस्था अनुरूप चिकित्सा सुरु गर्नुपर्छ ।

आम अतिसारको चिकित्सा – हर्रो, दारुहरिद्रा, बोझो, नागरमोथा, सुठो, अतीस यी सबैको काढाले आम अतिसारलाई ठीक पार्छ । पाठा, हीङ, अजमोदा, बोझो, पिप्ला, पिप्लाको जरा, चावो र सुठो सबैलाई कुठी छानेर चूर्ण बनाउनू । त्यसपछि सिंधे नुन मिसाएर तातो पानीसँग खानू । यसबाट पीडासहित आम अतिसार ठीक हुन्छ ।

हर्रो, अतीस, हीङ, कालो नुन, बोझो, सिंधे नुन सबैलाई एकै पटक पिनेर लेदो बनाऊ । त्यसलाई तातो पानीसँग खानाले आमको पाचन हुन्छ र अतिसार नष्ट हुन्छ । यो परीक्षित हो ।

सुठोलाई अडेरको जराको रससँग पिनेर डल्लो पार्नू । त्यसलाई जामुनाको पातले बेरेर धागोले कस्नू । पछि त्यसमाथि कपडाले बेर्नू र २ अङ्गुल बाक्लो हुने गरी माटोले लिप्नू अनि घाममा सुकाउनू । त्यसपछि आगोमा राखी पाक्न दिनू । पाकेर रातो भएपछि निकाली सेलाउन दिनू । भित्र भएको सुठोको डल्लोलाई निकाली त्यसबाट रस निचोरेर रोगीलाई खान दिनू । अथवा फेरि पिनेर सेवन गर्न दिनू । यसले आम अतिसार र शूल नष्ट गराउँछ, पाचन शक्ति पनि बढाउँछ । उक्त पुटपाक विधिबाट तयार भएको रसको मात्रा ६ माशादेखि ३ तोला (६ मि.लि.-३६ मि.लि.) सम्म हुन्छ ।

धनियाँ, सुगन्धवाल, बेलचाना (काँचो बेल) नागरमोथा, सुठो यिनको काँढा अतिसारका लागि राम्रो औषधी हुन्छ । पित्तको कारण भएको रक्तमय अतिसारमा यसबाट अतिलाभ हुन्छ ।

सुठो, पिप्ला, मरिच, हिङ, बोझो, कालो नुन र हर्रोको चूर्ण तातो पानीसँग खानाले आम अतिसार नष्ट हुन्छ ।

पक्व अतिसारको चिकित्सा - लज्जावती (बुहारी झार), धातकीको (घयेंरो) फूल, मञ्जिष्ठा, लोध यिनको चूर्ण १ मात्रा (३ ग्राम) महमा मिसाएर चौलानी पानीसंग खानाले पक्व अतिसार निको हुन्छ ।

मोच रस (सिमलको खोटो), लोध, अनारदानाको बोक्रा, अनारको रुखको बोक्रा सबैको चूर्ण महमा मिसाई खाएपछि चौलानी पिउन दिएमा पक्व अतिसार निको हुन्छ ।

नागरमोथा, इन्द्रजौ, मोचरस, काँचो बेल, धातकीको फूल लोध सबैको चूर्ण चाकुमा मिसाई महीसँग खानाले गङ्गाको धारा समान वेगसित आउने अतिसार पनि थामिन्छ ।

किरा नलागेको काँचो र मोटो कुटीजको बोक्रा सिलौटामा कुठी चौलानीसंग पिनेर डल्लो पार, त्यसलाई पानीमा मुछेको गहुँको पिठोले चारैतिरबाट लपेट, त्यसमाथि २ अङ्गुल माटो चढाएर घाममा सुकाऊ । अब आगोमा पकाऊ । पाकेर बाहिरको माटो रातो भएपछि आगोबाट ओराल र सेलाउन देऊ । चिसो भएपछि भित्र भएको कुठजको डल्लो झिकी रस निचोर । यो कुटज पुटपाक हो । युवकको लागि यसको मात्रा ६ माशादेखि २ तोलासम्म (६ ग्राम-२५ग्राम) मह मिसाई खान दिनू । या अतिसारका लागि प्रधान परीक्षित औषधी हो । यसबाट ९० प्रतिशतलाई निको भएको छ ।

माथि उल्लेख भए अनुसार १/२ पाउ (१००ग्राम) काँचो बेल लिएर कुटेपछि चौलानीसँग पिनेर डल्लो पारी पुटपाक गरी रस निकाल्नू । यो २ तोला- ३

तोलासम्म हुन्छ। १ मात्रामा ४-५ माशा मोचरसको चूर्ण मिसाई बिहान-बेलुका खान दिएमा असाध्य अतिसार पनि ठीक हुन्छ। परीक्षित हो।

लौह पर्पटी प्रयोग – शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, लौह भस्म सबै १-१ तोला लिएर पहिले पारद र गन्धकको कज्जली पार्नू र पछि लौह भस्म मिसाई घोट्नू। यसपछि घोटिएको कज्जलीलाई सानो कराहीमा राखी मन्द मन्द आगोमा पकाउनू। जब त्यो पग्ली लेदो जस्तो भएर आउँछ, तब त्यसलाई केराको पातमा फिंजाई माथिबाट केराकै अर्को पात राखेर थिचिदिनू र गोबरले ढाकी दिनू। २ घण्टा पछि गोबर र पात हटाई पापड जस्तो बनेको औषधी झिकेर राख्नू। यो लौह पर्पटी हो। यसको मात्रा १/२ रत्ती (६२ मीलीग्राम) मात्र हो। बिस्तारै बढाएर १ रत्तीसम्म दिनसकिन्छ। यसको अनुपान चिसो पानी अथवा धनियाँ र जिराको काँढा हो। यो औषधी बिहान-बेलुका ख्वाउनाले सङ्ग्रहणी, अतिसार, एवं मन्दाग्नि नष्ट हुन्छ। यसमा स्वर्ण १.१/२ रत्ती मिसाई स्वर्ण पर्पटी पनि बनाउन सकिन्छ, त्यसले बढी फाइदा दिन्छ।

कुटजको बोक्रा ५ सेर कटठेर २५ सेर पानीमा पकाऊ, ६.१/४ सेर पानी बाँकी छँदा ओरालेर छान, त्यस काँढालाई फेरि मन्द आगोमा पकाऊ, पाकेर बाक्लो भएपछि त्यसमा सुठो, मरिच, पिप्ला, जाइफल, माजूफल, जाइपत्री, ल्वाङ्, वायुविडङ्ग, मरोडफली, नरम काँचो बेल, नागकेशर सबैको समभाग चूर्ण मिसाई चलाऊ र झट्ट उतार। त्यो अलि सेलाएपछि चना बराबरको (२ रत्ती) गोली बनाऊ। अतिसार, सङ्ग्रहणीमा यो गोली हीङ राखेको महीसँग अथवा सुठोको काढासँग दिनुपर्छ। साना बालकहरूलाई समेत यो औषधी निकै उपयोगी छ। अतिसार, सङ्ग्रहणी, पाण्डु, जीर्ण ज्वर, सबैलाई आराम गर्छ। पाण्डुरोगमा यो औषधी गोमूत्रसँग दिनुपर्छ। परीक्षित हो।

जाइफल ६ माशा, छोहाडा ६ माशा, शुद्ध अफिम ६ माशा सबलाई खलमा राखी पानको रसमा खूब घोट्नू। त्यसपछि १-१ रत्तीको (१२५ मि.ग्रा.) गोली बनाउनू। २-३ गोली मोहीसँग खानाले भयंकर अतिसार ७ दिनमैं आराम हुन्छ। परीक्षित हो।

अर्को शुद्ध कपूर, शुद्ध हिंगुल, शुद्ध अफीम, नागरमोथा, इन्द्रजौ, जाइफल सबै ६-६ ग्राम खलमा राखी अदुवाको रसमा घोट्नू। फेरि १-१ रत्तीको (१२५ मि.ग्रा.) गोली पार्नू। यस गोलीको सेवनले सबै किसिमको अतिसार, रक्तातिसार निश्चय नै ठीक हुन्छन्। मात्रा २ अथवा ३ गोली, बिहान-बेलुका दिनुपर्छ। यो धेरैपल्ट परीक्षित भैसकेको छ।

भुटेको शुद्ध टङ्कण (स्वाग) १ ग्राम, शुद्ध हिंगुल ९ ग्राम, शुद्ध अफिम ४ ग्राम खलमा घोटी गोल मरिचसमान (१२५ मि.ग्रा.) गोली बनाउनू। यदि पखाला रातमा

बढी हुन्छ भने यो १-१ गोली बिहान-बेलुका महसँग खान दिनू, यदि दिनको समय बढी हुन्छ भने कागतीको रसमा ख्वाउनू । परीक्षित हो ।

इन्द्रजौ, नागरमोथा, धयेंरोको फूल, काँचो बेल, लोध, सुठो, मोचरस सबलाई कूटछान गरी चूर्ण बनाउनू । ३-६ ग्रामसम्म औषधीको मात्रामा आधा मिश्री मिसाई चिसो पानीसँग खानू । यो अतिसारमा अनेक पटक परीक्षित भैसकेकोछ ।

भाङ्ग्रा (भृङ्गराज)को रस दहीका साथ खानाले सबै किसिमको अतिसार ठीक हुन्छ ।

तालमखानालाई दहीको साथमा खाए पनि अतिसार ठीक पार्छ । परीक्षित हो ।

कुठजको जराको बोक्रा र अतीस दुवैलाई कुटी, कपडछान गरी चूर्ण बनाऊ । यसलाई महका साथ दिनाले सबै किसिमको अतिसार ठीक पार्छ ।

दशमूलको काँढामा सुठो मिसाई पिउनाले अतिसार, सङ्ग्रहणी र शोथमा लाभ हुन्छ परीक्षित हो ।

२ माशा जाइपत्री दहीको तर वा गाईको दहीसँग लगातार ७ दिनसम्म खानाले बढेर गएको अतिसारलाई आराम गर्छ । परीक्षित हो ।

शुद्ध कुचिला, अफिम, सेतो गोल मरिच प्रत्येक १२ ग्राम लिएर कुटी छानी चूर्ण बनाऊ । त्यसलाई खलमा राखी अदुवाको रससँग ३ घण्टा घोट्नू । पछि १२५ मि.ग्रामका गोली पार्नू । यो १ गोली सुठोको चूर्ण र चाकुसँग खानाले अतिसार र हैजाका लागि रामबाण हो ।

कपूर, अफिम, भुटेको हिङ पिनेर १-१ रत्तीको गोली बनाऊ । यो गोली बिहान-बेलुका १-१ ओटा चौलानीसँग ख्वाउनू । यसबाट पखाला, पेट दुख्ने र वमन आराम हुन्छ । परीक्षित हो ।

गर्भवती महिलाको पखालाका लागि- केवल बाख्राको दूध खानाले गर्भवतीको अतिसार ठीक हुन्छ ।

ईसबगोल ४ माशा (ग्राम) लाई पानी २ तोला (२५ मि.लि.) मा भिजाएर अलिकति मिश्री मिसाएर भोजनको बीचमा खान दिनाले गर्भिणी महिलाको अतिसार ठीक हुन्छ ।

आँपको कोयाको भित्री भाग, बेल, लोथ धनियाँ समभाग लिएर चूर्ण बनाऊ र चूर्ण बराबरको मिश्री मिसाऊ । यो चूर्ण ३-३ ग्रामको मात्रा दहीसँग खान दिएमा गर्भिणीको अतिसार ठीक हुन्छ ।

भुटेको भाँग ५ रत्ती (६२५ मि.ग्रा.), अलैंची ६ रत्ती (७५० मि.ग्रा.), जिरा १ माशा, कालो जिरा १ माशा, सुकेको अनारदाना १ माशा, सुठो १ माशा, धनियाँ

३ माशा सबलाई कुठी छानी चूर्ण बनाएर राख्नू । यो चूर्ण २ ग्राम मात्रामा गाईको महीसँग खान दिएमा गर्भिणीको सबै किसिमको पखाला निको भएर जान्छ, अग्नि दीपन पनि हुन्छ ।

बालकहरूको अतिसारमा - कुटजको जरा, रतनजोतको जरा दुवैलाई महीको पानीमा घोटेर अलिकति हिङ मिसाई खान दिनाले बालकको बढ्दो अतिसारलाई पनि आराम दिन्छ । (परीक्षित)

बालकलाई बारम्बार पातलो दिसा भइरहेमा असली केशर १-२ चामल बरावर घिउमा मिसाई चाट्न दिनु । पखाला हुन रोकिन्छ । परीक्षित हो । केशर, अफीम, हिङ समभाग लिएर पानीमा घोटेर बाजरा बराबर गोली बनाऊ । बिहान बेलुका १-१ गोली दूध वा महमा घोटी ख्वाउनाले बालकको पुरानो अतिसार आराम हुन्छ । परीक्षित हो ।

बेल १ माशा, सेतो खयर १ माशा मसिनो गरी पिन्नू । यो योग ४ रत्तीको मात्रामा आमाको दूधसँग दिएमा बालकको दाँत आउने समयको पखाला रोकिन्छ ।

अतीस ४ रत्तीको मात्रामा आमाको दूधमा घोटेर दिनको २-३ पटक खान दिएमा बालकको पखाला रोकिन्छ ।

बेललाई सूपको अर्कमा घोटेर बालकलाई चटाउनाले रातो हरियो पखाला बन्द हुन्छ ।

बेल, सुठो, जाइफल, नागकेशर, अलैंची समभाग लिएर कुटी छानी चूर्ण बनाउनू । त्यसलाई खलमा राखी पोस्तदानाको काँढासँग घोट्नू र चना बराबरको गोली पार्नू । बालकको आयु अनुसार १ वा आधा गोली आमाको दूधमा घोटेर ख्वाउनाले हरियो-रातो पखाला बन्द हुन्छ । परीक्षित हो ।

विशेष चिकित्सा -

वातातिसारनाशक योग - बोझो, अतीस, नागरमोथा, इन्द्रजौ यी सबैको काँढा वाततिसारनाशक हुन्छ ।

इन्द्रजौ नागरमोथा, लोध, बेल, आँपको कोयाभित्रको गुदी, धयेंरोको फूल यी सबैको चूर्ण बिहान सबेरै भैंसीको पातलो महीसँग खान दिएमा प्रबल वातातिसार आराम भएर जान्छ । यो परीक्षित हो ।

पित्तातिसारनाशक योग - काँचो बेल, नागरमोथा, इन्द्रजौ, सुगन्धवाल, उत्तिस, सबैको काँढाबाट आमयुक्त पित्तातिसार शान्त हुन्छ ।

रसाञ्जन, अतीस, कुटजको बीज र बोक्रा, धयेंरो, सुठो यी सबलाई कुटी-छानी चूर्ण बनाइलिनू। बिहान-बेलुका महमा मिसाई चौलानीसँग सेवन गर्नाले प्रबल पित्तातिसारलाई नाश गर्छ। यसबाट अग्नि दीप्त हुन्छ र शूललाई पनि तुरुन्त नाश गर्छ। परीक्षित हो। लज्जावती (बुहारीझार), धयेंरो, काँचो बेल, कालो नुन, बीरे नुन, अनारको बोक्रा सबैलाई पिनेर चौलानीसँग मह मिसाई खानाले पित्तातिसारका साथै पित्तसम्बन्धी अरू रोगलाई समेत निको पार्छ।

कफज अतिसारनाशक योग – चव्य, अतीस, नागरमोथा, बेल, सुठो कुटजको बोक्रा, इन्द्रजौ, हर्रो यी सबैको काँढाले कफज अतिसारलाई नाश गर्छ।

भुटेको हिङ, कालो नुन, सुठो, मरिच, पिप्ला, हर्रो, अतीस, बोझ्रो यी सबैको चूर्ण तातो पानीसँग खानाले कफज अतिसार नष्ट हुन्छ।

हर्रो, नागरमोथा, सुठो, बेल, काकडासिंगी यी सबैको काँढाले कफज अतिसारमा आराम दिन्छ।

रक्तातिसारनाशक योग – कुटजको बोक्रा, उत्तिस, बेल, नागरमोथा, खस, सबैको काढा शूल अथवा वेदनासहितको रक्तातिसारको नाशक हुन्छ। परीक्षित हो।

रसाञ्जन, अतीस, कुटजको बोक्रा, धयेंरो, सुठो, इन्द्रजौ यी सबैलाई पिनेर चूर्ण बनाऊ। त्यस चूर्णमा मह मिसाई चौलानीसँग सेवन गर्नाले रक्तातिसार निश्चय नै ठीक हुन्छ। परीक्षित हो।

हर्रो, बोझ्रो, अतीस, सौवर्चल नुन, हिङ, इन्द्रजौ सबैलाई कुटी छानी चूर्ण बनाउनू। यसको सेवन गर्नाले गुदद्वारमा शूलका साथै रक्तातिसार नाश भएर जान्छ। परीक्षित हो।

अनारको काँचो फलको बोक्रा, कुटजको बोक्रा, दुवैको काँढा चिसो भएपछि मह मिसाई खानाले रक्तातिसार ठीक हुन्छ। परीक्षित हो। यसका दुवै औषधी १-१ तोला लिएर १६ तोला पानीमा पकाउनू। जब पानी २ तोला बाँकी रहन्छ त्यसपछि छानेर खान दिनू।

सेतो चन्दन घोटेर त्यसमा मह र चिनी मिसाई चौलानीसँग पिउनाले रक्तातिसार, रक्तपित्त, प्रमेह यी रोगहरू शान्त हुन्छन्। परीक्षित हो।

काँचो बेलको गुदीमा चाकु मिसाई २ तोलाको मात्रामा खानाले रक्तातिसार ठीक हुन्छ। (परीक्षित)

बाखाको दूधमा काँचो बेल राखी पकाऊ। पाकीसकेपछि त्यसमा मिश्री, मोचरस, इन्द्रजौको चूर्ण राखी पिउनू। यसले रक्तातिसार नष्ट हुन्छ। (परीक्षित)

काँचोबेल, नागकेशर र रसाञ्जन समभाग लिएर कुटी छानी चूर्ण बनाउनू। यो चूर्ण ४ ग्रामको मात्रामा चौलानीसँग खान दिएमा रक्तातिसार, अल्काई र रक्तप्रदर समेत निको हुन्छ।

ईसबगोल ४ माशा (ग्राम) लिएर १०० मि.लि. पानी र १०० मि.लि. दूधमा पकाऊ। जब पानी जति सुकेर दूधमात्र बाँकी रहन्छ अनि मिश्री मिसाई खानू। यसबाट रगत आउने अतिसार र तिर्खा निको हुन्छ, पुरुषहरूको धातु पुष्ट भई धेरै बेरसम्म रुकावट हुन्छ।

अतिसारको अवस्थामा पेट दुख्ने, अजीर्ण (अपच) हुने भइरहेमा हिङ, सिंधे नुन, पिप्लाको चूर्ण, कालो मरिचको चूर्ण, सुठोको चूर्ण समभाग लिएर पानीमा मिसाई लेदो बनाउनू र पेटमा लेप लगाउनू। यसबाट पेट दुःख्ने र अजीर्ण निश्चय नै ठीक हुन्छ।

आलसको पातलो पुल्टिसमा कपूर मिसाई पेटमा बाँध्नु। यसले पनि शूल र अजीर्ण ठीक पार्छ। (परीक्षित)

अतिसारमा पथ्य खाने कुराहरू – अतिसारमा पुरानो चामलको भात वा माड, मुसुरोको दालको झोल, रहरको दालको झोल, गाईको दूध, दही, मही, अदुवा, सुठो, बेल, आदि खानुपर्छ। नयाँ अतिसारमा दूध दिनुहुँदैन, पुरानो अतिसारमा दूध अमृत हुन्छ।

अतिसारको रोगीलाई पानी पकाएर दसौं,सोह्रौं भाग बाँकी भएपछि खान दिनुपर्छ। अथवा सुठो राखी १६ गुना पानीमा पकाएको र आधा बाँकी भएको पानी दिनुपर्छ।

अपथ्य कुराहरू – अतिसार भएको बेलामा गहुँ, माष, जौ, हरियो सागपात खानुहुँदैन। चिल्लो भएको खाना पनि खानुहुँदैन। साथै रोगीले स्नान वा तेलको मालिस गर्नुहुँदैन। व्यायाम गर्ने, आगो ताप्ने काम पनि छोड्नुपर्छ।

प्रवाहिकानाशक उपायहरू – आम अतिसार सानो आन्द्रामा हुन्छ र प्रवाहिका ठूलो आन्द्रामा हुन्छ। आम अतिसारमा अनेक किसिमका तरल पदार्थहरू नपचेको मलका साथ निस्कन्छन् भने प्रवाहिकामा केवल कफ अथवा रगत मिसिएको कफ निस्कन्छ। बाँकी सबै कुरा दुवैमा समान हुन्छन्। यसको चिकित्सा प्रायः अतिसार जस्तै हुन्छ।

प्रवाहिकामा पेटको दुखाई कम पार्न तारपीनको तेल पेटमा मल्नुपर्छ।

३ ग्राम मैग्नेशिया ५० मि.लि. सूपको अर्कमा घोलेर ४-४ घण्टामा दिनको

३-४ पटक सेवन गराएमा २-३ पटक पखाला लाग्न सक्छ, त्यसपछि रोग चाँडै नै निको हुन्छ ।

एरण्ड तेलको (Caster oil) जुलाफले पनि राम्रो काम गर्छ । तेल घिउ, दही, मह, मिश्री, सुठोको चूर्ण र खुदो (उखुको रसबाट बनाएको) सबलाई मिसाई पिउनाले प्रवाहिकालाई आराम गर्छ ।

पिप्ला वा मरिचको चूर्ण दूधसँग खानाले पुरानो प्रवाहिकाको रोग ३ दिनमा ठीक हुन्छ ।

सेतो शालधूप र मोचरस (सिमलको खोटो) दुवै ४-४ रत्ती (५०० मिलीग्राम) लिएर चूर्ण बनाई दूधसँग ३-३ घण्टामा दिनाले प्रवाहिका रोग ठीक हुन्छ । (परीक्षित)

कुटज (कुँडे)को जराको बोक्रा १ तोला, अनारको बोक्रा १ तोला दुवैको काँढा बनाऊ । चिसो भएपछि त्यसमा ६ माशा मह मिसाई सेवन गराऊ । आमरक्तसहित अतिसार अथवा प्रवाहिका आराम भएर जान्छ । (परीक्षित)

काँचो बेलको गुदी र मिश्री ३-३ ग्राममा २ ग्राम नागकेशर मिसाई खानाले आमरक्तसहित प्रवाहिकाको भरपर्दो र परीक्षित रूपमा निवारण हुन्छ ।

मोचरस, नागकेशर २-२ ग्राम महमा मिसाएर दिएमा आमरक्तसहित वा रक्तातिसारको रोग शान्त हुन्छ । (परीक्षित)

सेतो राल अर्थात् शालधूपको चूर्ण र चिनी समभाग लिई त्यसबाट २-२ ग्राम दिनको दुई तीन पटक खानाले आम अतिसार अथवा प्रवाहिकामा आराम हुन्छ । (परीक्षित)

जाइफल, जाइपत्री १२-१२ ग्राम, ल्वाङ् १२ ग्राम, मोचरस १२ ग्राम, बरको कोपिला १२ ग्राम, अफीम ६ ग्राम, शुद्ध हिंगुल १२ ग्राम सबको चूर्णलाई पोस्त अर्थात् अफीमको फलको बोक्राको काँढामा घोटेर मटरकोसा बराबर (२५० मि.ग्रा.) गोली बनाऊ । यो औषधी १-१ गोली दिनको ३-४ पटक मिश्री राखी पकाएको पानी वा मिश्री सहित चौलानीसँग सेवन गर्न दिएमा पुरानो अतिसार, प्रवाहिका, रक्तातिसारमा आराम हुन्छ । (परीक्षित)

गुदद्वारमा जलन तथा बेर्नूको चिकित्सा - यदि धेरै पखाला लाग्नाले गुदद्वार पोल्ने वा पाक्ने भयो भने बाख्राको दूधमा मह र मिश्री मिलाई पिउनाले र त्यसैले गुदद्वारमा सेक्नाले आराम हुन्छ ।

पखालाको कारण बेर्नु निस्केर आएको छ भने उसमा घिउ वा तेल लगाई भित्र पसाइदिनुपर्छ । त्यसपछि मुसाको मासु पकाई त्यसलाई अडेरको पातमा राखेर

बिस्तारै गुदद्वारमा सेक्नुपर्छ । मुसाको बोसो गुदद्वारमा लेप गर्नाले बेर्नु निस्कने बन्द भएर जान्छ ।

कमलिनीका कोपिला ल्याई सुकाई कुटी छानी चूर्ण बनाऊ । त्यस चूर्णमा मिश्री मिसाई खानाले केही दिनमा नै बेर्नु निस्कने अवश्य बन्द हुन्छ । (परीक्षित)

कमल र कमलिनीका पातको चूर्ण मिश्री मिसाई खानाले र मुसाको बोसो गुदद्वारमा लेप गर्नाले गुदद्वारको सबै व्यथा निको भएर जान्छ । अनेक बार परीक्षा भएको छ ।

चून र दशमूल बराबर भाग लिएर काँढा बनाउनू र यिनैलाई बराबर लिएर लेदो (कल्क) पनि बनाउनू । त्यसपछि फलामको कराहीमा उक्त काँढा ४ भाग, कालो तिलको तेल १ भाग र उक्त दशमूलको लेदो १/४ भाग राखी मन्द मन्द आँचमा पकाउनू, तेलमात्र बाँकी हुँदा ओराल्नू । चिसो भएपछि छानेर सिसीमा भरेर राख्नू । यो तेल लगाउनाले बेर्नु निस्कने र भगन्दर दुवै ठीक हुन्छ ।

यदि कुनै महिलाको बेर्नु निस्कन्छ भने सूर्यमुखीको फूलको रस निकाली हातमा दली हात गुदद्वारमा राख्न भन्नू । ३-४ दिन यसो गर्नाले बेर्नु निस्कने बन्द हुन्छ ।

आँपको पात, जामुनुको पात, दुवैको रुखको बोक्रा पनि कुटेर काँढा बनाई त्यसैले गुदद्वार धुने गर्नाले केही दिनमैं बेर्नु निस्कने बन्द हुन्छ ।

बाख्राको पुच्छरको खरानी, माजफल, अनारको फूल, अनारको बोक्रा, भुटेको फिटकिरी, समभाग लिएर कुटी छानी चूर्ण बनाउनू र गुदद्वारमा छर्कनू । यसबाट बेर्नु निस्कने बन्द भएर जान्छ ।

अण्डाको सेतो भागलाई गुदद्वारको भित्र र बाहिर लगाउनाले गुदद्वारको सूजन र दुखाई शान्त हुन्छ ।

जौको पिठो, मुसुरोको पिठो, अण्डाको सेतो भाग यी सबैलाई बदामको तेलमा मिसाई लेप गर्नाले गुदद्वारको पीडा र सूजन शान्त हुन्छ ।

२. ग्रहणी रोग (पाचनविकार सम्बन्धी रोग)

ग्रहणी आमाशयपछिको र सानो आन्द्राभन्दा पहिलेको भागको नाम हो । यसले पाचनका लागि आएको अन्नलाई केही समय पाचन प्रक्रिया भइञ्जेल ग्रहण गर्छ र पाचन भएको अन्नलाई अगाडि धकेल्ने काम गर्छ । त्यस ग्रहणीमा कुनै दोष

उत्पन्न भयो भने पाचनशक्ति कमजोर हुन्छ र खाएको अन्न नपचीकन तलतिर जानथाल्छ त्यही पखाला दिसाको रूपमा निस्कन थाल्छ । यसरी दूषित ग्रहणीले नपचेको मल बाहिर निकाल्न थालेपछि पीडा हुनथाल्छ । मल कहिले पातलो कहिले बाक्लो हुन्छ त्यसमा दुर्गन्ध आउँछ । यस्तो रोगलाई ग्रहणी रोग भनिन्छ । आम र वायुको सङ्ग्रह हुनाले सङ्ग्रहणी भनिन्छ । वस्तुतः ग्रहणीको जटिल अवस्थालाई सङ्ग्रहणी भनिन्छ ।

ग्रहणी रोग चार किसिमको हुन्छ – (१) वातज ग्रहणी, (२) पित्तज ग्रहणी, (३) कफज ग्रहणी, (४) सन्निपातज (त्रिदोषज) ग्रहणी । ग्रहणी रोगका अरू दुई अवस्थाहरूमा सङ्ग्रहणी र घटीयन्त्र ग्रहणी पर्छन् ।

वातज ग्रहणीको लक्षण – यसमा खाएको अन्न पच्न गाह्रो हुन्छ, अम्ल भएर पाक हुन्छ, शरीरका अङ्गहरूमा रुखोपन हुन्छ । भोक र प्यास बढी लाग्छ, मुख-घाँटी सुक्छ, आँखा अगाडि अँध्यारो देखिन्छ, कानमा कराएको अनुभव हुन्छ । रोगीलाई सबै किसिमको गुलियो-अमिलो खाने इच्छा हुन्छ तर खाएर पच्दैन, मन खिन्न भइरहन्छ । छातीमा दुख्ने, शरीर दुब्लाउने हुन्छ । अन्न पच्न लागेको बेलामा अथवा पचेपछि पेट फुल्ने गर्छ तर खाना खाएपछि आराम हुन्छ । उसलाई वातज गुल्म, हृदयरोग र प्लीहा (फियो)को रोग लागेको शङ्का भइरहन्छ । रोगीलाई दिसा बस्दा धेरै बेर लाग्छ र कहिले पातलो कहिले सुकेको आम एवं फिंजसहित मल थोरै मात्रामा शब्दका साथ निस्कन्छ । उसलाई कास र श्वास पनि भईरहन्छ ।

पित्तज ग्रहणीको लक्षण – यसमा बढेको पित्तले जठराग्निको पाचनक्रिया बिगारीदिन्छ । त्यसैले रोगीको शरीर पहेंलो हुन्छ । उसले नपचेको, निलो वा पहेंलो र पातलो (द्रव) दिसा गर्छ । उसलाई गन्हाउने, अमिलो डकार आउँछ, घाँटी र छातीमा पोल्ने भइरहन्छ । प्यास बढी लाग्ने र अन्न नरुच्ने हुन्छ ।

कफज ग्रहणीको लक्षण – यसमा कुपित कफले अग्निलाई मन्द बनाएको हुन्छ । अतः खाएको अन्न पच्न गाह्रो हुन्छ, वाकवाक लाग्ने, वमन हुने र अन्न नरुच्ने हुन्छ । मुखमा कफ लेसिए जस्तो हुन्छ र गुलियोपनको आभास हुन्छ । खोकी लाग्ने, थुक्न मन भइरहने, रुघा लाग्ने हुन्छ । छाती र पेट भारी हुन्छ । गुलियो किसिमको डकार आउँछ । जीउ गल्छ । दिसा आम र कफसहित एवं भारी हुन्छ । आलस्य भइरहन्छ ।

त्रिदोषज ग्रहणीको लक्षण – वातज, पित्तज र कफज तीनै किसिमका ग्रहणीको लक्षण पेट फुल्ने, घाँटी पोल्ने, वमन वा वाकवाकी हुने आदि देखिन्छन् ।

सङ्ग्रहणी (सङ्ग्रहग्रहणी)को लक्षण – यसमा आन्द्रा वा पेटमा आवाज भएको अनुभव हुने, आलस्य तथा कमजोरी देखिने हुन्छ । कम्मरमा दुखेपछि

पातलो, चिल्लो, चिप्लो मल बढी मात्रामा शब्दका साथ निस्कन्छ । यसरी १५ दिन, महिना दिनमा १० दिनमा एकपटक अथवा दिनदिनै पनि हुनसक्छ । यो रोग दिउसो बढ्ने र रातमा कम हुने गर्छ । यसले धेरै दिनसम्म दुःख दिन्छ र यसको उपचार गर्न पनि गाह्रो हुन्छ ।

घटीयन्त्र ग्रहणी – यसमा अपच हुने ग्रहणीका अरू लक्षणका साथ सुतेको बेलामा पेटको दुवैतिर दुख्ने र पेटमा पानी भरिन लागेको घैंटाको जस्तो आवाज आउने भइरहन्छ । रोगीले यस्तो अनुभव गर्छ । यो ग्रहणीको असाध्य अवस्था हो ।

वातज ग्रहणीनाशक योगहरू – ज्वानु, सुठो, मरिच, पिप्ला, सिंधे नुन, कालो जिरा, सेतो जिरा, घिउमा फुराएको हिङ, यी सबैको चूर्णलाई हिंग्वष्टक चूर्ण भन्छन् । यो चूर्ण घिउमा मिसाएर भोजनको पहिलो गाससँग खाएमा अग्निदीप्त हुन्छ र वायुको शमन हुन्छ ।

चित्रक (चितु), पिप्लाको जरा, यवक्षार, सज्जीखार (खाने सोडा) कालो नुन, सिंधे नुन, वीरे नुन, समुद्री नुन, सौंचर नुन, सुठो, मरिच, पिप्ला, शुद्ध हिङ, अजमोदा र चव्य (चाबो) यी सबैलाई कुटी छानी बिमिरोको रसमा अथवा अनारको रसमा घोटेर गोली पार्नू ।

वातज ग्रहणीको पक्व अवस्था आएपछि औषधीहरूद्वारा सिद्ध घिउको सेवन गराई चिकित्सा गर्नुपर्छ ।

बृहत् चाङ्गेरी घृत – सुठो, पिप्लाको जरा, चित्रक, गजपिप्पली, गोखुर, पिप्ला, धनियाँ, काँचो बेल, पाठा, ज्वानु यी सबैको चूर्ण जम्मा ८ तोला, शुद्ध गाईको घिउ ६४ तोला लिनू । अनि चाङ्गेरी अर्थात् चरिअमिलोको रस २५६ तोला र मही २५६ तोला लिएर कलई लगाएको कराहीमा मन्द आँचमा पकाउनू । जब सबै पानीमा अंश जलेर घिउमात्र बाँकी रहन्छ तब ओरालेर कपडाले छानी भाँडोमा राख्नू । यो बृहत् चाङ्गेरी घृत तयार हुन्छ ।[१]

---

१. घ्यू वा तेल पकाउँदा पूरा पाक भएको जाँच यसरी गरिन्छ -

(क) घ्यूको सबै फिंज शान्त भइपछि घ्यू सिद्ध भएको सम्झनू । तेलमा फिंज उठ्न थालेपछि तेल सिद्ध भएको बुझ्नू ।

(ख) घ्यू वा तेल पकाउँदा जुन औषधीको कल्क राखिएको छ त्यसलाई आगोमा राख्दा पड्कने वा आवाज आउने हुँदैन ।

(ग) औंलाहरूको बीचमा त्यसलाई मल्दा बत्ती जस्तो बन्छ ।

घ्यू वा तेल पकाउँदा तीन किसिमबाट पकाइन्छ - मृदु पाक, मध्यम पाक र खर पाक । मृदु पाक गरेको घ्यू वा तेल नस्यका लागि उपयोगी हुन्छ । मालिसका लागि खर पाक भएको घ्यू-तेल उत्तम हुन्छ । बाँकी सबै कामका लागि मध्यम पाक उत्तम हुन्छ । तेल घ्यू राम्ररी नपाकेको खण्डमा सेवन गर्दा तिनीहरूले मन्दाग्नि गराउँछन्, बढी डढेको खण्डमा दाह उत्पन्न गर्छन् ।

सुठोको चूर्णबाट बनाएको कल्क (लेदो) ४ भाग, गाईको घिउ ६ भाग, पानी ६४ भाग सबलाई मन्द आगोमा पकाऊ, पानी जति सुकेर घिउ मात्र बाँकी छँदा ओराली छान र उचित मात्रामा राख। यो 'शुण्ठी घृत' तयार हुन्छ। यसले वातरोग, सङ्ग्रहणी, फियो र ज्वर निको पार्छ।

सुठो, गुर्जो, नागरमोथा, अतीस, समभाग लिएर काँढा बनाई ख्वाउनाले वातज सङ्ग्रहणीमा निश्चय नै फाइदा गर्दछ। सबै प्रकारको आम अतिसारका लागि आरम्भमैं दिन सकिन्छ। (परीक्षित)

पित्तज ग्रहणीनाशक योगहरू – रसाञ्जन, अतीस, इन्द्रजौ, कुटजको बोक्रा, सुठो, धयेंरोको फूल सबै समभाग लिएर पिनी चूर्ण बनाउनू र मह एवं चौलानीसँग खान दिनू। यो पित्तज ग्रहणी, अल्काई, रक्तपित्त र अतिसारका लागि परीक्षित हो।

कुटकी, रसाञ्जन, सुठो, धयेंरोको फूल, हर्रो, इन्द्रजौ, नागरमोथा, कुटजको बोक्रा, भृङ्गराज इनको काढाले अत्यन्त बढी राखेको गुदाशूलयुक्त पित्तको सङ्ग्रहणीलाई नष्ट गर्दछ। (परीक्षित)

आँपको कोयाभित्रको गुदी, सुठो, अतीस, कुटजको बोक्रा समभाग लिएर आँपकै पातको रसमा ३ दिन घोट्नू र सिसीमा राख्नू। यसलाई ४-६ माशाको मात्रामा बिहान-बेलुका मिश्री मिसाई खान दिएमा पित्तज संग्रहणी, रक्तातिसार सबै आराम हुन्छन्।

कफज ग्रहणीनाशक योग – सुठो, नागरमोथा, वायुविडंग यिनको चूर्ण मही अथवा तातो पानीसँग सेवन गर्नाले कफको सङ्ग्रहणीलाई निश्चय नै ठीक पार्छ।

हर्रो, पिप्ला, सुठो, चित्रक (चितु), यिनको चूर्ण महीसँग सेवन गर्नाले शूलयुक्त कफको सङ्ग्रहणी निश्चय नै ठीक हुन्छ।

सुठोमात्रको चूर्ण भए पनि महीसँग दिएमा शूलयुक्त कफज सङ्ग्रहणी ठीक पार्छ। (परीक्षित)

त्रिकटु,आँपको रुखको बोक्रा, कटुजको बोक्रा सबलाई पिनेर चौलानीसँग सेवन गर्नाले कामला, अरुचि, अतिसार सब ठीक हुन्छन्। खाने सोडा, यवक्षार, पिप्ला, पिप्लाको जरा, चव्य, चित्रक, सुठो, मरिच, पाँचै किसिमका नुनहरू, शुद्ध हिङ, ज्वानू, सबलाई कुटेर चूर्ण बनाउनू। त्यसपछि अम्लवेत, बिमिरो र सानो बयरको रस निकाली त्यस रसमा यो चूर्णलाई भावना दिएर राख्नू र रोगीलाई १

ग्रामको मात्रामा बिहान-बेलुका खान दिनू । यसबाट कफज र वातज सङ्ग्रहणीका साथ अल्काई पनि निश्चय पनि आराम हुन्छ । यो चूर्ण अग्निदीपन तथा आमको पाचनका लागि अद्वितीय हुन्छ ।

सन्निपातज ग्रहणीनाशक योगहरू – काँचो बेल, मोचरस, नेत्रबाला, नागरमोथा, इन्द्रजौ, कुठजको बोक्रा, बाखाको दूधमा पकाई त्यो दूध खानाले सन्निपातज ग्रहणी निश्चय नै ठीक हुन्छ ।

नागरमोथा, अतीस, काँचो बेल, इन्द्रजौ समभाग लिई कुटी छानी चूर्ण बनाऊ । यस चूर्णलाई महमा मिसाई खान दिएमा सन्निपातज ग्रहणीलाई आराम गर्दछ ।

ग्रहणी रोगको सामान्य चिकित्सा – जाइफल, ल्वाङ्, अलैंची, तेजपात, दालचिनी, नागकेशर, कपूर, सेतो चन्दन, सेतो तिल, वंशलोचन, तगर, अमला, तालीसपत्र, पिप्ला, हर्रो, मुङ्रेलो, चितु, सुठो, वायुविडङ्ग, मरिच सबै १-१ तोला लिनू र पखालेको शुद्ध भाँग २० तोला लिनू । सबलाई कुटी छानी सबैको बराबर मिश्रीको चूर्ण मिसाई ठूलो मुखको सिसीमा राख्नू । यो जातीफलादि चूर्ण तयार हुन्छ । यो चूर्ण १ माशाबाट बिस्तारै बढाई ४ माशासम्म महसँग बिहान-बेलुका चाट्न दिनू । यसको १ माशा मात्रामा २.१/२ रत्ती भाँग हुन्छ । यसको सेवन गराएमा सङ्ग्रहणी रोग, क्षय रोग र वातकफज प्रतिश्याय रोग ठीक हुन्छ । परीक्षित हो ।

शुद्ध हिङ्गुल, मरिच, गन्धक, पिप्ला, शुद्ध स्वाग (टङ्गण), शुद्ध वत्सनाभ विष, शुद्ध धतुरोको बीज सबलाई भाँगको रसमा ३ घण्टा खल गरी १-१ रत्तीको गोली पार्नू । अग्निबल अनुसार चौथाई देखि आधा गोलीसम्म दिनको २ पटक पानी अथवा महीसँग खान दिनू । यो **'कनकसुन्दर रस'** ग्रहणी रोगका लागि परीक्षित औषधी हो ।

चिराइतो, कुटकी, नागरमोथा, इन्द्रजौ, सुठो, मरिच, पिप्ला सबै १-१ तोला लिनू । कुटजको बोक्रा १६ तोला, चित्रकको जरा २ तोला सबलाई कुटी छानी चूर्ण बनाउनू । यसलाई **'चन्द्रकला चूर्ण'** भनिन्छ । यो चूर्ण १ ग्राम मात्रामा दुई गुना चाकु मिसाई चिसो पानीसँग खानाले अतिसार, ग्रहणी र गुल्म रोग सबैमा आराम हुन्छ । परीक्षित हो ।

कपूर, शुद्ध हिंगुल, अफिम, नागरमोथा, इन्द्रजौ, जाइफल, शुद्ध स्वाग, सबै १-१ माशा लिएर अदुवाको रसमा घोटेर १ रत्तीको गोली बनाउनू । यो **'कर्पूर रस'** तयार हुन्छ । यो औषधी १-२ गोली पानी, मह अथवा अनारको रससँग खान दिएमा वातज र पित्तज सङ्ग्रहणी रोगमा आराम हुन्छ । परीक्षित हो ।

कालो नुन, त्रिचकमूल (चितुको जरा), मरिच समभाग लिएर चूर्ण बनाऊ । यो चूर्ण २ ग्राम मात्रामा महीसँग सेवन गर्नाले ग्रहणी, अर्श, गुल्म रोगहरू नष्ट हुन्छन् ।

ग्रहणी रोगमा पथ्य एवं अपथ्य कुराहरू -

ग्रहणी रोगमा पुरानो चामलको माँड, मसुरो र मुँगको जूस, नौनी झिकेको गाईको दूधको दही, तिलको तेल, बाखाको दूध र घिउ, मृग र तित्राको मासुको रस र सबै किसिमका कषाय रस (टर्रो) भएका द्रव्यहरूको सेवन गर्न दिनुपर्छ ।

ग्रहणीको रोगीलाई गाईको दूधबाट बनेको मही अमृत हुन्छ । यस महीको निरन्तर सेवन गर्नाले नयाँ पुरानो जुनसुकै ग्रहणी ठीक भएर जान्छ । महीमा सुठोको चूर्ण मिसाई दैनिक रूपमा सेवन गर्न दिनुपर्छ । सुरुमा मही मात्र सेवन गर्नुपर्छ, अन्न कम खानुपर्छ । पछि मही, नौनी र सुठोको चूर्ण मिसाई सेवन गर्नुपर्छ । यस रोगमा मही पिउनु, हावा-पानी फेर्नु, नदी - तलाउ - समुद्र आदि भएको ठाउँको सयर गर्नु राम्रो हुन्छ । ग्रहणी रोग लागेको बेलामा - गहुँ, जौको रोटी, लौका, माषको दाल, काँचो फल, दूध, चाकु, नरिवल खान दिनुहुँदैन ।

३. अर्श रोग (अल्काई)

वायु, पित्त र कफ यी तीन दोषहरू कुपित भएर छाला मासु, मेद धातुलाई दूषित बनाई गुदद्वारमा मासुको अङ्कुर वा गिर्खा उत्पन्न गर्छन् र अनेक दुःखका कारण बन्छन् त्यस्तो रोगको अवस्थालाई संस्कृतमा अर्श, गुदज, दुर्नाम आदि भनिन्छ । त्यसलाई नेपाली भाषामा अल्काई, हर्षा र हिन्दीमा बबासीर भन्छन् । त्यसको लागि अंग्रेजीमा पाइल्स अथवा हेमराइड्स नाम छ ।

यो अर्शरोग ६ किसिमको हुन्छ- वातार्श, पित्तार्श, श्लेष्मार्श, त्रिदोषज अर्श, रक्तार्श र सहज अर्श ।

वातार्शको लक्षण - वातार्श देखा पर्ने वा त्यसले चाप्ने समय जाडोको मौसम हो । यसमा वायुको प्रकोपका कारण गुदद्वारमा हुने गिर्खाहरू सुकेका हुन्छन्

तर सधैं झमझमाएजस्तो गरी दुख्ने भइरहन्छ, तिनबाट रगतको स्राव हुँदैन । उक्त गिर्खाहरू हेर्दा ओइलाए जस्ता, काला वा रातो रङ्गका, टेढा, आपसमा नमिल्ने कुनै ठूला कुनै साना हुन्छन् । तिनीहरू मध्ये कुनै बिम्बीको फल जस्ता, कुनै बयर जस्ता आकारका हुन्छन् । तिनीहरू भएको रोगीले कसिएको सारो मल थोरै मात्रामा शब्दका साथ मुस्किलले निकाल्छ । मलको अन्तमा फींज र चिल्लो तरल पनि दुख्ने गरी निस्कन्छ । रोगीको शिर, काँध, कोखा, कम्मर, तिघ्रामा बढी दुख्ने हुन्छ । साथमा छर्यूँ र डकार आउने, छाती जकडिएको जस्तो दुख्ने, अरुचि हुने, खोकी लाग्ने, पाचन क्रियामा गडबडी हुने, कान कराउने र रिँगटा लाग्ने हुन्छ । रोगीको छालाको रङ्ग, नङ, मल, मूत्र, आँखा र मुखको रङ्ग कालो हुन जान्छ । यसको उपद्रवको रूपमा गुल्मरोग, प्लीहोदर रोग, अष्ठीला उत्पन्न हुन्छन् ।

पित्तार्शको लक्षण – यो गर्मीको मौसममा देखिने अथवा बढ्ने गर्छ । यसमा हुने गिर्खाहरूको मुख अर्थात् अगाडिको भाग निलो हुन्छ । बाँकी भाग रातो, पहेंलो वा कालो हुन्छ । तिनीहरूबाट पातलो रगतको स्राव हुन्छ र त्यसमा दुर्गन्ध हुन्छ । गिर्खाहरू मसिनो, कोमल र शिथिल हुन्छन् । तिनीहरू हेर्दा सुगाको जिभ्रो कलेजो अथवा जुकाको मुखको आकारका देखिन्छन् । मध्य भाग जौ जस्तै फुकेको हुन्छ । रोगीको मल पातलो, तातो, निलो-पहेंलो वा रातो रङ्गको र आमयुक्त हुन्छ साथमा शरीरमा दाह, ज्वर, पसिना आउने, प्यास लाग्ने, अरुचि हुन्छ इन्द्रियहरू शिथिल हुन्छन् । रोगीका नङ, छाला, मल मूत्रको रङ्ग पहेंलो हुन्छ ।

श्लेष्मार्श वा कफज अर्शका लक्षणहरू – शीत काल (चिसो हुने मौसम)मा शीत बढी हुने ठाउँमा यो बढी हुन्छ । यसको गिर्खाको जरा ठूलो र गहिरो हुन्छ । त्यसको रङ्ग सेतो हुन्छ । यो चिल्लो, मोटो, लामो वा गोल आकारको हुन्छ र हेर्दा कटहरको बियाँ वा गाईको थुन जस्तो देखिन्छ । यसमा दुखाइ कम हुन्छ, बढी चिलाउँछ । चिलाएको ठाउँमा कन्याउँदा आरामको अनुभव हुन्छ । बोसो जस्तो बढी कफ भएको मल बल गर्दा निस्कन्छ । कुनै किसिमको स्राव हुँदैन, गिर्खाहरू फुट्ने पनि हुँदैन । गुदद्वार, वस्ति, नाभिमा तन्किएजस्तो पीडा हुन्छ । साथमा श्वास, कास, अरुचि, प्रमेह, वमन, नपुंसकता आदि रोगहरू उत्पन्न हुन्छन् । शरीरको रङ्ग पहेंलो वा चिल्लो हुन्छ । नङ, छाला, मल, मूत्रको रङ्ग पनि हल्का पहेंलो हुन्छ ।

कुनै रोगीमा दुई किसिमका अर्शको लक्षण देखिएमा त्यसलाई द्वन्द्वज अर्श भनी बुझ्नुपर्छ ।

त्रिदोषज अर्श – यसमा पहिले भनिएका वातार्श, पित्तार्श र श्लेष्मार्श तीनै थरीका लक्षणहरू देखिन्छन् ।

रक्तार्श – यसमा हुने गिर्खाहरू पित्तज अर्शसँग मिल्ने किसिमका हुन्छन् । कुनै बरको जटाजस्ता र मुँगा अथवा रातो गेडीसमान राता हुन्छन् । कडा मलले घोटेपछि तिनीहरूबाट बढी मात्रामा दूषित एवं तातो रगतको स्राव हुन्छ । रगतको बढी स्राव हुँदा रोगीमा रगतको कमीका लक्षणहरू स्पष्ट देखिन्छन् । उसको शरीरको रङ्ग फुस्रो-पहेंलो हुन्छ । बल र जाँगर घटेर जान्छ, इन्द्रियहरू कमजोर हुन्छन् । रोगीको नाडी शिथिल हुन्छ । चिसो अमिलो कुराको चाहना हुन्छ ।

सहज अर्श – यदि आमाबाबुलाई अर्श रोग थियो र सन्तानलाई पनि भयो भने त्यस्तो अर्शलाई सहज (जन्मैदेखि आएको) अर्श भनिन्छ । यो असाध्य हुन्छ ।

यसमा देखिने गिर्खा कठोर, रातो वा पहेंलो रङ्गको हुन्छ । यसको मुख भित्रपट्टि हुन्छ । यसको रोगी दुब्लो-पातलो, कम खाने, मन्द स्वरको र क्रोधी हुन्छ । उसको शरीरभरि नसाको जालो देखिन्छ, पेट कराउँछ । रोगीको शरीरमा जुन दोषको अधिकता हुन्छ त्यसको लक्षण पनि देखिन्छ । जस्तै – वातज, पित्तज, कफज आदिको लक्षण हुन्छ । आँखा, नाक र टाउको दुख्छ ।[1]

अर्श रोगको साध्यासाध्यता – गुदद्वारको भित्र र बाहिर गरी जम्मा तीन ओटा वली अर्थात् खण्डहरू अथवा भुजाहरूद्वारा छुट्टिएका स्थानहरू हुन्छन् । ती तीनै खण्डमा अर्श उत्पन्न हुने स्थान हुन्छन् । बाहिरी खण्डमा उत्पन्न भएको, एकै दोषको प्रधानता भएको र नयाँ अर्श साध्य हुन्छ । बीचको खण्डमा हुने अर्श कष्टसाध्य हुन्छ । अन्तिम अर्थात् एकदम भित्रको खण्डमा उत्पन्न अर्श असाध्य हुन्छ किनकि त्यसलाई सजिलै हेर्न सकिन्न र औषधीको प्रयोग गर्न वा लगाउन पनि सकिन्न ।

जुन रोगीलाई बढी तिर्खा लाग्छ, अरुचि हुन्छ, शूल भइरहन्छ, जसको रगत बढी मात्रामा निस्कन्छ, शरीरमा शोथ र अतिसार हुन्छ त्यो अर्शको रोगी बाँच्दैन ।

---

१. यूनानी चिकित्सा पद्धतिमा अर्श रोगका दुई भेदमात्र मानिएको छ - खूनी र बादी बबासीर । रातो रङ्गको गिर्खा छ र त्यसबाट रगत खस्छ भने त्यसलाई खूनी बबासीर भनिन्छ । यदि पीडा, सूजन छ र चिलाउने गर्छ भने त्यो बादी बबासीर हो । दिसा कब्जियत हुनु यसको मुख्य लक्षण हो ।

सुठो ७ भाग, पिप्ला ६ भाग, मरिच ५ भाग, नागकेशर ४ भाग, तेजपात ३ भाग, सुकमेल १ भाग, मिश्री २६ भाग सबैलाई कुठी छानी चूर्ण बनाई मिसाई राख्नू। यो चूर्ण ३-६ ग्राम मात्रामा पानीसँग खान दिएमा अर्श रोग निको भएर जान्छ।

जाइफल, ल्वाङ्ग, पिप्ला, सिंधे नुन, सुठो, शुद्ध धतुरोको बियाँ, शुद्ध हिंगुल, शुद्ध स्वाग समभाग लिएर चूर्ण बनाएपछि मिसाएर राख्नू। त्यसपछि जामुनको रस अथवा कागतीको रसमा घोटेर १२५ मिलीग्रामको गोली पार्नू। यस गोलीको सेवनले सबै किसिमको बबासीरलाई आराम गर्छ। (परीक्षित)

नीमको पाकेको फलको गुदी ३ ग्राम, मह ६ ग्राम मिसाई ११ दिनसम्म दैनिक खान दिएमा बबासीरलाई आराम गर्छ। (परीक्षित)

प्याजको रसमा घिउ र चिनी मिसाएर खान दिएमा बबासीर नष्ट हुन्छ। (परीक्षित)

मरिच, सिंधे नुन र चितुको जरा समभाग लिएर चूर्ण बनाई सिसीमा राख्नू। यसको १.५ ग्रामदेखि ३ ग्रामसम्मको मात्रा महीसँग खान दिनू। यसले अर्श, संग्रहणी, मन्दाग्नि यी रोगहरूमा निश्चय साथ लाभ गर्छ। (परीक्षित)

मुसब्बर ५ तोला, रसाञ्जन ५ तोला, गुग्गुलु २.५ तोला सबलाई १ सेर मूलाको रसमा घोटेर चनाबराबरको (२५० मि.ग्रा.) गोली बनाउनू। यो १ गोली बिहान-बेलुका बासी पानीसँग खान दिएमा सबै किसिमका अल्काईका गिर्खा र विशेष रगत आउने गिर्खाहरूमा हित गर्छ। (परीक्षित)

रसाञ्जन र कलमी शोरा समभाग लिएर मूलाको रसमा घोटेर चना बराबरको गोली पारी राख्नू। यो १ गोली बिहान-बेलुका बासी पानीसँग सेवन गर्न दिनू। यसले सुख्खा वा रगत आउने दुवैथरी अल्काईलाई निको पार्छ। धेरै पटक परीक्षित हो।

नीमको फल, रसाञ्जन, हर्रो सबलाई कुटी छानी चूर्ण बनाउनू र खलमा राखी गुलाबजलसँग बारम्बार घोट्नू। घोट्दै जाँदा कडा भएपछि गुलाबजल थप्दै घोट्दै गर्नू। यसरी ३ पटकसम्म घोटेपछि ३-३ रत्तीको (३७५ मिलीग्राम) गोली पार्नू। यसले बबासीर निश्चित रूपमा शान्त गर्छ। (परीक्षित)

उत्तम महिषाक्ष गुग्गुलु, लशुन, निमको फल, हिंग, सुठो समभाग लिएर कुटी छानी पानीसँग घोटेर २-२ रत्ती (२५० मि.ग्रा.)का गोली पार्नू । यी गोलीहरू चिसो पानीसँग सेवन गर्न दिएमा अल्काईलाई जरैबाट सखाप पार्छन् । (परीक्षित)

ज्वानो र सिंधे नुनको चूर्ण ३ ग्राम महीमा मिसाएर पिउन दिएमा अल्काई र गानुगोलामा अवश्य आराम हुन्छ ।

अल्काईका गिर्खा नाश गर्ने लेपहरू

बेसार र तोरियाँको बियाँ घोटी तोरीको तेलमा मिसाई लेप गर्नाले सबै किसिमका गिर्खाहरू बस्छन् ।

आँकको पात र शोभाञ्जनको पातको कल्क (पिनेर बनाएको लेदो) बनाई लेप गरेपछि गिर्खाहरू बस्छन् । (परीक्षित)

नीम र करवीरको पातको कल्कद्वारा लेपले पनि गिर्खा हराउँछ । (परीक्षित)

सिउँडीको दूधमा बेसार मिसाई गिर्खा आएको ठाउँमा १ थोपा जति लगाईदिएमा गिर्खा बस्छ ।

भाँग १ तोला र अफीम १ माशा दुवैलाई पानीमा पिनेर कपडामा लेप गर्नू । त्यसलाई अलि तताएर गुदद्वारमा राखी बाँधी दिनू । यसबाट अल्काईको पीडा तत्काल शान्त हुन्छ ।

तमाखुको पात अथवा नीम र पिपलको पात अथवा शोभाञ्जनको पातलाई मसिनो गरी पिनेर लेदो बनाई त्यसले गिर्खामा लेप गर्नाले गिर्खा नष्ट हुन्छन् ।

नीमको बियाँलाई तिलको तेलमा राम्ररी भुट्नु र त्यसैमा घोटी लेदो पार्नू । त्यसमा अलिकति निलोतुथो पानीमा घोली मिसाइ दिनू । यो मलम लगाउनाले गिर्खा गलेर जान्छ ।

बिच्छीलाई तिल वा तोरीको तेलमा पकाउनू र त्यसलाई छानेर राख्नू । सिन्कोमा कपास बेरी यस तेलमा चोबेर गुदद्वारमा लगाउनू । यस तेलले पीडासहित अल्काईको रोग निको पार्छ ।

सेतो चिर्मिटी (गुञ्जा) ६ ग्राम, कुभिण्डोको बियाँ ६ ग्राम, चाकु ६ ग्राम सबैलाई पानीसँग मसिनो हुनेगरी घोटेर कपडामा लेप गर्नू । त्यस कपडालाई बेरेर बत्तीजस्तो बनाउनू । त्यसलाई गुदद्वारभित्र ३ अंगुलसम्म छिराउनू । यसले भित्रका रगत नआउने गिर्खाहरू नष्ट पार्छ । यो बत्ती लगातार ३ दिन राख्नुपर्छ । (परीक्षित)

बरको पहेंलो पात ल्याई बालेर खरानी पार्नू । त्यसलाई तोरीको तेलमा मिसाई लेप गर्नू । गिर्खाहरू बस्छन् । (परीक्षित)

कालो सर्पको काँचुलीको खरानिलाई तोरीको तेलमा मिसाई लेप लगाएमा गिर्खा नष्ट हुन्छन् । (परीक्षित)

चितुको जरा, स्वाग, बेसार र चाकु समभाग लिएर पानीसँग घोटी लेप गर्नाले अल्काई नष्ट हुन्छ । (परीक्षित)

तोरीको तेलमा धतुरोको फल पूरै पिनेर डढाउनू । त्यसपछि तेललाई निकाली छानेर सिसीमा राख्नू । यस तेललाई कपासमा लगाई गिर्खामा राखी बाँधीदिनू । यसबाट मस्साहरू (गिर्खा) नाश हुन्छन् ।

भाँगलाई पानीसँग पिनेर लेदो पार्नू र त्यसलाई घिउसँग मुछी आगोमा तताउनू । अब सानो चक्की बनाई गुदद्वारमा राख्नू र लंगोटी लगाएर राख्नू । यसबाट बबासीरको सूज, दुखाई र चिलाउने अवश्य हराएर जान्छ । (परीक्षित)

कुचिला जलाई त्यसको धुवाँ गुदद्वारमा लगाएमा अल्काइबाट हुने रगतको स्राव रोकिन्छ र पीडा पनि शान्त हुन्छ ।

सिउँडीको दूधमा बेसार मिसाई त्यसमा काँचो धागो बाटी बनाएको मोटो धागो ३ दिनसम्म भिजाई घाममा सुकाउनू । यसरी तयार भएको धागोले अल्काईको गिर्खालाई कसेर बाँधीदिनू । यसो गर्नाले अर्शको गिर्खा भगन्दर नष्ट हुन्छ । यसको प्रयोग गर्दा रोगीलाई पीडा भएमा उक्त ठाउँमा मनतातो घिउ अथवा शतधौत (सय पटक पानी राखी फेटेको) घिउ लगाईदिनू । तत्काल दुख्न छोड्छ । यो कैयन पटक परीक्षित हो ।

बृहत् कासीसादि तैल- हीराकासीस, लाङ्गली (कत्तिहारी), कुठ, सुठो, पिपल, सिंधे नुन, शुद्ध मनःशिला, सेतो करवीरको जरा, वायुविडङ्ग, चितुको बोक्रा, असुरो, दन्ती, जयपालको जरा, तितेकरेलाको बियाँ, शुद्ध हरिताल यी सबको चूर्ण समभाग लिएर सिलौटो वा खलमा पानीसँग घोटी कल्क (लेदो) बनाउनू । त्यसपछि सिउँडीको दूध ८ भाग, आँकको दूध ८ भाग र कालो तिलको तेल ६४ भाग, गोमूत्र २५६ भाग यी सबैलाई उक्त कल्कका साथ कलई भएको कराहीमा राखी मन्द आँचमा पकाउनू ।[1] तेलमात्र बाँकी भएपछि ओराल्नू र सेलाएपछि छानेर सिसीमा राख्नू ।

अल्काई बाहिरपट्टि भएको खण्डमा यो तेल दिनको २-३ पटकसम्म लगाईदिनू ।

---

१. **तेल तयार भएको जाँच्ने तरिका-** तेल पकाउँदा राखेको कल्क अलिकति निकालेर आगोमा राख्दा चिट्चिट् आवाज गर्दैन, तेलमा फिंज आउँछ । लेदो डढेर गयो र तेलमा फिंज आएन भने त्यो काम लाग्दैन ।

भित्रपट्टि भएको खण्डमा कान्छी आँलामा तेल लगाई भित्रसम्म पुग्नेगरी तेल लगाउनू । यसको प्रयोग गर्दा गिर्खा झरेर वा सुकेर जान्छ । गुदद्वारमा कुनै हानि हुँदैन । यो तेल अल्काइका लागि रामबाण हुन्छ । यसको अनेक पटक परीक्षा गरिएको छ ।

अर्श रोगको विशिष्ट चिकित्सा

वातज अर्श नाशक उपाय– आँकको पहेंलो पात र पाँचै नुनहरू सबैलाई अमिलोसँग पिनेर माटाको कसौंडीमा भर्नू र माथिबाट पालाले मुख छोपी कपडमिट्टी गर्नू । सुकेपछि गजपुटमा पाक गर्नू । आगो सेलाएपछि भाँडामा तयार भएको क्षार निकाली सिसीमा राख्नू । यो क्षार तातो पानीसँग सेवन गराएमा वातज (बादी) अर्शमा रामबाण हुन्छ । (परीक्षित)

पित्तज अर्शको उपाय– कालो तिलको चूर्ण, नागकेशरको चूर्ण, मिश्री सबलाई नौनीघिउमा मिसाएर खान दिएमा पित्तज अर्शको अमोघ उपचार हुन्छ । (परीक्षित)

सुगन्धवाल र सुठोको चूर्ण समभाग लिएर ३ ग्रामको मात्रामा चौलानी र महसँग पिउन दिएमा पित्तको अर्श निको हुन्छ ।

पित्तज अर्शको चिकित्सा गर्नुअघि १ पटक विरेचन (त्रिफला चूर्ण) गराउँदा हित हुन्छ ।

कफज अर्शको उपाय – अदुवा अथवा सुठोको काढा दिनदिनै पिउनाले कफज अर्श रोगमा आराम हुन्छ । (परीक्षित)

चित्रक, हाउबेर (हपुषा), हिङ र नुन सबलाई कुटी छानी चूर्ण बनाउनू र २ ग्रामको मात्रामा महीसँग खान दिनू । कफको अर्शमा आराम हुन्छ । (परीक्षित)

पञ्चकोल अर्थात् पिप्ला, पिप्लाको जरा, चावो, चित्रक र सुठोको काढा पिउन दिने गरेमा कफज अर्श निको हुन्छ । (परीक्षित)

रक्तार्शको चिकित्सा

कुटजावलेह– कुटजको बोक्रा ५ सेर लिएर कुटी खस्रो चूर्ण बनाउनू । त्यसलाई २५.५ सेर ८ तोला (२५ लिटर ६०० मि.लि.) पानी राखी काढा पकाउनू । ६ सेर ६ छटाँक २ तोला (६ लिटर ३७५ मि.लि.) बाँकी भएपछि उतारेर छान्नू । अब त्यस काढामा चाकु ८० तोला राखी मन्द आँचमा पकाउनू । काढा बाक्लो भएर आएपछि त्यसमा भलायो १ तोला, वायुविडङ्ग १ तोला, इन्द्रजौ १ तोला, रसाञ्जन

१ तोला, बोझ्को १ तोला, अतीस १ तोला, बेल (काँचो) १ तोला यी सबैको चूर्ण र गाईको घिउ ३ पाउ (७५० ग्राम) राखी चलाउनू । त्यो सेलाएपछि मह ३७५ ग्राम मिसाएर ठूलो सिसीमा राख्नू । यसको मात्रा ३-६ ग्राम चिसो पानी, मही अथवा बाख्राको दूधसँग नित्य सेवन गर्नाले रक्तज अर्श निश्चय नै ठीक हुन्छ । परीक्षित हो ।

नागकेशर र मिश्री ६-६ ग्राम लिएर ९ ग्राम ताजा मख्खनमा मिसाई खानाले १५ दिनमै रगत जाने अल्काई निको हुन्छ । (परीक्षित)

जङ्गली गोभीको तर्कारी घिउमा पकाई सिंधे नुन राखी १५ दिनसम्म रोटीसँग खाने गरेमा ६ ओटै अल्काईमा आराम मिल्छ । (परीक्षित)

अपामार्गको बियाँ चौलानीसँग पिनेर पिउनाले रगत बग्ने अल्काईको रोग निको भएर जान्छ । (परीक्षित)

पिप्लाको चूर्ण महीमा मिसाएर खानाले अर्श रोग निको हुन्छ । (परीक्षित)

बिदारीकन्द र तिलको चूर्णलाई मह र दूधमा मिसाई पिउनाले रगत जाने अल्काईको रोग जान्छ । (परीक्षित)

सयपत्रीको पात ६ ग्रामदेखि १२ ग्रामसम्म र मरिच २-३ ग्राम पिनी छानी पानीसँग खान दिनू । यसबाट अल्काईबाट बग्ने रगत रोकिएर जान्छ ।

सुख्खा वा हरियो डुम्रीको गेडा पानीसँग पिनी मिश्री मिसाई पिउनाले रगत जाने अल्काईको रोग र रक्तातिसारमा आराम हुन्छ । महिलाहरूको मासिक स्राव बढी भएकोमा समेत फाइदा गर्छ ।

अर्श रोगमा उपयोगी अरिष्टहरू

दन्ती अरिष्ट – दन्तीको जरा, चित्रकमूल, काँचो बेल, गम्मरी, अग्निमन्थ (गिनेरी), पाटला, श्योनाक (टटेलो), शालपर्णी, पृश्निपर्णी, बृहती र कण्टकारी यी प्रत्येक ५० ग्राम, त्रिफला १५० ग्राम लिएर सबैको खस्रो मोटो चूर्ण बनाउनू । त्यसलाई २६ लिटर ७५० मिलीलिटर पानीमा राखी पकाउनू । चौथाई भाग बाँकी भएपछि छान्नू । त्यसमा ५ किलो सख्खर मिसाएपछि सफा भाँडामा भरेर मुख बन्द गरेर १ महीनासम्म जमिनभित्र गाडी दिनू । १ महीनापछि निकाली छानेर सफा भाँडामा राख्नू । यो दन्ती अरिष्ट अर्श रोगका लागि रामवाण औषधी हो । यो विशेष रूपमा वातज अर्शमा प्रभावकारी हुन्छ । यो औषधी १०-२० मिलीलिटर मात्रामा बराबर पानी मिसाई बिहान-बेलुका केही खाएपछि दिनुपर्छ ।

अभयारिष्ट– हर्रो १ किलो, अमला २ किलो, कपित्थ (कैथ) ५०० ग्राम, इन्द्रवारुणी (इन्द्रेणी) ५० ग्राम, चायुविडंग १०० ग्राम, पिप्ला १०० ग्राम, लोध्र १००

ग्राम, मरिच १०० ग्राम, एलवालुक १०० ग्राम सबलाई कुटी खस्रो चूर्ण बनाऊ र ६४ लिटर २५० मिलीलिटर पानीमा पकाउनू। १६ लिटर पानी बाँकी भएपछि छानी राख्नू र त्यसमा २५ किलो पुरानो सख्खर मिसाई ठूलो भाँडामा मुख बन्द गरी १ महीनासम्म जमिनमुनि गाडी राख्नू। त्यसपछि निकाली छानेर सिसीमा राख्नू। यो चरकोक्त अभयारिष्ट हो। यसको सेवन गर्नाले अल्काई, मन्दाग्नि र विबन्ध (कब्जियत) रोग नष्ट हुन्छ। मात्रा १०-२० मि.लि. बराबर पानी मिसाएर दिनुपर्छ।

अर्श रोगमा पथ्य र अपथ्य कुराहरू

अर्शको रोगीलाई महीको सेवन गराउनुपर्छ। मही खाएर नष्ट भएको अर्श रोग फेरि आउने डर हुँदैन, बल, वर्ण र अग्निको वृद्धि हुन्छ। ज्वानु र बीरे नुन मिसाएको मही कब्जियत हटाउन उत्तम हुन्छ।

अल्काईको गिर्खा कडा र सुन्निएको छ, त्यसमा बढी रगत जमेको छ भने जुका लगाई रगत निकाल्नुपर्छ।

खाने कुराहरूमा पुरानो चामलको भात, जौको दलिया, मूँग र रहरको दाल, गोलकाँक्री, कुभिण्डो, पर्वर, पुनर्नवाको साग, सूपको साग, सिंधे नुन, दूध, घिउ, मख्खन, गुलियो अनार, कालो अंगूर र पाकेको आँप पथ्य हुन्छन्।

अर्शका रोगीले मूला, भण्टा, रायो, हिङ, लशुन, अदुवा, मरिच, बेल, अमिलो अचार, सख्खर, माषको दाल, सिमसारमा हुने जन्तुहरूको मासु, माछा, तिलको पिना, मैदाबाट बनेका परिकारहरू खाने गर्नुहुँदैन।

कडा आसनमा धेरैबेर बस्ने र घोडा-हात्तीको सवारी गर्ने गर्नुहुँदैन। पूर्वीया हावामा बस्न र धेरै समय आगो नजिक बस्नु वा घाम ताप्नु हुँदैन।

४. अग्निमान्द्य रोग (मन्दाग्नि)

शरीरमा भएको जठराग्निले समान वायुको सहायताले खाएको अन्नको पाचन गर्छ। अग्निका चार अवस्थाहरू हुन्छन् - सम, विषम, मन्द र तीक्ष्ण। शरीरमा सबै दोषहरू सम अर्थात् स्वाभाविक अवस्थामा भएको वेलामा अग्नि सम हुन्छ। त्यसले खाएको अन्नलाई ठीक समयमा पचाउँछ, शरीरको पोषण पनि गर्छ। वायुको प्रकोप भएको वेलामा अग्नि विषम हुन्छ। विषम अग्निले कहिले अन्नको राम्ररी पाचन गर्छ, कहिले गर्दैन। यसबाट पेट फुल्ने, शूल हुने, पेट कराउने जस्ता समस्याहरू उत्पन्न हुन्छन्।

पित्तको प्रकोप हुँदा अग्नि तीक्ष्ण हुन्छ। तीक्ष्ण अग्निले खाएको अन्न भारी भएपनि कम समयमा पचाउँछ र बढी भोकलाग्ने बनाउँछ। भोक लागेको समयमा

खाने कुरा उपलब्ध नभएमा पित्तविकार र धातुक्षयको कारण बन्छ । पित्त अति तीक्ष्ण भएको अवस्थामा वायु र कफको क्षय भएर 'भस्मक' रोग उत्पन्न हुन्छ । त्यो रोग लागेपछि जे खाएपनि पेटमा जाने बित्तिकै भस्म भएर जान्छ । अर्थात् पच्छ । भोजन पच्ने बित्तिकै तालु तथा कण्ठ सुक्न थाल्छन् र शरीरमा सन्ताप एवं दाह हुनथाल्छ ।

कफको प्रकोप भएको वेलामा अग्नि मन्द हुन्छ । अग्नि मन्द भएपछि भोजन चाँडै पच्दैन, शरीर भारी भइरहन्छ, रुचि कम हुन्छ, मुखबाट च्याल बग्छ ।

विषम, तीक्ष्ण र मन्द यी तीन अग्निका विकृत अवस्थाहरू हुन् । यी सबैको उचित उपचार आवश्यक हुन्छ ।

विषम अग्निको चिकित्सा– रास्ना, कचूर, अतीस, सूप, सुठो, सिंधे नुन, कालो नुन, हिङ र पिप्ला समभाग लिएर कुटी छानी चूर्ण बनाउनू । अनि पुरानो चाकु समभाग मिसाएर गोली बनाएर राख्नू । यो गोली तातो पानीसँग खान दिए विषम अग्नि ठीक हुन्छ ।

भातको माँडमा हिङ र कालो नुन पिनेर मिलाई तात्तातै पिउनाले विषम अग्नि सम हुन्छ, मन्द अग्निको दीपन हुन्छ ।

तीक्ष्ण अग्निको चिकित्सा– दाख, हर्रो, कुठकी, विदारीकन्द, चन्दन, असुरो, नागरमोथा, पर्वर, चिराइतो, पिप्ला, बला, गोरखमुण्डी, अतीस, जटामसी, ल्वाङ, पद्मक, भृङ्गराज, धनियाँ, खजूर सबै समभाग लिएर चूर्ण बनाउनू । पछि बराबर मिश्री मिसाएर राख्नू । त्यो चूर्ण ३ ग्राम मात्रामा बिहान खाएर घिउयुक्त दूध पिउनू, बेलुका पनि यसै गरी खानू । यसको सेवनले तीक्ष्ण अग्नि सम भएर आउँछ र दुब्लो शरीर पुष्ट हुन्छ ।

विदारीकन्दको रस घिउ र दूध मिलाएर पिउनाले भस्मक रोग शान्त हुन्छ ।

अपामार्गको बियाँ र दूध पकाएर बनाएको खीरले घोर भस्मक रोग निको पार्छ । (परीक्षित)

बयरको बियाँको भित्री भाग पानीमा घोटेर पिउनाले भस्मक रोग ठीक हुन्छ ।

डुम्रीको रुखको बोक्रा भैंसीको दूधमा पिनेर खान दिएमा भस्मक रोग शान्त हुन्छ ।

यस रोगमा पित्त शमन गर्ने उपाय गर्नुपर्छ । त्यसका लागि निशोथ दूधमा पकाएर दिनुपर्छ । यसले दिशाबाट पित्तलाई निकाल्छ ।

यसमा मही, भैंसीको दूध आदि कफ बढाउने द्रव्यहरूको सेवन र दिउँसो सुत्नु राम्रो हुन्छ ।

हर्रो ६० ग्राम, पिप्ला ४० ग्राम, गजपिप्पली १० ग्राम, चितुको जरा १० ग्राम, हिङ १० ग्राम सबलाई कुटी छानी चूर्ण बनाऊ र पानीसँग खल गरी गोली बनाऊ। यो गोली अग्नि दीपक एवं रसायन हुन्छ।

अग्निमुख लवण – चितुको जराको बोक्रा, दन्तीको जरा, तेवडीको जरा, कुठ समभाग लिएर चूर्ण बनाउनू, यी सबै बराबर सिंधे नुन पिनेर मिसाइदिनू। त्यसमा सिउँडीको मोटो हाँगो ल्याई त्यसको बीचमा नली जस्तो बन्ने गरी प्वाल पार्नू र त्यस प्वालमा उक्त चूर्णलाई भरेर कपडमिट्टी गर्नू। त्यसलाई गुइँठा बाली बीचमा राखेर पाक्न दिनू। त्यो रातो भएर आएपछि सेलाउन दिनू र भित्रको चूर्ण सिसीमा राख्नू। यो अग्निमुख लवण हो। यो औषधी १-२ रत्ती (१२५ - २५० मि.ग्रा.) मात्रामा तातो पानीसँग सेवन गर्नाले जठराग्निलाई राम्ररी जगाउँछ, फियो र गुल्मको रोग पनि शान्त पार्छ।

ज्वालामुखी चूर्ण– हिङ, अम्लवेत, सुठो, मरिच, पिप्ला, चितुको जरा, यवक्षार, पुष्करमूल, हर्रो, बर्रो, अमला, अनारदाना सबैलाई समभाग लिएर चूर्ण बनाएपछि मिसाउनू। सबको बराबर पुरानो चाकु मिसाउनू। यस चूर्णको सेवन गर्नाले अग्नि राम्ररी जाग्छ। पाचनशक्ति बढ्छ।

रामबाण रस – शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, शुद्ध वत्सनाभ र ल्वाङ्को चूर्ण १०-१० ग्राम, मरिचको चूर्ण २० ग्राम, जाइफलको चूर्ण ५ ग्राम लिनू। पहिले पारद, गन्धक दुवैलाई खलमा घोटी कज्जली बनाउनू, त्यसपछि अरू द्रव्यहरू क्रमशः राख्दै मिसाउनू। अब सबैलाई अमिलीको रस राखी घोट्नू र १-१ रत्तीको (१२५ मि.ग्रा.) गोली बनाएर राख्नू। यो औषधी १-२ गोलीको मात्रामा अदुवाको रस अथवा तातो पानीसँग खान दिनू। यसले मन्दाग्नि र अजीर्णलाई नाश गर्छ।

हिंग्वष्टक चूर्ण– यो चूर्ण ३-४ ग्राम मात्रामा भोजनको पहिलो ग्रासँग खानाले भोक राम्ररी जगाउँछ। अनेक वार परीक्षा गरिएको छ।

सिंधे नुन १० ग्राम, पिप्लाको जरा २० ग्राम, पिप्ला ३० ग्राम, चव्य (चाबो) ४० ग्राम, चितुको जरा ५० ग्राम, सुठो ६० ग्राम र जङ्गी हर्रो ७० ग्राम सबलाई कुटी छानी चूर्ण बनाउनू। यसको सेवन गर्नाले निश्चय अग्नि जाग्छ।

अग्निमुख चूर्ण– शुद्ध हिङ १० ग्राम, बोझो २० ग्राम, पिप्ला ३० ग्राम, सुठो ४० ग्राम, ज्वानू ५० ग्राम, हर्रो ६० ग्राम, चितुको जरा ७० ग्राम, कुठ ८० ग्राम सबैलाई कुटी छानी चूर्ण बनाउनू र मिसाएर राख्नू। यो चूर्ण ३-६ ग्राम मात्रामा मही अथवा तातो पानीसँग खान दिएमा अग्नि दीपन गर्छ र कफको शमन गर्छ। गुल्म रोग पनि शान्त पार्छ। (परीक्षित)

भास्कर लवण चूर्ण- सैन्धव (सिंधे नुन), वीरे नुन, धनियाँ, पिप्ला, पिप्लाको जरा, कालो जिरा, तेजपात, नागकेशर, तालीसपत्र र अम्लवेत यी प्रत्येक २०-२० ग्राम, समुद्री (खाने) नुन ८० ग्राम, सौंचर नुन ५० ग्राम, मरिच १० ग्राम, जिरा १० ग्राम, सुठो १० ग्राम, अनारदाना ५० ग्राम, दालचिनी र अलैंची ५-५ ग्राम यी सबै द्रव्यहरू कुटी छानी मिसाएर राख्नू । यसको १-३ ग्राम मात्रा बिहान-बेलुका भोजनपछि पानी अथवा महीसँग सेवन गर्नाले मन्दाग्नि नाश भएर अग्नि बलवान् हुन्छ । अनेक पटक परीक्षित हो । पेटका अनेक रोगहरूका लागि यो रामबाण औषधी हो ।

शुद्ध वत्सनाभ विष १० ग्राम, त्रिकटु चूर्ण ३० ग्राम, हर्रो (फल) को बोक्रा १० ग्राम सबैलाई कुटी छानी चूर्ण बनाउनू र खलमा राखी कागतीको रससँग घोटी चनाबराबरको (२५० मि.ग्रा.) गोली बनाउनू । यो १ गोली बिहान-बेलुका पानीसँग खानाले अग्नि दीप्त भई खूब भोक लाग्छ ।

चितु, ज्वानो, सिंधे नुन, सुठो र मरिच समभाग लिएर कुटी छानी चूर्ण बनाएर राख्नू । यो चूर्ण १-३ ग्राम मात्रामा अमिलो महीसँग खान दिएमा मन्दाग्निको समस्या हराउँछ र जठराग्नि बलवान् हुन्छ ।

ल्वाङ्, सुठो, मरिच, भुटेको स्वाग (टंकण) समभाग लिएर कुठी छानी चूर्ण बनाउनू र खलमा राखी अपामार्ग अथवा चितुको रससँग घोटी चनाबराबरको (२५० मि.ग्रा.) गोली बनाउनू । यसले मन्दाग्नि र अजीर्णलाई नाश गर्छ ।

पिप्लाको चूर्ण ५० ग्राममा पुरानो चाकुको (सख्खर) चूर्ण १०० ग्राम मिसाई सेवन गर्नाले मन्दाग्निको समस्या हराउँछ । (परीक्षित)

हर्रो, पिप्ला, मरिच, सुठो, शुद्ध कुचिला, हिङ, शुद्ध गन्धक, सिंधेनुन समभाग लिएर कुटीछानी चूर्ण बनाउनू । त्यसपछि खलमा राखी कागतीको रस मिसाउँदै घोट्दै गर्नू र २-२ रत्तीको (२५० मि.ग्रा.) गोली पार्नू । यो १ गोली, बिहान-बेलुका खानापछि तातो पानीसँग दिनू । यसले मन्दाग्नि र शूललाई नाश गर्छ । (परीक्षित)

कालो नुन ४० ग्राम, मरिच ४० ग्राम, पिप्ला ४० ग्राम, शुद्ध [illegible] २० ग्राम सबैको चूर्ण बनाई खलमा कागतीको रससँग ३६ घण्टासम्म घोट्नू । त्यसपछि ४-४ रत्तीको (५०० मि.ग्रा.) गोली पार्नू । यो औषधी १-२ गोली भोजनपछि खान दिएमा खूब भोक लाग्छ ।

५. अजीर्ण रोग (अपच)

खाएको अन्न नपच्ने रोगलाई अजीर्ण भनिन्छ । यो ६ किसिमको हुन्छ- आम अजीर्ण, विदग्ध अजीर्ण, विष्टब्ध अजीर्ण, रसशेष अजीर्ण, दिनपाकी अजीर्ण, प्राकृत अजीर्ण ।

(१) **आम अजीर्ण** – यो कफको प्रकोपबाट उत्पन्न हुन्छ। यसमा पेटमा भारीपन हुन्छ, मुखबाट पानी आउँछ, गाला र आँखा वरिपरि शोथ हुन्छ, गुलियो, अमिलो वा पिरो जस्तो खाना खाइएको छ त्यही किसिमको डकार आउँछ।

(२) **विदग्ध अजीर्ण** – यो पित्तको प्रकोपको अवस्थामा हुन्छ। यसमा रिँगटा लाग्ने, प्यास बढी लाग्ने, बेहोश हुने, पित्तसम्बन्धी विकार-वमन आदि हुने हुन्छ। डकार आउँदा धुवाँ निस्केजस्तो तातो र अमिलो आउँछ। शरीरमा पसिना आउने, पोल्ने हुन्छ।

(३) **विष्टब्ध अजीर्ण** – यो वायुको प्रकोपबाट उत्पन्न हुन्छ। यसमा शूल हुने, पेट फुल्ने हुन्छ। विभिन्न किसिमका वायुसम्बन्धी वेदनाहरू जस्तै सियोले घोचेजस्तो दुख्ने, झटका हान्ने जस्ता हुन्छन्। मल (दिसा) र अपानवायु रोकिन्छ, शरीर कक्रक्क पर्ने, बेहोश हुने हुन्छ। सम्पूर्ण शरीर दुख्छ।

(४) **रसशेष अजीर्ण** – अन्नको पाचन हुने वेलामा धेरैजसो पच्न र केही अंश नपच्ने भएमा रसशेषाजीर्ण हुन्छ। यो अपूर्ण पाचनको अवस्था हो। यसमा अन्न पचेको बेलामा जस्तो शुद्ध डकार आउँछ तर अन्न खाने इच्छा हुँदैन। छातीमा भारीपन हुन्छ र मुखबाट च्याल चुहुन्छ।

(५) **दिनपाकी अजीर्ण** – अग्नि स्वस्थ र सम भएको अवस्थामा खाएको अन्न पच्न ४ प्रहर (१२ घण्टा) समय लाग्छ। अग्नि मन्द भएमा अथवा खाने अन्न बढी भएमा अथवा भारी भएमा त्यो त्यति समयमा पाक्न सक्दैन। त्यसलाई पच्न पूरै १ दिन (२४ घण्टा) समय लाग्छ। यस्तो अजीर्णलाई दिनपाकी अजीर्ण भनिन्छ।

(६) **प्राकृत अजीर्ण** – खाने कुरा खाएपछि त्यसको पूरा पाचन नभएसम्म अपचको अवस्था रहन्छ। त्यसरी अन्नको पूरा पाचन हुने वेलासम्म जुन अजीर्णको अवस्था हुन्छ त्यो प्राकृत अर्थात् स्वाभाविक अजीर्ण हुन्छ। त्यो आफैं उचित समयमा पच्छ। अतः यसको उपचारको खासै आवश्यकता पर्दैन।

साधारण अवस्थामा अजीर्ण हुँदा शरीरमा ग्लानि र भारीपन हुन्छ, पेटमा शूल हुन्छ। अपान वायु रोकिन्छ, कहिले पाखाला लाग्ने, कहिले कब्जियत हुने गर्छ।

अजीर्णनाशक योगहरू– पिप्ला र सुठोको चूर्णमा चाकु मिसाई खानाले अजीर्ण र आमवाट हुने शूल निको भएर जान्छ। (परीक्षित)

कागतीको रसमा सिंधे नुन मिसाएर त्यसमा पिप्ला ४ दिनसम्म भिजाइराख्नू । त्यसपछि निकालेर छायामा सुकाउनू र सिसीमा राख्नू । यस्ता २-४ ओटा पिप्ला दिनदिनै सेवन गर्नाले भोजन राम्ररी पच्न थाल्छ, अजीर्ण नष्ट हुन्छ, मुखको स्वाद मिठो हुन्छ । (परीक्षित)

कागतीको रसमा जाइफल घोटेर खवाउनाले दिसा लागेर पेट सफा हुन्छ र पेटको अजीर्ण, शूल आदि नष्ट हुन्छ । (परीक्षित)

शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, शुद्ध वत्सनाभ विष, ज्वानो, त्रिफला, सज्जोखार, यवक्षार, सिंधे नुन, चितुको जरा, जिरा, कालो नुन, वायुविडङ्ग, त्रिकटु सबै समभाग लिनू । पहिले पारद र गन्धक खलमा राखी घोटेर कज्जली बनाउनू । त्यसपछि बाँकी अरू सबै चीजहरूको चूर्णलाई क्रमशः मिसाई दिनू । अब सबै औषधीहरू जोख्नू, तिनीहरूको जति तौल हुन्छ त्यति नै शुद्ध कुचिलाको चूर्ण मिसाइदिनू । अनि खलमा राखी कागतीको रसमा खूब घोट्नू र २-२ रत्तीको गोली पार्नू । यस गोलीको सेवनले मन्दाग्नि, अजीर्ण, आम विकार र अनेक किसिमका वात विकार निश्चय आराम हुन्छन् । (परीक्षित)

अजीर्ण गजकेशरी रस

शंख भस्म ४ तोला, सिपी भस्म ४ तोला, आमलासार गन्धक ४ तोला, मण्डूरभस्म ४ तोला, भुटेको स्वाग (टंकण) ४ तोला, नौसादर ४ तोला, सांभर नुन ४ तोला, सुठोको चूर्ण ४ तोला, पिप्लाको चूर्ण ४ तोला, चितु (जरा)को बोक्राको चूर्ण ४ तोला, ज्वानुको चूर्ण ४ तोला सबलाई पिनेर एक सेर ज्यामीरको रसमा मिसाई खूब बलियो बोतलमा भरेर कार्कलाई बलियोसँग बन्द गरेर १४ दिनसम्म जमीनमा गाडी दिनू । त्यसपछि निकाली उपयोग गर्नू । यो औषधी ४ ग्रामको मात्रामा भोजनपछि दिनको २ पटक खान दिनू । यसबाट अजीर्ण, शूल, गुल्म जस्ता अनेक रोग नष्ट हुन्छन् । अजीर्णका लागि यो अनुपम र परीक्षित औषधी हो ।

अजीर्णको अवस्थामा वायुका कारण पेट फुलिरहेको छ र ठाउँ फेरी फेरी दायाँबायाँ, तलमाथि शूल हुन्छ भने गहुँको चोकरमा अलिकति नुन मिसाई कपडाको पोटली बनाई तावामा तताएर शूल भएको ठाउँमा सेकिदिनू ।

लाहौरी (सिंधे) नुन ११ ग्राम, कालो नुन ११ ग्राम, पुदीना १९ ग्राम, हर्रोको बोक्रा ३४ ग्राम, बर्रोको बोक्रा ३४ ग्राम, अमला ३४ ग्राम, पिप्ला ३४ ग्राम, मरिच ३४ ग्राम, सुठो ३४ ग्राम, बोझो ३४ ग्राम, कालो जिरा ३४ ग्राम, सेतो जिरा ३४ ग्राम, नुन ३४ ग्राम, धनियाँ ३२ ग्राम, सूप ८० ग्राम, ज्वानू ८० ग्राम सबलाई कुटी छानी कागतीको रसमा घोटेर सुकाइदिनू । सुकेपछि फेरि अमलाको रस अथवा काढासँग घोटेर सुकाउनू । त्यो पनि सुकेपछि खलमा राखी कागतीको रसमा घोट्नू

र जङ्गली बयर बराबर (१ ग्राम)को गोली पार्नू । यो १ गोली बिहान बेलुका पानीसँग खानाले अजीर्ण नष्ट हुन्छ, भोक बढ्छ र पेटको कुपित वायु शान्त हुन्छ ।

एक भाग शुद्ध हिङ र २ भाग पुरानो चाकू मिसाएर जौ बराबर (१२५ मि.ग्रा.)को गोली पार्नू । यो १ वा २ गोली बच्चालाई खान दिनाले पेट फुलेको कम हुन्छ र शूल पनि हुन छोड्छ ।

ज्वानो र सिंधे नुनको चूर्ण फाँक्नाले अजीर्णबाट पेट दुखेको आराम हुन्छ । गाईको दूधबाट बनाएको पातलो मही पनि अजीर्ण भैरहने मानिसका लागि अमृत बराबर हुन्छ ।

शुद्ध हिङ, भुटेको जिरा, सुठो, सिंधे नुन समभाग लिएर चूर्ण बनाउनू । यो चूर्ण तातो पानीसँग खानाले अजीर्ण र पेट दुखेको सञ्चो हुन्छ ।

सुठो, मरिच, पिप्ला, अकर्करा, सिंधे नुन, नौसादर सबै १-१ तोला लिएर कुटी छानी मिसाउनू । यो चूर्ण ३-४ रत्ती (३७५-५०० मि.ग्रा.) मात्रामा तातो पानीसँग खानाले भोजनको पाचन राम्रो हुन्छ ।

पाँच किसिमका नुनहरू, आँककको कोपिला, त्रिफला, त्रिकटु, यवक्षार सबलाई पिनेर खलमा राखी आँककको पातको रससँग घोट्नू र जङ्गली सानो बयर बराबर (१ ग्राम)को गोली पार्नू । साँझमा १ गोली तातो पानीसँग खान दिनू । यसले अग्नि दीप्त बनाउँछ, पेट दुख्ने, फुल्ने, कराउने जस्ता समस्याहरूमा आराम दिन्छ ।

६. विसूचिका रोग (हैजा)

यो अजीर्ण अथवा दूषित खानाबाट हुने रोग हो । यसमा विशेष किसिमको रोगकारक जीवाणु (Coma Bacillus) पनि कारण हुन्छ । यसमा चौलानी जस्तो पातलो दिसा पटक-पटक हुन्छ र सम्पूर्ण शरीर दुख्छ । साथमा वमन पनि हुन्छ । यसका तीन अवस्थाहरू हुन्छन् -

पहिलो अवस्था- रोग सुरु हुने वेलामा रोगीको मन आत्तिन्छ, बान्ता होला जस्तो भइरहन्छ । पछि बारम्बार पखाला चल्न थाल्छ र वमन पनि हुन थाल्छ । सुरुमा २-३ पटक दिसा आउँछ, खाएको अन्न वमन भएर जान्छ । पछि वमनमा पानी मात्र आउँछ र भातको माँड वा चौलानीजस्तो बाक्लो र सेतो दिसा निस्कन्छ । कहिलेकाहीं रातो पनि हुन्छ ।

दोस्रो अवस्था- पखाला र बान्ता भएपछि पेट दुख्न थाल्छ, जिभ्रो काँडा आएजस्तो हुन्छ, तिर्खा बढ्छ, पिसाब कम हुन्छ वा रोकिन्छ । नाडीको गति तेज भएर पनि दुर्बल हुन्छ, श्वास-प्रश्वास छिटो हुन्छ ।

तेस्रो अवस्था– यस अवस्थामा वमन र पखाला भइरहन्छ। शरीरमा पानी कम भएर हात-गोडाहरूका मांसपेशीहरूमा तन्केजस्तो दुखाई हुन्छ। पसीना चिसो हुन्छ, छाला पनि चिसो हुन्छ। रोगी कमजोर हुँदै जान्छ। उसका आँखा भित्र पस्छन्, ओठ, दाँत र नङ्हरू निला हुन्छन्, गाला पच्किन्छन्। बोली क्षीण र नबुझिने हुन्छ। नाडी मन्द, अनियमित र अस्पष्ट हुन्छ। शरीर झमझमाउने, ऐंठिने हुन्छ। पिसाब रोकिन्छ। अन्तमा मूर्च्छा भएर रोगीको मृत्यु हुन्छ। अन्तिम समयमा रोगीलाई एकपटक होश आउँछ तर बाँच्न सक्दैन। यो तेस्रो अवस्था पखाला लागेको ४-६ घण्टापछि अथवा २४ घण्टापछि सुरु हुन्छ। यो अवस्था नआउँदै उपचार गरेमा रोग निको हुन्छ नत्र जीवन संकटमा पर्छ।

हैजानाशक उपाय

अर्क कपूर– रेक्टीफाइड स्पिरिट नं. १०-२४ औंस, कपूर ३ औंस, आयल मेन्थोल (पिपरमिन्ट) २ औंस लिनू। पहिले स्पिरिटलाई दुई बोतलमा आधा आधा पार्नू र दुवैमा आधा आधा (१/२ औंस) कपूर राख्नू। कार्क लगाई दुवै बोतलहरू खूब हल्लाउनू। कपूर घोलिएपछि त्यसमा पिपरमिन्टको तेल मिसाइदिनू। पछि दुवै बोतलको मिश्रणलाई एकै बोतलमा राखी मिसाइदिनू। यही असली अर्क कपूर हो। यसको सेवनले हैजा, गर्मीको पखाला, वमन, विषालु जनावरको विष तुरुन्त शान्त हुन्छ। हैजाको सुरुको अवस्थामा अर्क कपूर दिएमा निश्चय नै आराम हुन्छ। युवकलाई झाडापखाला लाग्ने बित्तिकै अलिकति चिनीमा १० थोपा अर्क कपूर राखी खान दिनू। जबसम्म पखाला रोकिँदैन तबसम्म १-१ घण्टा, २-२ घण्टाको अन्तरमा दिइराख्नू। पखाला कम भएपछि समयको अन्तर पनि बढाउँदै जानू। १२-१४ वर्षको बालकलाई ४-५ थोपा र सानो बच्चालाई २-३ थोपा दिनू। यसको मात्रा २ देखि १० थोपासम्म हो। महिलाहरूलाई पनि कम मात्रामा दिनुपर्छ।

दाँत दुखेको वेलामा– यसलाई कपास बेरिएको सिन्कामा भिजाई दाँतमा केहीबेर च्यापी राख्नू। ३-४ पटक लगाउनाले कडाभन्दा कडा दुखाई पनि शान्त हुन्छ।

विषालु जनावरले टोकेको ठाउँमा – ३-४ पटक लगाईदिएमा बिल्कुल आराम हुन्छ। अर्क कपूर खाएको रोगीले आधा घण्टासम्म पानी खानुहुँदैन। आधा घण्टापछि मात्र अलिअलि गरेर दिनू।

सुधा धारा– ४-५ तोला कपूरलाई केराको जराको पानीमा खल गरी सुकाउनू। त्यसपछि ज्वानोको काढामा खल गरी सुकाउनू। त्यसपछि एउटा सिसीमा राखी कपूर ६ माशा भर्नू। माथिबाट ६ माशा ज्वानोको सत् र ६ माशा पिपरमिण्टका टुक्रा हाल्नू। सिसीमा बिर्को टम्म लगाई राखी दिनू। पछि ती सबै

द्रव्यहरू पानीजस्तै बन्छन् । यसलाई सुधा धारा भन्छन् । यसबाट ४-५ थोपा पानीमा मिसाएर दिएमा पेट दुखेको, अजीर्ण र हैजा निश्चय नै आराम हुन्छ । यसै अर्कको ४-५ थोपा विषालु जनावर जस्तै बिच्छी, अरिँगाल आदिले टोकेको ठाउँमा लगाउनाले निश्चय नै आराम हुन्छ । यसको व्यापार पनि गर्न सकिन्छ ।

कसैले कपूर र ज्वानोको सत्त्व १-१ तोला र पिपरमिण्टको सत्त्व २ माशा मिसाउँछन् र कसैले २ माशा लोबान पनि मिसाउँछन् । जे भएपनि यो एउटा रामबाण औषधी हो ।

लशुन, सेतो जिरा, गन्धक, सुठो, मरिच, पिप्ला, सिंधे नुन, शुद्ध हिङ सबै समभाग लिएर चूर्ण बनाई मिसाउनू र कागतीको रसमा घोटेर चनासमानको गोली पार्नू । यस गोलीको सेवनले क्षणभरमै अजीर्ण तथा हैजामा आराम हुन्छ । युवकलाई १ पटकमा ४-५ गोली, बालकलाई १-२ गोली पानीसँग दिनुपर्छ । (परीक्षित)

शुद्ध हिङ, यवक्षार, सज्जीखार, सिंधे नुन, कालो नुन, बीरे नुन, पिप्ला, पिप्लाको जरा, चितु, मरिच, कचूर, धनियाँ, सुकेको अमिली, बोझो, अजमोदा, पुष्करमूल, सुठो, करञ्ज, कालो जिरा, हर्रो, पाठा समभाग लिई कुटेर छान । त्यसपछि सबै खलमा राखी कागतीको रससंग घोट र जङ्गली बयर बराबर(१ ग्राम)को गोली बनाऊ । यो गोली हैजामा गुलाब जलसँग, छाती र घाँटीको जलनमा पनि गुलाबजलसँग, अजीर्ण र आमरोगमा सूपको काढासँग, वायुगोला र हिक्कामा तातो पानीसँग ३-४ गोलीको मात्रामा खान दिनुपर्छ । यो औषधी हैजाको पहिलो अवस्थाका लागि रामबाण हो ।

अग्निकुमार रस पनि हैजामा निकै उपयोगी हुन्छ ।

समुद्री नरिवल पानीमा घोटेर अलिअलि ख्वाउनाले हैजालाई आराम गर्छ । त्यो १ जौ बराबर लिएर गुलाबजलमा घोटेर पिउन दिएमा पखाला निश्चय बन्द हुन्छ । (परीक्षित)

आँकको जराको बोक्रा १ तोला, अदुवाको रस २ तोला दुवैलाई खलमा घोटेर १-१ रत्तीको गोली पार्नू र छायामा सुकाउनू । यो १-१ गोली १-१ घण्टामा एक घुड्को पानीसँग रोगीलाई निल्न लगाउनू । यो हैजाका लागि रामबाण औषधी हो । (परीक्षित)

आँकको जराको बोक्रा १२ ग्राम, मरिच ३ ग्राम दुवैको चूर्ण बनाई पानीसँग पिनेर केराउजत्रो (२५० मि.ग्रा.) गोली पार्नू । यो गोली १-१ घण्टामा दिनाले ज्वर तथा हैजाका लागि राम्रो औषधी हुन्छ । (परीक्षित)

अपामार्गको जरा २ ग्रामलाई शरपुंखाको रससँग घोटी पिउन दिएमा हैजामा आराम हुन्छ । (परीक्षित)

जाइफल, सिंधे नुन, शुद्ध हिंगुल, कौडी भस्म, सुठो, अफीम, धतुरोको बियाँ, पिप्ला सबै समभाग लिई कुटी छानी कागतीको रससँग खल गरी १-१ रत्तीको गोली पार्नू। यो १ गोली शुद्ध हिङ २ रत्ती र सिंधे नुन १ माशा (१ ग्राम) मिसाएको १ छटाक (५० मि.लि.) महीको अनुपानसँग खान दिनू। हैजाबाट हुने पखाला तुरुन्त रोकिन्छ। (परीक्षित)

आँककको जरा, मरिच, अकरकरा समभाग लिएर कुटेर छानेपछि धतुरोको जराको रस राखी खूब घोट्नू र चनाबराबरको (२५० मि.ग्रा.) गोली पार्नू। यो १ गोली २-२ घण्टामा पानीसँग खान दिएमा हैजा शान्त हुन्छ। (परीक्षित)

जौको पिठो र यवक्षार दुवैलाई महीमा मिसाई आगोमा तताएर पेटमा लेप गर्नू। पेटको शूल शान्त हुन्छ।

प्यास शमन गर्ने उपाय- १ ली. पानीमा १० ग्रा. ल्वाङ् राखी पकाउनू, आधा पानी बाँकी भएपछि उतारेर सेलाउन दिनू। यो पानी खान दिएमा वान्ता होला जस्तो भइरहेको, बढी प्यास लागेकोमा आराम हुन्छ। (परीक्षित)

जाइफलको काढा अलिअलि ख्वाईरहनाले हैजाको तिर्खालाई कम पार्छ।

शीतल चिनीको गेडा ल्याई मसिनो हुनेगरी पिन्नू। रोगीले जब जब पानी माग्छ त्यस वेलामा उक्त चूर्ण १ चिम्टी (२५० मि.ग्रा.) जति मुखमा राखी पानी ख्वाइदिनू। यसले हैजामा लाग्ने तिर्खा कम गर्छ र पिसाब पनि रोकिँदैन। (परीक्षित)

वमनलाई रोक्ने उपाय- अलैंची, धानको लावा, ल्वाङ्, पहेंलो नागकेशर, मेहंदी, वयरको बियाँको गुदी, नागरमोथा, सेतो चन्दन सबै समभाग लिएर कुटी छानी चूर्ण बनाउनू। त्यसमा सबै चूर्णको तौल बराबर मिश्रीको चूर्ण मिसाएर राख्नू। यो चूर्ण महमा मिसाई चाट्नाले तीनओटै दोषहरूका कारण उत्पन्न भएको कठिन वमन हुन छोड्छ। (परीक्षित)

रायोको गेडा पानीमा पिनेर सानो टुक्रा कागजमा दल्नू र त्यसलाई रोगीको नाभिमा टाँसिदिनू। त्यहाँ पोल्न थालेपछि त्यो टाँसेको कागज निकाल्नू। यसो गर्नाले वमन हुन छोड्छ। यो कम्तीमा २० मिनेटसम्म राख्नूपर्छ। यही रायोको प्लास्टर घाँटी र मेरुदण्डमा लगाएपनि वान्ता हुन छोड्छ।

मयूरको प्वाँखको अलिकति भाग लिएर जलाई खरानी पार्नू। उक्त खरानी २ रत्ती (२५० मि.ग्रा.) मह र पिप्लाको चूर्णसँग खान दिएमा वमन हुन छोड्छ।

हात-गोडा चिसो हुने, बाउँडिने भएकोमा- रोगीलाई न्यानो ठाउँमा राख, गरम लुगा लगाईदेऊ। सुठोलाई मसिनो गरी पिन र तताएर हात-गोडामा दल्न लगाऊ। यदि हातखुट्टा बढी बाउँडिन्छ भने तताएको बालुवा कपडामा पोको पारी काञ्जीमा डुबाई त्यसको बाफ बाउँडिएको ठाउँमा लाग्न देऊ। सर्स्यूं (

तोरी)को तेलमा तितो कुठ र सिंधे नुनको चूर्ण मिसाई हात-गोडामा मालिस गर्न लगाऊ । यसले हात-गोडा बाउँडिन छोड्छ ।

सुठो र जाइफल समभाग लिएर मसिनो हुने गरी चूर्ण बनाऊ । त्यसले हात खुट्टामा मालिस गर्न लगाऊ । यसबाट बाउँडिन छोड्छ र जिउ तातेर आउँछ ।

जिउ बाउँडिनका साथै पूरा शरीर चिसो भएको र नाडीको गति पनि मन्द भैसकेको छ भने विषगर्भ तेलमा तारपीनको तेल र कपूर मिसाएर हातगोडामा मल्न दिनू । यसले नाडीहरूको गति बढ्छ र हातखुट्टाहरू तातेर आउँछन् । यो अनेकौं पटक परीक्षा गरिएको हो ।

पिसाब खुलाउने उपायहरू- कलमी शोरा २ तोला (२४ ग्राम) लिएर पानीमा घोल्नू । त्यसमा सफा कपडाको टुक्रा चोबेर नाभिको तल पेटमा राख्नाले पिसाब खुल्छ । आधा घण्टासम्म पनि पिसाब भएन भने फेरि अर्को पटक त्यही पट्टी राख्नू । यो पिसाब खुलाउने परीक्षित उपाय हो ।

हिक्कानाशक उपाय- केराको जरालाई पिन्नू र कपडछान गरी रस निकाल्नू । यो रस नाकमा राख्नाले हिक्का हुन छोड्छ ।

सिंधे नुन पानीमा मिसाएर वा चूर्ण बनाई घिउमा मिसाएर सुँघ्न दिएमा हिक्का हुन रोकिन्छ । (परीक्षित)

मयूरको प्वाँखको चँदुवालाई आगोमा पोली त्यसको खरानी बनाउनू । त्यो खरानी ३ ग्राम मात्रामा लिएर महमा मिसाई चाट्न दिएमा हिक्का बन्द हुन्छ ।

सुठोको चूर्ण चाकुमा मिसाई सुँघ्न दिए पनि हिक्का बन्द हुन्छ ।

पसीना कम पार्ने उपाय - गहतलाई भुटेर पिन्नू र चूर्ण बनाउनू । त्यो चूर्ण पसिना आउने ठाउँमा दल्नाले पसिना आउन कम हुन्छ ।

सुठोलाई भुटेर कुटेपछि छान्नू । त्यसमा रहरको दाल र सिधे नुन पनि पिनेर मिसाउनू । यो मिश्रण शरीरमा दल्नाले सन्निपात, हैजा आदि रोगमा बढी पसिना आउन रोकिन्छ । (परीक्षित)

अथावा समुद्रफललाई सुठोसँग पिनेर शरीरमा लेप गर्नाले पसिना आउन बन्द हुन्छ ।

७. अलसक रोग (अपच रोगको प्रकार)

अलसक रोगको लक्षण- यो अजीर्णबाट उत्पन्न हुने रोगको अवस्था हो । यसमा पेट बेसरी फुल्छ र रोगी बेचैन भएर कराउँछ । पेटमा चारैतिर वायु घुमिरहन्छ । अपान वायु (पाद) र दिसा रोकिन्छ । प्यास बढी लाग्छ र डकार पनि आइरहन्छ । पेट बेसरी दुख्छ ।

अलसक रोगको असाध्य अवस्था– जुन रोगीको नङ्, ओठ र दाँत काला भैसकेका छन्, होश कम हुँदै गएको छ, बान्ताले व्याकुल छ, आँखा भित्र गडेका छन्, बोली अतिक्षीण छ, शरीरका जोर्नीहरू शिथिल हुँदै गएका छन्, त्यस्तो अलसकको रोगी बाँच्दैन ।

विलम्बिका– यो पनि अजीर्णबाट उत्पन्न हुने रोगको अवस्था हो । यसमा अलसककै जस्तो कुपित वायु र कफद्वारा अन्नको पाचन हुन पाउँदैन र त्यो माथिबाट वमन तथा तलबाट मल भएर निस्कँदैन । यसमा वेदना त्यति धेर हुँदैन तर यसले रोगीलाई धेरै दिनसम्म सताउँछ । यो कष्टसाध्य वा असाध्य हुन्छ ।

अलसक रोगको चिकित्सा– यस रोगमा पहिले पानी पकाई नुन राखी पिउन दिनू र घाँटीसम्म आँला पुऱ्याई वमन गराउनू । वमन भएमा यो रोगमा चाँडै आराम हुन्छ ।

जौको पीठो र यवक्षार दुवैलाई महीमा मिसाई तताउनू र पेटमा लेप गर्नू । यसले पेटको दुखाई शान्त पार्छ । (परीक्षित)

प्यास वा वाकवाकी लाग्ने भइरहेमा ल्वाङ् राखी पकाएको पानी खान दिनू । जाइफल वा नागरमोथाको काढाले पनि फाइदा गर्छ । (परीक्षित)

भोजन गर्नुभन्दा पहिले हिङ, सुठो, मरिच, पिप्ला, सिंधे नुन समभाग लिई पानीसँग पिनेर लेदो बनाउनू र आगोमा तताई पेटमा लेप गरिदिनू । यस लेपबाट सबै किसिमका अजीर्ण, अलसक, विलम्बिका यी रोगहरू समाप्त हुन्छन् ।

रातको भोजनमा पहिले प्याजको रसमा चना बराबर (२५० मि.ग्रा.)को हिङ, सूप १ ग्राम, धनियाँ १ ग्राम तीनै थरीको चूर्ण मिसाई खानाले हैजा लाग्ने डर हुँदैन । हैजाको मौसममा रातको समयमा यो अवश्य खानुपर्छ ।

कपूरलाई सुँघ्ने र हरदम आफूसँग राख्ने गर्नाले हैजा लाग्ने डर हुँदैन ।

८. कृमि रोग (जुका, चुर्ना आदि)

बाहिरी वातावरणबाट खाने कुरा, दूषित वस्तु आदिको माध्यमबाट शरीरमा पुगेका अथवा शरीरभित्र ती वस्तुहरू पुगेपछि उत्पन्न र विकसित भएका रोगको कारण बन्ने जीवाणुहरूलाई कृमि भनिन्छ । यस बाहेक केही अरू जीवाणुहरू पनि कृमि हुन्छन् तर तिनीहरू रोगका कारण हुँदैनन् ।

रोगकारक जीवाणुहरूका मुख्य दुई वर्गहरू हुन्छन्– वाह्य र आभ्यन्तर कृमि ।

उत्पन्न हुने अथवा बढ्ने कारण वा माध्यमका आधारमा कृमिहरू चार किसिमका हुन्छन्– वाह्य मलज (बाहिर छाला, केश आदिमा भएको मयल, पसिना

आदिका कारण बढ्ने कृमिहरू), कफज (कफबाट उत्पन्न हुने कृमिहरू), रक्तज (रगतमा हुने कृमिहरू) र पुरीषज (दिसामा हुने कृमिहरू)।

बाह्य मलज कृमिहरू दुई थरी हुन्छन्- यूका (जुम्रा) र लिक्षा (लिखाहरू)। यी कृमिहरू राम्ररी ननुहाउने, मैलो लुगा लगाउने, फोहोर ठाउँमा बस्ने जस्ता कारणहरूबाट उत्पन्न हुने र बढ्ने हुन्छन्। यी निकै साना, तिल जत्रा, सेतो वा कालो रङ्गका र धेरै खुट्टासहितका हुन्छन्। कपाल, जुँघा-दाढी, काखी आदिका रौँहरू, लगाएका लुगाहरूमा रहन्छन्। यी कृमिहरूका कारण छाला चिलाउने, त्यहाँ चाला-फोका उठ्ने, पिड्का उठ्ने जस्ता लक्षण हुन्छन्, रौँ झर्छन्।

कफज कृमिहरू सात ओटा हुन्छन्- अन्त्राद, उदरावेष्ट, हृदयाद, महागुद, चुरु, दर्भकुसुम र सुगन्ध। यी कृमिहरू दूध, गुड, तिल, माछा, माषको दालबाट बनेका परिकारहरू, दही आदि कफ बढाउने द्रव्यहरूको बढी मात्रामा वा अनियमित रूपमा सेवन गर्दा उत्पन्न हुन्छन्। यी आमाशयमा रहन्छन्। कहिले आमाशयभन्दा माथि वा तल पनि सर्छन्। यी हेर्दा कुनै बाक्लो छालाको डोरी जस्ता, कुनै लामा गोलाकार र गँड्यौलाजस्ता, सेतो वा रातो वर्णका हुन्छन्। कुनै पातलो धागोजस्ता, सेता र लामा हुन्छन्।

यी कृमिहरूका कारण वाकवाकी लाग्ने, मुखबाट ज्याल चुहुने, खानेकुरा नरुच्ने, खाएको अन्न नपच्ने, वान्ता हुने, दिसा खलास नहुने, छ्यूँ आइरहने, पिनास हुने, ज्वरो आउने, मूर्च्छा पर्ने यी लक्षणहरू हुन्छन्।

रक्तज कृमिहरू ६ ओटा हुन्छन्- केशाद, लोमाद (लोमविध्वंस), लोमद्वीप, उदुम्बर (औदुम्बर), सौरस र जन्तुमाता। यी कृमिहरू बिरुद्ध आहारहरूको निरन्तर सेवनबाट उत्पन्न हुन्छन्। रगत बग्ने सिरा-धमनीहरूमा यी रहन्छन् र रगत आदि धातुमा विकृति ल्याई कुष्ठ रोग वा विभिन्न छालासम्बन्धी रोगहरूका कारण बन्छन्।

पुरीषज कृमिहरू ५ ओटा हुन्छन् - ककेरुक, मकेरुक, सौसुराद, सशूल, लेलिह। यस्ता कृमिहरू माषको दाल, मैदा आदि पिठोका परिकार, नपखालेका सागहरू, गुड, अमिलो, नुनिलो कुरा बढी खानाले उत्पन्न हुन्छन्। यी पक्वाशय अर्थात् ठूलो आन्द्रामा रहन्छन्। यी माथितिर सर्न लाग्दा डकार वा सास फेर्ने वेलामा दिसाको गन्ध आउँछ। प्रायः यी बढेपछि तलतिर सर्छन् र गुदद्वारबाट निस्कन्छन्।

यी कृमिहरूबाट पखाला लाग्ने, पेट दुख्ने, डम्म हुने हुन्छ। अग्नि मन्द हुन्छ। यी गुदद्वारमा पुगेपछि त्यहाँ चसक्क दुख्ने र चिलाउने हुन्छ। तिनीहरूका कारण शरीरमा बल घट्ने, छाला रुखो हुने जस्ता लक्षण पनि हुन्छन्।

मन्द ज्वरो आइरहन्छ, पेटमा शूल हुन्छ, मुटुको नजिक दुख्ने हुन्छ वा धड्कन बढ्छ, जिउ गल्छ, रिँगटा लाग्छ, खाने कुरा रुच्दैन, पखाला लाग्छ, शरीरको रङ्ग फुस्रो हुन्छ ।

आयुर्वेदमा वर्णन गरिएका पुरीषज र कफज कृमिहरूलाई आन्त्रिक कृमि भन्न सकिन्छ । यस वर्गमा चार किसिमका कृमिहरू पर्छन् –

(१) अङ्कुशमुख कृमि (Hook worm), (२) गण्डूपद कृमि (Round worm), (३) स्फीत कृमि (Tape worm) र (४) सूत्रकृमि (Thread worm) । यी सबै महास्रोत अर्थात् पाचन अङ्गहरूमा रहन्छन् ।

(१) अङ्कुशमुख कृमि – यसलाई अन्त्राद कृमि भनिन्छ र संक्रमण भएको मानिसको दिसामा यसका फुलहरू (अण्डा) पाइन्छन् । यी कृमिहरू भएको ठाउँमा नाङ्गै खुट्टा हिँड्ने मानिसको पैतालाबाट यी शरीरमा पस्छन् र सिराहरूबाट क्रमशः मुटु, फोक्सो, अन्ननली हुँदै सानो आन्द्राको सुरु हुने ठाउँमा पुगेर त्यहीं अडिन्छन्, त्यहीं २ हप्तामा आकारमा बढ्छन् र लगभग ४ हप्तामा पुष्ट हुन्छन् । यी कृमिहरूको मुख अङ्कुश जस्तो तिखो हुन्छ र तिनकै भरमा यी आन्द्रामा टाँसिएर बस्छन् र रगत चुस्ने गर्छन् । त्यस अवस्थामा रगत कम भएर जिउ अलि पहेंलो हुन्छ । रगतमा होमोग्लोबीनको मात्रा निकै कम भएर जान्छ र रक्तकणहरूको (RBC) संख्या पनि निकै कम हुन्छ । यस बाहेक मुटुमा दुख्ने, सास फेर्न गाह्रो हुने, शरीरको रङ्ग फुस्रो हुने, रुखोपन बढ्ने यी लक्षण देखिन्छन् ।

(२) गण्डूपद कृमि – यसलाई महागुद पनि भनिन्छ । रोगी मानिसको मलबाट निस्केका अण्डाहरू परेको खाने कुरा खाएपछि यी कृमिहरू स्वस्थ मानिसको आन्द्रामा पुग्छन् । आमाशयको रसद्वारा इनको आवरण गलेपछि यी स्वतन्त्र भएर कलेजो हुँदै सिराहरूबाट मुटुमा र त्यसपछि फोक्सोमा पुगेर पुष्ट हुन्छन् । त्यहाँबाट फेरि आमाशय हुँदै आन्द्रामा पुग्छन् र बढेर पुष्ट अवस्थामा पुग्छन् । यी ५ इञ्चदेखि १४ इञ्चसम्म लामा हुन्छन् र अत्यन्त चञ्चल र गतिशील हुन्छन् । प्रायः आन्द्रामा गुडुँल्किएर बस्छन् । इनको संक्रमण भएपछि रोगीलाई ज्वरो आउँछ जुन अनिश्चित अर्थात् घट्ने-बढ्ने किसिमको हुन्छ । यो प्रायः बालकहरूमा हुन्छ । राती सुतेको वेलामा दाँत बज्नु यसको मुख्य लक्षण हो । यस बाहेक पातलो दिसा हुने, पेट दुख्ने, बान्ता हुने लक्षण पनि हुन्छ । कहिलेकाहीं मलका साथ गुदद्वारबाट बाहिर पनि निस्कन्छन् । कुनै वेलामा आमाशयमा पुगेर वाकवाकी लाग्ने, बान्ता गराउने हुन्छन् र बान्तासँगै निस्कन्छन् । यी कृमिहरू गुँडुल्किएर बस्दा आन्द्राको प्वाल बन्द भएर अन्त्रावरोध हुन सक्छ । कहिलेकाहीं पित्तवाहिनीमा अवरोध उत्पन्न गरेर कामला रोगको कारण बन्न सक्छ ।

(३) स्फीत कृमि (फिते जुका) (Tape worm) - यसलाई उदरावेष्ट भन्न सकिन्छ । यो ८-१० फीट सम्म लामो र फिताजस्तै फराक र चेप्टो आकारको हुन्छ । यसको गोलो टाउकोमा रहेको अंकुशद्वारा यो आन्द्रामा टाँसिएर बस्छ । यसको शरीरमा ससाना धेरै खण्ड हुन्छन् । यो परिपक्व भएपछि यसका अन्तिम ४-६ खण्डहरू मलबाट बाहिर निस्कन्छन् जुन हेर्दा कद्दू अर्थात् लौकाको बिया जस्तै देखिन्छन् । यसै भएर यसलाई हिन्दीमा कद्दूदाना भन्छन् । यस कृमिको संक्रमण विशेष संक्रमित रूपमा बंगुरको मासु खाने मानिसहरूमा हुन्छ । यसबाट पेट दुख्ने, वान्ता हुने, अग्नि मन्द हुने अथवा बढी भोक लाग्ने र पाण्डु आदि रोगका लक्षणहरू उत्पन्न हुन्छन् ।

(४) सूत्र अथवा तन्तुकृमि (Thread worm) - यसलाई चुरु वा चुर्ना भन्न सकिन्छ । यो कृमि धागोजस्तै पातलो र सेतो रङ्गको हुन्छ । यसको लम्बाई निकै कम लगभग आधा जौ बराबर हुन्छ । धेरैजसो बालकहरू यसबाट प्रभावित हुन्छन् । यो राती गुदद्वारबाट बाहिर निस्कन्छ । यसको प्रकोपबाट गुदद्वार चिलाउने हुन्छ । कहिलेकाहीं आउँ पर्ने, गुदद्वार बाहिर निस्कने, ओछ्यानमा पिसाब हुने र रुघा लाग्नेजस्ता लक्षणहरू उत्पन्न हुन्छन् ।

कृमिरोगको चिकित्सा

कृमिरोगको निवारणका लागि तीन किसिमको व्यवस्था गर्नुपर्छ - शरीरमा भएका कृमिहरूलाई विभिन्न शोधनका उपायहरूद्वारा बाहिर निकाल्नुपर्छ ।

- कृमिहरू फेरि उत्पन्न नहुने किसिमको औषधी खानपानको सेवन गराउनुपर्छ ।
- कृमि उत्पन्न हुने वा बढाउने खालका गुलिया गुड, शाक आदिको बढी प्रयोग गर्न छोड्नुपर्छ ।

कृमिहरूलाई बाहिर निकाल्न पहिले रोगीलाई मिठाई, सख्खर आदि गुलियो कुरा खान दिनुपर्छ । गुड-सख्खर आदि पेटमा गएपछि त्यहाँ भएका जुका आदि कृमिहरू गुलियोतिर सर्छन् । त्यस वेलामा कम्पिल्लक (सिन्दुरे), वायुविडङ्गको चूर्ण आदि कृमिनाशक औषधी दिँदा तिनीहरू मर्छन् वा बेहोश हुन्छन् । त्यसपछि एरण्ड तैलको जुलाफ दिएर निकाली दिनुपर्छ ।

कृमिनाशक योगहरू- नागरमोथा, मुसाकानी (मूषिकपर्णी), त्रिफला, देवदारु र शोभाञ्जन (सहिजन)को जराको काढामा पिप्ला र वायुविडङ्गको चूर्ण मिसाई खान दिएमा कृमि रोग तथा त्यसबाट उत्पन्न अरू रोगहरू पनि नष्ट हुन्छन् । (परीक्षित)

वायुविडङ्ग, सिंधे नुन, हिङ, हर्रो, सेतो निशोथ, सोंचर नुन, पिप्ला सबैको चूर्ण मनतातो पानीसँग खानाले कृमि, अरुचि र वमन शान्त हुन्छन् ।

वायुविडङ्गको चूर्ण ६ ग्राम महमा मिसाएर चाट्न दिएमा कृमिरोग हराएर जान्छ । (परीक्षित)

वायुविडङ्ग र त्रिकटु (सुठो, मरिच, पिप्ला)को समभाग चूर्ण भातको माँडसँग खान दिएमा कृमिरोगको नाश हुन्छ र जठराग्नि बढ्छ (परीक्षित) ।

खुरासानी ज्वानो ६ ग्राम लिएर पानीसँग पिनी त्यसमा १२ ग्राम पुरानो चाकु मिसाई खान दिएमा पेटमा हुने सबै किसिमका किरा मरेर जान्छन् । (परीक्षित)

पलाशको बियाँको चूर्ण ५ ग्राम लिएर महीसँग पिउनाले कृमि रोग नष्ट हुन्छ । (परीक्षित)

कम्पिल्लकको फल (सिन्दुरे)को चूर्ण ३ ग्राम र पुरानो चाकु ६ ग्राम मिसाई तीन दिनसम्म सेवन गर्नाले पेटका सबै किराहरू मर्छन् । (परीक्षित)

काँचो सुपारीलाई कागतीको रसमा ९ घण्टासम्म घोटेर पिउनाले कठिन कृमिरोग पनि नष्ट भएर जान्छ ।

खुरासानी ज्वानोमा सिंधे नुन मिसाई बिहान बेलुका केही समयसम्म खानाले कृमिरोग, अजीर्ण, आमवात यी नष्ट हुन्छन् ।

कालो जिराको चूर्ण महमा मिसाई खानाले कृमिहरू मर्छन् । (परीक्षित)

एरण्ड तेल २५-५० मि.लि.लाई गोमूत्रसँग सेवन गराएमा कृमि र तिनबाट हुने पेटका रोगहरू शान्त हुन्छन् ।

फित्ते जुकाका लागि- लूनियाको साग ३ दिनसम्म दिनदिनै पकाएर खान दिनू । चौथो दिन एरण्ड तेल गोमूत्रमा मिसाएर पिउन दिनू । यसले फित्ते जुकाको (Tape worm) नाश गर्छ ।

इन्द्रवारुणी (इन्द्रेणी)को जरा चन्दन घोटेजस्तै पानीमा घोटेर गुदद्वारको भित्र-बाहिर लगाउनाले गुदद्वारमा सुनिएको र चिलाउने आदि सबै व्यथा हटेर जान्छ ।

कम्पिल्लकको फल (सिन्दुरे), पलासको बियाँ, वायुविडङ्ग, सिंधे नुन, सबलाई समभाग लिएर कुटी छानी चूर्ण बनाउनू । यो चूर्ण ४-६ ग्रामसम्मको मात्रामा तातो पानीसँग दिनको १ पटक खान दिएमा पेटका किराहरू मर्छन् ।

अनारको बोक्राको काढामा तिलको तेल राखी ३ दिनसम्म पिउन दिएमा सबै किसिमका किराहरू मर्छन् । (परीक्षित)

बिहान सबेरै उठेपछि पहिले चाकु खानू, त्यसपछि खुरासानी ज्वानुको चूर्ण पानीसँग पिनेर खानू । यसले पेटका सबै कीराहरू मार्छ । (परीक्षित)

निमको पात र हिङ मिसाएर खानाले कृमिरोग नष्ट हुन्छ ।

बालकहरूको कृमिरोगको चिकित्सा– गुलिया, अमिला खानेकुराहरू, सधैँ बढी मात्रामा खाइरहँदा बाल-बालिकाहरूका पेटमा किराहरू पुगी बढ्दै जान्छन् । ती कीराहरूले टोकेपछि बालकहरू निदाएको वेलामा झस्केर उठ्छन् र रुन थाल्छन् । तिनको मलद्वार सुन्निएर आउँछ र रातो हुन्छ । पखाला चल्ने र पेट दुख्ने हुन्छ । शरीर पहेंलो अथवा सेतो भएर जान्छ । बच्चा दुब्लाउँछ । सानो बच्चाले दूध खाने बित्तिकै वान्ता गरिदिन्छ । उसलाई बढी तिर्खा लाग्छ र कहिलेकाहीं ज्वरो पनि बढ्छ । यस्तो रोग भएको बालकको वमन किरा नष्ट हुने उपाय नगरेसम्म अरू कैयन् औषधीले पनि निको हुँदैन । यस्ता बच्चाहरूले वमन गरेको देखेपछि तिनीहरूको पेटमा कृमि त छैनन् ? भन्ने विचार गर्नुपर्छ ।

प्याजको रस खान दिएमा बच्चाहरूको पेटका किरा तथा अपच आदि समस्याहरू हटेर जान्छन् ।

अँडेरको पातको रस ३ दिनसम्म बच्चाको गुदद्वारमा लगाईदिएमा चुर्ना मरेर जान्छन् । (परीक्षित)

यस्तै काम धतुरोको पातको रसले पनि गर्छ ।

मण्डूरभस्म र वायुविडङ्ग चूर्ण समभाग लिएर महमा मिसाई चटाउनाले बच्चाका पेटका किराहरू झरेर जान्छन् । (परीक्षित)

काउसोको जरा पानीमा घोटेर अथवा अँडेरको पातको रसमा घोटेर अलिकति हिङ् मिसाई खान दिएमा किराहरू अवश्य मर्छन् ।

कम्पिल्लक (सिन्दूरे) फलको चूर्ण २५ वा ५० ग्राम लिएर चार गुना पानीमा राखी पकाउनू । आठौँ भाग पानी बाँकी हुँदा ओराली छानी लिनू र बच्चालाई खान दिनू । किराहरू मरेर जान्छन् ।

गुर्जो र गोकुलधूपलाई अडेरको पातको रसमा घोटेर पेटमा लेप गर्नाले किराहरू मर्छन् । (परीक्षित)

एलुवा अर्थात् मुसब्बर ६० मिलीग्रामदेखि २५० मिलीग्रामसम्मको मात्रामा आमाको दूधमा घोटेर खान दिएमा बालकहरूलाई कृमिरोग अथवा अरू पेटका रोगहरू हुँदैनन् । (परीक्षित)

दाँतमा किरा भएमा– इन्द्रवारुणीको पाकेको फलको अलिकति गुदीलाई फलामको भाँडोमा तताउनू । बाफ उठ्न थालेपछि त्यसको धुवाँलाई कीरा भएको दाँत वा गिजामा लाग्न दिनू । त्यो धुवाँबाट किरा तुरुन्त मर्नेछ । (परीक्षित)

वायुविडङ्गलाई सानो चिलिममा राखी माथिबाट बलेको कोइला राख्नू। त्यसबाट आउने धुवाँलाई तमाखुजस्तै गरी पिउन दिनू। यसबाट दाँतका किरा मर्छन् र दाँतबाट दूषित पानी निस्केर जानाले दाँत दुख्न छोड्छ। (परीक्षित)

बंगाराको दाँतमा किराले पारेको प्वालमाथि कपूरको टुक्रा राख्नाले भित्रको किरा तत्काल मर्छ।

तितो तोरियाँको चूर्णलाई कागजमा चुरोट जस्तै बेरेर आगो सल्काएपछि चुरोटजस्तै सर्को गरी तान्नाले दाँतको किरा तुरुन्त मर्छ। (परीक्षित)

जुम्राहरू मार्ने उपाय- मेन्थोललाई तोरीको तेलमा पिनेर कपालमा लगाउनाले जुम्राहरू मरेर जान्छन्।

वायुविडङ्ग, मेन्थोल र गन्धक यी तीनैलाई पानीसँग पिनेर लेदो बनाऊ। गोमूत्र र तोरीको तेलका साथ तेल बनाउने विधिअनुसार पाक गर। यस तेलबाट सबै किसिमका जुम्राहरू मरेर जान्छन्। (परीक्षित)

धतुराको पातको रस राखी पकाएको तेलबाट तत्काल जुम्राहरू मर्छन्।

९. अरुचि रोग (नरुच्ने)

भोक लागेको छ, खानेकुरा स्वादिलो पनि छ तर खाना राम्रो लाग्दैन, खाएपनि निल्न गाह्रो हुन्छ भने त्यस्तो रोगलाई अरुचि वा अरोचक भनिन्छ।

यो कारणअनुसार पाँच किसिमको हुन्छ - वातज, पित्तज, कफज, त्रिदोषज र आगन्तुज।

वातज अरुचि- यसमा मुखको स्वाद नमिठो वा टर्रो हुन्छ, दाँतहरू अमिलो भएको जस्तै सिरिङ्ग हुन्छन्, मुटुमा शूल र थिचेजस्तो अनुभव हुन्छ।

पित्तज अरुचि- यसमा मुखको स्वाद पिरो वा अमिलो हुन्छ, मुखमा तातोपन र दुर्गन्ध हुन्छ। छातीमा पोल्छ, प्यास बढी लाग्छ।

कफज अरुचि- यसमा मुखमा गुलियो वा नुनिलो स्वादको अनुभव हुन्छ। मुखभित्र पिच्छिलता र दुर्गन्ध हुन्छ। अंगहरूमा भारीपना र स्निग्धता हुन्छ। खानेकुरा निल्न गाह्रो हुन्छ।

त्रिदोषज अरुचि - यसमा वातज, पित्तज, कफज तीनै किसिमका अरुचिका लक्षणहरू देखिन्छन् र शरीरमा अनेक किसिमका कष्टहरू हुन्छन्।

आगन्तुज अरुचि- शोक, भय, लोभ, क्रोध, अप्रिय भोजन, अप्रिय रूप वा गन्धबाट जुन अरुचि हुन्छ त्यसलाई आगन्तुज अरुचि भनिन्छ। त्यसमा मुखको

स्वाद स्वाभाविक नै हुन्छ, बिग्रिएको हुँदैन तर मनको व्याकुलता र मोहका कारण खानेकुरा रुच्दैन ।

चिकित्सा– यसमा भोजनभन्दा पहिले अदुवाको टुक्रामा सिंधे नुन छर्केर खानुपर्छ । यसरी दैनिक अदुवाको सेवन गरेको खण्डमा सितिमिति अरुचि हुँदैन ।

अदुवाको रस ६ माशामा मह ६ माशा मिसाएर खाएमा अरुचि तथा श्वास र खोकीमा आराम हुन्छ ।

गाईको ताजा दहीमा भुटेको रायो, भुटेको जिरा, भुटेको सुठो र सिंधे नुन सबैको चूर्ण बनाई कपडाले छानी मिसाउनू । त्यसमा आधा पानी मिसाएर मथ्नू । यो मथेको मही पिउनाले तत्काल अरुचि नष्ट हुन्छ र अग्नि प्रबल भएर आउँछ ।

अनारदानाको चूर्ण ८ तोला, पिनेको मिश्री ३२ तोला, सुठो, मरिच, सानो पिप्ला, दालचिनी, तेजपात, सुकमेलको चूर्ण सबै ४-४ तोला सबैलाई छानेर मिसाउनू । यस चूर्णको सेवनले अरुचिको समस्या हराउँछ र जठराग्नि प्रबल हुन्छ । यसले हृदयलाई हित गर्छ । (परीक्षित)

खाण्डव चूर्ण– तालीसपत्र, चव्य, मरिच, सुठो, सिंधे नुन १-१ तोला, पिप्ला, चितुको जरा, सेतो जिरा, अमिली, पिप्लाको जरा, धनियाँ २-२ तोला, बयरको गुदी, पदमचाल, सुकमेल, नाथरमोथा, ज्वानो ३-३ तोला अनारको बोक्रा ४ तोला सबैलाई कुटी छानी चूर्ण बनाएर मिसाउनू । जति चूर्ण हुन्छ त्यसको आधा मिश्रीको चूर्ण मिसाउनू । १-३ माशाको मात्रा मनतातो पानी वा अनारको रससँग खान दिनू । यसको सेवनबाट मन्दाग्नि, अरुचि, शूल र अतिसार नष्ट हुन्छन् ।

भुटेको सेतो जिरा ६ तोला, कालो जिरा २ तोला, ज्वानू १ तोला, मरिच २ तोला, पिप्ला २ तोला, धनियाँ ४ तोला, तज ६ माशा, तेजपात १ तोला, अलैँचीको बियाँ २ तोला, यवक्षार २ तोला, सुठो २ तोला, सिधे नुन १० तोला, घिउमा फुराएको हिङ् १ तोला सबलाई कुटी, कपडाले छानी, चूर्ण बनाएर मिसाउनू । कागतीको रस १ सेर लिएर छान्नू र कलईदार कराहीमा राखी मन्द आँचमा पकाउनू । १/४ भाग रस सुकेपछि पहिले बनाएको चूर्ण राखेर चलाउनू । गाढा हुन थालेपछि उतारेर बोतलमा राख्नू । १-३ माशाको मात्रामा भोजनपछि नित्य खान दिनू । यसबाट अरुचि मेटिएर खूब भोक लाग्छ । यो अजीर्ण, पेटको रोगको उत्तम र परीक्षित औषधी हो ।

सुठो, मरिच, पिप्ला, ज्वानो, अजमोदा, दालचिनी, ल्वाङ, अकरकरा, सबै १-१ तोला लिएर कुटीछानी चूर्ण बनाउनू । अदुवाको साना-साना टुक्रा, किसमिस, बियाँ झिकेको किसमिस सबै ११-११ तोला सबैलाई एउटा चौडा मुख भएको भाँडामा भरिदिनू र माथिबाट कपडछान गरिएको कागतीको रस सबै औषधी डुब्ने गरी भर्नू । त्यसपछि भाँडाको मुख बन्द गरी १५ दिनसम्म राख्नू । पछि यसबाट अलिकति

निकाली चटनीको रूपमा भोजनसँग खाने गरेमा अथवा भोजनपछि खाएमा अरुचि नष्ट भएर भोक जागेर आउँछ । यो उत्तम एवं परीक्षित औषधी हो ।

१०. छर्दि रोग (वमन)

दोषहरूको प्रकोप भएपछि उदान वायुद्वारा सम्पूर्ण खाएको र पेटमा भएको कुरा मुखबाट वेगका साथ निस्कन्छ । यो अवस्था वारंवार भइरहेमा त्यसलाई छर्दि अथवा वमि रोग भनिन्छ । यो आमाशयको रोग हो ।

अत्यन्त पातलो (तरल) पदार्थ वा चिल्लो खाना बढी खानाले, मन नपर्ने अथवा नुन बढी भएको, प्रकृतिविरुद्ध खाने कुरा खानाले, भय वा क्रोधले, खाएको कुरा नपचीकन पेटमा जस्ताको तस्तै रहनाले, पेटमा जुका आदि पर्नाले, महिलामा गर्भ रहनाले, अति छिटो खाने गर्नाले, घिनलाग्दो देख्नाले अथवा त्यस विषयमा सुन्नाले आदि कारणहरूबाट वमन वा छर्दि रोग लाग्छ ।

यो रोग कारण अनुसार पाँच किसिमको हुन्छ - वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज र आगन्तुज । आगन्तुज छर्दिका ५ भेद हुन्छन् - बीभत्सज, दौहृदज, आमज, असात्म्यज र कृमिज ।

वमन हुनुभन्दा पहिले वाकवाकी लाग्ने, डकार हुन गाह्रो हुने, मुखबाट पातलो र नुनिलो स्राव हुने, खान मन नलाग्ने यी लक्षणहरू देखिन्छन् ।

वातज वमन- यसमा वमन हुँदा रोगीको छाती र कोखामा निकै दुख्ने हुन्छ, मुख सुक्ने गर्छ, बोली बस्छ, खोकी लाग्छ । वमनका साथ ठूलो आवाजका साथ डकार आउँछ, वमन हुने पदार्थ कम मात्रामा र फिंजयुक्त हुन्छ । त्यसलाई निकाल्न निकै बल लगाउन पर्ने हुन्छ । भोजन पचेपछि यसको वेग बढ्छ ।

पित्तज वमन- यसमा बढी तिर्खा लाग्ने, घाँटी सुक्ने, रिँगटा लाग्ने हुन्छ । वान्ता पहेंलो रङ्गको तातो र तितो खालको हुन्छ । बान्ता गर्न लाग्दा घाँटी पोल्ने, मुखबाट धुवाँ आएजस्तो तातो सास निस्कने हुन्छ ।

कफज वमन- यसमा मुखको स्वाद गुलियो हुने, मुखबाट कफ निस्किरहने, अरुचि हुने, निद्रा बढी लाग्ने, शरीर भारी हुने हुन्छ । चिप्लो, बाक्लो, गुलियो र सेतो रङ्गको वमन हुन्छ । वमन गर्दा रोगीलाई पीडा कम हुन्छ ।

त्रिदोषज वमन- यसमा पेटमा शूल हुने, खाएको अन्न राम्ररी नपच्ने, अरुचि हुने, घाँटी अथवा पेट पोल्ने, तिर्खा बढी लाग्ने हुन्छ । सास छिटो चल्ने, मूर्च्छा पर्ने हुन्छ । रोगीले वमन गर्दा निस्कने पदार्थ नुनिलो र अमिलो, तातो र निलो वर्णको हुन्छ र त्यसमा रगत मिसिएको हुन्छ ।

आगन्तुज वमन– अहित भोजन गर्नाले, कृमि रोग लाग्नाले, आमदोष बढ्नाले, घिनलाग्ने वस्तु देख्नाले अथवा महिलाको पेटमा गर्भ रहनाले हुने वमनलाई आगन्तुज भनिन्छ । कृमिज वमनमा पेटमा शूलका साथ वाकवाकी लागिरहन्छ ।

वमनका उपद्रवहरू– खोकी लाग्नु, छिटो सास चल्नु, ज्वरो आउनु, हिक्का हुनु, छटपटी हुनु, तिर्खा लाग्नु, मुटुको रोग र तमक श्वास हुनु यी वमनको रोगीमा देखिने उपद्रवहरू हुन् ।

असाध्य वमनको लक्षण– रोगी अति दुर्बल भएमा, वमनका साथ खोकी, श्वास, ज्वर, हिक्का यी उपद्रव बढ्दै गएमा, वमनका साथ रगत र पिप आएमा, वमनको रङ्ग मयूरको प्वाँखजस्तो रातो-पहेंलो आदि भएमा वमनको रोग असाध्य हुन्छ ।

वमनको विशेष चिकित्सा– मूँगको दालको झोलमा सिंधे नुन र घिउ राखी खान दिएमा वायुको प्रकोपबाट उत्पन्न वमन शान्त हुन्छ । अथवा मूँगको झोलसँग अमलाको रस दिए पनि लाभ हुन्छ । दूध र पानी बराबर मिसाएर खाए पनि वातको वमन शान्त हुन्छ ।

पित्तज वमनमा– गुर्जो, त्रिफला, नीम र पर्वरको पात सबै जम्मा २ तोला (२५ ग्राम) लिएर काढा बनाई छानीलिनू । चिसो भएपछि ३ माशा मह मिसाएर खान दिनू । यसले पित्तबाट हुने र अम्लपित्तको वमन शान्त हुन्छ । (परीक्षित)

ठूलो हर्रो (फल) को गुदीलाई कुटीछानी चूर्ण बनाउनू र ३-६ माशाको मात्रा लिएर महमा मिसाई चाट्न दिनू । यसबाट आमाशयको दोष दिसाबाट निस्केर जान्छ र अनेक किसिमको वमन पनि रोकिन्छ । (परीक्षित)

चन्दनको काढा बनाई छानेर मह र मिश्री मिसाएर पिउनू । यसबाट पित्तज वमन शान्त हुन्छ ।

धानको लावाको सातु बनाई त्यसमा मह र घिउ मिसाएर खान दिएमा वमन शान्त हुन्छ ।

हर्रो, मरिच, सुठो, पिप्ला, धनियाँ, जिरा सबैको चूर्णमा मह मिसाई खान दिएमा सबै किसिमको वमन शान्त हुन्छ । (परीक्षित)

कफज वमनमा- बरको जटालाई डढाई त्यसको खरानी सुरक्षित गरी राख्नू । त्यो खरानी दिनदिनै २ रत्तीको मात्रामा खानाले कफको वमनलाई शान्त गर्छ ।

जटामसीको चूर्ण (२ ग्राम) पानीमा पिनेर सेवन गर्न दिएमा कफको वमन शान्त हुन्छ ।

मसूरको सातुमा मह र अनारदानाको चूर्ण मिसाई खानाले सब प्रकारको वमन र तिर्खा शान्त हुन्छ । (परीक्षित)

सामान्य चिकित्सा– पिपलको रुखको बोक्रा ल्याई डढाई खरानी पार । त्यो खरानी पानीमा भिजाइराख । पछि त्यसलाई छानेर अथवा निथारेर २ तोलाको मात्रामा खान देऊ । यसले कष्टसाध्य वमन र तिर्खा पनि शान्त हुन्छ । (विशेष परीक्षित)

चौलानी पानीमा मरोडफलीको चूर्ण ६ ग्राम र मह मिसाई पिउने गर्नाले सबै किसिमको वमन हुन रोकिन्छ ।

गुर्जोको काढामा मह मिसाएर खान दिनू । अथवा गुर्जो १२ ग्रामलाई थिचेर राती पानीमा भिजाइदिनू । बिहान मलछान गरी मह मिसाएर खान दिनू । सबै किसिमको वमन शान्त हुन्छ । (परीक्षित)

कालो नुन, सेतो जिरा, मिश्री, मरिच समभाग लिएर कुटीछानी चूर्ण बनाउनू । त्यो चूर्ण महमा मिसाएर चटाएमा तत्काल वमन शान्त हुन्छ । (विशेष परीक्षित)

पुदीनाको पात ४०, मरिच ५ दाना, कालो नुन २ ग्राम, भुटेको सुकमेल ४ ग्राम, अमिली ३ ग्राम सबलाई पिनेर चटनी बनाउनू । यो चटनी चाट्न दिएमा सबै किसिमको वमन र अरुचि नष्ट हुन्छ । (विशेष परीक्षित)

केराको जराको रस ६ ग्राम र मह ६ ग्राम मिसाई पिउनाले वमन कम भएर जान्छ । (परीक्षित)

गर्भवतीलाई आउने वमन र वाकवाकीमा धनियाको चूर्ण ३ ग्राम, मह ६ ग्राममा मिसाई खान दिनू र चौलानीको पानी पिउन दिनू । लाभ हुन्छ । (विशेष परीक्षित)

कुटकीको चूर्ण ३ माशालाई मह ६ माशामा मिसाई खान दिएमा हिक्का र वमन दुवै शान्त हुन्छन् । (विशेष परीक्षित)

वमन र वाकवाकी हुन छोडेपछि छिटो पच्ने र वायुको अनुलोमन गर्ने खाने कुरा दिनुपर्छ ।

११ . तृष्णा रोग (प्यास)

यसमा जति पानी पिएपनि तिर्खा मेटिदैन, रोगीले पानी खाइरहन खोज्छ ।

कारण– क्रोध, शोक, परिश्रम, मदपान, धातुक्षय, घाम वा आगो नजिक बस्नु, चोट लाग्नु, रुखो-अमिलो-पिरो पित्त बढाउने अन्न बढी खानु आदि कारणहरूबाट वायु अत्यन्त कुपित हुन्छ र त्यसले उदकवह स्रोतहरूलाई दूषित गराई प्रबल प्यास लाग्ने बनाउँछ ।

पूर्वरूप – यसमा सुरुमा मुख सुक्ने भइरहन्छ ।

भेदहरू – कारण अनुसार यो रोग ७ किसिमको हुन्छ – वातज, पित्तज, कफज, क्षयज, क्षतज, आमज र अन्नज (सुश्रुत) ।

वातज तृष्णा – यसमा अनुहार दुब्लो देखिन्छ, टाउको र कञ्चट दुख्छ । मुखको स्वाद राम्रो हुँदैन, चिसो पानी खाँदा प्यास बढेर जान्छ ।

पित्तज तृष्णा – यसमा शरीर पोल्छ, आँखा रातो हुन्छ, लगातार मुख सुक्छ, मुखको स्वाद तितो हुन्छ, घाँटीबाट धुवाँ निस्केजस्तो भान हुन्छ ।

कफज तृष्णा – यसमा शरीर भारी हुन्छ, मुखको स्वाद गुलियो हुन्छ, निद्रा लागिरहन्छ ।

त्रिदोषज तृष्णा – यसमा टाउको र आँखा दुख्ने गर्छ, शरीरमा कम्पन हुन्छ, वमन हुन्छ, भ्रम र दाह हुन्छ तर शरीर छाम्दा ठण्डा हुन्छ ।

क्षयज तृष्णा – यो रस धातुको क्षयबाट उत्पन्न हुन्छ । यसमा रोगीले दिनरात पानी खान्छ तर उसको प्यास शान्त हुँदैन । त्यस बाहेक छाती दुख्ने, शरीर काम्ने हुन्छ ।

क्षतज तृष्णा – यो चोट-पटक, हतियार आदिबाट भएको घाउमा बढी रगतको स्राव हुँदा उत्पन्न हुन्छ । यसमा घाउमा दुख्ने र प्यास लाग्ने हुन्छ ।

आमज तृष्णा – यसमा त्रिदोषज तृष्णाका लक्षणहरू हुन्छन् । विशेष रूपमा मुटु दुख्ने, थुक्ने बानी र शरीर गल्ने हुन्छ ।

अन्नज तृष्णा – चिल्लो, अमिलो, नुनिलो र गुरु अन्न खाँदा यो उत्पन्न हुन्छ । यसमा बारंबार प्यास लाग्छ ।

ज्वरो, क्षयरोग, खोकी, श्वास रोग लागेका र त्यसबाट दुर्बल भएका, वमन पनि भइरहेका रोगीहरूको प्यास लाग्ने रोग असाध्य हुन्छ ।

तृष्णा रोगको सामान्य चिकित्सा – मह १ घण्टाजति मुखमा राखी कुल्ला गरी दिनाले घोर प्यास पनि शान्त हुन्छ । (विशेष परीक्षित)

बिमिरोको रस १ तोलामा गाईको घिउ १ माशा र सिंधे नुन मिसाई पिनेर टाउकोमा लेप गर्नू । यसबाट तालु र घाँटी सुक्नेमा तुरुन्त आराम हुन्छ । (विशेष परीक्षित)

बिहान सबेरै धनियाँ २ तोला हाँडीमा पानीका साथ पकाई छानेर चिनी मिसाई पिउनाले प्यास र दाह शान्त हुन्छन् । (परीक्षित)

पिपलको रुखको बोक्रा जलाई खरानी पार्नू र त्यो खरानिलाई पानीमा घोलेर राखिदिनू । केही बेरपछि अर्को भाँडोमा पानी निथारेर राख्नू । यो पानी २-२ तोला (२५ मि.लि.) पिउनाले तिर्खा र वमन शान्त हुन्छ । (अनेक पटक परीक्षित)

जङ्गलमा रहेको गाईको गोबरको गुइँठा बाली खरानी पार्नू । त्यसलाई काँस

(चरेस) को भाँडामा राखी माथिबाट पानीले भरिदिनू । यो पानी भरिएको भाँडो रोगीको नाभिमा राखिदिनू । यो राख्ने बित्तिकै जलन मेटिन्छ । (परीक्षित)

अमला १ भाग, खयर १/२ भाग मिसाएर पानीसँग पिनेर गोलीहरू पार्नू । यो गोली मुखमा राख्नाले अस्वाभाविक प्यास लाग्न छोड्छ ।

बरको अंकुर, पठानिलोध, अनारदाना, जेठीमधु, मिश्री र मह समभाग लिएर कुटी छानी घोटेर ३-३ माशाको (३ ग्राम) गोली पार्नू । यो १ गोली चौलानी पानीसँग खानाले घोर प्यास पनि शान्त हुन्छ । (परीक्षित)

बालकहरूलाई बढी प्यास लागेमा- सानो ब्राह्मीका पातहरू पिनेर रस निकाल्नू । त्यसमा जिरा र मिश्रीको धुलो मिसाउनू र त्यो रस १-१ माशा जति दिनमा ३-४ पटक खान दिनू । बच्चाहरूको प्यास शान्त हुन्छ । (खूब परीक्षित)

तालु सुक्ने भइरहेमा- दूध, उखुको रस, गुड अथवा कुनै अमिलो पदार्थ (कागती) पानीमा घोलेर कुल्ला गराउनाले आराम भएर जान्छ ।

आलुबुखारा ल्याएर आगोमा सेक्नू र त्यसलाई मुखमा राखी चुस्नू । यसले प्यासलाई दबाई दिन्छ । (परीक्षित)

गुलियो रस भएको शीतल द्रव्यले प्यासको रोगमा आराम दिन्छ र पथ्य हुन्छ ।

विशेष चिकित्सा

वातज तृष्णामा- सुन, चाँदी, फलाम, ईंट वा माटोको डल्लालाई आगोमा रातो हुने गरी तताएपछि पानीमा डुबाइदिनू । यो पानी पिउनाले वातज प्यासलाई शान्त पार्छ ।

गुर्जोको रस ६-६ माशा (५-६ मि.लि.) दिनमा ३-४ पटक पिउनाले वातज प्यास शान्त हुन्छ ।

दहीमा गुड मिसाई खाएपनि वातज प्यास शान्त हुन्छ ।

पित्तज तृष्णामा- नीम, पर्वर र असुरो सबैका पातहरू बराबर लिएर कटठीछानी चूर्ण बनाउनू । यो चूर्ण ३-६ ग्राम मात्रामा चिसो पानीसँग खान दिनू र वमन गराइदिनू । पित्तको विकार शान्त हुन्छ । (परीक्षित)

नीमको रुखको बोक्रा, धनिया, सुठो, मिश्री सबै गरी जम्मा २ तोला (२५ ग्राम) लिएर खस्रो गरी कुट्नू र डेढ पाउ (४०० मि.लि.) पानीमा पकाउनू । आधा पानी बाँकी भएपछि छानेर रोगीलाई खान दिनू । पित्त शान्त भएर प्यास मेटिन्छ । (खूब परीक्षित)

डुम्रीको पाकेको फलको रस अथवा काढा पिउनाले पित्तज प्यास शान्त हुन्छ ।

उखुको रस चुसेपनि पित्तको प्यास शान्त हुन्छ ।

कफज तृष्णामा– नीमको रूखको बोक्रा वा पातको काढा तात्तातो पिएर बान्ता गर्नाले कफको प्यास शान्त भएर जान्छ । (परीक्षित)

जिरा, अदुवा, कालो नुन प्रत्येक ८-८ ग्राम लिएर २०० मि.लि. पानीमा पकाउनू । पानी आधा भएपछि छानेर अलिअलि गरेर पिउनू । यसबाट कफको प्यास शान्त हुन्छ ।

जामुनको अंकुर, आँपको अंकुर, धानको लावा, चन्दन, धयेंरोको फूल सबै समभाग लिएर कुटीछानी चूर्ण बनाउनू । असुरोको काढा बनाई त्यसमा यो चूर्ण घोटेर खान दिनू । यसबाट कफज प्यास र दाहा शान्त हुन्छन् ।

तातो दूधमा मरिचको चूर्ण मिसाएर खाएमा कफज प्यास शान्त हुन्छ ।

१२. अम्लपित्त रोग (ग्याष्ट्रिक)

विदाही, अम्ल आदि किसिमका खाने कुराहरूको सेवनबाट पित्तमा अम्ल गुण अति मात्रामा बढेको अवस्थालाई अम्लपित्त भनिन्छ ।

दूध र माछा आदि विरुद्ध अन्न, दूषित अन्न, अमिलो कुरा, विदाही अन्न आदि पित्त बढाउने खाद्य पदार्थहरू खाइरहने मानिसको पित्त कुपित र विदग्ध (विकृत) भएर बढी अमिलो हुन जान्छ र अम्लपित्तको कारण बन्छ । वर्षा ऋतुको अम्ल पाकयुक्त पानी यसको अर्को कारण हुन्छ ।

सामान्य लक्षण– यसमा खाएको अन्न राम्ररी नपच्ने, शरीर त्यसै गलेजस्तो हुने, वाकवाकी लाग्ने, तितो-अमिलो पानी डकारका साथ आउने, शरीरमा भारीपन हुने, घाँटी र छातीमा पोल्ने, अरुचि हुने यी लक्षणहरू देखिन्छन् ।

कुपित दोषको गति अनुसार अम्लपित्तका दुई भेद हुन्छन् - ऊर्ध्वग अम्लपित्त र अधोग अम्लपित्त ।

ऊर्ध्वग अम्लपित्त– यसमा हरियो, निलो, पहेंलो, कालो, अलिकति वा गाढा रातो रङ्गको, निकै अमिलो, मासु पखालेको पानीजस्तो, अति चिल्लो, चिप्लो खालको, कफ सहित तथा नुनिलो, पिरो वा तितो खालको बान्ता हुन्छ । भोजनको पाक राम्रो नभएको अथवा केही नखाएको वेलामा पनि कहिलेकाहीं अमिलो-तितो वमन हुन्छ । साथमा त्यस्तै किसिमको डकार आउने, घाँटी र छातीमा पोल्ने हुन्छ एवं टाउको दुख्छ ।

अधोग अम्लपित्त– यसमा दूषित पित्त मलमार्गबाट निस्कन्छ । त्यो हरियो, पहेंलो, कालो वा रातो वर्णको र दुर्गन्धयुक्त हुन्छ । रोगीलाई वाकवाकी

लाग्ने, बढी प्यास लाग्ने, शरीर पोल्ने, रिँगटा लाग्ने भइरहन्छ । छालामा रातो दाग देखिन्छ, रोमाञ्च हुने, पसीना आउने, अङ्गहरू पहेंलो हुँदै जाने हुन्छ ।

अम्लपित्त रोगमा कुपितका साथ अरू दोषहरूको पनि प्रकोप भएको खण्डमा सम्बन्धित दोष अनुसार यसका तीन भेद हुन्छन् -

वाताधिक अम्लपित्त, कफाधिक अम्लपित्त र वातकफाधिक अम्लपित्त ।

वाताधिक अम्लपित्त- यसमा शरीर काम्ने, झमझमाउने, गल्ने र दुख्ने हुन्छ । आँखा अगाडि अन्धकार देखिन्छ, रोमाञ्च हुन्छ । यसमा प्रलाप, मूर्च्छा र विपरीतज्ञान पनि हुन्छ ।

कफाधिक अम्लपित्त- यसमा थुकथुकी लागिरहने, शरीर भारी र लाटो हुने, गल्ने हुन्छ । अरुचि र शीतको अनुभव हुन्छ । मुखमा कफ लेस्सिएको हुन्छ । वमन पनि हुन्छ । अग्नि मन्द हुन्छ, बल घट्दै जान्छ, शरीर चिलाउने र निद्रा बढी लाग्ने हुन्छ ।

वातकफाधिक अम्लपित्त- यसमा वाताधिक र कफाधिक दुवै किसिमका अम्लपित्तका लक्षणहरू देखिन्छन् ।

कफपित्त रोग- यसमा तितो, अमिलो, पिरो खालको पानीसहित डकार आउने, घाँटी र छाती पोल्ने, रिँगटा लाग्ने, अरुचि हुने, वमन हुने बढी आलस्य आउने र टाउको दुख्ने हुन्छ । मुखबाट ज्याल चुहुन्छ र मुखको स्वाद गुलियो हुन्छ ।

अम्लपित्तको चिकित्सा- अम्लपित्तको चिकित्सा सुरुको अवस्था मै गर्नुपर्छ नत्र त्यो असाध्य भएर जान्छ । जुन रोगीलाई आफ्नो शरीर निकै पोलेको अनुभव हुन्छ, उसले आफूलाई वमन र विरेचनद्वारा अवश्य शुद्ध बनाउनुपर्छ । ऊर्ध्वग र कफाधिक अम्लपित्तमा वमन तथा अधोगत र वाताधिक अम्लपित्तमा विरेचन गराउनुपर्छ ।

यस रोगमा कफ-पित्तनाशक र तितो रस भएको खाद्यपदार्थ दिनुपर्छ । उमालेर सेलाएको पानी पिउन दिनुपर्छ ।

वातज अम्लपित्तमा चिनी र महका साथमा धानको लावाको चूर्ण विशेष हितकारी हुन्छ । रोगले चापेको वेलामा रोगीलाई दिनमा दूध-साबुदाना, दूध-बार्ली (जौ) र राती धानको लावा दिनुपर्छ ।

वाकवाकी लागिरहेको छ अथवा बढी शरीरमा तिर्खा जलन छ भने जौको सातुको लस्सी बनाई मह मिसाएर खान दिनुपर्छ । नुन कम खानुपर्छ ।

पुरानो चामलको भात अमलाको रससँग खानु राम्रो हुन्छ । भोजन गरेको २ घण्टापछि पानी पिउनुपर्छ ।

मलमूत्रको वेग रोक्ने, बढी-बढी खाने, दिनमा सुत्ने, अतिपरिश्रम गर्ने, मैथुन गर्ने, शोक-क्रोध गर्ने, रातमा जागा बस्ने, दालहरू, सागहरू बढी खाने गर्नुहुँदैन । यो सबै त्याग्नुपर्छ ।

अम्लपित्तनाशक औषधीहरू

सानो वा ठूलो हर्रोको ६ ग्राम चूर्णमा मह वा गुड अथवा दाख मिसाई खानाले ७ दिनमा अम्लपित्त नष्ट हुन्छ । (परीक्षित)

साँझमा बिमिरोको रस २ तोला (२५ मि.लि.) पिएमा अम्लपित्त रोग जान्छ । (परीक्षित)

गुर्जो, नीमको पात, तितो पर्वरको पात यी तीनलाई एकसाथ पिनेर महमा मिसाई खानाले घोर अम्लपित्त पनि शान्त भएर जान्छ ।

अमलाको रससँग नित्य भोजन गर्नाले अम्लपित्त, वमन, अरुचि र प्रमेह रोग नष्ट हुन्छन् ।

गुर्जो, नीमको बोक्रा, पर्वरको पात, त्रिफला यी सबैको काढामा मह मिसाई पिउनाले घोर दाहयुक्त अम्लपित्त र अनेक किसिमका रक्तपित्त नष्ट हुन्छन् । (परीक्षित)

हरीतकी खण्ड- त्रिफला, नागरमोथा, दालचिनी, तेजपात, सुकमेल, नागकेशर, ज्वानो, त्रिकटु (सुठो, मरिच, पिप्ला), धनियाँ, मदिसे सूप, सूप, ल्वाङ् यी प्रत्येकको चूर्ण १-१ भाग, निशोथको चूर्ण ८ भाग, सनायपत्तीको चूर्ण ८ भाग, ठूलो हर्रोको चूर्ण ६४ भाग, मिश्रीको चूर्ण १९२ भाग मिसाई विधिपूर्वक पकाएर राख्नू । यो हरीतकी खण्ड हो । यसलाई ६ ग्राम मात्रामा मनतातो दूधको अनुपानका साथ सेवन गर्न दिएमा अम्लपित्त र शूल रोग नष्ट हुन्छ ।

नित्य १ तोला चूनको पानी पिउनाले अम्लपित्त र अपचको रोग हराउँछ । (परीक्षित)

पर्वर, कुटकी, त्रिफला यिनको काढामा मिश्री मिसाई पिउनाले अम्लपित्त रोग जान्छ । (परीक्षित)

दाख, हर्रो, पिप्ला, धनियाँ, यवासक र मिश्री यी सबैको चूर्ण मिसाएर राख्नू । यो औषधी महमा मिसाई चाट्नाले अम्लपित्त रोग हराएर जान्छ । (परीक्षित)

कफपित्तनाशक योग- काकडासिंगी ९ माशा, पर्वरको पात ९ माशा दुवैलाई १ पाउ जति पानीमा पकाउनू, १ छटाँक जति बाँकी रहँदा उतारेर छानी पिउनू । यसबाट कफपित्त रोग शान्त हुन्छ । (परीक्षित)

सानो पिप्ला, हर्रो, चिनी ३-३ माशा मिसाएर नित्य खाने गर्नाले अम्लपित्त रोग नष्ट हुन्छ ।

तितो परवरको पात, इन्द्रजौ, धनिया, जवासा यी समभाग लिई पिन्ने-छान्ने गरी चूर्ण बनाएर राख्नू । ३-४ माशा चूर्ण महमा मिसाई खानाले कफपित्त रोग शान्त हुन्छ । (परीक्षित)

अदुवा र पर्वरको पातको काढा बनाई पिउनाले अग्निदीपन हुन्छ, साथै वमन, लुतो, डाबर, दाद आदि विकारहरू हराएर जान्छन् ।

जिरा ५० ग्राम, धनिया ५० ग्राम यी दुवैलाई पानी राखी सिलौटामा पिन्नू र ३२ तोला (४०० ग्राम) गाईको घिउ तथा १.६ लिटर पानी राखी पकाउनू । पानी जति सुकेपछि छानेर सफा सिसीमा राख्नू । यो घिउ ६ ग्रामदेखि १२ ग्रामसम्म नित्य सेवन गर्नाले घोर अम्लपित्त पनि नष्ट हुन्छ ।

अविपत्तिकर चूर्ण- सुठो, मरिच, पिप्ला, हर्रो, बर्रो, अमला, नागरमोथा, वायुविडङ्ग, सुकमेल, तेजपात, कालो नुन यी सबैको चूर्ण १-१ भाग, ल्वाङ्को चूर्ण ११ भाग, निशोथको चूर्ण ४४ भाग र मिश्रीको चूर्ण ६६ भाग सबलाई मिसाई एउटा भाँडोमा राख्नू । यो चूर्ण ३-६ ग्राम मात्रामा भोजनभन्दा पहिले खाएर पानी वा नरिवलको पानी पिउनू र त्यसपछि दूध-भात खानू । यसले अम्लपित्त, शूल र अर्श रोगमा आराम दिन्छ ।

कूष्माण्ड अवलेह- उत्तम कुभिण्डोको रस ४ लिटर, गाईको दूध ४ लिटर, अमलाको चूर्ण ४०० ग्राम, गाईको घिउ १०० ग्राम, सख्खर ४०० ग्राम यी सबैलाई कलई लागेको कराहीमा राखी पकाउनू । पाकेर बाक्लो लेदो भएपछि सेलाउन दिनू र सफा भाँडामा राख्नू । यो कूष्माण्ड अवलेह हो । यो अवलेह २० ग्राम मात्रामा प्रतिदिन खान दिएमा अम्लपित्त रोग शान्त हुन्छ ।

पिप्पलीघृत- गाईको घिउ ४ किलो, पिप्लाको काढा ८ लिटर, पिप्ला पिनेको लेदो (कल्क) १ कि. सबलाई मिसाएर पकाउनू । घिउमात्र बाँकी भएपछि छानेर राख्नू । यो घिउ नित्य ६-६ ग्राम मात्रामा खानाले अम्लपित्तमा आराम हुन्छ ।

शुण्ठी पाक- सुठोको चूर्ण २५० ग्राम, चिनी १ किलो, घिउ आधा किलो (५०० ग्राम), दूध ४ सेर मिलाएर मन्द अग्निमा पकाउनू । गाढा भएर आएपछि त्यसमा अमला, धनिया, नागरमोथा, सेतो जिरा, पिप्ला, वंशलोचन, दालचिनी, तेजपात, सुकमेल, कालो जिरा, हर्रो हरेकको चूर्ण ९ ग्राम, मरिच र नागकेशरको चूर्ण ४.५-४.५ ग्राम मिसाएर उतार्नू । चिसो भएपछि त्यसमा मह पनि १०० ग्राम मिसाउनू । यो ६ ग्राम मात्रामा, तातो दूधको अनुपानसँग सेवन गर्न दिनू । यसको सेवनबाट अम्लपित्त, शूल रोग नष्ट हुन्छन् ।

लीलाविलास रस- शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, अभ्रक भस्म, ताम्र भस्म, लौह भस्म सबै समान भाग लिनू। पहिले पारद र गन्धक दुवै खलमा राखी १२ घण्टासम्म घोटी कज्जली बनाउनू। त्यसपछि अरू भस्महरू क्रमशः मिसाउनू र सबैलाई अमला र बर्रोको रस वा काढासँग ३-३ दिनसम्म घोट्नू। अर्को १ दिन भृङ्गराजको रससँग घोट्नू र २-२ रत्तीको (२५० मि.ग्रा.) गोली पारेर राख्नू। यो १ गोली अमलाको रस अथवा दूधसँग सेवन गर्नाले अम्लपित्त, वमन, छातीको जलन आदि शान्त भएर जान्छन्।

१३. शूल रोग (तीव्र पेट दुखाइ)

जुन रोगमा पेटका विभिन्न अङ्गहरू अथवा शरीरको कुनै पनि अङ्गमा काँडा वा सुइरोले घोचेजस्तो तीव्र पीडा हुन्छ त्यसलाई शूल रोग भनिन्छ।

रोगका कारण- दोष अनुसार शूल रोग आठ किसिमका हुन्छन् - वातज शूल, कफज शूल, द्विदोषज शूल, वातपित्तज शूल, वातकफज शूल, पित्तकफज शूल, त्रिदोषज शूल र आमज शूल। सबै किसिमका शूलहरूमा वायुको प्रधानता हुन्छ।

(१) वातज शूल

निदान - मलमूत्रको वेग रोक्ने गर्नाले, सुख्खा भोजन सधैँ गर्नाले, जौ, माष, कोदो, मटरकोशा, मूँग, मसुरो र गहुँ (नयाँ) आदि कफ बढाउने अन्नहरू खाने, भोक लागेको वेलामा भोजन नगर्ने, सुख्खा र भुटेको कुरा बढी खाने गर्नाले वायु कुपित भएर दारुण शूल उत्पन्न पर्छ। यसका पीडाबाट व्याकुल रोगीलाई सास फेर्न पनि गाह्रो हुन्छ।

लक्षण - वातज शूल भएमा हृदय, कोखा, पिठ्यूँ, कम्मर र तल्लो पेट वा मूत्राशयमा सियोले घोचेजस्तो दुख्छ, यो दुखाई बारंबार सुरु हुन्छ र केही समयपछि शान्त पनि हुन्छ। मल-मूत्र र अधोवायु रोकिएर जान्छ। अङ्गहरूमा पनि सियोले घोचेसरह दुख्छ। यसको दुखाइ भोजन पचिसकेपछि, साँझमा, वर्षा ऋतु र शीतकाल (हिउँद) मा बढ्ने गर्छ। वातनाशक तेलहरूको मालिस, तातो वालुवा आदिद्वारा सेक्ने, मिच्ने गर्दा, स्निग्ध-उष्ण खानेकुरा खाँदा कम भएर जान्छ।

वातज शूल अन्तर्गत हृदयशूल, पार्श्वशूल र वस्तिशूल पनि पर्छन्।

हृदयशूल - मिथ्या आहारविहारद्वारा कुपित पित्त र कफद्वारा अवरुद्ध भएको वायु रसधातुसँग मिलेर हृदयमा रहेपछि त्यहाँ शूल उत्पन्न गर्छ, त्यसबाट रोगीको सास रोकिन खोज्छ। यो अवस्थालाई हृदयशूल भनिन्छ। यो शूल आहार-रस र वायु मिल्नाले हुन्छ।

यसमा शूल छातीको बीचमा माथिबाट सुरु हुन्छ । परिश्रम गरेपछि यसको वेग हुन्छ । शूल वक्ष अर्थात् छातीको देब्रे भागबाट सरेर आँलाहरूको अन्तिम टुप्पोसम्म पुग्छ । कहिलेकाहीं घाँटीको देब्रेपट्टि दुखाइको अनुभव हुन्छ । धेरैजसो मुटुका रगतनलीहरूमा विकृति आएपछि प्राणवायुको कमी भएर हृदयशूल हुन्छ । यसको मुख्य लक्षण सास रोकिनु हो ।

पार्श्वशूल- मिथ्या आहार-विहारबाट कुपित कफले पेट र करङ्को बीचको भागमा रहेर वायुको स्वाभाविक गतिलाई रोक्ने काम गर्छ । त्यो रोकिएको वायुले चाँडै नै पेट फुल्ने र कराउने (गुडुगुडु आवाज आउने) गराउँछ । करङहरूमा सियोले घोचेजस्तो दुख्ने गर्छ । शूल उठेपछि रोगीलाई सास फेर्न गाह्रो हुन्छ, मुखबाट लामो लामो सास लिन्छ, बढी दुखाइका कारण निद्रा पनि लाग्दैन । खानेकुरा खान पनि मन लाग्दैन ।

वस्तिशूल- मल-मूत्र आदिको वेग रोक्ने गर्नाले कुपित भएको वायु वस्तिमा गएर रोकिएर बस्छ । त्यसो हुँदा रोगीको वस्ति (मूत्राशय) र नाभिमा शूल हुन्छ । मल, मूत्र र अपानवायुको अवरोध हुन जान्छ । यसलाई वस्तिशूल भनिन्छ । यो विशेष गरी वायुको प्रकोपबाट उत्पन्न हुन्छ ।

(२) पित्तज शूल

कारण- क्षारीय पदार्थ, अति तीक्ष्ण, उष्ण, विदाही द्रव्य, सिमी, तेल, तिलको पिना, गहतको झोल बढी मात्रामा खानाले, मद्यपान गर्नाले, बढी रिसाउने, आगो ताप्ने र धेरै समयसम्म घाममा बस्ने, अति मैथुन गर्ने गर्नाले भोजनको पाक विदग्ध (विकृत) हुनजान्छ र त्यसले पित्त कुपित भएर नाभिप्रदेशमा शूल उत्पन्न गराउँछ ।

लक्षण- यसमा बढी प्यास लाग्छ, शरीर पोल्ने हुन्छ, पसिना आउने, रिँगटा लाग्ने हुन्छ । यो शूल दिउँसो, आधा रातमा, भोजन पच्न लागेको वेलामा र शरद् ऋतुमा बढेर जान्छ । हिउँदको वेलामा, शीत उपचार गर्दा र शीतल र मधुर भोजन लिंदा कम भएर जान्छ ।

विशेष- यसको तुलना गेस्ट्राइटिस (Gastritis) सँग गर्न सकिन्छ । यसमा पाकस्थलीको मुखमा (आमाशयमाथि - करङको तल - देब्रेपट्टि) बेसरी दुख्छ । सास फेर्दा बढी चाप्ने गर्छ, वमन हुन खोज्छ तर हुँदैन, मुखबाट लेसिलो पानी निस्कन्छ । कुनै वेलामा वमन भइहालेमा हल्का हरियो रङ्गको हुन्छ । कुनै वेलामा रगतको पातलो धार देखिनसक्छ । भयंकर प्यास लाग्छ । कहिले दिसा हुन्छ कहिले हुँदैन । यसमा रिँगटा लाग्ने, हिक्का हुने र बेहोश हुने यी नराम्रा लक्षण हुन् । अति गरम वातावरण, मद्यपान, तातो पानी पिउने बानी, धेरै समय उपवास बस्नु, विष खानु यस्ता कारणहरूबाट यो रोग हुन्छ । यसमा शीतल र सजिलै पच्ने कुरा खाँदा राम्रो हुन्छ ।

(३) कफज शूल

कारण- आनूप देशका र जलचर जीवहरूको मासु खाइरहने, दूधबाट बन्ने कुराउनी, मिठाई आदि, उखुको रसबाट बन्ने गुड आदि, माषको पिठोबाट बन्ने बारा आदि, खिचडी र तिल आदि बढी खाइरहने गर्नाले कुपित भएको कफले आमाशयमा शूल उत्पन्न गर्छ ।

लक्षण- यसमा वाकवाकी लाग्ने, खोकी लाग्ने, शरीर गल्ने, अन्न नरुच्ने हुन्छ । मुखबाट ऱ्याल चुहुने गर्छ, कब्जियत हुन्छ र टाउको भारी हुन्छ । यो शूल भोजन गर्नेबित्तिकै, बिहान ९ बजेसम्म, शिशिर र वसन्त ऋतुमा विशेष रूपमा हुन्छ ।

द्विदोषज र त्रिदोषज शूल

(४) वातकफज शूल

यो शूल हृदय, पार्श्व (करङ) र पिठ्यूँमा हुन्छ ।

(५) वातपित्तज शूल

यो शूल नाभि र वस्तिमा हुन्छ र यसको वेदना भयंकर हुन्छ । साथमा दाह र ज्वर पनि हुन्छ ।

(६) कफपित्तज शूल

यो शूल पेट, हृदय र नाभिको बीचमा हुन्छ ।

(७) आमज शूल

यसको लक्षण कफज शूल जस्तै हुन्छ । यसमा पेटमा गुडगुड गर्ने, वाकवाकी लाग्ने, वमन हुने वा कफ निस्कने हुन्छ । शरीर भारी हुन्छ, चिसोपनको आभास हुन्छ ।

परिणामशूल

रुक्ष भोजन आदि आफ्ना कारणहरूद्वारा कुपित वायुले भोजनको पाचन प्रणालीमा पाचन भइरहेको अवस्थामा कफ र पित्तसँग मिलेर शूल उत्पन्न गर्छ । यो शूल भोजन पच्न लागेको वेलामा (खाना खाएको २-३ घण्टापछि) हुन्छ, अतः यसलाई परिणामशूल भनिन्छ । यसमा तीनै दोषहरू विकृत हुन्छन् तैपनि जुन दोषको लक्षण बढी हुन्छ त्यही दोष अनुसार यसका वातिक, पैत्तिक, कफज, द्विदोषज र त्रिदोषज यी भेदहरू हुन्छन् ।

वातिक परिणामशूल- यसमा पेट फुल्ने, पेटमा गुडगुड शब्द हुने, दिसा-पिसाब रोकिने हुन्छ । कुनै काममा मन नलाग्ने, छटपटी भैरहने हुन्छ । शरीर काम्छ । यो शूल चिल्लो र तातो कुरा खाँदा कम हुन्छ ।

पैत्तिक परिणामशूल- यसमा बढी प्यास लाग्ने, शरीर पोल्ने, कुनै

काममा मन नलाग्ने हुन्छ । पसिना बढी आउँछ । यो शूल पिरो, अमिलो र नुनिलो कुरा खाँदा बढ्छ । चिसो कुरा खाँदा कम हुन्छ ।

कफज परिणामशूल- यसमा वाकवाकी लाग्ने, वान्ता हुने हुन्छ । दुखाइ कम भएपनि धेरै समयसम्म रहन्छ । तितो-पिरो कुरा खाँदा दुखेको घट्छ ।

दुई दोषको लक्षण देखिएमा द्विदोषज र तीनै दोषहरूको लक्षण देखिएमा त्रिदोषज भनी बुझ्नुपर्छ । त्रिदोषज परिणामशूलको रोगीको अग्नि मन्द, बल क्षीण भएपछि रोग असाध्य हुन्छ ।

अन्नद्रवशूल- खाएको भोजन पचिसकेपछि, पच्ने समयमा अथवा खानेबित्तिकै पनि जुन शूल हुन्छ त्यसलाई अन्नद्रवशूल भनिन्छ । यो शूल पथ्य वा अपथ्य भोजन खाँदा, भोकै बस्दा वा खाना खाँदा कम हुँदैन । यसमा रोगीलाई कत्ति आराम हुँदैन, लगातार शूल भईरहन्छ । बरु बान्ता भएर पित्त निक्लेर गएपछि शूल हुन छोड्छ । यो रोग असाध्य होइन, चिकित्सा गर्दा आराम मिल्छ ।

शूलका उपद्रवहरू- शूल रोगमा अत्यन्त पीडा, प्यास, मूर्च्छा, मल रोकिनु, भारीपन, अरुचि, खोकी, वमन, श्वास र हिक्का यी दस उपद्रवहरू हुन्छन् ।

साध्यासाध्यता- एक वर्षभित्रको शूल साध्य हुन्छ, दुई वर्षसम्मको कष्टसाध्य हुन्छ, तीन वर्ष पुगेको र उपद्रवहरूले सहित शूल असाध्य हुन्छ ।

चिकित्साको सिद्धान्त- यस रोगमा रोगको लक्षण देख्नासाथ चिकित्सा गर्नुपर्छ, पुरानो भएमा कष्टसाध्य हुन्छ ।

सबै शूलहरूमा वायुको प्रकोप नै मुख्य कारण हुन्छ । अतः विभिन्न उपायहरूद्वारा यसलाई चाँडै शान्त पार्नुपर्छ । त्यसका लागि रोगको अवस्था वा भेद अनुसार वमन वा उपवास गराउनु, पाचन औषधी दिनु, स्वेदन गर्नु, गुदद्वारमा वर्ति राख्नु, क्षार, चूर्ण अथवा वटीहरूको सेवन गराउनु, तातो पानीको बोतलले पेट सेक्नु आदि उपायहरू गर्नुपर्छ ।

सामान्य चिकित्सा- सुठो र अडेरको जराको काढामा भुटेको हिङ र कालो नुन मिसाएर खान दिए शूल तत्काल कम हुन्छ ।

कपासको बियाँ, गहत, तिल जौ, अडेरको जरा, आलस, सुठो र सनपाटको बियाँ सबैलाई लिएर चूर्ण बनाउनू । त्यसलाई सिलौटोमा काञ्जी वा कागतीको रस राखी घोटेर लेदो पार्नू । त्यस लेदोलाई आगोमा तताउनू । कपडामा पोको पारी त्यसले पेट दुखेको ठाउँमा सेक्नू । यस्तै पोटलीद्वारा अरू शरीरका दुखेका ठाउँमा पनि सेक्ने गर्नू । वातसम्बन्धी सबै किसिमका शूलहरूमा यसबाट आराम मिल्छ ।

आधुनिक चिकित्सा अन्तर्गत अर्को एउटा शूल पनि हुन्छ जसलाई कालिक पेन भनिन्छ । यो चिसो बढी भएर आन्द्रा खुम्चेमा अथवा पेटमा विष आदि परेको

खण्डमा हुन्छ । यसमा मल तथा अधोवायु (पाद) बडो मुस्किलका साथ निस्कन्छन् । यसमा पेट काटे झैं दुख्ने र कहिलेकाहीं फुल्ने हुन्छ । पाचक तथा दिसा लगाउने औषधी दिँदा आराम हुन्छ ।

बालुवाको पोको आगोमा तताएर सेके पनि शूल कम हुन्छ । अथवा एउटा ठूलो बोतलमा गरम पानी भरेर मुखलाई टम्म कसेर बिर्को लगाएपछि त्यसलाई कपडाले बेरेर पेट दुखेको ठाउँमा सेक्न लगाएमा शूल शान्त हुन्छ ।

बेलको जरा, अडेरको जरा र तिल समभाग लिएर काञ्जीका साथ सिलौटोमा पिन्नू र आगोमा तातो पारेर डल्लो पारी त्यसले पेटमा सेक्नू । भयङ्कर शूल पनि शान्त हुन्छ ।

मदनफललाई काञ्जीका साथ मसिनो चन्दन झैं घोटेर अलि आगोमा तताई नाभिमा लेप गर्नाले सबै किसिमका शूलहरू शान्त हुन्छन् । यी सबै परीक्षित उपायहरू हुन् ।

भोक लागेर शूल भयो भने हल्का तृप्तिकारक भोजन तातो दूधसँग दिनू अथवा मांसरसका साथ यवागू दिनू हितकारी हुन्छ ।

वातशूलमा मही वा दहीको पानीमा कालो नुन मिसाएर पिलाउनु पनि लाभदायक हुन्छ ।

पित्तज शूलमा वमन, विरेचन, शीतल आहार-बिहारको सेवन हितकारी हुन्छ । दूधमा, पानीमा अथवा उखुको रसमा तितो पर्वरको पातको रस अथवा नीमका पातहरूको सिलौटोमा पिनेको कल्क (लेदो) मिसाई खान दिएर वमन गराउँदा पित्तज शूलमा आराम हुन्छ ।

मल पेटमा रोकिएको खण्डमा जेठीमधुको काढामा अडेरको तेल मिसाएर पिउन दिएमा पखाला चली पित्त निस्किन्छ ।

अथवा त्रिफला र अमलतास (राजवृक्ष)को गुदीको काढामा घिउ र चिनी मिसाई पिउन दिनुपर्छ । यसले पखाला चली शूल, दाह शान्त हुन्छ । यस बाहेक पित्तशूलको रोगीलाई दाह र शूल शमन गर्न कुनै पित्तनाशक औषधी पनि दिनुपर्छ । जस्तै बिहान शतावरीको (कुरिलो) रसमा मह मिसाई पिउन दिनुपर्छ । अथवा अमलाको रसमा मिश्री मिसाएर पिउन दिनुपर्छ । अथवा अमलाको चूर्ण महमा मिसाएर चाट्न दिनुपर्छ ।

कफज शूलमा लंघन र वमन हितकारी हुन्छन् । यो शूल उठ्नेबित्तिकै रोगीलाई पिप्लाको काढा खान दिई वमन गराउनुपर्छ । सुख्खा सेक गर्नुपर्छ । पिप्ला र अदुवा मिसाएर खाएमा कफज शूल शान्त हुन्छ । यसमा कडा र गुलियो कुरा खान दिनु हुँदैन । धेरै अबेरसम्म सुत्न पनि दिनुहुँदैन । वमन गराएपछि उपवास अवश्य गराउनुपर्छ ।

आमशूलको चिकित्सा कफशूलको जस्तै गर्नुपर्छ ।

परिणामशूलमा मदनफलको काढामा दूध मिसाई पिलाएर वमन गराउनुपर्छ । विरेचन गराउनुपरेमा अडेरको तेलमा दूध मिसाएर पिउन दिनुपर्छ । शूल पित्तका कारण भएमा तुरुन्त वमन गराउनुपर्छ, कफको कारण भएमा विरेचन गराउनुपर्छ ।

अन्नद्रवशूलमा अम्लपित्त जस्तै चिकित्सा गर्नुपर्छ । यसमा आमाशय र पक्वाशयलाई शुद्ध बनाउनुपर्छ । यो जठराग्नि मन्द भएर उत्पन्न हुन्छ । रोगीलाई वमन गराएर रोगको कारक मललाई पेटबाट निकाल्नुपर्छ । अन्न र पानी कम मात्रामा दिनुपर्छ ।

पार्श्वशूल (कोखा हान्ने) – यसमा कफवातनाशक चिकित्सा गर्नुपर्छ । अडेरको तेल दूधमा मिसाएर खान दिनुपर्छ । औषधी पचिसकेपछि दूधसँग भोजन दिनुपर्छ । पानी उमालेर सेलाएको दिनुपर्छ । चिसो पानी हानिकारक हुन्छ ।

कुक्षिशूल– यो शूल वायु र आम अर्थात् पच्न नसकेको अन्नबाट हुन्छ । यसमा भोजन पच्दैन र नपचेको दिसा हुन्छ । वारंवार शूल हुन्छ । सुत्दा, बस्दा, उठ्दा कुनै अवस्थामा पनि शान्ति हुँदैन ।

यस रोगमा वमन गराउनुपर्छ । बल अनुसार लङ्घन पनि गराउनुपर्छ । अमिलो रसमा अग्निदीपक औषधी मिसाएर खान दिनुपर्छ । हल्का विरेचन पनि गराउनुपर्छ । यो शूल पेटमा मल जम्मा भएर साथै आन्द्रा सुख्खा भएर उत्पन्न हुन्छ । यो दायाँ वा बायाँ भागबाट सुरु भएर पूरै पेट दुख्ने गरी शूल हुन्छ । यसमा उदावर्त रोगको चिकित्सा गर्नुपर्छ ।

वातज शूलमा वस्ति, पित्तज शूलमा विरेचन र दूधको सेवन गराउनुपर्छ । कफज शूलमा कटु र तिक्त पदार्थ हितकर हुन्छन् । कृमिजनित शूल शान्त गर्न कृमिरोगनाशक औषधी दिनुपर्छ । यी उपायहरूले शूल शान्त नभएमा सींग लगाउनु र गुदद्वारमा नारायण तेलको वस्ति दिनुपर्छ । यो अन्तिम उपाय हो ।

शूल रोगमा अवस्था हेरी वमन वा विरेचन गराउनुपर्छ । हिङको सेवनले आराम दिन्छ । माष, सिमी जस्ता गेडागुडीहरू दिनु हुँदैन ।

कालो तिललाई काञ्जीका साथ मसिनो गरी पिनेर डल्लो पार्नू । त्यो डल्लो शूल भएको ठाउँमा फेर्नाले वायुसम्बन्धी शूलहरू शान्त हुन्छन् ।

देवदारु, कुठ, शतावरी, हिङ, सिंधे नुन र चोक (स्वर्णक्षीरीको जरा) यी सबैलाई समभाग लिएर काञ्जी वा उखुको रससँग पिनेर तातो पारी पेटमा बाक्लो लेप गर्नाले सबै किसिमका शूलहरू मेटिन्छन् ।

धतुरोको फल र ठूलो कुरोको बोक्रा दुवै समभाग लिएर काञ्जी वा सिर्का

अर्थात् भिनेगरसाथ पिनी तातो पारी नाभि र त्यसको वरपर लेप गर्नाले घोर शूल पनि शान्त हुन्छ ।

हिङ १ तोला, सिंधे नुन १ तोला पानीसँग पिनेर लेदो बनाउनू । त्यो लेदोलाई तिलको तेल ८ तोला र गोमूत्र ३२ तोलामा मिसाई पकाउनू । यसरी तयार भएको तेल नाभिमा लगाउनाले दुर्जय शूल पनि आराम हुन्छ, विशेष गरी वातकफज शूल शान्त हुन्छ ।

तुम्बुरु (टिमुर), हिङ, सिंधे नुन, बिरे नुन, सौँचर नुन, यवक्षार, अजमोद, हर्रो, बायुविडङ्ग नुन, यवक्षार, हर्रो, सुठो, मरिच, पिप्ला, पुष्करमूल यी सबैलाई समभाग लिएर सबैको तौलको तेस्रो भाग (१/३) निशोथ लिनू । सबैलाई कुटी छानी मिसाएर चूर्ण तयार गर्नू । यो चूर्ण ३-६ ग्राम मात्रामा फाँकेर तातो पानी पिउनाले सबै किसिमको शूल र गुल्ममा आराम हुन्छ ।

हर्रो, बर्रो, अमला र रायोको गेडा सबै समभाग लिएर चूर्ण बनाउनू । यो चूर्ण ३-६ ग्राम मात्रामा घिउ र महमा मिसाएर (विषम मात्रामा) खान दिएमा सबै किसिमका शूल शान्त हुन्छन् । (परीक्षित)

सुठो, हर्रो, कालो नुन तीनैओटा ३-३ ग्राम लिएर सिलौटोमा पानीसँग चन्दन घोटेझैँ घोटेर एउटा कचौरामा राख्नू । त्यसमा २५ मि.लि. पानी मिसाई आगोमा तताउनू । यसको सेवन गर्नाले १-२ पटक दिसा भएर शूल शान्त हुन्छ । (परीक्षित)

हिङ, सुठो, मरिच, पिप्ला, यवक्षार, कुठ, सिंधे नुन, समभाग लिएर कुटीछानी चूर्ण बनाउनू । यो चूर्ण ३-४ ग्राम मात्रामा बिमिरोको रसमा मिसाई खान दिएमा फियो र शूल नष्ट हुन्छन् । (परीक्षित)

सानो हर्रो, सुठो, मरिच, पिप्ला, शुद्ध कुचिला, शुद्ध गन्धक, हिङ, सिंधे नुन, सबै समभाग लिएर कुटीछानी खलमा राख्नू र पानी राखी खल गरेर सानो बयर जत्रो गोली पार्नू । यो गोली १-१ गोलीको मात्रामा दिनदिनै बिहान-बेलुका मनतातो पानीसँग सेवन गर्नाले शूल र गानुगोलाको रोग शान्त हुन्छ । (परीक्षित)

हर्रोलाई गोमूत्रमा पकाएर सुकाउनू र कुटी छानी चूर्ण बनाउनू । त्यसको बराबर भाग पुरानो मण्डूरको भस्म मिसाउनू । यो चूर्ण गुडसँग सेवन गर्नाले सबै किसिमको शूलहरू नष्ट भएर जान्छन् ।

शूलको विशेष चिकित्सा

वातज शूल- यो शूलमा पसिना ल्याउने स्वेदन कर्मबाट धेरै लाभ हुन्छ । तिललाई पिनेर ठूलो डल्लो बनाई पेटमा फेर्नाले शूलमा आराम हुन्छ ।

बेलको जरा, अडेरको जरा, चितुको जरा, सुठो, हिङ, सिंधे नुन सबै समभाग लिएर पानीसँग पिनेपछि तातो बनाई पेटमा लेपन गर्नाले शूल हराउँछ । (परीक्षित)

ज्वानो, हिङ, सिंधे नुन, खाने सोडा, यवक्षार, सोंचर नुन, हर्रो सबै समभाग लिएर पिन्नू र छानीलिनू । यो चूर्ण ३-६ ग्रामको मात्रामा माँड वा मनतातो पानीसँग खान दिएमा वातज शूल हराउँछ । (परीक्षित)

सौँचर नुन २० ग्राम, अमिली ४० ग्राम, कालो जिरा ८० ग्राम, मरिच १६० ग्राम सबैको चूर्ण बनाई बिमिरोको रसमा घोटी सुपारी बराबरको (१ ग्राम) गोली बनाउनू । यो गोली १-२ ओटा तातो पानीसँग खान दिएमा बातज शूल नष्ट हुन्छ । (परीक्षित)

सुठो, अडेरको जरा, जौ, सबै मिलाई २४ ग्राम लिनू र पानी २०० मि.लि. मा पकाई काढा बनाउनू । त्यसमा हिङ र सौँचर (सौवर्चल) नुन मिसाएर खान दिनू । वातज शूल नष्ट हुन्छ । (परीक्षित)

हिङ र पुष्करमूलको चूर्णको सेवन गरे पनि वातज शूल हराउँछ । (परीक्षित)

करञ्ज, कालो नुन, सुठो र हिङ समभाग लिएर चूर्ण बनाउनू । यो चूर्ण ३ ग्राम तातो पानीसँग सेवन गर्नाले वातज शूल नष्ट हुन्छ । (परीक्षित)

पित्तज शूलको चिकित्सा – यसमा पहिले वमन र विरेचन गराउनुपर्छ ।

काँस अथवा चाँदीको भाँडोमा शीतल (चिसो) पानी भरेर शूल भएको ठाउँमा राख्ने र नुहाउने गर्नाले पित्तज शूल शान्त हुन्छ ।

त्रिफला र अमलतासको गुदी २० ग्राम जति लिनू र काढा पकाई त्यसमा घिउ र चिनी मिसाएर रोगीलाई खान दिनू । यसबाट पित्तज शूल र दाह शान्त हुन्छन् । (परीक्षित)

बिहानै शतावरी (कुरिलो)को रसमा मह मिसाई ख्वाउनू । पित्तज शूल हराउँछ । (परीक्षित)

बिंही, कण्टकारी, गोखुरु, अडेरको जरा, कुश, काश, तालमखाना सबै मिसाई जम्मा २४ ग्राम लिएर २०० मि.लि. पानीमा पकाई ५० मि.लि. बाँकी भएपछि छानेर राख्नू । यो खान दिएमा भयानक पित्तज शूल पनि आराम भएर जान्छ । (परीक्षित)

अमला, बिदारीकन्द, त्रायमाण अथवा दाख यीमध्ये कुनै एकको रसमा मिश्री मिसाएर पिउनाले पित्तज शूल आराम भएर जान्छ । (परीक्षित)

कफज शूल चिकित्सा – यस रोगमा पहिले बमन गराएर लंघन गर्नुपर्छ । पिप्ला, पिप्लाको जरा, चव्य (चाबो), चितु, सुठो सबै मिलाएर २५ ग्राम

लिनू र काढा बनाउनू । त्यस काढामा सिंधे नुन, साँचर नुन, बीरेनुन र हिङ मिसाएर रोगीलाई खान दिनू । यसबाट कफज शूल आराम भएर जान्छ । (परीक्षित)

अथवा– ती सबै औषधीहरू समभाग लिएर कुटीछानी चूर्ण बनाउनू र २-३ ग्रामको मात्रा गरी तातो पानीसँग ख्वाउनू । (परीक्षित)

बोझो, नागरमोथा, चितुको जराको बोक्रा, हर्रो र कुटकी समभाग लिएर चूर्ण बनाउनू । यो चूर्ण ३ ग्राम मात्रामा गोमूत्रसँग खान दिएमा कफज शूल शान्त हुन्छ । (परीक्षित)

त्रिदोषज शूल चिकित्सा

शंख भस्म १ ग्राम, सिंधे नुन, सुठो, मरिच, पिप्ला यी सबै ५०० मि.ग्रा. र हिङ २५० मि.ग्रा. मिसाएर तातो पानीसँग खान दिनू । त्रिदोषज शूल नष्ट हुन्छ । (परीक्षित)

विदारीकन्दको रस २५ मि.लि., पाकेको अनारको रस २५ मि.लि., सुठो, मरिच, पिप्ला र सिंधे नुनको चूर्ण प्रत्येक ३७५ मि.ग्रा. र मह १.५ ग्राम सबलाई मिसाएर खान दिएमा त्रिदोषज शूल हराउँछ ।

त्रिफलाको चूर्ण र मण्डूर भस्म दुवै बराबर मात्रामा मिसाएर अलिकति घिउ र महसँग चाट्नाले त्रिदोषज शूल शान्त हुन्छ । (परीक्षित)

आमज शूल चिकित्सा

यस शूलमा कफज शूल जस्तै आमको पाचन गर्ने र अग्निलाई बढाउने औषधी दिनुपर्छ । ज्वानु, सिंधे नुन, हर्रो र सुठो समभाग लिएर चूर्ण बनाउनू । यो चूर्ण ३ ग्राम मात्रामा मनतातो पानीसँग खान दिए आमको पाचन भएर आमज शूल हराउँछ । (परीक्षित)

चितु, पिप्लाको जरा, अडेरको जरा, सुठो र धनियाँ सबै मिलाई जम्मा २५ ग्राम लिएर काढा बनाई सेवन गराउनू । यसले आमजशूललाई चाँडै नै नष्ट गर्छ । (परीक्षित)

परिणाम शूलको चिकित्सा

यसमा पहिले लङ्घन गराई पछि वमन र विरेचन गराउनुपर्छ । त्यसपछि निम्नलिखित योगहरूमध्ये कुनै एउटा सेवन गर्न दिनुपर्छ ।

पिप्ला, हर्रो र शुद्ध मण्डूर समभाग लिएर मसिनो चूर्ण बनाई १ ग्राम मात्रा मह र चिनी मिसाई चाट्न दिएमा दारुण परिणामशूल पनि नष्ट हुन्छ । (परीक्षित)

सुठो, पिप्ला र गुडलाई समभाग लिएर सिलौटामा पिन्नू र दूधमा राखी पकाएर खान दिनू । यो २१ दिनसम्म खान दिएमा कष्टसाध्य परिणामज शूल पनि नष्ट हुन्छ । (परीक्षित)

शंख भस्म तातो पानीसँग खाए पनि यो शूलमा आराम हुन्छ ।

सुठो, हर्रो र मण्डूर भस्म समभाग लिएर कुटी छानी चूर्ण बनाउनू। यो चूर्ण अलिकति घिउ र महसँग मिसाएर चाट्न दिनू। यसबाट त्रिदोषज परिणामशूल आराम भएर जान्छ। (परीक्षित)

शम्बूकादि वटिका - ससाना शंखको भस्म, सुठो, मरिच, पिप्ला, कालो नुन, सिंधे नुन, बिरे नुन, खारी नुन र यवक्षार सबैलाई शिरीषको रसमा घोटेर १-१ ग्रामको गोली पार्नू र छायामा सुकाउनू। यसलाई सबेरै अथवा भोजनको समयमा तातो पानीसँग निल्नाले परिणामशूल तुरुन्त नष्ट हुन्छ। (परीक्षित)

अन्नद्रवशूलको चिकित्सा

जबसम्म रोगीले वमनद्वारा खाएको कुरा निकाल्दैन तबसम्म यो शूल शान्त हुँदैन। केवल वमनबाट यो शूल शान्त भएर जान्छ। जबसम्म पित्त आइरहन्छ तबसम्म वमन गराउनुपर्छ। त्यसपछि जबसम्म कफ आउँछ तबसम्म विरेचन गराउनुपर्छ। आमाशय र पक्वाशय सफा भएपछि यो शूल आराम भएर जान्छ।

अमलाको चूर्णमा शुद्ध मण्डूर मिसाई महसँग चाट्न दिएमा यो शूल आराम भएर जान्छ।

अथवा - भुटेको चनाको बारा बनाई खान दिएमा आराम हुन्छ।

अथवा - जेठीमधुको चूर्णमा मण्डूर भस्म (समभाग) मिसाएर खान दिएमा आराम हुन्छ।

पुरानो गुड ४० ग्राम, अमलाको चूर्ण ४० ग्राम र मण्डूर भस्म १२० ग्राम सबैलाई मह र घिउमा मिसाएर राख्नू। यसबाट १० ग्राम जति भोजनभन्दा पहिले, बीचमा र भोजनपछि पनि सेवन गर्नाले दारुण अन्नद्रवशूल, १ वर्ष पुरानो शूल र अम्लपित्तमा आराम हुन्छ।

विभिन्न शूलनाशक योगहरू

सामुद्राद्य चूर्ण - समुद्री नुन, सिंधे नुन, यवक्षार, कालो नुन, सांभर नुन, सौंचर नुन, दन्ती (जयपालको जरा), मण्डूर भस्म, निशोथ र सूरण (ओल) सबै समभाग लिएर चूर्ण बनाउनू। चूर्णको चौबर गोमूत्र र त्यति नै गाईको दूध राखी मन्द आँचमा पकाउनू। पाक्दा-पाक्दा जब पानीको अंश सुक्छ अनि उतारी पिनेर छान्नू। यो चूर्ण १-३ ग्राम मात्रामा तातो पानीसँग खान दिनू। चूर्ण पचिसकेपछि मांससहित खानेकुरा घिउमा पकाएर खान दिनू। यसको सेवन गर्नाले नाभिशूल, यकृत्शूल, गुल्मको शूल, प्लीहाको शूल र परिणामशूल नष्ट हुन्छन्। (परीक्षित)

आमलकी खण्ड - कुभिण्डोलाई ताछेर भित्रको कमलो गुदी र बियाँहरू निकालिदिनू र त्यसलाई पानी राखी पकाउनू। पाकिसकेपछि कुभिण्डो

निकाली कपडामा राखेर रस निचोर्नू । रस निचोरेको कुभिण्डोको लेदो दुई सेर छुट्टै राख्नू । त्यसलाई ६४ तोला घिउ राखी कराहीमा पकाउनू । अब अमलाको रस ३२ तोला, कुभिण्डोको रस ६४ तोला र सेतो सख्खर ३२ तोला सबै मिसाएर राख्नू । अघि घिउमा भुटेको कुभिण्डो र त्यो अमलाको रस, कुभिण्डोको रस र सख्खर कराहीमा राखी पकाउनू । पाकेर बाक्लो हुँदै आएपछि त्यसमा पिप्ला, जिरा, सुठो, मरिच हरेकको चूर्ण ८ तोला, धनियाँ ४ तोला, तालीसपत्र ४ तोला, दालचिनी, नागकेशर, सुकमेल, तेजपात र नागरमोथा यी सबैको चूर्ण १-१ तोला पनि मिसाई दिनू र आगोबाट झिकी सेलाउन दिनू । त्यो सेलाएपछि त्यसमा मह ३२ तोला मिसाएर सफा भाँडोमा सुरक्षित गरी राख्नू । यो आमलकी खण्ड त्रिदोषज परिणामशूल, हृदयशूल, रक्तपित्त र कम्मरको दुखाइ शान्त गर्ने उत्तम रसायन औषधी हो । (परीक्षित)

शंख द्राव – आँक, सिउँडी, चितु, अमिली, अपामार्ग, अमलतास (राजवृक्ष) सबैको क्षार २ छटाक (१०० ग्राम), शुद्ध स्वाग (टंकण), यवक्षार, खाने सोडा, कलमी शोरा, समुद्रफेन, कासीस यी सबै ६.५-६.५ छटाक (३२५ ग्राम) साँचर नुन, सिंधे नुन, बिरे नुन, समुद्री नुन, कचिया नुन ६.५ छटाक (३२५ ग्राम) लिएर कुटी छानी चूर्ण बनाउनू । सबैलाई कागतीको रस २ सेर (२ लिटर) मा मिसाई आठ दिनसम्म भिज्न दिनू । नवौं दिन माटोको यन्त्रद्वारा क्वाथ तयार पार्नू । अनि त्यसलाई बोतलमा भरेर राख्नू । यो अतितीक्ष्ण अम्ल औषधी हो ।[1] यसबाट ५-२५ थोपासम्म ५० मि.लि. पानीमा मिसाई काँचको गिलासमा राखी बिहान-बेलुका खान दिनू । यसले पेटको शूल, वायुगोला, अजीर्ण र फियोको रोग शान्त गर्छ । अनेकपल्ट परीक्षित हो ।

औषधीको सेवन र पेटमा तेलको मालिस गर्दा पनि शूल शान्त नभएमा नारायण तेल अथवा प्रसारिणी तेलको गुदद्वारबाट वस्ति (पिचकारी) दिनुपर्छ । यो अन्तिम उपाय हो । यसबाट लाभ हुन्छ ।

एरण्डाद्य घृत – अडेरको जरा, कण्टकी, गोखुरु, पुनर्नवा, गोखुरुको जरा, शतावरी, हंसपदी, बला, माषपर्णी, बिदारीकन्द, बेलको जरा, कमलको नाल, चितु, कण्टकारी, जीवन्ती, शर, कुश, सहदेवी, देवदारु सबै १-१ तोला लिएर सिलौटामा पिनेर लेदो पार्नू, फेरि तिनै औषधीहरू खस्रो गरी कुटेर जौकुट गर्नू र १६ सेर पानीमा पकाई काढा बनाउनू । चौथाई पानी बाँकी रहँदा उतारेर छान्नू ।

---

१. यो अर्क धेरै कडा हुन्छ । हात, गोडा वा कपडामा परेको खण्डमा जलाइदिन्छ । अतः सावधानीका साथ प्रयोग गर्नुपर्छ ।

अनि बिमिरोको रस ४ सेर तयार गरी बेग्लै राख्नू र गाईको घिउ १ सेर पनि तयार राख्नू । त्यसपछि एउटा कराहीमा पहिले तयार गरी राखेको लेदो, काढा, निबुवाको रस र घिउ मिसाएर मन्द अग्निमा पकाउनू । घिउमात्र रहँदा उतारेर छानिलिनू । यो घिउ सेवन गर्नाले परिणाम शूल र अन्तद्रवशूललाई छोडेर सबै किसिमको शूललाई नाश गर्छ । जुन रोगीलाई कुनै पनि औषधीले आराम भएको छैन यसबाट आराम भएर जान्छ । (परीक्षित)

शूलान्तक तेल– ज्वानो, धनिया, पिप्ला, बोझ्नो, सिंधे नुन, बयरको पात हरेकको चूर्ण ८-८ तोला (१०० ग्राम) लिएर पानीसँग पिनेर लेदो पार्नू, फेरि अडेरको जरा १ पाउ र दशमूल अन्तर्गतका औषधीहरू (बेल, गम्भारी, गिनेरी, पाटला, टटेलो, शालपर्णी, पृश्निपर्णी, बिंही, कण्टकारी र गोक्षुर) १-१ पाउ (२०० ग्राम) कुटी खस्रो चूर्ण बनाउनू र १ मन १६ सेर (५६ लिटर) पानीमा पकाउनू । १४ लिटर पानी बाँकी भएपछि उतारेर छान्नू । अर्कोतिर ८ सेर जौलाई ६४ सेर पानीमा पकाउनू । १६ सेर पानी बाँकी रहन्छ उतारेर छानी राख्नू । अब तिलको तेल ८ सेर, गाईको दूध १६ सेर, अडेर र दशमूलको काढा, जौको काढा र पहिले तयार गरेको लेदो सबैलाई एकै ठाउँमा राखी पकाउनू । तेलमात्र बाँकी रहँदा उतारेर छान्नू । यस तेलको मालिसले सबै किसिमका शूल शान्त हुन्छन् । (परीक्षित)

शूलवज्रिणी वटी– शुद्ध पारो, शुद्ध गन्धक, दुवैलाई ४-४ तोला लिएर खलमा राखी कज्जली बनाउनू । त्यसमा लौह भस्म ४ तोला र ताम्र भस्म १ तोलासा मिसाउनू । त्यसपछि शुद्ध हिङ, शुद्ध टंकण, सुठो, मरिच, पिप्ला, हर्रो, बर्रो, अमला, कचूर, तेजपात, दालचिनी, सुकमेल, तालीसपत्र, जाइफल, ल्वाङ, ज्वानो, जिरा, धनियाँ यी प्रत्येकको चूर्ण १-१ तोला मिसाउनू र बाखाको दूध वा पानी राखी २ दिनसम्म घोटेर ४-४ रत्तीका (५०० मि.ग्रा.) गोली पार्नू । यो औषधी १-१ गोली मात्रामा तातो पानी अथवा अरू कुनै उचित अनुपानका साथ सेवन गर्नाले सबै किसिमका शूलहरू नष्ट हुन्छन् । यो गोली सेवन गर्दा दाँतमा लाग्न दिनुहुँदैन । अनेकपल्ट परीक्षित योग हो ।

बराटकयोग– कागतीको रस १ पाउ, शुद्ध टंकण २ तोला, ८ ओटा पहेंलो कौडाको भस्म यी सबैलाई बलियो काँचको भाँडामा राखी हावा नपस्ने गरी बिर्को लगाउनू र भुस वा अनाजको भकारीभित्र ८ दिनसम्म दबाएर राख्नू । त्यसपछि निकालेर प्रयोग गर्नू । यसको मात्रा ३ ग्रामदेखि १२ ग्रामसम्म दिन

---

१. जाडोको मौसममा यो औषधी २१ दिनसम्म भुस वा अन्नको भकारीभित्र राख्नुपर्छ ।

सकिन्छ । यो औषधी बिहान-बेलुका भोजनपछि १-१ मात्रा १-२ औंस (२५-५० मि.लि.) पानीसँग सेवन गर्न दिएमा शूल रोग नष्ट हुन्छ ।

शूलगजकेशरी रस- शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, शुद्ध वत्सनाभ विष, कौडी भस्म, सिंधे नुन, पिप्ला, सुठो र मरिच सबै समभाग लिनू । पहिले पारद र गन्धक खलमा राखी कज्जली बनाउनू । त्यसपछि त्यसमा वत्सनाभ आदि बाँकी औषधीहरू क्रमशः मिसाउनू र पानको रससँग १-२ दिन राम्ररी घोटेर २-२ रत्तीको (२५० मि.ग्रा.) गोली पार्नू । यो औषधी १-१ गोली प्रतिदिन खान दिएमा परिणामशूल शान्त हुन्छ । (परीक्षित)

बोझो, सुठो, जिरा, मरिच, चितु, हिङ, शुद्ध विष (वत्सनाभ), रससिन्दूर र दालचिनी सबै समभाग लिएर चूर्ण बनाउनू । त्यो चूर्णलाई खलमा राखी भृङ्गराजको रसका साथ १ दिन घोटी २५० मि.ग्रा. बराबरको गोली पारी सुकाएर राख्नू । यी गोलीहरूको सेवन गर्नाले सबै किसिमका शूलहरू शान्त हुन्छन् । (परीक्षित)

हृदयशूलको चिकित्सा - १ सेर जरायोको सिंगलाई रेतीले रेटेर चूर्ण पार्नू । त्यसलाई माटाको भाँडामा भरेर माथिबाट बिर्को लगाई छोपिदिनू । ४-५ तह कपडमिट्टी गरेर घाममा केही दिन सुकाइराख्नू । त्यसलाई १५ सेर जङ्गली गुइँठाको बीचमा राखी आगो बाली डढ्न दिनू । आगो निभेर भाँडो सेलाएपछि बिर्को खोली भस्म निकालेर सिसीमा सुरक्षित राख्नू । यो अति उत्तम औषधी हो । यसबाट १ ग्राम भस्म लिएर गाईको घिउ (तताएको) ३ ग्राममा मिसाई खान दिएमा हृदयशूललाई तत्काल आराम दिन्छ । कहिल्यै फेल खाँदैन, अनेक पल्ट परीक्षित हो ।

पुष्करमूलको चूर्ण महसँग खान दिएमा अथवा दशमूलको काढामा यवक्षार र सिंधे नुन मिलाई सेवन गर्न दिएमा हृदय रोगमा आराम हुन्छ । (परीक्षित)

अर्जुन वृक्षको बोक्राको काढा ४ सेर र गाईको घिउ १ सेर मिसाएर पकाउनू । घिउमात्र बाँकी रहेपछि उतारेर छान्नू । यो घिउ पिउनाले हृदयशूल र हृदयका अरू धेरै रोगहरू नष्ट हुन्छन् । (परीक्षित)

वस्तिशूल एवं कुक्षिशूलको चिकित्सा

कालो नुन, शुद्ध हिङ र सुठो समभाग लिएर चूर्ण बनाउनू । यो चूर्ण जौको काढासँग खानाले हृदयशूल, कुक्षिशूल र पेटका रोगहरू शान्त हुन्छन् ।

पाँचैओटा नुन, समुद्रफेन, शुद्ध टंकण (स्वागा), खाने सोडा, शंख, सिपी, कौडी सबै समभाग लिएर एकत्र पिनेर १ दिनभरी आँकको दूधमा खल गर्नू र डल्लो पार्नू । त्यसलाई आँकको पातमा बेरेर सुतलीले बाँध्नू कपडमिट्टी गरेर घाममा सुकाउनू । पछि जङ्गली गुइँठाको बीचमा राखी आगो बाल्नू र पाक्न दिनू । पाकेर

त्यो डल्लो रातो भएपछि आगोबाट निकाली सेलाउन दिनू। अब माटो हटाई भित्रको औषधी निकाली पिन्नू र सिसीमा सुरक्षित राख्नू। यो औषधी १-१ रत्ती (१२५ मि.ग्रा.) मात्रामा दिनमा २-३ पटक खान दिएमा कुक्षिशूल, खोकी र दमको रोगका लागि रामबाण औषधी हुन्छ। यो औषधी बनाउँदा आँककको दूध नपुग्ने भएमा आँककको पातको रस प्रयोग गर्न सकिन्छ। (परीक्षित)

शूल रोगमा पथ्यापथ्य

शूल रोगमा दुखाई बढी भएको वेलामा दाल, रोटी खान नदिनू। दिनमा दूध, बार्ली र साबुदाना तथा रातमा धानका लावा दिनू। वाकवाकी लाग्ने, ज्वरो आउने, जीउ पोल्ने आदि उपद्रव भएमा जौ पकाएर माँड बनाई सेलाएपछि मह मिसाएर खान दिनू।

शूल शान्त भई दुख्न छोडेपछि पुरानो चामलको भात, सूरण (ओल), पर्वर, भण्टा, डुम्री, पुरानो कुभिण्डो, करेलो, झिंगे माछाको तर्कारी खान दिनू। तर्कारीमा धनियाँ, बेसार, सिंधे नुन र हिङ आदि मसला राख्नू। सकभर साग तर्कारी नदिनू। भातमा पुरानो चामलको भात मात्र दिनू।

रातमा दूधमा पकाएको साबुदाना वा दूधका साथ धानको लावा खान दिनू। भोजनसँग पानी खान नदिनू। भोजनको २ घण्टापछि दिन सकिन्छ। सम्भव भएसम्म मनतातो पानीले स्नान गराउनू।

सागहरू, ठूलो माछा, दही, रातो खुर्सानी खान दिनुहुँदैन। बढी मात्रामा खानुहुँदैन। कडा घाममा हिँड्ने र बढी रिसाउने गर्नुहुँदैन।

१४. उदावर्त रोग (वायु संबन्धी पेटको विकार)

जुन रोगमा कुनै कारणबाट अधोवायु रोकिएर बस्छ, बाहिर निस्कन पाउँदैन र वायु पेटमा घुम्ने, पेट फुल्ने, दुख्ने हुन्छ त्यसलाई उदावर्त रोग भनिन्छ।

उदावर्तको कारण - अधोवायु (पाद), मल, मूत्र, जृम्भा (हाइ आउनु), आँसु, छ्यूँ, डकार, वमन, वीर्य, भोक, प्यास, सास र निद्रा यी १३ वेगहरू[1] लाई रोक्ने गर्नाले उदावर्त रोग उत्पन्न हुन्छ।

---

१. शरीरमा शारीरिक र मानसिक दुई किसिमका वेगहरू हुन्छन्। मल, मूत्र, अधोवायु आदि शारीरिक वेगहरू हुन्। तिनीहरूलाई रोक्नाले रोगहरू उत्पन्न हुन्छन्। काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष आदि मानसिक वेगहरू हुन्। तिनीहरूलाई रोक्नाले शरीर स्वस्थ रहन्छ। त्यसै भएर शारीरिक वेगहरूलाई रोक्नुहुँदैन। मानसिक वेगहरूलाई प्रयत्नपूर्वक रोक्नुपर्छ।

भेदहरू – उदावर्तका १४ भेद हुन्छन् । तीमध्ये १३ विभिन्न वेगहरू रोक्नाले उत्पन्न हुन्छन्, एउटा अपथ्य अर्थात् वायु बढाउने अन्नबाट उत्पन्न हुन्छ ।

उदावर्तका लक्षणहरू

(१) **अपान वायुको निरोधबाट उत्पन्न उदावर्त** – यसमा अपान वायु रोकिन्छ । दिसा र पिसाब पनि कम हुँदै जान्छ, पेट फुल्छ, शरीर थाक्ने, दुख्ने हुन्छ । पेटमा वायुसम्बन्धी अनेक किसिमका पीडाहरू हुन्छन् ।

(२) **मलजन्य उदावर्त** – पेटमा गुडगुड शब्द हुन्छ, शूल र पेट काटेजस्तो दुख्ने हुन्छ, दिसा रोकिन्छ, बारम्बार डकार आइरहन्छ, मुखबाट दुर्गन्धित स्राव हुन्छ ।

(३) **मूत्रज उदावर्त** – यसमा मूत्राशय र लिङ्गमा दुख्ने हुन्छ, पिसाब कष्टका साथ आउँछ, टाउको दुख्छ । शरीर अघिल्तिर झुक्छ, सोझो हुन सक्दैन ।

(४) **हाइ रोक्दा उत्पन्न उदावर्त** – मन्या र घाँटी चल्न नमिल्ने गरी दुख्छन्, शिर, आँखा, नाक र कानका वायुसम्बन्धी रोगहरू हुन्छन् ।

(५) **आँसु रोक्दा उत्पन्न उदावर्त** – हर्ष अथवा शोकबाट आउन लागेको आँसु रोक्नाले टाउको भारी हुने, आँखा दुख्ने र पिनास यी रोग हुन्छन् ।

(६) **छ्यूँ रोक्दा उत्पन्न उदावर्त** – मन्या नामक नसाले काम गर्न छोड्छ, टाउको दुख्ने, मुख बाङ्गो हुने हुन्छ । आधा कपाल दुख्ने र इन्द्रियहरूमा कमजोरी हुन्छ ।

(७) **डकारको वेग रोक्दा उत्पन्न उदावर्त** – मुख र घाँटीमा केही अड्केको भान हुन्छ, घाँटीमा सियोले घोचेझैं दुख्छ, आन्द्रामा गुडगुड हुन्छ, बोली अस्पष्ट हुन्छ र सास फेर्न गाह्रो हुन्छ ।

(८) **वमन रोक्दा उत्पन्न उदावर्त** – कण्डू (जिउ चिलाउने), डाबर आउने, अन्न नरुच्ने, पाण्डुरोग, ज्वर आउने, शोथ हुने हुन्छ । कुष्ठ र विसर्प रोग हुन्छ । वाकवाक लागिरहन्छ ।

(९) **वीर्य रोक्दा उत्पन्न उदावर्त** – मूत्राशय, अण्डकोश र गुदद्वारमा शोथ हुन्छ र दुख्छ, पिसाब रोकिन्छ र वीर्यको अंश जमेर अश्मरी हुन्छ अथवा त्यसको स्राव हुन्छ ।

(१०) **भोकको वेग रोक्दा उत्पन्न उदावर्त** – तन्द्रा (उँघ्ने) हुन्छ, अङ्गहरू दुख्ने हुन्छ, थकाइ लाग्छ र आँखा कमजोर हुन्छ ।

(११) **प्यासको वेग रोक्दा उत्पन्न उदावर्त** – मुख र घाँटी सुक्छ, कानले राम्रो सुन्न छोड्छ र मुटु दुख्छ ।

(१२) **थकाइको सास रोक्दा उत्पन्न उदावर्त** – हृदयरोग, गुल्म अथवा मूर्च्छा हुन्छ ।

(१३) **निद्राको वेग रोक्दा उत्पन्न उदावर्त** – हाइ आइरहने र अङ्गहरू दुख्ने हुन्छ, आँखा र टाउको भारी हुन्छ र तन्द्रा भइरहन्छ ।

(१४) **अपथ्य भोजनबाट उत्पन्न उदावर्त** – रुखो, टर्रो, तितो, पिरो अन्न सधैँ खाइरहने मानिसको वायु कुपित भएमा त्यसले उदावर्त रोग गराउँछ । यसमा कुपित वायुले मललाई सुकाइदिन्छ, हृदय र वस्तिमा शूल गराउँछ । वाकवाकी लाग्ने हुन्छ । मल, मूत्र आदि मुस्किलले निस्कन्छन् । दम, खोकी, रुघा, दाह, प्यास, ज्वरो, वमन, हिक्का र टाउको दुख्ने हुन्छ । मनमा भ्रम हुन्छ र कानमा शब्दसम्बन्धी भ्रम हुन्छ ।

उदावर्तका मुख्य लक्षणहरू – मुटु र पेटका विभिन्न भागमा दुख्ने हुन्छ । मल, मूत्रहरू मुस्किलले र कम मात्रामा निस्कन्छन् ।

असाध्य लक्षण – जुन रोगीलाई बढी प्यास लाग्छ, शरीर क्षीण हुँदै गएको छ, शूल भइरहन्छ, मलजस्तै दुर्गन्धित वमन हुन्छ त्यसको रोग असाध्य हुन्छ ।

उदावर्तको चिकित्साको सिद्धान्त – यस रोगमा वायुको अनुलोमन हुने अर्थात् आफ्नो सही बाटोमा निस्कने उपाय गर्नुपर्छ ।

अधोवायु रोकिएको अवस्थामा स्वेदन गर्नु, वस्ति दिनु र वर्तिको प्रयोग गर्नुपर्छ ।

मल रोकिएको अवस्थामा मल सजिलै निस्कने अन्न (जौ आदि) सेवन गर्नु, विरेचनको साथै वर्तिको प्रयोग गर्नुपर्छ ।

मूत्र रोकिएको अवस्थामा मूत्रकृच्छ र पथरीको उपचार गर्नुपर्छ ।

हाइ रोकिएको अवस्थामा स्वेदन तथा वातनाशक उपाय गर्नुपर्छ ।

आँसु रोकिएको अवस्थामा आँसु आउने उपाय गर्नु, आरामपूर्वक सुताइदिनुपर्छ ।

छ्यूँ रोकिएको अवस्थामा मरिच, रायो आदि कडा पदार्थ सुँघ्न दिएर छ्यूँ आउने उपाय गर्नुपर्छ, नस्य दिने र स्वेदन गर्नुपर्छ ।

डकार रोकिएको अवस्थामा चिल्लोयुक्त वस्तुको धुवाँ लिनु, मद्यमा कालो नुन र बिमिरोको रस मिसाई पिउन दिनुपर्छ ।

वमनको वेग रोकिएको खण्डमा वमन गराउनु, लंघन गर्नु र विरेचन गराउनुपर्छ ।

वीर्य रोकिएको अवस्थामा सुन्दर स्त्रीसँग सहवासद्वारा वीर्यस्राव गराउनुपर्छ, तेलको मालिस गराउने, पानीमा डुबुल्की लगाउने गर्नुपर्छ। मूत्राशयलाई शुद्ध पार्न गोखुरु आदि द्रव्य र चौबर पानी तथा दूध राखेर पकाउनुपर्छ। पानी जति सुकेर दूधमात्र बाँकी भएपछि मिश्री मिसाएर रोगीलाई खान दिनुपर्छ।

भोकको वेग रोकिएको अवस्थामा सुगन्धित पदार्थ सुँघ्नु साथै तातो, चिल्लो र सुपाच्य अन्न थोरै खान दिनुपर्छ।

थकाईबाट बढेको सास रोकिएर समस्या भएको अवस्थामा मांसरसका साथ भोजन गराउनुपर्दछ र आराम गर्न दिनुपर्छ।

निद्रा रोकिएको अवस्थामा दूधमा मिश्री मिसाई खान दिनुपर्छ र आराम गराउनुपर्छ।

विशेष चिकित्सा

अधोवायुबाट उत्पन्न उदावर्तमा - मबनफल, पिप्ला, कुठ, बोभ्रो, सर्स्यू सबै समभाग (१-१ तोला) लिएर चूर्ण बनाउनू। गुड ५ तोला (६० ग्राम) लिएर पानीमा घोली आगोमा पकाउनू। राम्ररी पाकेपछि त्यसमा अलिकति दूध र पहिले बनाएर राखेको चूर्ण राखी चलाइराख्नू। पाकेर लेदो भएपछि उतारेर काल्छी आँला बराबरका बत्तीहरू बनाउनू। बत्तीको बीचको भाग मोटो र दुवै छेउतिर पातलो हुनुपर्छ। यस बत्तीलाई घिउ वा तेलले चिल्लो पारी रोगीको गुदद्वारमा छिराइदिनू। मल, मूत्र र अधोवायु रोकिएर भएको उदावर्त रोगमा यस बत्तिले राम्रो आराम दिन्छ।

मलजनित उदावर्तमा- हिङ, मह र सिंधे नुन सबलाई एकत्र पिनेर माथि भनेजस्तै बत्ती बनाउनू। यसलाई घिउमा चोपी गुदद्वारमा छिराउनाले मल रोकिएर भएको उदावर्त नष्ट हुन्छ।

निशोथ २ तोला, पिप्ला ४ तोला, हर्रो ५ तोला, गुड ११ तोला सबलाई मिसाएर पिन्नू र चूर्ण बनाएर राख्नू। यो चूर्ण ३-६ ग्राम मात्रामा खान दिएमा मलजनित उदावर्त ठीक हुन्छ।

मूत्रजनित उदावर्तमा- रक्सीमा ज्यालो नुन वा सुकमेल मिसाई खान दिएमा आराम हुन्छ। अथवा काँक्राको बियाँ पानीमा पिनेर पानीमै घोली नुन मिसाई पिउन दिएमा आराम हुन्छ।

अथवा - बोभ्रोको चूर्ण १ ग्राम फाँकी माथिबाट पानी मिसाएको दूध पिउनाले यो रोग शान्त हुन्छ।

उकारजनित उदावर्तमा - गुर्जो, बिदारीकन्द, अश्वगन्धा, अनन्तमूल, शतावरी २-२ ग्राम, माषपर्णी, जीवन्ती र जेठीमधु १-१ ग्राम लिएर मसिनो गरी पिन्नू र चूर्ण बनाउनू। यो चूर्ण घिउ वा मैनमा मिसाएर बत्तीजस्तो बनाउनू र चुरोट जस्तै सल्काएर त्यसबाट आएको धुवाँ मुखबाट बिस्तारै तान्न दिनू। यो रोग शान्त हुन्छ।

छिक्काजनित उदावर्तमा - छ्यूँकेझार (छिक्किका)को पातलाई सुकाई पिनेर त्यसको नस दिनुपर्छ। साथै घाँटीमा मालिस गर्ने, पसिना निकाल्ने काम गर्नुपर्छ। माथि भने अनुसार धुवाँ पिउनु उचित हुन्छ।

वमनजनित उदावर्तमा - यवक्षार र सिंधे नुन समभाग लिएर मसिनो पिनेर तेलमा मिसाई मालिस गर्नू। १ भाग दूध ४ भाग पानी मिसाएर पकाउनू। पानी जति सुकेर दूधमात्र बाँकी भएपछि सेलाएर पिउन दिनू। आराम हुन्छ।

वीर्यजनित उदावर्तमा - पञ्चतृणमूललाई सिलौटोमा पानीसँग पिनेर १ भाग, दूध ४ भाग र पानी १६ भाग राखी पकाउनू। पानी सुकेर दूधमात्र बाँकी भएपछि छानेर मिश्री मिसाई पिउन दिनू। यो रोग नाश हुन्छ।

रक्षादि अपथ्य पदार्थजनित उदावर्तमा- हिङ, मह र सिंधे नुन एकत्र पिनेर बत्ती बनाउनू। यस बत्तीलाई घिउमा चोपेर गुदद्वारमा राखिदिनू। सजिलोसित मल निस्की आराम हुन्छ।

उदावर्तमा उपयोगी अन्य योगहरू

नाराच रस - निशोथ १ तोला, पिप्ला २ तोला, मिश्री ४ तोला यी सबैलाई पिनेर छानी चूर्ण बनाएर राख्नू। यसबाट ६ माशा (६ ग्राम) चूर्ण महमा मिसाई भोजनपूर्व सेवन गर्नाले मल निस्केर उदावर्त रोग नष्ट हुन्छ र चित्त पनि प्रसन्न हुन्छ।

गुडाष्टक - सुठो, मरिच, पिप्ला, पिप्लाको जरा, निशोथ, दन्ती, जयपालको जरा १-१ तोला लिएर कुटी छानेर चूर्ण बराबर अर्थात् ७ तोला गुड मिसाएर राख्नू। यो चूर्ण ६ ग्राम मात्रामा बिहानै खाई पानी पिएमा उदावर्त र फियोको रोग, गानुगोलामा आराम हुन्छ। अग्नि र बल बढ्छ। (परीक्षित)

बृहत् इच्छाभेदी रस - शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, शुद्ध टंकण (स्वाग), मरिच र निशोथ प्रत्येक १-१ तोला, अतीस २ तोला, शुद्ध जयपालको बियाँ ९ तोला सबै तयार पार्नू। पहिले पारो र गन्धकलाई खलमा राखी ६ घण्टासम्म घोट्नू। चमक हराएर कज्जली तयार भएपछि त्यसमा स्वाग आदि औषधीहरूको चूर्ण बनाई मिसाइदिनू र आँकको पातको स्वरस राखी खूब खल गर्नू। अन्तमा हल्का आगोमा

तताएर १-१ रत्तीको गोली पार्नू। यो १ गोली चिसो पानीसँग सेवन गराउनू। यसबाट दिसा हुनेछ। दिसा बढी भएमा त्यसलाई रोक्न तातो पानी ख्वाउनू। तातो पानीले तुरुन्त दिसा रोकिन्छ। त्यसपछि दही र भात पथ्यको रूपमा खान दिनू।

तैल विरेचन – तातो दूध १.५ पाउ (३०० मि.लि.) मा २-४ तोला (२५-५० मि.लि.) अडेरको तेल मिसाई बिहान सबेरै पिउनाले सफा दिसा भएर पेटको रोग शान्त हुन्छ। कोष्ठ धेरै कडा भएर कुनै पनि औषधीबाट दिसा भएन भने अडेरको तेलमा १० थोपा तारपीन तेल पनि मिसाईदिनू र दूधमा मिसाएर पिउन दिनू। बच्चालाई दिँदा तारपीनको तेल २-३ थोपासम्म दिन सकिन्छ, अवश्य दिसा हुन्छ।

यवक्षार, हिङ, चितु र अम्लवेत समभाग लिएर कुटी छानी चूर्ण बनाउनू। यो चूर्ण ३-६ ग्राम मात्रामा तातो पानीसँग खान दिनू। यसबाट सुकेको मल पनि खुलेर निस्कन्छ। (परीक्षित)

हर्रो, मरोडफली, यवक्षार र निशोथ समभाग लिएर चूर्ण पार्नू। यो चूर्ण ३-६ ग्राम मात्रामा घिउमा मिसाएर खान दिएमा गुल्म, आनाहसहित उदावर्त रोग नष्ट हुन्छ। (परीक्षित)

ताजा दही मथेर बनाएको महीमा हिङ, सुठो, गुड र भुटेको स्वाग यी सबैको धुलो मिसाई सेवन गर्नाले अथवा गुडमा मिसाई शंख भस्म सेवन गर्नाले उदावर्त रोगमा हित गर्छ।

पथ्यापथ्य – यस रोगमा वायुको शमन गर्ने खानपान हितकारी हुन्छ। पुरानो चामलको भातमा घिउ मिसाएर तात्तातो खान दिनुपर्छ। धनियाँ, बेसार, हिङ, सुठो, सिंधे नुन पथ्य हुन्छन्। नाभिमा घिउमा पिनेको हिङको लेप गर्नु तथा पेटमा तातो पानीको बोतल राख्नु पथ्य हुन्छ।

१५. आनाह रोग (कब्जियत)

जुन रोगमा आम अर्थात् नपचेको अन्नको रस अथवा मल (दिसा) शरीरमा जम्मा भइरहन्छ र कुपित वायुको कारण रोकिएर आफ्नो मार्गबाट निस्कन सक्दैन, त्यसलाई आनाह रोग भनिन्छ।

यो दुई किसिमको हुन्छ – आमज (आम रसबाट उत्पन्न) र पुरीषज (दिसा रोकिएर उत्पन्न)।

आमज आनाहको लक्षण – यसमा तिर्खा बढी लाग्छ, रुघा हुन्छ, टाउको पोल्छ। आमाशयमा शूल र भारीपन हुन्छ। वाकवाकी लाग्ने र डकार आउने हुन्छ।

पुरीषज आनाहको लक्षण – कम्मर र पिठ्यूँ जकडिएको भान हुन्छ, दिसा-पिसाब समयमा सफा हुँदैन, शूल हुन्छ, मुखबाट मलसहित वमन हुन्छ, श्वास फेर्न गाह्रो हुन्छ । साथमा अलसक रोगको लक्षण पनि हुन्छ ।

चिकित्सासूत्र – आमज आनाहमा पहिले वमन गराएर शुद्ध भएपछि दीपन औषधी राखी पकाएको पेया आदि (पिउनलायक पथ्य) दिनुपर्छ ।

पुरीषज आनाहमा पेटमा तेलको मालिस, तातो पानीले सेक, वर्तिको प्रयोग अथवा वस्ति दिने व्यवस्था गर्नुपर्छ । वायुको अनुलोमन हुने उपाय गर्नुपर्छ ।

उपयोगी औषधीहरू

त्रिवृदादि चूर्ण – निशोथ २ तोला, पिप्ला ४ तोला, हर्रो ५ तोला यी सबै कुटी छानी चूर्ण बनाउनू । सबैको बराबर अर्थात् ११ तोला गुड मिसाई राम्ररी घोटेर ३-३ माशाका गोलीहरू पार्नू । यस्तो १-२ गोलीको सेवन गर्दा नै यो रोग शान्त हुन्छ ।

हिंग्वादि चूर्ण– हिङ १० ग्राम, बोझो २० ग्राम, बिरे नुन ३० ग्राम, सुठो ४० ग्राम, जिरा ५० ग्राम, हर्रो ६० ग्राम, पुष्करमूल ७० ग्राम, कुठ ८० ग्राम यी सबैलाई कुटी छानी चूर्ण बनाउनू । यो चूर्ण ३-४ ग्राम मात्रामा मनतातो पानीसँग खान दिनुपर्छ । यसको सेवन गर्दा आनाह, गुल्म आदि पेटका विभिन्न रोगहरू नष्ट हुन्छन् । (परीक्षित)

वचादि चूर्ण– बोझो, हर्रो, चितुको जराको बोक्रो, यवक्षार, पिप्ला, अतिविषा (अतीस), कुठ सबै समभाग लिएर कुटीछानी चूर्ण बनाउनू । यो चूर्ण १.५ देखि ३ ग्रामसम्म मात्रामा खान दिनू । यसबाट आनाह रोग अवश्य नष्ट हुन्छ । (परीक्षित) यो चूर्ण फाँकेपछि मनतातो पानी पिउनुपर्छ र केही समयपछि पथ्य अन्न खान दिनुपर्छ ।

रामठाद्य वर्ति– हिङ, घरको धुवाँ, बिरे नुन, सुठो, मरिच, पिप्ला, गुड सबै समभाग लिएर पिन्नू र गोमूत्रमा मिसाई आगोमा पकाउनू । पाकेर बाक्लो भएपछि बुढी आँला बराबरका बत्तीहरू बनाएर राख्नू । यो वर्ति (बत्ती) घिउमा चोपेर गुदद्वारमा राख्नाले आनाह र शूल रोग नष्ट हुन्छ ।

हिङ्गुद्विरुत्तर– हिङ १ तोला, बोझो २ तोला, कुठ ४ तोला, खाने सोडा ८ तोला र वायुविडङ्ग १६ तोला सबैलाई कुटी छानी मिसाएर चूर्ण बनाउनू । यो चूर्ण २-६ माशा मात्रामा मनतातो पानीको अनुपान गरी सेवन गराउनू । आनाह, ऊर्ध्ववात, गुल्म आदि रोग नष्ट हुन्छन् । (परीक्षित)

१६. गुल्म रोग (गानु गोला)

जुन रोगमा कुपित वायुले मुटु र नाभिको बीच कुनै पनि अङ्गमा अडिएर त्यस ठाउँमा डल्लोजस्तो आकृति बनाउँछ र वायुको चञ्चल तथा विषम स्वभाव अनुसार त्यो तल-माथि, दायाँ-बायाँ सर्ने, कहिले बढ्ने-कहिले घट्ने हुन्छ, त्यसलाई गुल्म रोग भन्छन्। डल्लो भएको ठाउँमा बाहिरबाट हेर्दा निला नसाहरूले घेरेको देखिन्छ।

गुल्म रोग हुने स्थानहरू - चरक र सुश्रुतको मत अनुसार गुल्म रोग उत्पन्न हुने पाँच स्थान हुन्छन् -

(क) **हृदय प्रदेश** - पेटको माथिल्लो मुटु नजिकको भाग।

(ख) **नाभि प्रदेश** - पेटको बीचको भाग।

(ग) **वस्ति प्रदेश** - नाभिभन्दा तल मूत्राशयसम्मको भाग।

(घ) **उदर दक्षिण पार्श्व** - पेटको दायाँ भाग।

(ङ) **उदर वाम पार्श्व** - पेटको बायाँ भाग।

	हृदयप्रदेश	
उदर	नाभिप्रदेश	उदर
दक्षिण पार्श्व	वस्तिप्रदेश	वाम पार्श्व

यसरी सम्पूर्ण पेटको भाग गुल्मको स्थान हुन्छ।

गुल्म रोगका भेदहरू- गुल्म रोग ५ किसिमको हुन्छ - वातज गुल्म, पित्तज गुल्म, कफज गुल्म, त्रिदोषज गुल्म (निचय), रक्तज गुल्म।

यी पाँच गुल्महरूमध्ये पहिलेका चार गुल्महरू पुरुष र महिला दुवैमा हुन्छन्। रक्तज गुल्म धेरैजसो महिलाहरूमा नै हुन्छ।

रक्तज गुल्म दुई किसिमको हुन्छ - धातुरूप गुल्म र आर्तवजन्य गुल्म। रक्त धातुको विकृतिबाट हुने धातुरूप गुल्म पुरुष, महिला दुवैमा हुनसक्छ। मासिक स्राव (आर्तव) विकृत भएर उत्पन्न हुने रक्तगुल्म महिलाहरूमा मात्र हुन्छ।

गुल्मको पूर्वरूप- बढी डकार आउनु, दिसा नियमित नहुनु वा रोकिनु, पेट भरिएजस्तो हुनु, बल घट्दै जानु, पेटमा गुडगुड आवाज हुनु, पेट फुल्नु, खाएको पचाउन नसक्नु यी गुल्मका प्रारम्भिक लक्षण हुन्छन्।

वातज गुल्मको निदान- रुखो कुरा बढी खानु, अपान वायु, मल आदिको वेग रोक्नु, बढी चिन्ता-शोक गर्नु, बढी उपवास गर्नु, वान्ता वा पखाला भएर मलको निकै क्षय हुनु यी वातज गुल्म उत्पन्न गर्ने कारण हुन्छन् ।

वातज गुल्मको लक्षण- यो गुल्म कहिले नाभिमा, कहिले हृदय प्रदेशमा, कहिले वस्तिमा, कहिले दायाँ-बायाँ हुन्छ । एकै ठाउँमा रहँदैन ।

यो कहिले गोलो, कहिले लामो, कहिले सानो, कहिले ठूलो भइरहन्छ । एकनास रहँदैन ।

यसमा कहिले बढी दुख्ने, कहिले कम दुख्ने, कहिले शूल हुने हुन्छ । अपान वायु र दिसा रोकिन्छ । शरीरको रङ्ग कालो हुँदैजान्छ । मुख र घाँटी सुक्छ, चिसो भएर ज्वरो आउँछ । पेटको तल-माथि, दायाँ-बायाँ, टाउको र काँधमा घरी-घरी दुख्ने हुन्छ । खाएको अन्न पचेपछि दुखाई बढ्छ, खाने बित्तिकै केही कम हुन्छ । सुख्खा, तितो-टर्रो र पिरो खानेकुराले रोग बढ्छ ।

पित्तज गुल्मको निदान- पिरो, अमिलो, तातो, विदाही र रुक्ष अन्न सधैँ एवं बढी मात्रामा खानु, बढी रिसाउनु, मद्यको सेवन गर्नु, आगो-घामको बढी सम्पर्क हुनु, आमदोष बढी हुनु, चोटपटक लाग्नु, रगत दूषित हुनु यी सबै पित्तज गुल्मका कारण हुन्छन् ।

पित्तज गुल्मको लक्षण- यसमा गुल्म भएको ठाउँमा घाउजस्तै तीव्र वेदना हुन्छ, त्यहाँ छाम्दा नसहने अर्थात् अझ बढी दुख्ने हुन्छ । साथमा ज्वरो आउने, जोडले प्यास लाग्ने, शरीर गल्ने हुन्छ । मुख, शरीरको रङ्ग रातो हुन्छ, भोजन पच्ने वेलामा बढी दुख्ने गर्छ, पेटमा पोल्ने हुन्छ र पसिना बढी आउँछ । यसबाट पेटभित्र विद्रधि (घाउ) हुनसक्छ ।

कफज गुल्मको निदान- चिसो, चिल्लो र भारी (सजिलै नपच्ने) अन्न बढी खाने गर्नु, शारीरिक परिश्रम नगर्नु, दिउँसो सुत्ने बानी गर्नु यी कफज गुल्मका कारण हुन्छन् ।

कफज गुल्मको लक्षण- यसमा शरीर चिसो लुगाले ढाकेझैँ खुम्चेको हुन्छ, चिसो लागेर ज्वर आउँछ । शरीरका अङ्गहरू गल्छन् । वाकवाकी लाग्छ, अन्न रुच्दैन र शरीर भारी हुन्छ । खोकी लाग्न सक्छ । रोगीको जिउ छाम्दा चिसो हुन्छ । गुल्म भएको ठाउँमा छाम्दा कम दुख्छ र त्यो भाग साह्रो र माथि उठेको हुन्छ ।

त्रिदोषज गुल्मको कारण- वातज, पित्तज र कफज गुल्म सबैका कारणहरू मिलेको खण्डमा त्रिदोषज गुल्मका कारण बन्छन् ।

त्रिदोषज गुल्मको लक्षण– यसमा भयंकर पीडा र जलन हुन्छ । गुल्म भएको ठाउँमा ढुंगो जस्तो साह्रो र माथि उठेको हुन्छ, त्यसमा चाँडै पाक हुन्छ । यसले मन र शरीरको बल घटेर जान्छ र अग्नि पनि मन्द हुन्छ । यो असाध्य र घातक हुन्छ ।

रक्तज गुल्मको निदान– बच्चा जन्माएपछि सुत्केरी अवस्थामा, गर्भस्राव वा गर्भपात भएको वेलामा, अथवा मासिक स्राव हुने वेलामा महिलाले अपथ्य आहार-विहार सेवन गरेको खण्डमा गर्भाशयमा पुगेको कुपित वायुले रगतलाई अवरुद्ध गरी पीडा र दाहयुक्त रक्तज गुल्म उत्पन्न गर्छ । चरकको मत अनुसार योनिदोष पनि यसको कारण हुन्छ ।

रक्तज गुल्मको लक्षण– यसमा उत्पन्न गुल्म डल्लोको रूपमा यता-उति ढिलो गरी चल्ने गर्छ, त्यसमा हात-गोडा आदि अंगहरू चलाएको जस्तो अनुभव हुँदैन, गुल्मको स्थानमा शूल हुन्छ । साथमा गर्भावस्थाका लक्षणहरू पनि हुन्छन् । जस्तै - मासिक स्राव रोकिनु, मुख फुस्रो हुनु, ओठ र स्तनहरूको वरिपरि कालो हुनु, स्तनहरूमा दूध आउनु, वाकवाकी लाग्नु, शरीर गल्नु, गोडा सुनिनु, योनि तन्किनु आदि ।

रक्तज गुल्म र गर्भावस्थामा भिन्नता– गर्भवतीको पेटमा गर्भले हात-गोडा आदि अङ्गहरू चलाउँदै घुम्छ, रक्तज गुल्ममा पेटमा डल्लो आकारको वस्तु पुरै घुम्छ ।

गर्भ फर्कंदा कुनै किसिमको पीडा हुँदैन, गुल्ममा पूरै पिण्डमा शूल हुन्छ ।

गर्भको वृद्धि क्रमशः दिनदिनै हुन्छ, रक्तज गुल्म बिस्तारै बढ्छ ।

रक्तज गुल्म १० महिनापछि पनि रहन्छ, गर्भावस्था बालकको जन्म हुने बित्तिकै समाप्त हुन्छ ।

असाध्य लक्षण– जुन गुल्म क्रमशः बढेर पूरै उदर-प्रदेशमा फैलिएको हुन्छ, जुन धातुमा पुगेर आफ्नो जरो गाडेको छ, नसाहरूले घेरिएको छ, कछुवाको पिठ्यूँ जस्तै साह्रो र माथि उठेको छ, जसमा रोगी दुर्बलता, अरुचि, वाकवाकी लाग्ने, वमन हुने, खोकी, ज्वरो, प्यास र प्रतिश्यायबाट पीडित हुन्छ त्यो गुल्म असाध्य हुन्छ ।

गुल्म रोगको चिकित्सासूत्र– गुल्म रोगमा वायुको प्रकोप मुख्य कारण हुन्छ । अतः यसमा वायुको अनुलोमन र शमन हुने उपाय विशेष रूपमा गर्नुपर्छ । वायुको प्रकोप कम भएपछि अरू बाँकी दोषहरूलाई शमन गर्न सजिलो हुन्छ ।

वातज गुल्ममा वायु शमन गर्ने औषधी राखी पकाएको तेलको पान गराएपछि, त्यसको अभ्यङ्ग तथा वस्तिद्वारा स्नेहन गर्नुपर्छ । त्यसपछि स्वेदन गरेर वमन र

विरेचनद्वारा शोधन गरी अग्निदीपन हुनेउपाय गर्नुपर्छ । यसमा दूध, हर्रो र अडेरको तेल मिसाई पिउन दिएमा हित हुन्छ ।

पित्तज गुल्ममा तितो रस भएका द्रव्यहरूको कल्क र क्वाथ राखी पकाएको घिउ तथा दूध दिएर स्नेहन गर्नुपर्छ । विरेचन हुने औषधी प्रयोग गरेपछि निरुहवस्ति दिनुपर्छ । यसमा दाह, शूल, अनिद्रा, अस्थिरता, ज्वरो यी लक्षण देखिएमा गुल्म पाक्न लागेको बुझ्नुपर्छ । त्यस अवस्थामा त्यसलाई छिट्टै पकाउने कुनै उचित औषधी दिनुपर्छ र पाकेपछि अन्तर्विद्रधि (भित्री भाग) जस्तै शस्त्रकर्म आदि चिकित्सा गर्नुपर्छ ।

कफज गुल्ममा स्नेहन, स्वेदन, उपवास, वमन, विरेचन, घृतपान, क्षारको प्रयोग गर्नु उचित हुन्छ । यी सबै गर्दा पनि लाभ नभएमा रक्तमोक्षण गरेपछि अग्निकर्म गर्नुपर्छ ।

रक्तज गुल्मको चिकित्सा १० महिनापछि गर्नुपर्छ । यसमा पहिले स्नेहन र स्वेदन गरेपछि एरण्ड तेल आदि दिएर विरेचन गराउनुपर्छ । गुल्मलाई शिथिल पार्न पलासक्षारघृतको प्रयोग गर्नुपर्छ । गुल्मको भेदनका लागि दूध, गोमूत्र र क्षारसहित दशमूल क्वाथको उत्तरवस्ति दिनुपर्छ ।

गुल्मको विशेष चिकित्सा

वातज गुल्मको चिकित्सा– गुल्म नाभिभन्दा माथिको भागमा भएको खण्डमा स्नेहपान गराउनुपर्छ । त्यसका लागि त्र्यूष्णादि घृत आदि घृतहरू मण्ड वा बार्लीमा मिसाएर खान दिनुपर्छ । गुल्म नाभिभन्दा तल पक्वाशय आदिमा भएमा वस्तिद्वारा स्नेहको प्रयोग गर्नुपर्छ । माथि तल दुवैतिर फैलिएको अवस्थामा पहिले स्नेहपान गरी पछि वस्तिको प्रयोग गर्नुपर्छ । स्नेहपान र वस्तिद्वारा अग्निदीप्त भएपछि तातो, चिल्लो र पोषिलो खानेकुरा दिनुपर्छ । स्नेहन र स्वेदन गर्दा कफ वा पित्त बढेको लक्षण देखिएमा वमन वा विरेचन गराई तिनीहरूको शोधन गर्नुपर्छ ।

ठूलो हर्रोको चूर्ण र अडेरको तेल तातो दूधमा मिसाएर खान दिएमा दिसा खलास भएर वातज गुल्म नाश हुन्छ ।

खाने सोडा २ ग्राम, कुठ २ ग्राम, केतकीको जराको क्षार ४ ग्राम सबैको चूर्ण बनाई अडेरको तेलमा मिसाई पिउन दिनू । यसबाट वातज गुल्ममा अवश्य लाभ हुन्छ । (परीक्षित)

सुठो २ तोला, चितुको जराको बोक्रा ८ तोला, तिल ४ तोला, पुरानो गुड ४ तोला यी सबैलाई मसिनो गरी पिनेर ३-६ माशाको मात्रामा तातो दूधसँग पिउनाले वातज गुल्म, उदावर्त र योनिशूल नष्ट हुन्छन् । (परीक्षित)

त्र्यूषणाद्य घृत– सुठो, मरिच, पिप्ला, हर्रो, बर्रो, अमला, धनिया, वायुविडङ्ग र चितुको जरा यी प्रत्येक २–२ तोला लिएर सिलौटोमा पिनी लेदो पार्नू र ३ पाउ गाईको घिउ र ३ सेर गाईको दूधका साथ कराहीमा राखी आगोमा पकाउनू । घिउमात्र बाँकी भएपछि उतारेर छान्नू । यो घिउ पिउनाले वातज गुल्म शान्त हुन्छ ।

पित्तज गुल्मको चिकित्सा– त्रिफलाको काढासँग निशोथको चूर्ण खानाले पित्तज गुल्म शान्त हुन्छ ।

हर्रोको चूर्ण गुडमा मिसाई खाएपनि पित्तज गुल्म ठीक हुन्छ । दाख र हर्रोको काढामा गुड मिसाई सेवन गर्नाले पखाला चलेर पित्तज गुल्म नष्ट हुन्छ ।

कम्पिल्लक (सिन्दूरे)चूर्ण १ ग्राम मह वा मिश्रीमा मिसाई खानाले दिसा लागेर पित्तज गुल्म ठीक हुन्छ ।

पहिले उक्त ४ मध्ये कुनै एक औषधी दिएर दिसा लगाएपछि अरू औषधीहरू दिनुपर्छ ।

जेठीमधुको चूर्ण ३ ग्रामलाई महमा मिसाएर खाएपछि चौलानी पिउनाले पित्तज गुल्म नाश हुन्छ ।

त्रायमाणाद्य घृत– त्रायमाण १६० ग्रामलाई १० गुना (१६०० मि.लि.) पानीमा पकाउनू र ३२० मि.लि. बाँकी भएपछि उतारेर छानी राख्नू । कुठकी, मोथे, त्रायमाण, दुरालभा, अमला, क्षीरकाकोली, जीवन्ती, चन्दन, कमल यी प्रत्येक १० ग्राम लिएर पानीसँग पिनी कल्क बनाएर राख्नू । अब पहिले बनाएको काढा उक्त कल्कका साथै अमलाको रस ३२० मि.लि. गाईको दूध ३२० मि.लि. र गाईको घिउ ३२० ग्राम राखी पकाउनू । घिउमात्र बाँकी रहेपछि उतारेर छानी सफा सिसीमा राख्नू । यो घृत ६ ग्रामदेखि १२ ग्रामसम्म प्रतिदिन (दूधसँग) सेवन गर्नाले पित्तज गुल्म, रक्तपित्त, कामला र पित्त ज्वर यी रोगहरू नष्ट हुन्छन् ।

पित्तज गुल्ममा शालि चामलको भात, गाईबाखाको दूध, पर्वल, घिउ, दाख, अमला, खजूर यी सबै पथ्य हुन्छन् ।

कफज गुल्मको चिकित्सा– तिल, अडेरको बियाँ, आलस, सर्स्यू समभाग लिएर पानीसँग सिलौटामा पिनी लेदो बनाउनू र उक्त लेदोलाई फलामको भाँडामा लेपन गर्नू । यसै भाँडोलाई आगोमा तताएर कपडाले बेरेर गुल्म भएको ठाउँमा सेक्नू । यसरी स्वेदन गर्नाले कफज गुल्म खुकुलो हुन्छ । (परीक्षित)

बृहत् पञ्चमूल अर्थात् बेलको जरा, गम्मारी, गिनेरी, पाटला र टटेलोको जरा राखी पकाएको काढा पुरानो वारुणीमद्यका साथमा पिउन दिएमा कफज गुल्म नष्ट हुन्छ ।

ताजा महीमा ज्वानो र बिरे नुनको चूर्ण राखी पिउन दिएमा अग्निको दीपन हुन्छ र अपान वायु, मल एवं मूत्र सजिलै निस्कन्छन् । कफज गुल्मका रोगीले मल-मूत्र वा अधोवायु रोकिएमा यही किसिमले मही खाने गर्नुपर्छ ।

द्वन्द्वज गुल्म[1] को चिकित्सा

हिंग्वादि चूर्ण (च.द.) – हिङ, सुठो, मरिच, पिप्ला, पाठा, हाउबेर, हर्रो, कचूर, अजमोद, अजगन्धा, तिन्तिडीक, अम्लवेत, अनारदाना, पुष्करमूल, धनियाँ, जिरा, चितु, बोझो, यवक्षार, खाने सोडा, सिंधे नुन, बिरे नुन, चव्य यी सबै समभाग लिएर चूर्ण बनाउनू । यस चूर्णलाई सात पटक बिमिरोको रसले भावना दिनू । त्यसपछि एक पटक अदुवाको रसमा भावना दिनू र सिसीमा सुरक्षित राख्नू । यो चूर्ण ३-६ ग्राम मात्रामा बिहान भोजनभन्दा पहिले तातो पानीसँग खान दिनू । यसले वातकफज गुल्म रोगका साथै ग्रहणी, अर्श, हिक्का, श्वास आदि रोगहरू नष्ट गर्छ ।

गुल्म रोगनाशक अन्य योगहरू– गुल्म रोगमा वायुको शमनका लागि विभिन्न किसिमबाट स्वेदन गर्नुपर्छ । वातशामक दशमूलको काढा बोतल आदिमा भरेर त्यसले गुल्म भएको ठाउँमा सेक्न सकिन्छ । त्यसलाई कुम्भीस्वेदन भनिन्छ । अथवा इँटलाई तताएर दशमूलको काढामा चोपी त्यसले पनि सेक्न सकिन्छ । यसलाई इष्टकास्वेद भनिन्छ । यी उपायद्वारा गुल्म खुकुलो हुन्छ र दुखाई कम हुन्छ ।

हिङ, कुठ, टिमुर, हर्रो, निशोथको जरा, बिरे नुन, सिंधे नुन, यवक्षार र सुठो समभाग लिएर चूर्ण बनाउनू र घिउमा फुराएर राख्नू । यो चूर्ण २-३ ग्रामको मात्रामा जौको काढासँग खान दिनू । यसबाट शूलसहित गुल्मरोग घटेर जान्छ ।

बोझो, हर्रो, हिङ, सिंधे नुन, अम्लवेत, यवक्षार, ज्वानो यी सबैलाई समभाग लिएर कुटी छानी चूर्ण बनाउनू । यो चूर्ण ३-६ ग्राम मात्रामा तातो पानीसँग सेवन गर्न दिनू । यसको सेवनबाट शूलसहित गुल्म रोग शान्त हुन्छ र रुचि बढ्छ, जठराग्नि पनि दीप्त हुन्छ ।

शुद्ध कलमी शोरा ४ ग्राम र अदुवा ४ ग्राम दुवैलाई चूर्ण बनाई मिसाएर खानाले शूल शान्त हुन्छ ।

---

१. गुल्मका भेदहरूमा द्वन्द्वज (द्विदोषज) गुल्मको उल्लेख नभए पनि चिकित्सामा उल्लेख भएको छ । यो द्वन्द्वज गुल्मको लक्षण सम्बन्धित दुई दोषको गुल्मभन्दा फरक अर्को नभएको हुनाले भेद अन्तर्गत उल्लेख नभएको हो । त्यस्तै त्रिदोषज साध्यावस्थाको गुल्मको उल्लेख नभएपनि चिकित्साको उल्लेख भएको छ । प्रकृतिसमसमवेत किसिमको त्रिदोषज गुल्म साध्य हुन्छ ।

हिङ, अम्लवेत, बोझो, सानो हर्रो, ज्वानो, यवक्षार, सिंधे नुन, बीरे नुन सबैलाई समभाग लिएर चूर्ण बनाएर राख्नू । यो चूर्ण २-४ ग्राम मात्रामा तातो पानीसँग खान दिनू । यसबाट सबै किसिमका गुल्म, शूल आदि रोग शान्त हुन्छन् ।

सूर्यमुखीको बीज ४ तोला, खाने सोडा ४ तोला र गुड ८ तोला सबै कुटी छानी चूर्ण बनाऊ । यो चूर्ण पानीसँग खानाले सबै किसिमका शूल र गुल्म रोग नष्ट हुन्छन् । (परीक्षित)

रक्तज गुल्मको चिकित्सा – रक्त गुल्मको रोगीलाई पहिले स्नेहन र स्वेदन गरी स्नेहयुक्त विरेचन दिनुपर्छ । त्यसपछि मात्र अरू औषधी दिनुपर्छ ।

रक्तगुल्मको भेदनका लागि लशुन, त्रिकटु आदि उष्ण द्रव्य सेवन गर्न दिनुपर्छ । भेदन भैसकेपछि प्रदरनाशक चिकित्सा गर्नुपर्छ ।

गुल्मको भेदन हुँदा बढी रक्तस्राव हुन लाग्यो भने तत्काल पित्तनाशक औषधी गर्नुपर्छ ।

वायुको प्रकोपबाट पीडा भएमा वायुशामक औषधी दिनुपर्छ ।

यस गुल्ममा प्रायः कब्जियतको समस्या हुन्छ । त्यस्तो अवस्थामा अडेरको तेल २-३ तोला जति गरम दूधमा मिसाएर खुवाएमा विरेचन हुन्छ । यही स्नेहयुक्त विरेचन हो । यसबाट २-४ पटक दिसा हुन्छ ।

सनायपत्ती, हर्रो, दाख र मिश्री यी सबैको काढाले पनि दिसा खलास गर्छ ।

गुल्म भएको ठाउँमा नारायण तेलको मालिस गरेर अडेरको पात उमाली त्यसको बाफ दिनुपर्छ । अथवा माषको पिठोको रोटी बनाई त्यसलाई नारायण तैलले चिल्लो पारी गुल्ममाथि राखेर बाँध्नुपर्छ । यी क्रियाहरू गरिसकेपछि निम्नलिखित औषधीहरूमध्ये कुनै एकको सेवन गराउनुपर्छ ।

शतावरी, करञ्जको बोक्रा, देवदारु, मार्गी, पिप्ला, समभाग लिएर चूर्ण बनाउनू । त्यो चूर्ण १.५-३ ग्रामसम्मको मात्रामा तिलको काढासँग खान दिनू । रक्तगुल्मको नाश हुन्छ । (परीक्षित)

भारङ्गी, सुठो, मरिच, पिप्ला यी समभाग लिएर चूर्ण बनाउनू । यो चूर्ण ३ ग्रामसम्मको मात्रामा तिलको काढा २५ मि.लि. मा मिसाएर पिउन दिनू । यसबाट जवानीपछि रोगका कारण बन्द भएको मासिक स्राव फेरि हुन थाल्छ । (परीक्षित)

बिहानैको बखत अमलाको रस २५ मि.लि. मा मरिचको चूर्ण ३ ग्राम मिसाएर पिउनाले रक्तज गुल्मलाई नष्ट गर्छ ।

निर्मली, गन्धक, पिप्ला, हर्रो, अमलतास (राजवृक्ष)को फलको गुदी समभाग लिएर पिन्नू । यो चूर्ण सिउँडीको दूधसँग खल गरी राख्नू । यो १ ग्राम मात्रामा

लिएर महमा मिसाई चाट्न दिनू । यसले स्त्रीहरूको रक्तगुल्म र जलोदर रोगलाई नाश गर्छ । पथ्यमा दहीभात दिएर पछिबाट अमिलीको शर्बत पिउन लगाउनुपर्छ । (परीक्षित)

पलाशको क्षारको पानीसँग पकाएको घिउ पिउनाले महिलाहरूको रक्तज गुल्म तुरुन्त नाश हुन्छ । यसको निर्माणविधि यस प्रकार छ -

पलाशक्षार घृत- पलासको हाँगा काटी ल्याएर सुकाउनू र त्यसलाई बालेर खरानी पार्नू । त्यो खरानी एउटा भाँडामा दुई गुना पानी राखेर भिजेपछि घोल्नू र राखी छोड्नू । ६ घण्टापछि त्यो पानी निथारेर अर्को भाँडोमा छान्नू र तल बसेको खरानी फालिदिनू । फेरि १ घण्टापछि त्यो पानी पनि अर्को भाँडोमा छान्नू र चूल्होमा बसाली बिस्तारै पकाउनू । पानी जति सुकेपछि चुल्होबाट उतार्नू र सेलाउन दिनू । भाँडोको पींधमा जुन पदार्थ हुन्छ त्यसलाई चक्कूले खुर्केर निकाल्नू । यही पलास क्षार हो । यो क्षार ५० ग्राम, गाईको घिउ ५० ग्राम र २०० ग्राम पानी राखी आगोमा पकाउनू । जब पाक्दैजाँदा फाटेको जस्तै फींज आउँछ अथवा पानी जति सुक्छ अनि घिउ पाकेको बुझ्नू र चुल्होबाट झिकी सेलाउन दिनू । यो घिउ १२ ग्राम मात्रामा बिहान-बेलुका मिश्री मिसाई खानुपर्छ । यो घृत पिउनाले रक्तस्राव भएर रक्तज गुल्म निश्चय नै नष्ट हुन्छ ।

यस घृतको सेवनबाट बढी रक्तस्राव कमजोरी अनुभव भएमा तत्काल विलम्ब नगरी रक्तपित्त अथवा रक्तातीसारको चिकित्सा गर्नुपर्छ । जस्तै - कमलको जरा, कसेरु अथवा सिंघाडामध्ये कुनै एकको चूर्णमा केही मिश्री मिसाई चिसो पानी अथवा दूधसँग खाँदा रक्तस्राव तुरुन्त बन्द हुन्छ ।

अथवा अलिकति रसाञ्जन (चुत्रोको खोटो) दहीमा मिसाएर खान दिएपनि तत्काल रक्तस्राव बन्द हुन्छ ।

अथवा कमलकेशर र नागकेशर दुवै समभाग लिएर चूर्ण बनाउनू । यो चूर्ण (५ ग्राममा) मख्खन र मिश्री मिसाई खान दिएमा रक्तस्राव तत्काल बन्द हुनेछ ।

वायुको वृद्धि भएमा वातनाशक दशमूल आदि औषधीहरूसँग दूध पकाएर खान दिनुपर्छ । द्राक्षासव र पिप्पल्यासव पनि लाभदायक हुन्छ ।

यवक्षार, सुठो, मरिच, पिप्ला समभाग लिई चूर्ण बनाऊ । यो चूर्ण ३ ग्राम मात्रामा लिएर गाईको घिउमा मिसाएर खानाले रक्तस्राव भएर महिलाको रक्तगुल्मको नाश हुन्छ । (परीक्षित)

घिउकुमारीको रसमा केही नुन, सुठो, पिप्ला र मरिचको चूर्ण मिसाई हरेक दिन नियम पूर्वक खानाले रक्तगुल्ममा धेरै लाभ हुन्छ ।

हिंग्वादि चूर्ण ३ ग्राम मात्रामा तातो पानीसँग खानाले सबै किसिमका गुल्महरूलाई नाश गर्छ । (परीक्षित)

अन्य विशिष्ट गुल्मनाशक योगहरू

वज्रक्षार चूर्ण – समुद्री नुन, सिंधे नुन, कचिया नुन, यवक्षार, बिरे नुन, शुद्ध टंकण (स्वाग) र खाने सोडा सबै समभाग लिएर चूर्ण बनाउनू । त्यसलाई पहिले ३ दिनसम्म सिउँडीको दूधमा दिन-दिनै खल गर्दै सुकाउँदै जानू । पछि त्यसलाई आँकको दूधमा त्यसैगरी ३ पटक खल गरेर सुकाउनू । त्यसपछि डल्लो पारी आँककै पातमा बेर्नू र माटाको हाँडीमा राखी मुखमा कपडमिट्टी गरेर गजपुटमा पाक्न दिनू । आगो निभेपछि हाँडीभित्र भएको द्रव्य निकाली खलमा पिन्नू । त्यसमा सुठो, मरिच, पिप्ला, हर्रो, बर्रो, अमला, ज्वानो, जिरा र चित्रकको जराको बोक्रा सबै समभाग लिएर बनाएको चूर्ण बराबर मात्रामा मिसाई सिसीमा राख्नू । यो चूर्ण २-३ ग्राम मात्रामा बिहान-बेलुका तातो पानी वा अरू कुनै उचित अनुपानसँग सेवन गराउनू । जस्तै - वातज गुल्ममा तातो पानीसँग, पित्तज गुल्ममा घिउसँग, कफज गुल्ममा गोमूत्रसँग, त्रिदोषज गुल्ममा काँजीसँग सेवन गराउनू । उदावर्त, फियोको रोग, मन्दाग्नि र अजीर्ण समेतमा फाइदा गर्छ । (परीक्षित)

पञ्चानन रस – शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, शुद्ध निलोतुथो, शुद्ध जयपालको बियाँ, सानो पिप्ला, अमलतासको गुदी सबै १-१ तोला लिनू । पहिले पारद र गन्धक खलमा पिनेर कज्जली बनाउनू । त्यसपछि बाँकी औषधीहरूको चूर्ण त्यसमा मिसाउनू र सिउँडीको दूधमा खल गरी केराउजत्रा (२५० मि.ग्रा.) गोली पारी छायामा सुकाउनू । यो १-१ गोली अमलाको रससँग निल्नाले रक्तगुल्ममा आराम हुन्छ । (परीक्षित)

गुल्म रोगमा पथ्य कुराहरू – दिउँसोको भोजनमा पुरानो चामलको भात, सूरण (जिमीकन्द), पर्वर, भण्टा, डुम्री, करेलो, केराको फूल, कुभिण्डो, शोभाञ्जन (सहिजन), भूरा माछा, नरिवल, सिंधे नुन, तित्रा र कुखुराको मासु पथ्य हुन्छ । रातमा पूरी, रोटी, हलुवा, दूध, काँचो नरिवलको पानी, मिश्रीको शर्बत, पपिता (मेवा), पाकेको आँप आदि पाकेका फल खान दिनू । मौसम सुहाउँदो शीतल वा तातो पानीले स्नान गराउनू ।

अपथ्य – केराउ, सिमी, पिंडालु, सुकाएको साग, रुखो अन्न, बढी चिसो पानी पिउनु, मलमूत्र र अधोवायु रोक्नु, राती जागा बस्नु, शक्तिभन्दा बढी परिश्रम गर्नु यी अपथ्य हुन्छन् ।

१७. उदर रोग (पेट संबन्धी रोग)

जुन रोगमा पेटका विभिन्न अङ्गहरूमा विकृति उत्पन्न हुँदा पेटमा दुख्ने हुन्छ र पेटको आकार ठूलो हुन जान्छ त्यसलाई उदर रोग भनिन्छ ।

उदर रोगको सम्प्राप्ति – अग्नि मन्द भएको अवस्थामा दूषित अन्नहरूको सेवन र अजीर्णका कारण शरीरमा मलहरूको सञ्चय हुन थाल्छ । त्यस अवस्थामा कुपित दोषहरूले प्राण वायु, अपान वायु र जठराग्निलाई दूषित गर्छन् र स्वेदवह एवं उदकवह स्रोतहरूमा अवरोध उत्पन्न गरेर उदर रोगका कारण बन्छन् ।

सामान्य लक्षण – यसमा पेटफुल्ने, हिंड्न गाह्रो हुने, बल घट्दै जाने हुन्छ । अग्नि मन्द हुन्छ, शरीर सुनिन्छ, अङ्गहरू गल्छन्, अपान वायु र दिसा रोकिन्छ, खलास हुँदैन । शरीर पोल्ने, तन्द्रा भइरहने हुन्छ ।

उदर रोगका भेदहरू – उदर रोग ८ प्रकारका हुन्छन् –

(१) वातोदर
(२) पित्तोदर
(३) श्लेष्मोदर (कफोदर)
(४) सन्निपातोदर
(५) प्लीहोदर
(६) बद्धोदर
(७) क्षतोदर र
(८) जलोदर

(१) **वातोदरको लक्षण** – यसमा हात-गोडा र नाभिमा सुनिएको हुन्छ । जोर्नीहरू दुख्छन्, पेट, करङ, पिठ्यूँ र कम्मरमा दुख्छ । सुख्खा खोकी लाग्ने, जीउ दुख्ने, तल्लो शरीरको भाग भारी लाग्ने, मल रोकिने हुन्छ । नङ, आँखा, मुख यी काला वा मैला वा निला हुन्छन् । पेट एकाएक फुलेर जाने अथवा घटेर जाने हुन्छ । त्यसमाथि निला-पातला नसा देखिन्छन् । आँलाले हान्दा हावा भरिएको थैलो जस्तै आवाज आउँछ । पेटको चारैतिर वायु गुडगुड आवाजका साथ घुमेको अनुभव हुन्छ ।

(२) **पित्तोदरको लक्षण** – यसमा ज्वरो आउने, शरीर पोल्ने, प्यास बढी लाग्ने, मुखको स्वाद पिरो वा नमिठो हुने हुन्छ । भ्रम र अतिसार हुन्छ । छाला, नङ, मुखको रङ्ग पहेंलो हुन्छ । पेटमा हरिया, पहेंला वा तामाको जस्तो रातो वर्णका नसा देखिन्छन् । त्यसमा पसिना आउने

र छाला पोल्ने हुन्छ । स्पर्श गर्दा पेट कमलो लाग्छ । त्यो चाँडै नै जलोदरको अवस्थामा पुग्छ ।

(३) **श्लेष्मोदर (कफोदर)को लक्षण** – यसमा शरीरका अङ्गहरू गल्ने, निदाएजस्तो हुने हुन्छन् । शरीरमा शोथ र भारीपन पनि हुन्छ । निद्रा लागिरहने, वाकवाकी लाग्ने, अन्न नरुच्ने हुन्छ । श्वास र कास हुन्छ । छाला आदिको रङ्ग सेतो हुन्छ । पेट चिसो, चिल्लो, ठूलो आकारको र सेता नसाहरूले व्याप्त हुन्छ । बढेको पेट धेरै समयसम्म कायम रहन्छ । त्यहाँ छाम्दा चिसो हुन्छ र कठिन (साह्रो) हुन्छ ।

(४) **सन्निपातोदर अथवा दूष्योदरको लक्षण** – यो दूषित अन्न-पानी अथवा दूषित विषका कारण उत्पन्न हुन्छ । यसमा तीनै दोषहरूका लक्षणहरू देखिन्छन् । यो रोग चिसो हावा चलेको अथवा वर्षा भएको वेलामा बढेर आउँछ । यसले शरीर केही पहेंलो र दुब्लो हुन्छ । रोगी बढी प्यास लागेर आत्तिन्छ र मूर्च्छा पनि पर्नसक्छ ।

(५) **प्लीहोदर** – प्लीहा अर्थात् फियो बढेर पेट दुख्ने र ठूलो देखिने रोगलाई प्लीहोदर भनिन्छ । फियो पेटमा बायाँतर्फ आमाशयको माथिल्लो भाग र डायफ्रामको बीचमा हुन्छ । सामान्य स्वस्थ अवस्थामा फियो हातले छाम्न सकिन्न तर बढेको अवस्थामा करङ्मुनि बायाँतिर भेट्टाउन सकिन्छ । यसको रङ्ग बैंगनी निलो हुन्छ र यसको आकार व्यक्तिपिच्छे फरक पाइन्छ । सामान्यतया यसको लम्बाइ १२ सेन्टीमीटर, चौडाइ ७ से.मी. र २.५ से.मी. मोटो हुन्छ । यसको तौल लगभग २०० ग्राम हुन्छ । सविराम वा कम्पज्वरमा यो बढेर जान्छ । कहिलेकाहीं यो १ पौण्डसम्म हुन्छ । फियो धेरै नै बढेर गएको खण्डमा सम्बन्धित रोग कष्टसाध्य वा असाध्य हुन्छ ।

प्लीहोदरको निदान र सम्प्राप्ति

सर्स्यूको साग, गहत, माष आदि विदाही पदार्थ र भैंसीको दही आदि अभिष्यन्दी पदार्थहरूको बढी सेवन गर्नाले रगत र कफ दुवै दूषित हुन्छन् र तिनीहरूका प्लीहामा स्रोतहरूको अवरोध भएर प्लीहा बढेर आउँछ । आधुनिक चिकित्साविज्ञान अनुसार धेरै दिनसम्म ज्वरो आइरहेमा, मलेरियाको ज्वर आएमा, मलेरिया भैरहने ठाउँमा बस्ने गरेमा अथवा गुलियो र चिल्लो पदार्थको भोजन गर्नाले रक्तवृद्धि भई फियो बढ्ने हुन्छ । विभिन्न किसिमका नयाँ अथवा पुराना संक्रमणहरू, रक्तवाहिनीका रोगहरू, रगतसम्बन्धी रोगहरूको परिणामस्वरूप पनि प्लीहाको वृद्धि हुन्छ ।

प्लीहोदरको लक्षण – फियो बढेर गयो भने हल्का ज्वरो सधैँ आइरहन्छ, अथवा हरेक दिन कुनै न कुनै समय ज्वरो आउने गर्छ । अथवा १-१ दिन बिराएर जाडो लागेर ज्वरो आउँछ । फियो भएको ठाउँमा दुख्ने र पोल्ने हुन्छ । कब्जियत हुन्छ । फियो बढ्नाले आन्द्रामा त्यसको दबाब पर्छ । दम, खोकी, प्यास, वमन, कमजोरी आदि हुन्छ । मुखको स्वाद बिग्रिन्छ । आँखा र हातका नङहरू पहेंला हुन्छन् । पिसाब रातो र थोरै मात्रामा आउँछ । आँखा अगाडि अँध्यारो देखिने र मूर्च्छा आदि हुने गर्छ । फियो धेरै बढेपछि नाक र दाँतबाट रक्तस्राव हुन्छ । रक्तवमन हुन्छ । दाँतका जराहरूमा घाउ उत्पन्न हुन्छन्, आँखा र सम्पूर्ण शरीरमा शोथ हुन्छन् । पाण्डु, कामला आदि रोग लाग्छन् । प्लीहा आराम भएपछि पनि धेरैजसो मानिसहरूको मुखमा घाउ देखिन्छ ।

दोषानुसार विशेष लक्षण – प्लीहावृद्धिका साथ उदावर्त हुने, दिसा खलास नहुने, वेदना बढी भएमा वायुको प्रकोप बुझ्नुपर्छ । पित्तको प्रकोप भएमा प्यास बढी लाग्ने, रिँगटा लाग्ने, ज्वरो आउने, मूर्च्छा पर्ने हुन्छ । कफको प्रकोप भएको खण्डमा पेटमा भारीपन, कडापन हुन्छ र अन्नमा रुचि हराउँछ ।

यकृद्दाल्युदर – पेटको दायाँपट्टि यकृत् अर्थात् कलेजो बढेर आउने रोगलाई यकृद्दाल्युदर भनिन्छ । यसका लक्षणहरू प्लीहोदरसँग मिल्दाजुल्दा हुन्छन् । त्यसै भएर यसलाई छुट्टै गणना गरिएको छैन ।

(६) **बद्धगुदोदर वा बद्धोदर** – यो रोग आन्द्रामा पिच्छिल (लेसिलो) खानेकुरा, ढुंगा, रौँ आदिले बाटो छेकिएमा उत्पन्न हुन्छ । यसमा वातादि दोषहरूका साथ मल पनि आन्द्राको (ठूलो आन्द्राको) कुनै भागमा अड्किएर बढ्न थाल्छ । त्यस अवस्थामा रोगी मानिसको गुदद्वारमा मल अड्किएर बस्छ र मुस्किलले कमकम मात्रामा निस्कन्छ । छाती र नाभिको बीचको भाग माथि उठेको हुन्छ ।

(७) **क्षतोदर वा परिस्राव्युदर** – अन्नका साथ काँडा, बालुका, काँच आदि निलेको खण्डमा तिनीहरूले गएर आन्द्रामा प्वाल पार्न वा घाउ बनाउन सक्छन् । त्यस अवस्थामा गुदद्वारबाट पानीजस्तो स्राव बढी मात्रामा बारम्बार भइरहन्छन् । नाभिभन्दा तलको भाग सुन्निदै जान्छ । यसलाई परिस्राव्युदर, क्षतोदर वा छिद्रोदर पनि भनिन्छ ।

(८) **जलोदरको कारण एवं लक्षणहरू** – जुन मानिसले घिउ, तेल आदि चिल्लो पदार्थ खाने बित्तिकै, अनुवासन वस्ति दिए लगत्तै, अथवा वमन, विरेचन गराएपछि अथवा निरूह वस्ति दिएपछि तत्काल चिसो पानी पिउँछ त्यसका जलवह स्रोतहरू दूषित हुन्छन् । ती

जलवह स्रोतहरू चिल्लोले पुरिएपछि शरीरमा पानीको प्रवाह सबैतिर राम्रो हुन पाउँदैन र त्यो पानी पेटमा जम्मा हुनथाल्छ साथै जलोदर रोगको कारण बन्छ ।

जलोदर रोगको अवस्थामा पेट चिल्लो, नाभिको चारैतिर उठेको र ठूलो हुन्छ । पानीले भरिएको थैलोजस्तै तन्केको हुन्छ । पेटमा छाम्दा भित्रपट्टि पानी यताउति सरेको भान हुन्छ र गुडगुड शब्द पनि सुनिन्छ । गोडातिर पनि सुन्निएर आउँछ ।

उदर रोगको साध्यासाध्यता – सबै किसिमका उदर रोगहरू सुरुदेखि नै कष्टसाध्य हुन्छन् । तैपनि रोगी बलवान् भएमा, रोग नयाँ भएमा र पेटमा पानी नआउँदै उपचार गर्न सकेमा विशेष प्रयत्नद्वारा निको पार्न सकिन्छ । बद्धगुदोदर, छिद्रोदर र पानी जम्मा भइसकेको जलोदर यी प्रायः असाध्य हुन्छन् ।

उदर रोगको सामान्य चिकित्सा – इन्द्रजौ ४ ग्राम, शुद्ध टंकण ४ ग्राम, हिङ ४ ग्राम, शंख भस्म ४ ग्राम, पिप्ला ४ ग्राम सबैलाई चूर्ण बनाई गोमूत्रसँग पिउनाले सबै किसिमका पुराना उदर रोगहरू नष्ट हुन्छन् ।

वर्धमान पिप्पलीको विधिपूर्वक सेवन गरेमा सबै किसिमका उदर रोग शान्त हुन्छन् ।

बबूलका बोक्रा ४ पाउ (१ किलो) लिएर ८ लिटर पानीमा पकाउनू । पाकेर १ लिटर बाँकी रहेपछि छानेको काढा फेरि पकाउनू । पाकेर गाढा भएर आएपछि उतारेर जङ्गली बयर बराबरको (५०० मि.ग्रा.) गोली बनाई सुकाएर सुरक्षित राख्नू । यो १-१ गोली बिहान-बेलुका नित्य सेवन गरी माथिबाट मही पिउन दिनू । यसको सेवन गरिञ्जेल महीसँग भोजन लिनू । यसबाट जलोदर पनि नष्ट हुन्छ ।

यस रोगमा विशेष रूपमा मलको सञ्चय हुन्छ । त्यसैले सञ्चित मल निकाल्न अलिकति तातो दूध (५० मि.लि.)मा अडेरको तेल (२५ मि.लि.) मिसाएर पिउन दिनुपर्छ । गोमूत्रसँग पनि दिन सकिन्छ । यसबाट पेट सफा हुन्छ ।

यस रोगमा रोगीलाई गहुँ अथवा जौको पिठोको रोटी खान दिनु उपयुक्त हुन्छ ।

विशेष चिकित्सा

वातोदर रोग – महीमा पिप्लाको चूर्ण र सिंधे नुन मिसाएर खान दिएमा अथवा त्रिफलाको काढामा गोमूत्र मिसाई पिउन दिएमा वातोदर रोग ठीक हुन्छ । बाखाको दूध पथ्य हुन्छ ।

केवल ऊँटनीको दूध मात्र पिए पनि यो रोग नष्ट हुन्छ ।

सामुद्राद्य चूर्ण – समुद्री नुन, कालो नुन, सिंधे नुन, यवक्षार, अजमोदा, पिप्ला, चितु, सुठो, हिङ, सांभर नुन र खारा नुन समभाग लिएर कुटी छानी चूर्ण बनाउनू । यो चूर्ण ४ ग्राममा ६ ग्राम घिउ (तातो) मिसाई भोजनभन्दा पहिले पहिलो गाससँग खान दिएमा वातोदर तथा गुल्मरोग नष्ट हुन्छन् ।

लशुनाद्य तेल – ५ किलो उत्तम लशुन लिएर २५ लिटर पानीमा पकाउनू । चौथाइ (१/४) पानी बाँकी भएपछि उतारेर छानिराख्नू । अब सुठो, मरिच, पिप्ला, हर्रो, बर्रो, अमला, दन्ती, हिङ, सिंधे नुन, चितु, देवदारु, बोझो, कुठ, रातो सहिजन, पुनर्नवा, कालो नुन, वायुविडङ्ग, ठूलो पिप्पली सबै २४-२४ ग्राम लिएर, साथै निशोथ १२ ग्राम लिएर चूर्ण बनाउनू र सिलौटोमा माथिको काढासँग पिनी कल्क (लेदो) बनाउनू । अब एउटा कलईदार ठूलो भाँडामा उक्त लेदो, पहिले बनाएको लशुनको काढा र अडेरको तेल १ लिटर ५०० मि.लि. समेत राखी मन्द आँचमा पकाउनू । तेलमात्र बाँकी हुँदा उतारेर छान्नू । यो तेल नित्य बिहान ६ मि.लि. देखि २५ मि.लि.सम्म आफ्नो अग्निबल अनुसार पिउनाले उदर रोग, मूत्रकृच्छ, अन्त्रवृद्धि आदि रोगहरू एक महिनामै ठीक भएर जान्छन् ।

पित्तोदर रोग चिकित्सा – लघु पञ्चमूलका औषधीहरू (शालपर्णी, पृश्निपर्णी, बिंही, कण्टकारी, गोक्षुर) दूधमा पकाएर खान दिएमा पित्तोदर रोग शान्त हुन्छ ।

अथवा – पृश्निपर्णी, बला, कण्टकारी, लाक्षा र सुठो यी औषधीहरूलाई दूधमा पकाएर खाएमा पित्तोदर रोग शान्त हुन्छ । (परीक्षित)

अथवा – मरिच दूधमा राखी पिएको खण्डमा पित्तोदर रोग ठीक भएर जान्छ ।

कफोदर रोगको चिकित्सा – गहतको काढामा सुठो, मरिच र पिप्लाको चूर्ण मिसाई खान दिएमा कफोदर रोग शान्त हुन्छ ।

अथवा – तातो दूधमा अडेरको तेल मिसाई पिउनाले कफोदर ठीक हुन्छ ।

ज्वानु, सिंधे नुन, जिरा, सुठो, मरिच, पिप्ला यी सबैको चूर्ण बनाई ३-६ ग्राम मात्रामा महीसँग मिसाई खाएमा आराम हुन्छ ।

अडेरको तेलमा यवक्षार मिसाएर खाएमा आराम हुन्छ ।

त्रिकटु (सुठो, मरिच, पिप्ला), जिरा, ज्वानु, चितु, हाउबेर यी सबैको चूर्ण ३-६ ग्रास मात्रामा महीसँग पिउनाले कफोदर रोग शान्त हुन्छ । (परीक्षित)

सन्निपातोदर – सुठो, मरिच, पिप्ला, यवक्षार, सिंधे नुन सबैको चूर्ण मिसाई ३ ग्राम मात्रामा महीसँग पिउनाले सन्निपातोदर रोगमा आराम हुन्छ ।

रोहितक र हर्रोलाई गोमूत्रमा पिनेर पिएपछि हित हुन्छ ।

शुद्ध शिलाजीतलाई गोमूत्रमा मिसाएर पिउनाले सबै किसिमका उदर रोगहरू शान्त हुन्छन् ।

प्लीहोदर रोग – यस रोगमा रोगीको पेट सफा राख्नु जरुरी हुन्छ । सुरुको अवस्थामा जुलाफ दिन सकिन्छ । रोग पुरानो भएमा जुलाफ दिनु हानिकारक हुन्छ । यसमा सावधानी नगर्दा धेरैजसो उदर रोगको रूपमा पुग्छ । त्यस अवस्थामा आराम हुन गाह्रो पर्छ । यस्तो अवस्थामा कुनै विषमज्वरनाशक औषधी दिनुपर्छ ।

प्लीहाको रोगीमा ज्वरोको चाप भएमा प्लीहा र ज्वर दुवैमा हित गर्ने औषधी दिनुपर्छ । ज्वरो नै बढी छ भने पहिले ज्वरो घटाउने औषधी दिनू, जब ज्वरोको चाप कम हुन्छ अनि फियोसम्बन्धी औषधी दिनू ।

फियो भएको ठाउँमा दुख्छ भने दुखाई शान्त पार्ने उपाय गर्नुपर्छ । जस्तै- तातो पानीको व्यागले सेक्ने वा फलाटीन कपडाले पट्टुका बाँध्ने गर्नुपर्छ ।

मुखमा घाउ भएमा खयर पिनेर लगाउनू । अथवा - चमेलीको पात, गुर्जो, जवासा, दारुहरिद्रा, हर्रो, बर्रो, अमला यी सबै मिलाई जम्मा ५० ग्राम लिएर १ लिटर पानीमा पकाउनू । जब आधा पानी बाँकी रहन्छ छानेर सेलाउन दिनू र त्यसमा ५० ग्राम मह मिसाएर कुल्ला गर्न लगाउनू ।

पुरानो गुड र ठूलो हर्रोको चूर्ण मिसाई बलाबल अनुसार मात्रामा तातो पानीसँग खान दिएमा प्लीहा र यकृत् दुवैमा आराम हुन्छ ।

पिप्लाको चूर्ण दूधसँग खाएमा अथवा गुड र पिप्लाको चूर्ण मिसाई खाएमा अथवा ३-४ ओटा पिप्ला पानीसँग पिनेर शर्बतको रूपमा पिएमा प्लीहाको लागि रामवाण र अचूक औषधी हुन्छ ।

समुद्रको सिपीको भस्म दूधसँग खान दिएमा फियोको रोग जान्छ ।

अथवा ठूलो हर्रो र कालो नुनको चूर्ण समभाग लिएर तातो पानीसँग सेवन गर्नाले फियोको रोग शान्त हुन्छ ।

सिंधे नुनलाई पानीमा घोली आँकको पातमा दल्नू र सुक्न दिनू । ती पातहरूलाई हाँडीमा भरेर मुख बन्द गरी पूरा हाँडीलाई कपडमिट्टी गर्नू । त्यो कपडमिट्टी ४-५ तह हुनुपर्छ । हाँडी सुकेपछि त्यसलाई ३ फीट गहिरो र त्यति नै चौडाई भएको खाल्टो खनेर जङ्गली गुइँठामाथि राखी आगो बाल्नू । आगो निभेपछि हाँडी निकाली त्यसभित्रको औषधी सिसीमा राख्नू । यो औषधी १-२ ग्राम मात्रामा महमा मिसाई चाट्नाले अथवा महीमा घोलेर पिउनाले समस्त प्लीहासम्बन्धी रोगहरू आराम हुन्छन् । (परीक्षित)

पिप्ला ५० ग्राम लिएर कुनै काँचको कचौरा आदि भाँडामा राख्नू। माथिबाट पलाशको क्षार घोलेको पानी पिप्ला डुब्ने गरी भरिदिनू। त्यो भाँडो छायामा राख्नू। केही दिनपछि क्षारको पानी सुक्छ। सुकेपछि फेरि त्यही पलाशको क्षारको पानीमा पिप्ला डुबाउनू र सुक्न दिनू। यसरी सात पल्टसम्म गर्नू। त्यसपछि पिप्लालाई कुटीछानी चूर्णबनाउनू। यो चूर्ण १-२ ग्राम मात्रामा तातो पानीसँग खानाले प्लीहाको रोग, मन्दाग्नि, गुल्म रोगमा निश्चय आराम हुन्छ। (परीक्षित)

शङ्खनाभिको भस्म ४-६ ग्रामलाई २० मि.लि. विमिरोको रससँग नित्य खानाले भयङ्कर प्लीहा पनि नष्ट हुन्छ।

अपामार्गको जराको चूर्ण ४-६ ग्राम गाईको महीमा मिसाई २१ दिनसम्म पिउनाले भयङ्कर प्लीहाको रोग पनि नाश हुन्छ। (परीक्षित)

सत्यानाशी कटेरी ल्याएर सिलौटोमा पिनी कपडछान गरी स्वरस निकाल्नू। त्यो स्वरस १० मि.लि.मा १० ग्राम मह मिसाई घोल्नू र नित्य पिउन दिनू। यसबाट घोर प्लीहाको रोग १४ दिनमैं नाश हुन्छ। यो औषधी कहिल्यै फेल खाँदैन। (परीक्षित)

यकृत्को भस्म ४ रत्ती र मण्डूर भस्म १ रत्ती दुवैलाई कागतीको रसमा मिसाई सेवन गर्नाले प्लीहा र यकृत्को पीडा शान्त हुन्छ।

सानो पिप्ला ५० ग्राम लिएर गाईको दूध ५०० मि.लि.मा ७ दिनसम्म भिजाएर राख्नू र पछि निकालेर छायामा सुकाउनू। ७ दिनमा प्रत्येक दिन पहिलेको दूध फाली ताजा दूध भर्ने गर्नू। आठौँ दिन निकालेर सुकाउनू र कुटी छानी चूर्ण बनाइराख्नू। यो चूर्ण १-१ ग्राम मात्रामा बिहान र दिउँसोको भोजनपछि १-१ ग्राम महमा मिसाई चाट्न दिएमा प्लीहालाई आराम गर्दछ।

शंखभस्म २ रत्ती, कौडी भस्म १ रत्ती, मोती भस्म १ रत्ती तीनैओटा मिसाई अलिकति गाईको दूधमा मिसाएर खानाले बढेको फियो बस्छ। (परीक्षित)

मूलाको क्षार, बैंगन (भण्टा) को क्षार, यवक्षार, खाने सोडा सबै समभाग लिएर मिसाएर राख्नू। यसबाट ७५० मिलीग्राम औषधी लिएर बिहान-बेलुका मूलाको रस १० मि.लि. मा मिसाई खाने गरेमा प्लीहाको रोग शान्त भएर जान्छ। (परीक्षित)

दारुहरिद्रा (चुत्रोको बोक्रा) १२ ग्राम, कुटकी ३ ग्राम, गुर्जो ३ ग्राम, सेतो पुनर्नवा ३ ग्राम लिएर ३०० मि.लि. पानीमा पकाउनू। पाकेर चौथाई पानी शेष रहेपछि उतारेर छान्नू। चिसो भएपछि मह ६ ग्राम मिसाएर खान दिनू। बिहान-बेलुका दुवै समय यसको सेवनले यस्तो रोगीलाई पनि आराम भएको छ जसको फियो बढेर पेट दमाहाजस्तो भैसकेको थियो, शरीरमा सूजन व्याप्त भइसकेको थियो र पहेंलोपनले पूरै

पिप्ला ५० ग्राम लिएर कुनै काँचको कचौरा आदि भाँडामा राख्नू । माथिबाट पलाशको क्षार घोलेको पानी पिप्ला डुब्ने गरी भरिदिनू । त्यो भाँडो छायामा राख्नू । केही दिनपछि क्षारको पानी सुक्छ । सुकेपछि फेरि त्यही पलाशको क्षारको पानीमा पिप्ला डुबाउनू र सुक्न दिनू । यसरी सात पल्टसम्म गर्नू । त्यसपछि पिप्लालाई कुटीछानी चूर्णबनाउनू । यो चूर्ण १-२ ग्राम मात्रामा तातो पानीसँग खानाले प्लीहाको रोग, मन्दाग्नि, गुल्म रोगमा निश्चय आराम हुन्छ । (परीक्षित)

शङ्खनाभिको भस्म ४-६ ग्रामलाई २० मि.लि. विमिरोको रससँग नित्य खानाले भयङ्कर प्लीहा पनि नष्ट हुन्छ ।

अपामार्गको जराको चूर्ण ४-६ ग्राम गाईको महीमा मिसाई २१ दिनसम्म पिउनाले भयङ्कर प्लीहाको रोग पनि नाश हुन्छ । (परीक्षित)

सत्यानाशी कटेरी ल्याएर सिलौटोमा पिनी कपडछान गरी स्वरस निकाल्नू । त्यो स्वरस १० मि.लि.मा १० ग्राम मह मिसाई घोल्नू र नित्य पिउन दिनू । यसबाट घोर प्लीहाको रोग १४ दिनमैं नाश हुन्छ । यो औषधी कहिल्यै फेल खाँदैन । (परीक्षित)

यकृत्को भस्म ४ रत्ती र मण्डूर भस्म १ रत्ती दुवैलाई कागतीको रसमा मिसाई सेवन गर्नाले प्लीहा र यकृत्को पीडा शान्त हुन्छ ।

सानो पिप्ला ५० ग्राम लिएर गाईको दूध ५०० मि.लि.मा ७ दिनसम्म भिजाएर राख्नू र पछि निकालेर छायामा सुकाउनू । ७ दिनमा प्रत्येक दिन पहिलेको दूध फाली ताजा दूध भर्ने गर्नू । आठौँ दिन निकालेर सुकाउनू र कुटी छानी चूर्ण बनाइराख्नू । यो चूर्ण १-१ ग्राम मात्रामा बिहान र दिउँसोको भोजनपछि १-१ ग्राम महमा मिसाई चाट्न दिएमा प्लीहालाई आराम गर्दछ ।

शंखभस्म २ रत्ती, कौडी भस्म १ रत्ती, मोती भस्म १ रत्ती तीनैओटा मिसाई अलिकति गाईको दूधमा मिसाएर खानाले बढेको फियो बस्छ । (परीक्षित)

मूलाको क्षार, बैंगन (भण्टा) को क्षार, यवक्षार, खाने सोडा सबै समभाग लिएर मिसाएर राख्नू । यसबाट ७५० मिलीग्राम औषधी लिएर बिहान-बेलुका मूलाको रस १० मि.लि. मा मिसाई खाने गरेमा प्लीहाको रोग शान्त भएर जान्छ । (परीक्षित)

दारुहरिद्रा (चुत्रोको बोक्रा) १२ ग्राम, कुटकी ३ ग्राम, गुर्जो ३ ग्राम, सेतो पुनर्नवा ३ ग्राम लिएर ३०० मि.लि. पानीमा पकाउनू । पाकेर चौथाई पानी शेष रहेपछि उतारेर छान्नू । चिसो भएपछि मह ६ ग्राम मिसाएर खान दिनू । बिहान-बेलुका दुवै समय यसको सेवनले यस्तो रोगीलाई पनि आराम भएको छ जसको फियो बढेर पेट दमाहाजस्तो भैसकेको थियो, शरीरमा सूजन व्याप्त भइसकेको थियो र पहेंलोपनले पूरै

लिएर त्यसको बीचमा प्वाल पार्नू र त्यसमा चूर्ण भरेर मुख बन्द गरिदिनू। माथिबाट बरको पात बेरी माटोले टालिदिनू। यो माटोको लेप २ अंगुल जति मोटो हुनुपर्छ। यसलाई सुकाएपछि जङ्गली गुइँठाको आगोमा डढाउनू। जब त्यो आगोसमान रातो हुन्छ अनि आगोबाट निकाली सेलाउन दिनू। अब माटोजति फाली त्यसभित्रको चूर्ण सिसीमा सुरक्षित गरिराख्नू। यो लवणले अग्निको दीपन गर्छ र यकृत्, प्लीहाको रोग, उदर रोग एवं गुल्मको नाश गर्छ। यो चूर्ण बलाबल अनुसार १.५ ग्रामदेखि ३ ग्रामको मात्रामा दिन सकिन्छ। (परीक्षित)

शुद्ध टंकण १ भाग र रायो गेडा ३ भाग मिसाई पिनेर थोरै थोरै (२५० मि.ग्रा.) खानाले फियोको रोग नष्ट हुन्छ।

अञ्जीर ४ दानालाई सिर्का अर्थात् भिनेगरमा भिजाएर दिनदिनै बिहान खानाले फियोको रोग नष्ट हुन्छ तर अञ्जीर खाँदा बुढी आँलाले फियो भएको ठाउँमा अलि दुख्नेगरि मिच्नुपर्छ।

लशुनलाई कुटेर कपडामा राखी त्यसको रस निकाल्नू, यो रस ६ तोला (७२ मि.लि.ग्राम) जति होस्, गाईको घिउ पनि त्यति नै (७२ मि.लि. ग्राम) लिनू। त्यसमा गुड ४.५ तोला (५० ग्राम) अलिकति गहुँको पिठो मिसाएर पातलो लेदो बनाउनू। पहिले लशुनको रस खानू त्यसपछि उक्त लेदो खाइदिनू। यस औषधीले एकै दिनमा फियो बढेको नष्ट गरिदिन्छ।

शुद्ध नौसादर, शुद्ध टंकण (स्वाग), शुद्ध कलमी शोरा, मरिच सबै समभाग लिएर घिउकुमारीको रसमा मिसाएर फियोको रोगीलाई खान दिनू। दोस्रो दिन घिउकुमारी पहिलो दिनभन्दा बढी र तेस्रो दिन दोस्रो दिनभन्दा बढी यही तरिकाले सात दिनसम्म ख्वाउनू। फियोको रोग आराम हुनेछ।

१८. यकृत् रोग (कलेजो संबन्धी)

यकृत् अर्थात् कलेजो एउटा गहौं र रातो खैरो रङ्गको अंग हो। यसलाई एक प्रकारको ग्रन्थि पनि भनिन्छ। यो पेटका अंगहरूमध्ये सबभन्दा ठूलो हुन्छ। यसले दाहिनेपट्टि पेटको धेरै भागलाई समेटेको हुन्छ। यो २ ओटा नाममात्रका खण्डहरूमा विभाजित हुन्छ एउटालाई दायाँ खण्ड र अर्कोलाई बायाँ खण्ड भन्छन्। यी दुवै खण्ड आपसमा जोडिएका हुन्छन्। यसको आकार १०-१२ इञ्च सम्म लामो हुन्छ। सबैभन्दा ठूलो अंशको वजन १.५ सेरदेखि २ सेरसम्म हुन्छ। यसको मुख्य काम पित्तलाई निकाल्नू हो।

जसरी कुनै कुनै वृक्षबाट गूँद निस्कीइरहन्छ त्यही किसिमबाट यकृत्बाट थोरै थोरै मात्रामा पित्त निस्कीरहन्छ। पित्त यकृत्बाट निस्केर पित्तनली हुँदै सानो आन्द्रामा

खस्छ । त्यहाँ खाएको अन्नमा मिलेर त्यसलाई पच्न मद्दत गर्छ । मनुष्यको भोजनको अनुपातमा पित्त रातदिन निस्कीरहन्छ । यहाँसम्म कि २४ घण्टामा १५-२० छटाकसम्म निस्कन्छ । जब यसलाई खाद्यपदार्थ मिल्दैन तब यो पित्तथैलीमा जम्मा भैरहन्छ । जब त्यो थैली भरिन्छ तब त्यो बाहिर आएर आन्द्रामा जलन र वमनको कारण बन्छ । जसले धेरै दिनसम्म केही खाँदैन उसको यही हालत हुन्छ । पित्तद्वारा हामीले खाएको अन्न पच्छ र पित्तद्वारा नै हामीलाई मल त्याग्नमा सहायता मिल्छ । जसको यकृत्बाट ठीक ढंगले पित्त निस्कँदैन उनीहरूलाई नै कब्जियतको शिकायत रहन्छ ।

जसरी श्वास छोड्दा रगतको मयल फोक्सोबाट वायुका साथ बाहिर निस्केर जान्छ त्यस्तै अनेक किसिमको विकार यकृत्बाट पित्तको साथमा निस्कन्छ । जसरी श्वास रोकिएमा मानिस मर्छ त्यसरी नै यकृत्बाट पित्त बाहिर ननिस्केमा अर्थात् रगतमा मिसिएमा मानिसको मृत्यु हुनसक्छ ।

मानव शरीर प्लीहा नभएपनि काम गर्नसक्छ तर यकृत् विना काम गर्न सक्दैन । पित्तले शरीरमा स्वाभाविक गर्मी ल्याएर शरीरको रक्षा गर्छ । पित्तले नै रस धातुलाई रङ्गाएर रगत बनाउँछ ।

यकृत्सम्बन्धी रोगका कारणहरू

प्लीहारोगका जति कारणहरू लेखिएका छन् ती यकृत्सम्बन्धी रोगका कारण हुन्छन् । त्यसबाहेक मदिरासेवन, अर्शको रोग आदिबाट यकृत्मा रक्तको प्रवाहमा गडबडी भएमा यकृत् बढेर जाने वा घट्ने हुन्छ । यही यकृत्को विकार हो । यो बढेको बेलामा दाहिनेपट्टि करङ्मुनि छाम्दा थाहा पाउन सकिन्छ । स्वस्थ अवस्थामा हातले छाम्दा चाल पाउन सकिन्न ।

यकृत् विकृतिका लक्षणहरू

यकृत् बढेर गएको अथवा खुम्चेको अवस्थामा त्यहाँ दुख्ने गर्छ, मल त्याग हुँदैन अथवा पिच्च गरी थोरै मात्र हुन्छ । सारा शरीर विशेष गरी दुवै आँखा पहेँलिएर जान्छ । खोकी लाग्छ । दाहिनेपट्टि कोखामुनिका स्थान कडा भएको अनुभव हुन्छ । सियोले रोपेको जस्तै दुख्छ अथवा दाहिनेपट्टि सबै अङ्गहरूमा दुख्ने हुन्छ ।

मुखको स्वाद तितो हुन्छ, वाकवाकी लाग्छ वा वमन हुन्छ । नाडी कठिन भएर चल्छ । हरसमय ज्वरो कायम रहन्छ । प्लीहाका पनि सबै लक्षणहरू विद्यमान हुन्छन् ।

रोगी दाहिने कोल्टो सुत्न सक्तैन, दाहिने कोल्टो सुत्दा खोकीबाट बेचैन हुन्छ भने यकृत्मा खराबी भएको सम्झनुपर्छ । राजयक्ष्मामा धेरैजसो यकृत् बढ्छ । धेरै समयसम्म

यकृत्को उपचार भएन भने पाण्डु, कामला र शोथ आदि रोगहरू हुन्छन् । जब यकृत् बढेर त्यसले पूरै पेटलाई ढाक्छ त्यस अवस्थामा त्यसलाई 'यकृदुदर' रोग भनिन्छ ।

प्लीहा बढ्नु र साह्रो हुनु यी प्लीहाका २ विकार देखिन्छन् । कहिलेकाहीं प्लीहा आफ्नो स्वाभाविक आकारभन्दा सुकेर सानो पनि हुन्छ । यकृत्का विकारहरू धेरै किसिमका हुन्छन् । जस्तै - बढ्नु, सुकेर जानु, स्वाभाविक अवस्थाभन्दा सानो हुनु, पित्तसम्बन्धी अनेकथरी रोग लाग्नु, पित्तको पथरी, यकृत्शूल आदि । पित्तको अधिकताबाट यकृत् सुन्निएर रातो रङ्गको र पीडायुक्त हुन्छ । तब त्यसलाई यकृत् विद्रधि भनिन्छ । यकृत् विद्रधिको उपेक्षा गर्नाले कहिलेकाहीं पाकेर पिपयुक्त हुनजान्छ । कहिलेकाहीं प्लीहामा पनि विद्रधि हुने गर्छ ।

बच्चाहरूमा यकृत्रोग भयंकर रूपमा देखिन्छ । आहार-विहारमा गोलमाल भएर यकृत् खराब भएर जान्छ । तब आराम हुन गाह्रो हुन्छ ।

यकृत् रोगको चिकित्सा

यस रोगमा फियोको रोगको जस्तै सुरुमा पेट सफा गरिदिनुपर्छ र सदा सफा राख्नुपर्छ । प्लीहारोगमा जुन-जुन औषधीहरू प्रयोग गर्ने भनियो ती सबैजसो यसमा पनि प्रयोग गर्न सकिन्छ ।

यकृत्मा दुख्ने भयो भने तार्पिनको तेलले मालिस गरी तातो पानीले सेक्नुपर्छ अथवा गोमूत्रलाई तातो पारी बोतलमा भरेर त्यसले सेक्नुपर्छ । अथवा फलाटिन कपडाको टुक्रालाई तातो गोमूत्र वा तातो पानीमा डुबाएर सेक्ने गर्नुपर्छ । रायोको गेडाको लेप गरे पनि यकृत्लाई हित गर्छ ।

२ रत्ती नौसादर र १ रत्ती लौह भस्मलाई पिप्लाको काढा ६ माशामा मिसाई दिनमा २ पटक सेवन गराएमा यकृत्को शोथमा आराम हुन्छ ।

बेसारको धुलो (हलेदो) २ रत्ती र सिधे नुन २ रत्ती (२५० मि.ग्रा.) दुवैलाई घिउकुमारीको रस बराबर मात्रामा मिसाई दिनको २ पटक बिहान बेलुका सेवन गराउन दिएमा यकृत्को वृद्धि बन्द भएर जान्छ ।

कौडीको भस्म २ रत्ती, मण्डूर भस्म १ रत्ती, पिप्लाको चूर्ण ४ रत्ती सबलाई महमा मिसाई सेवन गर्नाले यकृत्को शोथ (सूजन) कम भएर जान्छ ।

त्रिफलाको चूर्ण २ तोला (२५ ग्राम) लाई १२ तोला २०० मि.लि. पानीमा पकाउनू जब ५० मि.लि. पानी रहन्छ उतार्नू र छानेर चिसो भएपछि त्यसमा ६ माशा (६ ग्राम) मह मिसाएर पिउनाले पित्तको अधिकताबाट भएको यकृत्को जलन शान्त भएर जान्छ ।

मूलाको रस २ तोलामा मकोयको रस मिलाएर दिनमा २-३ पटक सेवन गरेमा यकृत्को शोथ, पित्तको बाधा, कामला आदि रोग शान्त हुन्छन् ।

पिप्ला, वायुविडङ्ग र यवक्षार समभाग लिएर कुटी छानी करञ्जको पातको रसमा मिलाई खानाले यकृत् र प्लीहा दुवैका रोगहरू आराम हुन्छन् ।

यदि यकृत्को खराबीले पित्त निकै बढेको छ र आँखा, मुख, मलमूत्र आदि पहेँला छन् भने अमला, गुर्जो र हर्रोको काढा २ तोलामा मण्डूर भस्म २ रत्ती मिसाएर खान दिनू अथवा कासनी र मकोयको स्वरस २ तोलामा मह मिसाएर पिउन दिनू, आराम हुन्छ ।

यकृत् सुन्निएर आमाशयसम्म पुग्यो भने गुलवनप्सा २ तोलालाई आधा सेर (५०० मि.लि.) दूध र आधा सेर पानीमा पकाउनू । जब दूधमात्र बाँकी रहन्छ तब उतार्नू । चिसो भएपछि मह मिसाई दिनमा ४ पटक पुग्नेगरि पिउन दिनू । यसले यकृत् निकै बढेको भएपनि त्यसको शोथलाई कम पार्छ । यो औषधी विद्रधिमा पनि अत्यन्त उपयोगी छ । (परीक्षित)

यकृत् बढी मात्रामा सुन्निएर पीडा हुन लागेको छ भने त्यसमा बारंबारको आलसको पुल्टिस बाँध्नू ।

पिप्ला, पिप्लामूल, चव्य, चितु, सुठो यी सबै ४-४ माशा (४ ग्राम) लिएर ८ तोला पानीमा (१०० मि.लि.) पकाऊ । जब २ तोला पानी रहन्छ तब छान्नू । त्यसमा अलिकति यवक्षार मिसाई पिउन दिनू । यसबाट यकृत् र प्लीहाको रोगका साथ ज्वर पनि हराउँछ ।

करेलाको फल वा पातको रसमा अलिकति मह मिसाएर चाट्नाले यकृत् र प्लीहाको विकार नाश भएर जान्छ ।

१९. राजयक्ष्मा (क्षयरोग)

यसलाई क्षयरोग, शोष, राजयक्ष्मा पनि भनिन्छ । यो रोग ज्वरो, खोकी आदि रोगसँगै नथाहापाइनेगरी विस्तारै शरीरमा पस्छ । विस्तारै यो बढ्दै गएर अनेक किसिमका लक्षणहरू उत्पन्न गर्छ, अनि मात्र यसको पहिचान हुन्छ । यो रोग सुरु हुनुभन्दा पहिले केही रोगका लक्षण ज्वरो, खोकी आदि देखिन्छन् र रोग बढ्दै जाँदा अतिसार, शोथ आदि रोगहरू उपद्रवको रूपमा देखिन्छन् ।

कारण – यो चार कारणहरूबाट उत्पन्न हुन्छ – (१) मल-मूत्र आदिको वेग रोक्ने गर्नाले, (२) शोक, चिन्ता, उपवास, रुखो अन्नको सेवनद्वारा शरीरका धातुहरूको राम्रो पोषण नहुनाले, तिनीहरू घट्नाले, (३) आफ्नो शक्तिभन्दा बाहिरको कार्य

साहसपूर्वक गर्नाले, (४) समयमा नखाने, कहिले ठीक खाने, कहिले कम खाने गर्नाले ।

पूर्वरूप – क्षयरोग हुन थाल्दा सुरुमा यी लक्षणहरू देखिन्छन् – (१) श्वास रोग हुन्छ, (२) शरीरका अंगहरू दुख्ने, गल्ने हुन्छ, (३) कफको स्राव भइरहन्छ, (४) मुखभित्र तालु सुक्छ, (५) वमन हुन खोज्छ, (६) अग्नि मन्द हुन्छ, (७) नशा लागेजस्तो शरीर-मन थकित हुन्छ, (८) नाकबाट पानी बग्ने हुन्छ, (९) खोकी लाग्छ, (१०) निद्रा बढी लाग्छ । यस बाहेक पुरुष रोगीमा मासु खाने, मैथुन गर्ने चाहना बढी हुन्छ, आँखा सुखा हुन जान्छन्, शरीर शिथिल हुँदैजान्छ ।

रोगको लक्षण – रोग बढेर गएपछि रुघा खोकी विशेष रूपमा हुने, स्वरभंग (बोली बस्ने), अरुचि, करङ्हरू-काँधमा दुख्ने, खकारसँग मिसिएर वा छुट्टै रगत निस्कने, पखाला चल्ने, ज्वरो आउने यी लक्षणहरू हुन्छन् ।

प्रथम अवस्था – कुम र करङ् दुख्छन्, हत्केला र पैताला पोल्छन्, हल्का ज्वरो आउँछ ।

द्वितीय अवस्था – खानामा अत्यन्त अरुचि हुन्छ, खानेकुरा मन पर्दैन, ज्वरोका कारण शरीर तातो हुन्छ, सास फुल्छ, खोकी लागिरहन्छ, थूकमा रगत देखिन्छ, स्वर बस्छ (बोल्दा सफा आवाज आउँदैन) ।

तृतीय अवस्था – यसमा ज्वरो, खोकी, रगतको वमन र अतिसार बढी हुन्छ । यो असाध्य अवस्था हो ।

प्रथम अवस्थामा चिकित्सा गरिएमा रोग निको भएर जान्छ । द्वितीय अवस्थामा पुगेपछि राम्रो उपचार पाउँदा मुस्किलले रोगी बाँच्छ । तृतीय अवस्थामा पुगेपछि रोग असाध्य हुन्छ ।

वक्तव्य – कलेजो रोगी भएपनि मुखबाट रगत आउँछ । जब कलेजो सुन्निन्छ त्यसबेला त्यसलाई स्पर्श गर्दा दुख्छ । यदि दायाँतिर कोखामुनि थिच्दा साह्रो लाग्छ, दुख्छ र दायाँतर्फ कोल्टो फेर्दा पनि दुख्ने, खोकी लाग्ने हुन्छ भने लिवरमा पिप भरिएको हुनसक्छ । जब पुरानो ज्वरो र खोकी धेरै औषधी गर्दा पनि ठीक हुँदैन भने कलेजोको एकपल्ट अवश्य परीक्षण गराउनुपर्छ किनकि कलेजोको शोथ नभई ज्वरो र खोकी धेरै दिन रहँदैन ।

उरःक्षत – फोक्सोमा घाउ भएको अवस्थालाई उरःक्षत भनिन्छ । त्यसमा छाती बेस्सरी दुख्ने, रगतको वमन हुने, बढी खोकी लाग्ने हुन्छ । रगत, कफ, वीर्य र ओजको नाश हुन्छ । रातो रङ्को रगतले युक्त पिसाब आउँछ । कोखा, पिठ्यूँ र कम्मरमा बढी दुख्छ । श्वास अत्यन्त दुर्गन्धित हुन्छ ।

क्षयनाशक योगहरू – अर्जुनको बोक्रा, बलामूल, कपिकच्छु (काउसो) को बियाँ यी सबलाई चूर्ण बनाई दूधमा फेटेर मह, घिउ र चिनीसमेत मिसाई सेवन गर्नाले

राजयक्ष्मा र खोकीको नाश हुन्छ। यी औषधीहरू जम्मा ६ ग्राम लिएर १ पाउ जति बाख्राको दूधमा ३ ग्राम मह र ३ ग्राम चिनीसमेत मिसाई त्यसैसँग पिउनुपर्छ। (परीक्षित)

बाख्रोको दूध पिउनु, बाखाको मासु खानु, बाख्रोको दूधमा सुठो मिसाएर पिउनु, बाखा-भेडाको माझमा बस्नु हितकर हुन्छ।

स्वर्णमाक्षिक भस्म, शुद्ध शिलाजित्, लौह भस्म, वायुविडङ्ग, घिउ, मह, हर्रो यी सबैको मिश्रणलाई सेवन गर्ने पथ्यको पालन गर्ने गरेमा उग्र राजयक्ष्मा पनि आराम हुन्छ।

मख्खन अर्थात् नौनीघिउमा चिनी र मह मिसाएर खाएपछि साथै दूधसहित भोजन गर्नाले क्षयरोगको नाश हुन्छ। (परीक्षित)

घिउमा मह मिसाई चाट्ने गरेपनि क्षयको नाश हुन्छ। यसमा ६ ग्राम घिउका साथ १० ग्राम मह हुनु आवश्यक हुन्छ।

हरिण (मृग) र बाख्राको सुकुटीको चूर्ण तथा दूधको सेवन पनि हितकर हुन्छ। (परीक्षित)

पिपलको रुखको बनेको लाहा २५ ग्राम लिएर कुभिण्डोको रसमा पिन्नू र सेवन गर्न दिनू। मुखबाट रगत बग्न छोड्छ।

चव्य, सुठो, मरिच, पिप्ला, वायुविडङ्ग यी सबैको समभाग चूर्णलाई घिउ र महमा मिसाई सेवन गर्नाले निश्चय नै क्षयरोग ठीक हुन्छ।

गाईको ताजा मख्खन ६ ग्राम, मह ४ ग्राम, मिश्री ३ ग्राम, स्वर्ण भस्म १/२ रत्ती (६० मि.ग्रा.) सबलाई मिसाएर खाने गर्नाले क्षयरोग निश्चय जान्छ। यो योग कहिल्यै विफल हुँदैन।

बाख्राको दूधमा बाखाकै घिउ राखी पकाएर पिप्ला र गुडसँग सेवन गर्नाले भोक पनि बढ्छ, रोगको नाश पनि हुन्छ। (परीक्षित)

ज्वरो बराबर रहन्छ, हातखुट्टा पोल्छन्, कमजोरी निकै बढेको छ भने शरीरमा लाक्षादि तेलको मालिस गर्नुपर्छ।

जो पुरुष राजमाषलाई घिउसँग पकाएर खानेगर्छ उसको क्षय र कठिन प्रमेहको रोग नाश भएर जान्छ। (परीक्षित)

धनियाँ, सुठो, पिप्ला, दशमूल यी सबै औषधीहरू समभाग मिसाई चूर्ण बनाएर राख्नू। त्यो चूर्ण २ तोला (२५ ग्राम) लिएर २०० मि.लि. पानीमा पकाई ५० मि.लि. बाँकी भएपछि उतार्नू। यो काढा पिउन दिएमा कोखा दुख्ने, खोकी लाग्ने, ज्वरो, दाह र श्वाससहित क्षयरोग नाश हुन्छ। (परीक्षित)

सितोपलादि चूर्णलाई महसँग मिसाई चाट्नाले आराम हुन्छ। पखाला चलेको अवस्थामा साथमा अनारको शर्बत पनि पिएमा छिट्टै आराम हुन्छ। यसको

मात्रा १.५ ग्रामदेखि ३ ग्रामसम्म हुन्छ । यो सितोपलादि चूर्णमा मह ४ ग्राम, घिउ अथवा मक्खन १० ग्राम मिसाई खान दिएमा एकदम छिटो काम गर्छ । अरुचि, मन्दाग्नि, कोखा दुख्ने, हात-खुट्टा पोल्ने, कुममा पोल्ने-दुख्ने, ज्वरो, रक्तपित्त आदि उपद्रवहरू शान्त हुन्छन् । (परीक्षित)

वासावलेह – असुरोको स्वरस १/२ लिटरमा मिश्री र सानो पिप्लाको चूर्ण ५०-५० ग्राम मिसाई आगोमा मन्द आँचमा पकाउनू । बाक्लो भएर आएपछि उतार्नू । सेलाएपछि त्यसमा ५० ग्राम मह वा चातुर्जात (सुकुमेल, दालचिनी, लेजपात र नागकेशरको समभाग) चूर्ण मिसाई सिसीमा भरेर राख्नू । यसलाई १ तोला (१२ ग्राम) को मात्रामा नित्य सेवन गर्नाले कठिन श्वास, खोकी, क्षय, अल्काई आदि रोगहरू नाश हुन्छन् । (परीक्षित)

क्षय रोगमा लवङ्गादि चूर्ण, द्राक्षासव, च्यवनप्राश, राजमृगाक्त रस, महामृगाक्त रस, बसन्तमालती रस, जयमङ्गल रस, अश्वगन्धादि चूर्ण, चन्दनादि अर्क र लाक्षादि तेल सबै राम्रा औषधी हुन् ।

उरःक्षतको औषधी

धानको लावा ६ ग्राम, गाईको काँचो दूध १०० मि.लि., मह ६ ग्राम मिसाई खान दिनू । २ घण्टापछि फेरि १ पाउ (२०० मि.लि.) गाईको काँचो दूधमा मिश्री मिसाएर पिउन दिनू । यो निरन्तर सेवन गर्नाले उरःक्षत अवश्य ठीक हुन्छ ।

पिपलको रूखमा बनेको लाहा ३-६ ग्राम जति लिएर मसिनो चूर्ण बनाउनू । त्यसलाई महमा मिसाई खानाले उरःक्षतको नाश हुन्छ । कैयौँ पटक परीक्षित हो ।

रातो फिटकिरी १ ग्राम मसिनो पिनेर चिसो पानीसँग खानाले उरःक्षत तथा मुखबाट कफसहित रगत आउन बन्द हुन्छ ।

असुरोको सुकेको पात ६ ग्राम (हरियो भए १२ ग्राम) मसिनो गरी पिनेर मह मिसाई खानाले मुखबाट रगत आउनु निश्चय नै बन्द भएर जान्छ । परीक्षित हो ।

सानो मात्रामा अफीम खान दिए पनि आराम हुन्छ ।

फुलगोभी सानो टुक्रा पारी पानीमा मिचेर पिउन दिए पनि रगतको वमन रोकिन्छ ।

एलादि वटी – सुकमेलको भित्री दाना, तेजपात, दालचिनी प्रत्येक ६ ग्राम, पिप्ला २४ ग्राम, मिश्री, जेठीमधु, खजूर (छोकडा), दाख (मुनक्का) प्रत्येक ५० ग्राम सबैलाई मसिनो चूर्ण बनाई मिसाउनू र खलमा राखी मह मिसाउँदै घोट्दै गर्नू । राम्ररी घोटिएपछि ६-६ ग्राम वा १-१ ग्रामका गोली पारी सुकाएर राख्नू । यो १-१ गोली बिहान-बेलुका खाई बाखाको दूधमा मिश्री राखी पिउनू । यसबाट खोकी,

मुखबाट रगत आउने, रिँगटा लाग्ने आदि अनेक रोगहरूका साथ क्षयरोग पनि नष्ट हुन्छ । यसले वीर्य पनि बढाउँछ । यो उरःक्षतको परीक्षित औषधी हो ।

२०. श्वास रोग (दम, धम्की)

वेगका साथ छिटो-छिटो सास फेर्नुपर्ने, सास फेर्दा गाह्रो हुने रोगलाई श्वास रोग भनिन्छ । बढी मात्रामा कुपित कफका साथै कुपित प्राणवायुले प्राणवह स्रोत अर्थात् श्वासप्रणाली अन्तर्गतका श्वास नली र फोक्सोका भागहरूमा अवरोध उत्पन्न गर्दै जब फुङ्गफुसमा व्याप्त हुन पुग्छ, त्यसवेला सास लिन र छोड्न गाह्रो हुनथाल्छ र श्वासरोग उत्पन्न हुन्छ ।

श्वास रोगका कारणहरू

रुखो र सुख्खा अन्न सधैँ खानु, अथवा माषको दाल, सिमी, तिलको पिना, दही आदि कफ बढाउने कुराहरू सधैँ खानु, चिसो ठाउँमा बस्नु, चिसो पानी पिउनु, वेगहरू रोक्ने बानी गर्नु, बढी हिँड्नु यी बाहिरी कारण हुन्छन् । त्यस्तै धुलो धुवाँको सम्पर्क पनि कारण हुन्छ ।

दुर्बलता, प्राणवह स्रोत अन्तर्गतका अङ्गहरूको रोग आदि आन्तरिक कारण हुन्छन् ।

पूर्वरूप – श्वास रोग लाग्ने भएमा सुरुमा मुटु वरिपरिको भागमा र करङ्हरूमा दुख्ने हुन्छ, पेटमा हावा भरिएर फुल्ने, मुखको स्वाद नमिठो वा खल्लो लाग्ने, कञ्चटको भागमा सियोले घोचेजस्तो दुख्ने हुन्छ ।

श्वासरोगका भेदहरू – श्वासरोग महाश्वास, ऊर्ध्वश्वास, छिन्नश्वास, तमकश्वास र क्षुद्रश्वास यी पाँच किसिमको हुन्छ ।

(१) **महाश्वास** – यसमा रोगीले बेस्सरी दौडेपछि टक्क अडिएको अथवा मत्त साँढेको जस्तो श्वास लिन्छ । उसले सास फेरेको आवाज टाढैबाट सुन्न सकिन्छ । सास फेर्दा कष्ट हुन्छ । त्यस्तो हुँदाहुँदै त्यो बेहोश जस्तो हुन्छ । त्यसका आँखा चञ्चल हुन्छन्, खुला रहन्छन्, मुख पनि खुलै रहन्छ – मुखले सास फेर्छ । ऊ बोल्न सक्दैन, बोलेपनि आवाज मन्द हुन्छ । यो असाध्य हुन्छ ।

(२) **ऊर्ध्वश्वास** – यसमा रोगीले बाहिर लामो सास छोड्छ तर भित्र त्यति सास तान्न सक्तैन । त्यसको मुख र घाँटी आदि भित्री अङ्गहरूमा कफ व्याप्त हुन्छ र त्यसले गर्दा सास फेर्न गाह्रो हुन्छ । उसको दृष्टि माथितिर हुन्छ र घरिघरि यताउति हेर्ने गर्छ । सास फेर्दा कष्टका कारण उ बेहोश हुन्छ र त्यसको मुख सुक्ने, छटपटी भैरहने हुन्छ । यसरी वारंवार कष्टका साथ सास फेर्ने र मूर्च्छा पर्ने भएपछि रोगी बाँच्न सक्तैन । यो असाध्य हुन्छ ।

(३) **छिन्नश्वास** – यसमा रोगीले सास फेर्न बल गरेर पनि पूरा लिन सक्तैन । मुटु, करङ आदि मर्महरू बेसरी दुख्ने हुँदा रोकी रोकीकन अलिअलि सास फेर्छ वा केहीवेर सास रोकेर बस्छ । उसलाई बढी पसिना आउने, वस्ति प्रदेशमा (तल्लो पेट) दुख्ने, कब्जियत हुने हुन्छ । सास फेर्न लाग्दा आँखामा आँसु आउने, आँखा एकातिर रातो हुने हुन्छ । उसको मुख सुक्छ, अनुहारको रङ्ग कान्तिरहित हुन्छ । त्यो कष्टका कारण कराउने वा बर्बराउने गर्छ । यसरी रोकी रोकीकन सास फेर्ने हुनाले यसलाई छिन्नश्वास भनिन्छ । यो पनि असाध्य हुन्छ ।

(४) **तमकश्वास** – कुपित भएको वायु जब आफ्नो स्वाभाविक मार्ग छोडेर अरू उल्टो मार्गहरू अर्थात् शिर आदितिर प्राणवह स्रोतहरूबाट पुग्छ त्यस वेलामा त्यसले शिरलाई समाउँछ र कफलाई बढाई रुघा उत्पन्न गर्छ । त्यसपछि त्यही बढेको कफद्वारा प्राणवायु भित्र जाने र बाहिर निस्कने काममा अवरोध उत्पन्न गर्छ । साथै प्राणवायुको आश्रय भएको हृदयलाई कष्ट दिने, घ्यार-घ्यार आवाजसहित तीव्र वेग भएको तमकश्वास उत्पन्न गर्छ ।

यसमा रोगीको घाँटीमा बढी घ्यार-घ्यार आवाज आउँछ, सास बल लगाएर बाहिर निकाल्छ र सास लिन पनि गाह्रो हुन्छ । बारंबार धेरै खोकी लाग्ने र सास राम्ररी फेर्न गाह्रो हुनाले रोगी मूर्च्छा पर्छ । ऊ प्यासले व्याकुल र लत्रक्क गलेको हुन्छ । खोक्दाखोक्दा जबसम्म कफ निस्कन्न तबसम्म रोगी छटपटाइरहन्छ । कफ बाहिर निस्केपछि उसलाई केही वेरसम्म आराम हुन्छ । उसको घाँटी अर्थात् स्वर बस्छ र बल गरेर सास रोक्दा अलि-अलि मात्र बोल्न सक्छ ।

रोगीलाई सुत्न वा पल्टन गाह्रो हुन्छ, सुत्दा रोगले चाप्ने सास फेर्न झन् गाह्रो हुने, कोखा दुख्ने हुन्छ र रोगी सुत्न सक्तैन । उठेर बस्दा रोगीलाई केही आराम हुन्छ, त्यसै भएर छातीमा तकिया राखि बस्ने गर्छ ।

तातो पानी खाँदा, न्यानो गरी घाममा बस्दा केही आराम हुन्छ ।

रोगले चापेको बेलामा सास लिने र निकाल्ने वेलामा कष्ट भएर आँखा तन्केर बाहिर निस्कन खोजेजस्तो देखिन्छ, निधार पसिनाले भिज्छ । मुख सुकिराख्छ र घरि-घरि सास छिटो लिने हुन्छ । सास निकाल्दा फू फू आवाज आउँछ ।

आकाशमा बादल लागेको, झरी परेको, चिसो पूर्वको हावा बगेको वेलामा र कफ बढाउने चिल्लो-गुलियो आदि कुराहरू खाएको वेलामा रोग बढेर आउँछ ।

यो रोग नयाँ अवस्थामा साध्य हुन्छ । पुरानो भएपछि याप्य अर्थात् औषधी खाइञ्जेल आराम हुने, छोडेपछि फेरि चाप्ने हुन्छ ।

तमक श्वासका दुई भेद छन् – प्रतमक र सन्तमक । प्रतमक रोग धुलोको सम्पर्क, अजीर्ण, वेगहरू रोक्नु, उदावर्त रोग, शरीर पानीमा भिज्नु र वृद्धावस्था जस्ता

कारणहरूबाट हुन्छ । कफ र वायु प्रधान भएको तमक श्वासमा पित्तको पनि पछिबाट प्रकोप भएमा प्रतमक श्वास उत्पन्न हुन्छ । यसमा तमक श्वासको लक्षणका साथ ज्वरो आउने, मूर्च्छा हुने विशेष लक्षण देखिन्छ । प्रतमक श्वासमा शीतल उपचारबाट आराम हुन्छ, तातो उपचारबाट हानि हुन्छ ।

सन्तमक रोग अँध्यारो भएपछि बढ्छ र त्यसमा रोगीले आफू अन्धकारमा डुबेजस्तो अनुभव गर्छ यसमा पनि शीतल उपचार गर्दा आराम हुन्छ ।

धेरैजसो वृद्ध तथा अरू मानिसहरूलाई लाग्ने श्वास तमक श्वास नै हुन्छ ।

(५) क्षुद्र श्वास – यो श्वास रुक्ष (सुख्खा) अन्न खानु, बढी व्यायाम गर्नु जस्ता वायु प्रकोप हुने कारणहरूबाट उत्पन्न हुन्छ । यसमा छिटोछिटो सास फेर्ने समस्या भएपनि आराम गरेपछि शान्त हुन्छ । यो साध्य अवस्था हो ।

श्वास रोगको साध्यासाध्यता

रोगी बलवान् छ र उसमा महाश्वास, ऊर्ध्वश्वास अथवा छिन्न श्वास सुरु मात्र भएको छ – सबै लक्षण देखिएका छैनन् भने ती साध्य हुन्छन्, पूरा लक्षणका साथ देखिएपछि असाध्य हुन्छन् । तमक श्वास धेरैजसो कष्टसाध्य हुन्छ, रोगी कमजोर भएमा असाध्य पनि हुनसक्छ । क्षुद्र श्वास सजिलै निको हुन्छ ।

श्वास रोगको सामान्य चिकित्सा

श्वास र हिक्का यी दुवै चाँडै नै प्राण हरण गर्ने रोगहरू हुन् । अतः चाँडै नै सावधानीका साथ यी दुवैको उपचार गर्नुपर्छ । रोगको चाप परेपछि रोगीलाई आरामसाथ बसाइदिनू । अलिकति सिधेनुनको धूलो गाईको घिउमा घोटेर रोगीको छातीदेखि घाँटीसम्म मल्नू । सहन सक्ने तातो पानीमा रोगीका दुवै गोडा डुबाईराख्नू । यसले श्वासको चाप तुरुन्त घट्नेछ ।

३–४ तोला अंगूरको रसलाई तताएर पिउन दिनू । १५–२० दाना मुनक्काको बियाँ झिकेर थिच्नू र १०० मि.लि.दूध र १०० मि.लि. पानीमा राखी पकाउनू । पानी जति सुकेर दूधमात्र बाँकी भएपछि छानेर त्यसमा ४–५ ओटा मरिचको चूर्ण र १२ ग्राम मिश्रीको चूर्ण मिसाएर तातो हुँदैमा अलि–अलि गरेर चम्चाले २–३ पटक पिउन दिनू । अथवा खाली तातो पानी भएपनि खान दिनू ।

सिधे नुन, सांभर नुन, बिरे नुन, ज्वानु, स्वाग (शुद्ध टंकण) १–१ छँटाक लिएर हाँडीमा भर्नू र कपडमिट्टी गरेर सुकाउनू । १.५ फुट गहिरो र त्यति नै चौडा खाल्टो खनेर त्यसमा जङ्गली गुईठा आधा भरेर त्यसमाथि हाँडि राखिदिनू र अरू गुइँठा माथिबाट राखी आगो बाल्नू र डढ्न दिनू । आगो निभेपछि हाँडी निकाली त्यसभित्रको औषधी झिक्नू र पिनेर राख्नू । यो औषधी २–२ रत्ती मात्रामा दिनमा ३–४ पल्ट

खान दिनू । यसले कफ खुकुलो भएर निस्कन्छ । यी सबै श्वासको चाप पर्ने बित्तिकै त्यसलाई दबाउने उपाय हुन् ।

काफलको बोक्रा, अडेरको जरा, काकडासिंगी, ज्वानु, मुंगरेलो, सुठो, मरिच र पिप्ला समभाग लिएर कुटी छानी चूर्ण बनाउनू । यसलाई बिहान-बेलुका २-४ ग्रामको मात्रामा बाख्राको दूधसँग सेवन गर्नाले घोर खोकी सहित श्वास रोग नष्ट हुन्छ ।

काकडासिंगी, सुठो, सानो पिप्ला, नागरमोथा, पुष्करमूल, कचूर, मरिच समभाग लिएर कुटी छानी चूर्ण बनाउनू । यसलाई विहान-बेलुका २-४ ग्रामको मात्रामा चिनी, गुर्जो, असुरो र पञ्चमूलको काढामा मिसाई पिउनाले ७ दिनमै घोर श्वास पनि आराम हुन्छ । काढा बनाउँदा गुर्जो, असुरो र बृहत् पञ्चमूल सबै मिलाएर जम्मा २ तोला (२५ ग्राम) लिनू र ३२ तोला (४०० मि.लि.) पानीमा राखी पकाउनू । ८ तोला पानी बाँकी भएपछि छानेर त्यसमा माथि भनेको मात्रा अनुसार चूर्ण र त्यसको बराबर चिनी मिसाएर पिउन दिनू ।

भुटेको आलस ३ तोला (३६ ग्राम) र मरिच १२ ग्राम दुवैलाई कुटी छानी चूर्ण बनाउनू र राख्नू । यो चूर्ण ६ ग्राम जति मात्रामा लिएर १८ ग्राम मह मिलाई बिहान बेलुका सेवन गर्न दिनू । यसको सेवनबाट दमको रोग हराएर जान्छ । छाती र घाँटीमा जम्मा भएको कफ पनि बाहिर निस्कन्छ । (परीक्षित)

आँकको नफुलेको कोपिला २ ग्राम, सानो पिप्ला १ ग्राम, लाहोरी (सिधे) नुन १ ग्राम सबैलाई मसिनो गरी पिनेर जङ्गली बयर बराबरको (५०० मि.ग्रा.-१ ग्राम) गोली पार्नू । यो १ गोली नित्य बिहान १ पटक सेवन गर्नाले दमको रोग नष्ट हुन्छ ।

अपामार्गको क्षार[1] २ रत्तीलाई (२५० मि.ग्रा.) १ ग्राम महमा मिसाएर अथवा स्नुहीको क्षार, आँकको क्षारमध्ये कुनै एक २ रत्तीको मात्रामा महमा मिसाएर खान दिएमा दमको रोग निको हुन्छ । साथै छाती र गलाको कफ पनि पग्लेर बाहिर निस्कन्छ ।

मुण्डीको रस २५० मि.लि., असुरोको पातको रस २५० मि.लि. चिनी ५०० ग्राम, पानी १ लिटर सबलाई मिलाएर पकाउनू । जब १ सेर पानी शेष रहन्छ उतारेर

---

१. अपामार्ग आदि जुन द्रव्यको क्षार बनाउनु छ त्यसको पञ्चाङ्गलाई सुकाएर डढाउनू र खरानी पार्नू । बनेको खरानी जति भाँडामा राखी रातभरि पानीले भिजाइराख्नू । बिहान त्यस भाँडोको पानी जति बिस्तारै निथारेर कपडाले छानी यौटा भाँडामा राख्नू र त्यसलाई आगोमा पाक्न दिनू । पानी सुक्दै गएर वाक्लो दहीजस्तै भएपछि उतारेर घाममा सुक्न दिनू । सुकेपछि पनियोले कोरेर पिंधमा रहेको सेतो वा अलि पहेंलो रंगको क्षार निकाल्नू र सुरक्षित राख्नू । क्षारहरू बनाउने यो सामान्य विधि हो ।

छान्नू र बोतलमा भरेर राख्नू । यसबाट २-२ तोला (२५ मि.लि.) रस दिन-दिनै बिहान बेलुका सेवन गर्नाले दमरोग र खोकी शान्त हुन्छ ।

मुण्डीको पञ्चाङ्गलाई छायामा सुकाई पिनछान गर्नू । फेरि यसमा बराबर भाग मिश्री र गाईको घिउ मिसाएर राख्नू यो 'मुण्डी रसायन' हो । यसलाई ६-६ ग्रामको मात्रामा बिहान-बेलुका गाईको दूधसँग सेवन गर्ने तथा सेवन गरेको अवधिभर मात्र दूध र भात खाने गर्नाले आँखा खूब तेज हुन्छ । दाँतहरू बलिया हुन्छन्, केशहरू काला हुन्छन् । यसले अनेक रोगमा फाइदा गर्छ । मह वा घिउका साथ सेवन गर्नाले अझ राम्रो हुन्छ ।

काकडासिंगी, सुठो, मरिच, सानो पिप्ला, हर्रो, बर्रो, अमला, कण्टकारीको पञ्चाङ्ग, भारङ्गी, कुठ, जटामसी र पाँचै नुन सबै समभाग लिएर कुटी छानी चूर्ण बनाउनू र सुरक्षित गरी राख्नू । यो चूर्ण ३-६ ग्रामको मात्रामा बिहान-बेलुका तातो पानीसँग सेवन गर्नाले छातीबाट कफलाई निकालेर छिट्टै दमको रोग नष्ट गर्छ ।

आकरकरभादि वटी - अकरकरा, अपामार्ग, हिंग, सानो पिप्ला, भुटेको चनाको दाल १२-१२ ग्राम, शुद्ध अफिम ६ ग्राम, ल्वाँग ६ ग्राम सबलाई अलि-अलि थिचेर २४ घण्टा आँकको दूधमा भिजाइदिनू । एउटा सिउँडीको हाँगा ल्याई त्यसका टुक्रा पारी ती सबैका बीचमा प्वाल पार्नू । उक्त प्वालमा पहिले आँकमा भिजाएको औषधीहरूको मिश्रण भर्नू र मुख पात आदिले बेरी डोरीले बाँध्नू । अब त्यसलाई कपडमिट्टि गरी सुक्न दिनू । सुकेपछि सात किलो गुइँठाको आगोमा राखी पकाउनू तर औषधीलाई डढ्न नदिनू । आगो निभेर गएपछि औषधीलाई निकालेर खलमा घोट्नु र राम्ररी घोटिसकेपछि चनाबराबरको (२५० मि.ग्रा.) गोली पार्नू । यो १ गोली बिहान बेलुका सेवन गर्नाले दमको रोग जान्छ । (परीक्षित)

बिल्वादि घृत - काँचो बेलको गुदी २५० ग्राम, हर्रो १२५ ग्राम दुवै लिएर ३ लिटर पानीमा पकाउनू । ७५० मि.लि. पानी बाँकी भएपछि उतारेर कपडाले छान्नू । छानेर आएको काढासँग गाईको घिउ २५० ग्राम राखेर पकाउनू । आधाजति पानी सुकेर गएपछि त्यसमा ५० ग्रामजति कालो नुनको चूर्ण मिसाइदिनू र पकाइराख्नू । सबै पानी जति सुकेर घिउ मात्र बाँकी हुँदा छानेर एउटा सफा भाँडामा राख्नू । यो घिउ १-३ तोला (१२-३६ ग्राम) मात्रामा खान दिनू । श्वास रोग र पातलो पखालाका लागि यो घिउ अमृत जस्तै उपयोगी हुन्छ । (परीक्षित)

श्वासारि घृत - वायुविडङ्ग, ठूलो हर्रो, बर्रो, अमला, सुठो, मरिच, सानो पिप्ला, जटामसी, चितुको जराको बोक्रा १-१ छटाक (५० ग्राम) लिएर थिच्नू । फेरि त्यसलाई राती १२ सेर (लिटर) पानीमा भिजाइदिनू र भोलिपल्ट बिहान मन्दाग्निमा पकाउनू । ३ सेर जति पानी बाँकी भएपछि उतारेर कपडाले छान्नू र उक्त काढालाई

कलई लागेको कराहीमा राखी माथिबाट गाईको दूध ३ लिटर, गाईको घिउ ३ किलो र बाख्राको दूध ३ लिटर राखी मन्दाग्निमा पकाउनू । दूध र काढा डढेर घिउमात्र बाँकी हुँदा छानेर राख्नू । यसको मात्रा ६ ग्रामदेखि २४ ग्रामसम्म हुन्छ । यसको सेवन विहान बेलुका गर्नाले श्वास, खोकी, अरुचि, अल्काई, गानुगोला यी सबै नष्ट हुन्छन् । श्वास रोगको लागि यो रामबाण औषधी हो । यो घिउ खाएको लगत्तै पानी खानु हुँदैन, पान अथवा सुकमेल खान सकिन्छ । (परीक्षित)

वासक घृत – असुरोको पञ्चाङ्ग १ किलो लिएर १६ लिटर पानीमा पकाउनू । ४ लिटर पानी शेष भएपछि कपडाले कलईदार कराहीमा राखी घिउ १ किलो सँग मन्द आँचमा पकाउनू । पाक्दा-पाक्दै असुरोको फूल र जरा पनि पिनेर कल्क बनाई मिसाइदिनू । घिउमात्र बाँकी भएपछि उतारेर छानीलिनू र सुरक्षित राख्नू । यो १२-२४ ग्राम मात्रामा आधाजति मह मिसाई बिहान-बेलुका खान दिनू । श्वास रोगमा शीघ्र फाइदा गर्छ । (परीक्षित)

विभीतकावलेह – ६४० ग्राम बर्रो ल्याई त्यसको बाहिरको गुदी छुट्याई ३ लिटर बाख्राको पिसाबमा पकाउनू । गाढा भएपछि उतारी छानीलिनू र बराबर मह मिसाएर सुरक्षित गरी राख्नू । यो अवलेह १२ ग्राम मात्रामा बिहान बेलुका सेवन गरेमा श्वास र खोकी आराम भएर जान्छ ।

अदुवाको रस, प्याजको रस, लशुनको रस, घिउकुमारीको रस र मह ५०-५० ग्राम लिएर चिनीयाँ माटाको भाँडोमा भरेर कपडमट्टीद्वारा मुख बन्द गरी जमीनमा खाल्टो खनी ३ दिनसम्म गाडी दिनू । पछि निकालेर सुरक्षित राख्नू । यो औषधी ३ ग्राम मात्रामा एक महिनासम्म सेवन गर्नाले दमको रोग जरोसमेत नष्ट हुन्छ । (परीक्षित)

खसखसको दाना २०० ग्राम, पोस्ताको डोडा (अफीमको सुकेको फल) ५० ग्राम दुवैलाई रातमा एउटा माटोको भाँडामा १ लिटर पानी राखी भिजाईदिनू । बिहान दुवैलाई पिनेर त्यही पानीमा घोली कपडछान गर्नू । छानेर आएको दूधजस्तो पदार्थलाई कलईदार कराहीमा हालेर पकाउनू । गाढा हुन थालेपछि त्यसमा ६०० ग्राम मिश्री पिनेर मिसाइदिनू र पकाइराख्नू । जब बाक्लो लेदो जस्तो हुन्छ अनि जेठीमधुको चूर्ण ५० ग्राम पनि मिसाउनू र उतारी लिनू । त्यसलाई कुनै काँचको भाँडामा राखी बिर्कोले मुख बन्द गरी सुरक्षित राख्नू । यसलाई ४ ग्रामको मात्रामा बिहान-बेलुका चाट्नाले अत्यन्त बढेको श्वास तुरुन्त दबेर जान्छ । यो तत्काल फल दिने परीक्षित औषधी हो ।

१ किलो बर्रोको बोक्रालाई ३ लिटर पानीमा पकाउनू । २ लिटर पानी बाँकी हुँदा उतारेर छान्नू । त्यो काढा माटाको हाँडीमा भरेर आगोमा चढाउनू र शुद्ध निलोतुथो १ ग्राम, असुरोको क्षार १८ ग्राम, अपामार्गको क्षार १८ ग्राम यी तीनलाई

एउटा कपडामा बाँधी पोटली बनाउनू । अब हाँडीको माथि तेर्सो पारी एउटा लट्ठी राख्नू र त्यो पोटली त्यसैमा भित्र हाँडीमा पर्ने गरी झुण्ड्याइदिनू । हाँडीमा भएको काढालाई मन्द आँचमा पकाउनू । सबै पानी सुकेपछि पोटलीलाई निकालेर बेग्लै राख्नू । हाँडीको पींधमा जमेको औषधीलाई खुर्केर निकाली सुरक्षित राख्नू । यसबाट ३७५ मिलीग्राम लिएर चिनीसँग बिहान-बेलुका खान दिनू । दमरोगको रामबाण औषधी हुन्छ । (परीक्षित)

कालो धतुरोको बियाँ पहिलो दिन ५ दाना, दोस्रो दिन ६ दाना, तेस्रो दिन ७ दाना यसै किसिमले ३० दिनसम्म बढाउँदै सेवन गर्नू । ३० दिनपछि फेरि १-१ गरी घटाउँदै ल्याएर पाँचमा पुऱ्याउनू । यसरी २ महिनासम्म सेवन गर्नाले दमको रोग नष्ट भएर जान्छ । (परीक्षित)

ठूलो सीपीको भस्म अदुवाको रसमा खल गरी चनाबराबरको गोली पार्नू । यो १ गोली बिहान-बेलुका खान दिनू । दम रोगको लागि परीक्षित हो ।

आँककको जरा ३० ग्राम, ज्वानो २० ग्राम, गुड ५० ग्राम सबैलाई पिनेर जङ्गली बयर बराबरको (५०० मिलीग्राम) गोली पार्नू । दिनदिनै बिहान २ गोली सेवन गर्न दिनू । दमको रोगका लागि परीक्षित औषधी हो ।

सिउँडीको मोटो हाँगो ल्याई १ हात बराबरको टुक्रा पार्नू । त्यसलाई एकतिरबाट बीचमा प्वाल पार्नू र त्यस प्वालमा फिटकिरी ५० ग्राम राखी मुख बन्द गर्नू र कपडा-माटोले लिप्नू । सुकेपछि त्यसलाई गुइँठो बालेको आगोमा राखी पोल्नू । आगो निभेपछि भित्रको फिटकिरी निकाली सुरक्षित राख्नू । यसबाट २५० मिलीग्राम दिनदिनै पानमा राखी खाने गरेमा २० दिनमै दमको रोग निको भएर जान्छ । (परीक्षित)

आँकका छिप्पिएका पहेंला पातहरू (रूखबाट आफैं झरेका) १ किलो लिएर ती पातहरूमा चून १२ ग्राम र सिधे नुन १२ ग्राम पानीमा घोली बनाएको लेदो दुवैतिर लगाई छायामा सुकाउनू । पातहरू सुकेपछि एउटा हाँडीमा भरेर हाँडीको मुख बन्द गरी गुइँठाको आगोमा ३ घण्टासम्म पकाउनू । चिसो भएपछि हाँडीबाट भस्मलाई झिकी सुरक्षित राख्नू । यो औषधी १२५ मिलीग्राम मात्रामा पानमा राखी नित्य सेवन गर्नाले दमको रोग शान्त हुन्छ । (परीक्षित)

लोहासव – लौह भस्म, सुठो, मरिच, पिप्ला, हर्रो, बर्रो, अमला, ज्वानो, वायुविडङ्ग, नागरमोथा (मोथे), चितुको जरा प्रत्येक १६० ग्राम, घयेंरोको फूल १ किलो, मह १६० ग्राम, गुड ५ किलो, पानी २५ लिटर ६०० मि.लि. ठीक पार्नू । कुट्नुपर्ने त्रिफला आदि औषधी खस्रो चूर्ण हुने गरी कुटेर राख्नू । पानीमा मह र गुड घोली त्यसमा उक्त भस्म र चूर्णहरू मिसाउनू । त्यो सबै भित्र घिउ दलेको सफा घ्याम्पोमा भर्नू र त्यसको मुखमा ढकनी राखी कपडामाटोले लिप्नू । अब त्यसलाई

४० दिनसम्म खाल्टोमा पुरी राख्नू। यसरी आसव तयार भएपछि घ्याम्पोलाई निकाली भित्रको आसवलाई छानी काँचको बोतलहरूमा सुरक्षित गरी राख्नू। लोहासव तयार हुन्छ। यो आसव २०-३० मि.लि. मात्रामा भोजनपछि बिहान-बेलुका दुवैपटक समभाग पानीमा मिसाई सेवन गर्न दिनू। यसबाट दम, खोकी, पाण्डुरोग, ग्रहणी आदि रोगहरू शान्त हुन्छन्।

शुद्ध गन्धक ३ ग्राम, मरिचको चूर्ण ३ ग्राम दुवैको चूर्ण बनाई १२ ग्राम गाईको घिउमा घोटेर राख्नू। यो औषधी २५० मि.ग्रा. मात्रामा बिहान-बेलुका गरी १५ दिनसम्म सेवन गर्नू। यसबाट दम, खोकी आराम हुन्छ। (परीक्षित)

श्वासकुठार रस - शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, शुद्ध वत्सनाभ विष, शुद्ध टंकण, शुद्ध मनःशिला प्रत्येक १२-१२ ग्राम, मरिच १०० ग्राम, सुठो, मरिच र पिप्ला २४-२४ ग्राम ठीक पार्नू। पहिले पारद र गन्धकलाई खलमा राखी १२ घण्टासम्म घोटेर कज्जली बनाउनू। कज्जलीमा पारदको चमक हराएपछि बाँकी अरू औषधीहरूको चूर्ण पालैपालो गरी राख्दै घोट्दै जानू। यसरी १२ घण्टासम्म घोटेपछि सुरक्षित गरी राख्नू। यसबाट १ रत्ती औषधी (२५० मिलीग्राम) पानमा राखेर खान दिएमा श्वास अथवा दमको रोग नष्ट हुन्छ। यो धेरै पटक परीक्षित औषधी हो।

सूर्यावर्त रस - शुद्ध पारद १२ ग्राम, शुद्ध गन्धक ६ ग्राम दुवैलाई पहिले खलमा राखी १ दिनसम्म घोटी कज्जली बनाउनू। त्यसपछि त्यसमा घिउकुमारीको रस राखेर घोट्नू। अब १८ ग्राम जति शुद्ध तामाको पातला पत्रहरू ल्याई तिनमा उक्त कज्जलीको लेप गरेर सुकाउनू। त्यसपछि ती पत्रहरूलाई हाँडीमा राखी हाँडीको मुखमा कपडामाटोले लिप्नू र सुकाउनू। अब गुइँठा बालेको आगोमाथि त्यो हाँडी राखी पाक्न दिनू। आगो निभेपछि हाँडीमा रहेको भस्म औषधी निकाली खल गरेर राख्नू। यसको सेवनले दमको रोग नष्ट भएर जान्छ। यो औषधी १२५ मिलीग्राम मात्रामा सेवन गर्नाले वमन भएर दमको रोग नष्ट हुन्छ।

बालकहरूको श्वास रोगमा - धनियाँ र मिश्री लिएर चौलानीमा पिनी पानीमा घोल्नू। त्यो पानी छानेर बच्चाहरूलाई पिउन दिनू। खोकी र दम नष्ट हुन्छन्। (परीक्षित)

कालो जिरा केहीबेर मुखमा राखी बाहिर निकाल्नू र त्यसमा अलिकति बेसार मिसाएर बच्चालाई पिलाइदिनू। दम नष्ट भएर जान्छ। (परीक्षित)

बच्चाले आमाको दूधमात्र खान्छ र त्यस अवस्थामा दमको रोग लागेको छ भने आमालाई निम्नलिखित काढा पिउन दिनू - गुलवनप्सा (घट्टेघाँस) ६ ग्राम, जेठीमधु ४ ग्राम, आलसको बियाँ ४ ग्राम, मिश्री १२ ग्राम, बियाँ झिकेको उन्नाव ६ ग्राम सबलाई थिचेर २०० मि.लि. पानीमा पकाउनू। आधा पानी बाँकी भएपछि

छानेर आमालाई सेवन गराउनू । यो काढा बिहान-बेलुका दुवै समय आमालाई ख्वाउनाले बच्चाको दम नष्ट भएर जान्छ ।

यदि बच्चा आमाको दूधसँगै अन्न पनि खान्छ भने यही काढा १ चम्चा बच्चालाई खान दिनू । यदि बच्चा अलि ठूलो छ र अन्नमात्र खान्छ भने उसलाई यस काढाको चौथाई (२५ मि.लि.) ख्वाउनू । यदि बालक १२ वर्षको छ भने उक्त सबै औषधीहरू आधा-आधा मात्रामा लिएर काढा बनाएर ख्वाउनू ।

यदि दूधे बालकलाई सर्दी बढी छ भने आमालाई उक्त काढाका साथमा सानो पिप्लाको चूर्ण १ ग्राम र मह २ ग्राम मिसाई चटाउनू । यो योग कहिल्यै फेल खाँदैन । हजारौँ पटक परीक्षित हो ।

श्वास रोगमा पथ्य कुराहरू – श्वासको चाप शान्त भएको १-२ दिनसम्म गहुँको दलिया, साबुदाना आदि दिनू, जाउलो पनि दिन सकिन्छ । छिट्टै पच्ने सादा भोजन दिनू । पहिलो भोजनको ५ घण्टापछि मात्र अर्को भोजन दिनू । रातमा अति हल्का भोजन दिनू । रातमा भोजन पच्न गाह्रो हुनाले श्वास बढ्छ ।

२१. कास रोग (खोकी)

कारण र उत्पत्ति – धुँवा र धुलो भइरहने ठाउँमा बस्नु, रुखो अन्न सधैं खानु, भोजन गर्दा अन्नको दाना आदि श्वासनलितिर जानु र छ्यूँ वा सासको वेग रोक्नु यी कारणहरूबाट प्राणवायुका साथ उदान वायु पनि कुपित हुन्छ । एक दोष कुपित भएपछि अर्को दोषलाई कुपित पार्छ भन्ने नियम अनुसार कुपित वायुद्वारा पित्त र कफ पनि कुपित हुन्छन् । त्यस अवस्थामा फुटेको काँस (चरेस)को भाडामा बजाए जस्तो आवाज निस्कन्छ, त्यस्तै आवाज मानिसको मुखबाट निस्कन थाल्छ, त्यसलाई कास रोग भनिन्छ ।

हिक्मत अर्थात यूनानी पद्धति अन्तर्गत फोक्सोको मुखमा गर्मी हुनु यसको कारण मानिएको छ । त्यस्तै फोक्सोमा घाउ उत्पन्न हुनु, अमिलो, पिरो बढी सेवन गर्नु, श्वासवाहिनी नली निरोगी भए पनि आमाशय, फियो आदिमा दोष हुनु यी कारणहरूबाट खोकी लाग्छ । डाक्टरी अथवा एलोपैथीमा शरीरको कमजोरी, कडा मिहिनेत, चिसो लाग्नु, कडा चीज सुँघ्नु खोकीको कारण मानिएको छ ।

पूर्वरूप – खोकी लाग्न सुरु हुदाँ मुख र घाँटीमा खसखस हुने, चिलाउने हुन्छ, त्यहाँ कुनै तिखो वस्तुले कोरेजस्तो भान हुन्छ । कुनै खाने कुरा निल्न लाग्दा घाँटीमा दुख्न सक्छ र अग्नि मन्द हुन्छ ।

खोकीका भेदहरू – कास रोगका मुख्य पाँच भेद हुन्छन् -वातज,

पित्तज, कफज, क्षतज र क्षयज । दोषहरूको संसर्ग तथा अरू रोगहरूको उपद्रवका रूपमा हुने कासका अरू भेद पनि हुनसक्छन् ।

(१) वातज कासको लक्षण – यसमा कञ्चट, टाउको, मुटु, करङ्ग र पेटमा शूल हुन्छ, मुख सुक्छ र मलिन देखिन्छ, शरीरको बल र ओज कम भएर बस्छ । यसमा सुख्खा खोकी बारम्बार आइरहन्छ, कफ निस्कँदैन । घाँटी बस्छ र बोली नबुझिने हुनजान्छ । चिल्लो अमिलो, नुनिलो वा तातो कुरा खाने बित्तिकै वातज खोकी कम भएर जान्छ, तर भोजनको पाचन हुने बित्तिकै वायु फेरि बलवान् भएर आउँछ र खोकी आउन थाल्छ । यही यसको मुख्य पहिचान हो । यस्तो खोकी उचित किसिमको औषधि मिसाइ बनाएको घ्यू, तेल वा अवलेह आदि पिउने गर्नाले छिटै आराम हुन्छ । जस्तै- पिप्पल्यादि घृत ।

वातज कासको लक्षणसंग मिल्ने रोग हुपिगं कफ (Whooping cough) लहरे खोकी भन्ने हुन्छ । यो खोकी २ वर्षदेखि १६ वर्ष सम्मका बालबालिकालाई हुने गर्छ । कहिलेकाँही ठूलो मानिसलाई पनि हुन्छ । यसको खोकी धेरै बेरसम्म रहन्छ र मुखबाट अलिकति लेसिएको कफ निस्केपछि केही शान्त हुन्छ । खोकी संगै ठूलो आवाज निस्कन्छ र मुख खुल्छ ।

(२) पित्तज कासको कारण– तातो, पिरो, अमिलो र क्षारयुक्त खाने कुरा बढी मात्रामा सधै सेवन गर्ने अथवा आगो, घामको सम्पर्कमा बढी समयसम्म बस्ने मानिसलाई यो खोकी हुन्छ ।

लक्षण– यसमा घाँटी र छातीमा पोल्छ, ज्वरो आउँछ, मुख सुक्छ । मुखको स्वाद तितो हुन्छ र खुब तिर्खा लाग्छ । रोगीको शरीर पोल्ने हुन्छ । खोक्दा खोक्दै पंहेलो र पिरो खालको कफ वान्ता भएर निस्कन्छ । खोकीको वेग लगातार भैरँहदा आँखा अगाडि ताराहरू चम्केको भान हुन्छ ।

(३) कफज कासको कारण– गुलियो, चिल्लो र भारी खाना खाइरहने र परिश्रम कम गर्ने मानिसमा कफ बढेर वायुको मार्ग रोकिदिन्छ र कफज कास उत्पन्न गर्छ ।

लक्षण– यसलाई गिलो खोकी पनि भनिन्छ । यसमा मुखमा कफ भरिएको भान हुन्छ, पुरै शरीरमा पनि कफ बढेको जस्तो लाग्छ । शरीर शिथिल हुन्छ, टाउको दुख्छ । अन्नमा रुचि हुदैन, शरीर भारी लाग्छ र चिलाउने गर्छ । खोक्दैजाँदा पछि मुख बाट बाक्लो कफ निस्कन्छ । त्यस बेलामा छातीमा बढी दुख्छ ।

(४) क्षतज कासको कारण– सकी नसकी गहुंगो भारी बोक्ने, पैदल हिड्ने, अति मैथुन गर्ने व्यक्तिको छातीमा घाउ हुन्छ । त्यहाँ कुपित वायुले असर गर्दा क्षतज कास हुन जान्छ । फोक्सोमा चोट लाग्नाले अथवा सुख्खा खोकी पुरानो भएर

जानाले यो खोकी लाग्छ । जबसम्म फोक्सोमा घाउ हुँदैन त्यहाँ केवल साह्रोपन र शोथ (सुनिएको) हुन्छ । जब फोक्सोमा घाउ भएर जान्छ अनि कफसंग रगत पनि मिसिन थाल्छ र खोक्दा रगत मिसिएको कफ निस्कन्छ ।

लक्षण – यसमा घाँटी दुख्छ र खोक्ने बेलामा घ्यार घ्यार आवाज आउँछ । छातीमा सियोले रोपे झैं चसक्क दुख्ने गर्छ । छातीमा स्पर्श गर्दा दुखाई झन् बढ्छ । जोर्नीहरू दुख्ने, ज्वरो आइरहने, स्याँस्याँ हुने गर्छ । तिर्खा लागी रहन्छ, स्वर बस्छ ।

(५) क्षयज कासको कारण– बिषम[१] र असात्म्य[२] भोजन गर्नु, वेगहरू रोक्नु, अतिमैथुन, बढी चिन्ता गर्नु यी कारणहरूबाट अग्नि मन्द भएपछि तीन दोषहरू कुपित भएर क्षयज कास रोग उत्पन्न गर्छन् ।

लक्षण– रोगीले खोक्दा दुर्गन्ध आउने हरियो वा रातो रंगको पिप जस्तो कफ निस्कन्छ । खोक्दा खोक्दा मुटु नै खस्न लागे जस्तो भान हुन्छ । खाने कुरा निकै बढी खाए पनि शरीर दुब्लो नै रहन्छ । रोगीको अनुहार चिल्लो र सफा हुन्छ, आँखा र दाँत पनि राम्रा देखिन्छन् । पछि गएर पिनास हुने, ज्वरो आउने, करङ्गहरू दुख्ने हुन्छ । बिना कारण दिसा पातलो हुन्छ र स्वर पनि बस्छ ।

डाक्टरी मत– आधुनिक चिकित्सामा क्षयज कासंग मिल्दोजुल्दो किसिमको कासको वर्णन पाइन्छ । त्यसमा सुरुमा ज्वर र रुघा नभई सुख्खा खोकी लाग्छ । कफका साथ रगत मुखबाट निस्कन्छ, अथवा सफा रगत पनि निस्कन सक्छ । हत्केलाहरू ताता हुन्छन्, घाँटी खसखसाइरहन्छ, कोखा अलि दुख्ने गर्छन् । फोक्सोमाथि स्टेथिस्कोप राख्दा विशेष किसिमको स्वर निस्कन्छ । टाउको दुख्छ । भोक कम लाग्छ, कुनै काम गर्ने जाँगर हुँदैन । शरीर कमजोर हुँदै जान्छ । राती रोगले बढी चाप्छ । कपाल झर्छन् । औंलाहरूको अघिल्लो भाग मोटो भएर जान्छ । परिश्रम गर्दा खोकी बढेर जान्छ, कहिले काहीं ज्वरो पनि माथि पुग्छ । जिब्रोमा सेतो रंगको लेप जस्तो देखिन्छ । महिलालाई रोग भएमा उसको मासिक स्राव (महिनावारी) रोकिन्छ अथवा झन् बढी हुन्छ । यो रोग १२ वर्षदेखि २२ वर्षको उमेर सम्मको उमेरमा बढी हुन्छ । नङ्हरूको टुप्पो सुगाको चुच्चो जस्तै तलतिर झुकेर जान्छ । यही यस रोगको खास पहिचान हो ।

उपद्रवको रूपमा हुने कास रोग–

रुघाको खोकी– यो खोकी रुघा वा सर्दीका कारण हुन्छ । यो खोकी मुस्किलले आराम हुन्छ । वृद्धावस्थामा यस्तो खोकी भएमा निको हुन सन्देह रहन्छ ।

---

१. समयमा भोजन नगर्नु, कहिले बढी कहिले कम खानु विषम भोजन हुन्छ ।

२. आफूलाई मन नपर्ने र खादा सञ्चो नहुने भोजनलाई असात्म्य भनिन्छ ।

धातुरोगसम्बन्धी खोकी- जुन मानिसहरूको वीर्यधातुसम्म गर्मी पुग्छ तिनीहरूलाई प्रायः रुघा लागी नै रहन्छ, रुघा आराम नहुनाले खोकी भएर जान्छ। जबसम्म धातुरोग आराम हुँदैन तबसम्म रुघा पनि जाँदैन, खोकी पनि जाँदैन। किनकि रुघाको कारण घाँटीमा कफ आइरहन्छ र कफ आउनाले खोकी आइरहन्छ।

पाण्डु रोग, क्षय रोग, गुल्म (गानुगोला), अल्काई, रुघा, खोकी हुन्छ। बिफरमा कुपथ्यका कारण पनि बालकहरूमा खोकी हुनसक्छ। खोकीलाई उपेक्षा गर्नुहुँदैन, यसको छिटो औषधि गर्नुपर्छ। उपेक्षा गर्नाले धेरै हानि हुन्छ, खोकीको रोग बढ्दै जाँदा श्वास रोग (दमको रोग) लाग्छ, क्षय रोग पनि हुनसक्छ।

कास रोगमा चिकित्साको सिद्धान्त-

चिकित्सामा पहिले रोगीको उमेरको विचार गर्नुपर्छ। उसमा बल छ कि छैन ? भए कति छ ? जठराग्नि (पाचनशक्ति)को बल कत्तिको छ ? वात, पित्त, कफ, कुन दोषको अधिकता छ ? यी सबै कुरा विचार गरेर साध्य र असाध्य अवस्था पनि निर्णय गरेर मात्र चिकित्सा सुरु गर्नुपर्छ।

जुन औषधिले कफ सुकेर छातीमा जम्छ त्यस्तो औषधि दिनुहुँदैन। जुन रोगीलाई खोक्ने वेलामा कष्ट हुन्छ, छातीमा कफ जमेर घ्यार-घ्यार भइरहेको छ, कफ निस्कँदा पीडा हुन्छ उसलाई कफ सुकाउने गरम औषधि दिनहुँदैन। यस्तो अवस्थामा कफलाई मुख वा गुदद्वारबाट निकाली दिने उपाय गर्नुपर्छ। जस्तै- १०-२० ग्राम आलसको बियाँ राखी पकाएको काढामा १० ग्राम मिश्री मिसाएर खानाले केही दिन मैं कफ छुटेर निस्कन्छ। यो आलस खोकीका लागि रामबाण औषधि हो।

वातज खोकी पुरानो भएर जाँदा बढी मुस्किलले जान्छ। यस्तो अवस्थामा आलसको तेलको सेवन नगरी खोकी जाँदैन। यदि यो तेल खाउनु छ भने रोगीलाई दूध नदिनू।

६-१२ ग्राम गुड (सख्खर)लाई समान भाग तोरीको तेल मिसाई खाए पनि सुख्खा खोकी आराम भएर जान्छ। आलस अथवा तिलको काँढामा मिश्री मिसाई खाए पनि सुखा खोकी हराएर जान्छ। सुख्खा खोकीमा तेल वा तेलयुक्त औषधिले हित गर्छ।

पित्तज खोकीमा- जेठीमधुको काढा खान दिएर अथवा राजवृक्ष आदिको नरम जुलाफ दिएर पहिले पित्तलाई बाहिर निकाली दिनुपर्छ। यसमा गुलियो पदार्थले फाइदा गर्छ।

कफज खोकीमा- तातो पानीमा नुन मिसाई खान दिएर वमन गराई पहिले कफलाई निकाली दिनुपर्छ। अनि मात्र अरू औषधि दिनुपर्छ। यसमा हर्रो अथवा

मनःशिला आदिको धुवाँ पिउन दिए पनि फाइदा हुन्छ । तोरीको तेलमा सिंधे नुन मिसाई छातीमा दल्नाले छातीमा जम्मा भएको कफ उल्लो परेर छिटै निस्कन्छ । यसमा जौको पथ्यले हित गर्छ ।

क्षतज खोकीमा- बलकारक, शमन र पित्तज खोकी नाश गर्ने तथा गुलियो औषधिद्वारा चिकित्सा गर्नुपर्छ ।

क्षयज खोकी रोगीलाई मार्न प्रकट हुन्छ । बुढो र कमजोर रोगीलाई आराम हुन्छ भनी आशा नगर्नू । यो खोकी विशेषगरी सन्निपातबाट (तीनै दोष कुपित भएर) हुन्छ । अतः यसमा सन्निपातको अवस्थामा हित गर्ने चिकित्सा गर्नुपर्छ । यो खोकीमा पकाएर चिसो गरेको पानीले हित गर्छ । नपकाएको चिसो पानीले खोकी र रुघा लागेको बेलामा हानि गर्छ ।

कास रोगको सामान्य चिकित्सा-

कण्टकारीको जराको चूर्ण १ ग्राम, सानो पिप्लाको चूर्ण १ ग्राम दुवैलाई ६ ग्राम महमा मिसाएर चाट्ने गर्नाले खोकीमा आराम हुन्छ । अथवा- कण्टकारीका फूलहरूको चूर्ण १ ग्राम, पिप्लाको चूर्ण १ ग्राम दुवैलाई महमा मिसाएर चाट्नाले खोकीमा आराम हुन्छ । (परीक्षित)

काकडासिंगीलाई कुटीछानी चूर्ण बनाउनू, त्यसमा पानी राखी घोट्नू र सानो बयर जत्रो (१ ग्राम) गोली पार्नू । यो गोली १-१ ओटा बिहान-बेलुका मुखमा राखेर चुस्ने गर्नू । यो कफज खोकीका लागि रामबाण औषधि हो ।

गहुँ १० ग्राम लिएर २०० मि.ली. ग्राम जति पानीमा पकाउनू, पाक्दै जाँदा त्यसमा १-२ ग्राम सिंधे नुन पनि राख्नू । त्यो पानी एकतिहाई भाग (७० मि.ली.) जति बाँकी भएपछि उतारेर छान्नू र पिई हाल्नू । यसले ७ दिन मैं खोकी हराएर जान्छ ।

गुदद्वारमा तोरीको तेल दिनमा २-३ पटक लगाइ दिनाले सुख्खा खोकीमा रामबाण औषधिको काम गर्छ ।

असुरोको पातलाई केराको पातमा बेरेर माथिबाट माटो लिपेको कपडाले बेरी सुकाउनू र चूल्होको भुङ्ग्रोमा पकाउनू । पाकिसकेपछि भित्रको असुरोको पात झिकी त्यसको रस निचोर्नू । त्यस रस (१० मि.ली.)मा ३ ग्राम मह र १ ग्राम पिप्लाको चूर्ण मिसाई रोगीलाई चाट्न दिनू । यसबाट सबै किसिमको खोकी शान्त भएर जान्छ । (परीक्षित)

२० ग्राम असुरोको बोक्रालाई ३२० मि.ली. पानीमा पकाउनू । चौथाई पानी बाँकी भएपछि उतारेर छान्नू । त्यो सेलाएपछि त्यसमा १ ग्राम पिप्लाको चूर्ण र ४

ग्राम मह मिसाई खान दिनू । यो सबै किसिमका खोकीका लागि परीक्षित औषधि हो ।

असुरोको ताजा स्वरस ६ मि.ली. मा ६ ग्राम मह मिसाई २१ दिन चाट्नाले धातुक्षय, श्वास र खोकीको रोग अवश्य आराम हुन्छ । (परीक्षित)

असुरोको स्वरस ६ मि.ली., मह ६ ग्राम र साँभर नुन १ ग्राम तीनै थरीलाई मिसाई तताएर पिउनू । यसले ७ दिनमैं कुनै औषधिले आराम हुन नसकेको खोकी पनि आराम भएर जानेछ । लाभ कम भएमा यसमा नुनको सट्टा १ ग्राम सानो पिप्ला पिनेर मिसाई दिनू । यो सबै किसिमको खोकी, श्वास र रक्तवमनमा कहिल्यै असफल हुँदैन ।

४० ग्राम सिंधे नुनलाई आँककको दूध राखी खलमा घोट्नू र सुकाएपछि पिनेर राख्नू । यसबाट १-१ ग्राम बिहान-बेलुका सेवन गर्दा क्षय र क्षयको खोकी आराम भएर जान्छ ।

३ ग्राम हालिम (चंसुरको गेडा) पिनेर ३ ग्राम मह मिसाएर खान दिनू । यसबाट खोकी, कोखाको शूल नष्ट हुन्छ, छातीमा जमेको कफ पनि निस्कन्छ । (परीक्षित)

अदुवाको स्वरस ६ मि.ली., मह ६ ग्राम र साँभर नुन १ ग्राम मिलाई चाट्नाले सबै किसिमको खोकी विशेषगरी कफको खोकी र रुघाको खोकीमा रामबाण औषधि हुन्छ ।

काफलको बोक्राको रसलाई महमा मिसाई चाट्नाले खोकी कम भएर जान्छ । (परीक्षित)

आँककको पात १०० ओटा, धतुरोको पात १००, कालो नून २५० ग्राम यिनलाई हाँडीमा राखी त्यसलाई चुलोको आगोमा पाक्न दिनू । डढी सकेपछि निकाल्नू । यसबाट २५० मिलीग्राम जति लिएर अदुवाको रससंग खान दिनू । यसले खोकी र दमलाई आराम गर्छ ।

आलस र इस्पन्द[1] समभाग लिएर दुई गुणा महमा मिसाएर राख्नू । यसबाट नित्य १० ग्राम लिएर खाने गर्नाले वृद्धावस्थामा हुने छातीको रोग र खोकी आराम हुन्छ ।

सानो पिप्लालाई चिलिममा राखी त्यसको धुवाँ पिउनाले पुरानो खोकीलाई आराम गर्छ ।

---

१. इस्पन्द (हरमल)- Paganum Harmala Linn.

विशेष चिकित्सा–

वातज खोकीको चिकित्सा– कचूर, सानो पिप्ला, नागरमोथा, जवासा, भारंगी, काकडासिंगी सबै समभाग लिएर कुटी छानी चूर्ण बनाउनू र गुड मिसाएर राख्नू। यसबाट २ ग्राम लिएर तिलको तेलमा मिलाई बिहान-बेलुका चाट्न दिनू। तेल राम्रो नलागेमा गुड नमिसाई मह मिसाउनू। कफ नआउने सुख्खा खोकीका लागि यो रामबाण औषधि हुन्छ। (अनेकौं पटक परीक्षित)

केही बर्रोलाई घ्यूमा लटपटचाई केराको पातमा राखी बाँध्नू। त्यसलाई गाईको गोबरमा लपेट्नू र सुकाएपछि आगोमा राखी पाक्न दिनू। पाकी सकेपछि गोबर छुटचाई भित्रको बर्रो झिक्नू। उक्त बर्रोको टुक्रा हर समय मुखमा लिएर चुस्ने गर्नू। यो वातको सुख्खा खोकीका लागि रामबाण औषधि हो।

तुलसीको पात १ ग्राम, अदुवा १ ग्राम, ल्वाङ २ ग्राम, कपूर ६० मिलीग्राम सबै मिलाएर चपाई खानाले वातज खोकीमा आराम हुन्छ।

पाकेको केरामा मिश्री, मह र घ्यू मिलाएर खाएमा सुख्खा खोकी, क्षयको खोकी र रक्तपित्तमा लाभ हुन्छ। (परीक्षित)

पित्तज खोकीको चिकित्सा– बला (बलु), असुरो, कण्टकारी, बिंही, बियाँ झिकेको दाख सबै गरी जम्मा २५ ग्राम लिनू र २०० मि.ली. पानीमा पकाउनू। ५० मि.ली. जति बाँकी हुँदा छानेर सेलाउन दिनू। त्यसमा ४ ग्राम मिश्री र २ ग्राम मह मिसाएर पिउन दिनू। यो काढा बिहान-बेलुका पिउने गर्नाले पित्तको खोकी निको हुन्छ। (परीक्षित)

बियाँ झिकेको दाख, अमला र छोहडा प्रत्येक ८-८ ग्राम लिएर १०० मि.ली. पानीमा पकाउनू। एक चौथाई (२५ मि.ली.) पानी बाँकी हुँदा उतारेर छान्नू। त्यसमा ५ ओटा मरिच र आधा पिप्ला मिसाएर चाट्न दिनू। यसलाई केही दिनसम्म बिहान-बेलुका सेवन गर्नाले पित्तको खोकी निश्चय नै आराम हुन्छ। यसको सेवन गरेपछि उत्तिखेरै पानी पिउनु हुँदैन। (अनेकौं पटक परीक्षित)

बर, पिपल, डुम्रीको अङ्कुर मिसाई २०० ग्राम, बियाँ झिकेका दाख २०० ग्राम सबलाई पिनेर लेदो पार्नू। अब गाईको घ्यू १ किलो, बाख्राको दूध ४ लीटर र उक्त लेदो सबैलाई कलई भएको भाँडोमा हाली मन्द मन्द आगोमा पकाउनू। जब घ्यू मात्र बाँकी रहन्छ अनि उतारेर छानी सुरक्षित हुने गरी राख्नू। यसलाई बिहान-बेलुका ६ ग्रामदेखि २४ ग्रामसम्म एक मात्रामा खान सकिन्छ। यो पित्तको खोकीका लागि अनुभूत औषधि हो।

कण्टकारीको फूलको परागलाई मिश्रीसँग पिनेर खाएमा पित्तको खोकी आराम भएर जान्छ।

जेठीमधु, मरिच र मिश्री समभाग लिएर पिन्नू र चूर्ण बनाएर राख्नू। यसबाट ३-३ ग्राम दिनको ३-४ पटक सेवन गर्नू। पित्तको खोकीबाट मुक्ति पाइन्छ।

अलैंचीलाई आगोमा भुटेर चूर्ण बनाई मह मिसाएर चाट्न दिएमा लाभ हुन्छ।

असुरोलाई पुटपाकको विधिले पकाएर स्वरस निकाल्नू र मह मिसाएर खान दिनू। पित्त र कफको खोकी आराम हुन्छ।

कफज खोकीको चिकित्सा- कफज खोकीले छाती भारी छ र मुखमा निरन्तर कफ आउँछ भने पहिले नुन पानी खाएर बान्ता गर्नू। त्यसपछि अरू औषधिहरू सेवन गर्नू।

पुष्करमूल, काफल, भार्गी, सुठो, सानो पिप्ला सबै मिलाई जम्मा २५ ग्राम लिनू र २०० मि.ली. पानीमा काढा बनाउने विधि अनुसार चतुर्थांश (१ चौथाइ = ५० मि. लि.) बाँकी भएपछि छानेर खान दिनु। यसले कफज खोकी, छाती जकडिएको र दम भएको अवस्थामा अवश्य हित गर्छ। (परीक्षित)

अदुवाको रस २० मि. लि. मा मह ६ ग्राम मिसाएर बिहान बेलुका पिउनाले कफको खोकी, दम, रुघा र कफका अरू विकारहरूलाई नाश गर्छ। (परीक्षित)

जेठीमधु र मरिच समभाग लिएर भुट्नू र बराबर मिश्री मिसाई पानीसंग घोटेर चनाजत्रो (५०० मिलीग्राम) गोली पार्नू। यो गोली चुस्नाले कफको खोकी निको हुन्छ।

ठूलो हर्रोको फलको बोका, बर्रो, काकडासिंगी, भारगी, दालचिनी, शुद्ध (आगोमा फुराएको फिटकिरी), शुद्ध स्वाग, चितुको बोका, ल्वाङ, सिंधे नुन र सुठो सबै समभाग लिएर कुटी छानी चूर्ण बनाउनु। त्यसलाई खलमा राखी पानीसंग घोटेर सानो बयर बराबरको (१ ग्राम) गोली पार्नु। यो गोली दिनको ३-४ पटक चुस्नाले कफज खोकी शान्त हुन्छ। (परीक्षित)

केराको पात डढाएको खरानीमा नुन मिसाएर खाने गरेमा अथवा अपामार्गको खरानीमा मह मिसाएर खाने गरेमा केही दिनमै छातीको कफ निर्मूल भइ कफको खोकी ठीक भएर जान्छ। (परीक्षित)

लवङ्गादि वटी- ल्वाङ १० ग्राम, मरिच १० ग्राम,बर्रोको बोका १० ग्राम, सेतो खयर ३० ग्राम सबैलाई कुटी छानी चूर्ण बनाउनु र खलमा राखी बबुलको बोक्राको काडाका साथ घोट्नु। घोटिसकेपछि चनासमानका गोलीहरू पार्नु। यस गोलीबाट सबै किसिमको खोकी विशेष गरी कफको खोकीमा अवश्य आराम मिल्छ। यो गोली मुखमा लिएर चुस्ने गर्नुपर्छ। (परीक्षित)

आँकको पुरानो जराको बोक्रालाई जलाएर कोइला बनाउनु र पिन्नु। यसलाई अलिकति कालो नुन अथवा मह मिसाई सेवन गर्नु। यसबाट कफको खोकी र छातीको दुखाई मेटिन्छ। (परीक्षित)

पाँच थरी नुन, यवक्षार, सजिकाक्षार समभाग लिएर सिउँडीको बीचमा खाली रहेको ठाउँमा भर्नू र मुख बन्द गरी माटोमा मुछेको कपडाले लपेटेपछि सुकाउनु। त्यसलाई जंगलको गोबरगुइँठाको आगोमा पाक्न दिनू। पाकेर रातो भएपछि निकाली सेलाउन दिनु। अब भित्रको औषधीलाई निकाल्नु र सुरक्षित गरी राख्नु। यो औषधी २५० मिलीग्रामदेखि ५०० मिलीग्रामसम्म तातो पानीसंग खानाले सबै किसिमको कफको खोकी आराम भएर जान्छ।

वातकफज खोकीको चिकित्सा– तालीसपत्र १० ग्राम, मरिच २० ग्राम, सुठो ३० ग्राम, सानो पिप्ला ४० ग्राम, दालचिनी ५ ग्राम र सुकुमेल ५ ग्राम यी सबैलाई कुटी छानी चूर्ण बनाएर मिसाउनु। त्यसमा मिश्रीको चूर्ण ३२० ग्राम पनि मिसाउनु। यो तालीसादि चूर्ण तयार हुन्छ। यसबाट वातकफज खोकी आराम हुन्छ।

यस खोकीका लागि कफज खोकीमा उल्लेख भएको **लवङ्गादि वटी** रामबाण औषधि हुन्छ। (परीक्षित)

पित्तकफज खोकीको चिकित्सा– असुरोको रस २० मि. ली.मा मह ५ ग्राम मिसाई बिहान बेलुका सेवन गर्नाले आराम हुन्छ। यसमा १ ग्राम सांभर नुन मिसाई मनतातो पारेर खोकीको रोगीलाई दिएमा ५–७ दिनमै कुनै औषधिले ठीक नभएको खोकी पनि ठीक भएर जान्छ। (अनेकौं पल्ट परीक्षित)

क्षतज खोकीको चिकित्सा– मूर्वा, रसाञ्जन, चितु, पिप्ला, हलेदो, पाठा, मजिठो समभाग लिएर कुटी छानी चूर्ण बनाउनू। यो चूर्ण २–३ ग्रामको मात्रामा लिएर मह (५ग्राम) मिसाई सेवन गर्नाले क्षतज खोकी आराम हुन्छ। (परीक्षित)

यो खोकी उखुको रसमा घ्यू पकाएर खाए पनि ठीक हुन्छ। (परीक्षित)

पिप्ला, जेठीमधु, दाख, लाहा, काकडासिंगी, कुरिलो सबै १०–१० ग्राम, वंशलोचन २० ग्राम, मिश्री ३२० ग्राम सबलाई कुटी छानी चूर्ण बनाउनु। यो चूर्ण २–३ ग्रामसम्म बिहान–बेलुका घ्यू २ ग्राम र मह ३ ग्राममा मिसाएर चाट्ने गर्नाले क्षतज खोकी निको हुन्छ। (परीक्षित)

एलादि गुटिका– सुकुमेलको बियाँ, तेजपात, दालचिनी प्रत्येक ५–५ ग्राम, सानो पिप्ला २० ग्राम, मिश्री, जेठीमधु, खजुर र दाख प्रत्येक ४०–४० ग्राम ल्याई छुट्टाछुट्टै राख्नु। सुकुमेल आदि कुट्न मिल्ने द्रव्यहरू कुटी छानी चूर्ण बनाउनु।

त्यसपछि खलमा दाख र खजुर पिनी लेदो पार्नु । त्यसमा उक्त चूर्णहरू राखी घोट्नु र ५-५ ग्रामका गोली बनाएर राख्नु । यो गोली बिहान-बेलुका गाईको दूधसंग खान दिनु । यसो गर्दा क्षतज खोकी र मुखबाट रगत जाने समस्या रहँदैन । (परीक्षित)

पोस्तदाना (अफीमको बियाँ) ६० ग्राम, ईसबगोल २० ग्राम दुवैलाई १ लीटर पानीमा पकाउनु । पाकेर पानी आधा बाँकी हुँदा कपडाछान गरी कलईदार भाडामा राख्नु । अब, त्यसमा मिश्रीको धुलो १ किलो, १५ ग्राम अफीमको बियाँको चूर्ण, १५ ग्राम बबुलको गुँदको चूर्ण मिसाई आगोमा मन्द आँच दिई पकाउनु । बाक्लो भएर आएपछि उतारेर सफा सिसी आदि भाँडामा सुरक्षित गरी राख्नु । यो अवलेह १० मात्रामा नित्य चाट्ने गर्नाले क्षतज खोकी आराम भएर जान्छ । (परीक्षित)

क्षयज खोकीको चिकित्सा- असुरोको स्वरस १ लीटर, स्वर्णमाक्षिक भस्म ८० ग्राम, मिश्री ८० ग्राम, पिप्ला ८० ग्राम सबै मिलाई कलई लगाएको भाँडामा पकाउनू । जब चटनी समान भएर आउँछ अनि उतार्नू । सेलाएपछि त्यसमा ८० ग्राम मह मिसाई राखी दिनू । यो अवलेह १० ग्राम मात्रामा नित्य खानाले क्षयरोग, क्षयज खोकी, कफको विकार, हर्षा (अल्काई) यी रोग नष्ट हुन्छन् ।

द्राक्षासव- दाख १ किलो, मिश्री ४ कि., बयरको जराको बोक्रा २ कि., धयेंरोको फूल १ कि., सुपारी, ल्वाङ, जाइपत्री, जाइफल, दालचिनी, सुकुमेल, तेजपात, नागकेशर, सुठो, मरिच, पिप्ला, रुमीमस्तगी, अकरकरा र कुठ यी द्रव्यहरू प्रत्येक १००-१०० ग्राम लिएर कुट्न मिल्ने द्रव्यहरू कुटेर खस्रो धुलो पारी माटाको घ्याम्पामा राख्नू । अब यसमा सबै औषधिभन्दा ४ गुणा बढी अर्थात् ३७ लीटर जति पानी राखी चलाउनू र कपडमिट्टी गरी मुख बन्द गर्नू । १५ दिनपछि घ्याम्पोलाई खोली भित्रको मसला र पानीलाई अर्क निकाल्ने यन्त्रमा राखी अर्क निकाल्नू । त्यसपछि त्यो अर्कमा केशर २० ग्राम र कस्तूरी १ ग्राम मिसाई काँचका बोतलहरूमा भरी सुरक्षित गरी राख्नू । अर्क निकाल्ने समयमा नै केशर र कस्तूरीलाई पोको पारी अर्क खस्ने ठाउँमा राख्दा सजिलो हुन्छ । यसरी द्राक्षासव तयार हुन्छ ।

यो आसव २०-४० मि.ली. मात्रामा बिहान-बेलुका भोजनपछि बराबर पानी मिसाई खान दिनुपर्छ । साथमा सन्तुलित र पोषिलो खाने कुरा खाने गर्नुपर्छ । यसबाट हल्का नशा आउँछ । यसको सेवन गर्दा वीर्य बढ्छ, श्वास, खोकी र क्षयरोग नष्ट हुन्छ । (परीक्षित)

द्राक्षारिष्ट पनि क्षयको खोकी र उरःक्षतका लागि रामबाण औषधि हुन्छ ।

अर्जुन वृक्षको बोक्रा ल्याएर सुकाएपछि कुटीछानी चूर्ण बनाउनू । त्यसमा असुरोको रसले ७ पटक भावना दिनू र सुकाउनू । यो चूर्ण ३ ग्राममा घ्यू ५ ग्राम,

मिश्रीको धूलो ५ ग्राम र मह २.५ ग्राम मिसाएर खान दिनू । क्षयको खोकी आराम भएर जान्छ ।

गाईको दूधबाट झिकेको नौनी ६ ग्राम, मह ३ ग्राम, मिश्री ३ ग्राम, सुनको तपक १२५ मिलीग्राम सबै मिसाई सेवन गर्नाले क्षय र क्षयको खोकीलाई आराम गर्छ । यो योग पनि चुक्दैन । (परीक्षित)

पिप्ला, लाहा, कण्टकारीको पाकेको फल र पद्मक यी समान भाग लिएर कुटी छानी चूर्ण बनाई मिसाइ राख्नू । यो चूर्ण २-३ ग्राम सम्म लिई मह आधा चंचा, घ्यू १ चंचा मिसाई खाए पनि क्षयको खोकी आराम हुन्छ ।

बालकहरूको सामान्य खोकीको चिकित्सा-

काँचो स्वाग (टंकण) ६ ग्राम, आगोमा फुराई शुद्ध भएको स्वाग ६ ग्राम, मरिच १२ ग्राम सबलाई पिनेर घ्यूकुमारीको रसमा घोटी चनाबराबरको (२५० मिलीग्राम) गोली तयार पार्नू यो गोली चुसाउनाले बच्चाहरूको खोकी आराम भएर जान्छ ।

काकडासिंगी, उत्तिस, पिप्ला सबै समभाग लिएर कुटी छानी चूर्ण बनाउनू । यो चूर्ण महमा मिसाई खान दिनू । यसबाट बालकहरूको ज्वर, वमन र खोकी आराम हुन्छ । मात्रा- ५०० मि.ग्रा. -१ ग्रामसम्म । (अनेकौं पल्ट परीक्षित)

काकडासिंगी, नागरमोथा र उत्तिस (अतिविषा) समभाग लिएर कुटी छानी चूर्ण बनाउनू । यो चूर्ण १ ग्रामसम्मको मात्रामा महमा मिसाई चटाउनाले बच्चाहरूको ज्वरो, खोकी र वमनमा आराम हुन्छ । (परीक्षित)

काकडासिंगीलाई कुटी छानी चूर्ण बनाउनू । यो चूर्ण १२५ मिलीग्रामदेखि ५०० मिलीग्रामसम्म लिएर महमा मिसाई बालकलाई चटाउनू । बालकहरूको कफको खोकी र घ्यार-घ्यार हुने हराएर जान्छ । बालक पनि पुष्ट हुन्छ । (परीक्षित)

एउटा ठूलो दाख लिएर बीचको बियाँ निकालीदिनू र त्यसमा १२५ ग्राम दालचिनीको चूर्ण र १२५ ग्राम काकडासिंगीको चूर्ण भर्नू र बालकलाई ख्वाइदिनू । यसरी बालकलाई नित्य ख्वाउनाले सबै किसिमको खोकी र घ्यार-घ्यार हुने समस्या हराउँछ । यो औषधि सबभन्दा बढी गुणकारी छ । (परीक्षित)

नागरमोथा (मोथे) र जेठीमधु (बोक्रा झिकेको) समभाग लिएर कुटी छानी चूर्ण बनाउनू । यो चूर्ण ५०० मिलीग्राम जति लिएर मह र आमाको दूधमा मिसाई दूध खाने बच्चालाई चटाउनू । खोकी आराम हुन्छ । (परीक्षित)

बालकहरूको लहरेखोकी- यसको २-३ अवस्था हुन्छन् । पहिलो अवस्था ८-१० दिनसम्म रहन्छ । यसमा अलि अलि ज्वरो पनि रहन्छ र सुख्खा खोकी चल्छ ।

खोक्दा खोक्दा बच्चाको मुखको रंग नै फेरिन्छ । दोस्रो अवस्थामा पहिले जस्तो खोकी हुँदैन । खोकी सुरु भएपछि जबसम्म कफ निस्कँदैन वा वमन हुँदैन, तबसम्म बालक बिल्कुल बेचैन हुन्छ । यस अवस्थामा बालकको आँखा रातो भएर आउँछ । कसैको नाकबाट रगत आउँछ र कसैको वमनमा पनि रगत देखिन्छ । कफ निस्केपछि चैन भएर आउँछ । यो रोग मियादी हुन्छ । कसैलाई ४५ दिन, कसैलाई ९० दिन र कसैलाई यसभन्दा बढी समयसम्म यसले दुःख दिन्छ । कैयन बालकहरू टाउकोमा रगत जम्मा भएर मूर्च्छा पनि पर्छन् । रोग पुरानो भएर जाँदा शरीरमा दाह, ज्वरो आदि उपद्रवहरू पनि हुन्छन् । १ वर्ष भन्दा कम उमेरका बालकहरू क्षीण भएर मर्न सक्छन् । यसैले रोगको अवस्था अनुसार यसको छिटै चिकित्सा गर्नुपर्छ ।

लहरेखोकीको चिकित्सा- मदिसे सुप, जेठीमधुको सत्त्व, दाख, आगोमा भुटेको सुकुमेलको बियाँ प्रत्येक समभाग लिएर कुटी छानी चूर्ण बनाउनू । यो चूर्ण महमा मिसाई बालकलाई चटाउनू । यसबाट लहरेखोकी कम भएर जान्छ । यो चूर्ण १२५ मिलीग्राम लिएर १ ग्राम महका साथ मिसाउनुपर्छ । यसो गर्दा कफ सजिलोसित निस्कन्छ र खोकीको पीडा शान्त हुन्छ ।

गाईको घ्यू १ चंचामा अदुवाको रस २ चंचा राखी पकाउनू । त्यो घिउ तातो दूधमा अलि अलि मिसाई खान दिनू । यसबाट पुरानो लहरेखोकी पनि आराम भएर जान्छ ।

हलेदो, दालचिनी, वायुविडंग, नागकेशर यी प्रत्येक ३-३ ग्राम, हिङ १ ग्राम, कस्तूरी १२५ मिलीग्राम सबैलाई एक साथ पिनेर माषको दाल बराबरको (१२५ मिलीग्राम) गोली पार्नू । बालकको अवस्था अनुसार १ वा आधा गोली महमा घोटेर चटाइदिनू । यसबाट घोर पीडा दिने पुरानो खोकी पनि आराम भएर जान्छ ।

बर्रो र अनारको बोक्राको काढा बनाउनू । अनि छानेर मिश्री मिसाई पकाउनू । बाक्लो भएर आएपछि त्यसमा सानो पिप्लाको चूर्ण मिसाएर राख्नू । यसबाट अलि अलि बालकलाई नित्य चटाउनू । लहरेखोकी निको हुन्छ ।

खोकीमा उपयोगी अरू अनुभूत योगहरू-

श्रृंग्यादि चूर्ण- काकडासिंगी, सुठो, मरिच, सानो पिप्ला, पुष्करमूल, हर्रो, बर्रो, अमला, कण्टकारीको पञ्चाङ्ग, भारंगी (भार्ङ्गी), सिंधे नुन, बिरे नुन, समुद्री नुन, सबै समभाग लिएर कुटी छानी मिसाउनू र सुरक्षित गरी राख्नू । यो श्वास र खोकीका लागि अचूक औषधि हो । यसको सेवनबाट छातीमा जमेको कफ छुटेर श्वास र खोकी आराम भएर जान्छ । यो चूर्ण वातकफनाशक हुनाले श्वास रोगमा उपयोगी हुन्छ । यो (चूर्ण) ३-६ ग्राम सम्मको मात्रामा बिहान-बेलुका खाई तातो पानी पिउनुपर्छ । (हजारौं पटक परीक्षित)

सितोपलादि चूर्ण– मिश्री १६० ग्राम, वंशलोचन ८० ग्राम, सानो पिप्ला ४० ग्राम, सुकुमेलको भित्री दाना २० ग्राम, दालचिनी १० ग्राम ठीक पार्नू र सबैलाई कुटी छानी मिसाएर राख्नू। यसलाई एक भाग घ्यू र २ भाग महका साथ ३-६ ग्रामसम्म मिसाई खाने गर्नाले श्वास, खोकी, क्षय, हात-खुट्टा पोल्ने, कोखा दुख्ने, ज्वरो आउने, पुरानो ज्वर आदिमा आराम हुन्छ। (परीक्षित)

मरिचादि वटी– मरिच १० ग्राम, पिप्ला १० ग्राम, अनारको फलको सुकेको बोक्रा २० ग्राम, यवक्षार ६ ग्राम, सफा पुरानो गुड ८० ग्राम ठीक पार्नू। पहिले मरिचदेखि अनारको बोक्रासम्मका द्रव्यहरूको चूर्ण बनाएर मिसाउनू। त्यसपछि त्यो चूर्ण र यवक्षार गुडका साथ घोटेर चना जस्तो (२५० मिलीग्राम) गोली बनाएर सुकाएपछि सुरक्षित गरी राख्नू। यो १-१ गोली बिहानबेलुका खाने गर्नू। यसबाट असाध्य खोकी पनि निको भएर जान्छ।

कासहर वटी– निरुत्थवंग भस्म १० ग्राम, सानो पिप्ला २० ग्राम, हर्रो ३० ग्राम, बर्रो ४० ग्राम, असुरोको पात ५० ग्राम, भारंगी ६० ग्राम, सबलाई कुटी छानी मिसाउनू। अब त्यो सबै खलमा राखी बबूलको बोक्राको काढा मिसाई १२ घण्टा खल गर्नू (घोट्नू[1])। यसै गरी दोस्रो-तेस्रो दिन पनि नयाँ (ताजा) बबूलको बोक्राको काढा बनाई त्यसमा घोट्नू। अब फेरि २ दिनसम्म मह राखी १२-१२ घण्टासम्म घोट्नू र सानो बयर समानको (१ ग्राम) गोली पारेर छायामा सुकाउनू। यो श्वास र खोकीका लागि रामबाण औषधि हो। यो औषधि १-१ गोली बिहान-बेलुका खानाले श्वास, खोकी, क्षयरोग निश्चय आराम भएर जान्छन्। (परीक्षित)

कासमर्दन वटी– सेतो पपडिया (पत्रे) खयर ४० ग्राम, सेलखडी (सेतो खरीमाटो) २० ग्राम, शुद्ध कपुर १० ग्राम, सुकुमेलको दाना ५ ग्राम लिएर सबलाई बेग्लाबेग्लै कुटी छानी मिसाउनू। अब बबूलको बोक्रा ३०० ग्राम लिएर कुट्नू र माटाको हाँडीमा २.५ लीटर पानीका साथ राखी पकाउनू। एक चौथाई (२५%) पानी बाँकी भएपछि उतारेर छानी लिनू। अब यस काढामा माथि लेखिएका औषधिहरूको चूर्ण मिसाएर पकाउनू। बीच बीचमा चलाइराख्नू। जब गोली पार्न लायकको बाक्लो भएर आउँछ अनि उतार्नू र खरीको धूलो छर्दै गोली पार्दै जानू। यो गोली मुखमा राखेर चुस्नाले सबै किसिमको खोकी आराम हुन्छ। २४ घण्टामा नै छातीमा जमेको कफ निस्कन थाल्छ। यो २४ घण्टामा २० वटासम्म चुस्न सकिन्छ। नयाँ खोकीका लागि रामबाण नै हुन्छ। (परीक्षित)

लवङ्गादि गुटिका– ल्वाङ १० ग्राम, मरिच १० ग्राम, बर्रो १० ग्राम, सेतो

---

१. जति काढा राख्दा उक्त चूर्णहरू भिज्छन् त्यती मात्रामा काढा राख्नुपर्छ।

पपडिया खयर ३० ग्राम ठीक पारी कुटी छानी चूर्ण बनाएर मिसाइराख्नू । अब पहिले (कासमर्दन वटीमा) उल्लेख भए अनुसार बबूलको बोक्राको काढा बनाई त्यसका साथ माथिको चूर्ण मिसाएर घोट्नु र चनाजत्रो (२५० मिलीग्राम) गोली पार्नू । त्यसलाई छायामा सुकाई सुरक्षित गरी राख्नू । यो गोली मुखमा राखेर चुस्नाले सबै किसिमका खोकीहरू ७ दिन मै आराम भएर जान्छन् । (परीक्षित)

अर्कादि वटी- आँककको कोपिला १० ग्राम, सेतो खयर १० ग्राम, मरिच १० ग्राम सबको चूर्ण बनाई पानीका साथ घोटी ६० मिलीग्रामका साना गोली पार्नू र छायामा सुकाउनू । यो १-१ गोली विहान-बेलुका सेवन गर्दा सबै किसिमका खोकी आराम हुन्छन् । (परीक्षित)

कासहर वटी (द्वितीय)- मरिच, सानो पिप्ला, करञ्ज, कण्टकारीको बियाँ, आगोमा फुराएको स्वाग, सेतो खयर प्रत्येक १०-१० ग्राम, लिएर कुटी छानी मिसाउनू । त्यसमा फेरि ६ ग्राम शुद्ध अफिम मिसाइदिनू । अब त्यो सबै खलमा राखी अदुवाको रसमा ३ घण्टासम्म घोट्नु र १२५ मिलीग्रामका गोली पारेर छायामा सुकाउनू । यस गोलीले सबै किसिमको खोकी त्यसमा पनि बुढा मानिसहरूको खोकी र रुघाको खोकीमा विशेष लाभ गर्छ । जुन रोगीलाई खोकी र दमले ग्रस्त पारीराखेको छ उसलाई यस गोलीको सेवन अवश्य गराउनू । यो औषधि १-१ गोली बिहान-बेलुका सेवन गर्नुपर्छ । रातमा खोकी र दमका कारण निद्रा नलागेमा १ गोली मुखमा राखी चुस्दै सुत्नुपर्छ । (परीक्षित)

हरीतक्यादि वटी- हर्रो, करञ्ज, काकडासिंगी, मरिच र जेठीमधु प्रत्येक १०-१० ग्राम लिएर कुटी छानी चूर्ण बनाउनू । खलमा राखी पानीसँग घोटेर चनासमानको (२५० मिलीग्राम) गोली तयार पार्नू । यो १ गोली मुखमा राखेर चुस्नाले खोकीलाई आराम गर्छ । (परीक्षित)

खयरको गोली- सेतो खयरलाई मसिनो पारी पिनेर खलमा राख्नू र असुरोको पातको रसका साथ घोट्नू । पछि केराउको गेडा बराबरको (२५० मिलीग्राम) गोलीहरू पार्नू र छायामा सुकाउनू । यो १-१ गोली दिनमा ३ पटक सेवन गर्नाले सबै किसिमको खोकी आराम हुन्छ ।

टंकणादि वटी- आगोमा फुराएको स्वाग १० ग्राम, काँचो स्वाग १० ग्राम, मरिच २० ग्राम कुटी छानी मिसाएर खलमा राख्नू । त्यसलाई घ्यूकुमारीको रस दिंदै घोट्नू र १२५ मिलीग्रामका गोली पार्नू । अब छायामा सुकाई सुरक्षित गरी राख्नू । यो औषधि १-१ गोली दिनको ३ पटक सेवन गरेमा सबै किसिमका खोकीलाई आराम हुन्छ । बच्चाहरूको कफज खोकीमा त चमत्कार नै देखाउँछ । (अनेक पटक परीक्षित)

आकारकरभादि वटी (द्वितीय)- अकरकरा १० ग्राम, अपामार्गको जरा वा त्यसको सार १० ग्राम, हिङ १० ग्राम, सानो पिप्ला १० ग्राम, भुटेको चनाको दाल १० ग्राम, अफिम ५ ग्राम, ल्वाङ ५ ग्राम सबै कुटी छानी चूर्ण बनाउनू । त्यसलाई खलमा राखी आँकको दूधमा भिज्ने गरी २४ घण्टा राख्नू । त्यसपछि सिउँडीको डाँठको भित्री गुदी झिकेर उक्त औषधिको चूर्ण भर्नू र डोरीले बाँधी बाहिर माटोको लेप गर्नू । त्यसलाई ७ किलो जंगलको गाईको गुइँठाको आगोमा राखी पाक्न दिनू । औषधिलाई डढ्न नदिनू । आगो निभेपछि अघि राखेको सिउँडीको डाँठ झिक्नू र भित्रको पाकेको औषधि निकाली खलमा घोट्नू र चना बराबरको (२५० मिलीग्राम) गोली पार्नू । यो १-१ गोली बिहान-बेलुका सेवन गर्नाले रुघा, खोकी र दम आराम भएर जान्छ ।

वासावलेह (द्वितीय)- २ किलो असुरोको जरालाई १६ लीटर पानी राखी कलइदार भाँडामा पकाउनू । एक चौथाई (४ लीटर) पानी बाँकी हुँदा उतारेर छान्नू र त्यसमा २ किलो मिश्री राखी पकाई बाक्लो चासनी बनाउनू । सेलाएपछि त्यसमा सानो पिप्लाको चूर्ण २५० ग्राम र घ्यू पनि २५० ग्राम मिसाई सुरक्षित गरी राख्नू । यो वासावलेह तयार हुन्छ । यो अवलेह ६ ग्राम मात्रामा मह अथवा अरू कुनै अनुपानका साथ नियमित रूपमा विहान-बेलुका सेवन गर्नाले श्वास, खोकी, क्षयरोग, रक्तपित्त आदि रोगहरू नष्ट हुन्छन् । (परीक्षित)

पिप्पली घृत- सानो पिप्ला २५० ग्राम लिएर मसिनो गरी पिन्नू । त्यसलाई बाख्राको दूधसँग सिलौटोमा पिनी लेदो पार्नू । अब उक्त लेदोका साथ गाईको घ्यू २.५ किलो, बाख्राको दूध १० किलो एउटा कलइदार भाँडामा राखी मन्द आगोमा पकाउनू । जब दूधजति सुकेर घ्यूमात्र बाँकी रहन्छ तब उतारेर छानी यौटा भाँडोमा सुरक्षित राख्नू । यसको मात्रा ५० ग्राम सम्म हुन्छ । यसको सेवनबाट सबै किसिमको नयाँ वा पुरानो खोकी आराम भएर जान्छ । यो घ्यू सेवन गरेपछि ३ घण्टासम्म पानी खानुहुँदैन । (अनेकौं पल्ट परीक्षित)

कज्जलीयोग- शुद्ध गन्धक २०० ग्राम, त्रिकुट (सुठो, मरिच, पिप्लाको समभाग मिश्रण) को चूर्ण १० ग्राम यी सबै ठीक पार्नु । पहिले खलमा गन्धकलाई खुब घोटी गाजल जस्तो मसिनो कज्जली बनाउनु । त्यसमा त्रिकुटको चूर्ण मिसाउनू । अब सवा हात लामो सेतो कपडामा उक्त कज्जलीलाई फिजाउनु र कपडालाई बेरेर बत्ती बनाउनु । त्यसलाई डोरीले बाध्नू र ३ घण्टासम्म तिलको तेलमा डुबाइराख्नू । त्यसपछि भुइँमा एउटा काँचको गिलास राख्नू । त्यसमाथि तिलको तेलमा डुबाएको बत्तीलाई चिम्टाले समाती राख्नु र बत्तीको टुप्पोमा आगो लगाईदिनु । त्यो बल्दै जाँदा बत्तीबाट तेल ग्लासमा चुहुन थाल्छ । बत्ती पूरा बलीसकेपछि तेल आउन

छोड्छ । अब गिलासमा जम्मा भएको तेलको बराबर शुद्ध पारद (पारो) लिएर उक्त तेलका साथ राम्रो खलमा कम से कम २४ घण्टा खल गर्नू । त्यसपछि सिसीमा सुरक्षित गरी राख्नू ।

जसलाई खोकीमा बढी कफ आउँछ, गरम खाना र औषधिले लाभ गर्छ र चिसो औषधिले अहित गर्छ, जसको उमेर ५० वर्षको लगभग छ तिनीहरूका लागि यो कज्जली अमृत समान हुन्छ । यसबाट पुरानो भन्दा पुरानो खोकी पनि ठीक भएर जान्छ । यसको मात्रा ६० मिली ग्रामदेखि १२५ मिलीग्राम सम्म हुन्छ । यसलाई महमा मिसाई बिहान-बेलुका चाट्नुपर्छ । सेवन गर्ने बेलामा नुन, अमिलो कुरा, खुर्सानी, दही, अचार खानुहुँदैन । स्त्रीप्रसङ्ग पनि निषिद्ध छ । (परीक्षित)

२२. हिक्का रोग (बाडुकी)

जुन रोगमा हिक्क हिक्क आवाजका साथ मुखबाट वायु निस्कन खोज्छ, त्यसको वेगले पेटका यकृत्, प्लीहा र आन्द्रा पनि माथि आउन खोजेजस्तो हुन्छ त्यसलाई हिक्का रोग भनिन्छ । यो रोगलाई नेपाली भाषामा बाडुकी लाग्ने भनिन्छ । उचित उपचार नभएमा यसले चाँडै नै ज्यान लिन सक्छ ।

कारण – विदाही (अर्थात् खाएपछि पच्ने वेलामा अमिलो पानी आएर घाँटी र छाती पोल्ने), भारी अन्न सेवन गरिरहने, अजीर्ण हुनेगरि खाने, चिसो (बासी) अन्न र पानी बराबर खाने गर्नाले, धुलो-धुवाँ आदि क्षोभकारक कुराहरू नाकबाट पस्ने भैरहनाले, अतिमैथुन वा वेगहरूलाई रोक्ने गर्नाले हिक्का, श्वास र कास यी रोगहरू उत्पन्न हुन्छन् । यसको भित्री कारण वायु र कफको प्रकोप हुन्छ ।

पूर्वरूप – हिक्का लाग्नुभन्दा पहिले घाँटी र छातीमा भारीपन हुन्छ, मुखको स्वाद टर्रो वा नमिठो हुन्छ र पेट फुलेर आउँछ ।

भेदहरू – हिक्का रोग पाँच किसिमको हुन्छ – अन्नजा, यमला, क्षुद्रा, गम्भीरा र महती

अन्नजा हिक्का – खाने-पिउने अन्न वा पानी आदि अत्यधिक मात्रामा सेवन गर्दा कुपित भएको वायुले यो रोग उत्पन्न गर्छ । यसमा खाना खाइसकेपछि हिक्क हिक्क हुन थाल्छ । यो केही समयपछि आफैँ शान्त भएर जान्छ ।

यमला हिक्का – यसमा ढिलो गरी हिक्का आउँछ । हिक्काको वेग आउँदा एकैसमय दुई-पटक वेग हुन्छ अर्थात् हिक्क-हिक्क हुनेगरी बेसरी बाडुकी लाग्छ । त्यस अवस्थामा टाउको र घाँटी दुवै बेसरी (हिक्काले जोरले) हल्लिन्छ ।

क्षुद्रा हिक्का – यसमा धेरै समयको अन्तरमा अर्थात् ढिलो गरी कहिलेकाहीं

हिक्काको वेग हुन्छ । यो वेग मन्द हुन्छ र घाँटीबाट सुरु हुन्छ ।

गम्भीरा हिक्का – यसमा नाभिबाट गम्भीर किसिमको आवाजका साथ हिक्का हुन्छ । साथमा प्यास बढी लाग्ने, ज्वरो आउने जस्ता अनेकौं उपद्रवहरू हुन्छन् ।

महती हिक्का – यसमा मर्महरूमा (वस्ति, मुटु, शिर आदि) दुख्ने गरी बारंबार हिक्काको वेग आइरहन्छ र हिक्का आएको वेलामा पूरै शरीर हल्लिन्छ ।

हिक्का रोगको साध्यासाध्यता – रोगी बलवान् भएमा अन्नजा, यमला र क्षुद्रा यी तीन हिक्काहरू उचित उपचारबाट साध्य हुन्छन् । गम्भीरा र महती हिक्का असाध्य मानिएका छन् । साध्य भनिएका हिक्काहरू पनि रोगीको शरीर अतिक्षीण भएमा, दोषहरूको अति प्रकोप भएमा अथवा रोगी अन्न खान छोडी दुर्बल हुँदै गएको अवस्थामा असाध्य हुन्छन् । गम्भीरा र महती हिक्कामा प्रायः मृत्यु नै हुन्छ ।

सामान्य चिकित्सा – हिक्का र श्वास रोगमा पहिले रोगीको शरीरमा तेलको मालिस गरिसकेपछि तातो वाफ लगाएर पसिना निकाल्नुपर्छ, अनि मात्र औषधी दिनुपर्छ ।

बिमिरोको रस २४ मि.लि. मा मह ६ ग्राम र कालो नुन ६ ग्राम मिसाएर पिउनाले हिक्का रोगमा आराम हुन्छ ।

मूँगा भस्म, शंख भस्म, त्रिफला, पिप्ला, शुद्ध गेरु (रातो माटो) सबैको चूर्ण बनाउनू । त्यो चूर्ण १–३ ग्रामको बराबर मह (२ ग्राम) र घिउ (१ ग्राम) मिसाई चाट्न दिनाले हिक्कालाई आराम गर्छ ।

एक पाउ बाख्राको दूधमा २ तोला (२४ ग्राम) सुठो र १०० मि.लि. पानी राखेर पकाउनू । दूधमात्र बाँकी भएपछि छानेर पिउन दिनू । यो हिक्काको परीक्षित औषधी हो ।

सुठो, पिप्ला र अमलाको चूर्ण मिसाई महसँग चाट्नाले पनि हिक्का आराम भएर जान्छ । घिउकुमारीको रसमा सुठोको चूर्ण मिसाई खानाले तत्काल हिक्कालाई आराम गर्छ ।

अलैंचीको चूर्ण र चिनी मिसाई सेवन गर्नाले हिक्कालाई आराम गर्दछ । केराको जराको रसमा चिनी मिसाई पिउने र नस लिने गर्नाले हिक्का रोग ठीक हुन्छ ।

पिप्ला, देवदारु र सुठोको चूर्ण तातो पानीसँग फाँक्नाले हिक्का र श्वासमा आराम हुन्छ । (परीक्षित)

मयूरको प्वाँखको खरानी २ रत्तीमा (२५० मि.ग्रा.) पिप्लाको चूर्ण १ ग्राम र मह ६ ग्राम मिसाई चाट्ने गर्नाले हिक्का, श्वास र वमन पनि आराम हुन्छ । (परीक्षित)

जेठीमधु र मह अथवा पिप्ला र मिश्री अथवा सुठो र गुड यीमध्ये कुनै एकलाई सुँघ्नाले हिक्का नष्ट हुन्छ ।

लशुन र प्याजको जरालाई स्त्रीको दूधमा पिनेर नस लिनाले हिक्का आराम भएर जान्छ ।

कालो माष चिलिममा राखी तमाखु जस्तै धुवाँ पिउनाले हिक्का आराम हुन्छ । (परीक्षित)

चन्द्रसूर रस – अलिकति चंसूरको बियाँ (५ ग्राम) मा पानी राखी पकाउनू, पाक्दा पाक्दा बियाँ नरम तथा त्यसको काढा बाक्लो भएपछि कपडछान गरी राख्नू । यो काढा २५ मि.लि. मात्रामा दिनको २-३ पटक सेवन गर्नाले अत्यन्त चापले उठेको हिक्का पनि आराम हुन्छ ।

सानो पिप्ला, अमला, दाख, बयरको गुदी, जेठी मधु, चिनी, वायुविडङ्ग, कुठ, सबै १-१ तोला कुटपिन गरेर छानी चूर्ण तयार पार्नू । त्यस चूर्णमा ८ तोला लौहभस्म मिलाई पानीका साथ खल गर्नू र ५-५ रत्तीको (६५५ मि.ग्रा.) गोली बनाई राख्नू । यो हिक्काको लागि परीक्षित औषधी हो । वमन तथा घोर खोकीलाई पनि आराम गर्छ ।

अपथ्य कुराहरू – हिक्काको रोगीले रातो खुर्सानी, अमिलो अचार आदि र दही खानुहुँदैन । भारी अर्थात् ढिलो गरी पच्ने कुराहरू खानुहुँदैन । राती जागा बस्ने गर्नुहुँदैन । चिन्ता र क्रोध त्याग गर्नुपर्छ ।

२३. स्वरभेद (बोली बस्नु)

विभिन्न कारणबाट बोली बोल्ने अङ्ग स्वरयन्त्रमा खराबी उत्पन्न भएपछि कुनै कुरा बोल्दा घाँटी बसेको, बोली स्पष्ट नबुझिने भएको अवस्थालाई स्वरभेद भनिन्छ ।

कारण – धेरै रुने, कराउने, ठूलो स्वरमा पढ्ने गर्नाले घाँटीमा चोट लाग्नाले अथवा विष आदि खानाले वात आदि तीनै दोषहरू कुपित भएर स्वरवह स्रोतहरूमा पुगेर विकृति ल्याउँछन् र स्वरको नाश अर्थात् स्वाभाविक बोलीलाई बिगार्ने काम गर्छन् ।

भेदहरू – यो रोग ६ किसिमको हुन्छ – वातज, पित्तज, कफज, त्रिदोषज, मेदोज, क्षयज ।

लक्षण

(१) **वातज स्वरभेद** – यसमा रोगीले विस्तारै र गधाजस्तो बिग्रेको भद्दा बोली बोल्छ । उसका आँखा, मुख, मल र मूत्र काला हुन्छन् ।

(२) **पित्तज स्वरभेद** – यसमा रोगीले बोल्न लाग्दा घाँटीमा पोल्ने गर्छ। उसका आँखा, मुख, मल र मूत्र पहेंला हुन्छन्।

(३) **कफज स्वरभेद** – यसमा घाँटीमा कफ जमेको हुन्छ, रोगी सानो बोली कम मात्रामा बोल्छ। रातको अपेक्षा दिनमा बढी बोल्छ।

(४) **त्रिदोषज स्वरभेद** – यसमा तीनै दोषहरूका लक्षणहरू हुन्छन्।

(५) **क्षयज स्वरभेद** – यसमा बोल्न लाग्दा मुखबाट धुवाँ वा तातो हावा आएजस्तो रोगीलाई अनुभव हुन्छ। रोग बढेपछि बोली नै हराउँछ, बोल्न खोजे पनि रोगीले बोल्न सक्तैन। त्यस अवस्थामा रोग असाध्य हुन्छ।

(६) **मेदोज स्वरभेद** – यसमा रोगीको घाँटी मेद अथवा कफले ढाकेको हुन्छ। उसको स्वर वा बोली भित्रै हराएजस्तो हुन्छ। अरूले उसले भन्न खोजेको कुरा बुझ्न गाह्रो हुन्छ। बढी प्यास लाग्छ।

असाध्य लक्षण – रोगी निकै कमजोर, वृद्ध भएमा अथवा रोग धेरै पुरानो भएमा अथवा जन्मैदेखि उत्पन्न भएमा यो रोग असाध्य हुन्छ। मेदस्वी अर्थात् बढी बोसो लागेको मानिसमा उत्पन्न मेदोज स्वरभेद र त्रिदोषज स्वरभेद पनि असाध्य हुन्छन्।

सामान्य चिकित्सा – ज्वानो, बेसार, चितुको बोक्रा, नवक्षार र अमला समभाग लिएर कुटी छानी चूर्ण बनाएर राख्नू। यो चूर्ण १-३ ग्राम मात्रामा मह र घिउसँग चाट्ने गर्नाले घोर स्वरभंग पनि आराम हुन्छ। (परीक्षित)

सारस्वत चूर्ण– ब्राह्मी, बोझो, सानो हर्रो, असुरोको पात र पिप्ला प्रत्येक समभाग लिएर कुटी छानी चूर्ण बनाउनू। यो चूर्ण २-४ ग्राम मात्रामा महमा मिसाएर चाट्न दिनू। यो सारस्वत चूर्ण स्वरभेदका लागि निकै परीक्षित औषधी हो।

१ ग्राम खयर तोरीको तेलमा भिजाएर मुखमा राख्नाले स्वरभेदमा आराम हुन्छ।

सानो पिप्ला र सानो हर्रो दुवै समभाग पिनेर छानी बनाएको चूर्ण मुखमा राखे पनि स्वरभङ्गमा आराम हुन्छ।

मिश्री र सुठो बराबर अंशमा लिएर पिनछान गरी मह मिसाई गोली पार्नू। यो गोली चुस्नाले बसेको गला खुल्छ। (परीक्षित)

मरिच, कुलञ्जन, अलैंचीको बियाँ, जेठीमधु प्रत्येक समान भाग लिएर कुटी छानी चूर्ण बनाउनू। त्यसपछि बंगला पानको रसमा घोटेर सानो जङ्गली बयर समान (१ ग्रामको) गोली पार्नू। यो गोली बिहान-बेलुका महसँग खाने अथवा मुखमा राखी

चुस्ने गर्नाले घाँटी (स्वर) बसेको, तोते बोली, सफासँग कुरा गर्न नसकेको अवस्थामा आराम हुन्छ ।

कबाबचिनी (शीतलचिनी) अथवा कुलञ्जनलाई मुखमा राखी छोड्नाले स्वरभेदमा आराम हुन्छ ।

अलिकति हिङ तातो पानीसँग निल्नाले गला खुल्छ ।

मुण्डीको जरालाई चपाउनाले अथवा पातलाई पानमा राखी खानाले स्वरभंग रोग निको हुन्छ ।

सुगा, मैना आदि पक्षीहरूलाई खानेकुरा दिँदा त्यसमा मुण्डीको पातको चूर्ण मिलाएर दिने गरेमा उनीहरूको स्वर निकै तिखो हुन्छ ।

कस्तूरी, सुकमेल, ल्वांग र वंशलोचन समभाग लिएर कुटी छानी चूर्ण बनाउनू, त्यसबाट १-२ रत्ती लिएर घिउ र मह विषम मात्रामा मिसाई चाट्न दिनू । यसबाट स्वरभेद नष्ट हुन्छ ।

विशिष्ट चिकित्सा

वातज स्वरभेदमा – सर्स्यूको तेलमा नुन मिसाएर खानाले अथवा पुरानो चामलको भात गुडको काढासँग खानाले, अथवा उखुको रससँग पकाएर घिउ हाली खाने र केहीबेरपछि तातो पानी पिउनाले वातज स्वरभेदमा आराम हुन्छ ।

अथवा – देवदारु र चितुको बोक्रा समभाग राखी पकाएको बाखाको घिउमा मह मिलाई पिउनाले वातज स्वरभेदलाई आराम गर्छ ।

पित्तज स्वरभेदमा – यसमा घिउ खाएर त्यसपछि दूध पिउनूपर्छ ।

जेठीमधुलाई दूधमा राखी खीर बनाएजस्तै पकाउनू र घिउ मिसाएर खान दिनू ।

दुई भाग घिउमा एक भाग मह मिसाएर खान दिनू ।

यीमध्ये कुनै एक उपाय गर्नाले पित्तज स्वरभेदमा आराम हुन्छ ।

कफज स्वरभेदमा – सुठो, मरिच, सानो पिप्ला, पिप्लाको जरा सबै समभाग लिएर मसिनो चूर्ण बनाउनू । यो चूर्ण १-३ ग्राम मात्रामा खाई गोमूत्र पिउन दिनू । यसबाट कफज र मेदोज स्वरभेदमा आराम हुन्छ । (परीक्षित)

सुठो, मरिच, पिप्ला र त्रिफला (हर्रो, बर्रो, अमला)को चूर्ण मह र तोरीको तेलमा मिसाई चाट्नाले आराम हुन्छ ।

भोजनपछि मरिच र पिप्ला मुखमा राखी चुस्नुपर्छ ।

कफज स्वरभेदको औषधीले मेदोज स्वरभेदमा पनि काम दिन्छ ।

प्रमुख योगहरू

ब्राह्मी घृत – ब्राह्मीको जरा र पातको रस ४ लिटर, गाईको घिउ १ लिटर, हलेदो, मालतीको फूल, कुठ, त्यौडीको जरा, हर्रोको बोक्रा सबै समभाग लिएर पानीसँग पिनी बनाएको कल्क १२५ मि. ग्राम – सबै कलई लगाएको भाँडोमा राखी मन्द अग्निमा पकाउनू र घिउमात्र बाँकी हुँदा उतारेर छानी सुरक्षित राख्नू। यो घिउ ६-२४ ग्रामसम्मको मात्रामा बिहान-बेलुका पिउनाले स्वरभेदमा आराम हुन्छ। (परीक्षित)

२४. हृदय रोग (मुटु संबन्धी)

परिचय – हृदय अर्थात् मुटुको कुनै पनि भागमा कुनै कारणबाट आघात (चोट) पुगी त्यहाँ दुख्ने भएमा त्यसलाई हृद्रोग अथवा हृदयको रोग भनिन्छ।

कारण र सम्प्राप्ति – बढी मात्रामा तातो, गरिष्ठ अन्न अथवा टर्रो-तितो कुराहरू लगातार खाइरहने गर्नाले, अत्यधिक परिश्रम गर्नाले, चोट लाग्नाले, बढी चिन्ता गर्नाले र वेगहरू रोक्ने गर्नाले हृदय रोग उत्पन्न हुन्छ।

उक्त कारणहरूबाट कुपित भएका दोषहरूले रस धातुलाई दूषित पार्छन् र मुटुमा पुगेर त्यसको स्वरूप र काममा विकार तथा अवरोध गरेर हृदय रोग उत्पन्न गर्छन्।

भेदहरू – हृदय रोग पाँच किसिमको हुन्छ – बातज, पित्तज, कफज, त्रिदोषज, कृमिज।

भेद अनुसार लक्षणहरू

वातज हृदय रोग – यसमा सारा हृदयमा अनेक किसिमको पीडा हुन्छ। त्यो पीडा सियोले रोपेको जस्तो, मथेको जस्तो, चिरेको जस्तो, कुनै बञ्चरो आदिले काटेको जस्तो हुन्छ।

पित्तज हृदय रोग – यसमा बढी प्यास लाग्ने, शरीर तात्ने र पोल्ने हुन्छ, मुख सुक्छ। मुखबाट धुवाँ आएजस्तो हुन्छ, बढी पसिना आउँछ, मूर्च्छा पनि हुनसक्छ।

कफज हृदय रोग – यसमा मुटु वरिपरि गह्रांगोपनको अनुभव हुन्छ, मुखबाट कफको स्राव हुन्छ, अन्नको रुचि हुँदैन, अग्नि मन्द हुन्छ, मुखको स्वाद गुलियो हुन्छ।

त्रिदोषज हृदयरोग – यसमा वातज, पित्तज, कफज यी किसिमका रोगहरूका लक्षण पाइन्छन्।

कृमिज हृदयरोग – त्रिदोषज हृदयरोग लागेको अवस्थामा तिल, गुड, दूध आदि कृमि बढ्ने कारणहरूको सेवन गर्नाले यो रोग उत्पन्न हुन्छ । यसमा मुटुको कुनै भागमा ग्रन्थि (डल्लो) उत्पन्न हुन्छ, त्यस ठाउँमा रस धातु पनि विकृत हुन्छ र कृमिहरू उत्पन्न हुन्छन् । त्यसबाट निम्न लक्षण देखिन्छन् – मुटुमा तीव्र पीडा हुन्छ, शरीर चिलाउँछ, मुखबाट पानी र थूक आइरहने, वाकवाकी लाग्ने, आँखा अगाडि अन्धकार देखिने हुन्छ । अन्न रुच्दैन, आँखा वरिपरि कालो हुन्छ र शरीरमा शोथ पनि हुन्छ ।

हृदय रोगका उपद्रवहरू – हृदय रोग लागेको मानिसमा कुनै परिश्रम विना थाक्ने, शरीर गलेको अनुभव हुने, रिँगटा लाग्ने र शरीर सुक्दै जाने यी उपद्रवहरू हुन्छन् । कृमिज हृदय रोगमा कफज कृमिको रोगजस्तै वाकवाकी लाग्ने, मुखबाट पानी (च्याल) बग्ने आदि उपद्रवहरू हुन्छन् ।

हृदय रोगको चिकित्सासूत्र – वातज हृदय रोगमा पहिले रोगीको स्नेहन गरी दशमूलको क्वाथमा तिलको तेल र सैन्धव लवण (सिधे नुन) मिसाएर खान दिई वमन गराउनुपर्छ ।

पित्तज हृदय रोगमा पहिले गम्भारी, जेठीमधुको काढामा मह, मिश्री सहित मिसाई खान दिएर वमन गराउनुपर्छ । चन्दन आदि शीतल वस्तुको शरीरमा लेप गर्नुपर्छ । दाख, चिनी, मह र फालसाको रस आदिको प्रयोगद्वारा विरेचन गर्नुपर्छ । शरीर शुद्ध भएपछि पित्तशामक अन्न र पेयहरूको सेवन गराउनुपर्छ ।

कफज हृदय रोगमा पहिले रोगीको स्वेदन (पसिना निकाल्ने उपाय) गर्नुपर्छ । त्यसपछि वमन गराई लङ्घन गर्नुपर्छ । अन्तमा दोषको बल अनुसार कफनाशक औषधीको प्रयोग गर्नुपर्छ । यसमा वमनका लागि बोझो र नीमको पञ्चाङ्गको काढाको सेवन गराउनुपर्छ ।

त्रिदोषज हृदयरोगमा पहिले लङ्घन गराई पछि पथ्य अन्नहरू खान दिनुपर्छ । कृमिज हृदय रोगमा पहिले लङ्घन र पाचन गर्नुपर्छ । त्यसपछि कृमिनाशक औषधीहरू खान दिनुपर्छ । यसमा गोमूत्रमा वायुविडङ्ग र कुठको चूर्ण मिसाएर खान दिएपछि कृमिहरू नष्ट हुन्छन् । त्यसपछि जौबाट बनेका रोटी, ढिंडो आदि पथ्यमा विडङ्गको चूर्ण मिसाएर खान दिनुपर्छ ।

हृदय रोगको विशेष चिकित्सा

वातज हृदयरोग – पुष्करमूल, बिमिरोको जरा, सुठो, कचूर, हर्रो सबैलाई चूर्ण बनाई सिलौटोमा पानीसँग पिनेर कल्क बनाउनू । यही पुष्करमूलादि

कल्क हो । यसलाई यवक्षार, अमिलो बिमिरोको रस, घिउ र नुन (सिंधे) का साथ खान दिएमा वातज हृदयरोगमा आराम हुन्छ । (योगरत्नाकर)

हर्रो, बोझो, रास्ना, पिप्ला, सुठो, कचूर र कुठ समभाग लिएर कुटीछानी चूर्ण बनाउनू । यो चूर्णलाई १.५ देखि ३ ग्रामसम्म मात्रामा पानीसँग खानाले वातज हृदयरोग शान्त हुन्छ । (परीक्षित)

पुष्करमूल, सुठो, बोझो, ज्वानो, पलाशको बियाँ, करञ्ज, कचूर र देवदारु यी सबैको मोटो चूर्ण बनाइराख्नू । यसबाट २४ ग्राम लिएर ४०० मि.लि. पानीमा पकाउनू । ५० मि.लि. पानी बाँकी भएपछि छानेर त्यसमा जिरा र सिंधे नुन राखी खान दिनू । यो काढाले वातज हृदय रोगमा निश्चय आराम दिन्छ ।योगरत्नाकर (परीक्षित)

पित्तज हृदयरोग – दाख वा हर्रोको चूर्ण मह र मिश्रीसँग खान दिनू । अथवा- कुटकीको चूर्ण र जेठीमधुलाई पानीमा पिनेर कल्क बनाई मिश्री मिसाई पिउन दिनू ।

अथवा – अर्जुन वृक्षको बोक्रालाई दूधमा पकाएर मिश्री मिसाई पिउन दिनू । यसबाट पित्तज हृदयरोगमा आराम हुन्छ ।

कफज हृदयरोग – पिप्लामूल र सुकमेलको चूर्णमा (१.५-३ ग्राम) घिउ मिसाई चाट्नाले कफज हृदयरोग र गुल्म रोगलाई नाश गर्छ । (परीक्षित)

निशोध, कचूर, बला, रास्ना, हर्रो, कुठ सबै समभाग लिएर चूर्ण बनाउनू । यो चूर्ण २-३ ग्राम मात्रामा गोमूत्रसँग सेवन गर्न दिनू । कफज हृदयरोगमा आराम हुन्छ । (परीक्षित)

पिप्ला, बोझो, सुकमेल, हिंग, यवक्षार, सिंधे नुन, कालो (बिरे) नुन, सुठो र अजमोद समभाग लिई चूर्ण बनाउनू । यो चूर्ण ३-४ ग्राम मात्रामा त्रिफलाको काढा, गहतको झोल, दहीको पानी वा रक्सीसँग सेवन गर्नाले वातज र कफज हृदय रोगमा आराम हुन्छ ।

त्रिदोषज हृदयरोग – पुष्करमूल, हिङ, बोझो, कालो नुन, सुठो, पिप्ला, हर्रो, चितु, यवक्षार, सौँचर नुन र कुठ सबै समभाग लिएर चूर्ण बनाउनू । यो चूर्ण ७५० मिलीग्रामदेखि १ ग्रामसम्म बोझोको काढासँग खान दिनू । त्रिदोषज हृदयरोगमा आराम हुन्छ । (परीक्षित)

कृमिज हृदयरोग – वायुविडङ्ग र कुठलाई समभाग लिएर कुटी छानी चूर्ण बनाउनू । यसबाट १.५ ग्राम मात्रा लिएर गोमूत्रसँग सेवन गर्न दिनू । यसबाट असाध्य किरा पनि मरेर जान्छन् ।

हृदयरोगमा उपयोगी अन्य योगहरू

शृंग भस्म – जरायोको सींगलाई रेतीले रेटेर चूर्ण पार्नू र एउटा हाँडीमा भरेर मुख बन्द गरी कपडमिट्टी गर्नू । त्यो सुकेपछि १० सेर जङ्गली गुइँठाको आगोको बीचमा राखी डढाउनू । चिसो भएपछि भस्मलाई निकाली सिसीमा सुरक्षित हुनेगरि राख्नू । यो भस्म १ ग्राम, गाईको घिउ (तातो) ३ ग्राममा मिसाई सेवन गराउनू । यो घोर हृदयशूल, पार्श्वशूलका लागि उत्तम औषधी हो । (परीक्षित)

हृदयरोगान्तक चूर्ण – अर्जुन वृक्षको बोक्राको चूर्ण घिउसँग सेवन गर्नाले सबै किसिमको हृदयरोग, जीर्ण ज्वर र रक्तपित्तमा आराम गर्छ । (परीक्षित)

अर्जुन वृक्षको बोक्राको चूर्ण र गहुँको पिठो बराबर लिएर बाखा अथवा गाईको दूध राखी पकाउनू । पाकेर सेलाएपछि त्यसमा मह र मिश्री मिसाई खान दिनू । घोर हृदय रोग पनि शान्त हुन्छ । (परीक्षित)

अर्जुन वृक्षको बोक्रा, बोझ्को, रास्ना, बला, नागबला, हर्रो, कचूर, कुठ, पिप्ला र सुठो सबै समभाग लिएर कुटी छानी चूर्ण बनाउनू । यो चूर्ण ६ ग्राम गाईको घिउ १२ ग्राममा मिसाएर सेवन गर्ने गरेमा समस्त हृदयरोगहरू नाश भएर जान्छन् । (परीक्षित)

हृदयार्णव रस – शुद्ध पारो १० ग्राम, शुद्ध गन्धक १० ग्राम मिसाएर ४५ घण्टासम्म खलमा घोट्नू । त्यसमा ताम्रभस्म १० मिसाउनू र फेरी घोट्नू । अब त्रिफलाको काढा राखी दिनभरी खल गर्नू र राती सुक्न दिनू । दोस्रो दिन काकमाचीको रस दिएर खल गर्नू । १२५ मिलीग्रामको चनाजत्रो गोली पार्नू र सुकाएपछि सुरक्षित राख्नू ।

यो औषधी १-१ गोलीको मात्रामा दिनको २ पटक अर्जुनको बोक्राको काढासँग सेवन गर्नाले हृदय रोगमा निश्चय पनि आराम हुन्छ । (परीक्षित)

मुंग्रेलोलाई पिनेर चूर्ण बनाइराख्नू । यो चूर्ण बिहान-बेलुका ३-३ ग्रामको मात्रामा गाईको दूधसँग खानाले हृदयको कमजोरी र धड्कन आदि चाँडै नै कम हुन्छ र हृदय बलवान् हुन्छ, हृदयको गति पनि ठीक हुन्छ । (परीक्षित)

सुन्तलाको फूलको बाफबाट अर्क बनाएर राख्नू । यो अर्क पिउनाले हृदय रोग र रक्तपित्तमा आराम हुन्छ, हृदय पनि बलियो हुन्छ ।

२५. उरोग्रह रोग (छाती भारी हुने रोग)

अत्यन्त चिल्लो, भारी अन्न, सुकाएको र गन्हाउने बासी मासु खाने गर्नाले कुपित कफसहित वायुले यकृत र प्लीहामा रगत र मांसको वृद्धि गराई पेटमा एक रोग उत्पन्न गर्छन्, त्यसलाई उरोग्रह भनिन्छ ।

यसमा पेट भारी र छुँदा बढी दुख्ने हुन्छ । शरीरमा अङ्गहरू जकडिने, ज्वरो आइरहने हुन्छ । पेट फुल्ने, दुख्ने र त्यसले छाती र घाँटीसम्म असजिलो पार्ने गर्छ । मल, मूत्र र अपानवायु निस्कँदैन । अरुचि र तन्द्रा भइरहन्छ ।

यस रोगमा तत्काल पेटमा स्वेदन गर्नुपर्छ । त्यसपछि अवस्था हेरी वमन र तीक्ष्ण द्रव्यद्वारा निरुह वस्ति दिनुपर्छ । साथमा लङ्घन अर्थात् उपवास गर्ने वा कम मात्रा पथ्य कुरा खान दिने गर्नुपर्छ । औषधीको रूपमा निशोथ र गुडको कल्कका साथ पुत्रजीवक, सहिजनको बोक्रा, सूर्यावर्त आदिको पाँच लवण र क्वाथमा हिङ पनि राखी खान दिनुपर्छ ।

अथवा चव्य (चावो), अम्लवेत, यवक्षार, हिङ र चितुको समभाग राखी बनाएको चूर्ण तेल वा काञ्जीसँग खान दिनुपर्छ ।

चिल्लो र पुष्टिकारक एवं हल्का भोजन दिनुपर्छ । ज्वरो आदि छैन भने वातरोग जस्तै पथ्य दिनुपर्छ ।

पुरानो रातो चामल, मूँग, गहतको झोल, आँप, अनार, अमलतासको पातको साग, सुठो, ज्वानु, लसुन, हर्रो, कुठ, धनियाँ, पिप्ला यी पथ्य हुन्छन् ।

रुखो, वायु बढाउने अन्न, रातको जागरण, दिनमा सुत्नु, आगो वा घाममा धेरै समय बस्नु, सहवास गर्नु यी हानिकारक हुन्छन् ।

२६. रक्तपित्त रोग (मुख,नाक आदिबाट रगत जाने रोग)

कुपित पित्तद्वारा दूषित रगत पित्तका साथ शरीरका विभिन्न मार्गबाट बग्ने रोगलाई रक्तपित्त भनिन्छ ।

कारण एवं सम्प्राप्ति – घाममा धेरै समयसम्म बस्नु वा काम गर्नु, रातो खुर्सानी आदि गरम पदार्थ, यवक्षार आदि क्षारहरू, अमिलो-नुनिलो कुराहरू बढी खानु, आगोको सम्पर्क भइरहनु, शक्तिभन्दा बढी व्यायाम गर्नु आदि कारणहरूबाट कुपित पित्तले आफ्ना उष्ण, तीक्ष्ण आदि गुणहरूद्वारा रगतलाई दूषित बनाउँछ । त्यसपछि त्यो दूषित रगत यकृत्बाट आमाशय वा पक्वाशयतिर जान्छ । दूषित रगतमा मिसिएर पित्त पनि रातो हुन जान्छ । रगत आमाशयतिर गएमा माथिको रक्तपित्त हुन्छ र मुख, नाक, कान वा आँखाबाट रगत बग्न थाल्छ । पक्वाशयतिर गएको खण्डमा तलका अंगहरूको बाटो अर्थात् लिङ्ग, योनि अथवा गुदद्वारबाट रगत बग्न थाल्छ ।

पूर्वरूप वा प्रारम्भिक लक्षण – रक्तपित्त रोगको आरम्भमा शरीर शिथिल र शीतल पानी पिउने वा शीतल ठाउँमा बस्ने इच्छा हुन्छ । घाँटीमा धुवाँ उठेजस्तो लाग्छ र वमन हुनसक्छ । सासमा फलामको गन्ध आउँछ ।

भेदहरू – रगत निस्कने मार्गको आधारमा यो तीन किसिमको हुन्छ- ऊर्ध्वग (माथिबाट बग्ने), अधोग (तलबाट बग्ने) र उभयगत (दुवैतिरबाट बग्ने)।

अन्य दोषहरूको सम्बन्धका आधारमा यो सात किसिमको हुन्छ – वातज, पित्तज, कफज, कफवातज, वातपित्तज, कफपित्तज र त्रिदोषज।

भेद अनुसार लक्षणहरू

वातज रक्तपित्त – यसमा हरियो वा निलो रङ्गको, फिंजसहित पातलो रगतको स्राव गुदद्वार, लिंग आदि मार्गबाट हुन्छ।

कफज रक्तपित्त – कफ बढी कुपित भएमा रगत गाढा, अलि पहेंलो रङ्गको, स्नेहयुक्त (चिल्लो) हुन्छ। त्यो मुख, नाक आदि माथिका अङ्गहरूबाट निस्कन्छ।

पित्तज रक्तपित्त – पित्तको अधिकता भएमा रगत काढाजस्तो रङ्गको, गोमूत्र वा घरको धुवाँजस्तो कालो रङ्गको हुन्छ।

दोषसंसर्ग अनुसार मार्गभेद – कफको संसर्ग हुँदा रक्तपित्त रोगमा मुख, नाक, कान आदिबाट स्राव हुन्छ। वातको संसर्ग हुँदा गुदद्वार, लिङ्ग, योनि यी तलका मार्गबाट रगतको स्राव हुन्छ। कफ र वात दुवैको संसर्ग भएमा तल-माथि दुवै मार्गबाट रगतको स्राव हुन्छ।

रक्तपित्त रोगका उपद्रवहरू – शरीर दुर्बल हुनु, दम, खोकी, ज्वरो, वमन, नशा लागेजस्तो हुनु, शरीर पहेंलो-फुस्रो देखिनु, दाह र मूर्च्छा, भोजन गरेपछि त्यसमा बढी विदाह हुनु, छटपटी हुनु, छातीमा विशेष पीडा, प्यास बढी लाग्नु, टाउको तात्नु, थूक दुर्गन्धित हुनु, अन्न मन नपर्नु, खाएको नपच्नु साथै निस्कने रगतको रङ्ग-गन्ध आदि विकृत हुनु यी रक्तपित्तका उपद्रवहरू हुन्।

साध्यासाध्यता – माथिका नाक, मुख यी अंगहरूबाट रगत जाने रक्तपित्त साध्य हुन्छ। तलका अंगहरूबाट रगत जाने रक्तपित्त याप्य हुन्छ। दुवैतिरबाट रगत जाने रक्तपित्तको रोग असाध्य हुन्छ।

जुन रोगीले वरीपरीको सबै वस्तु रातो रङ्गको देख्छ त्यो धेरै दिन बाँच्दैन। जुन रोगीले बारंबार रगतको वमन गर्छ, जसको आँखा रातो छ, त्यो पनि बाँच्दैन।

उपचारको सूत्र – रोगी बलवान् छ भने तलको रक्तपित्त (लिङ्ग, योनि र गुदद्वारबाट रगत जाने) रोगमा वमन गराउनुपर्छ। यसको विपरीत माथिको रक्तपित्तमा विरेचन गराई दिसा निकाल्नुपर्छ। दुवै किसिमबाट हुने रक्तपित्तमा लङ्घन गराउनुपर्छ। पानी उमालेर सेलाएको दिनुपर्छ। बाखाको वा गाईको दूधले हित गर्छ।

सामान्य चिकित्सा – दुबोको रस, अनारको फूलको रसमा चिनी मिसाएर पिउन दिएमा रगत बग्न बन्द हुन्छ ।

१ ग्राम फिटकिरीको चूर्ण दूधमा मिसाएर पिउनाले तत्काल रगत बग्न छोड्छ ।

रातो चन्दन, काँचो बेलको गुदी, अतीस, कुटजको बोक्रा, बबूलको गुँद सबै मिसाई २४ ग्राम लिनू र कुटेर मोटो चूर्ण बनाउनू । त्यसमा २०० मि.लि. बाख्राको दूध र पानी १ लिटर राखी पकाउनू । दूधमात्र बाँकी हुँदा छानेर रोगीलाई खान दिनू । गुदद्वार, योनि र लिङ्गबाट रगत बग्न छोड्छ ।

कुरिलोको जरा र गोखुर दुवैको खस्रो चूर्ण जम्मा २४ ग्राम, बाख्राको दूध २०० मि.लि. र पानी १ लिटर सबलाई पकाई दूधमात्र बाँकी भएपछि छानेर रोगीलाई खान दिनू । यसो गर्नाले योनिबाट हुने रक्तस्राव रोकिन्छ ।

अमलालाई घिउमा भुटेर फेरि काँजीसँग पिनेर निधारमा लेप लगाईदिएमा नाकबाट रगत बग्न छोड्छ । काँजी नभएमा अमलामात्र प्रयोग गर्न सकिन्छ ।

काञ्चनार (कोइरालो)को पातको रस ६ मि.लि. मात्रामा पिउनाले मुखबाट रगत आउन बन्द हुन्छ । (परीक्षित)

ईसबगोललाई सिर्का (भिनेगर)मा भिजाएर निधारमा लगाएमा नाकबाट रगत बग्न छोड्छ । माजूफलको कपडछान चूर्ण बनाई नसको रूपमा प्रयोग गरे पनि त्यस्तै लाभ हुन्छ ।

केराको रुखको रस नसको रूपमा नाकमा राखेपनि नाकबाट रगत आउन रोकिन्छ ।

पलाशको फूल १२ ग्राम २०० मि.लि. पानीमा पकाउनू र अष्टमांश (२५ मि.लि.) बाँकी रहेपछि छानेर मह मिसाई खान दिनू । यसबाट नाक तथा योनिबाट हुने रगतको स्राव रोकिन्छ ।

किसमिस, रातो चन्दन, लोध, प्रियंगु (दैकाम्लो) यी सबैको समभाग चूर्ण बनाई ६ ग्राम मात्रामा लिएर असुरोको रस तथा महसँग खान दिएमा नाक, मुख, गुदद्वार, लिङ्ग र योनि जुनसुकै मार्गबाट हुने रगतको स्राव रोकिन्छ ।

बाख्राको दूधमा मिश्री राखी पिउनाले रक्तस्राव रोकिन्छ ।

असुरोको पातको रस ६ ग्राम, मह ६ ग्राम, मिश्री ६ ग्राम सबलाई मिलाई पिउनाले रक्तपित्त वा रक्तस्राव बन्द हुन्छ । (अनेक पल्टको परीक्षित) । यो योग खोकी र क्षयरोगमा पनि रामबाणको काम गर्छ ।

असुरोको फूलको रसमा प्रियंगु, फिटकिरी, लोध र निशोथको चूर्ण र मह मिसाई पिउनाले मुख, गुदद्वार, लिङ्ग वा योनिबाट हुने रक्तस्राव बन्द भएर जान्छ । जुन रक्तस्राव कुनैपनि औषधीबाट बन्द भएको छैन, त्यो यसबाट बन्द हुन्छ । (परीक्षित)

६ मासा (ग्राम) हर्रोको फलको चूर्ण ६ ग्राम महसँग सेवन गर्नाले रक्तपित्त, शूल, अतिसार शान्त हुन्छन् । यो खूब परीक्षित योग हो ।

हर्रोलाई चूर्ण बनाई हरेक दिन असुरोको रसमा खल गर्नू र रातमा सुकाइदिनू । बिहान फेरि असुरोको ताजा रसमा खल गरी सुकाइदिनू । यस्तै प्रकारले ७ दिनसम्म असुरोको रसमा खल गर्दै सुकाउने गर्नू । यो औषधी महसँग सेवन गर्नाले रक्तपित्त रोग नष्ट भएर जान्छ ।

मुनक्का र हर्रोको काढामा मिश्री र मह मिसाई पिउनाले श्वास, खोकी र रक्तपित्त तीनैथरी रोग नष्ट हुन्छन् । यो परीक्षित अचूक औषधी हो ।

असुरोको पात, दाख र हर्रोको काढामा मिश्री र मह मिसाई पिएपनि त्यस्तै लाभ हुन्छ ।

असुरोको पातको रस ६ मि.लि., मह ६ ग्राम र सानो पिप्लाको चूर्ण १ ग्राम मिसाई चाट्नाले श्वास, खोकी र मुखबाट हुने रगतको स्रावमा उत्तम औषधी हुन्छ । (धेरैपटक परीक्षित हो)

एलादि वटी – सुकमेलको बियाँ, तेजपात, दालचिनी प्रत्येक ६-६ ग्राम, पिप्ला २४ ग्राम, मिश्री, जेठीमधु, खजूर र दाख प्रत्येक ४८ ग्राम ल्याएर चूर्ण बनाउन मिल्ने जति कुटी छानी तयार राख्नू । खजूर, दाख र मिश्रीलाई खलमा राखी पिन्नू र मह मिसाएर घोट्नू । त्यसमा क्रमशः जेठीमधु, पिप्ला आदिको चूर्ण राखेर राम्ररी मिलाउनू र १-१ ग्रामको गोली पार्नू । यी गोली मुखमा राखी चुस्नाले रक्तपित्त, उरःक्षत आदि रोगहरू नष्ट भई शरीरको बल बढ्छ । (अनेकौं पल्ट परीक्षित)

अपामार्गको काढा बनाएर त्यसबाट १-२ मि.लि. बालकलाई खान दिएमा बालकको रक्तपित्त निको हुन्छ । (परीक्षित)

रसाञ्जन (चुत्रोको खोटो) २५० मि.ग्रा. मात्रामा बालकलाई खान दिएमा बाल रक्तपित्त र त्यसका उपद्रवहरूमा आराम हुन्छ । (परीक्षित)

चन्दनादि चूर्ण – रातो चन्दन, जटामसी, लोध, खस (उशीर), कमलको केशर, नागकेशर, काँचो बेलको गुदी, नागरमोथा, मिश्री, सुगन्धवाल, पाठा, कुटजको बोक्रा, कमलको फूल, सुठो, अतीस, घातकी, रसाञ्जन, आँपको कोयाभित्रको गुदी, जामुनको बियाँ, मोचरस (सिमलको खोटो), नीलकमल, मजिठो, सुकमेल, अनारको फलको बोक्रा यी सबै द्रव्यहरू १०-१० ग्रामको मात्रामा लिएर कुटीछानी चूर्ण बनाएर राख्नू । यो चूर्ण ३-४ ग्राम मात्रामा महमा मिसाई चाटेपछि चामल पखालेको चौलानीको पानी पिउनाले रक्तपित्त, रगत बग्ने अर्श (अल्काई), मूर्च्छा, नशा लागेको जस्तो हुनु, बढी तिर्खा लाग्नु, अतिसार, वमन यी रोगहरूमा आराम हुन्छ ।

असुरोको काढामा प्रियंगुको फूल, रसाञ्जन, लोधको समभाग चूर्णका साथ मह मिसाई सेवन गर्न दिएमा प्रबल रक्तपित्त पनि निको हुन्छ। (परीक्षित)

वासादि घृत – असुरोको जराको बोक्रा, पात, हाँगा र जरासमेत जम्मा ८ किलो लिएर ६४ लिटर पानीमा पकाउनू। १६ लिटर पानी बाँकी रहँदा काढालाई छानेर राख्नू। असुरोको फूल २०० ग्राम जति लिएर सिलौटामा पिनी कल्क (लेदो) बनाउनू। उक्त काढा र कल्कका साथ गाईको घिउ ४ किलो फलामको कराहीमा राखी मन्द आगोको आँचमा पकाउनू र काठको पन्यूँले चलाउँदै जानू। घिउमात्र बाँकी भएपछि उतारेर छान्नू। यो घिउ ६-१२ ग्राम मात्रामा लिएर चौथाई मह मिसाई खान दिनू। यो रक्तपित्तको लागि निकै परीक्षित औषधी हो।

२७. पाण्डुरोग (रक्ताल्पता)

अमिलो-नुनिलो खाने कुराहरू, मद्य (रक्सी) जस्ता पेयहरू सेवन गरिरहने, माटो खाने, दिउँसो सुत्ने गर्नाले पित्तसहित अरू दोषहरू कुपित भएर रस, रक्त, त्वचा (छाला) सबै दूषित पार्छन् र छालालाई सेतो-पहेंलो (रगत कम भएको) बनाउँछन्। त्यस्तो अवस्थालाई पाण्डुरोग भनिन्छ।

सुरुमा देखिने लक्षण – तीन दोषहरूमध्ये सबै दोष र विशेष रूपमा पित्तको प्रकोपबाट पाण्डुरोग उत्पन्न हुन्छ। त्यो उत्पन्न हुन लाग्दा कान कराउने, अग्नि मन्द हुने, मुटुको चाल बढेर जाने, बढी थकाइ लाग्ने, जिउ गल्ने, रिँगटा लाग्ने, शरीर दुख्ने, भारी हुने, खाने कुरामा अरुचि हुने यी लक्षण देखिन्छन्। आँखा वरिपरि सुनिएर आउँछ, बढी रिस उठ्छ, हरसमय थुक्न मन लाग्छ, बोल्न मन लाग्दैन। उकालो चढ्दा र परिश्रम गर्दा पिंडौला फर्कने, कम्मर, तिघ्रा, गोडा गल्ने हुन्छ।[1]

भेदहरू – पाण्डुरोग पाँच किसिमको हुन्छ – वातज, पित्तज, कफज, त्रिदोषज र मृद्भक्षणजन्य।

वातज पाण्डुरोगको लक्षण – यसमा शरीरका अङ्गहरू सुख्खा र केही रातो वर्णका हुन्छन्। शरीर दुख्ने, काम्ने हुन्छ। मुखको स्वाद बिग्रिन्छ, मल सुक्दै जान्छ, बलको नाश हुन्छ।

पित्तज पाण्डुरोगको लक्षण – यसमा शरीरका अङ्गहरूको रङ्ग पहेंलो हुन्छ। उसलाई ज्वरो आइरहने, जिउ पोल्ने र प्यास बढी लाग्ने हुन्छ। मल र मत्रको रङ्ग पहेंलो हुन्छ। मल पातलो र बारंबार हुन्छ। मुखको स्वाद पिरो

---

१. च.सं.चि १६।९-१४।

वा तितो हुन्छ । पसिना बढी आउँछ । तातो कुराले नराम्रो असर गर्छ । अन्न रुच्दैन ।

कफज पाण्डुरोगको लक्षण – यसमा सारा शरीर सेतो भएर जान्छ । आँखा पनि सेता देखिन्छन् । रोगी बारम्बार थुक्न खोज्छ, शरीर सुन्निएर आउँछ, भारी पनि हुन्छ । खोकी लाग्छ, स्वर पनि बस्छ । मुखको स्वाद गुलियो हुन्छ ।

त्रिदोषज (सन्निपातज) पाण्डुरोगको लक्षण – तीनै ओटा दोषहरू अत्यधिक मात्रामा बढेको अवस्थामा तीनै किसिमका पाण्डुरोगहरूका लक्षणहरू देखिन्छन् । त्यसमा पनि बढी ज्वरो आउने, वमन भइरहने, प्यास बढी लाग्ने, शरीर त्यसै थाक्नेजस्ता उपद्रवका साथ इन्द्रियहरूको शक्ति हराएको अवस्थामा रोग असाध्य हुन्छ ।

मृद्भक्षणजन्य (माटो खाँदा हुने) पाण्डुरोगको लक्षण – यसमा आँखा वरिपरि, नाभि, गोडा, लिङ्ग वरिपरि सुनिएको हुन्छ, पेटमा विभिन्न किसिमका कृमिहरू बढ्छन्, कफ र रगत मिसिएको दिसा पटक-पटक भइरहन्छ । शरीरको बल र अग्नि नष्ट हुँदैजान्छ ।

असाध्य अवस्थाको लक्षण – जसको पाण्डुरोग धेरैसमयदेखि सुरु भएको छ, त्यसबाट शरीर निकै रुखो र सुन्निएको देखिन्छ अथवा जसले सबै कुरा पहेंलो देख्छ, जसको हरियो रङ्गको गाढा दिसा थोरै मात्रामा कफका साथ बारम्बार निस्कन्छ, जसको शरीर सेतो हुँदै गएको छ, प्यास, वमन, मूर्च्छा आदि लक्षण देखिन्छ त्यस्तो पाण्डुरोग असाध्य हुन्छ । पाण्डुरोग बढ्दै गएपछि शरीरमा काम नलाग्ने मूत्र, पसिना आदि बाहिर निस्कन पाउँदैन, शरीरको छाला र मासुको भित्री भागमा जम्मा हुन थाल्छ अनि शरीर सुन्निएर आउँछ ।

पाण्डुरोगको विशेष चिकित्सा

वातज पाण्डुरोग – त्रिफलाको काढामा घिउ र चिनी मिसाई सेवन गर्नाले वातज पाण्डुरोग नाश भएर जान्छ । (परीक्षित)

मण्डूरको चूर्णलाई सात पटक आगोमा रातो हुनेगरि तताई गोमूत्रमा डुबाउनू र सुरक्षित राख्नू । यस भस्मबाट ४ रत्तीदेखि १ माशासम्म (५०० मि.ग्रा.-१ ग्राम) घिउकुमारीको गुदी ४ ग्राम र मह ४ ग्रामका साथ खान दिनू । वातज पाण्डुरोग शान्त भएर जान्छ ।

पित्तज पाण्डुरोग – त्रिफला र नीमको नरम पातहरू लिएर चूर्ण बनाई ३-६ ग्राम मात्रामा लिएर मह मिसाई सेवन गर्नाले पित्तज पाण्डुरोगको नाश हुन्छ । (परीक्षित)

हर्रो, बर्रो, अमला, गुर्जो, असुरोको जराको बोक्रा, कुटकी, चिराइतो, नीमको बोक्रा सबै ३-३ ग्राम लिएर आधा सेर पानीमा पकाउनू। चौथाई पानी रहेपछि उतारेर छान्नू र ठण्डा भएपछि ६ ग्राम मह मिसाई पिउन दिनू। पित्तज पाण्डु निश्चय नै ठीक हुन्छ। (परीक्षित)

लौह-मण्डूर (भस्म)लाई अमलाको रसमा खूब खल गर्नू। त्यसको तौलको चौबर सुख्खा अमलाको चूर्ण त्यसमा मिलाई दिनू। यसलाई थोरै मात्रामा दैनिक सेवन गर्नाले पित्तज पाण्डु निश्चय शान्त हुन्छ।

अमला, सुठो, पिप्ला, मरिच, बेसार, लौह भस्म, मह र चिनी सबैलाई एकै ठाउँमा मिसाई सेवन गर्नाले पित्तज पाण्डुरोगको नाश हुन्छ। (परीक्षित)

कफज पाण्डुरोग – दशमूलको काढा (५० मि.लि.) मा सुठोको चूर्ण (१-२ ग्राम) मिसाई सेवन गर्नाले कफज पाण्डु तथा शोथ, ग्रहणी, श्वास आदि रोगमा आराम हुन्छ। (परीक्षित)

त्रिकटु र त्रिफला बराबर भाग लिएर (३-३ ग्राम) १०० मि.लि. पानीमा पकाई २५ मि.लि. बाँकी भएपछि छानेर सेलाउन दिनू। अब त्यसमा ३ ग्राम मह मिसाई खान दिनू। कफज पाण्डुरोगका लागि परीक्षित उपाय हो।

लौहमण्डूरलाई पहिले भने झैं सात पटक आगोमा तताई गोमूत्रमा डुबाउनू। अनि घाममा सुकाउनू। यसलाई समभाग पुनर्नवा चूर्णका साथ खाई तातो पानी पिउनाले कफज पाण्डुरोग शान्त हुन्छ। यो प्रथम- श्रेणीको औषधी हो।

पाण्डुरोगनाशक योगहरू – लौह भस्म, तिल, सुठो, मरिच, पिप्ला, सुकेको बयर सबै १०-१० ग्राम लिएर चूर्ण बनाएर मिसाउनू। अब त्यसमा ६० ग्राम स्वर्णमाक्षिक भस्म मिसाएर खल गर्नू र १-१ रत्तीको (१२५ मि.ग्रा.) गोली पार्नू। यो १ गोली दिनदिनै महसँग खाई पछि मही पिउनाले पाण्डुरोगको नाश हुन्छ। (परीक्षित)

नवायस लौह – सुठो, मरिच, पिप्ला, हर्रो, बर्रो, अमला, मोथे, वायुविडङ्ग र चितुको बोक्रा सबै १०-१० ग्राम लिएर कुटी छानी चूर्ण बनाउनू। त्यसमा लौह भस्म ९ तोला राम्ररी मिसाउनू र सुरक्षित गरी राख्नू। यो औषधी २५० मिलीग्राम लिएर ६ ग्राम मह र ३ ग्राम घिउमा मिसाएर १ मात्राको हिसाबले खान दिनू। पाण्डुरोगको नाश हुन्छ।

मण्डूरयोग – पुरानो मण्डूर अर्थात् फलामको किट ल्याई आगोमा तताउँदै गोमूत्रमा डुबाउँदै जानू। यसरी सात पटक गर्नू। त्यसपछि भस्म बनाएर राख्नू। उक्त भस्म २५० मिलीग्राम लिएर मह र घिउमा मिसाई खान दिनू। यसो गर्नाले शोथसहित पाण्डुरोगको नाश हुन्छ। (परीक्षित)

नीमको पातलाई पानी राखी पिन्नू र १ पाउ जति (२५० मि.लि.) रस निकाल्नू । त्यसमा मिश्री मिसाएर आगोमा केही बेर पकाउनू । सेलाएपछि रोगीलाई खान दिनू । यसले पाण्डुरोगलाई नाश गर्छ । (परीक्षित)

तितेकरेलाको पातको रस (१० मि.लि.) खाए पनि पाण्डुरोगको नाश हुन्छ । (अनुपान-मह)

त्रिफलाको चूर्ण ३ ग्राममा बराबर मह मिसाई दैनिक रूपमा चाट्नाले पाण्डुरोग नष्ट हुन्छ । (परीक्षित)

गुर्जोको चूर्ण ६ ग्राम महमा मिसाएर खान दिनू । अथवा मरिचको चूर्ण १ ग्राम महमा मिसाएर खान दिनू । पाण्डुरोग र कामलाको नाश हुन्छ ।

त्रिफला, गुर्जो, असुरो, कुटकी, चिराइतो र नीमको बोक्रा यी सबै समभाग राखी पकाएर बनाएको काढा सेलाएपछि मह मिसाई खान दिनू । पाण्डुरोग र कामला दुवैमा आराम मिल्छ । (परीक्षित)

ठूलो हर्रोको चूर्णमा समभाग गुड (सख्खर) मिसाएर खान दिएमा सबै किसिमको पाण्डुरोगको नाश हुन्छ ।

पाण्डुरोगमा पथ्यापथ्य – पाण्डुरोगमा शालि चामल, गहुँ, जौ, जङ्गली जनावरको मांसरस, मूगी, मसुरको दाल, खान योग्य छ । फलामको कराहीमा पकाएको दूध, चामलको भात, गहुँको रोटी, मूँग र मसुरोको दाल, मूला, भण्टा, काँचो केरा, सिधे नुन, गाईको घिउ खान हुन्छ । उमालेर सेलाएको पानी खानुपर्छ । चिसो पानीले स्नान गर्नुहुँदैन । चिसो पानी खान पनि हुँदैन ।

२८. कामला रोग (जण्डिस)

पाण्डुरोग लागेको रोगीले बढी मात्रामा अमिलो, पिरो, नुनिलो र तातो तथा तेल आदि पित्त बढाउने पदार्थको सेवन गऱ्यो भने उसलाई कामला रोग हुन्छ । कुनै वेला यो आफैँ (पाण्डुरोग नभएपनि) हुन जान्छ । यकृत् (कलेजो) मा रोग लाग्दा यकृत्बाट पित्त निस्केर सबै पाकस्थलीमा गएन र त्यसबाट अलिकति रगतमा मिल्न गयो भने पनि कामला रोग लाग्छ ।

लक्षण – यस रोगमा आँखा अत्यन्त पहेंलो भएर जान्छ । छाला, नङ र अनुहारको रङ्ग पनि बेसार जस्तै पहेंलो हुन्छ । मल-मूत्र पनि पहेंलो वा रातो हुन्छ । शरीरको रङ्ग वर्षायाममा देखिने ठूलो भ्याकुताको जस्तो हुन्छ । छातीमा जलन हुन्छ र खाएको अन्न पच्दैन, खाने रुचि पनि हुँदैन, शरीर कमजोर भएर

जान्छ । यस रोगमा पित्तको प्रबलताका कारण शरीरका सम्पूर्ण अङ्गहरू पहेंला हुन जान्छन् ।

कामलाका भेदहरू – यो कामला रोग कोष्ठाश्रय र शाखाश्रय गरी दुई किसिमको हुन्छ ।

(१) **कोष्ठाश्रय** – जुन कामला कोष्ठका अङ्गहरू (कलेजो) आदिमा विकृतिका कारण उत्पन्न हुन्छ । यसलाई कुम्भकामला पनि भनिन्छ ।

(२) **शाखाश्रय** – जुन कामला धातुहरूको आश्रयका कारण उत्पन्न हुन्छ त्यसलाई शाखाश्रय भन्छन् ।

कुम्भकामला – जब कामला रोग पुरानो भएर जान्छ र शरीरका धातुहरूमा रुखोपन आउँछ त्यस्तो अवस्थालाई कुम्भकामला भनिन्छ । यसमा रोगीको पेट ठूलो भएर जान्छ । साथै शरीरमा बढी सुन्निने, जोर्नीहरूमा दुख्ने हुन्छ । अङ्गहरू थाक्ने, तन्द्रा (उँघ्नु) र क्षीणता पनि हुन्छ । यसलाई सुश्रुतसंहितामा लाघरक र अलसक पनि भनिएको छ । त्यस अवस्थामा वायु र पित्तको प्रकोपबाट शरीरको रङ्ग हरियो, पहेंलो वा निलो हुन्छ भने त्यसलाई हलीमक भन्छन् । त्यसमा बल र उत्साहको नाश हुन्छ, बढी उँघ्न मन लाग्छ, मन्दाग्नि हुन्छ, शरीर दुख्छ, रिँगटा लाग्ने, पोल्ने भइरहन्छ भने हलीमक रोगको लक्षण भनी बुझ्नुपर्छ ।

कामला रोगको चिकित्सा – हलेदो, त्रिफला, त्रिकटु, वायुविडङ्ग र मण्डूर भस्म यी सबै लिएर चूर्ण बनाई मिसाइदिनू । यो चूर्ण १ ग्राममा मह ६ ग्राम, घिउ ३ ग्राम मिसाएर खान दिनू । कामला रोगको नाश हुन्छ ।

मण्डूर भस्म १२५ मि.ग्रा., मूँगा भस्म १२५ मि.ग्रा., वंशलोचन १ ग्राम, सुकमेलको चूर्ण १ ग्राम, पिप्लाको चूर्ण १ ग्राम यी सबैलाई महमा मिसाई बिहान-बेलुका चाट्ने र सेतो पुनर्नवाको रस पिउने गर्नाले कलेजो सुन्निएको आराम हुन्छ । आँखाको पहेंलोपन तथा ज्वरो पनि जान्छ ।

बर्रोको दाउरा बालेको आगोमा मण्डूरलाई रातो हुने गरी तताएर गोमूत्रमा डुबाउनू । यसरी आठ पटक सम्म गरेपछि त्यसको भस्म बनाउनू । उक्त भस्म महसँग खान दिएमा कुम्भकामला रोगमा आराम हुन्छ ।

मण्डूर, दारुहरिद्रा, हलेदो, त्रिफला र कुटकी सबै समान भाग लिएर चूर्ण बनाउनू । उक्त चूर्ण १ ग्राम, मह ६ ग्राम र घिउ ३ ग्राम मिसाएर खान दिनू । कामला रोग हराउँछ ।

अमला, सुठो, मरिच, पिप्ला, बेसार यी सबैको चूर्ण र मण्डूर भस्म समभाग लिएर मह, घिउ र चिनी मिसाएर खान दिनू । यसबाट जस्तै बढेको कामला भएपनि निको हुन्छ ।

नवायस मण्डूर – सुठो, मरिच, पिप्ला, चितु, वायुविडङ्ग, मोथे, हर्रो, बर्रो, अमला सबै समभाग लिएर कुटी छानी चूर्ण बनाउनू । उक्त चूर्ण जति छ त्यति नै मण्डूर भस्म मिलाई सुरक्षित राख्नू । नवायस मण्डूर तयार हुन्छ । यो औषधी मही, मह, घिउ वा मनतातो पानीसँग सेवन गर्नाले कामला र पाण्डुरोगमा आराम हुन्छ ।

गाईको दूधमा सुठोको चूर्ण मिसाई पिउनाले कठिन कामला पनि ठीक भएर जान्छ । (परीक्षित)

कुटकीलाई पिनेर त्यसमा बराबर मिश्री मिसाई २ चम्चा जति (१० ग्राम) लिएर फाँक्नू । माथिबाट तातो पानी पिउनू । कामला रोगमा आराम दिन्छ । (परीक्षित)

नीमको बोक्रा ३० ग्राम, बोझो १० ग्राम, मरिच २.५ ग्राम सबलाई मसिनो हुने गरी १ पाउ जति (२०० मि.लि.) पानीमा मिसाएर राख्नू । यसको ४ मात्रा गर्नू । हरेक मात्रामा २.५ ग्राम मह मिसाई पिउन दिनू, दूधमा चिनी मिसाएर खान दिनू । यसबाट कामला हराएर जानेछ । पाण्डु रोग र जिउ चिलाउनेबाट मुक्ति मिल्छ । नुन, तेल र अमिलो नखानू ।

तिते करेलाको बियाँलाई पानीमा घोटी नस लिनाले कामलामा आराम मिल्छ ।

सेतो प्याज, गुड, बेसार तीन ओटैलाई मिसाएर नस लिनाले कामला रोग निको हुन्छ ।

घिउकुमारीको रस सुँघ्नाले आँखाको पहेंलोपन हराएर जान्छ ।

कुम्भकामला र हलीमकको चिकित्सा – नीमको रस महमा मिसाई खान दिएमा अथवा शुद्ध शिलाजीत गोमूत्र (गहुँत) सँग खान दिएमा कुम्भकामला हराएर जान्छ ।

गुर्जोको रस १ लिटर, गुर्जोको कल्क ५० ग्राम, भैँसीको घिउ २५० ग्राम तथा भैँसीको दूध १ ली. लिएर घृतपाकविधि अनुसार पकाउनू र छानेर राख्नू । यो घिउ १० ग्राम मात्रामा प्रतिदिन खान दिनू । हलीमक रोग निश्चय नै आराम भएर जान्छ ।

त्रिफला (हर्रो, बर्रो, अमला), गुर्जो, असुरो, कुटकी, चिराइतो र नीमको बोक्राको मोटो चूर्ण बनाई १० ग्राम लिनू र २०० मि.लि. पानीमा पकाई ५० मि.लि. बाँकी भएपछि छानेर राख्नू । यो काढा २ मात्रा गर्नू । एक मात्रा बिहान र अर्को मात्रा साँझमा ३ ग्राम मह मिसाई खान दिनू । हलीमक, पाण्डु र कामला रोग हराएर जान्छ ।

हर्रोको चूर्ण ६ ग्राम लिएर त्यसमा ६ ग्राम सख्खर वा मिश्रीको चूर्ण मिसाई खानाले पाण्डु, कामला र हलीमक रोगको नाश हुन्छ । (परीक्षित)

पुनर्नवाष्टक क्वाथ – सेतो फूल फुल्ने हरियो पुनर्नवा, नीमको हरियो बोक्रा, पर्वरको हरियो पात, सुठो, कुटकी, हरियो गुर्जो, देवदारु र हर्रो सबैको ३-३ ग्राम लिएर ५०० मि.लि. पानीमा पकाउनू। चौथाई (१२५ मि.लि.) पानी बाँकी छँदा उतारेर छान्नू। सेलाएपछि त्यसमा ६ ग्राम मह मिसाई दैनिक रूपमा खान दिनू। यस काढाले सबै किसिमको शोथमा (जिउ सुन्निएको अवस्था) आराम हुन्छ। पाण्डुरोगको शोथमा यो काढा खान दिनुपर्छ। शोथ नाश गर्नका लागि यो रामबाण हो। यस काढाले पुरानो शोथ, ज्वर, ज्वरका साथ फियो र कलेजो खराब भएर सारा शरीर सुन्निएको अवस्थामा आराम दिन्छ। पेटका अरू रोगहरूका कारण शरीरमा शोथ भएमा, गर्भवती वा सुत्केरी महिलाको शरीरको शोथमा पनि यस काढाले धेरै लाभ दिन्छ। पुरानो ज्वरोपछिको शोथका लागि अचूक औषधी हो।

सेतो पुनर्नवा शोथको (सूजन) राम्रो औषधी हो। यसको २ तोला (२५ मि.लि.) स्वरसमा ६ ग्राम मह मिसाएर दिनमा २-३ पटक दिनाले सूजन हराएर जान्छ। जुन शोथ दिनमा बढ्छ, रातमा घट्छ, सूजनमा आँला राख्दा गडेर जान्छ, मुटुको चाल धेरै हुन्छ, शरीर पनि रुखो हुन्छ त्यसमा दशमूलको काढाले हित गर्छ। शोथ, ज्वरका लागि अचूक छ। खोकी पनि छ भने २-३ रत्ती (२५०-३७५ मि.ग्रा.) पिप्लाको चूर्ण र ५ ग्राम मह मिसाउनू।

पुनर्नवादि तेल – त्रिफला (हर्रो, बर्रो, अमला), त्रिकटु (सुठो, मरिच, पिप्ला), काकडासिंगी धनियाँ, जाइफल, कचूर, दारुहरिद्रा, प्रियंगु, देवदारु, रेणुका, कुठ, पुनर्नवाको जरा, ज्वानू, कालो जिरा, सुकमेल, दालचिनी, पद्मचाल, तेजपात, नागकेशर सबै १०-१० ग्राम लिएर चूर्ण बनाउनू। अब सिलौटामा राखी पानी मिसाएर पिन्नू र लेदो बनाउनू। सेतो पुनर्नवा ६.५ किलो र पानी ३२ लिटर राखी मन्द आँचमा पकाउनू। आठ लिटर पानी बाँकी भएपछि उतार्नू र छानेर अर्को कराहीमा राख्नू। त्यसमा पहिले बनाएको औषधीहरूको लेदो, पुनर्नवाको काढा र तिलको तेल २ लिटर राखी मन्द अग्निमा पकाउनू। तेलमात्र बाँकी भएपछि उतार्नू। यो पुनर्नवादि तेल तयार हुन्छ। यसको मालिस गर्नाले पाण्डु, कामला, हलीमक, श्वास, फियोको रोग, पुरानो ज्वरो सबै नाश हुन्छन्। (परीक्षित)

२९. प्रमेह रोग (दूषित पिसाब संबन्धी)

परिचय – पिसाब बढी मात्रामा, बाक्लो र मैलो भइरहनु प्रमेह रोगमा देखिने सामान्य लक्षण हो।

कारणहरू – व्यायाम नगर्नु, दिनरात बसी-बसी बिताउनु, धेरै समयसम्म

सुत्ने बानी गर्नु, दूध, दही, माछा, नयाँ अन्न (चामल, गहुँ आदि), भेडा-बाख्राहरूको मासु, गुड र गुडबाट बनेका परिकार (चिनी, मिश्री, मिठाई आदि) बढी मात्रामा दिनदिनै खाने गर्नाले प्रमेह रोग उत्पन्न हुन्छ ।

सम्प्राप्ति – उक्त कारणहरूद्वारा कुपित भएको कफले बस्तिमा गएर मेद धातु, मांस र शरीरको जलको अंशलाई दूषित बनाएर कफज प्रमेहको कारण बन्छ । उक्त कारणहरूका साथ अत्यधिक अमिलो, पिरो, आदि पित्त बढाउने आहारको पनि सेवन गरेको खण्डमा कुपित पित्तले तिनै मांस, मेद धातु र शरीरको जलीयांशलाई दूषित पारी पित्तज प्रमेहको कारण बन्छ ।

कुपित तीन दोषहरूमध्ये वायु बढी कुपित भएको अवस्थामा त्यस वायुले वसा, मज्जा, ओज र लसीका धातुहरूलाई दूषित बनाई वस्तिमा पुऱ्याउँछ अनि वातज प्रमेहको कारण बन्छ ।

प्रमेह रोगका भेदहरू – चिकित्साको सुविधाको लागि प्रमेहका २० भेदहरू मानिएको छ । तिनमा कफज प्रमेह १० प्रकारका, पित्तज प्रमेह ६ प्रकारका र वातज प्रमेह ४ प्रकारका हुन्छन् ।

कफज प्रमेहका भेदहरूको लक्षण एवं मुख्य चिकित्सा –

(१) **उदकमेह** – यसमा रोगीको पिसाब स्वच्छ, शीतल, गन्धहीन, अलि मैलो पानीजस्तो र चिल्लो हुन्छ । पिसाब फेर्दा मूत्रनलीमा चिसो पानी बगेजस्तो भान हुन्छ । पिसाब बढी मात्रामा निस्कन्छ ।

(२) **इक्षु प्रमेह** – यस रोगमा रोगीको पिसाब उखुको रसजस्तै रङ्गको र गुलियो हुन्छ । रोगीको पिसाबमा कमिला झुम्मिन्छन् । यो मधुमेह जस्तो असाध्य हुँदैन ।

(३) **सान्द्र प्रमेह** – यस रोगमा रोगीको पिसाब कुनै भाँडामा राखेको केही समयपछि बाक्लो भएर आउँछ अर्थात् पिँधमा बाक्लो पदार्थ जम्छ ।

(४) **सुरामेह** – यस रोगमा रोगीको पिसाब (भाँडामा राख्दा) माथि तिर रक्सीजस्तै सफा र तलतिर गाढा हुन्छ । पिसाबको रङ्ग मैलो हुन्छ ।

(५) **पिष्टमेह** – यसमा रोगीको पिसाब चामल पिनेर मिसाएको पानीजस्तो सेतो र मात्रामा बढी हुन्छ । पिसाब गर्ने बेलामा जिउ सिरिङ्ग हुन्छ ।

(६) **शुक्रमेह** – यसमा पिसाबसँगै वीर्य मिसिएर आउँछ वा पिसाबको रङ्ग वीर्य जस्तै सेतो हुन्छ ।

(७) **सिकता प्रमेह** – यस रोगमा रोगीको पिसाबमा बालुवाको जस्तो

स-साना कणहरू आउँछन् । सिकता प्रमेह र अश्मरीको भेद शर्करा दुवैमा कणहरू आउँछन् - सिकता प्रमेहमा पिसाबसँग सेतो वर्णका कणहरू निस्कन्छन् । शर्करामा रातो रङ्गका कणहरू निस्कन्छन् । सिकता प्रमेहमा पिसाब गर्दा दुख्ने हुन्छ । शर्करा रोग प्रायः सूजाक भैसकेपछि हुन्छ ।

(८) **शीत प्रमेह** - यस रोगमा रोगीको पिसाब धेरै नै शीतल, गुलियो र बढी मात्रामा धेरै पटक हुन्छ । पिसाब फेर्ने बेलामा जिउ काम्छ ।

(९) **शनैर्मेह** - यो रोग लागेको मानिसले बिस्तारै थोरै मात्रामा पिसाब गर्छ । पिसाब फेर्न बढी समय लाग्छ तर पिसाब कम मात्रामा हुन्छ । पिसाब फेर्दा कुनै किसिमको पीडा हुँदैन ।

(१०) **लालाप्रमेह** - यसमा रोगीको पिसाब च्यालजस्तो ल्यार्र चुहुने र चिप्लो हुन्छ ।[1] यसको उपचारको लागि त्रिफलाको काढा राम्रो हुन्छ ।[2]

पित्तज प्रमेहका भेदहरूको लक्षण र मुख्य उपचार

(१) **क्षार प्रमेह** - यस रोगमा रोगीको पिसाबको गन्ध, रङ्ग, रस र स्पर्श क्षार (नुनिलो) मिसाएको पानीजस्तो हुन्छ । यसलाई त्रिफलाको हिमले हित गर्छ ।

(२) **नील प्रमेह** - यसमा रोगीको पिसाब निलो अथवा खरानी रङ्गको हुन्छ । यसलाई पिपलको रुखको बोक्राको काढा अथवा हिम लाभदायक हुन्छ ।

---

१. सुश्रुतसंहितामा शीतमेह र लालामेहको ठाउँमा फेनमेह र लवणमेहको वर्णन पाइन्छ तर ती दुवैको लक्षण शीतमेह अथवा लालामेहसँग मिल्दैन, फरक किसिमको हुन्छ । फेनमेह भएको अवस्थामा रोगीको पिशाबमाथि फींज जमेर आउँछ ।

२. रोगीको प्रकृति गरम छ भने काढाको सट्टा हिम दिनुपर्छ । अर्थात् त्रिफलालाई राती पानीमा भिज्न दिएपछि बिहान छानेर खान दिनुपर्छ । रोगीको प्रकृति ठण्डा छ भने काढामा (५० मि.लि.) ३ ग्रामदेखि १२ ग्रामसम्म मह मिलाएर दिनुपर्छ । काढा बनाउनुपर्दा आवश्यक पर्ने औषधी २५-३० ग्राम लिएर माटाको भाँडामा २००-२२५ मि.लि. पानी राखी पकाउनुपर्छ । एक चौथाई अर्थात् ५०-५५ मि.लि. जति पानी बाँकी भएपछि ओराली छानेर सेलाएपछि मह मिसाएर खान दिनुपर्छ ।

(३) **काल प्रमेह** – यसमा रोगीको पिसाब कालो मसीजस्तै हुन्छ । यसलाई नीमको भित्री बोक्राको काढा अथवा हिमले फाइदा गर्छ । अथवा अमला, गुर्जो र पर्वरको पातको काढा अथवा हिमले हित गर्छ ।

(४) **हारिद्र मेह** – यसमा रोगीको पिसाब तितो रसयुक्त र हेर्दा बेसारजस्तै गाढा पहेंलो रङ्गको हुन्छ । पिसाब गर्ने वेलामा पोल्छ । यसमा लोध, सुगन्धवाल, सेतो चन्दन र धयेंरोको फूलको काढा वा हिमले आराम दिन्छ ।

(५) **माञ्जिष्ठ मेह** – यस रोगमा रोगीको पिसाब मजिठोको काढा जस्तै रातो वर्णको र दुर्गन्धले युक्त हुन्छ । यसलाई नीमको बोक्रा, अर्जुन वृक्षको बोक्रा र कमलगट्टाको गुदीको काढा वा हिमले हित गर्छ ।

(६) **रक्त प्रमेह** – यसमा रोगीको पिसाब दुर्गन्धी, तातो, क्षारयुक्त (केही नुनिलो) तथा रगत जस्तै रातो हुन्छ । यसलाई रातो कमल, निलो कमल, पियङ्गु र पलासको फूलको काढामा मिश्री मिसाई खान दिएमा अवश्य लाभ हुन्छ ।

उक्त ६ प्रकारका प्रमेहहरूमा विशेष किसिमबाट जुलार्फ दिएपछि औषधी दिनु राम्रो हुन्छ । त्यसका लागि मिश्रीलाई पिनेर धुलो बनाउनू र २–२ घण्टामा त्यो धुलो २–३ ग्राम मात्रामा फाँकेर १ ग्लास पानी पिउनुपर्छ । यसले मूत्रमार्ग शुद्ध हुन्छ ।[1] साथै भित्री गर्मी र बेचैनी दूर हुन्छ । त्यसपछि औषधी काढा खान दिँदा अवश्य लाभ हुन्छ ।

वातज प्रमेहहरूका लक्षणहरू –

(१) **वसा मेह** – यस रोगमा रोगीको पिसाब बोसोजस्तो हुन्छ ।

(२) **मज्जामेह** – यस रोगमा मज्जासहित अथवा मज्जाजस्तो पिसाब हुन्छ ।

(३) **क्षौद्रमेह** – यसमा पिसाब महको रङ्गको र गुलियो हुन्छ । यसमा कमिला र झिंगा झुम्मिरहन्छन् ।

(४) **हस्तिमेह** – यस प्रमेहवालालाई मत्त हात्तीको जस्तो वारंवार वेगरहित धारायुक्त पिसाब रोकी रोकी हुन्छ । अर्थात् हस्तिमेहमा सुरुमा कुनै वेग हुँदैन, पिसाबको मात्रा हात्तीको जस्तै अधिक हुन्छ । पिसाब तारजस्तो मसिनो धारका साथ हुन्छ तर कहिलेकाही रोकिएर पनि जान्छ ।

---

१. मिश्रीका साथमा खाएको पानी भित्र रहँदैन, निस्केर जान्छ ।

विभिन्न प्रमेहहरूको परस्पर भिन्नता

हस्तिमेहमा पिसाब बढी मात्रामा र रोकी रोकी हुन्छ तर शनैर्मेहमा पिसाबको मात्रा कम हुन्छ ।

पिष्ट प्रमेहमा पनि पिसाब हस्तिमेहमा जस्तै बढी मात्रामा हुन्छ तर पिष्ट प्रमेहमा पिसाबको रङ्ग चौलानी जस्तो हुन्छ । हस्तिमेहमा पिसाब हात्तीको मदजस्तो हुन्छ । पिष्ट मेहमा पिसाब गर्ने वेलामा जिउ सिरिङ्ग (रोमाञ्च) हुन्छ, हस्तिमेहमा त्यस्तो लक्षण हुँदैन ।

इक्षुमेह र क्षौद्रमेह – इक्षुमेहमा पिसाबको रङ्ग उखुको रसजस्तो र गुलियो हुन्छ, क्षौद्रमेहमा पिसाबको रङ्ग महजस्तो र स्वादमा गुलियो-टर्रो हुन्छ । कमिला दुवैमा बस्छन् ।

इक्षुमेह कफको प्रकोपबाट उत्पन्न र साध्य हुन्छ । क्षौद्रमेह वातज र असाध्य हुन्छ ।

सिकतामेह र शर्करा – सिकतामेहमा पिसाबसँग सेतो बालुवा जस्ता कणहरू आउँछन्, शर्करामा रातो रङ्गका कणहरू आउँछन् ।

शनैर्मेह र मूत्रकृच्छ – शनैर्मेहमा पिसाब रोकिएर आएपनि कुनै पीडा हुँदैन, मूत्रकृच्छमा पिसाब रोकिएर जलन र पीडाका साथ आउँछ ।

उदकमेह र शीतमेह – उदकमेहमा पिसाब शीतल हुन्छ र शीतमेहमा अझ बढी शीतल हुन्छ । उदकमेहवालालाई पिसाब गर्दा शरीरमा अलिकति चिसोपनको आभासमात्र हुन्छ, उसलाई जाडो लाग्दैन र शरीरमा कम्पन पनि हुँदैन । शीतमेहमा पिसाब गर्दा जिउ जाडोले काम्छ, शरीरमा रोमाञ्च पनि हुन्छ ।

सान्द्रमेह र सुरामेह – दुवैको पिसाबलाई कुनै भाँडोमा राख्यो भने पिंधमा गाढा पदार्थ जमेर आउँछ । त्यसमा पनि सान्द्रमेहमा पिसाब पूरै बाक्लो भएर आउँछ, सुरामेहमा चाहिं माथि पातलो नै रहन्छ र तलतिर बाक्लो हुन्छ । पिसाबको रङ्ग माटो मिसिएको रातो रङ्गको हुन्छ ।

माञ्जिष्ठ मेह र रक्तमेह – माञ्जिष्ठ मेहमा पिसाबको रङ्ग मजिठोको काढाजस्तो हुन्छ । रक्तमेहमा रगतको जस्तो रातो हुन्छ ।

माञ्जिष्ठ मेहमा काँचो दुर्गन्ध हुन्छ, रक्त प्रमेहमा दुर्गन्ध हुँदैन । रक्त प्रमेहमा पिसाब धेरै तातो पनि हुन्छ ।

सिकतामेह र मूत्रकृच्छ – दुवैमा पिसाब गर्दा दुख्छ । सिकतामेहमा पिसाब फेर्दा दुखाइका साथ बालुवाजस्ता कणहरू निस्कन्छन्, मूत्रकृच्छमा दुखाई बढी भएपनि बालुवा जस्ता कणहरू निस्कन्नन् ।

प्रमेहको साध्यासाध्यता – कफज १० प्रमेहहरू साध्य हुन्छन्, पित्तज ६ प्रमेहहरू कष्टसाध्य वा याप्य हुन्छन्, वातज ४ प्रमेहहरू असाध्य हुन्छन् । वातज प्रमेह सारा धातुहरूको क्षयपछि उत्पन्न हुन्छ ।

कफज प्रमेहका उपद्रवहरू – अन्न राम्ररी पच्दैन, अरुचि, वमन, तन्द्रा, रुघा र खोकी हुन्छ । शरीर र पिसाबमा झिंगा बस्नेगर्छन् । आलस्य हुन्छ, मांसको वृद्धि हुन्छ । वारंवार रुघा लाग्नाले टाउको दुख्न थाल्छ ।

पित्तज प्रमेहका उपद्रवहरू – तल्लो पेट र मूत्राशयमा निकै दुख्छ । अण्डकोष पनि तात्ने, दुख्ने हुन्छ । ज्वर आउने, जिउ पोल्ने, तिर्खा बढी लाग्ने हुन्छ । खोकी लाग्ने, अमिलो डकार आउने, पखाला चल्ने हुनसक्छ । लिङ्गको नलीभित्र सियोले घोचेसमान दुख्छ र घाउ हुन्छ । नाक, मुख र आँखाबाट धुवाँ निस्किेको जस्तो लाग्छ । निद्रा कम लाग्ने वा नलाग्ने हुन्छ । आँखा, दिसा, पिसाब सबै पहेंला भएर जान्छन् ।

वातज प्रमेहका उपद्रवहरू – उदावर्त हुनु, शरीर काम्नु, छातीमा दुख्नु, निद्रा कम हुनु, शरीर सुक्दै जानु, खोकी लाग्नु र श्वास हुनु, सबै किसिमको खानाको चाहना हुनु यी लक्षणहरू देखिन्छन् ।

माथि लेखिएका सबै उपद्रवहरू उत्पन्न भएको, धातुहरूको बढी मात्रामा पिसाबबाट स्राव भएको र पिडकाहरू उत्पन्न भएको अवस्थामा प्रमेह रोग असाध्य हुन्छ ।

मधुमेह रोग लागेको मानिसको सन्तानमा बीजदोषका कारण मधुमेह उत्पन्न भएको खण्डमा त्यो पनि असाध्य हुन्छ ।

उक्त सबै २० किसिमका प्रमेहहरूको सुरुमै उपचार नगरेको खण्डमा ती सबै मधुमेहका कारण बन्छन् ।

मधुमेहको लक्षण – यसमा रोगीको पिसाब महजस्तै बाक्लो, चिप्लो, पहेंलो वर्णको र गुलियो हुन्छ । रोगीको शरीरमा गुलियोपन व्याप्त हुन्छ । यो रगतमा ग्लूकोजको मात्रा निकै बढ्नाले हुन्छ ।

मधुमेहमा जुन दोष विशेष रूपमा बढेको छ त्यसैको लक्षण पनि देखिन्छ । मधुमेह रोग लागिसकेपछि तत्काल उपचार नगरी अपथ्यहरू खाने गरिरहेमा शरीरको मासु बढी भएको भाग वा जोर्नीहरूमा अनेक किसिमका पिडकाहरू उत्पन्न हुन्छन् – तिनीहरूलाई प्रमेहपिडका भनिन्छ ।

मधुमेहमा पिसाबको परीक्षाविधि – एउटा काँचको नलीमा पिसाब लिनू । त्यसमा पिसाबको आधा जति लाइकर पोटाश राख्नू र त्यसलाई

हल्लाएर स्प्रिट लैम्प वा कुनै बत्तीमा तताउनू । पिसाबमा चिनी भएको खण्डमा पिसाबको रङ्ग खैरो वा पोर्ट वाइनको रङ्गजस्तै भएर जान्छ । एक औँस पिसाबमा १०-२० ग्रेनसम्म चिनी छ भने रोगलाई असाध्य सम्झनू । यस रोगमा पिसाब बारंबार तथा मात्रामा बढी हुन्छ अर्थात् २४ घण्टामा १० देखि ३० सेर (लिटर) सम्म पिसाब हुन्छ जसमा शरीरमा भएको चिनी आधा छटाक (२५ ग्राम) देखि १ सेरसम्म निस्केर जान्छ । यसमा तिर्खा बढी लाग्छ, पिसाबमा कहिलेकाहीं पोल्ने हुन्छ र पिप पनि निस्कन्छ । पिसाबलाई कुनै भाँडोमा केही बेर राख्दा त्यसमा फिंज जस्तो आउँछ । यसमा भोक पनि बढी लाग्छ । कहिलेकाहीं अरुचि पनि हुन्छ । रोगी अति नै कमजोर भएर जान्छ ।

प्रमेहपिडकाहरू – प्रमेह पिडकाहरू १० ओटा हुन्छन् – शराबिका, कच्छपिका, जालिनी, विनता, अलजी, मसूरिका, सर्षपिका, पुत्रिणी, विदारिका र विद्रधि ।

प्रमेहपिडकाहरूको लक्षण

(१) **शराविका** – यो पिडका किनाराहरूमा उठेको र बीचमा भित्र गडेको हुँदा माटाको दियोजस्तै देखिन्छ ।

(२) **सर्षपिका** – यो पिडका पहेंलो सर्स्यूं जस्तै रङ्गको र त्यस्तै सानो आकारको हुन्छ ।

(३) **कच्छपिका** – यो पिडका कछुवाको पिठ्यूँजस्तै माथि उठेको र केही आयताकार हुन्छ । यसमा दाह पनि हुन्छ ।

(४) **जालिनी** – यो पिडका मासुको जालोले घेरिएको हुन्छ । यसमा बढी जलन हुन्छ ।

(५) **विनता** – यो पिडका पिठ्यूँ वा पेटमा हुन्छ । यसको रङ्ग निलो र आकार ठूलो हुन्छ । यसमा निकै दुख्छ र स्राव पनि बढी हुन्छ ।

(६) **पुत्रिणी** – यो पिडका पनि ठूलो आकारको हुन्छ । यसको वरिपरि, छेउमा अरू स-साना पिडकाहरू पनि हुन्छन् ।

(७) **मसूरिका** – मसुरोको गेडाको जस्तो रङ्ग र त्यत्तिकै आकारको पिडका हुन्छ ।

(८) **अलजी** – यो पिडका रातो वा सेतो रङ्गको हुन्छ । यसको वरिपरि फोकाहरू हुन्छ । यो कष्ट दिने हुन्छ ।

(९) **विदारिका** – यो पिडका विदारीकन्द जस्तो गोल आकारको र छाम्दा कठिन (साह्रो) हुन्छ ।

(१०) **विद्रधिका** - यो पिडका विद्रधिको लक्षणले सहित हुन्छ।[१] यी पिडकाहरू प्रमेहको उपद्रवका रूपमा प्रायः उत्पन्न हुन्छन्। अतः उक्त २० किसिमका प्रमेहहरूमा जुन-जुन दोष बढी हुन्छ त्यही अनुरूप त्यसका साथ हुने पिडकाहरूमा पनि हुन्छ। अर्थात् कफज प्रमेहमा कफ बढी भएजस्तै त्यसका साथ हुने पिडकामा पनि कफको दोष बढी हुन्छ।

कहिलेकाहीं प्रमेह रोग नभएपनि मेद धातुको दोषबाट यी पिडकाहरू उत्पन्न हुनसक्छन्। जबसम्म दोषले कुनै दूष्य धातुलाई पूरै दूषित पार्दैन तबसम्म यी पिडकाहरू स्पष्ट रूपमा देखिन्नन्।

गुदद्वार, मुटु वरिपरि, शिरमा, काँध वा पिठ्यूँमा र अरू मर्महरूमा उत्पन्न तथा उपद्रवहरूले[२] युक्त पिडकाहरू अग्नि दुर्बल हुने रोगीमा असाध्य हुन्छन्।

प्रमेहको चिकित्साको सिद्धान्त - प्रमेह रोगमा पिसाब सफा गर्ने औषधी दिएपछि प्रमेहको औषधी गर्नाले छिटो फाइदा हुन्छ। जब खूब पिसाब भई मूत्रनली सफा हुन्छ र वीर्यको गर्मी पनि निक्लन्छ अनि प्रमेहको औषधी दिनुपर्छ।

इन्द्रिय जुलाफपछि १ पाउ दूधमा २ तोला (२५ मि.लि.) अडेरको तेल (Caster oil) पिउन दिनुपर्छ अथवा शरीर शोधन चूर्णले पेट सफा गर्नुपर्छ।

रोगीलाई पहिले नै दूध, घिउ आदि पौष्टिक पदार्थ र तागत दिने औषधी आदि दिनु हुँदैन। यसबाट प्रमेह झन् बढेर जान्छ।

प्रमेह ठीक भएपछि धातुपुष्टिको लागि औषधी दिनुपर्छ।

शरीरशोधन चूर्ण - काला दाना ३० ग्राम, सनायपत्ती ३० ग्राम र कालो नुन १० ग्राम ठीक पार्नू। पहिले काला दाना र सनाय पत्ती कुटी छानी मिसाउनू। अब नुनलाई पिनेर त्यसमा मिसाइदिनू। यो चूर्ण कब्जियतलाई मेटाउन र दिसा सफा गराउन उत्तम योग हो। यसको खूबी यो छ कि, यसले दिसालाई पातलो गराउँदैन तर पेटको सारा मल दैनिक दिसाको रूपमा निस्केर जान्छ, कुनै कष्ट हुँदैन, न त कमजोरी नै हुन्छ। विहान १ वा २ पटक सफा दिसा भएर शरीर हल्का हुन्छ।

---

१. भित्रसम्म गडेको, बढी दुख्ने, गोलो वा चेप्टो आकारको स्थानीय शोथ वा पिडकालाई विद्रधि भनिन्छ -

महामूलं रुजावन्तं वृत्तं वा ऽप्यथवा ऽऽयतम्।
स विद्रधिरिति ख्यातो विज्ञेयः षड्विधश्च सः॥ - माधव निदान।

२. मासु खुम्चिनु, ज्वरो आउनु, खोकी लाग्नु, बढी प्यास लाग्नु, हिक्का हुनु, विसर्प र मर्महरूमा वेदना हुनु यी पिडकाहरूमा देखिने उपद्रव हुन्।

यसको मात्रा ३-६ ग्रामसम्म हुन्छ। राती सुत्ने वेलामा १ मात्रा चूर्ण फाँकेर माथिबाट मनतातो पानी पिउनुपर्छ। यो खाँदा पेट दुखेजस्तो लाग्छ किनकि यो औषधीले आन्द्रामा टाँसिएको मललाई खुर्केर ल्याउँछ यस्तो वेलामा अलिकति मुखमा लिएर चुस्नाले चाँडै नै मल निस्केर जान्छ। यो राम्रो उपाय हो।

जब प्रमेहको रोगीको पिसाब सफा, ज्यालरहित, तितो वा कटुरसयुक्त हुन्छ अनि मात्र रोग ठीक भयो भनी सम्झनुपर्छ।

प्रमेह रोगमा खान योग्य कुराहरू – पुरानो बासमती चामल, कोदो, गहुँको रोटी, चना, रहर, गहत, मूँग आदिको दाल, करेलो तथा जङ्गली जनावरहरूको मासुको रस यी सबैले हित गर्छन्। यसमा दूध-घिउ कमै मात्रामा खानुपर्छ। शिलाजीत र मह प्रमेहमा अति लाभदायक हुन्छन्। जौको लिटो महसँग खानाले प्रमेहलाई धेरै फाइदा गर्छ।

प्रमेहको सामान्य चिकित्सा – सिधे नुन, घिउ, मरिच, घिउकुमारीको गुदी सबै मिसाएर खाएमा प्रमेह अवश्य नष्ट हुन्छ।

महुवाको बोक्रा ६ ग्राम, मरिच ५०० मिलीग्राम दुवैलाई सिलौटोमा पानीसँग पिनेर खानाले असाध्य प्रमेह पनि नष्ट हुन्छ।

गन्धकलाई गाईको दूधमा शुद्ध पारी मिश्री मिसाई सेवन गर्नाले प्रमेह रोग शान्त हुन्छ। यसको मात्रा अग्निबल अनुसार १-२ ग्रामदेखि ४-६ ग्रामसम्म दिन सकिन्छ। त्यसमा समभाग मिश्री मिसाई दूधसँग सेवन गर्दा ३ महिनामा प्रमेह तथा अन्य रोगहरूलाई आराम गर्छ। (अनेक पटक परीक्षित)

त्रिफलाको चूर्ण महमा मिसाई चाट्नाले पुरानो प्रमेह पनि नष्ट हुन्छ। यसमा हर्रो १ भाग, बर्रो २ भाग र अमला ४ भाग मिसाएर चूर्ण बनाउनुपर्छ। यसको मात्रा ३ ग्रामदेखि १२ ग्रामसम्म हुन्छ। वयस्क व्यक्तिले १२ ग्राम त्रिफलामा १२ ग्राम मह मिसाएर ३-६ महिनासम्म सेवन गरेमा प्रमेह रोग नष्ट हुन्छ। (परीक्षित)

बेसारको धुलो २ ग्राममा अमलाको रस १२ मि.लि. र मह १२ ग्राम मिसाई खाने गर्नाले निश्चय नै प्रमेह नष्ट हुन्छ। (परीक्षित)

नीमको रुखमा बढेको गुर्जो ल्याई कुट्नु र कपडछान गरी रस निकाल्नू। उक्त रस २० मि.लि.मा १२ ग्राम मह र बेसार १ ग्राम मिसाई २१ दिन सेवन गर्नाले प्रमेह रोग नष्ट हुन्छ। (परीक्षित)

२ ग्राम शिलाजीतलाई (शुद्ध) १२ ग्राम महमा मिसाई चाट्नाले २१ दिनमा प्रमेहलाई शान्त पार्दछ। (परीक्षित)

त्रिफलाको चूर्ण १२ ग्राम र शुद्ध शिलाजित २ ग्राम, मह १२ ग्राममा मिसाई चाट्नाले सबै किसिमका प्रमेहहरू नष्ट हुन्छन्। (परीक्षित)

शिलाजीत, सुकमेल, शंखपुष्पी र मिश्री सबै बराबर मात्रामा लिएर कुटी-छानी चूर्ण बनाउनू। त्यो चूर्ण ४ ग्राम मात्रामा पानीसँग सेवन गराउनू। सबै किसिमका प्रमेहहरू नष्ट हुन्छन्। (परीक्षित)

शुद्ध शिलाजीत, वंगभस्म, सुकमेल, वंशलोचन समभाग लिएर महसँग खलगरी २५० मिलीग्रामको गोली पार्नू। आफ्नो अग्निबल अनुसार १ वा २ गोली बिहान-बेलुका गाईको दूधसँग निल्ने गर्नू। प्रमेह, बहुमूत्र, धातुविकार, दुर्बलता निश्चय ठीक हुन्छ। (परीक्षित)

सिमलको बोक्राको रस, मह र बेसारसँग निल्नाले सबै किसिमका प्रमेहका लागि रामवाण नै हुन्छ। यो संग १२५-२५० मिलीग्राम वंगभस्म पनि खाएमा अति उत्तम हुन्छ। युवक मानिसका लागि १२५-२५० मिलीग्राम वंग भस्म ६ ग्राम महमा मिसाई चाटेर माथिबाट २ तोला (२५ मि.लि.) सिमलको बोक्राको स्वरसमा १२ ग्राम मह र २ ग्राम बेसारको धुलो मिसाई खान दिनू।

शिशौको पात २४ ग्राम, मरिच १ ग्राम दुवैलाई पिनी २०० मि.लि. पानीमा मिसाई पिउनाले प्रमेह, सूजाक रोग र शरीरको गर्मी नष्ट हुन्छ। यसको सेवन गर्दा अमिलो र गुलियो कुरा बार्नुपर्छ - खानुहुँदैन।

चिर्मिटी (गुञ्जा) को पातको रस १२-२४ मि.लि. मात्रामा गाईको दूधसँग पिउनाले प्रमेह नष्ट हुन्छ।

बबूलका नरम कोपिलाहरू १२ ग्राम जति लिएर सिलौटोमा पिन्नू। बराबर मात्रामा मिश्री मिसाई पानीसँग सेवन गराउनू। यसो गर्नाले २१ दिनमै सबै किसिमका प्रमेहहरू नष्ट हुन्छन्। यो औषधी प्रमेह र स्वप्नदोषका लागि परीक्षित हो कहिल्यै फेल खाँदैन। यसमा हरियो पात नपाइएमा सुख्खा पात राख्न सकिन्छ। त्यसको मात्रा ४ ग्राम मात्र हुन्छ।

सेतो सिमलको कन्दलाई मसिनो टुक्रा पारी सुकाएर कुटी छानी चूर्ण बनाउनू। बिहानीपख त्यो चूर्ण ६ ग्राम र घिउ १२ ग्राम, मिश्री ६ ग्राम र जाइफलको चूर्ण ३७५ मिलीग्राम मिसाई खानाले प्रमेह नष्ट भई बलवीर्य बढ्छ। कन्द पाउन सकिएन भने सिमलको बोक्राको चूर्ण सेवन गर्नुपर्छ। (परीक्षित)

सफा ढुंगामा अलिकति पानी राखी निर्मलीलाई चन्दन जस्तै घोटेर २ ग्राम जति लिनू र त्यसमा ७५० मिलीग्राम मरिचको चूर्ण मिसाई चाट्न दिनू। यसबाट प्रमेह लगायत समस्त धातुरोग नष्ट हुन्छन्। (अनेक पटक परीक्षित)

तालमखानालाई दूधमा पकाएर खानाले प्रमेहबाट छुटकारा मिल्छ।

तालमखाना, गोखरु, मुसली समभाग लिएर चूर्ण बनाई खानाले र माथिबाट धारोष्ण दूध पिउनाले धातु रोगमा उपकार हुन्छ। (परीक्षित)

आधा पाउ (१०० ग्राम) सफा गहुँलाई राती पानीमा भिजाइदिनू । बिहान त्यो सबै सिलौटोमा पिनेर मिश्री मिसाई खानाले प्रमेहमा धेरै लाभ हुन्छ । यसलाई २१ दिनसम्म सेवन गर्नुपर्छ । (परीक्षित)

बेसार, अमला, त्रिफला, गुर्जो, शिलाजीत, सिमलको बोक्रा, मुसली र वंग भस्म यी सबै प्रमेहका लागि उत्कृष्ट औषधी हुन् ।

ल्वाङ, चितु, सेतो चन्दन, नागरमोथा, खस, सुकमेल, कालो अगर, वंशलोचन, अश्वगन्धा, शतावरी, गोखुर, जाइफल, गुर्जो, निशोथ, नगर, नागकेशर, कमलगट्टा सबलाई समभाग लिएर कुटी छानी चूर्ण बनाउनू र तयार चूर्ण बराबर मिश्री पिनी मिसाउनू । यो चूर्ण ६ ग्रामदेखि १२ ग्रामसम्म बिहान १ पटक पानीसँग सेवन गर्नाले सबै किसिमका प्रमेहहरू नष्ट हुन्छन् । यो प्रथम श्रेणीको औषधी हो ।

शतावरी अर्थात् कुरिलोको सुकेको जरालाई कुटी छानी चूर्ण बनाउनू । त्यसलाई शतावरीको जराको रस वा काढामा भिजाएर घाममा सुकाउनु । यसरी २१ पटकसम्म रसमा भिजाउने र सुकाउने काम गर्नू । २१ पटक सुकाइसकेपछि त्यसमा बराबर भाग मिश्री मिलाई राख्नू । यो चूर्ण ३ देखि ६ ग्रामसम्मको मात्रामा बिहान-बेलुका दुईपटक दूधसँग खानाले प्रमेह रोग निश्चय नष्ट हुन्छ ।

घिउकुमारीको गुदी १/२ सेर (५०० ग्राम) लिएर सफा हातले खूब मथेर राख्नू । अब कलईदार कराहीमा गाईको घिउ राखी बेसरी तताउनू । त्यसमा पहिले तयार गरेको घिउकुमारीको गुदी राखी चलाउनू र २०-२५ मिनेटसम्म मन्द अग्निमा पकाउनू । त्यसमा मैदा १ पाउ (२५० ग्राम) र चिनी १/२ सेर (५०० ग्राम) पनि राखी चलाएपछि फेरि पाक्न दिनू । जब लड्डू पार्न सकिने हुन्छ अनि ओरालेर २५-२५ ग्रामका लड्डू बनाएर सिसीमा बन्द गरी राख्नू । बिहान खाली पेटमा आफ्नो अग्निबल अनुसार १ वा २ लड्डू खाई गाईको दूध पिउनू । यसलाई ४० दिन सेवन गर्नाले प्रमेह निश्चय नै ठीक हुन्छ । यसको सेवनले दुर्बल पनि बलवान् तथा मोटो भएर आउँछ । शरीरमा मासु तथा वीर्य अति छिटो बढ्छ, भोक पनि लाग्छ । (परीक्षित)

घिउकुमारीको रसमा पानी नमिसाई बाफबाट अर्क निकालियो भने त्यो पनि प्रमेहको उत्तम औषधी हुन्छ । त्यो अर्क १२ देखि २५ मिली लिटरसम्मको मात्रामा दूध, मिश्री वा मह मिसाई सेवन गर्नाले प्रमेहको नाश हुन्छ, भोक निकै बढ्छ । (अनेक पटक परीक्षित)

गुर्जो, अमला, गोखुर १००-१०० ग्राम लिएर पिनछान गरेर चूर्ण बनाईराख्नू । यसबाट बिहान ६ माशा (ग्राम) चूर्णलाई घिउ ६ ग्राम र मह ३ ग्राम मिसाई केही दिनसम्म बराबर खानाले प्रमेह नष्ट हुन्छ, खूब बल र वीर्य बढ्छ । (परीक्षित)

जेठीमधु, गुर्जो, अमला, हर्रो, बर्रो, सेतो मुसली, विदारीकन्द, नागकेशर,

शतावरी (कुरिलो), सबै २५-२५ ग्राम लिएर कुटी छानी चूर्ण बनाउनू । यसबाट ६ ग्राम चूर्ण बिहान-बेलुका १ महिनासम्म ६ ग्राम घिउ र ३ ग्राम मह मिसाई खान दिनू । सबै किसिमको प्रमेह नष्ट भई बल-वीर्य बढ्छ, प्रथम श्रेणीको परीक्षित औषधी हो ।

काउसोको बियाँ, शतावरी, गोखुर अति बलाको जरा, तालमखाना सबै ५०-५० ग्राम लिएर कुटी छानी चूर्ण बनाउनू । यो चूर्ण ६ ग्राम बिहान सबेरै गाईको दूध १ पाउसँग सेवन गर्नाले प्रमेह एवं धातुरोग निश्चय ठीक हुन्छन् ।

अतिबलाको[1] जरालाई कुटी छानी चूर्ण बनाउनू । उक्त चूर्ण ३-६ ग्राम मात्रामा लिएर दूध र मिश्रीसँग खान दिनू । प्रमेह अवश्य नष्ट हुन्छ ।

बला (बलु)को जरा पुष्टिकर र वीर्यवर्धक हुन्छ । यसको जराको बोक्राको चूर्ण दूध र मिश्रीका साथ सेवन गर्नाले मूत्रातिसारमा (पिसाब बढी लाग्ने) लाभ हुन्छ । (परीक्षित)

शंखपुष्पी, सुकमेलको बियाँ, शुद्ध शिलाजीत ५०-५० ग्राम, वंशलोचन १०० ग्राम, मिश्री १०० ग्राम, सबलाई कुटी छानी चूर्ण बनाउनू । ३-६ ग्रामको मात्रा फाँकेर धारोष्ण[2] गाईको दूध वा पानीसँग खान दिनू । सबै किसिमका प्रमेह नष्ट हुन्छन् । (परीक्षित)

बियाँ झिकेको बबूलको छायामा सुकाएको फल १२ ग्राम, तालमखाना ६ ग्राम, बीजबन्द (बलाबीज) ६ ग्राम, मिश्री ४२ ग्राम सबैलाई कुटी छानी चूर्ण बनाउनू । यसबाट ६ ग्राम लिएर गाईको दूधसँग खानाले पिसाबसँग धातु बग्ने रोग निको हुन्छ । (परीक्षित)

सुठो, मरिच, पिप्ला, त्रिफला, नागरमोथा, शुद्ध गुग्गुलु (गोकुलधूप) सबलाई कुटी पिनी छानेपछि खलमा राखी मह र गोखुरको काढा हाल्दै बेसरी घोट्नू । घोटिसकेपछि १-१ ग्रामको गोली पार्नू । यो १-१ गोली बिहान-बेलुका पानीसँग खानाले प्रमेह, मूत्रकृच्छ यी सबै रोगहरू नष्ट हुन्छन् । (परीक्षित)

सालम मिश्री, शीतल चिनी, दालचिनी, रुमी मस्तगी, मिठो सुरञ्जान, बीजीदान सबै ६-६ ग्राम, मिश्री १२ ग्राम सबलाई कुटी छानी चूर्ण बनाउनू । यो चूर्ण ३-६ ग्राम मात्रामा बाखा वा गाईको दूधसँग २१ दिनसम्म सेवन गर्नाले धातुरोग नष्ट भएर रक्त तथा वीर्यवर्धक भएर आउँछ । रुकावट पनि खूब हुन्छ । यो प्रथम

---

१. यसलाई हिन्दीमा ककही, ककहिया वा कंघी भन्छन् । यो तराईमा प्रशस्त पाइने वनस्पति हो । यसको फल काइँयो जस्तै देखिन्छ ।

२. दुहुने बित्तिकैको तातो दूधलाई धारोष्ण भनिन्छ ।

श्रेणीको परीक्षित औषधी हो । यसमा तेल, खुर्सानी, गुड, अमिलो कुरा (अचार आदि) खानु हुँदैन ।

बेसार धुलो २ ग्राम, खयर चूर्ण २ ग्राम, नागभस्म १२५-२५० मिलीग्राम सबलाई १२ ग्राम महमा मिसाएर चाट्नू । प्रमेहका लागि परीक्षित औषधी हो ।

शिरीषको बियाँ, पलासको बियाँ, मिश्री सबै समभाग लिएर कुटी छानी चूर्ण बनाउनू । ६ ग्रामदेखि १२ ग्राम सम्मको मात्रामा गाईको दूधसँग केही दिनसम्म सेवन गर्नाले प्रमेह रोग नष्ट भएर धातु गाढा भएर आउँछ । यो उत्तम योग हो ।

अभ्रक भस्म १-४ रत्तीसम्म (१२५-५०० मि.ग्रा.), पिप्लाको धुलो १ ग्राम दुवैलाई ६ ग्राम महमा मिसाएर गाईको दूधसँग सेवन गर्नाले प्रमेह नष्ट हुन्छ ।

वायुविडङ्ग, सुठो, मरिच, पिप्ला सबै समभाग लिएर कुटी छानी चूर्ण बनाउनू । यो चूर्ण अग्निबल अनुसार ३-६ ग्रामसम्म लिएर त्यसमा अभ्रक भस्म १२५-२५० मिलीग्राम मात्रामा मिसाई महका साथ चाट्ने भन्नू । यसबाट प्रमेह, पाण्डुरोग, श्वास आदि नष्ट भएर भोक बढ्छ । (परीक्षित)

गुर्जो र मिश्रीको चूर्ण ६-६ ग्राममा अभ्रक भस्म १२५-२५० मिलीग्राम मिसाई दूधसँग खानाले प्रमेह नष्ट हुन्छ ।

२५० मिलीग्राम वंगभस्ममा ५०० मिलीग्राम सुकमेलको चूर्ण र १२ ग्राम मह मिसाई खाएपछि ३६ मिली अमलाको काढामा २ ग्राम बेसार मिसाई खानाले घोर प्रमेह पनि नष्ट भएर जान्छ । (परीक्षित)

१२५-२५० मिलीग्राम वंग भस्म तुलसीपत्रको रस अथवा मह अथवा मिश्रीसँग खानाले प्रमेह नष्ट हुन्छ । (परीक्षित)

बरको पातलाई छायामा सुकाई कुटी छानी त्यसमा समभाग मिश्री मिसाएर राख्नू । त्यो चूर्ण ६ ग्राम मात्रामा गाईको दूधसँग सेवन गर्नाले प्रमेह नष्ट भई धातु पुष्ट हुन्छ र शरीर पनि बलवान् हुन्छ । (परीक्षित)

विदारीकन्द ५० ग्राममा सिमलको जरा ५० ग्राम, गोखुर २५ ग्राम र कमलगट्टाको गुदी २५ ग्राम लिएर सबैलाई कुटी छानी चूर्ण बनाएपछि सबैको बराबर (१५० ग्राम) मिश्रीको चूर्ण मिसाएर राख्नू । यो चूर्ण ६-१२ ग्राम मात्रामा बिहान-बेलुका गाईको दूधसँग सेवन गर्नू । प्रमेह र स्वप्नदोष नष्ट हुन्छन् । (परीक्षित)

तुख्मेरिहाँ ६३ ग्राम, अकरकरा ४२ ग्राम, मिश्री १०५ ग्राम सबको चूर्ण बनाई १० ग्राम चूर्णमा १२५ मिलीग्राम वंगभस्म अथवा मूँगाभस्म मिसाई मिश्री राखी पकाएको दूधसँग बिहान बेलुका सेवन गर्नाले प्रमेह नष्ट भई वीर्यको वृद्धि हुन्छ र शरीर तगडा भएर आउँछ । यसको सेवन गरेको वेलामा रातो खुर्सानी, अमिलो, तेल, दही र सम्भोगबाट बच्नुपर्छ ।

त्रिफला र त्रिकटु समभाग लिई चूर्ण बनाएर मिसाई राख्नू। त्यो चूर्ण ६ ग्राममा मह १२ ग्राम मिसाइ चाट्ने गर्नाले अथवा त्रिफला र गोखुर समान राखी बनाएको चूर्ण ६ ग्रामलाई मह १२ ग्राममा मिसाई चाट्ने गर्नाले पिसाबको जलनसहित रातो, पहेंलो पिसाब हुने प्रमेह पनि नष्ट हुन्छ। (परीक्षित)

पाकेको केरा, अमलाको रस, मिश्री र मह सबै मिसाई केही दिनसम्म सेवन गर्नाले प्रमेह नष्ट हुन्छ। (परीक्षित)

असुरोको पातको रस १२ मि.लि.मा गुर्जोको रस १२ मि.लि. तथा मह १२ ग्राम मिसाई खानाले सेतो धातु बग्ने बन्द भएर जान्छ।

शुद्ध गन्धकलाई गुडमा मिसाई २१ दिनसम्म दूधसँग सेवन गर्नाले समस्त प्रमेहहरू नष्ट हुन्छन्।

पिपलको अंकुर (कोपिला), पिपलको जराको बोक्रा र पिपलकै फलहरूलाई १०-१० ग्राम जति लिएर ३०० मि.लि. पानीमा राखी पकाउनू। चौथाई बाँकी भएपछि ओरालेर छान्नू र सेलाएपछि त्यसमा मह र मिश्री मिलाई पिउनू। यसले धातु सम्बन्धी सबै रोगलाई फाइदा गर्छ, यसले वाजीकरण पनि हुन्छ।

पिपलको काँचो फल र अंकुर बराबर-बराबर ल्याई दुवैको चूर्ण बनाउनू। दुवैको बराबर सख्खर मिसाई चिसो पानीसँग खान दिनू। यसबाट पुरानो प्रमेह र महिलाको श्वेतप्रदर आदि रोग नष्ट भएर धातु पुष्ट हुन्छ।

गोंद कतीरा ६ ग्राम, बबूलको गुँद १२ ग्राम, सेतो मुसली ४८ ग्राम, वंशलोचन ४८ ग्राम, सुकमेलको बियाँ २४ ग्राम सबलाई कुटी छानी चूर्ण बनाउनू। अनि सबैको बराबर सख्खर मिसाई राख्नू। यसलाई बिहान-बेलुका ६ ग्रामको मात्रा लिएर १२ ग्राम मह मिसाई दूधसँग सेवन गर्नाले २१ दिनमा स्वप्नदोष र प्रमेह नष्ट हुन्छन्। (परीक्षित)

गुर्जोलाई कुटेर रातभरी कुनै माटाको आरीमा पानी राखी भिजाइदिनू। बिहान त्यही पानिलाई छानेर पिउने गर्नू। यो पिसाबको जलन, पिप आउनु, मूत्रकृच्छ, मूत्राघात र सूजाक रोगका लागि रामबाण औषधी हुन्छ।

सेतो कण्टकारीको रस ६ मि.लि., गुर्जोको रस १८ मि.लि. मा मह ६ ग्राम मिसाई २१ दिनसम्म बिहानै पिउनाले प्रमेह, श्वास, कास यी नष्ट हुन्छन्। (परीक्षित)

३ ग्राम निर्मलीको चूर्ण महमा मिसाई चाटेर माथिबाट २०० मि.लि. जति मही खवाउनू। यसले १ महीनामै प्रमेहलाई नष्ट गर्छ।

चोपचिनी १२ ग्राम, त्रिफला १८ ग्राम, गोखुर १२ ग्राम, सुकमेलको दाना ६ ग्राम, सालममिश्री १२ ग्राम, तालमखाना १२ ग्राम, मूँगा भस्म ६ ग्राम, मिश्री ७२ ग्राम सबलाई चूर्ण बनाएर ६ ग्राम चूर्ण १२ ग्राम महमा मिसाई बिहान-बेलुका चाट्ने गर्नाले सैकडा ९० प्रतिशत रोगीहरूको प्रमेह नष्ट हुन्छ।

रस चिकित्सा

चाँदी भस्म १ देखि १.५ रत्तीसम्म (१२५-२०० मि.लि.), सुकमेलको चूर्ण १ ग्राम, तेजपातको चूर्ण १ ग्राम, दालचिनी १ ग्राम सबलाई मिसाएर खाएमा प्रमेहका लागि रामबाण औषधी हुन्छ ।

लौह भस्म १२५-२५० मि.ग्रा. मा त्रिफला चूर्ण ३ ग्राम मिसाई खानाले समस्त प्रमेहलाई नष्ट गर्छ ।

प्रमेह कुठार रस - सुकमेलको भित्री दाना, भीमसेनी कपूर, मिश्री, अमला, गोखुर, जाइफल, सिमलको बोक्रा, शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, वंगभस्म, लौहभस्म हरेक ३-३ ग्राम लिनू । सुकमेलदेखि सिमलको बोक्रासम्म सबैको चूर्ण बनाउनू । शुद्ध पारद र शुद्ध गन्धकलाई खलमा खूब घोटेर कज्जली पार्नू । अनि त्यसमा वंगभस्म र लौहभस्म मिसाई घोट्नू । सुकमेल आदि द्रव्यहरूको चूर्ण पनि त्यसैमा राखी घोट्नू । सबै राम्ररी घोटिएपछि सिसीमा राख्नू । यो औषधी १-१.५ ग्राम मात्रामा मह ६ ग्राम वा १२ ग्राम सम्ममा मिसाई चाट्नाले समस्त प्रमेहलाई नष्ट गर्छ ।

योगराज गुटी - सुठो, पिप्लाको जरा, चाबो, चितु, कालो मरिच, घिउमा फुराएको शुद्ध हिङ, अजमोदा, सेतो जिरा, रेणुकाको बीज, इन्द्रजौ, पाठा, वायुविडङ्ग, ठूलो पिप्ला, कुटकी, उत्तिस, भारङ्गीको जरा, बोझो, मरोडफल, तेजपात, देवदारु, पिपल, रास्ना, नागरमोथा, सिंधे नुन, सुकमेल, गोखुर, हर्रो, बर्रो, धनियाँ, अमला, दालचिनी, खस, जवाखार, तिल सबैलाई समभाग लिएर कुटीछानी चूर्ण बनाउनू । चूर्ण बराबर शुद्ध गुग्गुलु लिएर दुवैलाई खलमा राखी माथिबाट घिउ राखी खूब घोट्नू । अनि सानो वयर समानको (१ ग्राम) गोली पारी कुनै चिल्लो भाँडोमा राख्नू । यी गोलीहरूलाई भिन्न भिन्न अनुपानसँग सेवन गरेमा प्रमेह, शुक्रदोष, आमवात आदि रोगहरू नष्ट हुन्छन् ।

प्रमेहमर्दन रस - त्रिफला, त्रिकटु, नागरमोथा, वायुविडङ्ग, चितुको बोक्रा हरेक १२ ग्राम, शुद्ध पारद २४ ग्राम, शुद्ध गन्धक ४८ ग्राम, मण्डूर भस्म ७२० ग्राम सबै ठीक पार्नू । पहिले पारद र गन्धकलाई खलमा घोटी कज्जली बनाउनू । त्रिफला आदिको चूर्ण बनाई त्यसैमा मिसाइदिनू र घोट्नू । घोटिसकेपछि सिसीमा राख्नू । यो औषधी १-२ ग्रामको मात्रामा सेवन गर्नाले समस्त प्रमेह, मधुमेह र शुक्रदोषमा आराम हुन्छ ।

रतिवल्लभ चूर्ण - शाकाकुल मिश्री १०० ग्राम, बहमन सफेद २५ ग्राम, बहमन सुर्ख २५ ग्राम, सालम मिश्री २५ ग्राम, दालचिनी २५ ग्राम, सेतो मुसली ५० ग्राम, कालो मुसली ५० ग्राम, छोहडा ५० ग्राम, सुकमेल बियाँ २० ग्राम, गावजवान २० ग्राम, गोखुर २० ग्राम, मिश्री ४१२ ग्राम सबलाई कुटी छानी सिसीमा राख्नू ।

यसको सेवनले मुटु र मस्तिष्कमा तागत आउँछ, धातु पुष्ट र बाक्लो हुन्छ, स्त्री प्रसंगको इच्छा तीव्र भएर आउँछ, पिसाबमा वीर्य आउने समस्या हराउँछ, यो अनेकौँ पल्ट परीक्षित योग हो, कहिल्यै फेल हुँदैन । बिहान सबेरै १२ ग्राम चूर्ण खान दिएर गाईको दूध १ पाउ (२५० मि.लि.) पिउन दिनू ।

प्रमेहघ्न चूर्ण – अश्वगन्धा र विधारा समभाग लिएर कुटी छानी चूर्ण बनाएर मिसाईराख्नू । यो चूर्ण बिहान ६ ग्राम मात्रामा मिश्री राखेको गाईको दूधसँग सेवन गराउनू । धातुरोग नष्ट भै शरीर बलवान् तथा मोटो हुन्छ । यसको सेवन ४० दिनसम्म गर्नुपर्छ । बुढापाकाहरूका लागि यो अमृत नै हो । (परीक्षित)

वसन्त कुमार रस – सुवर्णभस्म १० ग्राम, शतपुटी अभ्रकभस्म १० ग्राम, लौहभस्म १५ ग्राम, वंग भस्म १५ ग्राम, मूँगाभस्म २० ग्राम, मोती भस्म २० ग्राम यी सबै कुनै राम्रो खलमा राखी घोट्नू । अब त्यसमा गाईको दूध, असुरोको रस, ताजा हलेदोको रस, केराको जराको स्वरस, गुलाफको फूलको रस, मालती फूलको रस, कस्तूरी, शुद्ध कपूर, तुलसीको पातको रस हरेकको एक दिनमा एकपटक भावना दिनू । भावना दिइसकेपछि चूर्णलाई सिसीमा भरी राखी दिनू । यो औषधी १२५-२५० मिलीग्राम मात्रामा महका साथ सेवन गर्नाले समस्त प्रमेह निश्चय ठीक हुन्छन् । यसैलाई मिश्री र सेतो चन्दनसँग सेवन गर्नाले अम्लपित्त रोग जान्छ । (परीक्षित)

मिश्री ४७० ग्राम, छोहडा ३७० ग्राम, रुमी मस्तगी २८ ग्राम, सेतो मुसली २८ ग्राम, सबै बेग्लाबेग्लै पिन्छान गर्नू । बेग्लाबेग्लै पिनेपछि सबलाई तौलेर मिसाउनू । यसलाई २-३ ग्राम बिहान बेलुका खाएर मिश्रीयुक्त गाईको दूध (१००-२५० मि.लि.) पिउनू । दूधमा मिश्री राखी पकाउँदा ६ ग्राम घिउ पनि मिसाउनू र चिसो भएपछि ३ ग्राम मह मिसाएर खान दिनू, सुनमा सुगन्ध भनेजस्तै उत्तम काम गर्छ । यो धातुरोगका लागि परीक्षित औषधी हो ।

सुधा रस – बंगभस्म, सुकमेल, वंशलोचन, गुर्जोको सत्त्व, शुद्ध शिलाजीत सबलाई खलमा राखी घोटेर ख्वाउनाले पिसाबसँगै धातु जाने रोगका लागि रामबाण हो । कहिले पनि फेल जाँदैन । यसको मात्रा ५०० मिलीग्राम देखि १ ग्रामसम्म गाईको दूधसँग खानुपर्छ ।

मोतीभस्म ४ तोला (४८ ग्राम), सेतो मुसली (दिल्लीको) १२० ग्राम, तज (सूरतको) १२० ग्राम सबैलाई कुटी-छानी चूर्ण बनाई मिसाउनू र सिसीमा राख्नू । यो औषधी २-३ ग्राम मात्रामा ४० दिनसम्म सेवन गर्नाले प्रमेह निश्चय नै ठीक हुन्छ । अनेकौँ पटक परीक्षित हो ।

शाल्मलि पाक – सिमलको जरा ५०० ग्राम, सुकमेलको दाना, दालचिनी, तेजपात, ल्वांग, जाइफल, नागकेशर, नागरमोथा, धनियाँ, वंशलोचन, सुठो, पिप्ला,

मरिच, अश्वगन्धा, हर्रो, लौह भस्म हरेक ५०-५० ग्राम, गुड २ किलो, दूध ४ लिटर ल्याई तयार गरी राख्नू । पहिले सिमलको जरालाई दूधमा पकाएर कुराउनी बनाउनू । सुकमेलदेखि हर्रोसम्मका औषधीहरू बेग्लाबेग्लै कुटी छानी चूर्ण बनाउनू । गुडलाई कराहीमा राखी केही पानी मिसाएर पकाउनू । बाक्लो भएर आएपछि तुरुन्त ओराली त्यसमा पहिले पकाएको कुराउनी र चूर्णहरूका साथै लौहभस्म पनि पालैपालो गरी राख्नू र चलाउँदै गरी मिसाउनू र खल गर्नू । अब घिउले चिल्लो पारिएको थालमा जमाइदिनू अथवा १-१ तोला बराबरको लड्डू पार्नू । यो १ लड्डू (१२ ग्राम) गाईको दूधसँग खानाले समस्त प्रमेहहरू नष्ट हुन्छन् । (अनेकौँ पटक परीक्षित)

भीमसेनी कपूर १ ग्राम, कस्तूरी १ ग्राम, अफीम ४ ग्राम, जाइपत्री ४ ग्राम खलमा राखी बंगला पानको रस दिएर घोट्न थाल्नू । १२ घण्टासम्म घोटेपछि १२५ मिलीग्रामको गोली पार्नू । यी गोलीबाट प्रमेह नष्ट भई वीर्य बढ्छ तथा गाढा पनि हुन्छ । (परीक्षित)

भीमसेनी कपूर बनाउने विधि – कपूर २४ ग्राम, समुद्रफेन ३ ग्राम, रसाञ्जन ६ ग्राम, सुकमेलको दाना ६ ग्राम, केशर १.५ ग्राम, कस्तूरी ७.५ मिलीग्राम, निर्मली ३ ग्राम, नागरमोथा ३ ग्राम, अगर ३ ग्राम यी सबैको चूर्णलाई सफा खलमा राखी गुलाबजल राखी घोट, अनि एउटा चक्का बनाऊ र एउटा काँसको थालमा राखी माथिबाट अर्को काँसको कचौराले छोप । अब कचौरा र थालको सन्धिलाई पानीमा मुछेको माषको पिठोले हावा नछिर्ने गरी लिपेर बन्द गर । अनि त्यो थाललाई ३ ओटा ईंटको चुलोमाथि राख । त्यसको तल घिउमा भिजेको मोटो बत्ती दियोमा राखी बाल र त्यो थाललाई तताउँदै गर । त्यो बत्ती ३-३ घण्टासम्म बाल्नू । थालमाथिको कचौरामाथि खद्दरको मोटो कपडा ८-१० तह गरी पानीले भिजाई राखी दिनू । जब कपडा अलि सुकेर आउँछ अनि माथिबाट चिसो पानी तपतप चुहाई भिजाइदिनू । यति गरेपछि भित्रको कपूर कचौराको पिंधमा जम्न थाल्छ । ३ घण्टापछि कचौरा चिसो भएपछि कचौराको जोड हटाई कपूर निकालेर सिसीमा बन्द गरेर राख्नू । यो बडो कामको चीज हो । यो आँखाको सुर्मामा पनि काम लाग्छ ।

सुकेको सिंघाडा, ईसबगोलको भूसी, काउसोको बियाँ, धनिया, गोखुर, बीजबन्द (बला), सिमलको गूँद, पलासको गूँद, बबूलको गूँद, समुद्रको ठूलो सिपी, तालमखाना हरेक २-२ ग्राम, काहूको बियाँ ७२ ग्राम, मिश्री १८० ग्राम सबलाई कुटी छानी मिसाउनू र ठूलो भाँडोमा राखी दिनू । यसबाट प्रमेह नष्ट भएर बल, वीर्य र कान्ति बढ्छ, शरीर खूब पुष्ट भएर आउँछ । यो चूर्ण १२ ग्रामसम्म खाएर गाईको दूध पिउनुपर्छ । ४० दिनसम्म सेवन गर्नुपर्छ । यो रामबाण औषधी हो ।

गाईको दूध १ पाउमा ईसबगोलको भूसी १२ ग्राम राखी पकाउनू – पाकेपछि

अलिकति सेलखडी पिनेर मिलाई दिनू। यो खीर दिनदिनै बिहान खानाले १ महिनामा प्रमेह, धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, धातुको पातलोपन यी धातुसम्बन्धी रोगहरू निको हुन्छन्।

कामिनीमानमर्दन चूर्ण – शतावरी, गोखुर, कुलञ्जन र विदारीकन्द ४८-४८ ग्राम, काउसोको बियाँ, उटंगनको बियाँ, पिप्ला, सुकमेलको दाना, नागकेशर, सेतो मुसली, रातो चन्दन, छडीला, गुर्जो, वंशलोचन सबै ४-४ ग्राम लिनू। यी सबैलाई कुटी छानी चूर्ण बनाउनू र ठूलो खलमा राखी सिमलको जराको रसको २१ भावना दिनू। त्यसपछि काँचो नरिवलको पानीको २१ भावना दिनू। अनि छायामा सुकाउनू। सुकेपछि त्यसको समभाग मिश्री पिनेर मिसाइ दिनु र सफा भाँडोमा राख्नू। यो औषधी ४० दिनसम्म सेवन गर्नाले समस्त प्रमेह नष्ट भई बलवीर्य बढ्छ। सधैं सेवन गर्नाले कामिनीहरू (स्त्री) दासी हुन जान्छन्। यो चूर्ण ६ ग्रामदेखि १२ ग्रामसम्मको मात्रामा खाएर माथिबाट १ पाउ गाईको दूध पिउनुपर्छ।

शुद्ध पारद १२ ग्राम, शुद्ध गन्धक १२ ग्राम, शुद्ध धतुरोको बियाँ २४ ग्राम ठीक पार्नू। पहिले पारो र गन्धकलाई खलमा राखी ८-१० घण्टा घोटी कज्जली पार्नू। त्यसपछि धतुरोको बियाँको चूर्ण राखी घोट्नू। अन्तमा धतुरोको बियाँको तेल राख्दै ३-४ घण्टा खल गरी सिसीमा राख्नू। यो औषधी १२५ मिलीग्रामको मात्रामा मिश्री मिसाई खानाले समस्त प्रमेह नष्ट हुन्छन्, वीर्य बढ्छ, स्तम्भन पनि हुन्छ।

मोती भएको सीपी, तालमखाना, मिश्री हरेक ५० ग्राम लिनू। पहिले सीपीलाई खलमा राखी ३ दिनसम्म खल गर्नू। खल गरीसकेपछि तालमखाना र मिश्रीको पनि चूर्ण त्यसमा मिसाउनू र बरको दूध हाली फेरि घोट्नू। घोटिसकेपछि सानो बयर जत्रो (१ ग्राम) गोली पार्नू र छायामा सुकाउनू। यो औषधी पहिलो दिन १ गोली, दोस्रो दिन २ गोली, यस्तै हिसाबले ४० दिनसम्म गाईको दूधसँग सेवन गर्नाले समस्त प्रमेह नाश भएर जान्छन्। (परीक्षित)

शुद्ध शिलाजीत ४ ग्राम, लौहभस्म २ ग्राम, स्वर्णमाक्षिक भस्म २ ग्राम सबैलाई मिसाएर खल गरी २५० मिलीग्रामका गोलीहरू पार्नू। बिहान-बेलुका १-१ गोली मख्खन (नौनीघिउ) अथवा दूधको तरसँग खानाले पिसाबसँग सेतो धातु जाने बन्द हुन्छ। (परीक्षित)

बबूलको गुँद, वंशलोचन, श्रीखण्ड चन्दनको चूर्ण, कहरवा, गोंद कतीरा, निशास्ता, रुमी मस्तगी, खसको बियाँ, सालम मिश्री, पुदीना, कुल्फाको बियाँ, मोचरस, सुकमेल, सिंघाडा, शुद्ध शिलाजित हरेक १२-१२ ग्राम, मिश्री १८० ग्राम सबलाई कुटी छानी चूर्ण बनाउनू। यो चूर्ण १२ ग्रामको मात्रामा खाई दूध पिउने गर्नाले प्रमेह, स्वप्नदोष, शीघ्रपतन यी समस्याहरू नष्ट हुन्छन्, वीर्य पुष्ट भई सम्भोगशक्ति बढ्छ। (अनेकौं पटक परीक्षित)

प्रमेहको विशेष चिकित्सा

उदकप्रमेहको चिकित्सा – नीमको भित्री बोक्रा २५ ग्राम लिएर कुटी माटाको भाँडामा २०० मि.लि. पानी राखी आगोमा पकाउनू। चौथाई जति बाँकी हुँदा ओरालेर कपडाले छान्नू। चिसो भएपछि त्यसमा मह १२ ग्राम मिसाई पिउनू। गर्मीको मौसममा हिम बनाएर मह मिसाई खानू। ४० दिनसम्म सेवन गर्नाले उदक प्रमेह नष्ट हुन्छ।

धयेंरोको फूल, अर्जुनको रूखको बोक्रा, शाल वृक्षको बोक्रा, सेतो चन्दन सबैको मोटो गरी कुटेको चूर्ण २५-२५ ग्राम लिएर ८०० मि.लि. पानीमा पकाउनू। चौथाई पानी बाँकी भएपछि छानेर सेलाउन दिनू। अब मिसाई सेवन गर्नू। यो उदकप्रमेहमा उपयोगी छ। (परीक्षित)

हर्रो, काफलको बोक्रा, नागरमोथा र लोधको काढामा मह मिसाई खान दिए पनि उदकप्रमेह नष्ट हुन्छ।

इक्षुप्रमेहको चिकित्सा – गिनेरीको काढामा मह मिसाई पिउनाले यो प्रमेह नाश भएर जान्छ। पाठा, वायुविडङ्ग, अर्जुन वृक्षको बोक्रा र धमासाको काढामा मह मिसाई खाए पनि यो प्रमेहबाट मुक्ति पाइन्छ।

सुरा प्रमेहको चिकित्सा – नीमको भित्री बोक्रा वा कदमको बोक्रा, साल वृक्षको बोक्रा, अर्जुन वृक्षको बोक्रा र ज्वानुको काढामा मह मिसाई पिउनाले सुरा प्रमेहमा आराम हुन्छ। (परीक्षित)

सिमलको बोक्राको काढा पनि परीक्षित उपाय हो।

सान्द्र प्रमेहको चिकित्सा – सातलाको जराको बोक्राको काढा ४० दिनसम्म पिउनाले आराम हुन्छ।

हलेदो र दारुहरिद्रा (चुत्रो)को बोक्राको काढामा मह मिसाई पिउनाले पनि यो ठीक भएर जान्छ।

पिष्टप्रमेहको चिकित्सा – हलेदो र दारुहरिद्राको काढा पिउनाले पिसाबमा पिठो जस्तो पदार्थ आउन बन्द हुन्छ। (परीक्षित)

असुरोको पातको रस १२ मि.लि., गुर्जोको रस १२ मि.लि., मह १२ ग्राम सबलाई मिसाई सेवन गर्नाले चौलानीजस्तो पिसाब हुने बन्द हुन्छ। (परीक्षित)

आगोमा फुराएको फिटकिरी ६ ग्राम पाकेको केरासँग खानाले २१ दिनमा असाध्य सेतो जाने प्रमेह नष्ट हुन्छ। (परीक्षित)

शुक्रमेहको चिकित्सा – यसमा सेतो दुबोको जरा, शैवाल र करञ्जको काढाले हित गर्छ। (परीक्षित)

सेतो सिमलको बोक्रा २५ ग्रामलाई गाईको दूधमा पिनेर त्यसमा सेतो

जिराको धुलो १-२ ग्राम र मिश्रीको धुलो १२ ग्राम मिसाएर बिहान-बेलुका पिउनाले १४ दिनमा शुक्रप्रमेह ठीक भएर जान्छ ।

सेतो सिमलको सानो कन्द सुकाई चूर्ण बनाउनू र समभाग मिश्रीको चूर्ण मिसाई ६-१२ ग्राम मात्रामा खान दिनू । शुक्रमेह ठीक हुन्छ ।

सिकतामेहको चिकित्सा – चितुको जराको चूर्णमा मह मिसाई खानाले प्रमेहमा आराम हुन्छ । (परीक्षित)

दारुहरिद्रा, गिनेरी, त्रिफला र पाढाको काढामा मह मिसाई पिउनाले प्रमेह नष्ट हुन्छ ।

शीतमेहको चिकित्सा – हलेदो, पाठा र अगरुको काढामा मह मिसाई पिउनाले आराम हुन्छ ।

शनैर्मेहको चिकित्सा – खयरको बोटको बोक्रालाई पानीमा पकाई बनाएको काढामा मह मिसाएर खान दिएमा आराम हुन्छ ।

ज्वानु, खस, हर्रो र गुर्जोको काढामा मह मिसाइ खाए पनि हुन्छ ।

लालामेहको चिकित्सा – त्रिफला, राजवृक्ष र दाख सबैको काढामा मह मिसाई खाएमा आराम हुन्छ ।

कफज प्रमेहको सामान्य चिकित्सा – त्रिफला, दारुहरिद्रा, नागरमोथा यिनको काढामा मह मिलाई पिउनाले कफसम्बन्धी सबै प्रमेहलाई आराम गर्छ । (परीक्षित) यो त्रिफलामा हर्रो १ भाग, बर्रो २ भाग र अमला ४ भाग हुनुपर्छ । यसले पिसाबमा गर्मी हुन दिँदैन ।

नागरमोथा, हर्रो, काफल, लोध समभाग लिएर अलिअलि मोटो कटेर प्रत्येक ६-६ ग्राम लिनू र २०० मि.लि. पानीमा पकाउनू । पाक्दा-पाक्दा आधा पानी रहेपछि छानेर त्यसमा ६ ग्राम मह मिसाउनू र पिउन दिनू । एकै महिनामा कफसम्बन्धी सबै प्रमेहहरू नष्ट हुन्छन् । (परीक्षित)

क्षारप्रमेहको चिकित्सा – यसका लागि त्रिफलाको हिमले हित गर्छ । (परीक्षित)

पाठाको काढामा मह मिसाएर खाए पनि आराम गर्छ ।

नीलमेहको चिकित्सा – पिपलको रुखको बोक्राको काढा अथवा हिममा मह मिसाएर खान दिएमा हित गर्छ ।

पिपलको पञ्चाङ्ग ल्याई कुटी छानी चूर्ण बनाउनू । त्यो चूर्ण ६ ग्राम मात्रामा गाईको दूधसँग खान दिनू । हित गर्छ । (परीक्षित)

हर्रो, अमला, खस, नागरमोथा यिनको काढा वा हिममा मह मिलाई सेवन गरे पनि आराम हुन्छ ।

कालप्रमेहको चिकित्सा – नीमको भित्री बोक्रा, पर्वरको पात, अमला र गुर्जो यी सबैको काढा वा हिममा मिश्री मिसाई ४० दिनसम्म सेवन गर्दा आराम हुन्छ । (परीक्षित)

हारिद्र प्रमेहको चिकित्सा – नागरमोथा, हर्रो, पद्मक, इन्द्रजौ, यी चारैओटाको काढा वा हिमबाट आराम भएर जान्छ । (परीक्षित)

पठानी लोध, सुगन्धवाल, सेतो चन्दन, धवको फूल यिनको काढा अथवा हिमको सेवन गर्दा यो प्रमेह नष्ट हुन्छ ।

माञ्जिष्ठ प्रमेहको चिकित्सा – नीमको बोक्रा, अर्जुन वृक्षको बोक्रा कमलगट्टाको गुदी यी तीनओटाको काढा सेवन गरे माञ्जिष्ठमेह नष्ट हुन्छ ।

कबावचिनी अर्थात् शीतलचिनिलाई पिनेर छान्नू र बराबर मिश्री मिसाएर राख्नू । यो चूर्ण ४ ग्रामको मात्रामा दिनमा ३-४ पटक फाँकेर पानी पिउनाले मूत्रमार्ग सफा हुन्छ र यो प्रमेह तथा पित्तसम्बन्धी अरू प्रमेहमा पनि राम्रो लाभ हुन्छ । रक्त प्रमेह र यस प्रमेहमा गर्मीको चाप हुनाले रोगी आत्तिन्छ । त्यस अवस्थामा यो औषधीले राम्रो लाभ गर्छ ।

रक्त प्रमेहको चिकित्सा

प्रियंगुको फूल, रातो कमलको फूल, निलो कमलको फूल, पलाशको फूल यिनको काढा अथवा हिममा मिश्री मिसाएर पिउनाले खूब लाभ हुन्छ । पहिले ५-७ दिन शीतलचिनीको सेवनपछि यो औषधी दिएमा अझ राम्रो फाइदा हुन्छ ।

लिसोडाको (श्लेष्मान्तक) काढाले पनि यस रोगमा फाइदा गर्छ ।

जस्वन्ती र अतिबला दुवैको १-१ तोला (१२ ग्राम) पातलाई सिलौटामा पिनेर त्यसमा ३६ ग्राम मिश्री मिसाई सेवन गर्नाले २१ दिनमा रक्त प्रमेहबाट छुटकारा पाइन्छ ।

पित्तज प्रमेहहरूको सामान्य चिकित्सा

पर्वर, नीमको बोक्रा, अमला, गुर्जो यिनको काढाको सेवन गर्दा पित्तज प्रमेहहरूको नाश हुन्छ । काढा बनाउँदा प्रत्येक द्रव्य ६-६ ग्राम लिनुपर्छ । काढा तयार भएपछि सेलाएको अवस्थामा मह ३-६ ग्राम मिसाएर सेवन गर्नुपर्छ ।

अमलाको रस ५० मि.लि.मा १ ग्राम बेसार र ६ ग्राम मह मिसाई दुवै समय पिउनाले बातज र पित्तज प्रमेह निश्चय नष्ट हुन्छन् ।

धनिया, जिरा र कालो जिरा कुटी छानी चूर्ण बनाउनू । यसलाई ६ ग्रामको मात्रामा सेवन गरेमा पित्तज प्रमेहहरू नष्ट हुन्छन् ।

वायुविडङ्ग, दारुहरिद्रा, धयेंरोको फूल, श्योनाक (टटेलो), नीलकमल, सुकमेल, अर्जुनको बोक्रा यिनको काढामा मह मिसाई सेवन गर्दा पित्तज प्रमेह नष्ट हुन्छ ।

३०. स्वप्न दोष (रात्रीस्खलन)

युवक मानिसलाई १ महिनामा १-२ पटक स्वप्नदोष हुनु ठूलो कुरा होइन । तर ५-७ पटक वा बढी पटक स्वप्नदोष भएमा रोग नै मान्नुपर्छ ।

प्रमेह र स्वप्नदोषका उपद्रवहरू - यस अवस्थामा बढी तिर्खा लाग्छ, अलिकति पनि बढी खाएमा पखाला लाग्छ, प्रायः ज्वरो आइरहन्छ, जिउ पोल्ने र बेचैनी हुने गर्छ, शरीर दुब्लो हुँदै जान्छ, कुनै काममा पनि जाँगर चल्दैन, सारा शरीरमा विशेष गरी काखीबाट दुर्गन्ध आउँछ, पिडौँलाहरू दुख्छन्, निद्रा खूब लाग्छ, हर समय पल्टीरहने मन हुन्छ, अलिकति मिहिनेत गर्दा पनि शरीर थाक्छ, मनमा अनेक प्रकारको भ्रम रहन्छ, कम्मर दुख्छ, हात-खुट्टा लाटो भएर जान्छ, हत्केला र पैतालाबाट पसिना आइरहन्छ । भोक कम लाग्ने, मुटुको धड्कन बढ्ने, स्वर बिग्रेर जाने हुन्छ ।

स्वप्नदोषनाशक योग - बिहान अथवा भोजनपछि केरा र महको सेवन गर्नू । यसबाट वीर्यविकार नभई वीर्य बढ्छ । (परीक्षित)

भीमसेनी कपूर १ ग्राम, बेसार १२ ग्राम, शीतलचिनी ६ ग्राम, अफीम ५० मिलीग्राम, मिश्री २४ ग्राम सबको चूर्ण बनाई मिश्रण गर्नू र सिसीमा राख्नू । यो चूर्ण २ ग्राम मात्रामा राती सुत्ने बेलामा दिनदिनै पानीसँग खान दिनू । यसबाट स्वप्नदोष नष्ट हुन्छ । (परीक्षित)

जेठीमधुको चूर्ण १० ग्राम, गाईको मख्खन १० ग्राम, मह ५ ग्राम मिसाइ चाटेपछि मिश्री राखी पकाएको गाईको दूध पिउनाले स्वप्नदोष नष्ट भएर वीर्य खूब पुष्ट हुन्छ, शरीर पनि बलवान् हुन्छ । यसलाई ३ महिनासम्म सेवन गर्नुपर्छ । (अनेक पटक परीक्षित)

गुलाफ अथवा चन्दनको शर्बतमा ६२ मि.ग्रा. देखि २५० मि.ग्रा. सम्म मोती वा मूगा भस्म मिसाई सेवन गर्नाले समस्त वीर्यसम्बन्धी रोगहरू नष्ट हुन्छन् ।

ताजा अमलाको रस १२ मि.लि., ताजा नीमपातको रस १२ मि.लि., मिश्री १२ ग्राम, शुद्ध शिलाजीत २५० मिलीग्राम सबैलाई मिसाएर बिहान-बेलुका ४० दिनसम्म पिउनाले स्वप्नदोषलाई नष्ट गर्दछ ।

१२ ग्राम बबूलको गूँदलाई राती १०० मि.लि. पानीमा भिजाइ दिनू । बिहान त्यसलाई मलेर कपडाले छान्नू र २५ ग्राम मिश्रीको धुलो मिसाएर खान दिनू । २१ दिनमा स्वप्नदोष ठीक हुन्छ ।

शतावरी (कुरिलो), काउसोको गुदी, तालमखाना प्रत्येक २५० ग्राम, गोखुर १२५ ग्राम, केशर ३ ग्राम, जाइफल ३ ग्राम, मिश्री ३ ग्राम सबलाई कुटी छानी चूर्ण

बनाउनू । यो चूर्ण १२ ग्राम मात्रामा गाईको दूधसँग सेवन गर्नाले स्वप्नदोष र प्रमेह नष्ट भएर जान्छन् ।

सेतो मुसली, काउसोको बियाँको गुदी, शतावरी, सुकेको अमला, चिनी प्रत्येक २५ ग्राम लिएर कुटीछानी चूर्ण बनाउनू । त्यसमा २.५ ग्राम गुर्जोको सत्त्व (गिलोयसत्) चूर्ण बनाएर मिसाउनू । यो औषधी ३-६ ग्राम मात्रामा गाईको दूधसँग सेवन गराउनू । स्वप्नदोषका लागि अनेक पटक परीक्षित र सफल औषधी हो ।

बिहानीपख आधा लिटरदेखि ३ पाउसम्म बासी पानी पिउनू । दिसा गरेपछि दिसा धोएर बचेको पानिलाई मसिनो धारले विस्तारै लिङ्गको जरामा हाल्नू । राती सुत्ने वेलामा हात खुट्टालाई चिसो पानीले धोएर मात्र सुत्ने गर्नू ।

गोखुर, सुकेको अमला, गुर्जो, समभाग लिएर कुटीछानी चूर्ण बनाउनू । यो चूर्ण २ ग्राम मात्रामा घिउ र मिश्रीको धुलोसँग खानाले स्वप्नदोष ठीक हुन्छ ।

काहूको बियाँ १२ ग्राम, भाँग १२ ग्राम, कासनीको बियाँ १२ ग्राम, निलो कमल १२ ग्राम, धनिया १२ ग्राम सबैलाई कुटी छानी चूर्ण बनाउनू । यसमा १२० ग्राम मिश्रीको चूर्ण पनि मिसाएर राख्नू । साथै ईसबगोल भूसी १२० ग्राम पनि नकुटी मिसाइदिनू । यो औषधी दिनदिनै ६ ग्रामको मात्रामा गाईको दूधसँग सेवन गर्नाले स्वप्नदोष नष्ट हुन्छ, वीर्यको गर्मी पनि शान्त हुन्छ ।

अफीम ६० मिलीग्राम, कपूर २५० मिलीग्राम, शीतलचिनीको चूर्ण ७५० मिलीग्राम तीनैथरी मिसाई राती सुत्नेवेलामा चिसो पानीसँग खानू । बिहान उठेपछि मोचरस (सिमलको खोटो) ६ ग्राम र मिश्री २४ ग्राम दुवैको चूर्ण फाँकी माथिबाट गाईको दूध पिउनू । २१ दिनमै स्वप्नदोषबाट छुटकारा पाइन्छ ।

सेतो मुसली ५० ग्राम, बहमन सफेद ५० ग्राम, ईसबगोलको भूसी १२० ग्राम लिनू । पहिले सेतो मुसली र बहमनलाई कुटी छानी चूर्ण बनाएर राख्नू । त्यसमा ईसबगोलको भूसी मिसाइदिनू । त्यसपछि ती सबैको बराबर (२२० ग्राम) मिश्रीको चूर्ण मिसाई कुनै भाँडोमा सुरक्षित राख्नू । यो औषधी १२ ग्राम मात्रामा १ पाउ गाईको दूधसँग खाने गर्नू । २१ दिनमा अपूर्व चमत्कार देखाउँछ । वीर्यसम्बन्धी सबै किसिमका दोषहरू मेटिएर जान्छन् ।

वंगभस्म ६ ग्राम, मूँगा भस्म ६ ग्राम, संग जराहत ६ ग्राम, सुकमेलको दाना ३ ग्राम, वंशलोचन १०० ग्राम, सबलाई कुटी छानी चूर्ण तयार गर्नू । यसलाई ३ ग्राम मात्रामा बिहान बेलुका गाईको दूधसँग सेवन गर्नाले प्रमेह, स्वप्नदोष, शीघ्रपतन आदि रोगहरू नष्ट हुन्छन् । (अनेक पटक परीक्षित)

शुद्ध गन्धक १२ ग्राम, एक-दुई वर्ष पुरानो गुड १२ ग्राम दुवै मिसाई राख्नू । यसबाट १ ग्राम मात्रा लिएर गाईको दूधसँग सेवन गर्न दिनू । प्रमेह र स्वप्नदोषमा हित गर्छ । (परीक्षित)

गोखुर, तालमखाना, शतावरी (कुरिलो), काउसोको बियाँ (बोक्रा छोडाएको), बलाको बीज सबै ५०-५० ग्राम लिएर कुटी छानी चूर्ण बनाएर मिसाउनू । त्यसमा १५० ग्राम मिश्रीको चूर्ण मिसाएर सफा भाँडामा राख्नू । यो चूर्ण ३-६ ग्राम मात्रामा बिहान-बेलुका गाईको दूधसँग ३-४ महिनासम्म सेवन गर्नाले प्रमेह, स्वप्नदोष, शीघ्रपतन आदि धातुसम्बन्धी रोग नष्ट हुन्छन् । (परीक्षित)

प्रमेहनाशक औषधीको सेवन गर्दा कब्जियत रहनु ठीक हुँदैन । अतः तेल, अमिलो अचार, खुर्सानी र कब्जियत गर्ने कुरा खानुहुँदैन ।

प्रमेह पिडकाको चिकित्सा – पहिले जुका लगाई पिडकास्थानको रगत निकालीदिनू । पाकिसकेको भए चिर्न लगाउनू । जुका लगाईसकेपछि गाई वा बाखाको मूत्र अथवा घाउ निको पार्ने नीम आदि औषधीको काढाले दिनको दुईपटक पिडका भएको भागमा धुने गर्नू । त्यसपछि तल लेखिएका औषधीहरू लगाउनू ।

बबूलको हरियो पात २५ ग्रामलाई कचौरामा राखी त्यो कचौरालाई आगो बलेको चुलोमाथि राख्नू र खरानी पार्नू । त्यस खरानिलाई पिनेर त्यसमा सुकमेलको दाना ४ ओटा पनि खरानी बनाई मिसाउनू । ती दुवै भस्मको मिश्रणमा ३ ग्राम खयर पिनेर मिसाउनू । सबैलाई राम्ररी मिसाइसकेपछि सिसीमा राख्नू । साबुन अथवा निर्मलीको काढाले पिडकालाई धोएर कपडाले पुछिसकेपछि पिडकामा अलिकति अडेरको तेल (Caster oil) लगाएर माथिबाट सिसीमा राखेको बबूल आदिको चूर्ण छर्किदिनू । यसो गर्नाले प्रायः एकै हप्तामा असाध्य पिडका पनि नष्ट भएर जान्छ । (परीक्षित)

अथवा– नीमको बोक्रा ल्याई ढुङ्गामा पानीसँग घोट्नू । अनि त्यसमा मुर्दासंग (एक खनिज पौष्टिक) पनि राखेर घोट्नू । यो लेप पिडकामा लगाईदिनू । यसले पिडकामा आराम दिन्छ । (परीक्षित)

पिडकामा डुम्रीको दूध लगाउनाले अथवा सोमराजी (बाकुची) को बियाँलाई पिनेर लगाउनाले धेरै लाभ हुन्छ ।

पिडका भएको रोगीलाई अनन्तमूल, श्यामलता (कृष्णसारिवा), मनका, निशोथ, सेतो निशोथ, सनायपत्ती, कुठकी, ठूलो हर्रो, असुरोको बोक्रा, नीमको बोक्रा, बेसार, दारुहरिद्रा, गोखुर यी सबैको काढा बनाई पिउन दिएमा लाभ हुन्छ ।

नपुंसकता – जुन पुरुषले आफ्नी प्यारी र असल स्त्रीसँग पनि मैथुन गर्न सक्दैन, कहिलेकाहीं गर्न खोज्दा पनि श्वास धेरै चल्न थालेर आत्तिएर जान्छ, जसको शरीर पसिनाले निथ्रुक्क हुन्छ, इच्छा पूरा गर्न सक्दैन, लिङ्ग शिथिल हुन्छ, वीर्य बीजरहित हुन्छ त्यसलाई नपुंसक भनिन्छ ।

नपुंसकता ७ किसिमका हुन्छन्

(१) मानसिक नपुंसकता, (२) पित्तज नपुंसकता (पित्तको प्रकोपबाट उत्पन्न), (३) वीर्यदोषज नपुंसकता (वीर्यको दोषबाट उत्पन्न), (४) रोगज नपुंसकता-क्षय, प्रमेह आदि पुराना रोगहरूबाट उत्पन्न, (५) वीर्यवाहिनी नसाको छेदनबाट उत्पन्न नपुंसकता, (६) मैथुन नगर्नाले उत्पन्न नपुंसकता, (७) जन्मैदेखिको नपुंसकता ।

शुक्रदोष वा धातुरोग – बढी मात्रामा स्त्रीसमागम गर्नाले, सुख्खा, पिरो, अमिलो, तातो, तेलयुक्त पदार्थ बढी सेवन गर्नाले वात आदि दोषहरू कुपित हुन्छन् र वीर्यवाहिनी नाडीमा पुगेर वीर्यलाई दूषित पार्छन् । दूषित वीर्य पातलो, खराब रङ्गको र दुर्गन्धित हुन्छ । त्यसलाई शुक्रदोष भनिन्छ । शुक्र दूषित भएपछि स्वप्नदोष, शीघ्रपतन, शुक्रमेह आदि धातुसम्बन्धी रोगहरू उत्पन्न हुन्छन् ।

दूषित शुक्र ८ प्रकारका हुन्छन्

(१) **वातदूषित वीर्य** – यो फिंजयुक्त, केही गाढा र कम मात्रामा हुन्छ । यसको रङ्ग कालो वा रातो हुन्छ । वीर्य निस्कने वेलामा सियोले घोचेजस्तो दुख्छ ।

(२) **पित्तदूषित वीर्य** – पित्तबाट दूषित वीर्य निलो, पहेंलो र अत्यन्त गरम हुन्छ, त्यसमा पिप जस्तो दुर्गन्ध हुन्छ । वीर्य वाहिर निस्कदा पोलेको अनुभव हुन्छ ।

(३) **कफदूषित वीर्य** – कफद्वारा वीर्यवाहिनी नाडीको मार्ग बन्द भएर वीर्य अत्यन्त गाढा र सेतो रंगको हुन्छ । यो निस्कदा मन्द वेदना हुन्छ ।

(४) **पित्तवातदूषित वीर्य** – यो वीर्य विस्तारै निस्कन्छ, कहिलेकाहीं रगत मिसिएको हुन्छ । यसमा अण्डकोषहरू दुख्छन् ।

(५) **रक्तदूषित वीर्य** – यसमा सिनुजस्तै दुर्गन्ध हुन्छ । यो बढीरगत मिसिएको हुनाले रातो हुन्छ ।

(६) **वातकफदूषित वीर्य** – यो गाँठो वा डल्लो परेजस्तो हुन्छ ।

(७) **पित्तकफदूषित वीर्य** – यो दुर्गन्धित पिपजस्तो हुन्छ ।

(८) **सन्निपातदूषित वीर्य** – यसमा दिसा र पिसाबजस्तो गन्ध हुन्छ ।

शुद्ध वीर्य – यो चिप्लो, गाढा र चम्किलो सेतो रङ्गको हुन्छ । यो अण्डकोषमा बन्छ र शुक्रवाहिनीद्वारा शुक्राशयमा पुगेर जम्मा हुन्छ । शुक्राशयमा दुईवटा थैली हुन्छन् र यो मूत्राशयसँगै हुन्छ । मैथुनको समयमा यसैबाट वीर्य मूत्रनलीद्वारा निस्कन्छ र स्त्रीको योनिमा गएर खस्छ ।

यस वीर्यबाट एक विशेष किसिमको गन्ध आउँछ । कपडामा लाग्नाले हल्का

पहेंलो रङ्गको दाग भएर जान्छ । त्यो लुगालाई आगोको तापमा तताथो भने दागको रङ्ग झन् गहिरो हुन्छ ।

वीर्य पानीभन्दा भारी हुन्छ । एकचोटीको मैथुनमा आधा तोला (५ मि.लि.) देखि सवा १ तोलासम्म वीर्य निस्कन्छ । वीर्यको १०० भागमा ९० भाग पानी, १ भाग सोडियम लवण, १ भाग अरू लवण, ३ भाग खटिक आदि पदार्थ र ५ भाग एक किसिमका अणुहरू (Cells) को हुन्छ जसलाई शुक्राणु वा शुक्रकीट (Sperm) भनिन्छ । ताजा वीर्यलाई माइक्रोस्कोपबाट हेरियो भने त्यसमा वेगका साथ चलीराखेका जीवाणुहरू देखिन्छन्, तिनैलाई शुक्राणु भनिन्छ । सन्तानको जन्म गराउने यी शुक्राणु नै हुन्छन् । जसको वीर्यमा शुक्रकीट हुँदैन, अथवा जसको शुक्र ग्रन्थिमा यो बन्दैन त्यो पुरुषले सन्तान जन्माउन सक्दैन, मैथुन गर्न सक्छ ।

एकपटक निस्केको वीर्यमा यी शुक्राणुहरू एक करोड अस्सी लाखदेखि २२ करोड साठी लाखसम्म हुन्छन् । वीर्यलाई काँचको ग्लासमा राखियो भने केही बेरपछि यो दुई तह भएर जान्छ - माथिको तह दहीको पानीको जस्तो पातलो हुन्छ, तलको तह दूधजस्तो हुन्छ । सारा शुक्रकीटहरू तलको तहमा बस्छन्, त्यसैले तलको तह गाढा अर्थात् बाक्लो हुन्छ । तलको तह जति गहिरो र गाढा हुन्छ त्यसमा त्यत्तिकै बढी मात्रामा शुक्रकीटहरू हुन्छन् ।

चित्र



शुक्रकीटको लम्बाई १ इञ्चको पाँच सयौँ भागदेखि १/५०० हजारौँ भागसम्म हुन्छ । यसको अगाडिको भाग मोटो र अण्डाकारको हुन्छ, पछाडिको भाग पातलो र चुच्चो परेको हुन्छ । अगाडिको भागलाई टाउको, टाउकोपछाडिको दबेको भाग गर्दन, बीचको भाग शरीर अन्तिम भाग पुच्छर हो । शुक्रकीटहरू वीर्यको तरल भागमा तैरिन्छन् । कमजोर कीटहरू बिस्तारै र बलिया कीटहरू छिटो दौडन्छन् । इनको पुच्छर पानीमा तैरी राखेको अथवा जमीनमा घस्री राखेको सर्पजस्तै हल्लिएको देखिन्छ ।

शुक्रकीट बन्ने समय - शुक्रकीटहरू १४-१५ वर्षको उमेरमा बन्न सुरु हुन्छन् तर त्यस समयका शुक्रकीटहरूले बलवान् सन्तान जन्माउन सक्दैनन् । राम्रा शुक्रकीटहरू २०-२५ वर्षको उमेरमा बन्छन् । त्यसैले २०-२५ वर्षभन्दा पहिले मनुष्यले मैथुन गर्नुहुँदैन ।

जुन मानिसहरू सानै उमेरमा मैथुन गर्न थाल्छन् तिनीहरूको शरीर राम्ररी बढ्न पाउँदैन, बढ्ने गति रोकिन्छ । शुक्रग्रन्थिबाट शुक्रकीट बाहेक अर्को महत्वपूर्ण चीज पनि बन्छ । यद्यपि सन्तान जन्माउन त्यसको दर्कार पर्दैन तैपनि त्यो रगतमा

मिलेर शरीरका भिन्न-भिन्न अङ्गहरूमा पुग्छ र त्यसले शरीरलाई बलियो र फुर्तिलो बनाउँछ । प्रत्येक पुरुषलाई शरीर बढ्ने वेलामा त्यसको दर्कार पर्छ । यदि कसैको जवानीमैं अण्ड निकाली दियो भने त्यो राम्रोसँग बढ्न सक्दैन । उसको दाह्री-जुंगा पनि राम्ररी आउँदैन । यसैले सबै अङ्गहरूको पूरा वृद्धि नभएसम्म शुक्रग्रन्थिबाट शुक्रकीट बनाउने काम लिनु आफु र आफ्नो सन्तानको हानि गर्नु हो । यसै भएर सुश्रुतले २४ वर्षको पुरुष र १६ वर्षकी स्त्रीको विवाह गरी गर्भाधान गर्ने आज्ञा दिएका छन् । यसभन्दा पहिले वीर्यको नाश गर्नु परम हानि हो ।

नपुंसकताको चिकित्सा

जन्मदेखिको नपुंसकता असाध्य हुन्छ । बाँकी सबै प्रकारका नपुंसकताको असली कारण पत्ता लगाई चिकित्सा गर्नुपर्छ । नपुंसकताको मुख्य लक्षण मैथुन गर्न नसक्नु हो । यसमा लिङ्गको शिथिलता, बाङ्गोपन, वीर्य नरोकिने र शीघ्र पतन मुख्य लक्षण हुन्छन् । हस्तमैथुनका कारण लिङ्ग बाङ्गो, अगाडिपट्टि मोटो र पछाडी पातलो भएर जान्छ, त्यसमा निला नसाहरू देखिन्छन्, इन्द्रिय लुलो र छुँदा केही महसूस नहुने भएर जान्छ । अतः नपुंसकताको चिकित्सा गर्दा त्यसको कारण पत्ता लगाई रोगबाट उत्पन्न लक्षण तथा शरीरको कमजोरी पनि हटाउने उपाय गर्नुपर्छ ।

नपुंसकताको सामान्य चिकित्सा

सेतो प्याजको रस ८ मि.लि., अदुवाको रस ८ मि.लि., मह ४ ग्राम र घिउ २ ग्राम सबै मिसाई एकसाथ २ महिना सेवन गर्नाले नामर्द पनि मर्द भएर आउँछ । (परीक्षित)

प्याजको रस ६ मि.लि., घिउ ४ ग्राम, मह ३ ग्राम सबलाई मिलाई बिहान बेलुका पिउनू । सुत्ने वेलामा १ पाउ (२०० मि.लि.) दूधमा मिश्री २४ ग्राम, शतावरीको चूर्ण १२ ग्राम पकाई पिउने गर्नू । यसबाट अपूर्व चमत्कार देखिन्छ ।

मोचरसको चूर्ण ६ ग्राम, मिश्री ४८ ग्राम दुवैलाई गाईको तातो दूधमा मिसाएर २-३ महिना सेवन गरेमा स्वप्नदोष नष्ट भएर बलवीर्य बढ्छ ।

काउसोको बोक्रा छोडाएको बियाँको चूर्ण ६ ग्राम, तालमखानाको चूर्ण ६ ग्राम, मिश्री १२ ग्राम सबैलाई मिसाई खाएपछि गाईको दूध पिउने गर्नू । यो उत्तम शक्तिवर्धक औषधी हो । (परीक्षित)

माषको दाललाई धोइपखाली पानीमा पिन्नू । अब कराहीमा घिउ तताई माषको त्यो पिनेको दाललाई भुट्नू । रातो हुँदै आएपछि त्यसमा तातो दूध राखी फेरि मन्दमन्द आँचमा पकाउनू । खीरजस्तो भएर आएपछि मिश्रीको चूर्ण मिसाई ओराल्नू । यो औषधी आफ्नो अग्निबल अनुसार खानू । पच्दै गएपछि मात्रा बढाउँदै जानू । ४० दिनसम्ममा वीर्य खूब बढेर आउँछ र शरीर पनि पुष्ट हुन्छ । (परीक्षित)

विदारीकन्दलाई कुटी छानी चूर्ण बनाउनू । त्यसमध्ये २४ ग्राम चूर्ण डुम्रीको गेडाको रसमा भिजाई खानू र दूधमा घिउ मिसाएर पिउनू । यसबाट चमत्कार भएको अनुभव हुन्छ, स्त्रीप्रसंगको इच्छा जागेर आउँछ ।

तिल र गोखुरको चूर्ण समान मात्रामा (१०-१० ग्राम) लिएर बाखाको दूधमा (२०० मि.लि.) पकाउनू । पाकेपछि सेलाएको अवस्थामा मह मिसाई खानू । हस्तमैथुन आदिबाट भएको नपुंसकता नष्ट हुन्छ ।

जसले घिउमा तारेको माछा खाने गर्छ उ स्त्रीको अगाडि कहिल्यै हार्दैन ।

लसुन ५०० ग्राम, दूध २ लिटरमा राखी मन्द आगोमा पकाऊ । जब दूध सुक्छ र खुवा बन्छ अनि त्यस खुवालाई ५०० ग्राम घिउमा भुट्नू र ओराल्नू । सेलाएपछि त्यसमा मह मिसाई माजून (अवलेह) तयार पार्नू । यसको सेवन गर्नाले वीर्य खूब पुष्ट हुन्छ । पक्षाघातका रोगीहरूलाई पनि यसले लाभ दिन्छ ।

पिप्ला १ किलो ल्याई २ लिटर दूधमा पकाउनू । जब दूध सुक्छ अनि पिप्लालाई घाममा सुकाउनू । त्यसपछि पिनेर त्यसमा मिश्री मिसाई राख्नू । यो पिप्लाको चूर्ण ६ ग्रामको दरले खाएर दूध पिउने गरेमा वीर्य खूब बढ्छ र शरीर पनि पुष्ट हुन्छ ।

बबूलको काँचो फल (छायामा सुकाइएको) ६० ग्राम, मौलसिरीको सुकेको बोक्रा ६० ग्राम, शतावरी ६० ग्राम, मोचरस ६० ग्राम, सबलाई पिनछान गरी चूर्ण बनाउनू । अनि मिश्रीको चूर्ण २४० ग्राम पनि मिसाउनू । यो औषधी ५ ग्राम मात्रामा दूधसँग सेवन गर्नाले जस्तै पातलो वीर्य पनि गाढा भएर आउँछ ।

बरको रुखको अङ्कुर (कोपिला) ३ ग्राम, डुम्रीको रुखको बोक्रा ३ ग्राम, मिश्री ६ ग्राम यी सबैलाई सिलौटामा पिनेर लेदो बनाउनू र खानू । माथिबाट गाईको दूध २०० मि.लि. पिउनू । ४० दिनको सेवन पछि पातलो वीर्य खूब गाढा भएर आउँछ ।

समुद्रफेन, तालमखानाको बियाँ, तुख्मे यहान (कालो तुलसीको बियाँ) सबै समभाग लिएर कुटी छानी चूर्ण बनाउनू । यो चूर्ण ६-१० ग्राम मात्रामा बिहान दूधसँग खाने गर्नाले पातलो वीर्य गाढा हुन्छ र रुकावट पनि हुन्छ । (परीक्षित)

काउसोको बियाँलाई बोक्रा निकाली छायामा सुकाएर चूर्ण बनाउनू । यो चूर्ण ६-१० ग्राम मात्रामा लिएर दूधमा पकाई पिउने गर्नू । यसले पनि वीर्य गाढा बनाउँछ, रुकावट पनि गर्छ ।

पलाशको रुखको बोक्रा, पलाशको गूँद, डुम्रीको रुखको बोक्रा, डुम्रीको गूँद, सिमलको कमलो जरा, सिमलको गूँद, मौलसिरीको बोक्रा, भुटेको चना, बबूलको गूँद सबै ३-३ तोला लिएर कुटी छानी चूर्ण बनाउनू । यो चूर्ण बिहान बेलुका ४-६ ग्राम मात्रामा गाईको दूधसँग सेवन गर्नाले धातु गाढा भएर आउँछ, रुकावट पनि हुन्छ ।

वीर्यस्तम्भन गर्ने औषधीयोगहरू

अकरकरा २ ग्राम, कालो तुलसीको बियाँ २४ ग्राम, मिश्री २४ ग्राम, कुटी छानी चूर्ण बनाउनू । यो चूर्ण १२ ग्राम मात्रामा मैथुनभन्दा २ घण्टा पहिले दूधसँग सेवन गर्नू । वीर्य बढी पातलो वा गरम छैन भने जबसम्म कागतीको रसको सेवन गरिँदैन तबसम्म वीर्यपात हुँदैन । बारंबार परीक्षित ।

अमिलीको बियाँ लिएर ४ दिनसम्म पानीमा भिजाइराख्नू । अब बोक्रा फालेर तौलनू र त्यसको २ गुणा (दोब्बर) पुरानो गुड मिसाएर खूब पिन्नू । त्यसपछि चनासमान गोली पार्नू । मैथुनभन्दा १-२ घण्टा पहिले २ गोली दूधसँग खानू । यदि वीर्यपात हुन सकेन भने कागतीको रस पिउनू ।

अश्वगन्धादि चूर्ण – अश्वगन्धा र विधारा समभाग लिएर कुटी छानी चूर्ण बनाउनू र घिउले चिल्लो भाँडोमा राख्नू । यो औषधी १२ ग्रामको मात्रामा ४ महिनासम्म मिश्री राखेको दूधसँग सेवन गर्नाले केश फुल्ने रोग समाप्त हुन्छ । हरेक वर्ष शरद् ऋतुदेखि ४ महिनासम्म सेवन गर्नाले ५० वर्षको मानिस पनि युवतीको घमण्ड तोड्न सक्छ । यसको सेवनका साथ नारायण तेलको मालिस पनि गर्नाले अझ राम्रो हुन्छ । (अनेक पटक परीक्षित)

आमलकी रसायन – सुकेको अमलालाई कुटीछानी चूर्ण बनाउनू । त्यसमा ताजा अमलाको रसले भिजाई घाममा सुकाउनू । यसरी ७ पटकसम्म अमलाको रसले भिजाउँदै सुकाउँदै गर्नू । त्यसपछि सिसीमा राख्नू । यो चूर्ण ६ ग्रामदेखि १२ ग्रामसम्म मह र मिश्रीका साथमा १ महिनासम्म सेवन गर्नाले बूढो मानिस पनि तन्नेरी जस्तै बलवान् हुन्छ ।

आनन्ददायक लेप – कबाबचिनी, दालचिनी, अकरकरा, राती गेडी सबै समभाग लिएर मसिनो गरी पिन्नू । यसबाट अलिकति चूर्ण लिएर महमा मिसाउनू । यसलाई टुप्पो छोडी बाँकी लिङ्गमा लेप गर्नू । आधादेखि १ घण्टापछि कपडाले पुछेर मैथुन गर्नू । स्त्रीपुरुष दुवैलाई आनन्द हुन्छ ।

लिङ्गको शिथिलताका लागि सेक – यदि लिङ्ग शिथिल भएर गएको छ भने निम्न पोटली बनाएर सेकने गर्नुपर्छ । अडेरको बियाँ १२ ग्राम, पुरानो गुड १२ ग्राम, तिल १२ ग्राम, कपासको बियाँ १२ ग्राम, कुठ ६ ग्राम, जाइफल ६ ग्राम, जाइपत्री ६ ग्राम, मह २४ ग्राम सबलाई कुटीछानी कपडामा राखी पोको पार्नू । मन्द अग्निमा बाख्राको दूध पकाउनू र त्यस दूधमा अघि बनाएको पोको डुबाउँदै लिङ्गमा अगाडिको टुप्पो छोडी सेक्ने गर्नुपर्छ । यसले २१ दिनमा शिथिलता हराउँछ ।

सेकसँग खाने औषधी – ठूलो गोखुर १३.५ ग्राम, कालो तिल १३.५ ग्राम दुवैलाई पिनेर चूर्ण बनाउनू । त्यो चूर्णलाई १ लिटर गाईको दूधमा पकाउनू ।

खिरजस्तो भएर आएपछि ओराल्नू र केहीबेरपछि खानू । यो १ मात्रा हो । ४० दिनसम्म सेवन गर्नाले अवश्य लाभ हुन्छ ।

लिङ्गको शिथिलता र शून्यतानाशक लेप – यदि लिङ्गमा स्पर्शको ज्ञान हुँदैन र बढी शिथिल भएर गएको छ भने लोबान कौडिया ४८ ग्राम लिएर पहिले करौंदाको रसमा खल गर्नू । पछि त्यसमा ४८ ग्राम घिउ राखी फेरि खल गर्नू । अब पाताल यन्त्रको विधिले तेल निकाल्नू र सिसीमा राख्नू । यो तेल लगाउने वेलामा पहिले लिङ्गमा बेसार मल्नू अनि टुप्पोलाई छोडी बाँकी लिङ्गमा ३० मिनेटसम्म दिनदिनै मल्नू । २१ दिनमा लिङ्ग पूरा मात्रामा ठीक हुनेछ । यो हुन सकेन भने खाली लोबानको तेल दिनदिनै लगाएपछि पानको पात तताएर बेर्नू ।

३१. सूजाक रोग (गोनीरिया)

यो जननेन्द्रियसम्बन्धी रोग हो । यसमा इन्द्रिय अर्थात् लिङ्गको भित्र घाउहरू हुन्छन्, पिसाब फेर्ने बेलामा पोल्छ र भित्रबाट पिपजस्तो स्राव आउँछ । यसलाई यूनानी पद्धतिमा सूजाक रोग भनिन्छ । डाक्टरहरूले यसलाई गोनोरिया भन्छन् ।

सूजाक उत्पन्न गर्ने जीवाणुलाई गोनोकोकाई भनिन्छ । रोग लागेको पुरुष वा महिलाको यौन संसर्ग हुँदा यी जीवाणुहरू मूत्रनलीबाट अगाडि बढेर जान्छन् । धेरैजसो यी जीवाणुहरू पुरुषको मूत्रमार्ग, स्त्रीको मूत्रमार्ग, योनि, गर्भस्थान, गर्भाशय आदिमा आक्रमण गर्छन् र मूत्रमार्गको भित्रपट्टिको कलिलो रसिलो तहमा प्रवेश गरेर बढ्दै जाँदा रोग उत्पन्न गर्छन् ।

भेदक निदान

सूजाक	अन्य रोगहरू
१. सूजाक एक खास ठाउँसँग सम्बन्ध राख्छ । सूजाक लिङ्गको स्थानीय रोग हो ।	१. प्रमेहको सम्बन्ध पूरै शरीरसँग हुन्छ । प्रमेह मूत्रको विकार हो ।
२. सूजाक रोग दूषित संसर्गद्वारा लिङ्गमा रोगको जीवाणुको प्रवेशबाट हुन्छ ।	२. प्रमेह रोग मिथ्या आहार-विहारबाट वातादि दोष दूषित भएपछि उत्पन्न हुन्छ ।
३. सूजाकमा लिङ्गको भित्र मुखतिर घाउ हुन्छ ।	३. आतशकमा सुपारी माथि बाहिरपट्टि घाउ हुन्छ ।
४. सूजाकमा खूब जलनका साथ पिसाब आउने, अत्यन्त कष्ट हुने गर्छ । पिप पनि आउँछ ।	४. मूत्रकृच्छमा मलको अवरोध, पत्थरी आदि कारणहरू हुन्छन् । अग्निको समान रातो पिसाब हुन्छ । पिसाब वेदनाका साथै कम मात्रामा हुने, साथै वीर्य पनि आउने हुनसक्छ ।

सूजाकको मुख्य लक्षण – सूजाकको पहिलो अवस्थामा लिङ्गमा खूब पोल्छ । इन्द्रियको मुख अलि सुनिएर आउँछ, रातो पनि हुन्छ । इन्द्रियमा दुख्ने र चिलाउने हुन थाल्छ । इन्द्रियको मुखलाई थिच्दा बाक्लो तर कम मात्रामा चोप जस्तो स्राव निस्कन्छ । यसै समयमा चिकित्सा भयो भने रोग निको भएर जान्छ । लाजका कारण रोग लुकाइयो भने केही दिनमा नै लिङ्गमा घाउ भएर जान्छ र पिसाब फेर्ने बेलामा पोल्नाले रोगी कराउन, आत्तिन थाल्छ । पिसाबमा पहेंलो र गाढा अथवा पातलो पिपजस्तो स्राव निस्कन्छ । यस्तो वेलामा पिसाब रोकेको खण्डमा घाउ झन् बढेर जान्छ ।

तल्लोपेट, कम्मर, तिघ्राको जोर्नीमा दुख्ने हुन्छ । एकतिरको कम्मर वा मिर्गौंलामा दुख्ने हुन्छ । यस रोगमा रातको वेलामा लिङ्गमा बढी चाप हुन्छ । यस्तो अवस्थामा मैथुन गर्नाले घाउ फाटेर जान्छ । तेस्रो अवस्थामा रोगको चाप कम भएर जान्छ, पिसाब पोल्ने पनि कम हुन्छ । थोरै मात्रामा पिप चाहिँ आउन छोड्दैन । बिहान उठ्दा इन्द्रियलाई थिच्यो भने पिप आएको देखिन्छ । अनेक पटक छिद्रमा पिप जमेर बस्छ । पिप सफा नगरी पिसाब आउँदैन, पिप हट्नासाथ पिसाब हुन थाल्छ ।

पुरानो सूजाक

सूजाकको चाप १०-१५ दिनसम्म रहन्छ, त्यसपछि घट्न थाल्छ । बीचको अवस्थामा पिपको रङ्ग पहेंलो हुन्छ भने अन्तमा सेतो भएर आउँछ । यो अवस्था कैयौं दिनसम्म रहन्छ । यसैलाई जीर्ण सूजाक (Chronic gonorhea) भनिन्छ ।

रोग पुरानो भएपछि मूत्रनलीमा गाँठो उत्पन्न भएर आउँछ जसका कारण पिसाब मसिनो धारमा अथवा थोपा थोपा आउने गरी निस्कन थाल्छ । यसले रोगीलाई बडो कष्ट हुन्छ । यसलाई डाक्टरहरू 'स्ट्रिक्चर' भन्छन् । मूत्र रोकिनाले मूत्रनलीमा सलाई (कैथेटर) पास गर्नुपर्ने हुन्छ, अनि मात्र पिसाब हुन्छ ।

पुरानो सूजाकमा प्रायः मूत्रकृच्छ भएर जान्छ ।

चिकित्सा – पहिले ३६-४८ मि.लि. अडेरको तेल दूधमा मिसाई रोगीलाई दिएर पेट सफा गराउनु उत्तम हुन्छ । इन्द्रिय जुलाफ दिनु पनि आवश्यक हुन्छ । दूध र पानी बराबर लिएर दुई गिलासमा ओहोर-दोहोर पल्टाई पिउन दिनुपर्छ ।

पिसाब सफा गर्ने योगहरू – गोखुर, ईसबगोल, जेठी मधु, बेदाना यीमध्ये कुनैलाई रातमा भिजाई बिहान मिचेर छानी पिउन दिनुपर्छ । यी औषधीहरूले पिसाब सफा गर्छन् र जलन पनि हरण गर्छन् ।

काँक्राको बियाँ, जेठीमधु, दारुहरिद्रा (चुत्रो) यी तीनै थरीको समान भाग

लिएर चूर्ण बनाउनू । यो चूर्ण ३-६ ग्राम मात्रामा खाएर चौलानी (चामल पखालेको पानी) खान दिनू । यसबाट सूजाक र मूत्रकृच्छको जलन तुरुन्त मेटिन्छ ।

काँक्राको बियाँ ३ ग्राम, कलमी शोरा १.५ ग्राम दुवैलाई पिनेर फाँकी माथिबाट गाईको काँचो दूध १ पाउ (२०० मि.लि.) मा पानी मिसाएर पिउनू । पिसाब गराउन यो परीक्षित औषधी हो । यो औषधी उभिएरै फाँक्ने र पानी पिउने गर्नुपर्छ, सेवनपछि बस्नु हुँदैन, घुम्दै गर्नुपर्छ । यसबाट सूजाकमा अत्यन्त लाभ हुन्छ ।

काँक्राको बियाँ १२ ग्राम, सेतो कमलको अंकुर १२ ग्राम दुवैलाई पानी सँगै पिनेर छानी त्यसमा २ ग्राम सेतो जिरा र ३ ग्राम मिश्री दुवैको चूर्ण मिसाई पिउन दिनू । यसबाट सूजाकमा पिसाब सफा हुन्छ । महिलाहरूको श्वेतप्रदर सातैदिनमा नष्ट हुन्छ ।

२४ ग्राम शीतलचीनीलाई मोटो कुटेर २०० मि.लि. पानीमा पकाउनू र २५ मि.लि. बाँकी हुँदा उतारेर छान्नू । चिसो भएपछि त्यसमा ८-१० थोपा सेतो चन्दनको तेल राखी पिउनू । दिनमा ३ पटक ७ दिनसम्म पिउनाले सूजाकको जलन मेटिएर जान्छ, पिसाब सफा हुन्छ, घाउ पनि ठीक हुन्छ । यसको सेवन अवधिमा गहुँको चपाती (पातलो रोटी) र घिउ-चिनी पथ्य हुन्छ ।

रोगीलाई आलसको दानाको काढा बनाई त्यसमा खाने सोडा मिसाई दिनुपर्छ । जौको काढा पनि यस रोगको लागि राम्रो हुन्छ ।

सूजाकनाशक योगहरू

सिमलको कमलो जरा ल्याई पखाली राख्नू, त्यसमा समभाग कुठ मिसाई पानी राखी सिलौटोमा मसिनो हुने गरी पिन्नू र मोटो कपडामा राखी निचोर्नू । यो सिमलको स्वरस हो । यो २५ मि.लि. मात्रामा नित्य सेवन गर्नू । प्रमेह र सूजाकका लागि उत्तम र परीक्षित औषधी हो । यसै रसले लिङ्गमा पिचकारी दिनु पनि लाभदायक हुन्छ ।

यस रसमा अलिकति मिश्री मिसाई दिनदिनै बिहान-बेलुका सेवन गर्नाले अपार बल-वीर्य बढ्छ, शरीरको कान्ति बढ्छ, शरीर पुष्ट हुन्छ । यसको मात्रा १२-२४ ग्राम हुन्छ । प्रमेह र वीर्यको कमजोरीका लागि यो प्रथम श्रेणीको औषधी हो ।

बिमिरोको सत्त्व, सेतो खयर, कलमी शोरा, शुद्ध फिटकिरी, सेतो चन्दन यी सबै १२-१२ ग्राम लिई चूर्ण बनाउनू । त्यस्तै केवडाजलमा घोटिएको मूँगा, रेबन्दचिनी, गिले अर्मनी, संगजराहत, शुद्ध गैरिक, हजरुल यहूद सबै १२-१२ ग्राम लिएर कुट्ने छान्ने गरी चूर्ण बनाई राम्ररी मिसाउनू । अब त्यसमा सबैको बराबर मिश्रीको चूर्ण बनाई मिसाउनू । यौ औषधी ४ ग्राम मात्रामा गाईको दूधसँग बिहान-बेलुका सेवन गर्नाले सूजाककालागि आराम गर्दछ । यो परीक्षित हो ।

केराको खम्बाको टुक्रालाई कुटी छानी कपडछान गरी रस निकाल्नू । यही केराको स्वरस हो । यो ५० मि.लि. मात्रामा सेवन गर्नाले पिसाब सफा आउँछ, सूजाकमा पनि आराम गर्छ । यो रस ताजा अवस्थामा पिउने गर्नुपर्छ, हरेक पटक ताजा बनाउनुपर्छ ।

कुकुरौँधाको रस २५ मि.लि.मा ५ ग्राम मिश्रीको चूर्ण मिसाई पिउनाले सूजाक नष्ट हुन्छ । कुकुरौँधाको बोट पुरानो खण्डहरहरूमा बढी हुन्छ । यसको बोट २-३ हात लामो हुन्छ । पातहरू तमाखुको पात समान लामा र गाढा हरियो रङ्गका हुन्छन् । पातहरूलाई दुवै हातले मल्नाले नराम्रो दुर्गन्ध आउँछ । बोटको टुप्पोमा रातो रङ्गको टुप्पी जस्तो हुन्छ ।

वंशलोचन, सुकमेलको बिया, चन्दनको खस्रो चूर्ण, प्रत्येक ४ ग्राम, शीतलचिनी, रेबन्दचिनी, जवाखार, कलमी शोरा, ३-३ ग्राम सबलाई कुटी छानी चूर्ण बनाउनू । त्यसमा फेरि सबको बराबर मिश्रीको चूर्ण मिसाएर राख्नू । यो चूर्ण बिहान-बेलुका ६-६ ग्राम मात्रामा चौलानीसँग खानाले नयाँ तथा पुरानो सूजाकलाई आराम गर्दछ ।

शुद्ध गेरु ७२ ग्राम, शीतलचिनी ७२ ग्राम, कपूर ७५० मिलीग्राम सबलाई कुटी छानी (मसिनो जालीले) चूर्ण बनाउनू । यो चूर्ण ३ ग्राम मात्रामा हरेक २-२ घण्टामा चिसो पानीसँग सेवन गर्नाले पिसाबको जलन, पिसाब निस्कने वेलाको पीडा र पिपसहित नयाँ सूजाकलाई आराम गर्दछ । (परीक्षित)

फिटकिरी, शीतलचिनी, सेतो खयर, अलैँचीको बियाँ, सेल खडी, साल धूप ६-६ ग्राम कुटी छानी चूर्ण बनाउनू । यो चूर्ण ४ ग्राम मात्रामा गाईको दूधसँग खानाले पिसाबको जलनसहित सूजाकलाई आराम गर्दछ ।

घिउकुमारीको गुदीमा मिश्री मिसाई खानाले ७ दिनमा सूजाक आराम भएर जान्छ ।

गुर्जोको सत्त्व १२ ग्राम, सेतो मुसली २४ ग्राम, तालमखाना ३६ ग्राम, मखानाको गुदी ४८ ग्राम र देशी मिश्री ६० ग्राम सबलाई कुटीछानी चूर्ण बनाउनू । यो चूर्ण ६-६ ग्राम मात्रामा बिहान-बेलुका गाईको दूधसँग सेवन गर्नाले सबै किसिमको प्रमेह नष्ट भएर जान्छ । सूजाक आराम भैसकेपछि पनि ४० दिनसम्म सेवन गरेमा फेरि सूजाक हुन पाउँदैन, शरीर बलवान् भएर आउँछ ।

पलाशको सुकेको अंकुर, पलाशको गूँद, पलाशको बोक्रा, पलाशको फूल सबै समभाग लिएर चूर्ण बनाउनू । अनि त्यसमा सबको बराबर मिश्रीको चूर्ण मिसाएर राख्नू । यो चूर्ण हरेक दिन ७.५ ग्राम मात्रामा दूधसँग खानाले सूजाकको पिप आउन छोड्छ, सूजाक पनि आराम भएर जान्छ ।

ताजा अमलाको रसमा बेसार र मह मिसाई पिउनाले प्रमेह र सूजाक नष्ट हुन्छन् ।

शीतलचिनी २४ ग्राम, रेबन्दचिनी १२ ग्राम, कलमी शोरा १८ ग्राम, फिटकिरी (शुद्ध) १२ ग्राम, सुकमेलको दाना १२ ग्राम सबैलाई कुटी छानी चूर्ण बनाएर राख्नू । यो चूर्ण ४ ग्राम मात्रामा दूध र पानीको लस्सीसँग २-२ घण्टाको अन्तरमा दिनमा ६ पटक सेवन गर्नाले लिङ्गभित्र गाँठो परी पिसाब गर्न अति कठिन हुने पुरानो सूजाकमा आराम हुन्छ । (परीक्षित)

असली चन्दनको तेल, बिरोजाको तेल दुवैको १०-१० थोपा चिनीमा राखी खानू र गाईको दूध पनि पिउनू । यसको सेवन बिहान-बेलुका गर्नाले सबै प्रकारका सूजाकको निवारण हुन्छ । यो रामबाण औषधी हो । साथमा लिङ्गमा पिचकारी पनि दिनुपर्छ ।

केही दिनसम्म राती सुत्नेवेलामा कबाबचिनीको चूर्ण १.५ ग्राम, कपूर २५० मिलीग्राम, अफीम ०.५ ग्राम सबलाई मिसाएर सेवन गर्नू । यसबाट पिसाब सफा हुन्छ, रातमा लिङ्गमा चाप हुँदैन, सूजाकको घाउ आराम हुँदै जान्छ ।

आयलको पेवा ४ ड्राम, आयल क्यूबिव २ ड्राम, म्यूसिलेज अकेशिया २ औंस, आयल सिनेमन १५ थोपा सब औषधी मिसाई पानीमा घोलिदिनू । यो औषधी भोजनपछि १-१ औंसको मात्रामा पानीसँग सेवन गर्नाले पिप आउन चाँडै नै बन्द हुन्छ ।

चन्दनको तेल २० थोपा मिश्रीको चूर्णमा राखेर खान दिनू र चिसो पानी पिउन दिनू । यो औषधी बिहान-बेलुका सेवन गर्नाले सूजाकमा आराम हुन्छ । (परीक्षित)

शुद्ध फिटकिरी ३ ग्राम, शुद्ध गेरु २ ग्राम, मिश्री ६ ग्राम, सबलाई चूर्ण बनाई गाईको काँचो दूधसँग १५-२० दिनसम्म खानाले सूजाकमा आराम हुन्छ । (परीक्षित)

कलमी शोरा ६ ग्राम, अलैंचीको बियाँ ६ ग्राम दुवैको चूर्ण बनाई रातो चामलको चौलानीसँग ७ दिनसम्म सेवन गर्नाले सूजाकमा आराम हुन्छ । (परीक्षित)

मुण्डीको स्वरस बनाई पिउने, त्यस रसले लिङ्गमा पिचकारी दिने गर्नाले पिसाबको जलन, घाउ आदिमा आराम हुन्छ । स्त्रीहरूको योनिशूल, योनि चिलाउने र मूत्रनलीको जलनमा पनि यही मुण्डीको रसको सेवन र पिचकारीद्वारा प्रयोग गर्दा राम्रो हुन्छ ।

सूजाकनाशक पिचकारी

पिचकारीको प्रयोग सूजाकको आभास हुनेबित्तिकै गर्नुहुँदैन । जब सूजाकको चाप घटेर जान्छ, पिप पातलो हुँदै जान्छ र जलन पनि कम हुन्छ त्यस वेलामा पिचकारी लगाउनु उपयोगी हुन्छ ।

हर्रो १ ग्राम, रसाञ्जन (चुत्रोको खोटो) १ ग्राम, खपरिया खयर १ ग्राम सबैलाई ५०० मि.लि. पानीमा राती भिजाइदिनू। बिहान त्यसलाई कपडछान गरी सफा भाँडामा राख्नू र त्यसले लिङ्गमा पिचकारी दिनू। यसले पिसाबलाई सफा गर्छ र घाउ तथा जलन निको पार्छ। (परीक्षित)

सेतो खयर २४ ग्राम, अफीम १२५ ग्राम, मेंहदीको पात ३० ग्राम, रसाञ्जन १२ ग्राम सबलाई रातमा पानीमा (५०० मि.लि.) भिजाई बिहान कपडछान गर्नू र त्यसले पिचकारी दिनू। एक दिन बनाएको औषधी ३ दिन काम लाग्छ। (परीक्षित)

नीमको ताजा पात १४४ ग्राम, त्रिफला २४० ग्राम, धनिया १२ ग्राम, अफिम ६ ग्राम सबलाई कुटेर राती २.५ लिटर पानीमा भिजाइदिनू। बिहान यसलाई पकाउनू र आधीजति पानी बाँकी छँदा ओरालेर छान्नू र बोतलमा सुरक्षित राख्नू। यो सूजाकका लागि उपयोगी परीक्षित पिचकारी दिने औषधी हो।

चन्दनको तेल अथवा पानी राखी घोटेको सेतो चन्दन १ चंचा तथा शुद्ध फिटकिरी ६० ग्राम २५ मि.लि. चिसो पानीमा मिसाएर बिहान-बेलुका पिचकारी दिनाले सूजाक आराम भएर जान्छ।

त्रिफलाको मनतातो काढामा (२-३ मिनेटसम्म) लिङ्गलाई डुबाई राख्ने गरेमा ३-४ दिनमा आतशक अथवा सूजाकका कारण सुन्निएको लिङ्ग ठीक हुन्छ। (परीक्षित)

निलो तुथो ६० मिलीग्राम ५० मि.लि. पानीमा घोलेर पिचकारी दिँदा सूजाक रोगमा आराम हुन्छ।

पिसाब खोल्ने उपाय - मुसाको लींड २४ ग्राम, कलमी शोरा १२ ग्राम दुवैलाई पिनेर पानीमा घोली मनतातो पारी तल्लो पेटमा लेप लगाउनाले पिसाब खुल्छ।

अलिकति कपूर अथवा कलमी शोरा मूत्रनलीको मुखमा राखिदिए पनि पिसाब खुल्छ।

इन्द्रिय सुनिएर आयो भने नीमको पातलाई पानीमा पकाएर त्यसको बाफ इन्द्रियमा लगाउनू। पानिलाई मनतातो अवस्थामा लिंगमा धारा दिनू। सुनिएको अवश्य कम हुन्छ।

मूलाको पातको रस आधा लिटर निकालेर त्यसमा ३ ग्राम कलमी शोरा मिसाई रोगीलाई पिउन दिनू। पिसाब हुन्छ।

रोगीलाई नाभिसम्म तातो पानीमा बस्न लगाउनू अथवा इन्द्रिय र मूत्राशयमा तातो पानीको धारा दिनू, पिसाब खुल्छ।

३२. उपदंश वा आतशक रोग (भिरिङ्गी)

लिङ्गमा हातले मिच्ने गर्नाले, नङ् वा दाँत लाग्नाले, मैथुनपछि लिङ्गलाई नधुनाले, अति मैथुनले, योनिरोग अथवा उपदंश रोग लागेकी स्त्रीसँग मैथुन गर्नाले, अति तातो पानीले लिङ्ग धुनाले उपदंश रोग उत्पन्न हुन्छ । यो रोग पाँच किसिमको हुन्छ - वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज र रक्तज ।

वातज उपदंश - यसमा लिङ्गमा काला फोकाहरू हुन्छन् र तिनमा सियोले घोचेजस्तो अथवा चक्कुले चिरेजस्तो पीडा हुन्छ ।

पित्तज उपदंश - लिङ्गमा पहेंला फोकाहरू हुन्छन्, तिनीहरूबाट दूषित पानी बढी निस्कन्छ र पोल्ने भइरहन्छ ।

कफज उपदंश - यसमा सेता फोकाहरू हुन्छन्, तिनीहरूबाट स्राव भइरहन्छ, लिङ्गमा बढी चिलाउँछ र शोथ पनि हुन्छ ।

रक्तज उपदंश - लिङ्गमा काला फोकाहरू हुन्छन्, तिनीहरूबाट रगतको स्राव हुन्छ । लिङ्गमा जलन पनि हुन्छ ।

त्रिदोषज (सन्निपातज) उपदंश - अनेक रङ्गका फोकाहरू लिङ्गमा हुन्छन् । तिनमा सियोले घोचे झैं दुख्ने, पोल्ने र चिलाउने भइरहन्छ । अनेक किसिमको स्रावहरू हुन्छन् ।

यो उपदंश रोग लाग्नेबित्तिकै लिङ्गको टुप्पामा शोथ र रातोपन भएर तीव्र खटिरा हुनजान्छ जुन पछि पाकेर फुट्छ । त्यो घाउबाट रातो, कालो, निलो स्राव भइरहन्छ र आगोले पोलेजस्तो दुख्छ । लिङ्गमा घाउ भएको ठाउँ हरदम स्रावले भिजेको हुन्छ त्यसबाट सडेको गन्ध आउँछ । लिङ्गमा उत्तेजना भइरहन्छ त्यो बाङ्गो भएर जान्छ । रोगको चाप बढ्दै जाँदा ज्वरो आउने, बान्ता हुन खोज्ने, भोक नलाग्ने हुन्छ । जिभ्रो मैलो भएर जान्छ । मुखको स्वाद बिग्रिन्छ । टाउको दुख्छ, कसैकसैलाई हाड तथा मांसपेशीहरूमा पनि दुख्ने हुन्छ ।

रोग पुरानो हुँदै गएमा अथवा चिकित्सा नभएमा शरीरमा बिफरजस्तो ठाउँ-ठाउँमा घाउ भएर आउँछ, आँखाको रोग हुन्छ, रौंहरू झर्न थाल्छन्, बाथ भएर आउँछ । पिनास र कुष्ठरोग पनि हुनसक्छ ।

यस रोगमा लिङ्गमा घाउ हुँदा त्यो सुन्निन्छ । त्यसकारण माथिको छाला खुल्दैन, त्यस वेलामा निकै कष्ट हुन्छ । ५-१० दिनपछि तिघ्राको जोर्नीमा घाउ हुन जान्छ, त्यो घाउ नहुन पनि सक्छ ।

उपदंशको घाउ पाक्छ अरू घाउ पाक्दैन यही फरक छ ।

उपदंशको चिकित्सा - यस रोगमा सम्भव भएसम्म रोगीलाई उसको

बल अनुसार विरेचन वा जुलाफ दिनु आवश्यक हुन्छ । त्यसपछि औषधी ख्वाउने, घाउ सफा गर्ने र मलमहरू लगाउने गर्नाले रोग ठीक हुन्छ ।

रोगीलाई चिसोबाट जोगाउनुपर्छ, नत्र वातरोग हुनसक्छ ।

रालको तेल १०-१५ थोपा दूधसँग सेवन गराउनुपर्छ ।

घाउमा लगाउन खयर, कपूर र सिन्दूर मिसाएर बनाएको मलम बेस हुन्छ ।

खयर र मैनको मलम, त्रिफलाको खरानी महसँग, अनारको बोक्राको चूर्ण, बबूलको पातको चूर्ण, रसाञ्जन र हर्रोको चूर्ण महमा मिसाएर अथवा सेतो करवीरको जराको पानीसँग पिनेको जरा पनि लगाउन सकिन्छ ।

औषधी लगाउनुभन्दा पहिले घाउलाई धुनु आवश्यक हुन्छ । त्यसका लागि नीम, पिपल, जामुन, वर आदिको बोक्रा राखी पकाएको काढा प्रयोग गर्नुपर्छ । त्रिफलाको काढा पनि प्रयोग गर्न सकिन्छ ।

उपदंशमा भएको बद अथवा गाँठोलाई पकाउन पिप निकाली दिनु राम्रो हुन्छ । अनि मात्र मलम लगाउनुपर्छ ।

उक्त गाँठो उठेको छ र चाप लिएको छैन भने गन्धाबिरोजाको बाक्लो काढामा कपडा भिजाई गाँठोमाथि राख्ने गर्नाले गाँठो बसेर जान्छ ।

जुका पाइने भए घाउमा जुका लगाई अशुद्ध रगत निकालीदिनु सबैभन्दा राम्रो हुन्छ । यसबाट दूषित रगत निस्केपछि रोगीलाई बडा आराम हुन्छ । जुको लगाईसकेपछि नीमको पात पिनेर लगाउनुपर्छ ।

रोगका कारण ज्वर आदि आयो भने त्यसका लागि विचारपूर्वक बेग्लै औषधी दिनुपर्छ ।

सामान्य चिकित्सा – पर्वरको पात, नीमको बोक्रा, त्रिफला, हरियो गुर्जो, सबको काढा बनाई पिउनाले उपदंश नष्ट हुन्छ ।

मुण्डी र गुर्जो समान मात्रामा लिएर कुटी छानी चूर्ण बनाउनू । यो चूर्ण दिनदिनै बिहान-बेलुका ४-४ ग्राम मात्रामा महमा मिसाएर खाई चिसो पानी पिउने गर्नाले उपदंश, वातरक्त, कुष्ठरोग, अशुद्ध पारदबाट उत्पन्न विकार नष्ट हुन्छन् ।

मुण्डी र उशबाको अर्क खिंचेर त्यो अर्क २५ मि.लि.मा ६ ग्राम मह मिसाई सेवन गर्न दिएमा उपदंशमा आराम हुन्छ । (परीक्षित)

नीमको बोक्रा २०० ग्राम लिएर पानीले पखाल्नू र माटाको भाँडामा राखी माथिबाट खूब उमालेको तातो पानी हालेर रातभर रहन दिनू । बिहान त्यसबाट ५० मि.लि. पानी खानू । यस्तै बेलुका पनि खानू । १५ दिनसम्म यसको सेवन गर्दा उपदंश र प्रमेह दुवै शान्त हुन्छन् । यस अवधिमा घिउ, चिनी र गहुँको रोटीबाहेक अरू केही खानु हुँदैन ।

त्रिफला, शुद्ध निलोतुथो, उशवा समभाग लिएर १०० ओटा कागतीको रस दिएर फलामको खलमा घोट्नू। जब गाढा हुन्छ अनि चनासमानको (२५० मि.ग्रा.) गोलीहरू पार्नू। यो १ गोली पानीसँग नित्य सेवन गर्नाले उपदंश नष्ट हुन्छ।

गुर्जोको काढामा अडेरको तेल (Caster Oil) मिलाई सेवन गर्नाले उपदंश रोगमा आराम मिल्छ। (परीक्षित)

पोटाशियम आयोडाइड आधा ड्राम, लाइकर हाइड्राज परकिलो १ औंस, अमोनियम क्लोराइड १ ड्राम, रेक्टीफाइड स्पिरिट १ औंस सबलाई मिसाएर सिसीमा राख्नू। यसबाट बिहान, दिउँसो, बेलुका १-१ ड्राम सेवन गर्नू। आतशक एवं उपदंशका लागि रामबाण औषधी हो। (परीक्षित)

क्विनीन सल्फ १७ ग्रेन, पोटाशियम आयोडाइड २२ ग्रेन, पाउडर्ड रुबर्ब १६ ग्रेन, लिकोरिस पाउडर ४ ग्रेन, एक्स्ट्रेक्ट सार्स परेला १२ ग्रेन, वर्डक १२ ग्रेन, ट्राकसकम १२ ग्रेन सबलाई राम्ररी मिसाई एकनास गर्नू र ३२ ओटा गोली पार्नू। यो औषधी युवक मानिसलाई दिनमा ३ गोली, महिलालाई २ गोली र बालकलाई राती सुत्ने बेलामा १ गोली दिनू। यसबाट सबै किसिमका चर्मरोग रक्तविकार, यकृत्सम्बन्धी रोगहरू निश्चय ठीक हुन्छन्। उपदंशको चिकित्सापछि यसको सेवन गर्नाले उपदंशको विष नष्ट भएर जान्छ। यो एक बेलायती कम्पनीको पेटेन्ट औषधी हो र अत्यन्त लोकप्रिय छ।

पोटाशियम आयोडाइड १ ड्राम, पोटाश बाइकार्ब १/२ ड्राम, लाइकर आर्सेनिकालस १/२ ड्राम, स्पिरिट क्लोरोफार्म १/२ ड्राम, एक्स्टेक्ट सार्सा कम्पा २ औंस, सफा पानी ८ औंस सबलाई मिसाई सिसीमा राख्नू। यो औषधी १-१ चम्चा दिनको ३ पटक सेवन गर्नाले रगतसम्बन्धी सबै विकारहरू नष्ट हुन्छन्।

कुकुरौंधाको रस २५ मि.लि. दिनदिनै पिउने र शरीरमा पनि मल्ने गर्नाले रक्तदोष र अशुद्ध पारदको दोष हराएर जान्छ। यो परीक्षित रामबाण औषधी हो।

आँकको जरा १० ग्राम, मरिच १० ग्राम कुटी छानी चूर्ण बनाउनू। त्यसलाई गुडमा मिसाई जुनेलोसमानको (१२५ मि.ग्रा.) गोली पार्नू। यो औषधी १-१ गोली बिहान-बेलुका पानीसँग खानू। खुर्सानी, अमिलो र वायु बढाउने कुराहरू परहेज गर्नू। यसबाट आतशकको दूषित स्राव निस्केर जान्छ र आतशक-उपदंशमा अवश्य आराम हुन्छ। (परीक्षित)

आँकको काठको कोइला ६ ग्राम पिनेर त्यसमा त्यत्ति नै चिनी मिसाउनू र १२ ग्राम घिउसँग खान दिनू। ७ दिनमा आतशक नष्ट हुन्छ।

ज्वानूको खस्रो चूर्ण २० ग्राम, पहेंलो सर्स्यू गेडा २० ग्राम, मरिच २० ग्राम कुटी छानी पानी राखी बयरसमानको (१ ग्राम) गोली पार्नू। यो गोली खानाले आतशक नष्ट हुन्छ।

काञ्चनार (कोइरालो) को बोक्रा, इन्द्रवारुणीको जरा, बबूलको फल, सानो कण्टकारीको जरा र पात तथा पुरानो गुड १/२ पाउ सबलाई माटाको हाँडीमा ३ लिटर पानीमा उमाल्नू। चौथाई (१/४) जति बाँकी हुँदा छानेर सिसीमा सुरक्षित राख्नू। ७ मात्रा बनाएर बिहान-बेलुका १-१ मात्रा सेवन गर्नू। यसले मुखमा घाउ आउन दिँदैन, यसमा कुनै परहेज राख्नुपर्दैन। यो आतशकका लागि रामबाण औषधी हो। (परीक्षित)

सिद्ध रसशेखर रस – शुद्ध पारद १२ ग्राम, अफीम १२ ग्राम दुवैलाई फलामको खलमा राखी नीमको काठले बनेको डण्डीले तुलसीको रस राख्दै ९ घण्टासम्म घोट्नू। त्यसपछि १२ ग्राम शुद्ध टंकण (स्वाग) राखी फेरि तुलसीको रस राखी ३ घण्टासम्म घोट्नू। यसपछि जाइपत्री ३० ग्राम, खुरासानी ज्वानो ३० ग्राम, जाइफल ३० ग्राम, अकर्करा ३० ग्राम सबैको चूर्ण बनाएर त्यसमा मिसाउनू र तुलसीको रस राखी खूब घोट्नू। अनि वंशलोचन २८८ ग्राम, खयरसार २८८ ग्राम चूर्ण बनाई त्यसमा मिसाउनू र तुलसीको रससँग आधा घण्टासम्म घोट्नू। अब चना बराबरको (२५० मि.ग्रा.) गोली पारी छायामा सुकाउनू। यो औषधी बिहान-बेलुका १-१ गोली अथवा रातमा मात्र २ गोली पानीसँग खानाले उपदंश, गलित कुष्ठ, फिरङ्ग आदि रोगहरू जरैबाट नष्ट हुन्छन्।

बरादि गुग्गुलु – त्रिफला, नीमको बोक्रा, अर्जुनको बोक्रा, पिपलको बोक्रा, खयरको काठ, विजयसाल, असुरोको पात सबलाई समभाग लिएर कुटी छानी चूर्ण बनाउनू। त्यो चूर्ण जति छ त्यत्ति नै शुद्ध गुग्गुलु मिसाई ६-६ ग्रामको गोली पार्नू। यस गोलीको सेवनले सबै किसिमको उपदंश र रक्तविकारहरू नष्ट हुन्छन्।

निलोतुथो, मुर्दासंग, दूधिया खयर, दखिनी सुपारी प्रत्येक १२-१२ ग्राम ठीक पार्नू। निलोतुथो, मुर्दासंग र सुपारीलाई गुइँठा बाली त्यसको आँचमा डढाउनू। अनि चारै ओटा द्रव्यहरूलाई खलमा राखी नीमको काठले घोट्नू। त्यो काठको एकतिर पींधमा तामो बेरिएको होस्। उक्त काठले ९६ घण्टा घोटेपछि औषधी तयार हुन्छ। एउटा पानमा खयर चून लगाएर एउटा चामलको गेडा जति (६० मि.ग्रा.) औषधी पानमा राखी दिनमा ३ पटक खाने गर्नू। नीमका पातहरू पानीमा पकाएर त्यसैबाट घाउ धुने गर्नू र यही औषधी घाउमा लगाईदिनू। यदि घाउमा कीरा परिसकेका छन् भने आइतवारका दिन बेलपत्र ल्याएर अलिकति पानी मिसाई पिन्नू र रस निकाली पिउने गर्नू। १५ मिनेटमा नै कीराहरू मरेर जानेछन्। यस उपायले मानिस र पशु दुवैका किरा मर्छन्। पशुलाई बढी मात्रामा दिनुपर्छ। यो उपदंशका लागि धेरै पटक परीक्षित उपाय हो।

इन्द्रवारुणी (इन्द्रेणी)को जरा १०० ग्राम कुटेर २ लिटर पानीमा पकाउनू। चौथाई बाँकी हुँदा कपडाले छानी ५०० मि.लि. अडेरको तेल मिसाई मन्द आगोमा

पकाउनू । पानी जति डढेर तेलमात्र बाँकी हुँदा छानेर सिसीमा राख्नू । यो तेल १०-२० मि.लि. मात्रामा गाईको दूधसँग सेवन गर्नाले ७ दिनमा आतशक ठीक भएर जानेछ । यो औषधी सेवन गरेसम्म मूँगको खिचडीमात्र खानुपर्छ ।

शुद्धसंखिया (Arsenic), सेतो खयर, भृङ्गराज, अकरकरा, सेतो सुपारी समभाग लिएर कुटी छानी चूर्ण बनाउनू । फेरि पानीसहित खलमा राखी घोट्नू र बाजरासमान (६० मि.ग्रा.) गोलीहरू पार्नू । बिहान-बेलुका १-१ गोली पानीसँग सेवन गर्नाले घोर आतशक पनि ८ दिनमै ठीक भएर जानेछ ।

शुद्ध हिंगुल (सिमरिक), नीमको गूँद, अकरकरा, माजूफल, स्वाग सबै १२-१२ ग्राम लिएर कुट्नू । यसको ५ भाग गरी १ भाग (१० ग्राम)लाई चिलिममा राखी माथिबाट बयरको बलेको अँगार राख्नू र तमाखू खाएजस्तै खान दिनू । उपदंश अवश्य निको हुन्छ ।

शुद्ध हिंगुल, माजूफल, आँककको जरा, भृंगराज सबै समभाग लिएर कुट्नू । यसबाट ९ ग्राम चिलिममा राखी माथिबाट खयरको बलेको कोइला राख्नू र तमाखुजस्तै खान दिनू । उपदंश अवश्य निको हुन्छ । यी औषधीहरू कहिल्यै फेल हुँदैनन् ।

आतशकका लागि लेप र मलमहरू

खदिरादि मलम - खयरसार ६० ग्राम, अफीम ६ ग्राम, देशी मैन १२ ग्राम लिनू । सबलाई १०० पटक धोएको गाईको घिउ ६० ग्राममा मिसाई खलमा घोट्नू र एकनास पार्नू । यो खदिरादि मलम हो । यो लगाउनाले आतशकको घाउ र बेर्नु निस्कने व्यथामा आराम हुन्छ । अल्काईको निकै दुख्ने बाहिर निस्केको मस्सा सुकेर जान्छ । (परीक्षित)

क्षत्रादि मलम - सेतो खयर २४ ग्राम, कपूर १२ ग्राम, सिन्दूर ६ ग्राम तीनै थरीलाई १०० पल्ट धोएको गाईको घिउमा मिसाई मलम तयार पार्नू । यस मलमले घोरभन्दा घोर घाउ पनि मेटिएर जान्छ । सबै किसिमका घाउ-खटिरा, आगोले पोलेको, चिलाउने बिमिरा, फोका आदि नष्ट भएर जान्छन् । यो मलम हजारौँ पटकको परीक्षित हो ।

चर्मरोगनाशक लेप - घरको ध्वांसो १ भाग, बेसार २ भाग, सुराकिट्ट ३ भाग सबै पिनी लेदो बनाई तिलको तेलमा पकाएर राख्नू । यो तेल लगाउनाले उपदंशको घाउ ठीक हुन्छ ।

तितो तोरियाँ (पाटे घिरौंला) को बिया, तितो लौकाको बियाँ, सुठो सबैलाई पानी राखी पिनेर लेदो पार्नू र तिलको तेलसँग पकाउनू । यस तेलको प्रयोगले उपदंशको घोर घाउ पनि नष्ट हुन्छ ।

३३. मूत्रकृच्छ रोग (कष्टका साथ पिसाब हुने रोग)

यस रोगमा पिसाब निकै कष्टका साथ थोपा थोपाको रूपमा अथवा रगतका साथ अलिअलि निस्कन्छ, नाभिभन्दा तल र मूत्रनलीमा तीव्र वेदना हुन्छ ।

मूत्रकृच्छको कारण – सधैँ रुखो अन्न, रायो आदि तीक्ष्ण द्रव्यहरू खानु, तीक्ष्ण औषधीको प्रयोग गर्नु, आनूप देशका प्राणीहरूको मासु खानु, मद्यपान गर्ने बानी हुनु, अजीर्ण हुनु, बढी कसरत गर्नु, तीव्र गतिले हिँड्ने सवारीहरूमा सधैँ हिँड्नु यी कारणहरूबाट मूत्रकृच्छ रोग उत्पन्न हुन्छ ।

मूत्रकृच्छका भेदहरू – यो रोग ८ किसिमको हुन्छ – वातज, पित्तज, कफज, त्रिदोषज, शल्यभिघातज, शकृद्विघातज, अश्मरीहेतुक, शुक्रज ।

(१) **वातज मूत्रकृच्छ** – यसमा वंक्षण प्रदेश, वस्ति र लिङ्गमा तीव्र वेदना हुन्छ । पिशाव बारंबार थोरै मात्रामा हुन्छ ।

(२) **पित्तज मूत्रकृच्छ** – यसमा पिसाब हुने वेलामा खूब दुख्ने, पोल्ने हुन्छ । पिसाब पहेंलो र कहिलेकाहीं रगत मिसिएको हुन्छ ।

(३) **कफज मूत्रकृच्छ** – यसमा वस्ति (तल्लो पेट) र लिङ्गमा भारीपन र शोथ हुन्छ । पिसाब अलि पिच्छिल हुन्छ ।

(४) **त्रिदोषज मूत्रकृच्छ** – यसमा तीनै दोष अनुसारका लक्षणहरू वेदना, जलन र भारीपन आदि हुन्छन् । यसले निकै दुःख दिन्छ ।

(५) **आगन्तुक (शल्याभिघातज) मूत्रकृच्छ** – मूत्र प्रवाह गर्ने अङ्गहरूमा (वस्ति, लिङ्ग) कुनै काँडा आदि पसेको खण्डमा अथवा कुनै किसिमबाट चोट परेमा यस किसिमको मूत्रकृच्छ हुन्छ । यसका लक्षणहरू वातज मूत्रकृच्छकै समान हुन्छन् ।

(६) **शकृद्विघातज मूत्रकृच्छ** – दिसाको वेग रोक्दा वायु कुपित भएको खण्डमा पेट फुल्ने, दुख्ने गराउँछ र पिसाब पनि रोक्छ ।

(७) **अश्मरीहेतुक[1] मूत्रकृच्छ** – मूत्राशयमा पत्थरी भएमा यस किसिमको मूत्रकृच्छ हुन्छ । यसमा पिसाब फेर्ने वेलामा दुख्छ । पिसाबको धार टुट्छ । कहिलेकाहीं पिसाबका साथ रगत पनि आउँछ ।

---

१. मूत्र, वीर्य अथवा कफ जमेर बनेको ढुंगो जस्तो वस्तुलाई अश्मरी (पथरी) भनिन्छ । जब त्यही पथरी वायुद्वारा फुटेर सानो टुक्रा बन्छ र मूत्रमार्गबाट कंकडको (सानो ढुंगा-गेगर) रूपमा निस्कन थाल्छ त्यस अवस्थाको त्यो गेगरलाई शर्करा भनिन्छ ।

(८) **शुक्रज मूत्रकृच्छ्र** – कुपित वायु आदि दोषहरूद्वारा आफ्नो स्थानबाट निस्केको वीर्य बीचमा मूत्रनलीमा रोकिएमा शुक्रज मूत्रकृच्छ्र हुन्छ। यसमा पिसाबका साथ वीर्य निस्कन्छ। वस्ति र लिङ्गमा शूल हुन्छ।

मूत्रकृच्छ्र र मूत्राघातमा अन्तर – मूत्रकृच्छ्रमा पिसाब कम समयसम्म रोकिन्छ, दुखाई पनि कम हुन्छ। मूत्राघातमा बढी समयसम्म पिसाब रोकिन्छ।

मूत्रकृच्छ्रमा पिसाब गर्ने वेलामा बढी पीडा हुन्छ, मूत्राघातमा पिसाब फेर्दा कम पीडा हुन्छ।

मूत्राघातमा पिसाब रोकिँदै अलि-अलि निस्कन्छ वा पूरै रोकिन्छ, मूत्रकृच्छ्रमा पिसाब पूरै रोकिन्न।

मूत्रकृच्छ्रको चिकित्सा

वातज मूत्रकृच्छ्रमा – रोगीको शरीरमा तेलको मालिस गर्नुपर्छ। लिङ्गमा मनतातो पानीले पिचकारी दिनुपर्छ।

गुर्जो, सुठो, अमला, अश्वगन्धा र गोखुर सबै समभाग राखी पकाएको काढामा मह मिसाएर पिउन दिनुपर्छ। आराम हुन्छ।

पित्तज मूत्रकृच्छ्रमा – रोगीका अंगहरूमा पानी, चन्दन आदि शीतल कुराहरू छर्कनुपर्छ। चिसो पानीले स्नान गराउनुपर्छ।

शतावरीको रसमा चिनी मिसाई पिउन दिएमा पित्तज मूत्रकृच्छ्रलाई आराम गर्छ।

शतावरी, काश, कुश, गोखुर, विदारीकन्द, शालिधान, उखु, कसेरु यी सबैको काढा पकाई चिसो भएपछि मह र घिउ अथवा मह र मिश्री मिसाएर पिउनाले पित्तज मूत्रकृच्छ्रमा आराम मिल्छ। (परीक्षित)

काँक्राको बियाँ, जेठीमधु, दारुहरिद्रा यी सबैलाई चौलानीसँगै पिनेर खाने पछिबाट चौलानी पिउने गर्नाले यो रोग शान्त भएर जान्छ।

हर्रो, गोखुर, अमलतास (राजवृक्ष)को गुदी, पाषाणभेद, धमासा यी सबैको काढा बनाई त्यसमा मह मिसाएर पिउनाले पित्तज मूत्रकृच्छ्र शान्त हुन्छ।

कफज मूत्रकृच्छ्रमा – क्षारहरू, गरम र तीक्ष्ण औषधी एवं अन्नहरू, जौको भोजन, वमन तथा वस्तिकर्म, तिक्त द्रव्यहरू राखी पकाएको तेलको सेवन तथा मालिस गर्नाले लाभ गर्दछ।

सिमालीको बियाँ महीसँग पिउनाले अथवा गोखुरको चूर्ण सुठोको काढासँग पिउनाले कफज मूत्रकृच्छ्र रोग ठीक हुन्छ।

मूँगा भस्म चौलानीसँग पिउनाले लाभ हुन्छ।

सुकमेलको चूर्णलाई गोमूत्रसँग अथवा केराको स्वरससँग खाने गर्नाले कफज मूत्रकृच्छमा आराम हुन्छ ।

त्रिदोषज मूत्रकृच्छमा – कफको अधिकता भएमा वमन गराउनू, पित्तको अधिकता छ भने विरेचन गराउनू, वायुको अधिकता छ भने वस्तिको प्रयोग गर्नू ।

बृहती (बिंही), पृश्निपर्णी, पाठा, जेठीमधु र इन्द्रजौको काढा पिउनाले त्रिदोषज मूत्रकृच्छमा आराम हुन्छ ।

६ ग्राम यवक्षार र ६ ग्राम गुड दुवै मिसाएर खानाले त्रिदोषज मूत्रकृच्छमा आराम हुन्छ । (परीक्षित)

आगन्तुक वा शल्यज मूत्रकृच्छ – यसमा वातज मूत्रकृच्छको समान चिकित्सा गर्नुपर्छ । पञ्च क्षीरीवृक्षको बोक्रालाई सिलौटोमा पानीसँग पिनेर अलि तातो पारेर वस्तिप्रदेशमा लेप गर्नू । यसबाट चोटपटकबाट भएको मूत्रकृच्छमा आराम भएर जान्छ ।

मूत्रकृच्छमा पिसाबसंग रगत पनि आउँछ भने अमलाको रस अथवा उखुको रसमा मह मिसाई पिउन दिनुपर्छ । अथवा पकाएको दूधमा सख्खर मिसाई ख्वाउनुपर्छ ।

पुरीषज मूत्रकृच्छमा – गोखुरको काढामा यवक्षार मिसाइ खान दिएमा आराम हुन्छ ।

अश्मरीज मूत्रकृच्छमा – गोखुर, राजवृक्षको गुदी, कुश, काश, जवासा, पत्थरचूर र हर्रो यी सबैको काढा वा चूर्णमा मह मिसाई सेवन गर्नाले यस रोगमा आराम गर्छ ।

केवल पत्थरचूर (पाषाणभेद) को रस वा काढा पिउनाले पत्थरीका कारण उत्पन्न मूत्रकृच्छ रोग शान्त हुन्छ ।

१२ ग्राम काँक्राको बियाँ पिनेर काँजी तथा सिंधे नुन मिसाएर खाए यो रोग नाश हुन्छ ।

शुक्रज मूत्रकृच्छमा – शुद्ध शिलाजीत महमा मिसाई सेवन गर्न दिएमा आराम हुन्छ । सुकमेलको चूर्ण, हिंग र घिउ यी सबैलाई दूधमा मिसाएर पिउनाले मूत्रकृच्छ नष्ट हुन्छ, वीर्य दोष पनि जान्छ । (परीक्षित)

सामान्य चिकित्सा – ६ ग्राम यवक्षारमा ६ ग्राम मिश्री मिसाई खानाले अथवा २५ मि.लि. अमलाको काढामा १२ ग्राम गुड मिसाई पिउनाले सबै किसिमका मूत्रकृच्छहरू ठीक हुन्छन् । (परीक्षित)

सुवर्चला (हुलहुल) को बियाँ ६ ग्रामलाई बासी पानीसँग पिनेर कपडाले छानी निकालेको रस पिउनाले सबै किसिमका असाध्य मूत्रकृच्छ पनि नाश भएर जान्छन् । (परीक्षित)

३ ग्राम यवक्षार र १२ ग्राम चिनी सेतो कुभिण्डोको रसमा खानाले सबै किसिमका मूत्रकृच्छहरूमा आराम मिल्छ । (परीक्षित)

६ ग्राम यवक्षार र १२ ग्राम मह मिसाएर खानू सबै किसिमका मूत्रकृच्छमा परीक्षित उपाय हो ।

सुकमेल, पाषाणभेद, शुद्ध शिलाजीत, पिपल, काँक्रोको बियाँ, सिंधे नुन र केशर सबैलाई समभाग लिएर कुटी छानी चूर्ण बनाउनू । यो चूर्ण ३-४ ग्राम मात्रामा सेवन गरेमा असाध्य अवस्थामा पुग्न लागेको मूत्रकृच्छ रोग पनि ठीक हुन्छ ।

कण्टकारीको रस १०० मि.लि. मा मह मिसाई पिउनाले फाइदा गर्छ । अथवा अमलाको चूर्ण ६ ग्राममा गुड १२ ग्राम मिसाई खानाले सबै किसिमका मूत्रकृच्छ नाश भएर जान्छन् । (परीक्षित)

शुद्ध शिलाजित, गोखुर, पाखनबेद, सुकमेल, केशर, काँक्राको बियाँ र सिंधे नुन यी सबै समभाग लिएर कुटी-छानी चूर्ण बनाउनू । यो चूर्ण ४-६ ग्रामसम्मको मात्रामा चौलानीसँग खानाले असाध्य मूत्रकृच्छ पनि ठीक हुन्छ । (परीक्षित)

शुद्ध अमलासार गन्धक ४ ग्राम, यवक्षार ४ ग्राम, मिश्री १२ ग्राम सबै मिसाएर महीसँग खाएमा असाध्य मूत्रकृच्छ पनि ठीक हुन्छ । (परीक्षित)

गाईको दूध आधा लिटरमा गुड ३६ ग्राम मिसाई पकाएर पिउनाले अथवा २४ ग्राम गोखुरलाई पाउभर २०० मि.लि. पानीमा पकाई ५० मि.लि. जति बाँकी भएपछि उतारेर छान्ने र त्यसमा ४ ग्राम यवक्षार मिसाई पिउने गर्नाले सबै किसिमको मूत्रकृच्छ रोग जान्छ । (परीक्षित)

अमला, मुनक्का, विदारीकन्द, जेठीमधु, गोखुर सबै समभाग मिलाई जम्मा २४ ग्राम लिएर खस्रो गरी कुट्नू र ३०० मि.लि. पानीमा पकाउनू । एक चौथाई पानी बाँकी रहँदा उतारेर छान्नू र चिसो पार्नू । त्यसमा २४ ग्राम मिश्री मिसाई खान दिनू । यसबाट घोर मूत्रकृच्छ पनि शान्त भएर जान्छ । (परीक्षित)

पिसाबको नलीबाट रगत आउँछ भने २४ ग्राम सेतो चन्दन (श्रीखण्ड)को धूलोलाई माटाको भाँडामा १०० मि.लि. पानी राखी भिजाइदिनू । भोलिपल्ट बिहान त्यसलाई मलेर कपडाले छानिराख्नू । चाकसूको बियाँ २१ ओटा चपाएर उक्त चन्दनको पानी पिउनू । यसबाट पिसाबको नलीबाट रगत आउन अवश्य रोकिन्छ ।

गन्धाबिरोजाको सत्त्व १ ग्राम, गुड १ ग्राम दुवै मिसाएर खानू । माथिबाट ५० ग्राम चिनी मिसाएको १०० ग्राम दही खानू । यसबाट मूत्रकृच्छको नाश हुन्छ । (परीक्षित)

शुद्ध फिटकिरी २ ग्राम, शुद्ध गेरु २ ग्राम, मिश्री ६ ग्राम यी तीनै ओटालाई पिनेर छानी राख्नू । यो १ मात्रा हो । यसलाई खाएर माथिबाट गाईको काँचो दूध पिउने गर्नाले १०-२० दिनमा मूत्रकृच्छ रोगमा आराम हुन्छ । (परीक्षित)

१ ग्राम राल (सालधूप) र ६ ग्राम मिश्री मिसाएर पानीसँग नित्य खाने गर्नाले पिसाबसँग आलो रगत जाने बन्द हुन्छ । (परीक्षित)

गन्धाबिरोजाको सत्त्व, सेतो खयर, कलमी शोरा, शुद्ध फिटकिरी, सेतो चन्दनको धूलो, केवडाजलमा घोटी बनाएको मूँगाको पिष्टी, पाखनबेद, रातो गेरु, संगजराहत, गेरु र हजरुल यहूदको पिष्टी सबै समभाग लिएर चूर्ण बनाएपछि चूर्ण बराबर मिश्री (चूर्ण बनाई) मिसाइदिनू । यो चूर्ण ४ ग्राम मात्रामा बिहान-बेलुका गाईको दूधको लस्सीसित खानाले मूत्रकृच्छ, जलन, पिप आदि निश्चय नै हराएर जान्छन् । (परीक्षित)

पिसाब गर्ने समयमा अति पीडा हुन्छ र पिसाबको रङ्ग पनि रातो छ भने मुण्डीको स्वरस पिउन दिनू र मूत्रनलीमा त्यसैको पिचकारी लगाउनू । यसले पिसाबलाई सफा गर्छ र जलन र इन्द्रियको घाउ निको पार्छ । यसै उपायद्वारा महिलाहरूको मूत्रनलीको जलन, योनिशूल, जरायुपीडा तथा योनि चिलाउने आदि रोगमा पनि आराम हुन्छ ।

मूत्रकृच्छनाशक रस – शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक र यवक्षार तीनै द्रव्यहरू समभाग ठीक पार्नू । पहिले पारद र गन्धकलाई खलमा घोटी कज्जली पार्नू र त्यसमा यवक्षार मिसाएर खल गर्नू । अनि सिसीमा सुरक्षित गरी राख्नू । यो औषधी २५०-३७५ मि.ग्रा. मात्रामा चिनी राखी महीसँग सेवन गर्नाले सबै किसिमको मूत्रकृच्छमा आराम हुन्छ ।

मूत्रकृच्छ रोग भएपछि प्रायः धातु दूषित भएर आउँछ । यसै भएर यो रोग आराम भएपछि पनि मुण्डी, शतावरी, अश्वगन्धा, सुठो र भाँग लिएर चूर्ण बनाउनू र समभाग चिनी मिसाई १२-१२ ग्रामको लड्डूहरू पार्नू । बिहान-बेलुका १-१ लड्डू तातो दूधसँग खाने गर्नू । यसो गर्नाले बल, वीर्य तथा रतिशक्ति बढ्छ ।

मूत्रकृच्छ रोगमा पथ्य कुराहरू – दिनमा पुरानो चामलको भात, बैंगन, डुम्री, पर्वर, केरा, कागती खान हुन्छ । रातमा पुरी, रोटी, हलुवा, दूध र केही गुलियो दूध र पानीको लस्सी, अथवा मौसम अनुसार मिश्रीको शर्बत वा काढा खानु राम्रो हुन्छ । तलाउमा नुहाउनु लाभदायक हुन्छ ।

अपथ्य कुराहरू – नुन, अदुवा, तेल, हिङ, तिल, रायोको साग, माषको दाल, रातो खुर्सानी, विरुद्ध भोजन यी हानिकारक हुन्छन् । दही र गुड पनि नखानु राम्रो हुन्छ । मद्यको सेवन गर्नुहुँदैन । मैथुन तथा बढी परिश्रम पनि गर्नुहुँदैन ।

३४. मूत्राघात (पिसाब रोकिने रोग)

मूत्र आदिको वेगलाई रोक्ने गर्नाले वायु कुपित भएर मूत्राघात रोग उत्पन्न हुन्छ । यसमा थोपा-थोपा पिसाब हुनु, पिसाबका साथ रगत आउनु, मूत्राशय फुल्नु, पेट फुल्नु, जोडले दुख्नु, तल्लो पेट वा वस्तिको मुखमा ढुंगो झैं साह्रो हुनु, पिसाब गाढा भएर जानु, पिसाबमा मल जस्तै गन्ध हुनु आदि लक्षणहरू हुन्छन् । सबै किसिमका मूत्राघातहरू बढी दु:ख दिने र मुस्किलले आराम हुने हुन्छन् ।

मूत्राघातका भेदहरू – मूत्राघातका १३ भेद हुन्छन् – वातकुण्डलिका, अष्ठीला, वातवस्ति, मूत्रातीत, मूत्रजठर, मूत्रोत्सङ्ग, मूत्रक्षय, मूत्रग्रन्थि, मूत्रशुक्र, उष्णावात, मूत्रसाद, विड्विघात, वस्तिकुण्डल । यस रोगमा प्राय:वायु प्रबल हुन्छ । यसमा पित्तको पनि अधिकता भएमा दाह, शूल र पिसाबको रङ्ग बिग्रेको हुन्छ । कफको प्रबलता भएमा भारीपन र शोथ हुन्छ । यसमा पिसाब चिप्लो, गाढा र सेतो हुन्छ । मूत्राघातमा कफद्वारा वस्तिको मुख छेकिएको अवस्थामा रोग असाध्य हुन्छ । पित्त निकै बढेको अथवा वस्ति कुण्डलीकृत अर्थात् बेसरी सुनिएको अवस्थामा पनि असाध्य हुन्छ । वस्तिको मुख छेकिएको छैन – खुला छ र त्यो सुन्निएको छैन भने रोग साध्य हुन्छ । वस्ति कुण्डलीकृत (बेसरी सुनिएको) भएको अवस्थामा बढी प्यास लाग्ने, स्याँस्याँ हुने र मूर्च्छा पर्ने हुन्छ ।

मूत्राघातको चिकित्सा – काली मुसलीको जराको काढा, घिउ, तिलको तेल र गाईको दूध मिसाएर पिउनाले पुरानो मूत्राघात पनि चाँडै आराम भएर जान्छ ।

कपूरलाई पानी राखी पिनेर कपडामा लपेट्नू र बत्ती बनाउनू । त्यो बत्तीलाई लिङ्गको छिद्रमा राख्नू । बन्द भएको पिसाब खुलेर आउँछ ।

मदिरामा कालो नुन मिसाई पिउनाले अथवा कण्टकारीको स्वरस महीसँग पिउनाले मूत्राघातमा आराम हुन्छ ।

गोखुर, अडेरको जरा, शतावरी यी सबैलाई दूधमा पकाएर पिउनाले मूत्राघातमा आराम हुन्छ । काँक्राको बियाँ १२ ग्राम र सिंधे नुन १२ ग्राम दुवैलाई पिनी काँजीमा मिसाएर पिउन दिए पनि लाभ हुन्छ । (परीक्षित)

सुठो, मरिच, पिप्ला, हर्रो, बर्रो, अमला, नागरमोथा र शुद्ध गुग्गुलु सबै समभाग लिएर चूर्ण बनाउनू । अब गोखुरको काढामा मह मिसाई उक्त चूर्ण खल गर्नु र ३-३ ग्रामका गोलीहरू पार्नू । यी गोलीहरूको सेवनले मूत्राघात, मूत्रकृच्छ, प्रमेह आदि रोगहरू नष्ट हुन्छन् ।

मूत्राघात रोगमा तेलको धारा दिनु, एरण्ड तेलको पिचकारी दिनु, लिङ्गको

छिद्रमा कपूर राख्नु यी हितकारी हुन्छन् ।

शुद्ध गन्धाबिरोजा १ ग्राम, सुकमेल ५०० मिलीग्राम, वंशलोचन ५०० मिलीग्राम मिसाएर दूधको लस्सीसँग खानाले सबै किसिमका मूत्राघातहरूमा आराम हुन्छ । (परीक्षित)

कलमी शोरा, सेतो जिरा, जवाखार समभाग लिएर कुटी छानी चूर्ण बनाउनू । यो चूर्ण ३ ग्राम मात्रामा गाईको दूधको लस्सीसँग फाँक्न दिनू । पिसाब खुलेर आउँछ । (परीक्षित)

पाखनबेद, अडेरको जरा, शालपर्णी तीनैओटालाई १२५ ग्राम लिएर पानी मिसाई सिलौटोमा पिन्नू र लेदो बनाउनू । फेरि पुनर्नवा २ किलो र शतावरी २ किलो दुवैलाई ३२ लिटर पानीमा पकाएर ८ लिटर काढा बनाउनू । यस काढामा पहिले बनाएको लेदो र तिलको तेल २ लिटर मिसाएर तेल-निर्माण विधि अनुसार तेल पकाउनू र छानी लिनू । यो खाने औषधी हो । यो औषधी ६ मि.लि. मात्रामा, तातो दूधमा मिसाएर पिउनाले मूत्राघात र मूत्रकृच्छ दुवै आराम भएर जान्छन् ।

मूत्राघातमा पथ्य कुराहरू – पुरानो चामल, जाङ्गल देशका पशुहरूको मासु, मही, दूध, दही, हर्रो यी हितकारी हुन्छन् । तेलको मालिस गर्नु, गुदद्वारबाट वस्ति दिनु, पसिना ल्याउने उपाय गर्नु, यी सबैले हित गर्छन् ।

अपथ्य – मूत्राघात रोगमा मल-मूत्रको वेग रोक्नु, मैथुन र वमन आदि गर्नु हुँदैन ।

३५. अश्मरी रोग (पत्थरी)

जब कुपित भएको वायुले वस्ति (मूत्राशय)मा पुगेर मूत्र र शुक्रलाई अथवा पित्त र कफलाई सुकाइदिन्छ अनि मूत्र आदि जमेर पत्थर झैं कडा भएपछि अश्मरी अर्थात् पत्थरीको रोग उत्पन्न हुन्छ । यो रोग क्रमैसँग बढिरहन्छ । यसबाट नाभि र तल्लो पेटमा दुख्ने भइरहन्छ र पिसाब पनि बन्द हुन्छ ।

अश्मरीको पूर्वरूप – यो रोग लाग्नुभन्दा पहिले मूत्राशय फुलेर आउँछ, मूत्राशयको चारैतिर अत्यन्त दुख्न थाल्छ । पिसाबमा बाखाको पिसाब जस्तै गन्ध आउँछ, पिसाब कष्टका साथ आउँछ, ज्वरो हुन्छ र भोजन रुच्दैन ।

अश्मरीको सामान्य लक्षण – पत्थरीको रोग भएपछि नाभिमा, अण्डकोष र गुदद्वारको बीचको जोर्नीमा, मूत्राशय आदिमा दुख्ने हुन्छ । अश्मरीले मूत्रनली छेकिएको वेलामा पिसाबको धार टुट्छ, बीचैमा रोकिन्छ । पिसाब गर्ने बेलामा बल गर्नाले बढी दुख्छ । वायुद्वारा त्यो पत्थरी मूत्रमार्गबाट हराएको अवस्थामा पिसाब खुलेर आउँछ, पिसाब सफा र गोमेदमणि जस्तै हल्का पहेंलो हुन्छ । पत्थरी

यताउति सर्दा मूत्रमार्गमा असर हुन्छ र रगत मिसिएको रातो रङ्गको पिसाब हुन थाल्छ । अत्यन्त कष्ट पनि हुन्छ ।

यस रोगका चार भेदहरू हुन्छन् - वातज, पित्तज, कफज र शुक्रज ।

वातप्रधान अश्मरीको लक्षण - यसमा रोगीले दाँत कटकट गर्छ र काम्न थाल्छ, पीडा बढी भएर छटपटाउँछ, लिङ्ग नाभिलाई हातले थिची रहन्छ । उसले पिसाब फेर्न लाग्दा अधोवायुका साथ मल पनि निस्कन्छ, पिसाब पनि थोपा-थोपा गरेर आउँछ । पत्थरीको रङ्ग निलो वा धूसर हुन्छ र त्यसमा काँडाहरू हुन्छन् ।

पित्तप्रधान अश्मरीको लक्षण - वस्ति वा तल्लो पेटमा अत्यन्त जलन हुन्छ । पत्थरी भएको ठाउँमा छाम्दा अत्यन्त तातो हुन्छ । पत्थरीको आकार भलायोको गेडा जस्तै हुन्छ र रङ्ग रातो, पहेंलो अथवा कालो हुन्छ ।

कफप्रधान अश्मरीको लक्षण - वस्ति अर्थात् मूत्राशयमा सियोले रोपे झैं दुख्छ । पत्थरीलाई स्पर्श गर्दा शीतल, भारी, चिल्लो हुन्छ । त्यसको रङ्ग महजस्तै पिंगल (कैलो) वा सेतो हुन्छ । यो पत्थरी प्रायः बालकहरूमा हुन्छ र यसलाई सजिलै निकाल्न सकिन्छ ।

शुक्राश्मरीको लक्षण - जुन मानिसहरूले मैथुनका समयमा बढी आनन्दका लागि बाहिर निस्कन लागेको वीर्यलाई रोक्ने गर्छन् तिनको वीर्यको धेरै अंश भित्रै रहन जान्छ । त्यस वीर्यलाई वायुले लिङ्ग र अण्डकोषको बीचमा मूत्राशयको मुखमा लगेर सुकाइदिन्छ र त्यो वीर्य सुकेर पत्थरी बन्छ । त्यस अवस्थामा वस्तिमा पीडा हुन्छ, पिसाब फेर्न गाह्रो हुन्छ र अण्डकोषमा शोथ हुन्छ । अश्मरी भएको ठाउँमा थिच्दा त्यो पत्थरी बिलाउँछ र शुक्र बाहिर निस्कन्छ ।

वायुद्वारा अश्मरी फुटेर गएको खण्डमा त्यसका ठूला वा साना टुक्रा बन्छन् । ठूलो टुक्रालाई शर्करा (सख्खर) र सानो गेगर जस्तो अंशलाई सिकता (बालुवा) भनिन्छ । ती दुवै वायुको गति अनुलोम (स्वाभाविक-बाहिर) भएको अवस्थामा पिसाबसँगै थोरै मात्रामा बाहिर निस्कन्छन् । वायुको गति प्रतिलोम (उल्टो वा भित्रतिर) भएमा रोकिएर बस्छन् ।

उक्त शर्करा मूत्रमार्गमा आएर रोकिएको खण्डमा उपद्रवको रूपमा दुर्वलता, शरीर दुख्ने, पेटमा शूल र अरुचि हुन्छ । पाण्डुरोग, उष्णवात, मुटुमा पीडा हुन्छ । वमन र बढी प्यास लाग्ने हुन्छ ।

नाभि र अण्डकोष सुन्निएको तथा पिसाब रोकिएर तीव्र वेदना भएको अवस्थामा अश्मरी तत्काल मृत्युको कारण बन्छ ।

वातप्रधान अश्मरीको चिकित्सा - वरुण (सिप्लीकान)को बोक्रा, सुठो, गोखुर, सबै ८-८ ग्राम लिएर २०० मि.लि. पानीमा पकाई एक चौथाई बाँकी

भएपछि छानेर काढा बनाउनू । त्यसमा २ ग्राम यवक्षार र २ ग्राम पुरानो गुड राखेर पिउन दिनू । यसले पुरानो वातको पत्थरी पनि ठीक हुन्छ । (परीक्षित)

सुकमेल, पिप्ला, जेठीमधु, पाषाणभेद, रेणुका (सिमालीको बियाँ), गोखुर, असुरो र अडेरको जरा यी प्रत्येक ३-३ ग्राम लिएर २०० मि.लि. पानीमा पकाई छानी काढा बनाउनू । त्यसमा १-२ ग्राम शुद्ध शिलाजीत मिसाएर पिउन दिनू । यस काढाबाट पत्थरी, शर्करा तथा अन्य मूत्रकृच्छ आदि रोगहरू नष्ट हुन्छन् ।

पित्तप्रधान अश्मरीको चिकित्सा - पाखनबेदको काढामा (५० मि.लि.) शुद्ध शिलाजित १-२ ग्राम मिलाई खानाले पित्तको पत्थरी आराम भएर जान्छ ।

कफप्रधान अश्मरीको चिकित्सा - वरुणको बोक्रा, शोभाञ्जन (सहिजन), गिनेरी, रातोशोभाञ्जन, बिंही, करञ्ज, उखुको जरा, अरणी, बेल, कुन्दरू, आँकको जरा, चितु, कटसरैया (सैरेयक), रातो अपामार्ग, मेषश्रृङ्गी, शतावरी, दर्भ (कुशको जरा), ठूलो-सानो कण्टकारी यी सबैको काढामा शुद्ध गुग्गुलु, सुकमेल, रेणुका, कुठ, नीम, मरिच, चितु र देवदारु यी सबै पिनेको कल्क (लेदो) मिसाई बाखाको घिउमा पकाउनू । यो घिउ सेवन गर्नाले कफप्रधान अश्मरी नष्ट हुन्छ ।

शुक्राश्मरीको चिकित्सा - तृणपञ्चमूल र गोखुर १/२, १/२ किलो लिएर १६ लिटर पानीमा पकाउनू । चौथाई शेष भएपछि गोखुरको २५० ग्राम कल्क र १ किलो गाईको घिउ राखेर पकाउनू । यस घिउको मालिस तथा भोजनका साथ सेवन गर्नाले पत्थरी, शर्करा आदि रोगहरू नष्ट हुन्छन् ।

वरुण तेल - वरुण (सिप्लीकान)को बोक्रा, पात, फल र जरा तथा गोखुर ५००-५०० ग्राम लिएर १६ लिटर पानीमा पकाउनू र एक चौथाई (४ लिटर) बाँकी भएपछि १ लिटर तिलको तेल मिसाइदिनू र पकाइराख्नू । पाक्दा पाक्दा तेल मात्र बाँकी भएपछि उतारेर छान्नू । यो तेल लिङ्गमा पिचकारी हाल्नाले पत्थरी, शर्करा र मूत्रकृच्छ यी रोगहरू शान्त हुन्छन् ।

अश्मरीको सामान्य चिकित्सा - सुठो, वरुण, गोखुर, पाखनबेद, ब्राह्मी यी सबैको काढामा यवक्षार २ ग्राम र गुड २ ग्राम मिसाई पिउनाले सबै प्रकारका पत्थरीहरू आराम भएर जान्छन् । (परीक्षित)

कुभिण्डोको रसमा यवक्षार र गुड मिसाएर खानाले पिसाब रोकिएको र पत्थरी आदि रोग शान्त हुन्छन् ।

बेसारलाई गुडमा मिसाई तुषोदक (जौबाट बनेको काँजी) सँग खाएमा पुरानो पत्थरी पनि आराम भएर जान्छ । (परीक्षित)

३ माशा (ग्राम) गोखुरको बियाँको चूर्णलाई महमा मिसाई भेडीको दूधमा घोलेर ७ दिनसम्म पिउनाले भयङ्कर पत्थरी पनि नष्ट हुन्छ ।

गोखुर, वरुण र सुठोको काढा अथवा कुभिण्डोको रसमा हिंग र यवक्षार मिसाई पिए पनि त्यस्तै लाभ हुन्छ । अथवा अदुवा, यवक्षार, हर्रो र दारुहरिद्रा समभाग लिएर चूर्ण बनाई दहीको पानीसँग पिएमा लाभ हुन्छ ।

पाखनबेद, वरुण, गोखुर, ब्राह्मी सबै गरी जम्मा २४ ग्राम लिएर पानी राखी काढा बनाउनू । छानेपछि त्यसमा शुद्ध शिलाजीत, काँक्राको बियाँ र गुड खूब घोटेर बनाएको कल्क (लेदो) घोल्नू र पिउन दिनू । पत्थरी तथा भयंकर मूत्रकृच्छमा आराम दिन्छ । (परीक्षित) यो कहिल्यै फेल खाँदैन ।

कटेरीको स्वरस महमा मिसाएर पिउनाले पत्थरी तथा भयंकर मूत्रकृच्छमा आराम दिन्छ । (परीक्षित)

१८ ग्राम वरुणको बोक्राको काढा बनाई त्यसमा २४ ग्राम गुड मिसाई पिउन दिएमा ठूलोभन्दा ठूलो पत्थरी पनि ११ दिनमा गलेर जान्छ । यो काढा बनाउँदा वरुणको चूर्णलाई २०० मि.लि. जति पानीमा पकाउनुपर्छ र १०० मि.लि. बाँकी भएपछि उतारेर छान्नुपर्छ ।

गोखुर, अडेरको पात, पाखनबेद, वरुणको बोक्रा र सुठो यिनको काढामा यवक्षार मिसाई पिउनाले पत्थरी नष्ट भएर जान्छ । (परीक्षित)

पाखनबेद, वरुणको बोक्रा, गोखुर, कण्टकारी, अडेरको जरा, तालमखाना सबै समभाग लिएर चूर्ण बनाऊ । यसलाई ३-३ ग्रामको मात्रामा दहीसँग खानाले पत्थरीमा आराम हुन्छ । (परीक्षित)

यवक्षार, शुद्ध टंकण (स्वाग) र कलमी शोरा समभाग लिएर चूर्ण बनाउनू । यो चूर्ण १ ग्राम मात्रामा पानीसँग दिनको ३ पटक सेवन गर्नाले पत्थरी गलेर जान्छ । यो औषधी सेवन गराउनुभन्दा पहिले वमन गराउनुपर्छ ।

हजरुल यहूदलाई पिनेर चूर्ण बनाउनू । यो चूर्ण ३ ग्राम मात्रामा खानाले पत्थरी नष्ट हुन्छ ।

२४ ग्राम यवक्षार, २४ ग्राम काँचो स्वाग (टंकण) पिनेर २४ मि.लि. गोखुरको काढामा मिसाएर पिउनाले पत्थरी गलेर निस्कन्छ ।

२ ग्राम मूलाको क्षार बासी पानीसँग खानाले पत्थरी गल्दछ । (परीक्षित)

२४ ग्राम अंगूरको पातलाई २०० मि.लि. पानीमा पकाउनू । आधा पानी बाँकी भएपछि छानेर मिश्री मिसाई पिउन दिनू । यस काढाको सेवनले मिर्गौलासम्बन्धी सबै रोगहरू नष्ट हुन्छन् । (परीक्षित)

नीमको पातको क्षार २ ग्राम लिएर बासी पानीसँग खाने गर्नाले १५ दिनमा पत्थरी गल्छ । (परीक्षित)

करञ्जको पातको क्षार बनाई २ ग्राम मात्रा लिएर १२ ग्राम महमा मिसाई पिउन दिनू । पत्थरीमा आराम हुन्छ । (परीक्षित)

वरुणको बोक्रा ४ किलो लिएर ३२ लिटर पानीमा पकाउनू । ८ लिटर पानी बाँकी भएपछि छानेर राख्नू । गहत, सिंधे नुन, वायुविडङ्ग, चिनी, तगर, पादुका (?), यवक्षार, कुभिण्डोको बियाँ, गोखुरको फल प्रत्येक २४ ग्राम लिएर पानी राखी सिलौटोमा पिनेर लेदो बनाउनू । अब गाईको घिउ २ किलो, उक्त काढा र औषधीहरूको लेदो सबलाई यौटै भाँडोमा हालेर मन्द आगोमा पकाउनू । जब घिउमात्र बाँकी रहन्छ तब छान्नू र सिसीमा सुरक्षित गरी राख्नू । यसबाट १२ ग्राम घिउ लिएर तातो दूधमा मिसाई खानाले सबै किसिमका पत्थरीको रोगलाई नाश गर्छ । (परीक्षित)

शुद्ध पारो १२ ग्राम, शुद्ध अमलासार गन्धक १२ ग्राम, शुद्ध शिलाजीत १२ ग्राम सबलाई मिसाएर सेतो पुनर्नवाको रसमा १ दिन, असुरोको रसमा १ दिन, सेतो अपराजिताको रसमा १ दिन खल गर्नू । जब सुकेर जान्छ तब एउटा सानो हाँडीमा राखेर मुख कपडाले छोपी बाँधीदिनू । अर्को ठूलो हाँडीमा पानी भरेर मुख बन्द भएको सानो हाँडीलाई त्यसमाथि झुण्ड्याउनू र ठूलो हाँडीलाई चुलोमाथि राखी पाक्न दिनू । केही बेरसम्म पाकेपछि सानो हाँडीबाट औषधीलाई निकाल्नू । यसलाई फेरि भूमि अमलाको रस, इन्द्रवारुणीको जराको काढा र दूधसँग क्रमशः ३-३ घण्टा खल गर्नू र २५० मि.ग्रा. का गोलीहरू पार्नू । यो १ गोली बिहान-बेलुका दूध वा गहतको काढासँग सेवन गरेमा पत्थरी गलेर झर्छ ।

शुद्ध पारो ४८ ग्राम, शुद्ध गन्धक ९६ ग्राम दुवैलाई खलमा राखी घोटेर कज्जली पार्नू । त्यसलाई १ दिन सेतो पुनर्नवाको काढासँग खल गर्नू र एउटा हाँडीमा राखेर माथिबाट अर्को हाँडी घोप्ट्याएर दुवैको मुख जोड्नू । ती जोडिएको ठाउँमा कपडमिट्टी गर्नू र सुक्न दिनू । अब त्यसलाई एउटा खाल्टोमा राखी माथिबाट जङ्गली गुइँठाको आगो बाल्नू र पाक्न दिनू । आगो निभेपछि हाँडीहरू झिकी औषधी निकाल्नू र गुडसँग खल गरी २५० मि.ग्रा.का गोलीहरू बनाउनू । यो १ गोली गहतको काढा वा इन्द्रवारुणीको जराको काढासँग खानाले पत्थरी र वस्तिशूल नष्ट हुन्छन् ।

अंगूरको पातको शर्बत – मुनक्का (दाख) ६० ग्राम, गोखुर ५० ग्राम, हंसराज २८ ग्राम, थिचेको खर्बूजाको बियाँ २० ग्राम, थिचेको मदिसे सूप १२ ग्राम, अंगूरका नरम पातहरू १६० ग्राम सबलाई २४ घण्टासम्म ५ लिटर पानीमा भिजाइदिनू । त्यसपछि बलेको चुलोमा राखी पकाउनू । जब १ लिटर २५० मि.लि. पानी रहन्छ अनि मलेर कपडाले छान्नू । त्यस काढामा फेरि १ किलो २५० ग्राम चिनी मिसाएर

पकाउनू । जब शर्बत जस्तो बाक्लो भएर आउँछ तब आगोबाट उतार्नू र छान्नू । यो शर्बतको सेवनले पत्थरी गल्दछ ।

हजरुल यहूद १२ ग्राम, खर्बूजाको बियाँ ८ ग्राम, काँक्रोको बियाँ ८ ग्राम, गोखुर ८ ग्राम, गहत ८ ग्राम, सूप ४ ग्राम, बबूलको गूँद ४ ग्राम, अजमोद ४ ग्राम सबलाई कुटी छानी चूर्ण बनाउनू । यो चूर्ण ६ ग्राम मात्रामा चनाको काढासँग खाने गरेमा पत्थरी गल्छ ।

अश्मरीमा पथ्य कुराहरू – वस्ति अर्थात् गुदद्वारमा पिचकारी दिनु, जुलाफ दिनु, वमन गराउनु अवस्था अनुसार उचित हुन्छ । खानामा जौ, गहत, पुरानो शाली चामलको भात, जङ्गली पशुपक्षीहरूको मांसरस, कागतीको रस र दूध पथ्य हुन्छन् ।

अपथ्यहरू – चिनी, मख्खन, घिउ, चिया आदि हानिकारक हुन्छन् ।

३६. मेदोरोग (मोटोपना)

शरीरमा मेद धातु अरू धातुहरूको भन्दा बढी मात्रामा बढ्दै गएर शरीर बढी मोटो देखिने रोगलाई मेदोरोग भनिन्छ ।

मेदोरोगको कारण – व्यायाम नगर्नु, दिउँसो सुत्ने बानी हुनु, कफ बढाउने गुलियो, चिल्लो कुरा बढी खानु यस रोगमा कारण हुन्छन् ।

सम्प्राप्ति र लक्षण – रस आदि वीर्यसम्मका सबै धातुहरूमा मेद बीचमा पर्छ । उक्त कारणहरूबाट मेदको वृद्धि हुँदै जाँदा त्यसले अरू धातुहरूको स्रोतको मार्गलाई छेकिदिन्छ र पोषण हुन दिँदैन अनि अरू धातुहरू कम हुँदै जान्छन् । त्यस अवस्थामा रोगी सबै किसिमका काम गर्न नसक्ने हुँदै जान्छ । सबै प्राणीहरूको पेट र हाडहरूमा मेद धातु (बोसो) रहेको हुन्छ । त्यसै भएर मेद बढ्दा व्यक्तिको पेट बढेर आउँछ ।

मेद धातुद्वारा मार्ग छेकिएको वायुले आन्द्रा आदि अङ्गहरूमा घुमेर अग्निलाई बढाइदिन्छ र खाएको अन्नलाई चाँडै नै पचाइदिन्छ । त्यसैले मेद बढेको रोगीलाई चाँडै नै भोक लाग्छ । समयमा खान नपाएमा उसलाई अनेक रोगहरू लाग्छन् ।

मेद धातु अत्यधिक बढेको खण्डमा वायु आदि दोषहरूले भयंकर उपद्रवहरू उत्पन्न गरेर रोगीको जीवन नष्ट गरिदिन्छन् ।

मेदोरोगमा कम परिश्रमले पनि स्याँस्याँ हुने, प्यास बढी लाग्ने, एकाएक सास रोकिने हुन्छ । निद्रा बढी लाग्छ । बढी पसिना आउने र शरीर गन्हाउने हुन्छ । भोक पनि बढी लाग्छ । मैथुन गर्ने शक्ति कम हुन्छ ।

शरीरमा मासु र मेद धातु अत्यधिक बढ्दै गएमा कम्मर तलको भाग, पेट

र स्तन यी अंगहरू ढल्किने हुन्छन् । शरीरको मोटाइ पनि भद्दा देखिन्छ र उत्साह कम भएर जान्छ ।

मेदोरोगको सामान्य चिकित्सा – वायुविडङ्ग, सुठो, यवक्षार, कान्तलौह भस्म, जौ र अमला समभाग लिएर कुटी छानी चूर्ण बनाउनू । यस चूर्णलाई मह वा त्रिफलाको काढासँग अथवा गुर्जोको काढासँग खान दिनू । मेद बढ्न पाउँदैन ।

अमलाको काढामा शुद्ध शिलाजीत वा शुद्ध गुग्गुलु पकाएर खानाले मेदको वृद्धि रोकिन्छ ।

४ ग्राम चितुको जराको चूर्ण १२ ग्राम महमा मिसाएर चाट्ने र पथ्य अन्नहरू खाने गरेमा पेट बढ्न छोड्छ । (परीक्षित)

नित्य बिहान २०० मि.लि. जति पानीमा २४ ग्राम मह मिसाएर पिउने अथवा अरणी (गिनेरी)को काढा वा स्वरसमा २ ग्राम शुद्ध शिलाजीत मिसाएर खानाले मोटोपन नष्ट हुन्छ । (परीक्षित)

सुठो, पिप्ला, मरिच, हर्रो, बर्रो, अमला, शुद्ध गुग्गुलु सबै समभाग लिनू । गुग्गुलुबाहेक अरूलाई कुटी छानी चूर्ण बनाउनू । त्यसपछि चूर्णसँग गुग्गुलु राखी खूब कुट्नू र जङ्गली बयर समानको (१ ग्राम) गोलीहरू पार्नू । यी गोलीहरू नित्य खाने गर्नाले शरीरको मोटोपन नष्ट हुन्छ । (परीक्षित)

१०० मि.लि. गोमूत्रमा १८ ग्राम मह मिसाई नित्य सेवन गरे पनि लाभ हुन्छ । (परीक्षित)

सुठो, मरिच, पिप्ला, चाबो, सेतो जिरा, हिङ, कालो नुन र चितु सबै समभाग लिएर चूर्ण बनाउनू । यो चूर्ण ६ ग्राम मात्रामा नित्य तातो पानीसँग सेवन गर्नाले मेदोरोग नष्ट हुन्छ । (परीक्षित)

दशाङ्ग गुग्गुलु – त्रिकटु, चितुको जरा, त्रिफला, नागरमोथा, वायुविडङ्ग, शुद्ध गुग्गुलु समभाग लिनू । गुग्गुलु बाहेक सबैको चूर्ण बनाइसकेपछि चूर्ण र गुग्गुलु मिसाई बेसरी कुट्नू र गोली बनाएर राख्नू । यो गोली नित्य ६ ग्राम जति लिएर मह वा पानीसँग खाएमा मेदोरोग र आमवात नष्ट हुन्छन् । (परीक्षित)

मेदोरोगमा पथ्यहरू – पुरानो चामल, मूँग, गहत, कोदोले हित गर्छन् । उपवास, व्यायाम, बाटोमा हिँड्ने गर्नु, रातमा जागा बस्नु, चिन्ता गर्नु यी कुराहरूबाट मेद कम हुन्छ ।

शरीरको दुर्गन्ध र पसिना हटाउने उपायहरू – असुरोको पातको रसमा शंखभस्म मिसाएर लेप गर्ने अथवा बेलपत्रको रस लगाउने गर्नाले मेदको कारणले उत्पन्न शरीरको दुर्गन्ध हराएर जान्छ ।

गोरखमुण्डीलाई पिनेर काञ्जीसँग पिए पनि लाभ हुन्छ ।

बेलको पात र हर्रोलाई पिनेर लेप गर्ने अथवा बेसारलाई दूधसँग पिनेर शरीरमा लेप गर्नाले धेरै दिनको शरीरको दुर्गन्ध पनि नाश हुन्छ ।

हर्रोलाई शरीरमा मलेर स्नान गर्नाले शरीरमा पसिना आउन रोकिन्छ । हर्रो, लोध, आँपको बोक्रा, अनारको बोक्रा सबैलाई पानी राखी पिनेर शरीरमा मल्नाले स्त्री पुरुष दुवैको शरीरको दुर्गन्ध नष्ट भएर जान्छ । यी चीजहरूलाई गाईको दूधसँग पिनेर लेप गर्नाले शरीरको रङ्ग गोरो हुँदै जान्छ । बेसार र दारुहरिद्रासँग पिनेर लेप गर्नाले उत्तम वशीकरण हुन्छ ।

स्नानपश्चात् हर्रो, सानो नखी, चन्दन, कुठ, राल (सालधूप), अगर र खाँड (गुड) को बारम्बार धूप दिनाले शरीरमा राम्रो सुगन्ध आउँछ ।

हर्रोको चूर्ण महसँग चाट्नाले बढी पसिना आउन छोड्छ ।

जामुनको बोक्रा र पात पानीमा पकाएर त्यसले काखी धुने गर्नाले अथवा मुर्दासंग पिसेर मल्नाले काखीको दुर्गन्ध नष्ट भएर जान्छ ।

महासुगन्धी तेल - चन्दन, केशर, खस, प्रियंगु, सुकमेल, गोरोचन, लोबान, अगर, कस्तूरी, कपूर, जाइपत्री, जाइफल, कंकोल, सुपारी, ल्वाङ्ग, नली, जटामसी, कुठ, रेणुका, तगर, नागरमोथा, नबीन नख, व्याघ्रस्पृक्का, बोल, दमनक (तितेपाती), स्थौणेयक, चोरक, शैलेय, एलुवा, सरल, सतवन, लाहा, पद्मक, अमला, लामज्जक तृण, धयेंरको फूल, पुण्डरीक (कमल), कचूर यी सबै ३-३ ग्राम लिएर सिलौटोमा पिनेर लेदो तयार पार्नू । अब १ लिटर तिलको तेल, ४ लिटर पानी र बनाएर राखेको औषधीहरूको लेदो मिसाएर मन्द आगोको आँचमा पकाउनू । तेलमात्र बाँकी रहेपछि उतारेर छान्नू । यस तेलको मालिसले पसिना, मयलको गन्ध तथा कुष्ठ रोगको नाश हुन्छ । मानिस सुन्दर र सुडौल भएर आउँछ ।

शीतका कारण हात-खुट्टामा आउने पसिना हटाउने उपाय -

मूँगको गेडालाई डढाएर पिन्नू र रोगीको हातखुट्टामा मल्न दिनू ।

अथवा - गहत र पहेंलो कौडा बेग्लाबेग्लै डढाएर पिस्नू । फेरी दुवैलाई मिसाएर हात-खुट्टामा मल्नू ।

अथवा- कालो धतुरोको बियाँलाई डढाएर पिस्नू । त्यो १ ग्राम मात्रामा नित्य ८ दिनसम्म खानू ।

बयरको पात र जटामसी पिनेर हात-खुट्टामा मल्ने गर्नू ।

अथवा - फिटकिरी पानीमा घोलेर मल्नू ।

अथवा - पुष्करमूल पिनेर हत्केला-पैंतालामा मल्नू ।

यी उपायहरू गर्नाले शीतका कारण आउने पसिना बन्द हुन्छ । यसमा पुरानो चामलको भात, कोदो, जौ, गहत, मसुरो, मूँग, मह, बैंगन (भण्टा), लौहभस्म, तिलको तेल, पेटमा पटुका बाँध्नु, जुलाफ लिनु यी सबै पथ्य हुन्छन् । कफकारक पदार्थ र दूध, दही, मख्खन, मासु यी हानिकारक हुन्छन् ।

३७. कार्श्य (दुब्लोपना)

सामान्य खाना खाए पनि शरीर सधैँ दुब्लो-पातलो हुने र काम गर्ने शक्ति कम हुने अवस्थालाई कार्श्य भनिन्छ ।[१]

कारण – मानिस दुब्लो हुनमा यीमध्ये कुनै एक वा धेरै कारण हुनसक्छन् – वायुको प्रकोप, रुखो अन्न सधैँ खानु, कम खाना खानु वा भोकै बस्नु, वमन-विरेचनको अतियोग हुनु, मूत्र आदिको वेग रोक्नु, निद्रा पूरा नहुनु वा रातमा जागा बस्ने गर्नु, धेरै समयसम्म पेट वा अन्य अङ्गको रोगले घेर्नु, नित्य मैथुन गर्नु, बढी व्यायाम गर्नु, कुनै प्रकारको भय वा चिन्ता सदा रहिरहनु आदि ।

लवण – कम्मर, घाँटी र पेट सुकेका हुन्छन्, शरीरमा नसाहरूको जालो देखिन्छ, हाड मात्र बाँकी रहन्छ, मुख वा टाउको मात्र मोटो वा ठूलो देखिन्छ । त्यस्ता मानिसलाई वायुगोला, अल्काई पेटको रोग आदिले सताइरहेका हुन्छन् ।

चिकित्सा – जो मानिस राम्रो पोषिलो खानपिन नपाएर दुब्लो छ त्यसलाई बल बढ्ने, धातु पुष्ट हुने, मैथुनमा रुचि गराउने खालका औषधीहरूद्वारा उपचार गर्नुपर्छ । जस्तै – अश्वगन्धाको चूर्ण दूध, घिउ अथवा मनतातो पानीसँग १ महिनासम्म नित्य खान दिनू । यसबाट शरीर खूब पुष्ट हुन्छ ।

अश्वगन्धादि तैल – २५० ग्राम अश्वगन्धालाई पानीसँग पिनेर लेदो बनाउनू । फेरि २ किलो अश्वगन्धालाई मोटो हुने गरी कुटेर १६ लिटर पानीमा पकाउनू । चौथाई (१/४) पानी (४ लिटर) बाँकी भएपछि त्यसलाई बाक्लो कपडाले छान्नू । अब यो काढा पहिले बनाएको लेदो, तिलको तेल १ लिटर र गाईको दूध ४ लिटर मिसाएर मन्द आगोको आँचमा पकाउनू । तेलमात्र बाँकी रहँदा उतारेर छान्नू । यस तेलको मालिसले शरीर पुष्ट हुन्छ ।

---

१. गर्भाधान हुने वेलामा पिताको वीर्यको भाग बढी र मेद कम छ भने पैदा हुने सन्तान दुब्लो भएपनि बलवान् हुन्छ । पिताको विर्यको भाग कम र मेदको भाग बढी छ भने पैदा हुने सन्तान हेर्दा मोटो देखिएपनि बलहीन हुन्छ ।

२. जुन मानिस जन्मदेखि नै अत्यन्त दुब्लो पातलो छ, मन्द अग्नि भएको छ, त्यसलाई असाध्य सम्झनुपर्दछ ।

अश्वगन्धा, कालो मुसली, सेतो मुसली समभाग लिएर गाईको दूधमा पकाउनू । जब दूध सुक्छ र गाढा भएर आउँछ तब त्यसमा बराबर भाग मिश्री वा चिनीको धुलो मिसाउनू । यसको १ वा २ ग्राम मात्रा गाईको दूधसँग खानाले शरीर पुष्ट हुन्छ । यो औषधी महिलाहरूका लागि विशेष लाभदायक छ ।

दूधसँग गहुँको पिठोको रोटी खाने गरेपनि शरीर पुष्ट हुन्छ । मरिच ३६ ग्राम, सुठो ३६ ग्राम, पिप्ला १२० ग्राम, कालो तिल २०४ ग्राम, ओखरको गुदी २०४ ग्राम सबैलाई कुटी छानी राख्नू । अब २ किलो चिनी राखी पानीमा घोल्नू र पकाउनू । त्यसैमा पहिले बनाएको औषधीहरूको चूर्ण पनि मिसाएर पाक्न दिनू । पाकेर चिसो भएपछि त्यसमा २५० ग्राम जति मह मिसाएर सुरक्षित गर्नू । यो औषधी नित्य ४ ग्राम मात्रामा दूधसँग खानाले शरीर खूब मोटो हुन्छ ।

पथ्य कुराहरू – दूध, घिउ, पुरानो चामलको भात, माषको दाल, दही, सख्खर, गुलिया फलहरू (अंगूर, ओखर, बदाम, केरा आदि) खाँदा हित गर्छन् । निद्रा पुग्ने गरी सुत्नु, चिन्तालाई छोड्नु पनि आवश्यक छ ।

अपथ्यहरू – बढी उपवास गर्नु, जागा बस्नु आदि कारणमा भनिएका कुराहरूले हानि गर्छन् ।

३८. वातव्याधि (वातरोग)

शरीरमा विद्यमान तीन दोषहरूमा सबैभन्दा प्रबल वायु नै हुन्छ । त्यो वायु कुपित भएर शरीरको कुनै एक अङ्ग वा पूरै शरीरमा जब रोग उत्पन्न गर्छ अनि त्यसलाई वातव्याधि भनिन्छ ।

कारण – रुखो, चिसो, हल्का, तितो-पिरो कुरा सधैं सेवन गर्नाले, लंघन (उपवास) गर्नाले, उकालो-ओरालो बाटोमा सवारी गरी हिंड्ने गर्नाले, क्रोध, शोक, भय अथवा चिन्ताले, मलमूत्रहरूको वेग रोक्नाले वायु कुपित हुन्छ ।

सम्प्राप्ति – उक्त कारणहरूबाट वायु कुपित भै शरीरका विभिन्न स्रोतहरूमा पुग्छ र कुनै एक अङ्ग वा पूरै शरीरमा हुने अनेक रोगहरू उत्पन्न गर्छ । यो वातव्याधि ८० प्रकारका हुन्छन् ।

पूर्वरूप – वातव्याधिहरूको पूर्वरूप ज्वर आदि रोगहरूको जस्तो स्पष्ट हुँदैन । वातव्याधिको स्पष्ट नभएको लक्षणलाई त्यसको पूर्वरूप भन्छन् । व्यक्त वा प्रकट लक्षणलाई रूप मानिन्छ । शरीरमा वायुको नाश कहिल्यै हुँदैन, त्यसको विकार कम हुनु नै रोगको नाश हुनु संझनुपर्छ ।

रसगत वायुको लक्षण – जब कुपित वायु रसमा स्थित हुन्छ तब शरीरको छाला रूखो, फुटेको, पातलो र कालो वर्णको तथा सियोले घोचेजस्तो दुख्ने हुन्छ । छाला तन्केको र केही रातो पनि देखिन्छ । छालाको सबै तहमा भित्र-बाहिर दुख्ने हुन्छ ।

रक्तगत वायु – कुपित वायु रगतमा रोकिएमा तीव्र वेदना र सन्ताप हुन्छ, शरीरको रङ्ग बिग्रेर जान्छ, कमजोरी हुन्छ, अरुचि भैरहन्छ । भोजनपछि शरीरमा स्तब्धता (हल नचल) हुन्छ ।

मेदगत वायु – कुपित वायु मेदमा रोकिएमा मांसगत वायु जस्तै सारा लक्षणहरू हुन्छन् । अलि पीडायुक्त गाँठाहरू र पिडकाहरू आउँछन् ।

अस्थिगत वायु – कुपित वायु हाडहरूमा रोकिएमा जोर्नीहरूमा शूल हुन्छ, मांस तथा बलको क्षय हुन्छ, निद्रा लाग्दैन, शरीरमा पीडा प्रबल हुन्छ ।

मज्जागत वायु – कुपित वायु मज्जामा स्थित हुँदा अस्थिगत वायुकै सारा लक्षण देखिन्छन् । यसको विशेषता यत्ति हो कि मज्जागत वायुबाट उत्पन्न पीडा कहिल्यै शान्त हुँदैन, निरन्तर रहिरहन्छ ।

शुक्रगत वायु – जब कुपित वायु वीर्यमा प्रवेश गर्छ तब त्यसले वीर्यलाई चाँडै नै बग्ने अथवा स्खलित नहुने गराउँछ । वीर्यको रङ्गलाई बिगारिदिन्छ । वातदूषित वीर्यबाट गर्भ रहेको खण्डमा गर्भस्राव अथवा गर्भपात भइरहन्छ ।

स्थानविशेष अनुसार वातव्याधि

कोष्ठ अर्थात् सम्पूर्ण पाचन प्रणालीमा आश्रित वायु कुपित भएको खण्डमा मल र मूत्र रोकिन्छ, तिनको निष्कासन राम्ररी हुँदैन । गोडाहरू जोडिने, कम्मरको भागमा शोथ, हृदयरोग, गुल्म, अर्श र करङहरूमा शूल हुन्छ ।

आमाशयगत वायु – कुपित वायुद्वारा आमाशय प्रभावित भएमा करङ, पेट, हृदय र नाभिमा दुख्ने हुन्छ, प्यास लाग्ने, डकार आइरहने हुन्छ, झाडा-वान्ता लाग्न सक्छ । खोकी लाग्ने, मुख-घाँटी सुक्ने र दम उठ्ने हुन्छ ।

पक्वाशयगत वायु – कुपित वायु पक्वाशयमा आश्रित भएमा पेटभित्र आन्द्राहरूमा गुडगुड आवाज आएको भान हुन्छ, शूल चल्छ, कष्टका साथ मल र मूत्रको निष्कासन हुन्छ अथवा रोकिन सक्छ, पेट फुल्छ, घाँटी र काँधको बीचमा दुख्ने हुन्छ ।

इन्द्रियगत वायु – कुपित वायु कान आदि इन्द्रियहरूमा आश्रित भएमा इन्द्रियहरूको ज्ञान गर्ने अर्थात् सुन्ने, देख्ने, स्पर्शको अनुभव गर्ने, स्वाद लिने र सुँघ्ने शक्ति हराएर जान्छ ।

सिरागत वायु – कुपित वायु सिराहरूमा आश्रित भएमा, सिराहरू खुम्चने वा भरिने हुन्छन् । तिनीहरू फुलेर आउने वा साना देखिने हुन्छन् । शरीरका अङ्गहरू बाहिर पिठ्यूँतिर तन्किने बाह्यायाम अथवा भित्र पेटतिर तन्किने गरी अन्तरायाम हुन्छ । खल्ली रोग अथवा शरीर कुप्रो पर्ने हुन्छ ।

स्नायुगत वायु – कुपित वायु स्नायुहरूमा आश्रित भएमा कुनै एक अङ्ग वा पूरै अङ्गहरू प्रभावित हुने किसिमका शूल आदि लक्षणहरू हुन्छन् ।

सन्धिगत वायु – कुपित वायु सन्धिहरूमा आश्रित भएमा जोर्नीहरू बढी दुख्ने, नचल्ने हुन्छन् । जोर्नीहरूमा शोथ हुन्छ ।

सिराग्रहको लक्षण – कुपित वायु रगतबाट घाँटीका सिराहरूमा आश्रित हुन गएमा ती सिराहरू (घाँटीका नसाहरू) रुक्ष र काला देखिन्छन् । तिनमा दुख्ने भइरहन्छ । यस्तो अवस्थालाई सिराग्रह रोग भनिन्छ । यो असाध्य हुन्छ ।

हनुग्रहको लक्षण – दाँत माझ्ने वेलामा जिभ्रो बेसरी खुर्कने, सुख्खा कुरा चपाएर खाने, चोटपटक लाग्ने भएको खण्डमा कुपित वायुले हनु अर्थात् मुखको तल्लो हाडको जोर्नीमा आश्रित भएर त्यो हाडलाई तलतिर खस्काइदिन्छ । त्यस अवस्थामा मुख कि त खुलै रहन्छ कि बन्द नै रहन्छ । मुख खोल्दा दुख्ने हुन्छ । त्यसले गर्दा कुनै कुरा चपाउन वा बोल्न गाह्रो हुन्छ । यसलाई हनुग्रह भनिन्छ ।

जिह्वास्तम्भको लक्षण – बोल्न मद्दत गर्ने नसामा कुपित वायुले आश्रय गरेको खण्डमा जिब्रो नचल्ने हुन्छ । त्यस अवस्थामा कुनै कुरा खान पिउन अथवा बोल्न नसकिने हुन जान्छ ।

गद्गदत्व, मूकत्व र मिन्मिनत्व

कुपित वायु र कफले शब्दवाही नसाहरूलाई ढाकेको खण्डमा मानिसलाई मूक, गद्गद अथवा मिन्मिन बनाइदिन्छ । बोल्नै नसक्ने लाटोलाई मूक भनिन्छ । शब्द वा व्यञ्जनहरू बीचमा छोडेर बोल्ने अथवा बोल्दा अकमकाउने, भकभकाउनेलाई गद्गद भनिन्छ । नाके बोली बोल्ने मानिसलाई मिन्मिन भनिन्छ । यी तीनै थरीको कारण एउटै भए पनि तिनीहरूबाट सम्बन्धित अङ्गहरूमा पर्ने असरको स्वरूप र मात्रा अनुसार भिन्न किसिमका रोगका लक्षणहरू हुन जान्छन् ।

प्रलाप – कुपित वायुका कारण जुन मनुष्य असम्भव र व्यर्थको कुरा गर्छ त्यसको रोगलाई प्रलाप (बकबक गर्नु) भन्छन् । प्रलाप पित्तको कारणबाट हुन्छ र वातबाट पनि हुनसक्छ । पित्तका कारण भएको प्रलापमा रोगीलाई सबै कुराको ज्ञान हुन्छ । उसले आफूले बोलेको कुरा व्यर्थ हो भन्ने राम्ररी बुझेको हुन्छ । वात-कफज प्रलापमा रोगी होशमा हुँदैन, बेहोश अवस्थामा बर्बराउने गर्छ । यसै भएर पित्तज प्रलापमा वातकफज सम्झेर गरम औषधी दिनुहुँदैन ।

रसाज्ञान – भोजनको समयमा मानिसको जिब्रोले अमिलो, पिरो, गुलियो आदि रसहरूको अनुभव गर्न सक्दैन भने त्यसलाई रसाज्ञान भनिन्छ ।

मन्यास्तम्भ – दिनमा सुत्ने, अग्लो-होचो ठाउँमा सुत्ने र माथितिर गलत ढंगले हेरिरहने गर्नाले वायु कुपित भएर कफद्वारा आवृत भएको खण्डमा त्यसले गर्दनको पछिल्तिर रहेको 'मन्या' नामक नसोलाई नचल्ने गरी कक्रक्क पार्छ । त्यसलाई मन्यास्तम्भ भनिन्छ । यो रोग लागेको मानिसले आफ्नो गर्दन घुमाउन सक्दैन ।

अंसशोषको लक्षण – कुपित वायु काँधमा पुगेको अवस्थामा त्यहाँ जोर्नीमा रहेको कफलाई सुकाएको खण्डमा अंसशोष रोग उत्पन्न हुन्छ । यसमा काँधमा बढी दुख्ने हुन्छ ।

अवबाहुक – कुपित वायुले काँधमा गएर हातमा पुग्ने नसाहरू खुम्च्याइ दिएमा अवबाहुक रोग हुन्छ । यसमा काँध तथा हातमा दुख्ने हुन्छ ।

विश्वाची – हातको पछिल्तिरबाट औंलाहरूमा पुगेको कण्डरामा कुपित वायुद्वारा दोष उत्पन्न भएमा विश्वाची रोग हुन्छ । यसमा हातले गर्ने कामहरू हुन छोड्छन् । कुनै कुरा समाउन, औंला र हात खुम्च्याउन वा तन्काउन नसकिने हुन्छ । यो रोग दुवै हातमा हुन्छ, कहिलेकाहीं यौटै हातमा पनि हुनसक्छ ।

क्रोष्टुकशीर्ष – वातरक्त रोगको उपद्रवको रूपमा घुँडामा बेसरी दुख्ने खालको शोथ हुन्छ । त्यसकारण घुँडाको आकार नै बिग्रिन्छ र स्यालको टाउको जस्तो देखिन्छ । त्यसलाई क्रोष्टुकशीर्ष रोग भनिन्छ ।

खञ्जता र पङ्गुत्वको लक्षण – कुपित वायुले कम्मरमा रहेर गोडातिर जाने कण्डरा अर्थात् मांसपेशीको सूत्रलाई नचल्ने बनाएको खण्डमा मानिस लंगडो (खञ्ज) हुन्छ । यसरी एउटा गोडा नचल्ने हुन्छ । दुवै गोडाहरू नचल्ने भएमा त्यसलाई पङ्गु भनिन्छ ।

कलायखञ्ज – जो मानिस हिँड्न थाल्दा काम्छ र हिँड्दा लंगडो जस्तै खोच्याउँदै हिँड्छ त्यसलाई कलायखञ्ज भनिन्छ ।

वातकण्टक – गोडाले अग्लो-होचो ठाउँमा एकाएक कुल्चँदा अथवा बढी हिँड्न परेको वेलामा कुपित वायुद्वारा गोलीगाँठोमा दुख्ने हुन्छ । त्यसलाई वातकण्टक रोग भनिन्छ ।

खल्ली – कुपित वायुद्वारा गोडा, जाँघ, तिघ्रा र हातका पेशीहरू बाउँडिएर दुख्ने भएमा त्यसलाई खल्ली रोग भनिन्छ ।

पाददाह – कुपित वायु पित्तका साथ रगतमा पुगेको खण्डमा गोडामा पोल्ने हुन्छ । हिँडेको वेलामा बढी पोल्छ । त्यो पाददाहको लक्षण हो ।

पादहर्ष – वायु तथा कफको प्रकोप भएर गोडाहरूमा कहिले सिरिङ्ग हुने वा चसक्क दुख्ने र कहिले लाटो हुने हुन्छ । त्यो पादहर्ष रोगको लक्षण हो ।

कुब्जत्व

कुपित वायुले पिठ्यूँमा पुगेर शरीर कुप्रो बनाइदिएमा त्यसलाई कुब्जत्व भनिन्छ । यसमा रोगी सोझो भएर उभिन वा हिँड्न सक्दैन । उभिएको अथवा हिँडेको वेलामा उसको टाउको तल र पिठ्यूँको भाग माथि उठेको देखिन्छ । कुब्जलाई अंग्रेजीमा Hump-backed भन्छन् ।

तन्द्रा – यो वायु र कफको प्रकोपबाट उत्पन्न हुन्छ । यसमा मानिस उँघेको हुन्छ । उसलाई शब्द आदिको ज्ञान हुँदैन, शरीरमा भारीपन हुन्छ, बीच-बीचमा हाइ आउने हुन्छ, शरीर थाकेको जस्तो हुन्छ । उसको अवस्था निदाएको मानिस जस्तो हुन्छ ।

कम्पवात (वेपथु) – यसमा शरीरका सबै अङ्ग र टाउको काम्ने हुन्छ ।

आक्षेपक – जब कुपित वायुले शरीरका सबै नाडीहरूमा प्रवेश गरेर शरीरलाई हात्तीमाथि बसेको मानिस जस्तै हल्लाउँछ वा मानिसलाई एकाएक झट्का हान्न थाल्छ, त्यो स्थितिलाई आक्षेपक भनिन्छ । यसका दुई भेद हुन्छन्- अपतन्त्रक तथा अपतानक ।

अपतन्त्रकको लक्षण – जब विभिन्न कारणहरूबाट कुपित वायु आफ्नो स्वाभाविक गति छोडेर शरीरको माथितिर जान्छ अनि मुटु, शिर र कञ्चटहरूमा पीडा उत्पन्न गर्छ तथा शरीरलाई धनुष जस्तै झुकाइदिन्छ । रोगी हिँड्न खोजेको खण्डमा बेहोश हुन्छ । उसलाई सास फेर्न गाह्रो हुन्छ, आँखाहरू स्थिर भएर जान्छन्, परेलाहरू बन्द हुन्छन् । यसलाई अंग्रेजीमा Spasmodic Contraction of the body भन्छन् । रोगीले बेहोश अवस्थामा परेवा जस्तै घुरघुर आवाज निकाल्छ ।

अपतानकको लक्षण – यसमा आँखाहरू नचल्ने गरी स्तब्ध हुन्छन्, रोगीको होश हराउँछ, त्यस अवस्थामा घाँटीबाट घुरघुर आवाज निस्कन्छ । जब वायुले हृदयलाई छोड्छ त्यस वेलामा रोगी स्वस्थ हुन्छ । फेरि अर्को पटक हृदयलाई समाएपछि रोगी मूर्च्छा पर्छ । कुपित वायुबाट उत्पन्न हुने यस भयंकर रोगलाई अपतानक भनिन्छ ।

दण्डापतानकको लक्षण – कुपित वायु कफका साथ सम्पूर्ण शरीरका नाडीहरूमा रहेर जब शरीरलाई काठजस्तै नचल्ने-नडुल्ने गरी कक्रक्क पार्छ, त्यो अवस्थालाई दण्डापतानक वा दण्डक भनिन्छ ।

धनुस्तम्भको लक्षण – कुपित वायुले शरीरलाई धनुषजस्तो बाङ्गो हुने गरी मोडिदिएमा त्यस अवस्थालाई धनुस्तम्भ भनिन्छ । यस रोगमा शरीरको रङ्ग

फेरिन्छ, दाँतहरू जकडिन्छन्, अङ्गहरू शिथिल हुन्छन् । रोगी बेहोश भइरहन्छ र शरीरबाट पसिना चल्छ । यो रोग लागेको मानिस १५ दिन पनि बाँच्दैन । यो असाध्य हुन्छ ।

अन्तरायामको लक्षण – जब कुपित वायुले खुट्टाका आँला र गोलीगाँठाहरू, पेट, मुटु, छाती, घाँटी यी अङ्गमा रहेका स्नायुसमूहलाई वेगले प्रभावित पार्छ त्यस अवस्थामा रोगीको आँखा र च्यापु नचल्ने हुन्छन्, करङहरू दुख्छन्, मुखबाट कफ निस्कन्छ । रोगीको शरीर भित्रपट्टि पेटतिर नुहेर जान्छ । त्यस अवस्थालाई अन्तरायाम भनिन्छ ।

बाह्यायामको लक्षण – शरीरको पछाडिको भागमा रहेका नसाहरूमा पुगेको कुपित वायुले शरीरलाई पछिल्तिर झुकाइदिने अवस्थालाई बाह्यायाम भनिन्छ । यसमा छाती, कम्मर, तिघ्रा लगायत सबै अङ्गहरू पछिल्तिर झुकेर जान्छन् । यो रोग असाध्य हुन्छ । यसको लक्षण Tetanus रोगसँग मिल्छ । त्यसमा सुरुमा हातखुट्टाका नसाहरू तन्किन्छन्, बंगाराहरू खुम्चेर जान्छन् र नचल्ने हुन्छन् । कुनै कुरा निल्न सकिन्न । रोग बढेपछि कम्मर धनुषजस्तै कि अगाडि नत्र भने पछाडि झुकेर जान्छ । यो रोग क्षीणता, कुचिला आदि विषको सेवन आदि कारणहरूबाट हुन जान्छ ।

गर्भपातका कारण, रगत बढी बगेर अथवा चोटपटक बढी लागेर उत्पन्न अपतानक रोग असाध्य हुन्छ ।

३९. पक्षाघात (प्यारालाइसिस)

पक्षाघातको लक्षण एवं सम्प्राप्ति

कुपित वायुले शरीरको दायाँ अथवा देब्रे कुनै भागलाई समाएर जब त्यहाँ भएका सिरा र स्नायुहरूलाई सोस्छ, सन्धिहरूको बन्धनलाई खुकुलो बनाई शरीरको कुनै आधा भागलाई निष्क्रिय बनाउँछ, त्यस अवस्थालाई पक्षाघात भनिन्छ । त्यसमा शरीरको देब्रे वा दाहिनेतिर जता रोग लाग्छ त्यता शरीरले काम गर्न छोड्छ, त्यसमा स्पर्श आदिको ज्ञान रहँदैन । सन्धिबन्धनहरू खुकुलो हुनाले आधा शरीर जति खुकुलो र बेकाम हुन जान्छ ।

पक्षाघात ४ किसिमको हुन्छ – केवल वायुबाट उत्पन्न, वायुका साथ पित्तबाट उत्पन्न, वायु र कफद्वारा उत्पन्न र धातुक्षयबाट उत्पन्न चारै प्रकारमा वायुको प्रधानता रहन्छ ।

वायुसँग पित्तको पनि मिश्रण भएमा शरीरभित्र दाह हुने, बाहिर ताप बढ्ने र मूर्च्छा यी विशेष लक्षण हुन्छन् । वायुसँग कफको सम्बन्ध भएमा पक्षाघात भएको भाग चिसो, भारी र सुनिएको हुन्छ ।

चार थरी पक्षाघातहरूमा केवल वायुबाट उत्पन्न पक्षाघात कष्टसाध्य, वातपित्तज र वातकफज पक्षाघात साध्य हुन्छन्। धातुक्षयबाट उत्पन्न पक्षाघात असाध्य हुन्छ।

गर्भवती अथवा सुत्केरी महिला, बालक, बूढा र दुर्बल मानिसलाई यो रोग लागेमा अथवा बढी रक्तस्रावबाट उत्पन्न भएको खण्डमा यदि कुनै वेदना थाहा नहुने-थाहा नपाउने भएमा रोग असाध्य हुन्छ।

हिक्मत अर्थात् यूनानी चिकित्सापद्धतिमा लेखिएको छ कि पक्षाघातमा पीडित अङ्ग ढिला (शिथिल) भएर गएका छन् र तिनको रङ्ग जसको तस छ, पहिलेको अपेक्षा दुब्लो (सुकेको) वा मोटो भएको छैन भने रोग आराम हुन सक्छ, अन्यथा हुँदैन।

अर्दित रोगमा एकतिरको अनुहार टेढो भएर जान्छ तर पक्षाघातमा आधा शरीर लम्बाइमा पूरै मात्रामा खुकुलो र शून्य भएर काम नगर्ने हुन जान्छ। कहिलेकाहीं आधा शरीरसँग आधा टाउको त्यस्तै शिथिल र काम नगर्ने हुन्छ। त्यसलाई लकवासहित पक्षाघात भनिन्छ।

हिक्मत अनुसार जब कुनै पनि बाह्य वा भित्री कारणबाट आत्माको मार्ग (Nervous System) बन्द भएर जान्छ र आत्मा (प्राण)को सञ्चारमा बाधा आउँछ अनि त्यस अवरोधका कारण पक्षाघात हुन्छ। कहिले काहीं शरीरको आधा निरोगी भाग यस्तो तातेर आउँछ कि त्यहाँ आगो दन्किएको होस् तर अर्को आधा रोगी भाग बरफ जस्तो शीतल हुन्छ। यसका २ कारणहरू हुन्छन् - पहिलो कारण आत्माले रोगी अङ्गमा प्रवेश गर्न खोज्छ तर त्यहाँका बाटाहरू (नसा) बन्द भएको हुनाले तिनमा प्रवेश गर्न सक्दैन अनि त्यो निरोगी भागमा प्रवेश गर्छ। दोस्रो कारण यो छ कि पक्षाघात र अर्दित रोगमा गरम औषधीहरू दिइन्छ। त्यसले गर्दा औषधीले रोगी अङ्गको अपेक्षा निरोगी अङ्गमा आफ्नो प्रभाव बढी देखाउँछ। यसैले गर्दा निरोगी अङ्गमा गर्मी बढेर आउँछ। यस बाहेक रगत पनि निरोगी अङ्गमा बढी प्रवाहित हुन्छ साथमा आत्मा (प्राण) पनि रहन्छ जब कि रोगद्वारा पीडित अङ्गले रगत लिन सक्दैन। यी सबै कारणहरूले गर्दा कहिलेकाहीं निर्दोष अङ्ग आगोझैं तातेर आउँछ।

डाक्टरी मत अनुसार यो रोग शरीरको एकतिर बायाँ वा दाहिने पट्टि भएमा पक्षाघात (Hemeplegia) भन्छन्, कम्मरभन्दा मुनि भयो भने Paraplegia भन्छन्। जब यो रोगले हात-खुट्टा आदि अङ्गमा वा केही मांसपेशीसँग सम्बन्ध राख्यो भने त्यसलाई Partial paralysis भन्छन्। जब अनुहारमा एकतिर वा दुवैतिर हुन्छ तब Facial paralysis भन्छन्।

अर्दित रोग -

ठूलो स्वरमा बोल्नु, सुपारी आदि कडा पदार्थ चपाउनु, अत्यन्त हाँस्नु, अति हाई-हाई आउनु, बढी बोझा उठाउनु, घाँटीमा बल पर्ने किसिमले अग्लो होचो

ओच्छ्यानमा सुत्नु यी कारणहरूबाट कुपित वायु टाउको, नाक, ओठ, चिउँडो, निधार आँखाको सन्धिमा पुगेर मुख तथा टाउकोमा अर्दित रोग उत्पन्न गर्छ र दुःख दिन्छ ।

यो रोग लागेपछि मानिसको आधा अनुहार टेढो भएर जान्छ, गर्दन बाङ्गो हुन्छ, टाउको घरी-घरी काम्छ, रोगी बोल्न सक्दैन, आँखा, नाक, घाँटी, आँखिभौं र गालामा दुख्ने हुन्छ, यी सबै बाङ्गा हुन्छन्, फर्फराउने गर्छन् । अनुहारको जतापट्टि रोग लागेको छ त्यतातिर घाँटी, चिउँडो र दाँतहरू दुख्छन् ।

यो रोग ४ किसिमको हुन्छ – वातज, पित्तज, कफज र त्रिदोषज । वातज अर्दित रोगमा मुखबाट ऱ्याल बग्छ, शिराहरू फर्फराउँछन्, काम्ने हुन्छ, चिउँडो कडा हुन्छ, बोल्न कम भएर जान्छ वा बोल्नै सक्दैन । ओठ सुन्निएर आउँछ, शूल चल्छ । पित्तज अर्दितमा रोगीको अनुहार पहेंलो हुन्छ, ज्वरो बढ्छ, तिर्खा बढी लाग्छ, होस कम हुन्छ, गर्मी बढेको अनुभव हुन्छ । कफज अर्दितमा घाँटी, निधार तथा मन्या नाडीमा शोथ तथा जकडिने हुन्छ । त्रिदोषज अर्दित रोगमा सबै दोषहरूका लक्षण पाइन्छन् । सम्बन्धित भाग सुन्निएको हुन्छ, आँखाहरूमा मैलोपन देखिन्छ ।

असाध्य लक्षण – जो रोगी अत्यन्त क्षीण भैसकेको छ, जसले आँखा झिम्क्याउन सक्दैन, स्पष्ट बोल्न सक्दैन, जसको रोग लागेको ३ वर्ष बितीसकेको छ अथवा जसको आँखा, नाक र मुखबाट सधैँ पानी बगिरहन्छ, शरीर कामिरहन्छ । त्यस्तो रोगीलाई आराम हुन सक्दैन धेरै जसो अर्दित रोग लागेको मानिस ४ दिनमै मर्छ । यदि चार दिन पार गऱ्यो भने बाँच्न सक्छ ।

हिक्मत अनुसार जसलाई यो रोग लाग्ने हुन्छ, उसको अनुहारको हाडमा दुखेको अनुभव हुन्छ, अनुहारको छालामा स्पर्शको ज्ञान कम भएर जान्छ, अनुहारको आधा भाग खूब फर्फराउँछ । यी लक्षणहरू देखा पर्ने बित्तिकै अर्दित रोग लाग्ने कुरा बुझ्नुपर्छ ।

डाक्टरी मतानुसार अनुहारको एकतिर अथवा दुवैतिर आघात हुँदा चिउँडो, बंगारा, आँखा र कञ्चट बाङ्गिएर जान्छन् । यस रोगको कारण सर्दी, कमजोरी, कानमा घाउ आदि हुन्छन् ।

सर्वाङ्गवातको लक्षण – सबै अङ्गहरूमा वायु कुपित हुँदा शरीरका अङ्गहरू काम्न थाल्छन्, दुख्ने गर्छन्, वेदनाका कारण जोर्नीहरू फुट्ने जस्तो दुखाई हुन्छ । यसलाई सर्वाङ्गवात भनिन्छ ।

गृध्रसीको लक्षण – फिलाहरूबाट सुरु भएर कम्मर, पिठ्यूँ, तिघ्रा, घुँडो र खुट्टाहरूमा क्रमैले स्तम्भ अर्थात् कक्रक्क पार्ने, दुख्ने र सियोले घोचेझैं हुन्छ । उक्त मार्गमा रहेको गृध्रसी भन्ने नाडीमा बारम्बार स्पन्दन वा फर्फराउने भइरहन्छ । यो वातज गृध्रसीको लक्षण हो ।

वातकफज गृध्रसीमा तन्द्रा, शरीरमा भारीपन र अरुचिका साथ अरू गृध्रसीका लक्षण पनि हुन्छन् ।

ऊर्ध्ववातको लक्षण – आफ्ना कारणहरूबाट कुपित भएको समान वायु कफ अथवा आमद्वारा आवृत भएको अवस्थामा माथि गएर बारम्बार धेरैपटक डकार आइरहने गराउँछ । त्यसलाई ऊर्ध्ववात भनिन्छ ।

आध्मानको लक्षण – जब तलको अपान वायु रोकिन्छ र पेट निकै फुलेर आउँछ, दुख्छ र गुडगुड आवाज गर्न थाल्छ तब त्यस्तो लक्षण हुने रोगलाई आध्मान भनिन्छ ।

प्रत्याध्मानको लक्षण – कफद्वारा आवृत भएको कुपित वायुका कारण उत्पन्न, करङ र हृदयलाई छोडेको साथै आमाशयमा मात्र दुख्ने, फुल्ने आदि लक्षण भएको रोगलाई प्रत्याध्मान भनिन्छ ।

वाताष्ठीलाको लक्षण – नाभिभन्दा तल उत्पन्न यताउति सर्ने वा एकै ठाउँमा अडिएको ढुंगोजस्तो गाँठो भएमा त्यसलाई वाताष्ठीला भनिन्छ । त्यो गाँठो साह्रो, माथि उठेको र त्यहाँ लाम्चो आकारको हुन्छ । यसका कारण मल र मूत्रको मार्ग रोकिन्छ ।

प्रत्यष्ठीलाको लक्षण – त्यही गाँठो पेटमा तेर्सो परेर देखिएको खण्डमा र दुख्ने भएमा त्यसलाई प्रत्यष्ठीला भनिन्छ । यसको चापका कारण दिसा-पिसाब अपान वायु निस्कन सक्दैनन् ।

तूनीको लक्षण – मलाशय र मूत्राशयबाट दुख्न सुरु भएर त्यो दुखाई बढ्ने र त्यसले गुदद्वार र लिङ्गसम्म पुग्ने भएमा त्यसलाई तूनीरोग भनिन्छ । यसमा मलाशयबाट गुदद्वारसम्म अथवा मूत्राशय देखि लिङ्ग वा योनिसम्म बारंबार तीव्र वेदना हुन्छ ।

प्रतितूनीको लक्षण – कुपित वायुका कारण जुन वेदना गुदद्वार अथवा लिङ्गबाट सुरु भएर वेगका साथ पक्वाशयतिर बढ्दै जान्छ, त्यसलाई प्रतितूनी रोग भनिन्छ ।

मूत्रग्रहको कारण – वायु वस्तिमा अनुलोम अर्थात् आफ्नो स्वाभाविक रूपमा सञ्चार भएको वेलामा पिसाब नरोकिइकन ठीकसित निस्कन्छ । वायुको गति प्रतिलोम अर्थात् अवरोधयुक्त भएमा पिसाब रोकिने, कष्टका साथ निस्कने हुन्छ ।

वातव्याधिहरूको सामान्य चिकित्सा

आहार – रोगीलाई मधुर (गुलियो), अमिलो, नुनिलो कुराहरू, घिउ, तेल भएको अन्न, मासुको झोल, खिर आदि खान दिनुपर्छ ।

विहार – रोगीको शरीरमा तेल आदिले मालिस गर्ने, तातो लुगाले लपेट्ने, मनतातो काढा वा तातो पानीको धारा वा बाफ दिने, हल्का हातले मिच्ने, थुमथुमाउने, थिच्ने गर्नुपर्छ । अचम्मका कुराहरू गरेर मनोरञ्जन गर्ने, नरमाइला कुराहरू बिर्साउने गर्नुपर्छ ।

स्नेहन – शरीर कक्रक्क नपरेको अवस्था भएमा घिउ, तेल आदि चिल्लो पदार्थले मालिस गरेर त्यस्ता कुराहरू पर्याप्त मात्रामा खान दिएर शरीरको स्नेहन गर्नुपर्छ ।

स्वेदन – स्नेहन गरेपछि पसिना आउने किसिमले स्वेदन गर्नुपर्छ । त्यसका लागि रोगीलाई तातो न्यानो कोठामा राख्ने, शरीरका अङ्गहरूमा बाफ लगाउने, तातो इँट आदिले सेक्ने आदि उपचार गर्नुपर्छ ।

संशोधन – स्नेहन र स्वेदन गर्दा राम्रो लाभ नदेखिएमा स्नेह विरेचनको प्रयोग गर्नुपर्छ । त्यसका लागि राती सुत्ने वेलामा २५० मि.लि. मनतातो दूधमा अडेरको तेल २०–२५ मि.लि. मिसाएर खान दिनुपर्छ । त्यसपछि नारायण तेल, महामाष तेल राखी गुदद्वारमा वस्ति (पिचकारी) दिनुपर्छ ।

रसायन प्रयोग – शिवा गुटिका, महायोगराज गुग्गुलु, रसराज रस आदि रसायन औषधीहरू सेवन गर्न दिनुपर्छ ।

नस्य प्रयोग – आवश्यकतानुसार षड्विन्दु तेल वा महानारायण तेलको नस्य दिनुपर्छ ।

धातुगत वातव्याधिहरूको चिकित्सा

रस धातुगत वायु भएमा – तेल आदिको मालिस र स्वेदन गर्नू अर्थात् बाफ आदि लगाई पसिना निकाल्नू । तातो पानीमा बस्ने गर्नू । छालामा वायु छ भने सर्स्यूंको तेलमा अफिम मिसाई मालिस गर्नू र कपासले सेक्नू ।

रगतमा वायु भएमा – शीतल लेप गर्नू, खसलाई पानीमा पिनेर लेप गर्नू । विरेचन गराउनू र रगत निकाल्नू ।

मासुमा वायु भएमा – जुलाफ दिनू, निरुह वस्ति दिनू, त्यसपछि संशमन चिकित्सा गर्नू । महायोगराज गुग्गुलु १ गोली बिहान-बेलुका गाईको दूधसँग खान दिनू । जुलाफका लागि सनायपत्ती १२ ग्रामलाई २५० मि.लि. दूधमा पकाएर खान दिनू ।

मेद धातुमा वायु भएमा – मांसगत वायु जस्तै चिकित्सा गर्नू अर्थात् जुलाफ दिनू र निरुह वस्तिको प्रयोग गर्नू ।

अस्थि र मज्जा धातुमा वायु भएमा – बाहिर शरीरमा स्नेहको मालिस तथा मुखबाट पनि स्नेहको (घिउ-तेल आदि) सेवन गराउनू ।

लशुन ३६ ग्राम लिएर १०० मि.लि. तिलको तेलमा डढाउनू र छानेर त्यसैले शरीरमा मालिस गर्नू । त्यही तेल १२ मि.लि. मात्रामा खान पनि दिनू ।

केतकीको जरा ६० ग्राम, गंगेरन (नागबला) ६० ग्राम, कांगियो (अतिबला) को जरा ६० ग्राम सबैलाई कुटेर ३ लिटर पानीमा पकाउनू । ७५० मि.लि. पानी बाँकी भएपछि त्यसमा चौलानी २५० मि.लि. र १०० मि.लि. कालो तिलको तेल मिसाएर फेरि पकाउनू । तेलमात्र बाँकी भएपछि उतारेर छान्नू र सिसीमा राख्नू । यसबाट बिहान-बेलुका १२-१२ मि.लि. तेल लिएर पिउन दिनू र यसै तेलको मालिस पनि गर्न लगाउनू ।

वीर्यमा वायु भएमा – प्रिय र सुन्दर स्त्रीको सम्पर्कद्वारा हर्ष उत्पन्न गराउनू, वीर्य बढ्ने कुराहरू खान दिनू । घिउमा मिसाएर लशुन खान दिनू । ५० ग्राम कालो तिल नित्य ख्वाउनू र कालो तिलकै तेलले मालिस पनि गर्न लगाउनू ।

घिउ १ भाग र दूध ४ भाग लिई पकाउनू । जब घिउमात्र बाँकी रहन्छ तब उतार्नू । त्यो घिउमा अश्वगन्धाको चूर्ण ३-६ ग्राम मिसाएर खान दिनू । यसो गर्नाले असाध्य वात र वीर्यक्षीणता नाश भएर जान्छ । (परीक्षित)

कोष्ठगत वायुको लक्षण भएमा – पाचन औषधीहरू सेवन गर्न दिनू । जस्तै हिंग्वष्टक चूर्ण २-२ ग्राम कागतीपानीसँग खान दिनू । पञ्चसकार चूर्ण ६ ग्राम - तातो पानीसँग राती सुत्ने वेलामा सेवन गराउनू । मूँगफलीको तेल ६ मि.लि. मा मह १२ ग्राम मिसाएर दिनमा २ पटक खाएमा पेटको दूषित वायु हराई सफा दिसा हुन्छ ।

आमाशयगत वायुको विकारमा – पहिले लङ्घन गराई दीपन पाचन औषधी खान दिनू । रोगी बलवान् भए वमन गराएर पछि जुलाफ दिनू । वमनका लागि २४ ग्राम सिंधे नुन आधा लिटर पानीमा पकाएर पिउन दिनू । विरेचनका लागि १२-२४ ग्राम सनायपत्तीलाई २५० मि.लि. दूधमा पकाएर खान दिनू । त्यसपछि हर्रोको चूर्ण ६ ग्राममा सिंधेनुनको चूर्ण ३ ग्राम मिसाएर ५-७ दिनसम्म दिनदिनै तातो पानीसँग सेवन गराउनू, आराम हुन्छ ।

आँकको फूल ३ ग्राम, सांभर नुन १ ग्राम दुवैलाई मिसाएर तातो पानीसँग सेवन गर्नाले १५ दिनमा आमाशयगत वायुको विकारमा आराम हुन्छ ।

बोझो, अतीस, सानो पिप्ला, सौँचर नुन प्रत्येक समभाग हुने गरी २४ ग्राम लिनू र ४०० मि.लि. पानीमा पकाई काढा बनाउनू । चौथाई शेष रहेपछि छानेर खान दिनू । आमाशयगत वायु शान्त हुनेछ ।

अथवा – पहिलो दिन नुन-पानी ख्वाएर वमन गराउनू । दोस्रो दिन चितुको चूर्ण ३ ग्राम तातो पानीसँग खान दिनू । तेस्रो दिन इन्द्रजौको चूर्ण ३ ग्राम तातो पानीसँग दिनू । चौथो दिन पाठाको चूर्ण ३ (ग्राम) तातो पानीसँग दिनू । पाचौँ दिन कुटकीको चूर्ण ३ ग्राम, छैटौँ दिन अतीसको चूर्ण ३ ग्राम र सातौँ दिन हर्रोको चूर्ण ३ ग्राम तातो पानीसँग खान दिनू । यसरी औषधीहरू खान दिएमा आमाशयगत वात नष्ट भएर जान्छ ।

पक्वाशयगत वायुको चिकित्सा – यसमा तेल आदि मिश्रित जुलाफ दिनुपर्छ । दीपन-पाचन औषधीहरू जस्तै रसोन वटी, हिंग, लशुन आदि सेवन गर्न दिनुपर्छ । गाईको दूध २५० मि.लि. मा अडेरको तेल (Caster Oil) १५-२० मि.लि. मिसाएर पिउन दिनू । यो जुलाफ २ दिन दिनाले पक्वाशयको वायु निस्केर जान्छ । यसपछि ठूलो हर्रोको फलको बोक्राको चूर्ण ३-६ ग्रामलाई महमा मिसाएर लगातार आराम नभएसम्म सेवन गराउनू ।

गुदद्वारगत वायुको चिकित्सा – यसमा दीपन-पाचन चूर्ण, वटी, आसव अरिष्टहरूको सेवन गराउनुपर्छ । हिंग्वादि चूर्ण, अविपत्तिकर चूर्ण, गन्धक वटी आदि । अडेरको तेल १२ मि.लि. मा साबुन ६ ग्राम राखी पिन्नू र त्यसमा औँला चोपी गुदद्वारको भित्रसम्म पुऱ्याउनू । यो क्रिया गरेको केही बेरमा अधोवायु खुल्नेछ र तुरुन्त दिसा भएर रोगीको सारा पीडा हराउनेछ । मूत्राशय, गुदद्वारको वायुको विकारमा अडेरको तेल तातो पानीसँग पिउन दिए पनि आराम हुन्छ । (परीक्षित)

हृदयगत वायुको चिकित्सा – हृदय अर्थात् मुटु वरिपरि दुख्छ र सास पनि छिटो चल्न थाल्छ भने हृदयमा वायु रोकिएको छ भनी बुझ्नुपर्छ । यस्तो अवस्थामा बिहानै मरिचको चूर्ण ३ ग्राम र गुर्जोको चूर्ण ३ ग्राम दुवै एकसाथ तातो पानीसँग सेवन गर्नाले हृदयको पीडा आदि उपद्रवहरू शान्त भएर जान्छन् ।

अश्वगन्धाको चूर्ण ६ ग्राम, बर्रोको बोक्राको चूर्ण ६ ग्राम दुवैलाई १२ ग्राम गुडमा मिसाई खान दिनू । माथिबाट १ कचौरा तातो पानी पिउन दिनू । यसबाट हृदयको वायु शान्त हुनेछ ।

देवदारुको चूर्ण ६ ग्राम, सुठोको चूर्ण ६ ग्राम दुवैलाई एकैपटक बिहान तातो पानीसँग फाँक्नाले हृदयगत वायुको पीडा शान्त हुन्छ । (परीक्षित)

इन्द्रियगत वायुको चिकित्सा – कुपित वायु जुन इन्द्रियमा रहन्छ त्यसमा दुख्ने, पोल्ने हुन्छ र त्यसको काम घट्दै जान्छ । अतः जुन इन्द्रिय प्रभावित छ त्यही अनुसार उपचार गर्नुपर्छ ।

कानमा वायुको प्रकोपबाट दुख्ने समस्या भएमा – १२ मि.लि. सर्स्यूको तेलमा ६ ग्राम लशुन राखी डढ्ने गरी पकाउनू । चिसो भएपछि छानेर सिसीमा

राख्नू । यो तेल ४-५ थोपा जति दुखेको कानमा राख्नू । कान दुख्न छोड्छ ।

२५० मि.ली ग्राम अफीमलाई ६ मि.लि. सर्स्यूको तेलमा घोलेर कानमा राख्नू । यसले कान दुख्ने, पिप बग्ने, थरीथरी आवाज सुनिने लक्षणहरू हराएर जान्छन् ।

बृहत् पञ्चमूलमध्ये कुनै एउटा (बेल, गिनेरी, टटेलो, गम्भारी, पाटला) ४ अङ्गुल लामो टुक्रा लिएर त्यसमा कपासले लपेट्नू । त्यसलाई तिलको तेलमा चोप्नू र सलाई बाली आगो बल्न दिनू । अब बलेको उक्त आगोलाई चिम्टाले समाई तल कचौरा थाप्नू र तेल चुहुन दिनू । यसरी कचौरामा जम्मा भएको तेललाई मनतातो पारी कानमा राख्नू । यसबाट कान दुखेको तत्काल आराम हुन्छ । (परीक्षित)

सिरास्नायुगत वायुको चिकित्सा – यसमा वातनाशक तेलहरूको मालिस गर्नू । दुखेको ठाउँमा बाफ दिनू । तातो लेपहरू लगाउनू । महायोगराज गुग्गुलु, अग्नितुण्डी वटी, रास्ना सप्तक क्वाथ सेवन गराउनू ।

सन्धिगत वायुको चिकित्सा – सन्धिगत वायुको रोगमा जोर्नीहरूमा तातो वस्तुले सेक्नू । सुठोको चूर्ण ६ ग्राम, शुद्ध गुग्गुलु ६ ग्राम र गुड १२ ग्राम तीनै थरीलाई पिनेर मिसाउनू । बिहान-बेलुका तातो पानीसँग खान दिनू । सन्धिगत वायुको रोग नाश हुन्छ ।

समीरगज केशरी वटी नित्य १ गोली पानमा राखेर खाएमा समस्त वातरोगलाई नाश गर्छ । (परीक्षित)

अडेरको बियाँको गुदी १२० ग्राम, देशी बदाम (Almond) ६० ग्राम, ल्वाङको चूर्ण ६ ग्राम, केशर ६ ग्राम, सानो पिप्ला ६ ग्राम र सुकमेल ६ ग्राम सबलाई मसिनो गरी पिनेर १ लिटर दूधमा पकाउनू । जब दूध जति पाकेर खुवा (कुराउनी) बन्छ अनि ७५० ग्राम मिश्रीको चासनी बनाएर खुवामा मिसाइदिनू । एउटा सफा माटाको भाँडामा यो औषधी राखी मुख बन्द गर्नू र जौको थुप्रोमा ४० दिनसम्म गाडिराख्नू त्यसपछि निकालेर सेवन सुरु गर्नू । सुरुमा ३ ग्रामको मात्रा दिनू । जाडोको मौसममा यसको सेवनले गठिया अर्थात् सन्धिवातको रोग निश्चय ठीक हुन्छ । यसको कैयौं पल्ट परीक्षा गरेको छु । मात्रा अलि अलि बढाउँदै लानुपर्छ । यसको सेवनपछि ४० दिनसम्म परहेजमा बस्नुपर्छ । फेरि कुनै तागतिलो औषधी जस्तै बदामको हलुवा आदि खानुपर्छ । यो गठियाको लागि रामबाण औषधी हो ।

शुद्ध कुचिला ६० मिलीग्राम नित्य सेवन गर्ने र अडेरको जरा र सुठोलाई पानीसँग पिनेर दुखेको ठाउँमा लेप गर्नाले सन्धिवात र गठिया आदि आराम भएर जान्छ ।

१२५ मिलीग्राम कुचिलाको सत्त्व (Strychnine) लाई ४० भाग गरी १ भाग नित्य खानू र कार्बोनेट अफ पोटाशमा कपडा भिजाई जोर्नीहरूमा राख्नू । गठिया रोग आराम भएर जान्छ ।

शुद्ध हिङ्गुल, हलेदो, अजमोदा, अकर्करा, नीमको पात, ज्वानु, सिमालीको पात, इन्द्रवारुणीको जरा, अपामार्ग, अश्वगन्धा, पाठा, मरिच, बकाइनोको जरा, आँकको जरा, शुद्ध भलायो सबै समभाग लिएर कुटछान गर्नू र सबैको बराबर पुरानो गुड मिसाएर १-१ ग्रामको गोली पार्नू। रोगीको बल अनुसार १ वा २ गोली नित्य सेवन गर्नाले जोर्नीहरूको पीडा र गठियाको रोग नाश हुन्छ। यसलाई 'सिंगरफ गोली' भन्छन्। यो गोलीको सेवन गर्ने मानिसले अमिलो, वायु बढाउने पदार्थ, मासु र नुनको परहेज गर्नुपर्छ। चामल, दूध र गहुँको रोटीमा धेरै मात्रामा घिउ राखेर खानुपर्छ।

मालकागनी (ज्योतिष्मती) को गेडा ल्याएर सफा गर्नू। पहिलो दिन १ दाना निल्नू, दोस्रो दिन २ दाना, तेस्रो दिन ३ दाना निल्नू। यसै रीतले दिनदिनै १-१ दाना बढाउँदै निल्ने गर्नू र १०० दिन पुऱ्याउनू त्यसपछि फेरि १-१ दाना घटाउँदै १ दानामा पुग्नू। यसबाट जोर्नीहरूको दुखाई नष्ट भएर भोक बढ्छ र शरीर रोगबाट मुक्त हुन्छ। दाना बढाउँदै जाँदा बढी गर्मीको अनुभव भयो भने त्यसै दिनबाट दानाको संख्या घटाउने क्रिया सुरु गर्नू, बढाउन बन्द गर्नू।

अडेरको जरा २ किलो लिएर ८ लिटर पानीमा भिजाइदिनू र पकाउनू। जब चौथाइ पानी बाँकी रहन्छ तब मलेर छान्नू। फेरि आधा लिटर अडेरकै तेलमा मिसाएर मन्द आँचको आगोमा पकाउनू। जब तेलमात्र बाँकी रहन्छ तब छानेर सिसीमा राख्नू। यो तेलको मालिस गर्नाले जोर्नीहरूको पीडा शान्त हुन्छ।

कालो धतुरोको पात, फल र जरालाई कुटेर रस निचोर्नू र डेढ लिटर रस जम्मा पार्नू। त्यसमा १०० मि.लि. तिलको तेल, १०० मि.लि. आलसको तेल र १०० मि.लि. सर्स्यू वा तोरीको तेल मिसाउनू र मन्द आगोमा पकाउनू। जब तेलमात्र रहन्छ तब उतारेर छान्नू र सिसीमा सुरक्षित गरी राख्नू। यो तेल जोर्नीहरूमा मलेर माथिबाट अडेर वा आँकको पात राखी बाँध्नाले जोर्नीहरूको पीडा मेटिएर जान्छ।

५०० ग्राम तमाखुको पातलाई २ लिटर पानीमा भिजाइदिनू। भोलिपल्ट त्यसलाई मिचेर रस निकाल्नू। फेरि त्यसमा अदुवाको रस १ लिटर मीठा तेल ३०० मि.लि. मिसाएर पकाउनू। तेलमात्र बाँकी हुँदा उतारेर छान्नू। यो तेल मनतातो बनाई जोर्नीहरूमा लगाउँदा दुखाई शान्त हुन्छ र वायुको शमन हुन्छ।

धतुरोको पातलाई तताएर बाँध्नाले जोर्नीको पीडा शान्त हुन्छ।

स्नायुसम्बन्धी रोगलाई रोक्ने उपाय

अबेर गरी पच्ने भारी खानाहरू नखानू। तातो खाना खाएको वेलामा कुनै पनि पेय पदार्थ नपिउनू।

कफि, चिया, तमाखु आदिबाट बच्नू। यी पदार्थहरूले आफ्नो हानिकारक

प्रभाव ढिलो गरी देखाउँछन् र अन्तमा महारोगहरू पैदा गरिदिन्छन् । आमाशयका स्नायु, मुटु तथा नाडी तन्त्रलाई खुकुलो पारिदिन्छन् ।

निद्रा लागेपछि रोक्नुहुँदैन । बढी परिश्रम गर्ने व्यक्तिले यथेष्ट निद्रा लिनुपर्छ ।

ऋतुहरू फेरिने वेलामा पूरा सावधान हुनुपर्छ । खुट्टा चिसो नराख । खुट्टा चिसो राख्नाले ऋतु परिवर्तनको वेलामा आहार विहारमा गडबडी गर्नाले नसासम्बन्धी रोग, ज्वर, खोकी आदिले सताउँछन् ।

मानसिक परिश्रम अति मात्रामा गर्नाले र मनलाई एकैतिर बढी लगाउनाले स्नायुमण्डल कमजोर भएर मस्तिष्कलाई कमजोर पारिदिन्छ र स्मरणशक्ति पनि घटाइदिन्छ ।

शीतल जलको स्नान स्नायुसम्बन्धी दुर्बलता नाश गर्नमा अति उत्तम हुन्छ ।

जसको स्नायु दुर्बल छ उसले बिहान चाँडै उठेर केही व्यायामहरू गर्नुपर्छ । अबेरसम्म सुतिराख्नाले कमजोरी हुन्छ र शरीर खुकुलो हुन्छ ।

यस्ता रोगहरूमा देश-देशान्तरको यात्रा, चित्तको आकर्षण गर्ने दृश्यहरू हेर्नु, खुला गाडीमा घुम्नु, कहिलेकाहीं पैदल घुम्नु पनि लाभदायक हुन्छ ।

स्नायुसंस्थान र पाचन प्रणालीका अंगहरूको निकटको सम्बन्ध हुन्छ । तिनमा अस्वाभाविक भार दिनाले मन्दाग्नि, पेटमा वायु भरिने हुन्छ, स्नायुसम्बन्धी रोग उत्पन्न हुन्छन् । पेटभरी भोजन गरेपछि तत्काल शारीरिक वा मानसिक कुनै पनि काम गर्नु उचित हुँदैन ।

वातव्याधिहरूको विशेष चिकित्सा

गद्गदत्व, मिन्मिनत्व र मूकत्वको चिकित्सा– यी रोगहरू लागेको अवस्थामा सारस्वत घृत, कल्याण अवलेह, अश्वगन्धारिष्ट यी औषधीहरू सेवन गर्न दिनुपर्छ ।

सारस्वत घृत – शोभाञ्जन (सहिजन), बोझो, सिंधे नुन, धयेंरोको फूल, लोध र पाठा यी प्रत्येक ४८ ग्राम लिएर चूर्ण बनाउनू र सिलौटोमा पानीका साथ पिनेर लेदो बनाउनू । त्यस लेदोलाई ७६८ ग्राम गाईको घिउ र ३०७२ मि.लि. (३ लिटर ७२ मि.लि.) बाख्राको दूधसँग एउटा कलईदार कराहीमा राखी मन्द आगोको आँचमा पकाउनू । घिउमात्र बाँकी भएपछि उतारेर छान्नू । यस घिउको सेवनले लाटोपन, मिन्मिनत्व आदि रोग नष्ट हुन्छन्, बोली सफा भएर आउँछ, स्मरणशक्ति पनि बढ्छ ।

कल्याण अवलेह – हलेदो, बोझो, कुठ, सानो पिप्ला, सेतो जिरा, अजमोदा, जेठीमधु र सिंधे नुन यी सबै समभाग लिएर कुटी छानी मिसाउनू । यो

चूर्ण ३ ग्रामलाई घिउमा मिसाएर चाट्नाले २१ दिनमै स्मरणशक्ति खूब बढ्छ, आवाज पनि कोइलीजस्तै हुन्छ ।

प्रलापको चिकित्सा – सन्निपात ज्वरोमा रोगी बर्बराउँछ । त्यस अवस्थामा तगर, पित्तपापडा, राजवृक्षको गुदी, नागरमोथा, कुटकी, सुगन्धवाल, अश्वगन्धा, ब्राह्मी, दाख, चन्दन, दशमूल, शंखपुष्पी यी हरेक औषधी २-२ ग्राम लिएर ४०० मि.लि. पानीमा राखी काढा बनाउने विधि अनुसार पकाउनू । जब ५० मि.लि. पानी बाँकी रहन्छ अनि छानेर सेवन गर्न दिनू । प्रलाप गर्न बन्द हुन्छ ।

रसाज्ञानको चिकित्सा – खाने वेलामा कुनै पनि स्वाद थाहा नहुनुलाई रसाज्ञान भनिन्छ । त्यस अवस्थामा सैन्धवादि चूर्ण अथवा किरातादि कल्कको प्रयोग गर्नुपर्छ ।

सैन्धवादि चूर्ण – सिँधे नुन, सुठो, मरिच, पिप्ला, अम्लवेत यी सबै समभाग लिएर चूर्ण बनाउनू । यो चूर्ण जिब्रोमा दल्नाले रसाज्ञान रोग हराउँछ ।

किरातादि कल्क – चिराइतो, कुटकी, इन्द्रजौ, बोझो, ब्राह्मी, पलाशको बियाँ, सज्जीखार (खाने सोडा), कालो जिरा, सानो पिप्ला, पिप्लाको जरा, चितु, सुठो र मरिच यी सबै समान भाग लिएर चूर्ण बनाउनू । त्यो चूर्ण अदुवाको रससँग पिनेर बारम्बार जिब्रोमा दल्नू । रसाज्ञान हराई खाने कुराको स्वाद आउन थाल्छ ।

वातकण्टकको चिकित्सा – यस रोगमा दिनको ३-४ पटक अडेरको तेल १० मि.लि. मात्रामा सेवन गर्न लगाएमा आराम हुन्छ । यसमा सियो तताएर गोलीगाँठामा दाग्ने गर्नाले अथवा रगत निकाल्ने काम गर्नाले पनि लाभ हुन्छ ।

खल्लीको चिकित्सा – यसमा कुठ ६ ग्राम, सिंधे नुन ६ ग्राम र चूक (अथवा अम्लवेत)६ ग्राम सबैलाई चूर्ण बनाई तोरीको तेल ६० मि.लि. मिसाएर अलिवेर तताएपछि लेप लगाउनू, खल्ली रोगमा आराम हुन्छ । (परीक्षित)

कलायखञ्जको चिकित्सा – यसमा प्रसारिणी तेल अथवा माष तेलले मालिस गरेर बाफ आदिले सेक्ने गर्नू । भोजनमा दूध, घिउ, माषको दाल, मासुको झोल खान दिनू । त्रयोदशाङ्ग गुग्गुलु अथवा गुग्गुलु वटी १ ग्रामको मात्रामा दिनको ३ पटक रास्नासप्तक क्वाथको अनुपानका साथ खान दिनू ।

खञ्जता र पङ्गुत्वको चिकित्सा – यो रोग नयाँ भएमा पहिले जुलाफ दिनू । पछि आस्थापन र अनुवासन वस्ति दिनू । माष तेल अथवा प्रसारिणी तेलको मालिस गर्न लगाउनू । पथ्यादि गुग्गुलु, त्रयोदशाङ्ग गुग्गुलु अथवा महायोगराज गुग्गुलुको १ ग्राम मात्रामा दिनको ३ पटक सेवन गराउनू ।

अंसशोष वा बाहुशोषको चिकित्सा – यस रोगमा भोजनपछि महाकल्याण घृत दूधसँग खान दिनुपर्छ । बलाको जराको क्वाथमा सिंधे नुन मिसाएर

पिउनाले बाहुशोषमा आराम हुन्छ । त्यसका लागि बलाको जरा २४ ग्राम लिएर २०० मि.लि. पानीमा पकाउनू । ५० मि.लि. पानी बाँकी हुँदा छान्नू र सिंधे नुन राखेर पिउनू । माषको दालको झोलले पनि बाहुशोषमा लाभ दिन्छ । (परीक्षित)

अवबाहुकको चिकित्सा – बलाको जरा अथवा पारिभद्र (फलेदो) को जरालाई पिनेर रस निकाल्नू अथवा पानी राखी काढा पकाउनू । उक्त रस वा काढाको नित्य रस हाल्नू अथवा मुखबाट सेवन गर्नू । एक महिनामा हात बलियो हुन्छ । त्यस्तै काउसोको बियाँको रस पिउनाले अथवा मांसरसको नस लिनाले यस रोगलाई आराम दिन्छ । माष तेलको मालिसबाट लाभ हुन्छ ।

माष तेल – माषको गेडा, आलस, जौ, सैरेयक, कण्टकारी, गोखुर, अरलुको जरा, जटामसी, काउसोको बियाँ, सुगन्धवाल, कपास, सनपाटको बियाँ, गहत र बयर यी प्रत्येक २४ ग्राम लिएर कुठी छानी चूर्ण बनाउनू र १२ लिटर पानीमा भिजाई काढा बनाउनू । ३ लिटर पानी बाँकी हुँदा उतारेर छान्नू । फेरि सुठो, पिप्ला, सूप, अडेरको जरा, पुनर्नवा, प्रसारिणी, रास्ना, बला, गुर्जो र कुटकी यी प्रत्येक १८ ग्राम लिएर चूर्ण बनाएपछि सिलौटोमा पानीसँग पिनेर लेदो तयार पार्नू । अब पहिले तयार भएको ३ लिटर काढा, ३ लिटर खसीको मासुको झोल, ७५० मि.लि. कालो तिलको तेल र उक्त लेदोलाई कलईदार कराहीमा राखी मन्द आँचमा पकाउनू । तेलमात्र बाँकी हुँदा उतारेर छान्नू । यो तेल लगाउने गर्नाले अवबाहुक रोग शान्त भएर जान्छ ।

साँझको भोजनपछि दशमूल, बला र माषको दालको काढामा तिलको तेल र घिउ मिसाएर नस लिनाले अवबाहुक रोगमा आराम मिल्छ ।

माष, बला, सिँधे नुन, हिँग, रास्ना, बोझो, शतावरी, दशमूल र सुठो समभाग लिएर जम्मा २४० ग्राम लिनू र चूर्ण बनाएपछि सिलौटोमा पानीसँग घोटी लेदो पार्नू । उक्त लेदोका साथ १ लिटर कालो तिलको तेल ४ लिटर गाईको दूध कराहीमा राखी मन्द आगोको आँचमा पकाउनू । तेलमात्र बाँकी रहँदा उतारेर छान्नू । यस तेलको नस्य दिनाले अवबाहुक रोगलाई तत्काल आराम दिन्छ । (परीक्षित)

बलाको जरा र काउसोको बियाँ समभाग लिएर कुटीछानी चूर्ण बनाउनू । यो चूर्ण ३-६ ग्राम मात्रामा नीमको रसमा मिसाएर पिए पनि रोगको नाश हुन्छ ।

विश्वाची रोगको चिकित्सा – यस रोगको चिकित्सा अवबाहुक रोग जस्तै हुन्छ । यसमा माष तेलको मालिस, दशमूल-बला-माषको काढा तेल-घिउ मिसाई नस्य लिनू लाभदायक हुन्छ ।

पाददाहको चिकित्सा – मसुरोको दाल र अलिकति कपूर पानीसँग पिनेर पैतालाहरूमा लेप गर्नाले पाददाह अर्थात् खुट्टा पोल्ने आराम हुन्छ । (परीक्षित)

दुवै गोडाहरूमा मख्खनको मालिस गरेर आगोमा सेक्नाले पुरानो भन्दा पुरानो खुट्टा पोल्ने रोग पनि हराएर जान्छ ।

उमालेर सेलाएको पानीमा मसुरोको दाल पिनेर खुट्टामा लेप गर्नाले जलन नाश हुन्छ ।

पादहर्षको चिकित्सा – यस रोगमा वातकफनाशक चिकित्सा गर्नुपर्छ । इँटको टुक्रालाई आगोमा तताएर अमिलो महीमा डुबाएर निकाल्ने र त्यसको बाफले गोडा सेक्ने गर्नू । बृहत् सैन्धवादि तेल गोडामा मालिस गर्नू । शुद्ध हिंग ५०० र पुष्करमूलको चूर्ण ३ ग्रामलाई २ मात्रा बनाई दशमूलको काढा ५० मि.लि.सँग बिहान-बेलुका खान दिनू ।

हनुग्रहको चिकित्सा – पहिले महामाष तेलले दुखेको भागमा हल्का मालिस गर्नू र बाफले सेक्नू । अब बूढी औँला र चोर औँलाले च्यापुको दुवैतिर समाई बिस्तारै पहिले तल अनि पछिल्तिर अँचेट्नू र ठीक ठाउँमा मिलाई दिनू । नारायण तेल २ चम्चा (१० मि.ग्रा.) मनतातो बनाई मुखमा केहीबेर लिनू र थुकिदिनू । त्यसपछि तातो पानीले कुल्ला गर्नू ।

अथवा – सानो पिप्ला र अदुवा दुवैलाई चपाएर बारम्बार थुक्ने गर्नू । यसबाट हनुग्रह रोग नाश हुन्छ । (परीक्षित)

६ ग्राम लशुन लिएर २४ मि.लि. तिलको तेलमा भुट्नू र सिँधे नुन मिसाएर खान दिनू । हनुग्रहमा आराम हुन्छ । (परीक्षित)

मरिच र पिप्लाको काढाको सेवन पनि लाभदायक हुन्छ । दशमूलको काढा पनि लाभदायक हुन्छ ।

मन्यास्तम्भको चिकित्सा – यसमा तातो बालुवा वा इँट आदिले बारम्बार सेक्ने गर्नू । आँक अथवा अडेरको पातलाई तताएर दुखेको ठाउँमा बाँध्नू ।

कुखुराको अण्डामा घिउ र सिंधे नुन मिसाएर पिन्नू । अनि तताएर तातो अवस्थामै लेप गरी बाँध्नू । यसबाट गर्दनको जडता कम हुँदै जान्छ । (परीक्षित)

बलाको जराको काढामा सिंधे नुन मिसाएर पिएमा मन्यास्तम्भमा आराम हुन्छ । दशमूलको काढा पनि लाभदायक हुन्छ ।

जिह्वास्तम्भको चिकित्सा – यसमा वातव्याधिको सामान्य चिकित्सा गर्नू । महानारायण तेलमा सिँधे नुन मिसाई मुखमा राख्नू र कुल्ला गर्नू । कल्याण अवलेह २-२ ग्राम मात्रा दिनको ३ पटक घिउसँग चाट्न दिनू ।

चारै किसिमका आक्षेपकहरूको चिकित्सा – आक्षेपकहरूमा नस्य, शिरमा तेलको मालिस, पोषिलो खानपिन, स्वेदन, न्यानो र बढी हावा नलाग्ने कोठामा बस्नु लाभदायक हुन्छ । स्नेहनका लागि नारायण तेल अथवा महाबला

तेलको मालिस तथा मुखबाट सेवन गर्नू। अभ्यङ्गका लागि विष्णु तेल वा शतधौत घृतको पनि प्रयोग गर्न सकिन्छ। मालिसपछि नाडीस्वेद अथवा शाल्वण स्वेद गर्नुपर्छ। अन्तमा दशमूल, बला, रास्ना र अश्वगन्धा आदि वातशामक द्रव्यहरूको क्वाथमा नारायण आदि तेल, सिँधे नुन र मह मिसाएर वस्ति पनि दिएमा राम्रो लाभ हुन्छ।

महाबला तेल – कालो तिलको तेल १ लिटर, बलाको जराको काढा, दशमूलको काढा, गाईको दूध प्रत्येक ८-८ लिटर, जौ, बयर तथा गहत तीनैथरी मिसाएर बनाएको काढा ८ लिटर ठिक पार्नू। त्यस्तै काकोल्यादि गणका द्रव्यहरू,[1] सिंधे नुन, अगरु, सालधूप, सरल, देवदारु, मजिठो, रातो चन्दन, कुठ, सुकमेल, जटामसी, तगर, शैलेयक (छडीला), तेजपात, कालो सारिवा, सेतो सारिवा (दूधे लहरो), बोझो, शतावरी (कुरिलो), अश्वगन्धा, सूप र पुनर्नवा सबैलाई समभाग हुने गरी २ किलो लिनू र चूर्ण बनाई सिलौटोमा पानीका साथ पिनेर लेदो पार्नू। अनि तिलको तेल, काढाहरू, दूध तथा उक्त लेदो सबैलाई कलईदार कराहीमा राखी मन्द आगोको आँचमा पकाउनू। तेलमात्र बाँकी रहँदा उतारेर छान्नू र सफा सिसीको भाँडामा सुरक्षित राख्नू। यस तेलको प्रयोगले सबै किसिमका वातव्याधिहरू विशेष रूपमा आक्षेपक रोगहरू नष्ट हुन्छन्। यसले गानुगोला, खोकी र दममा पनि आराम दिन्छ। ६ महीनासम्म प्रयोग गर्नाले अन्त्रवृद्धि (हर्निया)को रोग पनि निको हुन्छ।

२ रत्ती शुद्ध कुचिला पानमा राखेर खाएमा आक्षेप र दण्डाक्षेप रोग नाश भएर जान्छ।

समीरगजकेशरी वटी – शुद्ध अफीम, शुद्ध कुचिला र मरिच समभाग लिएर बंगला पानको रसमा खूब खल गर्नू र १२५ मिलीग्राम गोली पार्नू। यो १ गोली बिहान-बेलुका सेवन गरी पानको बीडा चपाउनाले सबै किसिमका वातव्याधि खास गरी आक्षेपक र दण्डापतानक आदिमा रामबाणको जस्तै असर गर्छ।

अपतानकको चिकित्सा – यस रोगमा दशमूलको काढामा पिप्लाको चूर्ण मिसाएर सेवन गराउनू। यो काढा पच्न लागेपछि मासुको झोलसँग भोजन गराउनू। बला तेल वा नारायण तेलको मालिस गराउनू।

मरिचको चूर्ण १२ ग्राम कागतीको रसमा मिसाएर भोजनभन्दा पहिले खुवाउनू। यसबाट अपतानक नष्ट भएर जान्छ।

---

१. **काकोल्यादि गणका द्रव्यहरू** - काकोली, क्षीरकाकोली, जीवक, ऋषभक, मुद्गपर्णी, माषपर्णी, मेदा, महामेदा, छिन्नरुहा (गुर्जो), काकडासिंगी, तुगाक्षीरी (वंशलोचन), पद्मक, प्रपौण्डरीक, ऋद्धि, वृद्धि जीवन्ती, मधुक (जेठीमधु)।

यसमा पहिले जुलाफ दिएर शरीर शुद्ध बनाउनू । त्यसपछि घिउ पिउन दिनू । घिउ पिउन दिएपछि स्रोतहरू शुद्ध हुन्छन् । गुदद्वारबाट नारायण तेलको वस्ति दिनू ।

गाईको दूध २५० मि.लि.मा अडेरको तेल ५० मि.लि. मिसाएर खान दिनू । यसले पखाला चल्छ र रोग हराएर जान्छ ।

कसैको पेट कडा भएर पखाला चलेनभने अर्को पल्ट ५० मि.लि. अडेरको तेलका साथ तार्पीनको तेल १० थोपा मिसाएर खान दिनू । यति गर्दा अवश्य पखाला चल्छ ।

सानो पिप्लाको चूर्ण ९ ग्रामलाई परेवाको मासुको झोलमा मिसाएर खान दिने गरेमा अपतानक रोग हराएर जान्छ ।

हर्रो, बोझो, रास्ना, सिँधे नुन र अम्लवेत सबै समभाग लिएर चूर्ण बनाउनू र मिसाइदिनू । यो चूर्ण घिउसँग खान दिनू । अपतानक रोग नष्ट हुन्छ ।

अपतन्त्रक रोगको चिकित्सा – यस रोगमा वमन र निरुह वस्तिको प्रयोग गर्न मनाही छ, प्रधमन नस्य दिन जोर दिइन्छ । कडा नस्य फुकेर नाकमा पुऱ्याउँदा नाडीहरू खुलेर रोगीको होश आउँछ ।

मरिचादि नस्य – मरिच, सहिजनको बियाँ, वायुविडङ्ग, मरुवा[1] सबै समभागलिएर कुटी कपडाले छान्नू । यही मरिचादि नस्य हो । यो चूर्ण कागतको नली बनाई त्यसमा राख्नू र रोगीको नाकभित्र फुकेर पुऱ्याइदिनू । यसले टाउकाको कसर निस्केर रोगी होसमा आउँछ । (परीक्षित)

हर्रो, बोझो, रास्ना, सिंधे नुन, अम्लवेत, पद्मचाल सबै समभाग लिएर चूर्ण बनाउनू । यो चूर्ण ३-६ ग्राम लिएर घिउ र अदुवाको रसमा मिसाई चाट्न दिनू । यसबाट अपतन्त्रक रोगको नाश हुन्छ ।

शुद्ध कुचिला २५० मिलीग्राम, शुद्ध कालो धतुरोको बियाँ २५० मिलीग्राम पानमा राखेर खाएमा यो रोग नष्ट हुन्छ ।

धनुस्तम्भको चिकित्सा – प्रसारिणी तेलको मालिस वातव्याधिहरूमा अत्यन्त लाभकारी हुन्छ । धनुस्तम्भमा यसको मालिस गर्न लगाउनू ।

प्रसारिणी तेल – मूल, पात र हाँगासहित प्रसारिणीको पञ्चाङ्ग ५ किलो लिएर राम्ररी कुट्नू र एउटा डेक्चीमा राखी १२ लिटर पानीका साथ मन्द अग्निमा

---

१. मरुवा करेसाबारीमा धेरै हुन्छन् । यसका पातहरू लामा लामा औंला समान हुन्छन् । तिनमा धेरै सुगन्ध हुन्छ । तुलसीको जस्तै धेरै रौंहरू हुन्छन् । यो सेतो र कालो २ प्रकारको हुन्छ । औषधीको लागि सेतो काम लाग्छ । यसको अभावमा कसै कसैले तुलसीका साना पात नै प्रयोग गर्छन् ।

पकाउनू । पाक्दा पाक्दा एक चौथाइ (१/४) अर्थात् ३ लिटर जति बाँकी हुँदा उतारेर छान्नू । यो काढालाई कलईदार कराहीमा राखी तिलको तेल, दहीको पानी र काँजी ५-५ लिटर तथा गाईको दूध २० लिटर मिसाई चुल्होमा राख्नू र मन्द अग्निले पकाउनू । चितु, पिप्लाको जरा, जेठीमधु, सिँधे नुन, बोझो, सूप, देवदारु, रास्ना, ठूलो पिप्ला, प्रसारिणीको जरा, जटामसी, रातो चन्दन, अडेरको जरा, बलाको जरा, सुठो सबैको ४०-४० ग्राम अर्थात् कुल ६०० ग्राम लिएर कुटी छानी पानी मिसाएर बनाएको लेदो पनि पाक्दै गरेको तेलमा मिसाइदिनू । पाक्दा पाक्दा जब तेल मात्र रहन्छ तब उतारेर छानी बोतलमा भर्नू । यो तेल पिउने, नस्य लिने, शिरोवस्ति गर्ने, मालिस गर्ने काममा उपयोगी छ । जुन मानिसका अङ्गहरू वायुको प्रकोपबाट संकुचित भएको छ त्यसलाई यो तेलले फैलाइदिन्छ । अङ्गहरू खुम्चिएको खण्डमा तिनलाई फैलाइदिने हुनाले नै यसलाई प्रसारिणी तेल भनिएको हो । (परीक्षित)

पानमा २ रत्ती अफिम राखेर खानाले धनुस्तम्भमा अवश्य लाभ हुन्छ । दशमूलको काढा खान दिने र तोरीको तेलले मालिस गर्ने गर्दा पनि आराम हुन्छ ।

पक्षाघातको चिकित्सा

अर्धाङ्गवात अर्थात् पक्षाघातको रोगीलाई चार वा सात दिनसम्म कुनै बलवान् औषधी दिनुहुँदैन । आरम्भमा पखाला चल्ने औषधी दिनाले रोग बढेर जाने सम्भावना रहन्छ । यस्तो अवस्थामा मललाई नरम पार्ने औषधी मात्र दिनु राम्रो हुन्छ । जब १४ दिन बित्छ र मल नरम भैसक्छ अनि मात्र जुलाफ दिनुपर्छ । त्यस वेलामा वमन पनि लाभदायक हुन्छ । मलनाश भएपछि शरीरमा गरम तथा शक्तिवर्धक तेलको मालिस गनुपर्छ ।

यदि पक्षाघातसँगै ज्वरो छ भने पहिले ज्वरोलाई शान्त पार्नुपर्छ । यस्तो समयमा गुलकन्दका साथमा सिकञ्जबीन दिनुपर्छ । यस रोगमा मदिरापान गर्नुहुँदैन ।

जबसम्म भोक लाग्दैन तबसम्म भोजन नदिनू । जबसम्म कडा प्यास लाग्दैन पानी पनि नदिनू । यस रोगमा मह मिसाएको पानी पिउनु राम्रो हुन्छ ।

यदि चोटका कारण यो रोग लागेको छ भने चोट लागेको ठाउँमा औषधी लगाउनू ।

रोगको प्रथम अवस्थामा नै चिकित्सा सम्भव छ पछि कठिन हुन्छ । यदि मांसपेशीहरूमा तीव्र दुखाई छ त्यसमा पनि शिरमा बढी छ भने पीडा शमन गर्ने इन्जेक्शनको प्रयोग गर्नु राम्रो हुन्छ ।

रोगीको शरीरमा बला तेल, महामाष तेल, महानारायण तेलमध्ये कुनै १ ले मालिस गर्नुपर्छ ।

भोजनमा लशुन कुनै न कुनै रूपमा प्रयोग गर्नु राम्रो हुन्छ । यौटै गाँठ भएको लशुन बढी गुणकारी हुन्छ ।

शुद्ध कुचिला र मरिच दुवै समभाग लिएर मसिनो चूर्ण बनाउनू र खलमा पानीसँग खूब घोट्नू । अब ६० मिलीग्रामको गोली पार्नू र छायामा सुकाउनू । बिहान-बेलुका १-१ गोली बंगला पानमा राखेर केही दिनसम्म सेवन गरेमा आराम हुन्छ, यो पक्षाघातका लागि परीक्षित छ ।

शुद्ध कुचिला २४ ग्राम कराहीमा राखी आगोमा पाक्न दिनू । जब धुवाँ आउन छोड्छ अनि डढीसकेको कुचिलालाई तौलनू र त्यसै बराबर मरिचको चूर्ण त्यसमा मिसाइदिनू । अब त्यसमा पानी राखी खलमा घोट्नू र माष बराबरको (१२५ मि.ग्रा.) गोली पार्नू अनि छायामा सुकाएर राख्नू । उक्त गोली १-१ को दरले नित्य बिहान-बेलुका सेवन गर्नाले पक्षाघात, अर्दित आदि वायुसम्बन्धी रोगहरू ठीक हुन्छन् । (परीक्षित)

सनपाटको बियाँ १८ ग्राम र मह १२ ग्राम मिसाएर नित्य २१ दिनसम्म खानाले पक्षाघात नष्ट भएर जान्छ ।

१ रत्ती स्वच्छन्दभैरव रस रास्नासप्तक क्वाथको अनुपानका साथ सेवन गरेमा पक्षाघात रोग ठीक भएर जान्छ ।

मरिच ५० ग्राम लिएर चूर्ण बनाउनू र २०० मि.लि. तिलको तेलमा केहीबेर पकाउनू । यस तेलको तातो तातो मालिस गरेमा पक्षाघातका लागि रामबाण औषधी हुन्छ । (परीक्षित)

कुचिलाको पात, सुठो, जरायोको सिंग समभाग लिएर पानीमा घोटी लेप बनाई तताएर शरीरमा लगाउनू । यस लेपबाट पक्षाघात आदि रोगहरू नष्ट हुन्छन् ।

अकरकरा, मरिच, सानो पिप्ला, प्रत्येक ३-३ ग्राम, पिप्लाको जरा ६ ग्राम, सुठो १२ ग्राम, शुद्ध वत्सनाभ विष यी सबैलाई कुटी छानी चूर्ण बनाउनू । अब गुड र घिउ मिसाएर मूँगबराबरको (६० मि.ग्रा.को) गोली पार्नू । यी गोलीहरू १-२ ओटा पक्षाघात र अर्दित रोगमा जुलाफ दिएपछि सेवन गर्न लगाउनू । यसबाट कुपित दोषहरू सम अवस्थामा आउँछन् ।

जौकुट गरिएको सुठो ४ ग्राम, लशुन ४ ग्राम, बकाइनोको पात २५० ग्राम, सिमालीको पात २५० ग्राम सबलाई २ लिटर पानीमा पकाउनू । जब आधा पानी रहन्छ अनि उतार्नू र रोगीलाई सिरकभित्र राखेर यसको बाफ दिनू । यो बाफद्वारा सेक्ने काम पक्षाघात र अर्दितको रोगीका लागि लाभदायक हुन्छ । बाफ लिएपछि बाहिरी चिसो हावाबाट बच्नु आवश्यक छ ।

बोझो ८० ग्राम, सुठो २८ ग्राम, कालो जिरा २८ ग्राम यी सबैलाई पिनेर ४०० ग्राम महमा मिसाएर राख्नू। यो औषधीको ४ ग्रामको मात्रा नित्य बिहान महपानीसँग सेवन गर्नाले पक्षाघात र अर्दित रोग शान्त भएर जान्छन्।

सेतो करवीरको जराको बोक्रा, सेतो गुञ्जा (रत्ती) को गेडा र कालो धतुरोको पात प्रत्येक ४० ग्राम लिएर कुटी छानी घोटेर गोलीहरू पार्नू। ती गोलीहरू तातो तेलमा फुराउनू। जब गोलीहरू डढ्छन् अनि तिनलाई त्यही तेलमा खूब घोट्नू र छोडीदिनू। जब औषधी जति तेलभित्र बसेर जान्छ तब त्यस तेलको मालिस रोगीको जोर्नीहरूमा गर्नू। अर्दित र पक्षाघातमा आराम हुन्छ।

बाकुची ५०० ग्राम, रातो ज्वानु ५० ग्राम दुवैलाई पानीसँग पिनेर गोली पार्नू। अनि धतुरोको पात, फल आदिको रस २.५ लिटर र तिलको तेलमा उक्त गोलीहरू राखेर आगोमा पकाउनू। जब गोलीहरू डढ्छन् अनि तेललाई छान्नू। यो तेल पक्षाघात र अर्दित रोगमा मालिसका लागि अति नै लाभदायक छ।

सुठो र लाहोरी नुन (सिंधे नुन) लाई समभाग लिएर पिनेर छान्नू र सिसीमा राख्नू। यसको नित्य नस लिनाले पक्षाघात र अर्दितमा अवश्य लाभ हुन्छ।

अर्दित रोगको चिकित्सा – यस रोगमा नस दिनु र शिरमा तेलको मालिस गर्नु लाभदायक हुन्छ।

१२ ग्राम लशुन सिलौटोमा पानीसँग पिनेर २ तोला (२४ मि.लि.) तिलको तेलमा पकाउनू र खाने गर्नू। अर्दित रोग ठीक हुन्छ। (परीक्षित)

एउटा लशुनलाई मसिनो गरी पिनेर घिउमा मिसाएर खाने गरेमा सबै किसिमको वातरोग र विशेष गरी अर्दित रोगमा आराम हुन्छ। (परीक्षित)

४८ ग्राम सुकेको लशुन मसिनो गरी पिन्नू। त्यसमा सिंधे नुन, सौँचर नुन, त्रिकटु (सुठो, मरिच, पिप्ला) र हिंग प्रत्येक ४-४ ग्राम कुटी छानी मिसाएर सुरक्षित गरी राख्नू। यो चूर्ण १ ग्राम मात्रामा, बिहान-बेलुका एक महिनासम्म खाएमा अर्दित तथा अरू वातरोगहरूको नाश गर्छ। (परीक्षित)

रायोको गेडा ६ ग्राम र अकरकरा ६ ग्राम, मह ६ ग्राम सबलाई मिसाएर जिब्रोमा मल्नाले अर्दित रोगलाई नष्ट पार्छ। (परीक्षित)

त्रिफला, नीमको रुखको बोक्रा, असुरो, पर्वरको पात सबै २४-२४ ग्राम लिनू र ४०० मि.लि. पानीमा पकाउनू र ५० मि.लि. पानी बाँकी भएपछि छान्नू। त्यसमा शुद्ध गुग्गुलु १ ग्राम मिसाई बिहानै ख्वाउनू। यसबाट अर्दित रोगमा आराम हुन्छ। (परीक्षित)

कालो धतुरोको पात २८ ग्राम, सेतो करवीरको जरा २८ ग्राम, सेतो गुञ्जा

२८ ग्राम सबलाई सिलौटोमा पिनेर लेदो तयार पार्नू। फेरि त्यसलाई २०० मि.लि. तिलको तेलका साथ कराहीमा राखी चुलोमा मन्द अग्निले पकाउनू। जब औषधी डढ्छ अनि उतार्नू र छानेर राख्नू। यस तेलको मालिस गर्नाले अर्दित, पक्षाघात आदि रोग निश्चय नै शान्त हुन्छन्। (परीक्षित)

गृध्रसीको चिकित्सा – यस रोगमा पहिले पाचन औषधी दिएर वमन र विरेचन गराउनू। रोग आमरहित भैसकेको लागेमा र अग्नि दीप्त भएको अवस्थामा स्नेहको वस्ति दिनू। त्यसपछि गृध्रसीको उपचारका लागि उपयोगी औषधीहरूको सेवन गराउनू।

१ महीनासम्म नित्य बिहान अडेरको तेल १२-२४ मि.लि. मात्रामा गोमूत्र १०० मि.लि. मा मिसाएर सेवन गर्नाले गृध्रसी आदि रोगहरू नष्ट भएर जान्छन्। (परीक्षित)

त्रिफलाको काढामा अडेरको तेल १२-२४ मि.लि. मिसाएर पिउनाले गृध्रसी रोगमा आराम हुन्छ।

अडेरको बियाँको बोक्रा तासेर फाली गुदी १२ ग्राम जति लिनू र पिनेर दूधमा मिसाई पिउन दिनू। यो गृध्रसी र कम्मरदर्दको लागि अचूक औषधी हुन्छ।

कम्मरदेखि पैतालासम्म बेकाम भएको छ भने ५०० ग्राम काफलको रुखको बोक्रा लिएर मसिनो गरी पिन्नू। एउटा कराहीमा १ लिटर तोरीको तेल मन्द आगोमा पकाउनू र पाक्दै गर्दा उक्त काफलको चूर्ण पनि अलि अलि गर्दै तेलमा राख्दै चलाउँदै गर्नू। यही हिसाबले ४ घण्टामा सारा काफलको चूर्ण हाल्नू। त्यसपछि तेललाई उतारेर कपडछान गर्नू र बाँकी माथिको कसरलाई बेग्लै राख्नू। यो तेल लगाउने वेलामा एउटा मक्कलमा आगो बाली नजिकमा राख्नू। रोगीलाई मालिस गर्ने मानिसले आफ्नो हात मक्कलमा सेक्दै २ घण्टासम्म खूब मालिस गर्नू। २ घण्टापछि तेलबाट छानिएको कसरलाई तावामा तताएर कपडामा राखी पोटली (पोको) पार्नू र त्यसले दुखेको ठाउँमा सेक्नू। त्यसपछि उक्त कसरलाई दुखेको ठाउँमा लेप गरी कपडाले बाँध्नू। यही हिसाबले तेल र कसरद्वारा नित्य उपचार गरेमा रोग शान्त हुन्छ। यदि तेल पाक्दा ६ ग्राम अफिमको चूर्ण पनि मिसाइदियो भने झन् राम्रो हुन्छ। (खूब परीक्षित हो)

असुरोको पात १२ ग्राम, जमालगोटा (जयपाल)को जरा १२ ग्राम, राजवृक्षको गुदी १२ ग्राम, सबैलाई ५०० मि.लि. पानीमा पकाउनू। १२५ मि.लि. पानी बाँकी हुँदा उतारेर छान्नू। अब त्यसमा १२ ग्राम अडेरको तेल (१२ मि.लि.) मिसाएर सेवन गराउनू। यसबाट गृध्रसी रोग शान्त भएर खूब हिँड्ने सामर्थ्य आउँछ। (परीक्षित)

अडेरको जरा, बेलको जरा, बिंही, कण्टकारी सबै २५-२५ ग्राम लिएर ४०० मि.लि. पानीमा पकाउनू। जब ५० मि.लि. पानी बाँकी रहन्छ तब उतारेर छान्नू र

त्यसमा कालो नुन २ ग्राम मिसाई पिउन दिनू । यसको नित्य सेवन गर्नाले पुरानो गृध्रसी रोग पनि आराम भएर जान्छ ।

१०० मि.लि. गोमूत्रमा २५ मि.लि. अडेरको तेल मिलाइराख्नू । पहिले सानो पिप्लाको चूर्ण फाँकी उक्त गोमूत्रको मिश्रण पिउन दिनू । यसको नित्य सेवनले धेरै पुरानो र वात-कफबाट उत्पन्न गृध्रसी पनि ठीक भएर जान्छ । (परीक्षित)

सिमालीको पात २५ ग्राम लिएर ३०० मि.लि. पानीमा मन्द आँचमा खूब पकाउनू । जब एक चौथाइ (७५ मि.लि.) पानी बाँकी रहन्छ अनि छानेर पिउन दिनू । यो काढा १५ दिनसम्म नित्य सेवन गर्नाले असाध्य गृध्रसीको रोग पनि आराम भएर जान्छ ।

लशुन १२ ग्राम, शुद्ध गोकुल धूप (गुग्गुलु) ६० ग्राम दुवैलाई गाईको घिउ राखी खलमा खूब घोट्नू र जङ्गली बयर समान (५०० मिलीग्राम)को गोली पार्नू । नित्य एउटा गोलीको सेवनबाट असाध्य गृध्रसीको रोग पनि ठीक भएर जान्छ । (परीक्षित)

तिलको तेल १ लिटर, गोखुरुको काढा १ लिटर, गाईको दूध ४ लिटर, सुठोको चूर्ण २५० ग्राम र पुरानो गुड १ किलो सबलाई कराहीमा राखी मन्द आँचमा पकाउनू । तेलमात्र बाँकी रहँदा उतारेर छान्नू । यो तेल मुखबाट सेवन, नस्य तथा वस्तिको रूपमा प्रयोग गर्नाले गृध्रसी, कम्पवायु, कम्मरको दुखाइ आदि नष्ट हुन्छन् ।

डाक्टरी मत अनुसार अल्कोहल २ औँस, स्पिरिट अफ टर्पेन्टाइन २ औँस, क्लोरोफार्म १ औँस र कैम्फोर १.५ औँस सबलाई मिसाएर दुखेको ठाउँमा दिनको २-३ पटक लगाउनुपर्छ । यसबाट अवश्य लाभ हुन्छ ।

प्रमेह रोगको उपद्रवको रूपमा गृध्रसी रोग हुनसक्छ । त्यस अवस्थामा प्रमेहको पनि चिकित्सा गर्नुपर्छ ।

क्रोष्टुकशीर्षको चिकित्सा - गुर्जो, हर्रो, बर्रो, अमला हरेक ५०-५० ग्राम लिएर ८०० मि.लि. पानीमा काढा पकाउनू । १०० मि.लि. पानी बाँकी रहँदा उतारेर छान्नू । ६ ग्राम शुद्ध गुग्गुलु खाएपछि उक्त काढा पिउन दिनू । क्रोष्टुकशीर्ष रोग नाश भएर जान्छ । (परीक्षित)

३ ग्राम शुद्ध गुग्गुलु खाएर पछिबाट तित्राको मांसरस पिउनाले यो रोग ठीक भएर जान्छ ।

विधाराको चूर्ण दूधसँग सेवन गर्नाले यो रोग ठीक भएर जान्छ ।

ऊर्ध्ववातको चिकित्सा - सुठो १५० ग्राम, विधारा १०० ग्राम, हर्रो ३० ग्राम, घिउमा फुराएको शुद्ध हिंग ४० ग्राम, सिंधे नुन १० ग्राम, चितुको बोक्रा १० ग्राम यी सबैलाई कुटी छानी चूर्ण बनाइराख्नू । यस चूर्णको सेवन गर्दा ऊर्ध्ववात रोग नष्ट हुन्छ ।

निशोथको जरा दूधमा पिनेर त्यसमा असुरोको रस मिसाई खान दिएमा यो रोग शान्त भएर जान्छ ।

वाताष्ठीलाको चिकित्सा – यसको चिकित्सा गुल्म रोगको जस्तै गर्नुपर्छ । यसमा सम्बन्धित भागमा लेप र स्वेदन गर्नुपर्छ । साथमा अनुलोमन गर्ने, दिसा, पिसाब खलास गर्ने औषधीहरू दिनुपर्छ ।

शुद्ध हिँग, कुठ, धनियाँ, हर्रो, निशोथ, कालो नुन, सिंधे नुन, यवक्षार र सुठो सबै समभाग लिएर चूर्ण तयार गर्नू र घिउमा भुटेर राख्नू । यो औषधी १-३ ग्रामसम्मको मात्रामा जौको काढासँग खान दिनू । यसबाट गुल्म, वाताष्ठीला, प्रत्यष्ठीला रोगहरू नाश भएर जान्छन् ।

सज्जीक्षार (खाने सोडा) ३ ग्राम र पुरानो गुड ३ ग्राम मिसाएर बिहान-बेलुका सेवन गर्ने गरेमा वाताष्ठीला र गुल्म रोग नष्ट हुन्छन् ।

हिंग्वादि चूर्ण – शुद्ध हिँग, पिप्लाको जरा, धनियाँ, सेतो जिरा, बोझो, चाबो, चितु, पाठा, कचूर, विषांविल, सिंधे नुन, बिरे नुन, साँचर नुन, सुठो, मरिच, पिप्ला, यवक्षार, सज्जीखार, अनारदाना, हर्रो, पुष्करमूल, अम्लवेत र हाउबेर, अजमोदा, वनतुलसी यी सबै समभाग लिएर चूर्ण तयार गर्नू । यस चूर्णलाई १ दिन अदुवाको रस अर्को दिन बिमिरोको रसमा खल गरी सुकाएर राख्नू । यो चूर्ण २-४ ग्राम मात्रामा बिहान-बेलुका मनतातो पानीसँग खान दिनू । यस चूर्णको सेवन गर्नाले वाताष्ठीला र प्रत्यष्ठीला रोगहरू शान्त हुन्छन् । दशमूलको काढामा शिलाजीत र मिश्री मिसाई खाएमा वाताष्ठीला, वातकुण्डलिका आदि रोगहरू शान्त हुन्छन् ।

प्रत्यष्ठीलाको चिकित्सा – वाताष्ठीला र प्रत्यष्ठीलाको प्रायः यौटै चिकित्सा गरिन्छ । माथि उल्लिखत हिंग्वादि चूर्ण पनि यसमा लाभदायक हुन्छ ।

आध्मान चिकित्सा - यस रोगमा पहिले लङ्घन वा उपवास गराउनू । त्यसपछि दीपन-पाचन गर्ने औषधीको काढाले वस्ति दिनू । सम्भव भए वमन र विरेचन पनि गरउनू । त्यस बाहेक नारायण चूर्ण र नाराच रस आदि औषधीहरूको सेवन गराउनू ।

नारायण चूर्ण – सानो पिप्ला १० ग्राम, निशोथ ४० ग्राम र मिश्री ४० ग्राम सबैलाई कुटी छानी चूर्ण बनाउनू । यो चूर्ण ३-६ ग्राम मात्रा भोजनभन्दा पहिले महमा मिसाएर खान दिनू । यसले आध्मान तत्काल नाश हुन्छ । (परीक्षित)

देवदारु, कुठ, बोझो, सूप, सिंधे नुन सबै समभाग लिएर मही वा कागतीको रसमा पिनेर तातो पारी पेटमा लेप लगाईदिनू । पेट दुखेको र फुलेकोमा आराम हुन्छ । यसलाई **दारुषट्क लेप** भनिन्छ ।

नाराच रस – शुद्ध पारद १० ग्राम, शुद्ध गन्धक २० ग्राम, मरिच १० ग्राम, शुद्ध टंकण (स्वाग) १० ग्राम, सानो पिप्ला २० ग्राम, सुठो २० ग्राम, शुद्ध जयपाल ९० ग्राम सबैलाई कुटी छानी चूर्ण बनाउनू र मिसाएर राख्नू । यो औषधी २५० मिलीग्राम मात्रामा तातो पानी, तुलसीपत्रको रस अथवा मह र अदुवाको रससँग खान दिनू । आध्मान र शूलमा आराम हुन्छ । यो औषधी बनाउँदा पहिले पारद र गन्धकलाई खलमा राखी घोट्नू र निश्चन्द्र (चमकरहित) कज्जली बनाउनू, त्यसपछि बाँकी औषधीहरूको चूर्ण मिसाई ३-४ घण्टासम्म घोट्नू । बलाबल अनुसार मात्रा घटबढ गरी दिनुपर्छ । कसैलाई १२५ ग्रामले नै मात्रा पुग्छ । यसको १ मात्रा तातो पानीसँग दिँदा पखाला चल्छ । पखाला बढी भएर रोक्नुपरेमा चिसो पानी पिउन दिनुपर्छ । (परीक्षित)

हिंग्वादि चूर्ण – शुद्ध हिंग, अम्लवेत, सुठो, मरिच, सानो पिप्ला, बोझो, ठूलो पिप्ला, पिप्लाको जरा, चावो, चितु, कचूर, अमला, ज्वानु, सेतो आँक, पाठा, कालो जिरा, सेतो जिरा, अश्वगन्धा, यवक्षार, वज्रक्षार, हाउबेर, सोडा सबै समभाग लिएर कुटीछानी चूर्ण बनाउनू । यो चूर्ण २-४ ग्राम मात्रामा तातो पानीको अनुपानका साथ सेवन गराउनू । यसबाट पेट फुल्ने, दिसा रोकिने, शूल हुने, हिक्का रोग यी सबै नष्ट हुन्छन् । (परीक्षित)

प्रत्याध्मानको चिकित्सा – यस रोगमा पहिले वमन गराई लङ्घन गराउनू । त्यसपछि दीपन-पाचन औषधीहरूको सेवन गराउनू । भोजनभन्दा पहिले हिंग्वष्टक चूर्ण घिउमा फुराएर पहिलो गाससँग खान दिनू । भोजनपछि अविपत्तिकर चूर्ण ३ ग्राम मनतातो पानीसँग खान दिनू ।

जृम्भाको चिकित्सा – धेरै समयसम्म घरीघरी हाइ आइरहने भएमा गुलियो भोजन गर्ने र पान चबाउने गर्नू । सुठो, सानो पिप्ला, मरिच, ज्वानु, सिंधे नुन सबै समभाग लिएर चूर्ण बनाउनू र २ ग्राम मात्रामा मनतातो पानीसँग खान दिनू । यसबाट हाइहाइ आउन तत्काल रोकिन्छ ।

तूनी र प्रतितूनी रोगको चिकित्सा – तूनी रोगमा निशोथको चूर्ण ४ ग्राम अथवा अडेरको तेल ३० मि.लि. खान दिएर विरेचन गराउनू । प्रतितूनी रोगमा नारायण तेलको वस्ति दिनू ।

शुद्ध हिंग २५० मिलीग्राम र यवक्षार ५०० मिलीग्राम लिएर मनतातो घिउ ५ ग्रामसँग खान दिनू ।

हिंग्वष्टक घिउमा फुराएर भोजनभन्दा पहिले खानामा मिसाएर खान दिनू ।

बहुमूत्रताको चिकित्सा – त्रिफला चूर्ण २ ग्राम र लौह भस्म २५० मि.ग्रा. लिएर महमा मिसाएर चाट्न दिनू । बारम्बार पिसाब भइरहन छोड्छ ।

कालो तिल र सख्खर समभाग मिसाएर खानाले पिसाबको अधिकता (बारम्बार पिसाब लाग्ने) लाई आराम गर्छ ।

सुकेको बबूलको फललाई कुटीछानी घिउमा भुट्नू र चिनी समभाग मिसाएर राख्नू । यो चूर्ण नित्य ३-६ ग्राम मात्रामा सेवन गर्नाले बढी पिसाब हुन छोड्छ ।

मूत्रनिग्रहको चिकित्सा - पिसाब रोकिएको अवस्थामा यवक्षार चूर्ण ६ ग्राम र चिनी ६ ग्राम मिसाएर खानाले खुलेर आउँछ ।

रिट्ठा र काँक्रोको बियाँ दुवै सिलौटोमा पिनेर कटीमा लेप गर्नाले पिसाब रोकिएको खुल्छ । अमलालाई पिनेर लेप गरे पनि पिसाबको अवरोध हराउँछ ।

लिङ्ग वा योनिको मुखमा कपूर घोटी बनाएको गोली राख्नाले तुरुन्त पिसाब खुलेर आउँछ ।

रायोको गेडा ६ ग्राम, कलमी शोरा १ ग्राम र सख्खर २ ग्राम मिसाएर दिनको दुईपटक खानाले पिसाब खुल्दछ ।

त्रिकशूलको चिकित्सा - पिठ्यूँ र कम्मर जोडिने ठाउँलाई त्रिक र त्यहाँ हुने तीव्र दुखाइलाई त्रिकशूल भनिन्छ ।

त्रिकशूल भएमा - २५० ग्राम बालुवा ततार्ई कपडामा पोको बेर्नू र त्यसले दुखेको ठाउँमा सेक्नू । अथवा मकलमा गुईठा बाली धुवाँ गएपछि रोगीको खाटमुनि राख्नू । कम्मरमा तातो बाफ लाग्न दिनू ।

त्रयोदशाङ्ग गुग्गुलु २ गोली बिहान-बेलुका तातो दूध वा तातो पानीसँग खान दिनू ।

धनियाँ ४ ग्राम र मिश्री १२ ग्राम मिसाएर बिहानै फाँक्ने गर्नाले गर्मीबाट उत्पन्न कम्मरको दुखाइ शान्त हुन्छ ।

मालकागुनु, टाप्रेको बियाँ, बाकुची र चम्सूरको बियाँ लिनू र चूर्ण बनाउनू । यसबाट ३ ग्राम बिहानै मनतातो पानीसँग सेवन गर्नाले सर्दीबाट उत्पन्न कम्मर तथा जोर्नीहरूको पीडा शान्त हुन्छ । यस औषधीले छालाको सेतो दाग पनि हटाइदिन्छ ।

सख्खर र काँचो नरिवल मिसाएर खान दिएमा कम्मरको पीडा कम हुन्छ ।

अडेरको बियाँ १२ ग्राम, लाहोरी नुन १२ ग्राम, मैदा १२ ग्राम, हिंग ६ ग्राम, गहुँको पिठो १०० ग्राम सबैलाई पानी राखी मुछेर रोटीजस्तो बनाउनू र आगोमा राखी पकाउनू । जब रोटी पाक्छ अनि त्यसलाई कम्मरमा दुखेको ठाउँमा राखेर बाँध्नू । यसबाट कम्मरको पीडा आराम भएर जानेछ । (परीक्षित)

इस्पन्द १६० ग्राम र सुठो ४० ग्राम लिएर थिचेर । दुवैलाई राती १ सेर (लिटर) पानीमा भिजाइदिनू । बिहान त्यसमा ५०० मि.लि. तिलको तेल मिसाउनू र

मन्द आगोको आँचमा पकाउनू । पानी र औषधी डढेर तेलमात्र बाँकी हुँदा उतारेर छान्नू । यो तेलले मालिस गर्दा कम्मर, पिडौँला र खुट्टासम्मको दुखाई शान्त हुन्छ ।

सर्वाङ्गवातको चिकित्सा – २५० ग्राम गहुँको चोकरमा २४ ग्राम सिंधे नुन पिनेर मिसाउनू र पानीसँग मुछी आगोमा पकाउनू । त्यो पाकेपछि कपडाले बेरेर फर्फराइरहने, दुख्ने अङ्गहरूमा सेक्ने गर्नू, अवश्य आराम हुन्छ ।

ज्वानु, मरिच र अफिम ३-३ ग्राम लिएर १०० मि.लि. तिलको तेलमा खल गर्नू । राम्ररी खल गरेपछि त्यस तेलले सारा शरीरमा मालिस गर्नू । यसबाट सर्वाङ्गवात रोग नष्ट हुनेछ ।

४८ ग्राम लशुनलाई मसिनो गरी पिनेर त्यसमा सिँधे नुन, जिरा, त्रिकटु, सौँचर नुन, हिँग हरेक ४-४ ग्राम लिएर बनाएको चूर्ण मिसाई सुरक्षित गरी राख्नू । यसबाट १ ग्राम चूर्ण बिहान अडेरको जराको काढासँग (५० मि.लि.) खान दिनू । १ महिनासम्म सेवन गरेमा सर्वाङ्गवात, कम्मर र पिठ्यूँको दुखाई आदि नष्ट हुन्छन् । यो परीक्षित **लशुनादि चूर्ण** हो ।

वातव्याधिमा उपयोगी प्रमुख योगहरू

महारास्नादि क्वाथ – रास्ना २४ ग्राम, धमासा, बलाको जरा, अडेरको जरा, देवदारु, कचूर, बोझो, असुरोको जरो, गोखुर, अश्वगन्धा, अतीस, हर्रोको बोक्रा, चाबो, नागरमोथा, पुनर्नवा, कुरिलोको जरा, सानो पिप्ला, पियाबाँसा (सैरेयक), पुरानो धनियाँ, कण्टकारी र बिंही यी सबै १२-१२ ग्राम लिएर यवकुट गरेर राख्नू । यसबाट १२ ग्राम चूर्ण लिएर २०० मिलीलिटर पानी राखी पकाउनू र ५० मि.लि. जति पानी बाँकी भएपछि छानेर राख्नू । त्यसमा सुठोको चूर्ण २५० मिलीग्राम, सानो पिप्लाको चूर्ण २५० मिलीग्राम, शुद्ध हिङ २५० मिलीग्राम, सौँचर नुनको चूर्ण ५०० मिलीग्राम मिसाएर योगराज गुग्गुलु १ गोलीकासाथ बिहान बेलुका सेवन गर्न दिनू । यसबाट शरीरको कम्पन, पक्षाघात, गृध्रसी, आमवात, वीर्यदोष, योनिरोग आदि नष्ट हुन्छन् । (परीक्षित)

वातगजकेशरी अर्क – रास्ना २ किलो, ज्वानु १ किलो, धनियाँ २५० ग्राम, नागरमोथा, असुरो, देवदारु, पियाबाँसा, सूप, शतावरी, कचूर, ठूलो गोखुर, कागजी बदाम (Almond), कालो जिरा, बर्रो, अश्वगन्धा, राजवृक्षको गुदी, सानो गोखुर, ठूलो हर्रो, सुठो, विधारा, धनियाँ, बोझो, कण्टकारी, अतीस, जवासा, अडेरको जरा, चावो, पिप्ला, पुनर्नवा, बला यी सबै ५०-५० ग्राम लिएर अलि अलि कुट्नू र १० लिटर पानी राखी माटाको ठूलो हाँडीमा बिहान भिजाइदिनू । २४ घण्टासम्म भिजीसकेपछि अर्क खिँच्नू । यसको मात्रा १५-३० मिलीलिटर हुन्छ ।

बलवान् व्यक्तिलाई ५० मि.लि. सम्म दिन सकिन्छ । यो अर्क दिनको ३ पटक सेवन गर्नाले शरीर दुख्ने, सुनिने, पक्षाघात, अर्दित आदि रोगहरूमा रामबाण औषधीको काम गर्छ । वातव्याधि सातै दिनमा हराएर जान्छ । (परीक्षित)

लशुनादि चूर्ण – ५० ग्राम लशुनलाई मसिनो गरी पिनेर त्यसमा सिंधे नुन, साँचर नुन, सेतो जिरा, त्रिकटु र भुटेको भाँगको चूर्ण ४–४ ग्राम मिसाएर राख्नू । यसबाट ३ ग्राम चूर्ण लिएर अडेरको जराको काढासँग सेवन गर्न लगाउनू । सर्वाङ्गवात, अर्दित आदि सबै वातरोगहरू नष्ट हुन्छन् ।

रसोनाष्टक – लशुनको पाकेको गाँठोलाई तासेर सफा गर्नू । त्यस गाँठोलाई चिरेर तलतिरको अङ्कुरलाई निकालीदिनू । यसको गन्ध हटाउन रातभरि दहीमा चोप्नू । बिहान निकालेर पानीले पखाल्नू । यसमा गन्ध हुँदैन । फेरि कालो नुन, ज्वानु, शुद्ध हिंग, सिंधे नुन, मरिच, सानो पिप्ला, सेतो जिरा सबै समभाग लिएर कुटी छानी चूर्ण तयार पार्नू । सफा गरिएको लशुनलाई सिलौटोमा पिनेर लेदो बनाउनू । त्यो लेदो जति हुन्छ त्यसको पाचौँ (१/५) भाग उक्त नुन आदिको चूर्ण त्यसमा मिसाउनू र लशुनको चौथो (१/४) भाग तिलको तेल मिसाएर राख्नू । यही खानयोग्य रसोनाष्टक (लेह) हो । यसबाट रोगीले नित्य बिहान १२ ग्राम जति खाएर अडेरको जराको काढा पिउनू । दोषहरूको विचार गरेर यसको मात्रा घटबढ गर्न सकिन्छ । यसको सेवन गर्नाले सर्वाङ्गवात, एकाङ्गवात, अर्दित, अपतन्त्रक, अपस्मार, उन्माद, गृध्रसी, पिठ्यूँ र कम्मरको पीडा, कृमिरोग सबै नष्ट हुन्छन् ।

रसोनाष्टक सेवन गर्नेले मैथुन, क्रोध, बढी परिश्रम र अति पानी पिउने कुरा त्याग्नुपर्छ । अतिसार, प्रमेह, पाण्डुरोग, अरुचि, मूर्च्छा, अर्श, रक्तपित्त, क्षयरोग लागेको, वमन भैरहने रोगी तथा गर्भवती महिलाका लागि लशुनको सेवन हानिकारक हुन्छ । लशुन खाइसकेपछि जुलाफ लिनुपर्छ । यदि कसैले जुलाफ लिएन भने उसलाई कुष्ठ वा पाण्डुरोग हुने सम्भावना रहन्छ ।

कल्याण लेह – हलेदो, बोझो, कुठ, पिप्ला, सुठो, सेतो जिरा, अजमोदा र जेठीमधु सबै समभाग लिएर कुटी छानी चूर्ण बनाएर राख्नू । यो चूर्ण २–४ ग्राम लिएर गाईको घिउँसँग चाट्न दिनू । वात रोगहरू नष्ट हुन्छन् ।

वातगजकेशरी वटी – एउटा माटोको ठूलो भाँडो लिएर त्यसको पींधमा ५०० ग्राम धतुरोको फल (सुकेको) फिंजाएर राख्नू । फलमाथि ५०० ग्राम सुठो फिंजाउनू । सुठोमाथि ५०० ग्राम ज्वानु फिंजाउनू । ज्वानुमाथि फेरि ५०० ग्राम धतुरोको फल नै राख्नू । अब बाँकी रहेको भागमा पानीले माथिसम्म भर्नू । ढकनीले भाँडाको मुख बन्द गरिदिनू र चुलो माथि राखेर मन्द आगोको आँचमा ६ घण्टासम्म पकाउनू । ६ घण्टाजति पाकिसकेपछि भाँडोबाट सुठो जति सुरक्षित गरि झिक्नू र

बाँकीलाई फालिदिनू । सुठोलाई छायामा सुकाउनू र कुटी छानी चूर्ण बनाउनू । त्यो चूर्ण खलमा राखी शोभाञ्जन (सहिजन) को बोक्राको रस राख्दै खूब घोट्नू र १२५ मिलीग्रामका गोलीहरू बनाउनू । बिहान-बेलुका १-१ गोलीको नित्य सेवन गर्दा समस्त वातरोग नष्ट हुन्छन् । दिसा पनि सफा रहन्छ । राम्रा राम्रा अंग्रेजी औषधीभन्दा यो उत्तम छ । (परीक्षित)

वत्सनाभादि गुटिका – शुद्ध वत्सनाभ विष १० ग्राम, शुद्ध टंकण ३० ग्राम, मरिच ४० ग्राम, सुठो ४० ग्राम, सबैलाई कुटी छानी चूर्ण बनाउनू र खलमा राखी अदुवाको रस राख्दै घोट्दै गर्नू । राम्ररी घोटिसकेपछि १२५ मिलीग्रामका गोली पारी छायामा सुकाउनू । बिहान-बेलुका १-१ गोलीको सेवनले अनेक किसिमको वातकफ रोग मेटिएर खूब भोक लाग्छ । (परीक्षित)

योगराज गुग्गुलु – सुठो, पिप्लाको जरो, चाबो, मरिच, चितुको बोक्रा, अजमोद, सेतो जिरा, कालो जिरा, वायुविडङ्ग, ठूलो पिप्ला, ज्वानु, देवदारु, सुकमेल, सिंधे नुन, कुठ, रास्ना, गोखुर, धनियाँ, हर्रो, बर्रो, अमला, नागरमोथा, दालचिनी, खस, यवक्षार, तालीसपत्र र तेजपात यी सबै १०-१० ग्राम लिएर कुटी छानी चूर्ण बनाएर राख्नू । सबैको बराबर (२७० ग्राम) शुद्ध गुग्गुलु खलमा राखी घिउ आवश्यक मात्रामा मिसाई कुट्नू र उक्त चूर्ण पनि राख्दै कुट्दै जानू । सबै चूर्ण गुग्गुलुमा राम्ररी मिसिएपछि ५०० मिलीग्रामका गोलीहरू बनाई सुकाउनू र सुरक्षित बनाइराख्नू । यही योगराज गुग्गुलु हो ।

यो औषधी वातरोगमा १-२ गोली दशमूलको काढा अथवा मनतातो दूधसँग खान दिनू । यसको सेवन गर्नाले समस्त वातरोग तथा कुष्ठ, अर्श, मन्दाग्नि, वीर्यदोष, मेदोरोग र शूल पनि नष्ट हुन्छन् । अनुपान भेदले धेरै रोगहरूमा यसबाट लाभ हुन्छ । यो जराव्याधिनाशक रसायन हो । यसमा खानपिनमा कुनै परहेज गर्नुपर्दैन ।

त्रयोदशाङ्ग गुग्गुलु – बबूलको फल अथवा रुखको बोक्रा, अश्वगन्धा, हाउबेर, शताबरी (कुरिलो), गुर्जो, रास्ना, सूप, कचूर, ज्वानु, विधारा, गोखुर यी सबै १०-१० ग्राम लिएर कुटी छानी चूर्ण बनाउनू । यी सबैको बराबर (१२० ग्राम) शुद्ध गुग्गुलु र त्यसको एक चौथाई गाईको घिउ लिएर खलमा राखी कुट्नू र उक्त चूर्णहरू पनि मिसाउँदै जानू । गोली बनाउन लायक भएपछि ५०० मिलीग्रामका गोलीहरू बनाई सुकाएर सुरक्षित गरी राख्नू । यो औषधी २-४ गोली उचित अनुपानका साथ १-२ महीनासम्म लगातार सेवन गर्नाले सबै किसिमका वात रोगहरू नष्ट हुन्छन्, भाँचिएको हाड पनि जोडिन्छ । यो सर्वश्रेष्ठ गुग्गुलु हो । यसको अनुपानका रूपमा तातोपानी वा दूध, ज्वानुको काढा, चोपचिनीको अर्क आदि दिन सकिन्छ ।

वातारि गुग्गुलु – शुद्ध पारद १० ग्राम, शुद्ध गन्धक २० ग्राम, त्रिफला

३० ग्राम, चितुको जरा ४० ग्राम, अडेरको तेलमा खल गरिएको शुद्ध गुग्गुलु ५० ग्राम ठिक पार्नू । त्रिफला र चितुको चूर्ण बनाएर राख्नू । शुद्ध पारद र गन्धक खलमा राखी ३-६ घण्टा घोट्नू र कज्जली बनाउनू । त्यसमा त्रिफला र चित्रकको चूर्ण मिसाएर अडेरको तेलसँग खल गर्नू । सबै राम्ररी मिलेपछि ५०० मिलीग्रामको गोलीहरू पार्नू र सुकाएर राख्नू । बलाबल अनुसार २-४ गोली सुठो र अडेरको जराको काढासँग सेवन गराउनू । अडेरको तेलले पिठ्यूँ आदिमा मालिस गरी सेक्ने गर्नू । कदाचित् पखाला चलेमा चिल्लो र तातो कुरा खान दिनू । यसको नियमपूर्वक सेवनका साथ मैथुनको त्याग गरेमा सारा वात रोगहरू नाश भएर जान्छन् ।

स्वच्छन्द भैरव रस – शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, लौह भस्म, स्वर्णमाक्षिक भस्म, गोदन्ती भस्म यी सबै समभाग लिएर राख्नू । पहिले पारद र गन्धकलाई खलमा ३-६ घण्टासम्म घोटी कज्जली पार्नू । अनि त्यसमा अरू भस्महरू मिसाइदिनू । त्यसलाई हाँडीमा राखी आगोमा पकाउनू र चलाउँदै गर्नू । यसरी ३ घण्टासम्म पकाउनू । अब त्यसमा त्रिकटु, गिनेरी, तुलसी, सूरणकन्द, काकडासिंगी, हर्रो र वत्सनाभको चूर्ण समभाग लिएर मिसाइदिनू । अनि त्यसमा गोरखमुण्डीको रस राखी ३ दिनसम्म घोट्नू । फेरि सिमालीको रस राखी ३ दिनसम्म घोट्नू र ५०० मिलीग्रामका गोलीहरू बनाउनू । यसको सेवनले पक्षाघात तथा अरू सबै किसिमका वातरोगहरू आराम भएर जान्छन् । यसका साथमा रास्ना, गुर्जो, देवदारु, सुठो र अडेरको जराको काढा (५० मि.लि.)मा शुद्ध गुग्गुलु १ ग्राम मिसाएर अनुपानको रूपमा सेवन गरेमा सुनमाथि सुगन्ध हुन्छ । (रसरत्नसमुच्चय)

चतुर्मुख रस – शुद्ध पारो, शुद्ध गन्धक, लौह भस्म र अभ्रक भस्म ४८-४८ ग्राम र स्वर्ण भस्म १२ ग्राम ठीक पार्नू । पहिले शुद्ध पारद र शुद्ध गन्धक खलमा राखी ३ घण्टासम्म घोट्नू र कज्जली बनाउनू । अनि त्यसमा क्रमशः लौह भस्म, अभ्रक भस्म र स्वर्ण भस्म क्रमशः मिसाएपछि घिउकुमारीको रस राखी खूब घोट्नू र डल्लो पार्नू । त्यसलाई घाममा सुकाई अडेरको पातमा लपेट्नू र डोरीले बाँधेर धान राख्ने भकारीभित्र ३ दिनसम्म राखिदिनू । त्यसपछि निकाल्नू र मसिनो गरी पिनेर १२५ मिलीग्रामका गोलीहरू बनाएर राख्नू । यो औषधी १-२ गोली त्रिफलाको चूर्ण १-३ ग्राम र मह ६-१२ ग्राममा मिसाई बिहान-बेलुका खान दिनू । यसबाट वातरोगहरू नष्ट हुन्छन् । (भै.र.)

शुद्ध हरिताल रस – शुद्ध हरिताल, शुद्ध गन्धक, शुद्ध पारद, शुद्ध हिंगुल, शुद्ध टंकण (स्वाग), सुठो, मरिच, पिप्ला सबै समभाग लिनू । पहिले पारो र गन्धकलाई खल गर्नू र जब निश्चन्द्र कज्जली बन्छ तब त्यसमा बाँकी अरू औषधी मिसाएर अदुवाको रस दिँदै ७ दिनसम्म लगातार घोट्नू । त्यसपछि मूँग समानका

(१२५ मिलीग्राम) गोलीहरू पार्नू। यसको १-१ गोली बिहान-बेलुका नित्य सेवन गर्नाले सबै किसिमको वात रोग, सूतिका रोग, मन्दाग्नि, संग्रहणी र शीतज्वर यी सबै नाश भएर जान्छन्।

विषमुष्टि गुटिका – शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, शुद्ध वत्सनाभ विष, ज्वानु, त्रिफला, सज्जीखार, यवक्षार, सिंधे नुन, चितुको जरा, सेतो जिरा, कालो नुन, वायुविडङ्ग, शुद्ध टंकण र त्रिकटु सबै १०-१० ग्राम लिएर चूर्ण बनाउनू। सबैको बराबर अर्थात् १३० ग्राम शुद्ध कुचिला लिएर खलमा सबैलाई राख्नू र कागतीको रसका साथ घोट्नू। पूरा घोटिसकेपछि २५० मिलीग्रामका गोलीहरू पार्नू। यो गोलीहरूलाई उचित अनुपानसँग सेवन गरेमा सबै प्रकारका वातविकार, आमविकार, मन्दाग्नि, अजीर्ण आदि रोगहरू नष्ट हुन्छन्। यसैलाई **अग्नितुण्डी वटी (रस)** भनिन्छ। सामान्य अनुपान-तातो पानी, मन्दाग्निमा – कागती-पानी, अग्निमान्द्यमा – ज्वानुको अर्क। (परीक्षित)

अश्वगन्धादि घृत – अश्वगन्धा २५० ग्राम लिएर २ लिटर पानीमा पकाउनू। २५० मि.लि. पानी बाँकी भएपछि उतारेर छान्नू। फेरि १५ ग्राम अश्वगन्धा अरू लिएर सिलौटामा पिनी कल्क बनाउनू। अब उक्त अश्वगन्धाको काढा र कल्कका साथ मूर्च्छित गाईको घिउ १२५ ग्राम र गाईको दूध ५०० मि.लि. फलामको कराहीमा राखी पकाउनू। घिउमात्र बाँकी भएपछि उतारेर छान्नू र सुरक्षित गरी राख्नू। यो घृत ३-६ ग्राम मात्रामा मिश्रीको धुलोसँग खाएर गाईको दूध पिउनू। यसबाट असाध्य वात रोग पनि शान्त भएर जान्छ। साथै शुक्रको अत्यन्त क्षीणता पनि नाश हुन्छ। (परीक्षित)

बृहत् छागलाद्य घृत – स्वस्थ बाखाको मासु, दशमूल, बला र अश्वगन्धा सबै १ किलो २५० ग्रामको दरले ठीक पार्नू र बेग्लाबेग्लै १६ लिटर पानीमा पकाउनू। जब ४-४ लिटर पानी रहन्छ तब उतारेर छान्नू र सबै काढाहरूलाई यौटै भाँडोमा जम्मा पार्दै जानू। फेरि शतावरी (कुरिलोको जरा) पनि १ किलो लिएर १६ लिटर पानीमा पकाउनू। जब ४ लिटर पानी बाँकी रहन्छ त्यसलाई पनि अरू काढाहरू राखेकै भाँडामा राख्नू। त्यसैमा गाईको दूध ४ लिटर पनि मिसाउनू। जीवन्ती, महुवा, दाख, दूधी, कमल, नागरमोथा, रातो चन्दन, रास्ना, शालपर्णी, पृश्निपर्णी, बला, अनन्तमूल, कुरिलो, अश्वगन्धा, विदारीकन्द, कचूर, हलेदो, दारुहरिद्रा (चुत्रो), प्रियङ्गु, त्रिफला, तगर, तालीसपत्र, पद्मक, सुकमेल, तेजपात, नागकेशर, चमेलीको फूल, धनियाँ, मजिठो, अनार, देवदारु, मुसब्बर, रेणुका, वायुविडङ्ग, सेतो जिरा र केशर यी प्रत्येक १२-१२ ग्राम लिएर कुटी छानी सिलौटोमा घोटेर लेदो बनाउनू। अब पहिलेको काढा, दूध, लेदो र ४ किलो गाईको घिउ एउटा कलईदार

कराहीमा राख्नू र पकाउनू। जब काढा आदि सुकेर घिउमात्र बाँकी रहन्छ तब उतारेर छान्नू र सेलाएपछि त्यसमा ५०० ग्राम मिश्रीको धुलो मिसाएर घोट्नू अनि सुरक्षित हुने गरी राख्नू। यो घिउ ६ ग्रामदेखि २४ ग्रामको मात्रासम्म गाईको दूधसँग खान दिनू। यसको सेवन गर्नाले समस्त वातरोग, अर्दित, गृध्रसी, अपतन्त्रक आदि नष्ट हुन्छन्। अनेक असाध्य वातरोगी पनि यसबाट ठीक भएका छन्। (परीक्षित)

विष्णु तेल – शालपर्णी, पृश्निपर्णी, बला, कुरिलो, अडेरको जरा, नागबला, कण्टकारी, बिंही, करञ्ज, सैरेयकको मूल यी सबै ५०-५० ग्राम लिएर चूर्ण बनाउनू र सिलौटोमा पानीसँग घोटेर कल्क बनाउनू। यो कल्कका साथ कालो तिलको तेल २ लिटर, गाईको दूध ४ लिटर कलई लागेको कराहीमा राखी आगोमा पाक्न दिनू। तेलमात्र बाँकी भएपछि उतारेर छान्नू। यस तेलको मालिस केही दिनसम्म लगातार गरेमा मानिस तथा अरू घोडा, हात्ती आदि जीवहरूको पनि वातव्याधि निको भएर जान्छ। शरीर बलियो हुन्छ। भाँचिएको हाड पनि जोडिन्छ। यो तेल अनेक पटक परीक्षित हो।

नारायण तेल – बेलको जरा, गिनेरी, टटेलो, पाटला, बकाइनो, प्रसारिणी, अश्वगन्धा, बिंही, कण्टकारी, बला, अतिबला, गोखुर, पुनर्नवा यी प्रत्येक १०० ग्राम लिएर कुट्नू। अनि तिनलाई १६ गुणा अर्थात् २० लिटर ८०० मि.लि. पानीमा पकाउनू। जब एक चौथाई अर्थात् ५ लिटर २०० मि.लि. पानी बाँकी रहन्छ तब उतारेर छान्नू। सूप, देवदारु, जटामसी, शैलेय (झ्याउ), बोझो, रातो चन्दन, तगर, कुठ, सुकमेल, शालपर्णी, पृश्निपर्णी, मुद्गपर्णी, माषपर्णी, रास्ना, अश्वगन्धा, सिंधे नुन र पुनर्नवा यी प्रत्येक १०० ग्राम राखी कुटी छानी सिलौटोमा पानीसँग पिनी लेदो बनाई राख्नू। १ किलो शतावरी अर्थात् कुरिलो १६ लिटर पानीमा पकाउनू, ४ लिटर पानी बाँकी हुँदा उतारेर छान्नू र बेग्लै राख्नू। अब कालो तिलको तेल २ लिटर, गाई वा बाख्राको दूध ८ लिटर, शतावरीको काढा ४ लिटर, पहिले बनाएको औषधीहरूको काढा ५ ली. २०० मि.लि. र उक्त लेदो सबैलाई ठूलो कराहीमा राखी आगोमा मन्द आँचमा पाक्न दिनू। जब दूध र काढा डढेर जान्छ र तेलमात्र बाँकी रहन्छ तब उतारेर छान्नू। यही नारायण तेल हो।

यो तेल मन्द आँचमा पकाउनुपर्छ होइन भने तेल बिग्रिएर जान्छ। पकाउने भाँडो सानो छ भने पहिले तेल, लेदो र काढा राखी आगोमा पकाउनू। काढा सुक्दै गएर भाँडो केही खाली भएपछि अलिअलि गर्दै शतावरीको काढा राख्नू। शतावरीको काढा सुकेपछि त्यही किसिमले अलिअलि दूध राख्दै जानू। जब कराहीमा तेल र पानी ५०० मि.लि. जस्तो बाँकी रहन्छ अनि उतारेर छान्नू र सुरक्षित गरी राख्नू। यो हजारौँ पटक परीक्षित रामबाण औषधी हो। यसको मालिस गर्ने, नस हाल्ने,

कानमा राख्ने, पिउने वा वस्ति दिने किसिमबाट प्रयोग गर्नाले ऊर्ध्ववात, अधोगत वात, मन्यास्तम्भ, शिराग्रह, हनुस्तम्भ, बहिरोपन, लंगडोपन, बाहुशोष, पादशोष, अर्दित, पक्षाघात आदि ८० प्रकारका वात रोगहरूमा रामवाण हुन्छ । यसलाई हावा नलाग्ने ठाउँमा बसेर लगाउनुपर्छ ।

महामाष तेल – माषको गेडा १ किलो २८० ग्राम, दशमूल २ किलो, खसीको मासु १ किलो २०० ग्राम यी सबैलाई १० लिटर २४० मि.लि. पानीमा पकाउनू । जब १ चौथाइ अर्थात् २ लिटर ५५८ मि.लि. पानी रहन्छ अनि उतार्नू । कालो तिलको तेल १ लिटर २८० मि.लि. मूर्च्छित गर्नू । तेलभन्दा चार गुणा बढी ५ लिटर १२० मि.लि. गाईको दूध पनि ठीक पार्नू । फेरि काकोली, क्षीरकाकोली, मेदा, महामेदा, जीवक, ऋषभक, ऋद्धि, वृद्धि, मुद्गपर्णी, माषपर्णी, जीवन्ती, जेठीमधु, मजिठो, चाबो, चितु, काफल, सुठो, मरिच, पिप्ला, पिप्लाको जरा, रास्ना, अमला, गोखुर, काउसोको बियाँ, अडेरको जरा, सूप, सिंधे नुन, सौंचर नुन, बिरे नुन, देवदारु, गुर्जो, कुठ, अश्वगन्धा, बोझो, कचूर यी प्रत्येक १० ग्राम लिएर कुटी पिनी लेदो बनाउनू । अब कराहीमा माष आदिको काढा, तिलको तेल, दूध र माथिबाट उक्त लेदो सबै राखी मन्द अग्निमा पकाउनू । जब तेलमात्र रहन्छ तब उतारेर छानी बोतलमा राख्नू । यो तेल पिउने, नस्य लिने, कानमा राख्ने तथा वस्ति दिने गर्नाले समस्त वातरोगहरू निश्चय नै शान्त हुन्छन् । (परीक्षित)

लशुनादि तेल – लशुन २०० ग्राम, रातो खुर्सानी २०० ग्राम, अफीम ६० ग्राम सबैलाई यवकुट गरेर २ लिटर कालो तिलको तेलमा मिसाइदिनू । यसलाई फलामको भाँडोमा राखी मुख बन्द गर्नू । माटो र कपडाले मुखमा लिप्नू र घाममा सुकाउनू । अब चुलोमुनि खाल्टो खनी उक्त भाँडो राख्नू र माटोले पुर्नू । त्यस चुलोमा दुवै समय सधैँ भोजन पकाउनू । १५ दिनपछि उक्त भाँडो निकाल्नू र तेललाई छानेर सुरक्षित गरी राख्नू । यस तेलको लगातार मालिसले समस्त वात रोग निश्चय नै ठीक भएर जान्छन् । (अनेक पल्ट परीक्षित)

वातारि तेल – बकाइनो, आँक, सिमाली, धतुरो, अडेर, सिउँडी, भाँग र करवीर यी सबैका पातहरूको रस ५०० मि.लि. प्रत्येकको निकाल्नू । अब १ लिटर तिलको तेल र उक्त पातहरूको रसलाई मिसाएर आगोमा पकाउनू । तेलमात्र बाँकी हुँदा उतारेर छान्नू र सुरक्षित राख्नू । यसको मालिसले समस्त वातरोग शान्त हुन्छन् ।

धत्तूर तेल – कालो धतुरोको पातको रस १ लिटर, सेतो गुञ्जा, वत्सनाभ विष, कालो धतुरोको बियाँ तीन ओटै मिसाएर जम्मा ४८ ग्राम (प्रत्येक १६-१६ ग्राम) लिनू । अनि तीनै थरीलाई सिलौटोमा पानीसँग पिनेर कल्क (लेदो) बनाउनू । पछि उक्त लेदो, धतुरोको रस र २५० मि.लि. जति तिलको तेल सबैलाई

कराहीमा राखी मन्द अग्निले पकाउनू । तेलमात्र रहँदा उतारेर छान्नू । यस तेलको मालिसले समस्त वातरोगहरू नाश भएर जान्छन् । (परीक्षित)

वातनाशक तेल – आँक, सेतो करवीर, वत्सनाभ विष, असुरो, केतकी, कण्टकारी, लाङ्गली, लशुन र जयपाल यी प्रत्येक ५०-५० ग्राम लिएर लेदो पार्नू र ५ लिटर पानी तथा १ लिटर २५० मि.लि. सर्स्यूको तेलमा पकाउनू । जब औषधीहरू डढेर तेलमात्र रहन्छ अनि उतारेर छानी सिसीहरूमा भरेर राख्नू । यस तेलको मालिसले वातका सबै किसिमका कष्टहरू मेटिन्छन् । पकाएको दूध पथ्य गर्नू । यो मालिस गरेर अरू कुनै रसायन अथवा उत्तम भस्मको सेवन गर्नाले नामर्द पनि मर्द भएर जान्छ । **सावधानी** – लिङ्गको अग्रभागमा यसलाई लगाउनु हुँदैन ।

समस्त वातरोगनाशक तेल – सुठो १२० ग्राम, उत्तम सुर्ती १२० ग्राम, सानो पिप्ला ६० ग्राम, भाँग ६० ग्राम, हिङ १२ ग्राम, अफीम १२ ग्राम, भलायो १२ ग्राम, कुचिला १२ ग्राम, मरिच १२ ग्राम यी सबैलाई पिनेर १ लिटर तिलको तेल र १ लिटर सर्स्यूको तेलमा मिसाइदिनू । अब चुलोमा राखी आगोको मन्द आँचमा पकाउनू । जब औषधीहरू डढ्छन् तब उतारेर छान्नू । यस तेलको मालिसले सबै किसिमका दुखाइहरू जस्तै कम्मर दुख्ने, पिठ्यूँ दुख्ने, छातीमा दुख्ने, गोडा दुख्ने आदि र शीतांग सन्निपात आदि रोगहरू नष्ट हुन्छन् । शीत सन्निपातमा यसको मालिसले सन्निपात ज्वरो नष्ट हुन्छ । यो तेल वात र कफसम्बन्धी रोगीहरूका लागि रामबाण नै हो । यो तेल धेरै कडा हुन्छ । रोग अनुसार कम वा बढी लगाउनुपर्छ । हिउँदमा अलि बढी र गर्मी याममा कम प्रयोग गर्नुपर्छ । (परीक्षित)

४०. वातरक्त रोग (दूषित रतगबाट हुने वात रोग)

परिचय

गलत किसिमको आहारका कारण कुपित भएको वायुको दूषित भएको रगतद्वारा धमनी मार्गहरूमा अवरोध भएर उत्पन्न हुने रोगलाई वातरक्त भनिन्छ । आफ्नो गति रोकिएको वायुका कारण यसमा विभिन्न किसिमको वेदना हुन्छ । यो रोग पहिले हात र खुट्टामा हुन्छ, फेरि सारा शरीरमा फैलन्छ ।

डाक्टरी मत अनुसार यस रोगमा सुरुमा हात-खुट्टाको छाला फुल्छ । त्यसपछि सबै ठाउँमा बिमिराहरू उत्पन्न हुन्छन् र केही दिनपछि घाउ भएर आउँछ । तिनबाट रगत, पिप र नरम मासुका टुक्रा निस्कन्छन् । यो रोग महिलाहरूको अपेक्षा पुरुषलाई बढी हुन्छ । धेरैजसो ३० वर्षको उमेर नाघिसकेपछि हुन्छ । यसको कारण रगत दूषित हुनु हो ।

वातरक्तको कारण – नुनिलो, अमिलो र पिरो, क्षारयुक्त, स्निग्ध र तातो भोजन गर्नाले, अजीर्णको अवस्थामा भोजन गर्नाले, गहत, माष, सिमी, सागहरू, उखु, दही, काँजी, मद्यको सधैँ सेवन गर्नाले, गिलो वा सुकेको जलचर वा आनूप जीवहरूको मासु, तिलको पिना र मूला खाइरहने गर्नाले, विरुद्ध आहारको सेवन गर्नाले, बढी रिसाउने, दिउँसो सुत्ने, राती जागा बस्ने गर्नाले, प्रायः मोटो शरीर हुने, आरामको जीवन बिताउने मानिसहरूमा वातरक्त रोग उत्पन्न हुन्छ ।

सम्प्राप्ति – हात्ती, घोडा आदिको सवारी गर्ने र विदाही अन्नको सेवन गर्ने गर्नाले वायुको प्रकोप हुन्छ, रगत पनि दूषित हुन्छ । त्यो दूषित रगत गोडाहरूमा जम्मा हुन थाल्छ । कुपित वायुका साथ दूषित रगतको मेल हुँदा वातरक्त रोग हुन जान्छ ।

वातरक्तको पूर्वरूप – वातरक्त रोग लाग्नुभन्दा पहिले शरीरमा खूब पसिना आउँछ अथवा हुँदै हुँदैन, शरीर कालो हुँदै जान्छ, छालामा स्पर्शको ज्ञान हुँदैन । अथवा छाला विकृत भएको ठाउँमा चोट लाग्दा बढी दुख्ने हुन्छ । जोर्नीहरू खुकुला हुन्छन्, आलस्य बढी हुन्छ, अङ्गहरू थाक्छन् । घुँडा, जाँघ, तिघ्रा, कम्मर, काँध, हातगोडा र जोर्नीहरूमा पिडकाहरू उत्पन्न हुन्छन् । ती अङ्गहरूमा दुख्ने, फर्फराउने, छाला निदाउने, भारीपन हुने र चिलाउने हुन्छ । जोर्नीहरूमा वारंवार दुख्ने र फेरि दुखाइ हराउने भइरहन्छ । छालाको रङ्ग बिग्रिन्छ, अनेक किसिमका डाबरहरू (दागहरू) उत्पन्न हुन्छन् ।

दोषहरूको संसर्ग अनुसार वातरक्तको लक्षण – वातरक्त रोगमा वायु प्रबल भएमा शरीरमा शूल हुने, फर्फराउने, अंग भाँचिएजस्तो दुख्ने हुन्छ । रोग भएको अङ्गमा उत्पन्न शोथमा रुखोपना आउँछ, कालो रङ्ग हुनजान्छ, शोथ कहिले बढ्छ र कहिले घट्छ । धमनी र आँलाका जोर्नीहरू खुम्चिन्छन्, अङ्गहरू कक्रक्क पर्छन्, तिनीहरूमा बढी दुख्ने हुन्छ । शरीरले चिसो नसहने, चिसो लाग्दा रोग बढ्ने हुन्छ । शरीरमा स्तम्भ (अंग नचल्ने), काम्ने, लाटो हुने हुन जान्छ ।

रगतको दोष बढी भएमा शोथ रातो वर्णको हुन्छ र त्यसमा बढी दुख्ने हुन्छ । त्यसमा सियोले घोचेजस्तो दुख्ने र झमझमाउने हुन्छ । त्यसमा चिलाउने र स्राव हुने हुन्छ । स्निग्ध वा रुक्ष उपचार गर्दा त्यो कम हुँदैन ।

पित्तको संसर्ग भएमा शोथ भएको ठाउँमा रातोपन हुन्छ । त्यहाँ ताप बढी हुन्छ । स्पर्श गर्दा नसहने वा बढी दुख्ने हुन्छ । शोथ भएको ठाउँमा घाउ पाक्न पनि सक्छ । साथमा शरीर पोल्ने, पसिना बढी आउने, प्यास लाग्ने र मूर्च्छा पर्ने हुन्छ ।

कफको संसर्ग भएमा शोथ भएको ठाउँमा गिलोपन, भारीपन, लाटो भएको अनुभव हुन्छ । त्यो भाग चिसो हुन्छ र चिल्लो देखिन्छ । कम दुख्छ तर चिलाउने गर्छ ।

दुई दोषको प्रबलता भएमा दुवै दोषका लक्षणहरू हुन्छन् । सबै दोषहरू प्रबल भएमा सबैका लक्षणहरू हुन्छन् ।

वातरक्त रोग पहिले गोडाबाट सुरु हुन्छ र पछि सम्पूर्ण शरीरमा बिस्तारै बढ्दैजान्छ ।

वातरक्तका उपद्रवहरू – वातरक्त रोग बढ्दै गएपछि निद्रा नपर्ने, अरुचि हुने गर्छ । श्वास फेर्न गाह्रो हुन्छ । मासु सड्दै जाने हुन्छ । टाउको दुख्ने, मूर्च्छा पर्ने, बढी प्यास लाग्ने, ज्वरो आउने र जीउ काम्ने हुन्छ । हिक्का रोग हुने, विसर्प हुने हुन्छ । आँलाहरू बाङ्गो हुने, मर्महरूमा दुख्ने हुन्छ । अर्बुद पनि हुनसक्छ ।

साध्यासाध्यता – यौटै दोष मात्र प्रबल भएको नयाँ वातरक्त रोग साध्य हुन्छ । द्विदोषज (दुई दोष प्रबल भएको) रक्तपित्त याप्य हुन्छ । त्रिदोषज र धेरै उपद्रवसहितको वातरक्त रोग असाध्य हुन्छ ।

उपद्रवहरू नभएको वातरक्त रोग साध्य हुन्छ । अलिअलि र साधारण उपद्रवहरू उत्पन्न भैसकेपछि रोग याप्य हुन्छ ।

जुन वातरक्त रोग बुढी आँलादेखि घुँडासम्म छाला फुटेको, स्रावले युक्त छ, उपद्रवहरूले व्याप्त छ, मांसक्षय र प्राणक्षयको अवस्थामा हुन्छ, त्यो असाध्य हुन्छ ।

वातरक्तको सामान्य चिकित्सा – वातरक्त रोग प्रायः खुट्टाबाट र कहिलेकाहीँ हातबाट सुरु हुन्छ । चिकित्सामा ढिलाई गरेको खण्डमा चाँडै नै सम्पूर्ण शरीरमा फैलेर जान्छ । यसैले यसको पूर्वरूप देखिनेबित्तिकै चिकित्सा सुरु गर्नुपर्छ ।

वातरक्तका दुई रूप वा अवस्थाहरू हुन्छन् । एउटा शरीरको बाहिर छाला र मासुमा आश्रित हुन्छ, त्यसलाई उत्तान वातरक्त भनिन्छ । अर्को रूप भित्र अरू धातुहरूसम्म पुगेको हुन्छ, त्यसलाई गम्भीर वातरक्त भनिन्छ ।

उत्तान वातरक्तमा लेप, परिषेक, अभ्यङ्ग र स्नानले हित गर्छ । गम्भीर वातरक्तमा विरेचन, निरुह वस्ति र स्नेहपानद्वारा चिकित्सा गर्नुपर्छ । यसमा जुका लगाएर अथवा शस्त्रद्वारा सिरावेध गरेर रगत निकाल्नु पनि आवश्यक हुनसक्छ ।

वातप्रधान वातरक्तमा अलि तातो लेप आदि प्रयोग गर्नुपर्छ । पित्तप्रधान वातरक्तमा शीतल लेपले हित गर्छ ।

रोगमा कुन दोषको प्रकोप देखिन्छ ? दोषको बल कति छ ? रोगीमा कति बल छ ? यी कुराहरूको बिचार गरी बारम्बार अलिअलि रगत निकाल्नुपर्छ । एकैपटकमा धेरै रगत निकाल्दा हानि हुन्छ ।

गुदद्वारमा वस्ति दिएर मल निकाल्नु वातरक्तका लागि उत्तम चिकित्सा हुन्छ ।

यस रोगको लागि गुर्जो समान राम्रो अरू कुनै औषधी हुँदैन । यसको काढा बनाएर पिउने गर्नुपर्छ अथवा यसको स्वरस वा चूर्ण अरू औषधीहरूसँग मिलाएर दिनुपर्छ । अथवा अरू औषधीसँग यसको काढा अनुपानको रूपमा दिनुपर्छ ।

गाईको दूधमा गोमूत्र मिसाएर पिउन दिएमा दोषहरूको अनुलोमन हुन्छ अर्थात् दोषहरूलाई शरीरबाट निकाल्न सजिलो हुन्छ ।

पित्तप्रधान वातरक्त रोगमा १०० पटक वा १००० पटक धोएको घिउको लेप गर्नु तथा अडेरको तेल दूधसँग खान दिएर विरेचन गराउनु राम्रो हुन्छ । रक्तप्रधान रोगमा गाईको सींग अथवा जुका आदिबाट रगत निकाल्नुपर्छ ।

वातरक्तको रोगीलाई जलपानमा भिजाएको चना खानु विशेष रूपमा लाभदायक हुन्छ । पुरानो चामल, जौ, गहुँ, मूँग, मसुरो, करेलो, पर्वर, बेथेको साग, अमला, दाख, घिउ, गाई-भैंसीको दूध यी पथ्य हुन्छन् ।

माष, गहत, सिमी, तिल, दही, अमिलो अचार, नुनिलो-पिरो खानेकुराहरू अपथ्य हुन्छन् । माछा, मटरकोसा, मदिरा पनि अपथ्य हुन्छन् ।

वातरक्तको विशेष चिकित्सा

वातप्रधान वातरक्तमा – अडेरको बियाँको गुदीलाई पिनेर तताउनू र रोग भएको ठाउँमा लेप लगाईदिनू ।

बेलको जरा, तगर, देवदारु, निशोथ, रास्ना, हरेणु, कुठ, सूप यी सबैको चूर्ण बनाई दही वा दहीको पानीमा मिसाएर तताउनू र कपडामा पोको पारी त्यसले रोग लागेको-दुखेको ठाउँमा बाफ दिनू ।

पित्तप्रधान वातरक्तमा – कुरिलो, जेठीमधु, पर्वरको पात, त्रिफला र कुटकीको काढामा मिश्री र मह मिसाएर पिउन दिनू ।

अथवा – गुर्जोको काढामा मिश्री र मह मिसाएर खान दिनू ।

अथवा – गाईको दूधमा गोमूत्र र निशोथको चूर्ण मिसाएर पिउन दिनू ।

१०० पटक धोएको घिउको मालिस गर्न लगाउनू ।

कफप्रधान वातरक्तमा – अवस्था हेरी हल्का बान्ता गराउनू, बीच-बीचमा जुलाफ दिनू । तीता औषधीहरूमा पकाएको घिउ खान दिनू ।

अमला र बेसारको काढामा मह मिसाएर खान दिनू ।

त्रिफलाको काढा पिउन दिनू । अथवा गोमूत्रमा मह मिसाएर खान दिनू ।

पुरानो गुड र हर्रोको चूर्ण मिसाएर खान दिनू । अथवा अमला, हर्रो र नागरमोथाको काढा पिउन दिनू ।

सर्स्यू, नीमको बोक्रा, आँककको बोक्रा, जटामसी, यवक्षार र तिललाई सिलौटोमा पानीसँग पिनेर बनाएको लेदो लेप गर्नाले कफप्रधान वातरक्त रोग आराम भएर जान्छ ।

वातरक्तको चिकित्सामा उपयोगी विशिष्ट योगहरू

गुडूच्यादि क्वाथ – गुर्जो, बाकुची, चक्रमर्द (टाप्रे)को बियाँ, नीमको बोक्रा, हर्रो, हलेदो, अमला, असुरो, कुरिलो, सुगन्धवाल, बलाको जरो, जेठीमधु, मौवा, गोखुर, पर्वरका पातहरू, खस (उशीर)को जरा, मजिठो, रातो चन्दन यी सबै १-१ ग्राम लिएर थिच्नू र ३०० मि.लि. पानीमा मन्द आँचमा पकाउनू । चौथाइ पानी बाँकी हुँदा उतारेर छान्नू र चिसो भएपछि पिउनू । यो काढा बिहान-बेलुका १ महीनासम्म सेवन गर्नाले वातरक्त, रक्तविकार, कुष्ठ आदि रोगहरू नष्ट हुन्छन् । यो काढा कहिल्यै फेल खाँदैन ।

वासादि काढा – असुरो, गुर्जो, र राजवृक्षको फलको गुदी यी सबै समभाग खस्रो चूर्ण बनाएर राख्नू । त्यसबाट २० ग्राम लिएर ३०० मि.लि. पानीमा पकाउनू । जब ७५ मि.लि. पानी बाँकी रहन्छ तब उतारेर छान्नू र त्यसमा अडेरको तेल ५-१० मि.लि. मिसाएर खान दिनू । यो काढा केही दिनसम्म (१५-२० दिन) लगातार सेवन गर्नाले वातरक्त रोग अवश्य ठीक हुन्छ ।

महामञ्जिष्ठादि क्वाथ वा अर्क – मजिठो, नागरमोथा, कुटजको बोक्रा वा जरो, गुर्जो, कुठ, सुठो, भारङ्गी, कण्टकारीको पञ्चाङ्ग, बोझो, नीमको बोक्रा, हलेदो, दारुहरिद्रा, हर्रो, बर्रो, अमला, पर्वरको पात, कुटकी, मूर्वा, वायुविडङ्ग, विजयसाल, कुरिलो, त्रायमाणा, चिराइतो, बाकुची, राजवृक्षको गुदी, शाखोटक (सिहोर), बकाइनोको बोक्रा, करञ्ज, अतीस, नेत्रबाला, इन्द्रेणीको जरा, धमासा, अनन्तमूल (सेतो सारीवा), पित्तपापडा, गोरखमुण्डी, इन्द्रजौ, असुरो, भृङ्गराज, देवदारु, पाठा, खयर, रातो चन्दन, निशोथ, वरुणको बोक्रा सबै समभाग लिएर खस्रो चूर्ण बनाइराख्नू । यसबाट १० ग्राम चूर्ण लिएर २०० मि.लि. पानीमा पकाउनू र ५० मि.लि. पानी बाँकी हुँदा कपडाले छानी मह र मिश्री मिसाएर खान दिनू ।

अथवा – उक्त औषधीहरू सबै ६०-६० ग्राम लिएर यवकुट गर्नू र रातमा माटोको वा कलईदार भाँडोमा १०-१२ लिटर पानीमा भिजाइराख्नू । २४ घण्टापछि अर्क बनाउनू । यदि अर्क ५ बोतल भयो भने उत्तम हुनेछ । १० बोतल भयो भने प्रथम दर्जाको र यसपछिको दोस्रो श्रेणीको हुनेछ । उत्तम अर्कको १० मि.लि. मात्रा पर्याप्त हुन्छ । १० वा १५ बोतल भयो भने २०-३० मि.लि. सम्मको मात्रा हुन्छ । यो अर्कमा ६ ग्राम मह मिसाएर खान दिएमा कष्टसाध्य भनी वैद्यहरूले त्यागेका र शरीर देख्दा घृणा जाग्ने अवस्थामा पुगेका रोगी पनि सुनजस्तै कान्तिवाला हुन जान्छन् । कोही

१५ दिनमा, कोही १ महीनामा र कोही ३ महीनामा आराम भएर जान्छन् । (परीक्षित)

निम्बादि चूर्ण – नीमको बोक्रा, गुर्जो, ठूलो हर्रो, अमला, बाकुची प्रत्येक ४०-४० ग्राम लिनू । सुठो, वायुविडङ्ग, चक्रमर्द (टाप्रे) को बियाँ, सानो पिप्ला, ज्वानो, बोझो, सेतो जिरा, कुटकी, सेतो खयर, सिंधे नुन, यवक्षार, हलेदो, दारुहल्दी, नागरमोथा, देवदारु, कुठ यी सबै १०-१० ग्राम लिनू । सबैलाई कुटी छानी चूर्ण बनाउनू र मिसाइदिनू । यो चूर्ण १-४ ग्राम मात्रामा गुर्जोको काढाको अथवा तातो पानीको अनुपानका साथ बिहान-बेलुका एक महीनासम्म खान दिनू । यसबाट असाध्य किसिमको वातरक्त, सेतो कुष्ठ, लुतो, दाद आदि अनेक किसिमका छालासम्बन्धी रोगहरू नष्ट हुन्छन् । घाउ-खटिरा आदिका लागि यो रामबाण औषधी हो । (अनेक पल्ट परीक्षित)

अमृतादि चूर्ण – गुर्जोको सत्त्व १०० ग्राम, शुद्ध गुग्गुलु १०० ग्राम दुवैलाई मिसाएर पिन्नू र छानेर सुरक्षित राख्नू । यो चूर्ण ३ ग्रामको मात्रामा बिहान पानीसँग खानाले घोर वातरक्त रोग नाश भएर जान्छ । (परीक्षित)

पञ्चनिम्ब चूर्ण – नीमको पञ्चाङ्ग अर्थात् जरा, बोक्रा, फल, पात र फूल प्रत्येक १२०-१२० ग्राम लिएर कुटी छानी ६०० ग्राम चूर्ण तयार पार्नू । त्यसमा सानो हर्रो, टाप्रेको बियाँ, त्रिफला, वायुविडङ्ग, सख्खर, हलेदो, सानो पिप्ला, मरिच, सुठो, गोखुर, शुद्ध भलायो, अमला, बाकुची र अमलतासको (राजवृक्ष) गुदी यी प्रत्येक ४०-४० ग्राम कुटी छानी चूर्ण बनाएर मिसाइदिनू । त्यसमा लौह भस्म ४० ग्राम पनि मिसाउनू । अब त्यो सबै चूर्ण खलमा राखी भृङ्गराजको रससँग घोटी सुकाइदिनू । त्यसपछि २०० ग्राम खयरको बोक्रालाई ४ लिटर पानीमा पकाउनू । जब ५०० मि.लि. पानी बाँकी रहन्छ तब उतारेर छान्नू । अब पहिले बनाएको चूर्णलाई यो काढाका साथ खलमा राखी खल गर्नू र सुकाएर छान्नू । यसबाट ६-१२ ग्राम चूर्ण लिएर खयरको बोक्राको काढा अथवा गाईको दूध वा घिउसँग सेवन गराउनू । १ महीनामा वातरक्त र कुष्ठलाई आराम गर्दछ । कैयौँ कुष्ठ रोगीलाई आराम भएर गएको छ । (परीक्षित)

योगसार अमृत – शतावरी, नागबला, विधारा, उटंगन (उच्चटा), पुनर्नवा, गुर्जो, सानो पिप्ला, अश्वगन्धा, गोक्षुर यी सबै १०० ग्राम लिएर कुटी छानी चूर्ण बनाउनू । त्यसमा ४५० ग्राम मिश्रीको चूर्ण र दालचिनी, सुकमेल र तेजपात तीनैथरीको चूर्ण ४५-४५ ग्राम पनि मिसाइदिनू । अब सबै चूर्णमा मह १६० ग्राम र घिउ ८० ग्राम राखी एकनास हुनेगरी घोट्नू र सफा सिसीमा राख्नू । यो औषधी नित्य बिहान आफ्नो बल अनुसार ६-१२ ग्रामसम्म सेवन गर्नू । यसबाट वातरक्त, कुष्ठ आदि रक्तविकारसम्बन्धी रोगहरू नष्ट हुन्छन्, शरीरको कान्ति राम्रो हुन्छ । (खूब परीक्षित)

सिंहनाद गुग्गुलु[१] – अमला, हर्रो, बर्रो, वायुविडङ्ग, शुद्ध शिलाजीत, रास्ना, चितुको बोक्रा, सुठो, कुरिलो, जयपालको जरा, पिप्लाको जरा, देवदारु, दारुहरिद्रा, गुर्जो, पुनर्नवा, सुकमेल, ठूलो पिप्ला सबै १०-१० ग्राम लिएर कुटी छानी चूर्ण बनाउनू । सबै चूर्ण बराबर शुद्ध गुग्गुलु लिएर त्यसमा उक्त चूर्णहरू मिसाउनू र गाईको घिउसँग खूब घोट्नू । जब राम्ररी घोटिन्छ अनि ५०० मि.ग्रा.को गोली बनाउनू र सुकाएर सिसीमा सुरक्षित राख्नू । यो औषधी ३-६ ग्राम मात्रामा तातो पानी वा तातो दूधको अनुपान गरी दिनको २ पटक सेवन गर्न दिनू । यसबाट वातरक्त निश्चय नै आराम हुन्छ ।

रसाभ्र गुग्गुलु – गुर्जो र त्रिफला २-२ किलो लिएर १६-१६ लिटर पानीमा बेग्लाबेग्लै पकाउनू । जब ४-४ लिटर पानी बाँकी रहन्छ तब छानेर राख्नू । फेरि ४८ ग्राम शुद्ध पारद र ४८ ग्राम शुद्ध गन्धकलाई खलमा राखी ८ घण्टासम्म खल गर्नू र कज्जली तयार पार्नू । त्यसमा लौह भस्म ४८ ग्राम, अभ्रक भस्म ९६ ग्राम र शुद्ध गुग्गुलु १ कि. लिएर त्यो क्वाथमा मिसाउनू र मन्द अग्निको आँचमा पकाउनू । पाकेर बाक्लो भएर आएपछि त्यसमा त्रिफला, त्रिकटु, दन्तीको जरा, गुर्जो, इन्द्रवारुणीको जरा, वायुविडङ्ग, नागकेशर र निशोथको जरा २४-२४ ग्राम लिएर बनाएको चूर्ण मिसाएर घोट्नू । सबै राम्ररी मिसिएपछि सानो बयर बराबरको (५०० मिलीग्राम) गोली बनाएर राख्नू । यो गुग्गुलु १-१ गोली गुर्जोको काढाको अनुपानका साथ बिहान खान दिनू । यस गुग्गुलुबाट वातरक्त र कुष्ठ दुवै अवश्य आराम हुन्छन् । यो दुवै रोगकालागि रामबाण औषधी हो । (खूब परीक्षित)

गुडूची घृत – १ किलो गुर्जो ल्याएर सिलौटोमा पिनी लेदो पार्नू । फेरि अर्को ४ किलो गुर्जोलाई थिचेर ६४ लिटर पानीमा पकाउनू । जब १६ लिटर पानी रहन्छ तब उतारेर छान्नू । अब गाईको घिउ ४ कि. गाईको दूध ४ लिटर, पहिले पकाएको गुर्जोको काढा र गुर्जोको लेदो मिसाएर मन्द आगोमा पकाउनू । जब घिउमात्र बाँकी रहन्छ तब उतारेर छान्नू । यो घृत ३-६ ग्राम मात्रामा मिश्री मिसाएर खान दिनू । यसको सेवनबाट रगत सफा हुन्छ, कुष्ठ तथा वातरक्त रोग नष्ट हुन्छन् । (परीक्षित)

यस घृतमा गुर्जोको काढा र लेदो जस्तै कुरिलोको काढा र लेदोका साथ गाईको घिउ र दूध राखी पकाउनू । यो **शतावरी घृत** तयार हुन्छ । शतावरी घृतले पनि वातरक्तमा आराम दिन्छ ।

ब्राह्मी घृत – जरा र पातसहित ब्राह्मीलाई पानीले पखाली कुटेर रस निकाल्नू । त्यो रस ४ लिटर ठीक पार्नू । बोझो, कुठ र शङ्खपुष्पी यी तीनैओटा

---

१. यो गुग्गुलुको नाम अनुसार घटक र द्रव्यहरू चक्रदत्त एवं भैषज्यरत्नावलीसँग मिल्दैन ।

समभाग मिसाई १०० ग्राम चूर्ण लिनू र सिलौटोमा पानीसँग पिनी लेदो पार्नू । अब उक्त ब्राह्मीको रस र बोझो आदिको कल्कका साथ गाईको घिउ १ किलो मिसाएर आगोमा पकाउनू । घिउमात्र बाँकी भएपछि छानेर राख्नू । यसको सेवन गर्नाले वातरक्त, उन्माद, अपस्मार आदि रोगहरू नष्ट हुन्छन् । मात्रा ६-१२ ग्राम (परीक्षित)

वातरक्त रोगमा उपयोगी लेपहरू

वातरक्तगजाङ्कुश लेप – फिटकिरी, अमलासार गन्धक, शालधूप यी प्रत्येक ४०-४० ग्राम, रसकपूर ६० ग्राम लिएर सबैलाई बेग्लाबेग्लै मसिनो गरी पिन्नू र मिसाइराख्नू । गाईको मख्खनलाई चरेसको थालीमा राखेर १०१ पटक धुनू । अनि उक्त घिउमा पहिले बनाएको चूर्ण मिसाइदिनू र फिटेर एकनास पार्नू । कम्मरदेखि खुट्टासम्म फैलिएको वातरक्त विकारमा यो लेप लगाईदिनू । ३-४ दिनमै पिप बग्ने आदि समस्यालाई आराम गरिदिन्छ । खटिराहरू सुकेर झर्छन् । यसले उपदंश र विसर्पमा पनि फाइदा गर्छ । यो लेप फेल खाँदैन, खूब परीक्षित हो ।

बाखाको दूध वा घिउमा गहुँको पिठो पकाएर त्यसको लेप गर्नाले वातरक्तमा आराम हुन्छ ।

अडेरलाई पानीमा पिनेर अथवा आलसको बियाँलाई दूधमा पिनेर लेप गर्नाले वातरक्तमा आराम हुन्छ ।

सर्स्यूलाई पानीमा पिनेर बाक्लो लेप गर्नाले अथवा सहिजन वा वरुणको बोक्रालाई काँजीमा पिनेर लेप गर्नाले वातरक्तको पीडा शान्त हुन्छ । यो सिद्ध योग हो । (परीक्षित)

अमलासार गन्धक, भैंसीको ताजा घिउ, गोमूत्र, दूध, सिंधे नुन यी सबलाई मिसाई मन्द आगोको आँचमा तताएर शरीरमा लगाउनाले वातरक्तका कारण भएको जोर्नीको पीडा शान्त भएर जान्छ । (परीक्षित)

गरीबका लागि खाने औषधी – असुरो, अमलतासको गूदी, गुर्जो यी तीनैथरी जम्मा २० ग्राम लिएर ३०० मि.लि. पानीमा पकाउनू । एक चौथाई पानी बाँकी हुँदा छान्नू र त्यसमा अडेरको तेल २०-३० मि.लि. मिसाएर पिउन दिनू । यस काढाको सेवनले पखाला लागेर सारा शरीरमा फैलिसकेको शोथ र दाहसहितको वातरक्त आराम हुनेछ । (परीक्षित)

निशोथ, विदारीकन्द र तालमखानाको काढा पिउनाले वातरक्तको नाश हुन्छ । (परीक्षित)

गुर्जोको रस पिउन दिए पनि राम्रो हुन्छ । (परीक्षित)

३ वा ५ ओटा सानो हर्रो पिनेर गुड मिसाई खाने र माथिबाट गुर्जोको काढा

पिउने गर्नाले घुँडासम्म फैलिसकेको तथा पिप आदि बग्दै गरेको वातरक्त पनि आराम भएर जान्छ ।

शुद्ध गुग्गुल र गुर्जोलाई दाख तथा बिमिरोको रसमा अथवा त्रिफलाको काढामा घोटेर सानो बयरसमानको (५०० मि.ग्रा.को) गोली पार्नू । यो १ गोली महमा घोटेर चाट्नाले महाघोर तथा समस्त अंग दुखाउने, गोडा फुट्ने अवस्थाको वातरक्तमा तुरुन्त आराम हुन्छ । (परीक्षित)

वर्धमान पिप्पलीको सेवनले पनि वातरक्तको नाश हुन्छ ।

मुण्डीको[1] चूर्णलाई गाईको घिउ र महमा मिसाई खाएर माथिबाट गुर्जोको काढा पिउनाले वातरक्त र पिनासको रोग नष्ट हुन्छ ।

४१. उरुस्तम्भ रोग (तिघ्रा बढी दुख्ने रोग)

अत्यन्त तातो वा चिसो, सुख्खा र भारी पदार्थ खाने गर्नाले दिउँसो सुत्ने, राती जागा बस्ने गर्नाले, भय तथा अजीर्ण आदि कारणहरूले गर्दा कफ, मेद र वायु दूषित हुन्छन् । तिनीहरू आमसँग मिलेर पित्तलाई आफ्नो अधीन बनाउँछन् र तिघ्राहरूमा प्रवेश गरेर तिघ्राका हाडहरूलाई कफले भरिदिन्छन् । त्यस अवस्थामा दुवै तिघ्राहरू चिसा, निर्जीव र नचल्ने हुन्छन् । त्यसलाई उरुस्तम्भ रोग भनिन्छ ।

पूर्वरूप – उरुस्तम्भ रोग लाग्नुभन्दा पहिले अत्यन्त निद्रा लाग्ने, काममा असजिलो हुने, ज्वरो आउने, रोमाञ्च हुने भैरहन्छ । अरुचि, वमन, पिडौँला र तिघ्रामा वेदना यी लक्षणहरू हुन्छन् ।

प्रमुख लक्षण – यस रोगमा गोडाहरू दुख्छन् र काठजस्तै निर्जीव भएर जान्छन् । गोडा उचाल्दा वा तल झार्दा दुख्ने गर्छ, हिँडडुल गर्ने सामर्थ्य हुँदैन । जोर्नीहरूमा केही मात्रामा पोलेजस्तो पीडा हुन्छ । चिसो वस्तु वा बरफको चिसोपनको ज्ञान हुँदैन । उसको गोडा अरूले उचालिदिनुपर्ने हुन्छ । यसमा वातनाशक तेलको मालिस गर्दा फाइदा गर्दैन, पीडा झन् बढेर जान्छ ।

---

१. मुण्डी २ प्रकारको हुन्छ - सानो र ठूलो । मुण्डीको पात अलि लामो, रौँ भएको, काँडा भएको, धारयुक्त हुन्छ । यसको फूल घुण्डीसमान गोल, साह्रो र बैंगनी रंगको हुन्छ, एक डण्डीको अघिल्लो भागमा १-१ फूल लाग्छ । धानको खेत, आँपको बगैँचा र गाउँका आसपासमा मुण्डीका बोटहरू पाइन्छन् । जब धानका खेतहरूमा वर्षाको पानी सुक्न थाल्छ तब मुण्डीका बोटहरूमा अङ्कुर फुट्छन् । जब धान पाकेर काट्ने वेला हुन्छ तब मुण्डी जमीनमा फैलिन्छ । पुसको महिनामा यसमा फूल लाग्छन् । यो रसायन, मेधाजनक छ र यसले पखाला चलाउँछ । स्वरलाई शुद्ध पार्छ र नेत्रका लागि हित गर्छ । मुण्डीको पातको रस पिउनाले र छालामा लगाउनाले गलगाँड, गण्डमाला आदिमा आराम हुन्छ ।

साध्यासाध्यता – उरुस्तम्भ रोगका साथ दाह, सियोले घोचे झैं दुख्ने, शरीर काम्ने भइरहेमा रोग असाध्य र घातक हुन्छ । रोग तत्काल उत्पन्न भएको छ र दाह आदि उपद्रवहरू छैनन् भने आराम हुन सक्छ । रोग पुरानो भएमा कष्टसाध्य हुन्छ ।

चिकित्साको सिद्धान्त – यस रोगमा तेल आदिले मालिस गर्नु, रगत निकाल्नु, वमन गराउनु, विरेचन दिनु, वस्तिको प्रयोग गर्नु यी सबै हानिकारक हुन्छन् ।

यो रोग कफ, आमवात र मेदको अधिकताका कारण हुन्छ यसैले यसमा कफ, आमवात र मेद नष्ट हुने उपाय गर्नुपर्छ । अतः यसमा रुक्ष पदार्थ सेवन गराउनुपर्छ । रुक्ष पदार्थ सेवन गराउँदै जाँदा निद्रा आउनमा कमी भयो भने वायुको कोप भएको संझनुपर्छ । त्यस अवस्थामा तेल आदिको मालिस गराएर पसिना बगाई वायुलाई अनुकूल पार्नुपर्छ । विचार पुऱ्याई रुक्ष उपचार पनि बढी नगरेर समयमै वातनाशक क्रियाहरू पनि गर्नुपर्छ ।

रोगीलाई पानीमा पौडन वा डुबुल्की मार्न लगाउनुपर्छ । यस प्रकारको परिश्रम र उपचारबाट कफ र मेद नष्ट भएपछि वातनाशक तेल आदिको मालिस गराउनुपर्छ ।

यस रोगमा रुखो पदार्थको सेवन, पसिना निकाल्नु, लंघन अर्थात् उपवास गर्नु, पुरानो चामल, कोदो, मूँग, जाङ्गल जीवहरूको मांस, मुला, भण्टा, बिना नुनको साग यी कुराहरू पथ्य हुन्छन् । नदी वा तलाउमा पौडी खेल्नु[1] र सूर्यको किरणले तातेको बालुवामा हिंड्नु, दगुर्नु यी हितकारी हुन्छन् ।

सामान्य चिकित्सा – चितु, इन्द्रजौ, पाठा, अतीस, कुटकी र हर्रो यी सबै समभाग लिएर कुठीछानी चूर्ण बनाउनू । यो चूर्ण ३–६ ग्राम मात्रामा मनतातो पानीसँग सेवन गराउनू । उरुस्तम्भ र वातका समस्त रोगहरू आराम भएर जान्छन् । भोक जागेर आउँछ, २–३ पटक दिसा दिनदिनै हुन्छन् । (परीक्षित)

योगराज गुग्गुलु पनि यस रोगमा परम हितकारी हुन्छ । यस रोगमा पुरानो गुग्गुलु नै सेवन गराउनुपर्छ जसबाट कफ र मेद घटोस् । रास्नादि क्वाथले पनि अवश्य लाभ हुन्छ ।

निर्गुण्डी (सिमाली)को पातको काढा पिप्ला चूर्ण हालेर पिउने गर्नाले उरुस्तम्भ रोगमा आराम हुन्छ । (परीक्षित)

---

१. जुन दिशाबाट नदीको प्रवाह आएको छ त्यतैतिर नदीको पानीमा २-३ किलोमीटर हिँड्ने गर्नुपर्छ ।

शुद्ध गुग्गुलु (१ ग्राम) र हर्रोको चूर्ण (३ ग्राम) खाएर माथिबाट गोमूत्र पिउने गरेमा उरुस्तम्भ रोग आराम भएर जान्छ । (परीक्षित)

पिप्लाको जरा, शुद्ध भलायो र पिप्लाको काढा बनाई मह मिसाएर पिउने अथवा तीनै थरीलाई कुटी छानी मिसाएर बनाएको चूर्ण महसँग खाने गर्नाले उरुस्तम्भ रोगमा आराम हुन्छ ।

अश्वगन्धा, आँकको जरा र नीमको जरालाई गोमूत्र राखी पिनेर लेप गर्न लगाउनू । अथवा सर्स्यूलाई महका साथ पिनेर तातो पारी तिघ्राहरूमा लेप लगाउनू । अथवा सर्स्यूको चूर्णलाई धतुरोको पातको रसमा पिनेर आगोमा तताउनू र तिघ्रामा लेप लगाईदिनू । उरुस्तम्भ रोगमा आराम हुन्छ ।

अश्वगन्धा र देवदारुको चूर्णलाई गोमूत्रका साथ पिनेर लेप गरेपनि यस रोगमा आराम हुन्छ । (परीक्षित)

विशिष्ट योगहरू

अमृता गुग्गुलु – गुर्जो ३२० ग्राम, शुद्ध गुग्गुलु १६० ग्राम, हर्रोको बोक्रा १६० ग्राम, बर्रोको बोक्रा १६० ग्राम लिएर जौकुट चूर्ण पार्नू । अनि सबैलाई ३२ लिटर पानीमा पकाउनू । जब ८ लिटर पानी बाँकी रहन्छ अनि उतारेर छान्नू । त्यो काढालाई फेरि आगोमा पकाउनू । पकाउँदै जाँदा जब बाक्लो भएर आउँछ अनि त्यसमा त्रिफला चूर्ण ३० ग्राम राखी बेसरी घोट्नू र ५०० मिलीग्रामको गोलीहरू बनाई घाममा सुकाई सिसीमा सुरक्षित राख्नू । यो अमृता गुग्गुलु हो । यो औषधी उचित मात्रामा खाने गर्नाले वातरक्त, कुष्ठ, आमवात र उरुस्तम्भ आदि आराम भएर जान्छन् ।

अर्को अमृता गुग्गुलुको विधि – हर्रो ६४० ग्राम, अमला १६० ग्राम, पुनर्नवा १६० ग्राम यी सबैलाई कुटेर ३२ लिटर पानीमा पकाउनू । जब ८ लिटर पानी बाँकी रहन्छ अनि बाक्लो कपडाले छान्नू । उक्त काढालाई फेरी आगोमा पकाउनू । बाक्लो हुँदै गएपछि त्यसमा दन्ती, चितुको जरा, पिप्ला, सुठो, त्रिफला, गुर्जो, दालचिनी र वायुविडङ्ग यी प्रत्येकको चूर्ण २०-२० ग्राम तथा निशोथको चूर्ण १० ग्राम मिसाइदिनू र राम्ररी घोट्नू । अब सानो बयर जत्रा (५०० मिलीग्राम) गोलीहरू बनाई घाममा सुकाएपछि सुरक्षित गरिराख्नू । यो अश्विनीकुमारहरूद्वारा उपदेश गरिएको अमृता गुग्गुलु हो । यसको सेवन गर्नाले वातरक्त, आमवात र उरुस्तम्भ रोगहरू नष्ट हुन्छन् ।

सैन्धवाद्य तेल – सिँधे नुन ८० ग्राम, सुठो २०० ग्राम, पिप्लाको जरा ८० ग्राम, चितुको जरा ८० ग्राम, शुद्ध भलायो गेडा २० यी सबैको चूर्ण बनाई सिलौटोमा पिन्नू र कल्क बनाउनू । अब कालो तिलको तेल ४ लिटर, काँजी ३२

लिटर तथा उक्त कल्क (लेदो) सबलाई कराहीमा राखी मन्द आँचमा आगोमा पकाउनू। जब तेलमात्र बाँकी हुन्छ अनि उतारेर छान्नू। यो तेल गृध्रसीवात, उरुस्तम्भ आदि रोगहरूका लागि रामबाण हो। यदि तेलमा तिलको तेलको सट्टा अडेरको तेल राखेमा झन् राम्रो काम गर्छ। (परीक्षित)

पथ्य – दिनमा पुरानो बासमती चामल, मसुरो, मूँग, चनाको दाल, गहत, पर्वर, डुम्री, भण्टा, अदुवा, लशुन र खसी, परेवा, कुखुराको मासुको झोल खान दिनू। रातो चामल, जौ, करेलो, नीमको पात, मह, गोमूत्र यी पथ्य हुन्छन्। रातमा रोटी वा पूरीका साथ उल्लिखित तर्कारीहरू अथवा सूजी-घिउ-चिनीको हलुवा खान दिनू। जलपानमा खजूर, किसमिश, छोहडा दिनू। पानी उमालेर सेलाएको दिनू। भर्सक स्नान नगर्नू। स्नान गर्ने मन भए तातो पानीले नुहाउनू।

अपथ्य कुराहरू – कफ बढाउने कुराहरू माछा, माष, गुड, दही बढी खानु, दिनमा सुत्नु, रातमा जागा बस्नु, शीतमा सुत्नु यी सबै अपथ्य हुन्छन्।

४२. आमवात रोग (जोर्नी वात)

जठराग्नि अर्थात् पाचक रस मन्द भएर जब खाएको भोजनको सार रस रगतको रूपमा बन्न पाउँदैन तब त्यो रस आमाशय आदि स्थानहरूमा जम्मा हुन थाल्छ। त्यसरी सञ्चित हुने पदार्थलाई 'आम' भनिन्छ।

जब कुपित वायुद्वारा आमाशय आदिमा जम्मा भएको आम रस चारैतिर चलायमान हुन्छ, अनि कफ र पित्तसँग मिसिएर विदग्ध वा अमिलो भएर जान्छ त्यस अवस्थामा त्यही अमिलो रसले सन्धि वा जोर्नीमा पुगेर ज्वरो तथा जोर्नीहरू भाँचिएजस्तो लक्षण उत्पन्न गराउँछ। यस किसिमको रोगलाई आमवात अथवा गठिया रोग भनिन्छ।

सम्प्राप्ति – विरुद्ध आहार-विहार आदि कारणहरूबाट अग्नि मन्द भएर बनेको आमरस कुपित वायुबाट प्रेरित भएर जब कफका मुख्य स्थान आमाशय आदिमा पुग्छ र कफसँग मिलेर विकृत भएपछि पित्तलाई समेत कुपित बनाउँछ। अनि त्यस आमले शरीरका धमनी आदि स्रोतहरूमा गएर अवरोध गराउँछ र वायुलाई समेत अझ कुपित गराउँछ। कुपित वायुको प्रेरणाबाट आम फैलिन थाल्दा मुटु पनि प्रभावित हुन्छ, विकृत पनि हुन्छ। त्यहाँबाट धमनीहरूमा पुग्दा त्यसले स्रोतहरूमा क्लेद बढाउँछ र मुटुमा गह्रुँगोपन एवं दुर्बलता ल्याउँछ। कुपित वायु र कफ एकसाथ कुपित अवस्थामा जब कोष्ठ, त्रिकप्रदेश तथा सन्धिहरूमा पसेर सम्पूर्ण शरीरलाई जकडिदिन्छन्। यस किसिमबाट आमवात रोग उत्पन्न हुन्छ।

आमवातको लक्षण – यसमा जठराग्नि मन्द हुन्छ, मुखबाट ऱ्याल चुहुने गर्छ, अरुचि हुन्छ, शरीर गह्रुँगो भएजस्तो लाग्छ । उत्साह वा जाँगर कम भएर जान्छ, मुखको स्वाद बिग्रिन्छ, शरीरमा दाह हुन्छ, बढी पिसाब लाग्छ, पेट कडा भएर आउँछ र दुख्न थाल्छ, दिउँसो निद्रा लाग्ने र राती निद्रा हराउने हुन्छ । बढी प्यास लाग्ने र वमन हुने हुन्छ । मूर्च्छा पर्ने हुनसक्छ । मुटु कस्सिएको अनुभव हुन्छ, दिसा खलास हुँदैन – रोकिन्छ । आन्द्राहरूमा गुडगुड आवाज आउने, पेट फुल्ने भइरहन्छ ।

रोग बढेर गएको अवस्थामा सन्धिहरू (जोर्नी) खुम्चने, हात, गोडा, गोलीगाँठा, घुँडा र कम्मरको जोर्नीहरू सुन्निएर दुख्ने हुन्छन् । आमदोष शरीरको जुन भागमा पुग्छ त्यहाँ बिच्छीले टोकेजस्तै तीव्र पीडा हुन्छ ।

दोष अनुसार विशेष लक्षण – आमवातमा सन्धिहरूमा शूल बढी भएमा वायुको विशेष प्रकोप भएको बुझ्नुपर्छ । रोग लागेको अंग अर्थात् जोर्नी आदिमा रातोपन र दाह (पोल्ने) भएमा पित्तको पनि प्रकोप बुझ्नुपर्छ । शरीर राम्ररी नचल्ने, भारी र चिलाउने भएमा कफको सम्बन्ध बुझ्नुपर्छ ।

साध्य र असाध्यको विचार – कुनै एक दोषबाट उत्पन्न आमवात साध्य हुन्छ, दुई दोष बढेर उत्पन्न भएको आमवात याप्य हुन्छ र तीनै दोषहरू कुपित भएर उत्पन्न आमवात असाध्य हुन्छ । तीन दोषहरूको प्रकोपबाट उत्पन्न आमवातमा पूरै शरीर सुनिएर आउँछ । यस्तो आमवात आराम हुँदैन । आमवात रोग सुरु हुने बित्तिकै चिकित्सा गर्न थाल्नुपर्छ, यो रोग पुरानो भएपछि कष्टसाध्य हुन्छ ।

चिकित्साको सिद्धान्त – लंघन, स्वेदन र विरेचन आमवातको मुख्य चिकित्सा हो । यी उपायहरू गर्नाले यो रोग सजिलोका साथ आराम भएर जान्छ ।

भावप्रकाश अनुसार यस रोगमा पहिले लंघन (उपवास) गराउनुपर्छ, त्यसपछि सेक्ने काम गर्नुपर्छ । तितो, तातो, तीक्ष्ण र अग्नि बढाउने औषधी दिनुपर्छ । विरेचन तथा स्नेहन पछि वस्तिको प्रयोग गर्नुपर्छ ।

आमवात भएर शरीरको जोर्नी आदिमा बढी दुखेको बेलामा दुखाई निको पार्न बालुवालाई आगोमा तताएर कपडामा राखी पोको बनाएर दुखेको अंगमा सेक्ने गर्नू । यो बालुवाको पोटलीद्वारा सेक्ने कामलाई रुक्ष स्वेद भनिन्छ ।

अथवा कपासको बियाँ, गहत, तिल, जौ, अडेरको जरा, आलस, पुनर्नवा, सनपाटको बियाँ, सहिजन यी सबै अथवा जुन-जुन पाइन्छन् तिनीहरूलाई कुटेर काञ्जीमा भिजाउनू र एउटा कपडामा पोको पारी पोटली बनाउनू । एउटा हाँडीमा काञ्जी भरेर त्यसमा अनेकौं छिद्र भएको ढकनीले ढाकिदिनू । हाँडी र ढकनीको सन्धिलाई गिलो माटोले बन्द गर्नू र सन्धिबाट भित्रको बाफ बाहिर नजाने बनाउनू । अब त्यो हाँडीमा चुलोमाथि बसाल्नू र उक्त पोटलीलाई ढकनीमाथि राख्नू । जब त्यो

पोटली तातेर आउँछ अनि त्यसद्वारा आमवातको कारण दुखेको ठाउँमा सेक्नू । यसरी बारम्बार सेक गर्नाले दुखेको अवश्य आराम हुन्छ । यसलाई संकर स्वेद भनिन्छ ।

आमवातमा तातो पानीले नुहाउनु पनि उचित हुँदैन ।

आमवातमा ज्वरो पनि भएमा रोटी, दालभात आदि खाना नदिएर साबुदाना आदि हल्का भोजन दिनुपर्छ । दही, माछा आदि कुनै हालतमा दिनुहुँदैन ।

दुखेको ठाउँमा कपास, फलाटीनको कपडा आदिले बाँधी राख्नुपर्छ ।

आमवातनाशक सरल योगहरू

कचूर र सुठोलाई सिलौटोमा पिनेर चूर्ण बनाउनू अथवा लेदो पार्नू । पुनर्नवाको काढा पकाई त्यसैमा पहिले बनाएको लेदो मिसाउनू र रोगीलाई खान दिनू । यसले गठिया रोगलाई निको पार्छ । (परीक्षित)

सुठो, मरिच, वायुविडङ्ग र सिंधेनुन यी सबैको चूर्ण बनाई तातो पानीसँग खान दिनू । यसले आमवातलाई फायदा गर्छ र अग्निलाई बढाउँछ । यो चूर्ण दहीको तोड (फाटेको पानी)सँग सेवन गरेमा अग्निलाई खूब बढाउँछ ।

सुठो र गोखुरको काढा सधैँ बिहान खानाले आमवात र कम्मर दुखेको आराम हुन्छ । यो काढा पाचक पनि हुन्छ । (परीक्षित)

सुठो र गुर्जोको काढामा पिप्लाको चूर्ण मिसाएर खाएमा आमवात, कम्मर जकडिएको र शरीर सुनिएकोमा आराम हुन्छ । (परीक्षित)

राती २० ग्राम कचूर पानीमा भिजाइदिनू । बिहान त्यसलाई मिचेर छान्नू र पिउन दिनू । यसबाट आमवात ठीक हुन्छ ।

चिराइतो ३ ग्रामलाई २० मि.लि. पानीमा राती भिजाइदिनू । बिहान त्यसलाई मिचेर छान्नू । त्यसमा ६ ग्राम मह, २५० मिलीग्राम कपूर र २५० मिलीग्राम शिलाजीत मिसाई पिउनू । यसले आमवात, जीर्ण ज्वर र सबै किसिमका कृमिरोगलाई नाश गर्छ । (परीक्षित)

मुण्डी र सुठो समभाग लिएर कुटी छानी चूर्ण बनाउनू । त्यो चूर्ण ३ ग्राम तातो पानीसँग खानाले आमवात रोग नष्ट हुन्छ । (परीक्षित)

आमवात नाशक विशिष्ट योगहरू

रसोनादि कषाय – लशुन, सुठो र निर्गुण्डी सिमाली यी तीनैवटा समभाग लिएर चूर्ण बनाउनू । त्यसबाट २० ग्राम चूर्ण लिएर १६० मि.लि. पानीमा पकाई ४० मि.लि. बाँकी भएपछि छान्नू र काढा बनाउनू । यो काढा आमवातका लागि रामबाण हुन्छ । यसले उत्तम काम गर्छ ।

रास्नासप्तक क्वाथ – रास्ना, देवदारु, राजवृक्षको गुदी, गोखुर, पुनर्नवा, अडेरको जरा र गुर्जो यी सातैओटा समभाग गरी कुटेर काढा पकाउनू र त्यसमा सुठोको धूलो मिसाएर खान दिनू । यसबाट चाँडै नै आमवात रोग आराम भएर जान्छ । यस बाहेक कम्मर, पिठ्यूँ, पिडौँला र तिघ्रा दुखेकोमा समेत आराम गर्छ । (परीक्षित)

महारास्नादि क्वाथ – रास्ना, अडेरको जरा, असुरो, जवासा, देवदारु, कचूर, बला, नागरमोथा, अतीस, हर्रो, गोखुर, राजवृक्ष, सूप, धनियाँ, पुनर्नवा, अश्वगन्धा, गुर्जो, पिप्ला, विधारा, कुरिलो, बोझो, सुठो, सैरेयक, चाबो, कण्टकारी र बिंही यी सबैमा रास्ना २ ग्राम र अरू द्रव्यहरू प्रत्येक १-१ ग्राम लिएर यवकुट चूर्ण बनाउनू र ५०० मि.लि. पानीका साथ माटाको भाँडामा राखी पकाउनू । जब आठौँ भाग पानी बाँकी रहन्छ (६० मि.लि.) अनि उतारेर छान्नू । दोष र रोगको बिचार गरी कुनै वातनाशक औषधी खानू र साथमा यो काढा पनि पिउनू । यसबाट समस्त वातरोग, सन्धिवात, योनिरोग, शुक्रदोष, महिलाहरूको बाँझोपन नष्ट हुन्छन् । यसले महिलाहरूको शरीरलाई स्वस्थ बनाई गर्भवती हुन राम्रो मद्दत गर्छ । (परीक्षित)

पुनर्नवादि चूर्ण – सुठो, गुर्जो, शतावरी, गोरखमुण्डी, कचूर, देवदारु यी सबै समभाग लिएर कुठी छानी चूर्ण बनाउनू । यो चूर्ण ३ ग्राम काञ्जीका साथ खानाले आमवात र पुरानो गृध्रसीको रोग नष्ट हुन्छन् । (परीक्षित)

रसोन दशक चूर्ण – लशुन, हिँग, त्रिकटु (सुठो, मरिच, पिप्ला), सिंधे नुन, सेतो जिरा, सौँचर नुन, बिरे नुन र कचिया नुन प्रत्येक १००-१०० ग्राम लिएर कुटी छानी मसिनो चूर्ण बनाएर मिसाइराख्नू । यो चूर्ण १० ग्राम लिएर तिलको तेल मिसाई नित्य बिहान खाने गर्नू । यसबाट आमवात रोग नाश भएर जान्छ । (परीक्षित)

हरीतकी चूर्ण – हर्रोको चूर्ण ५ ग्राम लिएर अडेरको तेलमा भुट्नू र खाने गर्नू । यसले आमवात रोगलाई नाश गर्छ । (परीक्षित)

पिप्पल्यादि चूर्ण – पिप्ला, पिप्लाको जरा, सिंधे नुन, कालो जिरा, चावो, चितुको बोक्रा, तालीसपत्र र नागकेशर प्रत्येक १००-१०० ग्राम लिनू । कालो नुन ६० ग्राम, मरिच ५० ग्राम, सेतो जिरा ५० ग्राम, सुठो ५० ग्राम, दाडिम (अनार)को बियाँ २०० ग्राम, अम्लवेत १०० ग्राम लिएर सबलाई कुटी छानी चूर्ण बनाउनू । यसको नाम 'पिप्पल्यादि चूर्ण' हो । यसको १-१ मात्रा (३-६ ग्राम) मह वा तातो पानीसँग खानाले मन्द भएको जठराग्नि (पाचक रस) दीप्त हुन्छ । ग्रहणी, गुल्म, उदर रोग, अरुचि तथा कृमिलाई नष्ट गर्छ । यो आमवातको उत्तम औषधी हो ।

पञ्चकोल चूर्ण – पिप्ला, पिप्लाको जरा, चाबो, चितु र सुठो यी सबै समभाग लिएर चूर्ण बनाउनू । त्यो चूर्ण ३ ग्राम मात्रामा तातो पानीसँग खान दिनू । मन्दाग्नि, शूल, अरुचि र आमवात यी सब नाश हुन्छन् ।

वैश्वानर चूर्ण – सिंधे नुन २० ग्राम, ज्वानु २० ग्राम, अजमोद ३० ग्राम, सुठो ५० ग्राम, हर्रो १२० ग्राम, सबलाई कुटी छानी चूर्ण बनाएर मिसाइराख्नू । यो चूर्ण तातो पानीसँग ३ ग्राम मात्रामा सेवन गर्नाले आमवात, गुल्म आदि रोगहरू आराम भएर जान्छन् । यस चूर्णले वायुलाई उचित बाटोमा चलाउँछ । (परीक्षित)

आमवातनाशक योग – चितुको जरा, त्रिकटु, वायुविडङ्ग, सिंधे नुन, नागरमोथा, तज, तालीसपत्र, चावो, सुकमेल, देवदारु, कुठ, लशुन, ज्वानु, खुरासानी ज्वानो, रास्ना, गोखुर, धनियाँ, सेतो जिरा, यवक्षार, अजमोदा, कुरिलोको जरा, सूप र काशको जरा यी सबै समभाग लिएर सबैको समभाग शुद्ध गुग्गुलु लिनू । उक्त सबै औषधीहरू कुठी छानी चूर्ण बनाउनू र शुद्ध गुग्गुलुका साथ सबै चूर्ण र घिउ खलमा राखी खल गर्नू । त्यसपछि गोली बनाई चिल्लो भाँडोमा सुरक्षित गरिराख्नू । यो औषधी नित्य १० ग्राम जति सेवन गरी यथेष्ट आहार-विहार गर्नाले आमवात निश्चय नै आराम भएर जान्छ । (परीक्षित)

अजमोदादि वटिका – अजमोदा, मरिच, पिप्ला, वायुविडङ्ग, देवदारु, चितु, सूप, सिंधे नुन, पिप्पलीमूल सबै ४०-४० ग्राम, सुठो ४०० ग्राम, विधारा ४०० ग्राम, हर्रो २०० ग्राम सबैलाई कुटी छानी चूर्ण बनाउनू । अनि सबैको बराबर अर्थात् १ किलो ३६० ग्राम लिएर पानी मिसाई आगोमा पकाएर चासनी तयार गर्नू । चासनी बाक्लो हुँदै गएपछि पहिले बनाएको औषधीहरूको चूर्ण मिसाउनू र ४-४ ग्रामका गोलीहरू तयार पार्नू । यो १ गोली बिहान-बेलुका तातो पानीसँग सेवन गर्नाले ८० प्रकारका वातरोगहरूलाई नष्ट गर्छ । यो गोलीका साथ महारास्नादि क्वाथ सेवन गरेमा विशेष लाभ हुन्छ ।

आमवातारि गुटिका – मदिसे सूप, स्वाग (शुद्ध), ल्वाङ, मरिच, निशोथ, त्रिफला, यवक्षार, सानो पिप्ला प्रत्येक १०-१० ग्राम, धनियाँ २० ग्राम, सेतो जिरा २० ग्राम, ज्वानु ८० ग्राम, सुठो १६० ग्राम यी सबैलाई कुटीछानी चूर्ण बनाउनू र मिसाएर राख्नू । फेरि कचूर, सुकमेलको बियाँ, तेजपात र दालचिनी पनि प्रत्येक ६-६ ग्राम लिएर कुटी छानी चूर्ण बनाएर राख्नू । यस बाहेक १ किलो ४४० ग्राम मिश्री र ५० ग्राम मह पनि तयार गरिराख्नू । पहिले मिश्रीलाई पानी मिसाई पकाएर चासनी तयार पार्नू । पाकेर लड्डू बनाउन लायक भएपछि उतार्नू र पहिले बनाइराखेका चूर्णहरू त्यसमा मिसाइदिनू । पछिबाट मह पनि मिसाउनू र १०-१० ग्रामका लड्डूहरू तयार पार्नू । नित्य १ लड्डू बिहान खानाले असाध्य आमवात पनि नाश भएर जान्छ, फेल खाँदैन । यो औषधी अम्लपित्तमा पनि काम दिन्छ ।

वातगजकेशरी गुग्गुलु – शुद्ध अमलासार गन्धक ५० ग्राम, शुद्ध गुग्गुलु ५० ग्राम, त्रिफला ५० ग्राम सबैलाई कुटी छानी ५० मि.लि. अडेरको तेलका

साथ खलमा घोटी मिसाउनू र ५-५ ग्रामको गोली पार्नू। यो २ गोली नित्य बिहान खाई तातो पानी पिउने गर्नाले २१ देखि ४० दिनसम्ममा कुनै औषधीले आराम नभएको असाध्य आमवात पनि ठीक हुन्छ। (परीक्षित)

आमवातगजकेशरी रस – शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, लौह भस्म, नाग भस्म, शुद्ध टंकण, शुद्ध वत्सनाभ विष, अदुवा, सिंधे नुन, ल्वाङ, शुद्ध हिङ र जाइफल प्रत्येक १०-१० ग्राम, दालचिनी, तेजपात, अलैँचीको बियाँ, त्रिफला र सेतो जिरा प्रत्येक ५-५ ग्राम लिएर भस्मबाहेक अरू सबैको चूर्ण बनाएर राख्नू। पहिले पारद र गन्धक खलमा खूब घोटी बिना चमकको कज्जली तयार पार्नू अनि त्यसमा क्रमशः लौह भस्म, नाग भस्म, ताम्र भस्म र शुद्ध विष राखी खल गर्नू। पछि बाँकी औषधीहरूको चूर्ण पनि खलमा राख्नू र घिउकुमारीको रसका साथ सबै औषधी खल गर्नू। सबै औषधी खूब घोटिसकेपछि २५० मिलीग्रामका गोली पारी छायामा सुकाउनू। यो १ गोली महारास्नादि क्वाथसँग सेवन गरेमा आमवात र अन्य सबै वातरोग नाश हुन्छन्। (परीक्षित)

बृहत् सैन्धवाद्य तेल – सिंधे नुन, हर्रो, बर्रो, अमला, पिप्ला, ठूलो पिप्ला, रास्ना, सूप, ज्वानु, सज्जीक्षार, मरिच, कुठ, सुठो, कालो नुन, बिरे नुन, बोझो, अजमोद, जेठीमधु, सेतो जिरा, पुष्करमूल यी प्रत्येक २०-२० ग्राम लिएर चूर्ण बनाउनू र सिलौटोमा राखी पानी मिसाई कल्क बनाइराख्नू। त्यसपछि मूर्च्छित अडेरको तेल ६४० मि.लि., सूपको काढा ६४० मि.लि., १२८० मि.लि. काञ्जी र १२८० मि.लि. दहीको तोड तथा पहिले बनाएको औषधीहरूको कल्क सबैलाई कराहीमा राखी मन्द आँचमा आगोमा पकाउनू। तेलमात्र बाँकी भएपछि उतारेर छान्नू र सुरक्षित गरी राख्नू। यो तेल पिउने र मालिस गर्ने दुवै काममा प्रयोग गर्न सकिन्छ। यसलाई वस्तिको रूपमा पनि प्रयोग गर्न सकिन्छ। यसबाट आमवात तथा समस्त वातव्याधिहरू नष्ट हुन्छन्। यो तेलले अग्निबललाई खूब बढाउँछ। (परीक्षित)

महाविजयभैरव तेल – पारद १० ग्राम, गन्धक २० ग्राम, नीमको बोक्रा २० ग्राम, हरताल १० ग्राम, अफीम २० ग्राम, यी सबैलाई सिलौटोमा काञ्जीका साथ मसिनो गरी पिनेर एउटा कपडाको टुक्रामा लपक्क टाँस्नू र बेरेर बत्ती बनाउनू अनि घाममा सुकाउनू। खूब सुकेपछि त्यस बत्तीलाई तिलको तेलमा भिजाउनू। भुइँमा एउटा चीनियाँ माटोको ठूलो कचौरा राख्नू। अब त्यो बत्तीको एकतिर चिम्टाले समाती अर्कोतिर सलाई कोरेर आगो बाल्नू। आगो बल्न लागेपछि बत्तीबाट तेल तपतप चुहुन्छ। त्यसलाई चीनियाँ माटोको भाँडोमा जम्मा गर्नू। बीच-बीचमा त्यस बत्तीको आगोमा तेल चुहाउँदै गर्नू। जब मसला सकिन्छ अनि तेल हाल्न बन्द गर्नू। अब चीनियाँ माटोको भाँडोमा जम्मा भएको तेल सिसीमा सुरक्षित राख्नू। यस

तेलको मालिसले सबै किसिमका वातरोग तथा आमवात नष्ट हुन्छन् । (परीक्षित)

पथ्य कुराहरू – आमवातमा लंघन, वस्तिकर्म, लेप, विरेचनले हित हुन्छ । पुरानो चामल, गहत, जांगल पशुपक्षीहरूको मासुको झोल, अडेरको तेल, मही, लशुन, आँककको फूल, गोखुर, अदुवा, गहुँ वा जौको सुख्खा रोटीको सेवन गर्नु उचित हुन्छ ।

अपथ्य कुराहरू – आमवातमा ज्वरो भएमा चामलको भात खानुहुँदैन । दही, माछा, गुड, दूध, चिसो पानी, माषको दाल, बारा यी सबैले हानि गर्छन् । पूर्वबाट आउने हावाबाट बच्नुपर्छ ।

४३. मूर्च्छा रोग (बेहोसी)

संज्ञावाही नाडीहरूलाई कुपित वायु आदि दोषहरूले ढाकिदिएपछि एकाएक मानिसलाई अन्धकारले घेर्छ । त्यस अवस्थामा उसलाई सुख, दुःख कुनै कुराको ज्ञान हुँदैन, अर्थात् होश रहँदैन । अनि त्यो मूढोझैं भुईमा लड्छ । यसरी बेहोश हुने रोगलाई मूर्च्छा वा मोह भनिन्छ । दोषहरूको प्रकोपको वेग शान्त भएपछि रोगी आफैं होशमा आउँछ । उभिन खोज्दा मूर्च्छाको वेग आएमा फेरि वेहोश हुन्छ र लड्छ । उसको नाडी कमजोर भैकन छिटो चल्न थाल्छ अथवा अत्यन्त मन्द हुन्छ । श्वास अनियमित रूपमा छिटो वा लामो हुन्छ र मुख पहेंलो हुन्छ ।

कारणहरू – शरीरका धातुहरू र बल अत्यन्त कम भएको तर दोषहरू निकै कुपित भएको, विरुद्ध आहार सेवन गर्ने, वेगहरू रोक्ने, बढी चोटपटक लागेको अथवा सत्त्व गुण कम भएको मानिसमा जब कुपित दोषहरूले बाहिरी ज्ञानेन्द्रिय र आन्तरिक मनका आश्रय भएका स्थानहरूमा पुगेर विकृति ल्याउँछन्, त्यस अवस्थामा मानिस मूर्च्छा पर्छ । कसैले इन्द्रियहरूको स्थान हृदयलाई मानेका छन् भने कसैले मस्तिष्कलाई मानेका छन् ।

हारीत संहितामा यो कुरा भनिएको छ कि मनुष्यका पाँचओटै इन्द्रियहरूसँग १२-१२ नाडीहरूको सम्बन्ध हुन्छ अर्थात् इन्द्रियहरूसँग सम्बन्ध राख्ने कुल ६० नाडीहरू हुन्छन् । जब कुपित भएको दोषले उक्त नाडीहरूका द्वारहरू रोक्न थाल्छ तब मनुष्य मूर्च्छित हुन्छ ।

मूर्च्छाको पूर्वरूप – सबै किसिमका मूर्च्छाहरू हुनुभन्दा पहिले मुटु दुख्ने, बढी हाई आइरहने, शरीरमा ग्लानि भइरहने हुन्छ र इन्द्रियहरूद्वारा विषयहरूको ज्ञान राम्ररी हुँदैन ।

मूर्च्छाका भेदहरू – मूर्च्छा ६ किसिमको हुन्छ – वातज, पित्तज, कफज, रक्तज, मद्यज र विषज । यी सबैमा पित्तको प्रधानता हुन्छ ।

वातज मूर्च्छाको लक्षण – वातज मूर्च्छा भएको मानिसले मूर्च्छाभन्दा पहिले आकाश कालो, निलो वा रातो देख्छ र केही वेरमा मूर्च्छा पर्छ अनि चाँडै नै होशमा आउँछ । यस्तो मानिसको शरीरमा कम्पन (काम्ने) हुन्छ, अङ्गहरूमा असजिलोपन हुन्छ, मुटुमा दुख्ने हुन्छ । शरीर दुर्बल हुन्छ र मुखको छाया कालो वा रातो हुन्छ ।

पित्तज मूर्च्छाको लक्षण – यसमा रोगीले आकाश रातो, हरियो वा पहेंलो भएको देख्छ र त्यस्तो हेर्दाहिर्दै मूर्च्छा पर्छ । मूर्च्छाबाट ब्यूँझदा शरीरमा पसिना आएको हुन्छ । उसको शरीर तात्छ र आँखा रातो वा पहेंलो हुन्छ । उसलाई प्यास बढी लाग्छ । यसमा मूर्च्छा हुने बित्तिकै रोगी लड्छ र चाँडै नै ब्यूँझन्छ । उसलाई पखाला चल्छ र उसको मुखको रङ्ग पहेंलो हुन्छ ।

कफज मूर्च्छाको लक्षण – यसमा रोगी आकाशलाई अन्धकार र बादलहरूले ढाकेको हेर्दाहिर्दै मूर्च्छा पर्छ र ढिलो गरी होसमा आउँछ । उसको शरीर गहुँगा सिरक आदि अथवा चिसो छालाले बेरेजस्तो भारी र चिसो हुन्छ । मुखमा पानी भरिएको हुन्छ र वाकवाक भइरहन्छ ।

त्रिदोषज मूर्च्छाको लक्षण – त्रिदोषज मूर्च्छामा तीनैओटा दोषहरूका लक्षण देखिन्छ । यो मूर्च्छा हुने बित्तिकै रोगी अपस्मारको रोगीजस्तै वेगका साथ तत्काल ढल्छ र ढिलो गरी उठ्छ । यसमा अपस्मारमा जस्तो फिंज निकाल्ने, दाँत कटकटाउने, आँखा पल्टाउने लक्षण हुँदैन ।

रक्तज मूर्च्छाको लक्षण – कसैकसैलाई रगत बगेको देख्दैमा मूर्च्छा हुन्छ त्यसलाई रक्तज मूर्च्छा भनिन्छ । त्यसमा शरीरका हातगोडा र आँखा नचल्ने हुन्छन्, श्वासको गति गहिरो हुन्छ ।

मद्यज मूर्च्छाको लक्षण – रक्सी आदि मादक पदार्थ खाएर हुने मूर्च्छालाई मद्यज मूर्च्छा भनिन्छ । यसमा मद्य खाने मानिस बोल्दाबोल्दै वा कराउँदै भुईमा लड्छ, हातगोडा चलाइरहन्छ र मूर्च्छा पर्छ । उसको मन भ्रमित हुन्छ । जबसम्म मद्य पच्दैन तबसम्म त्यो होशमा आउँदैन ।

विषज मूर्च्छाका लक्षणहरू – कुनै विष खाएर मूर्च्छा भएमा त्यसलाई विषज मूर्च्छा भनिन्छ । यसमा शरीर काम्ने, धेरै बेरसम्म निदाउने, मूर्च्छा पर्ने र बढी प्यास लाग्ने हुन्छ । छुट्टाछुट्टै विषका अरू कडा विषलक्षण पनि हुन्छन् ।

संन्यास रोगको लक्षण – अत्यन्त कुपित अवस्थामा पुगेका र प्रबल दोषहरूले शरीर, मन र बोलीको चेष्टालाई प्रभावित पार्छन् अनि दुर्बल व्यक्तिको प्राणवह स्रोतमा पुगेर त्यसलाई विकृत गराउँछन् । त्यसपछि सम्बन्धित रोगीलाई बेहोस गराइदिन्छन् । त्यस्तो गम्भीर मूर्च्छाको अवस्थालाई संन्यास भनिन्छ । त्यसमा मानिस मृतक जस्तै अत्यन्त निष्क्रिय हुन्छ – उसको शरीरको हलचल केही हुँदैन, बोल्न

पनि बन्द हुन्छ, मनले पनि कुनै काम गर्दैन । त्यस अवस्थामा तत्काल रोगीलाई होसमा ल्याउने उपाय गर्नुपर्छ नत्र रोगीको मृत्यु हुन्छ । मूर्च्छा र मदको रोगमा दोषहरूको वेग शान्त भएपछि रोगी आफैं होसमा आउँछ तर संन्यासमा उचित उपचार नगरी होसमा आउँदैन ।

भ्रम रोगको लक्षण – यसमा रोगीले आफ्नो वरिपरीका सबै चीजहरू घुमिरहेको देख्छ, उभिन सक्दैन र भुईमा लड्छ । उभिन खोज्दा फेरि पनि उस्तै हुन्छ । रजोगुणका साथ वायु र पित्तको प्रकोपबाट भ्रम रोग उत्पन्न हुन्छ । यसलाई रिँगटा लाग्नु भनिन्छ ।

तन्द्राको लक्षण – निदाएको अवस्थामा जस्तै वरिपरिको कुरा थाहा नहुने, शरीर भारी हुने, हाइ आउने, थाकेजस्तो हुने अवस्थालाई तन्द्रा भनिन्छ । वायु र कफको वृद्धिका साथ तमोगुण पनि (मनमा) बढेको वेलामा तन्द्रा हुन्छ ।

मूर्च्छा रोगको सामान्य चिकित्सा – रोगीको मुखमा पानीको छिट्टा दिनुपर्छ । उसलाई नरम ओछ्यानमा सुताएर पङ्खा हम्कनुपर्छ । अमोनिया (नौसादर) एक–दुईपटक सुँघाउनुपर्छ ।

कपूर १ ग्राम, सेतो (श्रीखण्ड) चन्दन ६ ग्राम दुवैलाई गुलाबजलमा घोटेर सारा शरीर र शिरमा लेप गर्नाले मूर्च्छा परेको मानिस होशमा आउँछ ।

बयरको गुदी, मरिच, खस, नागकेशर यी सबै समभाग लिएर सिलौटोमा मसिनो गरी पिन्नू र चिसो पानीमा घोलेर अलिअलि मात्रामा ख्वाइदिनू । मूर्च्छित मानिसको होस खुल्छ । (खूब परीक्षित)

सानो पिप्लाको चूर्ण महमा मिसाई चटाउनाले मूर्च्छा कम भएर जान्छ । (परीक्षित)

शिरीषको बियाँ, पिप्ला, मरिच, सिंधे नुन, लशुन, शुद्ध मनःशिला र बोझो समभाग लिएर गोमूत्रमा मसिनो पारी पिन्नू र अञ्जन जस्तै आँखामा लगाउनू । यसबाट मूर्च्छित मानिसको होस खुल्छ ।

कण्टकारी, गुर्जो, सुठो र पिप्लाको जरा सबै मिलाई २० ग्राम लिएर काढा बनाउनू । काढा पाकेपछि छानेर त्यसमा सानो पिप्लाको चूर्ण २ ग्राम मिसाई खान दिनू । यसबाट दारुण मूर्च्छा नष्ट हुन्छ । (खूब परीक्षित)

सुँघाउनका लागि बेलायती अमोनिया पाइएन भने नौसादर ६ ग्राम र चून ३ ग्राम एउटा सिसीमा राखेर सुँघाउनू ।

सुकेको अमलाको बियाँ निकालेर गुदीको भाग जति कुटेर मसिनो चूर्ण बनाउनू । यसलाई उखुको रसमा १८ घण्टासम्म खल गर्नू । उखुको रसलाई घोट्दा घोट्दा जति सुकाउन सकिन्छ सुकाउनू । अन्तमा त्यसलाई घाममा सुकाएर पिन्नू र

कपडछान गरेर सुरक्षित रूपमा राख्नू । यो चूर्ण ३ ग्राम मात्रामा दिनको २ पटक ताजा पानीसँग खाने गर्नाले मूर्च्छा पर्ने, प्यास बढी लाग्ने, दाह हुने जस्ता अनेक पित्तसम्बन्धी रोगहरू शान्त हुन्छन् । (अनेक पटक परीक्षित)

केवडाको अर्कमा सेतो (श्रीखण्ड) चन्दन घोटेर सिसीमा राख्नू र सिसीको मुखमा मलमलको कपडाले बाँध्नू । सिसीलाई हल्लाउँदै रोगीलाई सुँघाउनू । मूर्च्छा तथा गर्मीका कारण हुने टाउको दुखाई आराम हुन्छ । (परीक्षित)

बाँझककोडा (वन्ध्याकर्कोटकी) को जरालाई घिउमा घोटी चिनी मिसाएर नसको रूपमा प्रयोग गर्नाले छारे रोग र मूर्च्छाको रोग नष्ट हुन्छ ।

यदि बच्चाहरूलाई कृमिका कारण मूर्च्छा आउँछ भने केशर तथा कपूरलाई दूधसँग घोटेर ख्वाउनाले अवश्य लाभ हुन्छ । कृमिनाशको लागि यो औषधी रामबाण नै हो । अथवा सेतो प्याज काटेर सुँघाउनू र त्यसको रस १-२ थोपा नाकमा राख्नू । यसले मूर्च्छा र उन्मादमा लाभ हुन्छ ।

चन्दन र कपूर पिनेर टाउकोमा लेप गर्नू, राम्रो हुन्छ ।

मूर्च्छानाशक हकीमी योग – स्त्रीको दूध नाकमा राख्ने, टाउकोमा दल्ने गरेमा मूर्च्छामा लाभ हुन्छ । स्त्रीको दूध नपाइएमा बाख्राको दूध प्रयोग गर्न सकिन्छ । अलिकति हिङ सूपको अर्कमा पिनेर घाँटीमा पुग्ने गरी मुखमा अलिअलि चुहाइदिएमा मूर्च्छामा लाभ हुन्छ ।

चोट लागेर अथवा लडेर भएको मूर्च्छाको चिकित्सा – शुद्ध शिलाजीत २० ग्राम, पिपलको रुखको लाहा ८० ग्राम दुवैलाई पिनेर सिसीमा सुरक्षित राख्नू । यो चूर्ण ३ ग्राम मात्रामा दिनमा ३-४ पटक तातो दूधसँग सेवन गर्नाले रक्तपित्त रोग र टाउको वा छातीमा चोट लागेर अथवा माथिबाट लडेर मूर्च्छित भएको अवस्थामा बडो लाभ गर्छ ।

हिस्टीरियाको मूर्च्छाको चिकित्सा – यसमा अमोनिया सुँघाउनू तर मुखनेर लगेर तुरुन्त हटाइहाल्नू, अबेरसम्म नाकको अगाडी नराख्नू । (परीक्षित)

मरिचको चूर्णलाई तुलसीको पातको रसमा मिसाई नस्य दिनाले यस्तो मूर्च्छितावस्थामा रोगीलाई तत्काल आराम हुन्छ ।

ल्वाङलाई दूधमा घोटी आँखामा अञ्जन गर्नाले मूर्च्छा नाश हुन्छ ।

संन्यास रोगको चिकित्सा – संन्यास रोग हुने बित्तिकै विलम्ब नगरी चिकित्सा सुरु गर्नुपर्छ । यसका लागि रोगीको आँखामा कडा अञ्जन प्रयोग गर्नू, नाकमा अतितीव्र नस्य दिनू । मरिच र बिमिरोको रस मुखमा थोपा-थोपा गरी राख्नू ।

रोगी होशमा आएपछि लशुनको रस पिउन दिनू। अथवा सुठो, मरिच, पिप्ला, सिंधे नुन र बिमिरोको रस मिसाएर खानेकुरा दिनू।

बालकहरूलाई संन्यास रोग भएमा अडेरको तेल रोगको अवस्था र रोगीको बल अनुसार पिउन दिएर दिसा लगाउनू। कृमिरोगका कारण संन्यास रोग लागेको भए कृमिनाशक औषधी दिनू। रातो रङ्गको जवासा १० ग्राम, बोक्रा झिकेको जेठीमधु १० ग्राम, सुकमेलको भित्री दाना २५० मिलीग्राम, मिश्री २० ग्राम सबलाई कुठी छानी ३०० मि.लि. पानीमा पकाउनू। जब १ चौथाई (७५ मि.लि.) पानी बाँकी रहन्छ अनि छान्नू र ४ ग्राम घिउ मिसाएर रोगीलाई खान दिनू। यही किसिमले बिहान-बेलुका यो काढा सेवन गर्नाले भ्रम रोग, मन आत्तिने आदि ठीक हुन्छन्। (परीक्षित)

भ्रम रोगको चिकित्सा – बलाको बीज ५ ग्राम र मिश्री १० ग्राम दुवैको चूर्ण बनाई मिसाएर खाएमा भ्रम रोग निश्चय नै नाश भएर जान्छ। (परीक्षित)

त्रिफलाको चूर्ण ९ ग्राम, मह १२ ग्राममा मिसाएर राती चाट्नू र बिहान ३ ग्राम अदुवामा ६ ग्राम गुड मिसाएर खाने गर्नू। यी उपायहरूबाट भ्रम रोग नष्ट हुन्छ।

हिक्मतको मत (यूनानी पद्धति) – सेतो खसखस, धनियाँ, कपासको बियाँ यी तीनैथरी समभाग लिएर चूर्ण बनाउनू। अनि सबै चूर्ण बराबरको मिश्रीको चूर्ण त्यसमा मिसाएर राख्नू। यो चूर्ण १-३ ग्राम मात्रामा दिनदिनै गुलाबजल वा मिश्रीसँग फाँक्नू। यसबाट रिँगटा लाग्ने समस्या हराउँछ।

धनियाँ ६ ग्राम र अमला ६ ग्राम दुवैलाई थिचेर राती पानीमा भिजाइदिनू। बिहान त्यसलाई मिचेर छान्नू र २४ ग्राम मिश्रीको धुलो मिसाएर खाइदिनू। यसले पित्तका कारण भएको भ्रम रोगमा आराम गर्छ।

अपामार्ग, धनियाँ, हर्रो तीनैओटा समभाग लिएर कुट्नू र त्यसबाट ४२ ग्राम लिएर ३५० मि.लि. पानीमा पकाई काढा बनाउनू र ७ दिनसम्म खान दिनू। यसबाट भ्रम रोग ठीक भएर जान्छ।

तन्द्रानाशक योग – घोडाको मुखको फिंजमा मरिचलाई घोटेर दुवै आँखामा अञ्जन गर्नाले तन्द्रा भङ्ग भएर जान्छ। (परीक्षित)

सिंधे नुन, सहिजनको बियाँ, सर्स्यू, कुठ सबै ३-३ ग्राम लिएर मसिनो चूर्ण बनाउनू। अब बाखाको पिसाबमा मिसाएर नाकमा नस दिनू। यसबाट घोर तन्द्रा पनि नष्ट हुन्छ।

बोझोलाई कुटेर मसिनो चूर्ण बनाई त्यसको अञ्जन लगाउनू र नस पनि राख्नू। साथमा Vinegar पनि सुँघ्नू। यसबाट तन्द्रा रोग र बढी निद्रा लाग्ने मेटिएर जान्छ।

विशिष्ट औषधी

अश्वगन्धारिष्ट – अश्वगन्धा २ किलो, मुसली ८०० ग्राम, मजिठो, ठूलो हर्रो, हलेदो, दारुहरिद्रा, जेठीमधु, रास्ना, विदारीकन्द, अर्जुनको बोक्रा, नागरमोथा, निशोथ प्रत्येक ४०० ग्राम, अनन्तमूल (दूधे लहरो), कालो सारिवा, सेतो चन्दन, रातो चन्दन, बोझो, चितुको जरा प्रत्येक ३२० ग्राम सबैलाई यवकुट गरी कुटेर ठीक पार्नू। अब सबैलाई २०५ लिटर पानीमा राखी काढा पकाउनू। अष्टमांश (अर्थात् २५ लिटर ६५० मि.लि.) पानी बाँकी भएपछि छानेर राख्नू।

अब चिनियाँ माटो वा अन्य माटोको चिल्लो, दरो घैंटो वा उपयुक्त भाँडामा त्यो काढा भर्नू। त्यसमा धयेंरोको फूल ६४० ग्राम, सुठो, मरिच र पिप्ला सबै मिलाएर ८० ग्राम, दालचिनी, अलैंची र तेजपात सबै मिलाएर १६० ग्राम, प्रियंगु (दहिकाम्लो)को फूल १६० ग्राम, नागकेशर ८० ग्राम यी सबैको चूर्ण बनाएर मिसाइराख्नू। साथमा राम्रो मह अथवा पुरानो सख्खर पनि १५ किलो मिसाउनू र सन्धान गरेर १ महीनासम्म राख्नू। अन्तमा त्यसलाई छानेर बोतलहरूमा भर्नू र बिर्को लगाई सुरक्षित राख्नू। यसरी अश्वगन्धारिष्ट तयार हुन्छ।

यो अश्वगन्धारिष्ट १ देखि ६ महीनासम्मको बच्चालाई ५-१० थोपा, ६ महिनादेखि २ वर्षसम्मको बच्चालाई १५-३० थोपा, ५ वर्षदेखि १२ वर्षसम्मको बालकलाई १० मि.लि. सम्म र त्यसपछि युवकलाई बल अनुसार १५-३० मि.लि. सम्मको मात्रामा बराबर पानी मिसाएर दिनको २ पटक भोजन पछि खान दिनू।

यसको सेवन गर्नाले मूर्च्छा, भ्रम, स्मरणशक्ति कम हुनु, आत्तिनु, आँखा अगाडि अँध्यारो हुनु, काममा मन नलाग्नु, मस्तिष्क र आँखा कमजोर हुनु यी सबै समस्याहरू ठीक भएर जान्छन्। स्त्री पुरुष दुवैको रज-वीर्य शुद्ध हुन्छन्, गर्भोत्पादक शुक्राणुहरू पुष्ट र सजीव हुन्छन्, सन्तानहीनलाई सन्तान पैदा हुन्छ।

मूर्च्छा रोगमा पथ्य कुराहरू – दिनमा पुरानो चामलको भात, मूँग, मसुरो, चना र माषको दाल, पर्वर, भण्टाको तर्कारी, दही, मख्खन, दाख, अनार, पाकेको आँप, पाकेको मेवा, काँचो नरिवल आदि दिनुपर्छ। रातको समयमा पुरी, गहुँको रोटी, हलुवा, दूध, घिउ आदि दिनुपर्छ। जांगल जीवहरूको मांस पनि पथ्य हुन्छ।

अपथ्य कुराहरू – घाममा डुल्नु, स्त्रीप्रसंग गर्नु, पसिना निकाल्नु, पिरो-अमिलो खाना खानु, प्यास-निद्रा-मल र मूत्र आदिको वेग रोक्नु, राती जागा बस्नु, घोडाको सवारी गर्नु आदि अपथ्य हुन्छन्।

४४. मदात्यय (मद्यपानबाट हुने रोग)

मद्यको सेवन गर्ने विधिको विपरीत जथाभावी ढंगले सेवन गर्दा उत्पन्न हुने शरीर अथवा मनसम्बन्धी रोगलाई मदात्यय भनिन्छ ।

मदात्ययको सामान्य लक्षण – मदात्यय भएको अवस्थामा होश हराउने, हृदयमा पीडा हुने हुन्छ । अन्नमा रुचि हुँदैन, पखाला लाग्छ, तिर्खा लागिरहन्छ, ज्वरो बढ्ने-घट्ने भईरहन्छ । टाउको, करङ र हाडहरूमा दुख्ने, जिउ काम्ने हुन्छ । मर्महरूमा, त्रिकप्रदेश (मेरुदण्ड)मा दुख्ने, कक्रक्क समाउने हुन्छ । छाती जकडिन्छ, आँखा अगाडि अन्धकार देखिन्छ, खोकी लाग्ने, छिटो सास चल्ने हुन्छ । निद्रा लाग्न छोड्छ, पसीना बढी आउँछ, शरीर सुन्निएर आउँछ, मनमा भ्रम हुन्छ । बर्बराउने, बान्ता आउने वा वाकवाक भइरहने हुन्छ । नराम्रा सपना देखिन्छन् ।

असाध्य मदात्ययका लक्षणहरू – बढी मद्यपान सधैँ गर्नाले जसको माथिल्लो ओठ तलतिर लत्रिएको हुन्छ, बाहिर छाम्दा चिसो भएपनि जसले भित्र बढी पोलेको अनुभव गर्छ, जसको मुख तेल लगाएजस्तो चिल्लो देखिन्छ, जिभ्रो, ओठ र दाँतहरू काला वा निला हुन्छन्, आँखा पहेंला वा राता देखिन्छन् त्यो मदात्ययको रोगी असाध्य हुन्छ ।

मदात्ययको सामान्य चिकित्सा – चाबो, कालो नुन, हिङ, ठूलो निबुवाको बोक्रा, सुठो र ज्वानुको समभाग मिसाएर बनाएको चूर्ण खान दिएमा सबै किसिमका मदात्ययलाई नाश गर्छ ।

मोथेको काढा ख्वाएमा सबै प्रकारका मदात्ययहरूका दोषहरू परिपाक भएर हराउँछन् ।

खजूर, किसमिस, दाख, अमिली, अनार र अमलाको रसमा भुटेको धानको लावाको चूर्ण मिसाई लेदो बनाउनू । अनि त्यसमा पानी मिसाएर खाने गर्नू । यसले मद्यबाट उत्पन्न सबै रोग शान्त भएर जान्छन् ।

मदिरापान गर्ने व्यक्तिलाई हितकारी शिक्षा – काफलको बोक्रा ६ ग्राम, नागरमोथा २ ग्राम, गुर्जो ३ ग्राम यी तीनैथरीको चूर्ण बनाई मिसाएर राख्नू । यो चूर्ण मदिरापानपछि मुखमा राख्नाले मुखको दुर्गन्ध हराउँछ ।

मदिरापान गरेपछि तत्काल घिउमा देशी चिनी (सख्खर) मिसाई चाट्यो भने जस्तोसुकै कडा मदिराले पनि नशा चढ्दैन ।

जो पानीमा डुबुल्की लगाएर स्नान गर्छन्, चन्दन आदि सुगन्धित पदार्थ शरीरमा लगाउँछन्, भात-मांस आदिसँग मदिराको सेवन गर्छन् तिनलाई मनै विकृत हुनेगरी मद्यको नशा चढ्दैन ।

मदिरापानको बानीले शरीर दुर्बल भएको मानिसलाई तेलको मालिस, स्नान र दूध-घिउको सेवन हितकारी हुन्छ ।

मदिरा त्याग गरेर प्रशस्त पानी पिउने, रातमा त्रिफलाको चूर्ण महसँग खाने तथा बिहान अदुवा र गुड खाने गर्नाले मदिराको सेवन गर्ने बानी छुट्छ ।

शोक, क्रोध, भय, भोक, प्यास र गर्मीको अवस्थामा, व्यायामपछि र हिँड्दा हिँड्दा थाकेको अवस्थामा मदिराको पान गर्नुहुँदैन । त्यसले अनेक कष्ट दिने रोगहरू उत्पन्न गराउँछ ।

अनेक प्रकारका मदहरूको चिकित्सा – १२ मि.लि. कुभिण्डोको रसमा ६ ग्राम गुड मिसाई खानाले कोदो र मदनफल खाँदा लागेको नशा हराउँछ ।

काँचो दूधमा मिश्री मिसाई खानाले धतुरोको मद नष्ट हुन्छ । अथवा भेडीको दूधमा मिश्री मिसाई खानु पनि राम्रो हुन्छ ।

नुन र मिश्री मिसाई खानाले सुपारीको मद नष्ट हुन्छ ।

बाखाको मासु र पर्वर दुवैलाई पकाएर खाएमा चरसको नशा नष्ट हुन्छ ।

मदिराको सेवनबाट भएको मदात्ययमा कम मात्रामा (१० मि.लि.) मद्यको सेवन गर्ने र साथै चामलको भात चिनीसँग खानाले अवश्य लाभ हुन्छ ।

दिनमा १.५-१.५ घण्टामा ४-४ ओटा ल्वाङ् चपाउने गर्नाले तमाखुको मद हराएर जान्छ ।

तातो घिउ अथवा कटहरको पातको रस वा अमिलीको पानी अथवा काँचो नरिवलको पानी पिउनाले भाँगको नशा हराउँछ ।

चूनलाई हातमा मलेर सुँघेमा पानको मद (नशा) नष्ट हुन्छ । यदि पानमा चूना बढी खाएर जिभ्रोमा घाउभयो भने मिश्रीको कवल मुखमा राख्नुपर्छ ।

मदात्ययमा उपयोगी विशिष्ट योगहरू

त्रिफलादि चूर्ण – त्रिफला, सेतो निशोथ, कालो सारिवा, देवदारु, सुठो, ज्वानु, अजमोदा, दारुहरिद्रा, पाँचैओटा नुनहरू, शतपुष्पा, बोझो, कुठ, दालचिनी, तेजपात, सुकमेल, मुसक्कर सबै समभाग लिएर कुटी छानी चूर्ण बनाएर मिसाइराख्नू । यो चूर्ण ३-६ ग्रामसम्मको मात्रामा चिसो पानीसँग सेवन गर्नाले सबै प्रकारका मद्यविकारहरू नष्ट हुन्छन् ।

श्रीखण्डासव – सेतो चन्दन, मरिच, जटामसी, हलेदो, दारुहरिद्रा, चितुको जरा, मोथे, खस, तगर, दाख, रातो चन्दन, नागकेशर, पाठा, अमला, पिप्ला, चावो, ल्वाङ, एलवालुक, लोध प्रत्येक २०-२० ग्राम लिएर सबैलाई कुटेर

खस्रो चूर्ण बनाउनू । अनि २५ ली. ६०० मि.लि. पानीमा रास्रो दाख ३ किलो, सख्खर १५ किलो र धयेंरोको फूल ६०० ग्राम र पहिले बनाएका सेतो चन्दन आदि द्रव्यहरूको चूर्ण एउटा उचित भाँडोमा भरेर सन्धान गर्न राख्नू । १ महिनापछि आसव तयार भएको हुन्छ । त्यसलाई निकाली छानेर सिसीहरूमा राख्नू । यो श्रीखण्डासव तयार हुन्छ । यसको मात्रा १०-३० मि.लि. सम्म हुन्छ । यो आसव बराबर पानी मिसाई बिहान-बेलुका सेवन गर्नाले मदात्यय रोग निको भएर जान्छ ।

पुनर्नवाद्य घृत – घिउ र दूध (गाईको) ४-४ लिटर, पुनर्नवाको काढा १६ लिटर, जेठीमधुको कल्क १ किलो यी सबलाई कराहीमा राखेर पकाउनू । जब घिउमात्र बाँकी रहन्छ अनि उतारेर छान्नू र सुरक्षित गरी राख्नू । जो मद्यपान गर्ने मानिसहरू कमजोर र तेजहीन भएर गएका छन् उनीहरू यसको सेवनबाट पुष्ट हुन्छन् ।

शुद्ध मद्य – दाख १ किलो, बबूलको बोक्रा ५०० ग्राम, अमला १०० ग्राम, मुण्डी १०० ग्राम, जटामसी, छडीला, ज्वानु, खसको जरा, तज (दालचिनी), तेजपात, नागरमोथा, कचूर, सेतो चन्दन, मेंहदीको बियाँ यी प्रत्येक ३०-३० ग्राम, सेतो मुसली, कालो मुसली, सेतो बहमन, रातो बहमन, अलैँची, इन्द्रजौ, सेतो तोदरी, पहेंलो तोदरी सबै १५-१५ ग्राम, किसमिस, देशी बदाम (Almond), छोहडा, दाख यी प्रत्येक २०० ग्राम लिएर सबैलाई यवकूट गर्नू । यी सबैलाई एउटा ठूलो घ्याम्पोमा ४० लिटरपानी राखी भिजाइदिनू । त्यसैमा १० किलो चिनी पनि राखिदिनू । जब फिंज उठेर आउँछ अनि २.५ लिटर गाईको दूध र ५०० मि.लि. सुन्तलाको रस मिसाएर बाफद्वारा रक्सी बनाउने विधि अनुसार अर्क निकाल्नू । यी रक्सीबाट नशाको अलाबा शरीरमा खूब ताकत पनि दिन्छ । जसलाई रक्सी खाने बानी छ उनीहरूले यसको सेवन गरेमा लाभै लाभ हुन्छ, हानि कत्ति पनि हुँदैन । (अनेक पटक परीक्षित)

४५. दाह रोग (शरीर पोल्ने)

विभिन्न कारण कुपित भएको पित्तले रगतमा मिसिएर शरीरका विभिन्न अङ्गहरूमा जस्तै हत्केला, पैंताला, आँखा आदिमा जब पोल्ने गराउँछ त्यस अवस्थालाई दाह भनिन्छ ।

आफ्नो कारण अनुसार यो दाह ७ किसिमको हुन्छ

(१) पित्तज दाह, (२) रक्तज दाह, (३) तृष्णानिरोधन दाह, (४) रक्तपूर्णकोष्ठज दाह, (५) धातुक्षयज दाह, (६) क्षतज दाह, (७) मर्माभिघातज दाह ।

पित्तज दाहको लक्षण – यसको कारण पित्त बढाउने आहार-

विहारको सेवन हो । यसमा पित्तज ज्वरजस्तै दाह आदि लक्षणहरू हुन्छन् । यसको चिकित्सा पित्तज ज्वर जस्तै गर्नुपर्छ ।

रक्तज दाहको लक्षण – शरीरमा रहेको रगत दूषित तथा कुपित भएर पूरै शरीरमा फैलिएको अवस्थामा शरीर पोल्न थाल्छ । त्यसलाई रक्तज दाह भनिन्छ । त्यस अवस्थामा रोगीले पूरै आगोले ढाकेजस्तो तातेको, पोलेको अनुभव गर्छ । उसलाई बढी प्यास (तिर्खा) लाग्छ । उसको मुख र आँखा राता हुन्छन् । शरीर र मुखबाट तातो फलाममा पानी हाल्दा निस्कने वाफजस्तै गन्ध आउँछ ।

तृष्णानिरोधज दाहको लक्षण – जो मानिस अज्ञानवश तिर्खाको वेग रोक्ने गर्छ – प्यास लागेको वेलामा पर्याप्त पानी पिउँदैन त्यसको शरीरमा पानीको मात्रा कम भएपछि पित्त बढेर दाह गराउन थाल्छ । त्यस्तो अवस्थामा शरीरको भित्र-बाहिर सबैतिर खूब पोल्ने हुन्छ । रोगीको तालु, ओठ र घाँटी सुक्छन् । त्यसले मुख खोलेर सास फेर्न थाल्छ, उसको शरीर काम्न थाल्छ ।

रक्तपूर्णकोष्ठज दाह – चक्कू आदि तीखा शस्त्रहरूले गहिरो गरी शरीरको मध्यभागका आमाशय, अग्न्याशय, आन्द्रा, मुटु, फोक्सो, मूत्राशय, कलेजो आदिमा रोपेको खण्डमा बढी रगतको स्राव हुँदा ती अङ्गहरू रगतले भरिन्छन् । त्यस अवस्थामा असह्य दाह हुन्छ । यसैले युद्ध क्षेत्रमा घाइतेहरू पानी-पानी भनेर कराउँछन् ।

धातुक्षयज दाह – शरीरमा रहेका रस-रक्त आदि धातुहरू कुनै रोग आदि कारणबाट निकै कम हुँदै गएमा जुन दाह हुन्छ त्यसलाई धातुक्षयज दाह भनिन्छ । यसमा रोगी बारम्बार मूर्च्छा पर्ने हुन्छ, उसलाई बढी तिर्खा लाग्छ, उसको स्वर (बोली) कमजोर हुन्छ, शरीर कमजोर हुनाले कुनै काम गर्न सक्दैन । त्यसको तत्काल उपचार नगरेमा दुःख पाएर मर्छ ।

क्षतज दाह – शरीरमा चोटपटक लागेको अवस्थामा अन्न नखाने, धेरै कुरा सोच्ने-चिन्ता गर्ने गर्दा जुन दाह हुन्छ त्यसलाई क्षतज दाह भनिन्छ । त्यसमा शरीरभित्र निकै दाह हुन्छ, प्यास बढी लाग्ने, मूर्च्छा पर्ने र बर्बराउने हुन्छ ।

मर्माभिघातज दाह – टाउको, मुटु, मूत्राशय आदिमा आघात अर्थात् चोटपटक परेर जुन दाह हुन्छ त्यसलाई मर्माभिघातज दाह भनिन्छ । त्यो असाध्य हुन्छ । त्यस्तो रोगी बाँच्दैन ।

जुन रोगीको शरीरभित्र दाह हुन्छ तर माथिबाट छाम्दा शरीर शीतल हुन्छ त्यो दाह पनि असाध्य नै हुन्छ । धातुक्षयज दाह पनि असाध्य हुन्छ ।

दाहको सामान्य चिकित्सा – दूध, दूध आउने रुख (वर, पिपल, डुम्री)को बोक्रा राखी पकाएको काढा र चन्दन मिसाएर शरीरमा लेप गर्ने, नुहाउने गर्नाले भित्री दाह शान्त हुन्छ ।

प्यासको वेग रोक्नाले उत्पन्न दाहमा इच्छानुसार पेट भरी पानी पिउनुपर्छ। अथवा मिश्री वा चिनीको शर्बत अथवा दूधमा उखुको रस मिसाएर पिउनुपर्छ।

धातुक्षयबाट उत्पन्न दाहमा दूध र मांसरसका साथ भोजन दिनुपर्छ। यस किसिमको दाहमा रक्तपित्तको विधि अनुसार चिकित्सा गर्नुपर्छ। चिल्लो पदार्थ भएको, वातनाशक औषधी र पथ्य दिनुपर्छ।

प्यास र दाहको शान्तिका लागि स्नान गराउनु, पानीको छिटा दिनु, पंखा आदि पानीमा भिजाएर हम्कनु राम्रो हुन्छ। भित्री दाह शान्त गर्न रोगीको पेट पनि सफा गर्नु आवश्यक हुन्छ।

दाहनाशक योगहरू – दाह हुने रोगीको शरीरमा १०० पटक धोएको घिउ लगाउनाले दाह शान्त हुन्छ। (परीक्षित)

बयर र अमलालाई सँगै पिनेर शरीरमा लगाउनाले दाह शान्त हुन्छ।

अनार र अमिली अथवा अनार र अमलाको रसमा जौको सातु मिसाएर शरीरमा लेप गर्नाले दाह मेटिन्छ।

दाहको बढी चाप छ, बढी प्यासका कारण रोगीले जिभ्रो निकाल्छ, घाँटी र ओठ सुकेको छ भने दूधमा पानी र मिश्री मिसाई खान दिनू, दाह शान्त हुन्छ।

चन्दनलाई ढुंगामा पानी राखी घोटेर पातलो लेप शरीरमा गर्नाले दाह शान्त हुन्छ।

बिमिरोको रस र मह दुवैलाई मिसाएर दाह हुने रोगीको शरीरमा लेप गर्नाले दाह शान्त हुन्छ।

सेतो चन्दनलाई गुलाबजलमा घोटेर साथमा अलिकति कपूर पनि मिसाएर सारा शरीरमा लेप गर्नू, दाह शान्त हुन्छ। यही लेप टाउकोमा लगाएमा गर्मीबाट भएको टाउको दुख्नेमा तुरुन्त आराम गर्छ। (परीक्षित)

नीमका पातहरू सिलौटोमा पानीसँग पिनेर पानीमै घोल्नू र दहीजस्तै मथ्नू। त्यसबाट जुन फिंज उठ्छ त्यसलाई पेट, छाती अथवा दाह भएको ठाउँमा १-१ घण्टाको अन्तरमा लगाउँदै जानू। यसबाट दाह अवश्य हराउनेछ। (परीक्षित)

१०० पटक धोएको घिउमा जौको सातु मिसाएर शरीरमा लगाउनाले दाह मेटिन्छ। (परीक्षित)

२५ ग्राम धनियाँलाई १०० मि.लि. पानीमा राती भिजाइदिनू। बिहान त्यसलाई मिचेर कपडाले छान्नू र त्यसमा १२ ग्राम मिश्री मिसाएर खान दिनू। यसले दाह रोग अवश्य हराएर जान्छ। (परीक्षित)

गुर्जो र पित्तपापडाको रस पिउनाले जस्तोसुकै दाह पनि आराम भएर जान्छ। (परीक्षित)

पित्तपापडा, खस, नागरमोथा, रातो चन्दन, पद्माख (पद्मक) यी सबै ३-३ ग्राम लिएर ३०० मि.लि. पानीमा पकाउनू जब ४० मि.लि. जति पानी बाँकी रहन्छ अनि उतारेर छान्नू । चिसो भएपछि उक्त काढामा १२ ग्राम मह मिसाई पिउन दिनू । यस काढाबाट दाह, ज्वर, प्यास, वमन यी तुरुन्त शान्त भएर जान्छन् । (परीक्षित)

त्रिफला र अमलतासको (राजवृक्ष) गुदी जम्मा २० ग्राम लिएर ३०० मि.लि. पानीमा पकाउनू । जब आधा जति बाँकी रहन्छ तब मलछान गरी पिउनू । यसबाट दाह, रक्तपित्त र पित्तज शूल अवश्य शान्त हुन्छन् । (परीक्षित)

४६. उन्माद रोग (पागलपन)

आयुर्वेदमा मानस रोगको रूपमा उन्मादको वर्णन छ । कुपित भएका वात, पित्त र कफ यी दोषहरू जब आफ्नो स्वाभाविक गतिलाई छोडेर गलत बाटोमा अर्थात् मनोवह धमनीमा पुग्छन् र त्यसलाई विकृत बनाउँछन्, साथै मनलाई भ्रमित पनि पार्छन् त्यस्तो भ्रमित र यथार्थ जीवनदेखि अलग भएको रोगको अवस्थालाई उन्माद रोग भनिन्छ । उन्माद रोगमा मुटु र मस्तिष्क दुवै प्रभावित हुन्छन् ।

उन्माद रोगका कारणहरू – प्रायः यी कारणहरूबाट उन्माद रोग हुने गर्छ – (१) संयोगविरुद्ध भोजन गर्नु, (२) विष वा विष मिसाएको अन्न भोजन गर्नु, (३) अपवित्र वा अशुद्ध भोजन गर्नु, (४) देवता वा गुरुको अपमान गर्नु, (५) अत्यन्त खुसी हुनु वा डराउनु, (६) बलवान्सँग वैर गर्नु, (७) बढी नशालु पदार्थ (गाँजा, भाँग आदि) खाने गर्नु, (८) काम, क्रोध, लोभ र मोहको वशमा पर्नु ।

उन्मादको सम्प्राप्ति – माथि उल्लेख भएका कारणहरूबाट वात, पित्त र कफ दोषहरू कुपित हुन्छन् । तिनीहरूले मन कमजोर भएका मानिसको बुद्धिको वासस्थान हृदय (मस्तिष्क)लाई दूषित बनाउँछन् । साथै मानिसको मनोवह स्रोतहरूमा आफ्नो अधिकार जमाउँछन् र अन्तःकरणमा विकार उत्पन्न गर्छन् ।

उन्माद रोगका प्रकारहरू – उन्माद रोग ६ किसिमको हुन्छ – (१) वातज, (२) पित्तज, (३) कफज, (४) त्रिदोषज, (५) मानसिक दुःखबाट उत्पन्न, (६) आगन्तुज ।

उन्मादको पूर्वरूप – उन्माद रोग लाग्नुभन्दा पहिले टाउको शून्य (खाली) हुनु, आँखा चञ्चल हुनु, कानमा आवाज आउनु, श्वासको गति बढ्नु यी लक्षण देखिन्छन् । खान मन नलाग्ने, खाएको नपच्ने हुन्छ । एकाएक टोलाउने, मूर्च्छा पर्ने वा आत्तिने हुन्छ । रोमाञ्च हुने, मनमा कुनै कुराप्रति रहर नहुने हुन्छ ।

उन्मादका सामान्य लक्षणहरू – उन्माद रोगका जति प्रकार छन् ती सबैमा पाइने केही लक्षण हुन्छन् तिनलाई सामान्य लक्षण भनिन्छ। जस्तै बुद्धिमा भ्रम हुनु, मन चञ्चल हुनु अथवा अनावश्यक कुरा सोच्नु, शंका गर्नु, आँखा पनि यता-उति घुमाइराख्नु, धैर्य नरहनु – सानो कुरामा झस्किने-आत्तिने हुनु, एक ठाउँमा स्थिर भएर बस्न नसक्नु, विना प्रसङ्गको कुरा गर्नु, मन शून्य हुनु वा विचार गर्ने शक्तिको लोप हुनु यी उन्मादका सामान्य लक्षण हुन्छन्।

वातज उन्माद हुने कारणहरू – रुखो र चिसो भोजन सधैं गर्नु, आवश्यकभन्दा कम मात्रामा खानु, वारंवार वमन वा विरेचनको प्रयोग गर्नु, धातुहरूको क्षय हुनु, धेरै समयसम्म उपवास गर्नु, बढी मात्रामा चिन्ता वा शोक गर्नु, कामवासनाको वेग आदि वातज उन्मादका सामान्य कारण हुन्छन्।

यी कारणहरूबाट कुपित भएको वायु, चिन्ता, शोक आदिको सहायता पाएपछि अझ बलवान् हुन्छ र अन्तः करणलाई दूषित गराएर बुद्धि र स्मरणशक्तिलाई नष्ट गरेर उन्मादको कारण बन्छ।

वातज उन्मादका लक्षणहरू – यसमा रोगी बिना कारण हाँस्छ, मन्द – मन्द मुस्काउँछ, विना प्रसङ्ग नाची राख्छ वा गाना गाउँछ। अर्थ न बर्थको कुरा गरी रहन्छ, हात-खुट्टा चलाइराख्छ, विना कारण रुन थाल्छ। रोगीको शरीर रुखो र दुब्लो-पातलो हुन्छ। भोजन पच्ने बेलापछि उन्मादको चाप बढ्छ।

पित्तज उन्मादको कारण – अमिलो, पिरो, तातो र पच्दा शरीरमा दाह उत्पन्न गर्ने आहारको सेवन, अजीर्ण हुनु यी कारणहरूबाट पित्त कुपित भएपछि त्यसले संयम नगर्ने दुर्बल व्यक्तिको हृदयलाई दूषित पार्छ र पित्तज उन्मादको कारण बन्छ।

पित्तज उन्मादको लक्षण – यसमा रोगीको सहनशक्ति रहँदैन, उसले अरूलाई धम्काउने-डराउने काम गर्छ। लज्जा आदि त्यागेर नाङ्गो भैरहन्छ। कहिले वेगका साथ हिंड्ने-दगुर्ने गर्छ। उसको शरीर तातो हुन्छ र तातो कुरादेखि तर्सन्छ। चिसो पानी र खाना मन पराउँछ। शीतल छायामा बस्ने गर्छ। उसलाई बढी रिस उठ्छ। उसको अनुहार पहेंलो हुँदै जान्छ।

कफज उन्मादको कारण – परिश्रमको काम कत्ति पनि नगर्नु र कफ बढाउने गुलियो-चिल्लो-चिसो कुरा खाइ राख्ने बानी गर्नु जस्ता कारणहरूबाट कफ कुपित भएर पित्तका साथ मिल्छ र हृदयलाई दूषित बनाएर बुद्धि, स्मरणशक्ति र मनको विचारशक्तिलाई नष्ट गराई कफज उन्मादको कारण बन्छ।

कफज उन्मादको लक्षण – रोगीलाई एकान्त मन पर्छ। कम बोल्छ, बढी हिंडडुल रुचाउँदैन, बसीरहन्छ वा निदाउँछ। उसको मुखबाट च्याल बग्ने

भइरहन्छ, भोजन रुच्दैन, वमन हुने गर्छ। उसका आँखा, नङ, छाला र मूत्रको रंग सेतो हुन्छ। भोजन गर्ने बित्तिकै उन्मादको चाप बढेर जान्छ।

त्रिदोषज उन्मादको कारण – यो उन्माद तीनै किसिमका दोषहरूलाई कुपित पार्ने कारणहरूबाट उत्पन्न हुन्छ। यसमा तीनै दोषका लक्षणहरू पाइन्छन्। यो असाध्य हुन्छ।

मानसिक दुःखबाट उत्पन्न हुने उन्मादको कारण – चोरहरू, शत्रुहरू, राजाका सिपाही वा प्रहरीहरूद्वारा एकाएक अथवा बारंबार सताइराख्दा, धनसम्पत्ति लुटिंदा, आफ्नो प्रिय व्यक्तिहरूको वियोग वा मृत्यु हुँदा, सहवास गर्ने उत्कट इच्छामा बाधा हुँदा जब मनमा नराम्रो चोट पर्छ त्यस अवस्थामा मानसिक दुःखका कारण उन्माद रोग हुन्छ।

त्यसको लक्षण – मानसिक दुःखद्वारा उन्मत्त रोगीले मनभित्रका गुप्त कुरा पनि भन्न थाल्छ, कहिले रुन्छ। कुनै बेलामा चेतना शून्य हुन्छ।

विषज उन्मादको कारण र लक्षणहरू – धतुरो, भाँग, मदिरा आदिको सेवनबाट यो उन्माद उत्पन्न हुन्छ। यसमा रोगीका आँखा राता हुन्छन्, बल, इद्रियहरूको काम गर्ने शक्ति र शरीरको कान्ति कम हुँदैजान्छ। उसको अनुहारको रंग कालो र ओइलाएको जस्तो हुन्छ। कुनै बेलामा बेहोश पनि हुन्छ। चाँडै उपचार नभएमा मृत्यु हुन्छ।

असाध्य उन्मादको लक्षण – जुन उन्मादको रोगीको मुख सधैं निहुरिएको हुन्छ अथवा माथितिर फर्किरहन्छ, जसको शरीरको मासु र बल घट्दै जान्छ, निद्रा पनि हराउँछ त्यस्तो उन्मादको रोगी उपचारबाट निको हुँदैन।

आगन्तुज वा भूतोन्मादको कारण – देवता, ऋषि, गन्धर्व, पिशाच, राक्षस र पितृ ग्रहहरूको अपमान गर्नु। नियम, व्रत, पूजा, पाठ आदि अनुचित रूपमा विधि नपुऱ्याई गर्नु। पूर्वजन्म वा यस जन्ममा गरिएको पापकर्म। यी मध्ये कुनै एक कारणबाट भूतोन्माद हुनसक्छ। देवता आदि ग्रहहरू आफ्नो प्रभावले सम्बन्धित मानिसको शरीरलाई दूषित नगरीकनै अदृश्य भएर ऐनामा छाया परेजस्तै शरीरमा प्रवेश गर्छन् र आफ्नो लक्षण उत्पन्न गर्छन्। ती ग्रहहरूले त्यस रोगीलाई मार्न, त्यसबाट आफ्नो इच्छा पूरा गर्न अथवा त्यसबाट पूजा पाउन शरीरमा प्रवेश गर्छन्।

भूतोन्मादको सामान्य लक्षण – देवता आदि ग्रहहरू शरीरमा प्रवेश हुँदा रोगी व्यक्तिको बोली, पराक्रम, शूरता र कामहरू सामान्य मानिसभन्दा विशेष भएर जान्छन् त्यसको बुद्धि, विचारशक्ति, स्मरणशक्ति, बल आदि सम्बन्धित ग्रह जस्तै हुन्छन्। यस्तो उन्मादको आरम्भ कुनै निश्चित तिथि वा दिन वा रातको कुनै समयमा हुन्छ।

देवग्रहाविष्टको लक्षण – देवग्रहको आवेश भएको मानिस सन्तोषी र पवित्र हुन्छ । उसको शरीरबाट दिव्य फूलहरूको बास्ना आउँछ । उसलाई निद्रा आउँदैन । उसले शुद्ध संस्कृत बोल्छ र तेजस्वी हुन्छ । उसका नेत्रहरू स्थिर हुन्छन् । उसले अरूलाई वरदान दिन्छ र ब्राह्मणहरूमा भक्ति राख्छ ।

दैत्याविष्टको लक्षण – दैत्य ग्रहको आवेश भएको व्यक्तिको शरीरमा बढी पसिना आउँछ । त्यसले ब्राह्मण, गुरु र देवताहरूको निन्दा गर्छ, त्यसका आँखा टेढा हुन्छन्, डर हराएर जान्छ । त्यो कुमार्गमा रुचि राख्छ र जति खाने-पिउने कुरा पाए पनि सन्तुष्ट हुँदैन ।

गन्धर्व ग्रहद्वारा पीडित व्यक्तिको लक्षण – त्यो सधैं भित्रैबाट खुसी रहन्छ, नदीको किनार वा वन-बगैंचाको नजिक बस्ने गर्छ, असल आचरणको हुन्छ, गीत गाउने र शरीरमा चन्दन-माला आदिले श्रृंगार गर्न मन पराउने हुन्छ । त्यसैले नाच्दै अलि अलि बोल्ने र हाँस्ने काम गर्छ ।

यक्ष ग्रहद्वारा पीडित व्यक्तिको लक्षण – त्यो व्यक्ति गम्भीर हुन्छ, उसका आँखा राता हुन्छन् । त्यसले राम्रो, मसिनो र रातो रंगको लुगा लगाउने गर्छ, छिटो गरी हिंड्छ, कम बोल्छ । त्यो सहनशील र तेजिलो हुन्छ । त्यसले कसलाई के दिउँ भनी रहन्छ ।

पितृग्रहद्वारा पीडित व्यक्तिको लक्षण – त्यसले कुश आदि ओछ्याएको वेदीमा मृत व्यक्तिहरूलाई संझदै पिण्ड दिन्छ, दाहिने काँधमा उपर्ना राखेर तिनीहरूलाई जलले तर्पण पनि गर्छ । त्यो शान्त प्रकृतिको हुन्छ । मासु, तिल, सख्खर र दूधको खिर रुचाउने हुन्छ ।

सर्प ग्रहद्वारा पीडित व्यक्तिको लक्षण – त्यसले कहिलेकाहीं जमीनमा सर्प जस्तै भएर हिंड्छ र जिभ्रो निकालेर ओठहरू चाट्ने गर्छ । त्यो रिसाहा हुन्छ । त्यसले सख्खर, मह, दूध र खिर खान मन पराउँछ ।

राक्षस ग्रहद्वारा पीडित व्यक्तिको लक्षण – राक्षस ग्रहद्वारा पीडित मानिसले मासु, रगत र अनेक किसिमका सुराहरू खान खोज्छ, त्यो निर्लज्ज हुन्छ । निकै निष्ठुर र शूरो पनि हुन्छ । त्यो रिसाहा, निकै बलियो पनि हुन्छ । त्यो रातमा बढी हिंड्छ । सरसफाई मन पराउँदैन ।

ब्रह्मराक्षसद्वारा पीडित व्यक्तिको लक्षण – त्यसले देवता, ब्राह्मण र गुरुहरूको द्वेष गर्छ, वेद आदि शास्त्रहरूको निन्दा गर्छ । त्यसले आफुलाई बढी पीडा दिन्छ, बारंबार हाँसीरहन्छ ।

भूतोन्मादको असाध्य लक्षण – जुन देवता आदि ग्रहहरूद्वारा आवेश भएका व्यक्तिको आँखा ठूला वा विकृत देखिन्छन्, जो तीव्र गतिले हिंड्ने-दगुर्ने गर्छ,

मुखबाट फिंज निकाल्ने र चाट्ने गर्छ, बढी सुत्ने हुन्छ, अचानक लड्ने वा काम्ने हुन्छ, जो पर्वत, हात्ती वा रुख आदिबाट लडेको भेटिन्छ त्यस्तो रोगी असाध्य हुन्छ। देव ग्रहहरूको आवेश भएर उत्पन्न तेह्र वर्ष भएमा त्यो पनि असाध्य हुन्छ।

देव ग्रह आदिको आवेश हुने समय – देव ग्रहहरू पूर्णिमाको दिनमा, दैत्य ग्रहहरू बिहान वा बेलुका, गन्धर्वहरू प्रायः अष्टमीको दिनमा, यक्षहरू प्रतिपदा तिथिमा, पितृग्रहहरू औंसीका दिनमा, सर्पहरूले पञ्चमीका दिन, राक्षसहरू रातको समयमा र पिशाचहरू चतुर्दशीका दिन कुनै व्यक्तिको शरीरमा प्रवेश गर्छन्।

उन्माद रोगको सामान्य चिकित्सा – वातज उन्मादमा स्नेहपान गराउनुपर्छ। पित्तज उन्मादमा पहिले स्नेहन गराई विरेचन गराउनुपर्छ। कफज उन्मादमा स्नेह पछि वमन गराउनुपर्छ। यसरी शुद्ध गराएपछि पथ्य आहार दिएर रोगीलाई बलियो पार्नुपर्छ र निरूह वस्ति वा अनुवासन दिनुपर्छ।

उन्मादको रोगीलाई रुख, आगो, पानी, पर्वत आदि उच्च एवं विषम स्थानहरूमा जान दिनुहुन्न, जोगाउनुपर्छ।

देव, गन्धर्व आदिको आवेशबाट उत्पन्न आगन्तुज उन्मादमा तीक्ष्ण अञ्जन, तीक्ष्ण नस्य तथा क्रूर कर्महरू गर्नुहुँदैन। घृत आदि मृदु औषधिबाट आराम गराउनुपर्छ। पिशाच आदिबाट ग्रस्त भएकोमा तिनको प्रतिकूल (तिनीहरू रिसाउने) काम गर्नुहुँदैन।

आगन्तुक भूतोन्मादहरूलाई बलिदान, मंगल, होम, भूतबाधा शमन गर्ने औषधिहरू, सत्य आचरण, ज्ञान, तप, दान, व्रत, ब्राह्मण र गुरुहरूको पूजा, सिद्ध मन्त्र र औषधिहरूद्वारा शान्त गर्नुपर्छ।

शोक, भय, क्रोध र ईर्ष्याबाट भएको उन्मादलाई क्रमशः काम, हर्ष र लोभद्वारा जित्नुपर्छ।

जो मानिस मद्य र मांसबाट जोगिन्छ, हितकारी भोजन गर्छ र पवित्र हुन्छ उसलाई निज वा आगन्तुज उन्माद हुँदैन। उन्माद रोगमा प्रायः निद्रा हराउँछ र निद्रा लागेमा प्रायः उन्माद शान्त हुन्छ। अनिद्रासंग हुने उन्माद रोगलाई अफिमले तुरुन्त नाश गर्छ। उन्माद सुरु हुने बित्तिकै यदि अफिमको उचित मात्रा दियो भने उन्माद रोकिएर जान्छ। जब उन्माद रोगमा रोगीलाई अलि अलि समयको अन्तरालमा जोश आउने र हराउने हुन्छ तब अफिमको रत्ती-रत्तीभरको (१२५ मि.ग्रा) मात्रा दिनाले बडो उपकार गर्छ।

उन्मादनाशक सरल योगहरू – ब्राह्मीका पातहरूका रस ४८ मि.ली., कुठको चूर्ण १.५ ग्राम, मह ६ ग्राम सबलाई मिसाएर पिउनाले उन्माद रोग नष्ट हुन्छ। (परीक्षित)

कुभिण्डोको बियाँको चूर्ण ६ ग्राम, कूठको चूर्ण १.५ ग्राम दुवैलाई ४ ग्राम महमा मिसाएर चाट्नाले उन्माद रोग नष्ट हुन्छ। (परीक्षित) कुभिण्डोको बियाँको गुदी २४ ग्रामलाई रातमा ढुंगा वा माटोको भाँडामा ६० मि.ली. पानीमा भिजाइदिनू। बिहान सबेरै त्यसलाई सिलौटोमा पिन्नु र छानेर ६ ग्राम मह मिसाई खान दिनू। १५ दिनमैं उन्माद नष्ट भएर जान्छ।

शङ्खपुष्पीको रस ४८ मि.ली., कूठको चूर्ण १.५ ग्राम र मह ६ ग्राम सबलाई एकै भाँडामा मिसाई सेवन गर्नाले उन्माद रोगको नाश हुन्छ। (परीक्षित)

पहेंलो फूल हुने बेलाको हाँगाको रस (१०-२० मि.ली.१ मात्रा) पिउनाले उन्माद रोग शान्त हुन्छ। (परीक्षित)

उन्मादवाला रोगीको बलाबल हेरेर १० वर्ष पुरानो गाईको घिउ नित्य सेवन गराउनाले उन्माद रोग शान्त भएर जान्छ। चरकको चिकित्सा स्थानमा भने अनुसार पुरानो गाईको घिउ त्रिदोषशामक, पवित्र तथा विशेष गरेर ग्रहदोषनाशक हुन्छ। जुन घिउ तितो, पर्पन्याउने, कडा गन्धवाला, १० वर्ष पुरानो लाहाको रस समान रातो र शीतल हुन्छ त्यही नै पुरानो घिउ हो। १० वर्ष पुरानो घिउलाई पुरानो घिउ भन्छन्। १०० वर्षको पुरानो घिउले धेरै किसिमका रोगहरू नष्ट पार्छ विशेष गरी ग्रह उन्माद र अपस्मार रोगको लागि रामबाण नै हुन्छ।

मानसिक भावहरूको असन्तुलनबाट उत्पन्न उन्मादमा रोगीको शरीरमा सर्स्यूको तेल लगाई उसलाई बाँधेर उत्तानो पारी दिनू। अथवा कुनै अद्भुत कुरा देखाएर अथवा कुनै प्रिय जनको दुःखद समाचार सुनाइ दिनू। भय र क्रोधले शोकज उन्माद शान्त हुन्छ, काम र शोकले भयबाट उत्पन्न उन्माद शान्त हुन्छ। प्रिय वस्तुको नाशबाट उत्पन्न उन्माद त्यसको प्राप्तिबाट शान्त हुन्छ।

रातोरंगको काँचो रत्तीका २ गेडा लिएर १०० मि.ली. गाईको दूधसंग केही दिन सेवन गर्नाले उन्माद हराएर जान्छ।

सेतो फूल हुने बलाको चूर्ण ३० ग्राम र पुनर्नवाको जराको चूर्ण १२ ग्राम यी दुवैलाई क्षीरपाकको विधिद्वारा दूधमा पकाई चिसो भएपछि छानेर नित्य बिहान सेवन गरेमा घोर उन्माद पनि शान्त भएर जान्छ। ब्राह्मीको रस, बोझ्रोको रस, कूठको रस, शंखपुष्पीको रस यी चारै थरी रसहरू २००-२०० मि.ली. र १० वर्ष पुरानो गाईको घिउ २०० ग्राम सबैलाई कलइयुक्त कराहीमा राखी पकाउनू। रस जति सुकेर घिउ मात्र बाँकी हुँदा उतार्नू। यो घिउ उचित मात्रामा सेवन गर्दा उन्माद रोग हराएर जान्छ।

बोझ्रोको चूर्ण १ ग्राम गाईको घिउसंग खाएपछि दूधको सेवन गर्ने गरेमा उन्माद र अपस्मार दुवै रोग शान्त हुन्छन्।

त्रिकुट, हींग, सिंधे नुन, बोझो, कुटकी, शिरीषको बियाँ, करञ्जको बियाँ, सेतो सर्स्यू सबैलाई समभाग लिएर मसिनो चूर्ण बनाउनू । त्यसलाई गोमूत्रसंग सिलौटोमा घोटी बत्ती बनाउनू । त्यो बत्तीले आँखामा अञ्जन गर्नाले उन्माद, अपस्मार र चातुर्थिक ज्वर आराम भएर जान्छन् । (परीक्षित)

सुठो, मरिच, पिप्ला, हलेदो, दारुहरिद्रा, मजिठो, हिंग, सर्स्यू र शिरीषको बियाँ समभाग लिएर कुटी छानी चूर्ण बनाउनू । त्यसलाई बाख्राको मूत्रमा पिनेर नस्य र अञ्जनको रूपमा प्रयोग गर्नू । उन्माद, भूतोन्माद, अपस्मार रोगहरू नष्ट हुन्छन् । सेतो प्याजको रस आँखामा अञ्जन तथा नाकमा नस्य दिने गर्नाले उन्माद र अपस्मार रोग शान्त हुन्छन् । (परीक्षित)

कपासको बियाँको तेल २-३ दिनसम्म टाउकोमा दल्नाले मस्तिष्क शान्त हुन्छ, टाउको दुखेकोमा आराम पनि हुन्छ ।

विशिष्ट योगहरू – सारस्वत चूर्ण, कूठ, अश्वगन्धा, सिंधेल नुन, अजमोदा, दुवै जीरा, सुठो, मरिच, सानो पिप्ला, पाठा, शंखपुष्पी सबैको चूर्ण २०-२० ग्राम र सबैको बराबर अर्थात् २२० ग्राम बोझोको चूर्ण मिसाएर राख्नू । अब सबै चूर्ण खलमा राखी ब्राह्मीको पातको रस हाल्दै ७ दिनसम्म हरेक दिन १२ घण्टा खल गर्नू । ब्राह्मीको रस जतिसम्म राखी सुकाउन सकियोस् त्यति नै राम्रो हुन्छ । जब घोट्ने काम सकिन्छ र चूर्ण सुक्छ अनि चूर्णलाई कपडछान गरी सिसीहरूमा सुरक्षित राख्नू ।

यो चूर्ण २-४ ग्राम मात्रा लिएर मह घिउमा मिसाई नित्य ७, १५, २१, वा ६० दिनसम्म सेवन र पथ्यको पालन गर्नाले स्मरण शक्तिलाई खूब बढाउँछ । यो उन्माद रोगको परम औषधि हो । (अनेक पटक परीक्षित)

यस चूर्णका साथ ब्राह्मी घृत पनि सेवन गर्नाले अतिशीघ्र र निश्चय नै उन्माद एवं छारे रोग नष्ट हुन्छन् ।

ब्राह्मी घृत – ताजा ब्राह्मी जरा र पातसहित लिएर पानीले पखाली कुटेर ३ लीटर ६०० मि.ली. रस निकाल्नू । बोझो, कूठ र शङ्खपुष्पीको चूर्ण समभाग मिसाई त्यसको कल्क ९६ ग्राम बनाउनू । अब उक्त स्वरस र कल्कका साथ गाईको घिउ ७६८ ग्राम कलई लगाएको कराहीमा राखी मन्द अग्निको आँचमा पकाउनू । जब रस जति सुकेर घिउ मात्र बाँकी रहन्छ अनि उतारेर छान्नू र बोतलहरूमा सुरक्षित गरी राख्नू ।

यो घृत ६ ग्राम देखि १२ ग्रामसम्म बराबर मिश्री मिसाएर खान दिनू र पछिबाट गाईको दूध पिउन दिनू । त्यसको नित्य सेवनले उन्माद र छारे रोग शान्त हुन्छन् । (परीक्षित)

खाली ब्राह्मीको रस ४ लीटर र गाईको घिउ १ लीटर मिसाई पकाएर सेवन गर्नाले पित्तज उन्माद रोग शान्त हुन्छ ।

ब्राह्मीको पातको रस १० मि.ली. मा कुलिञ्जन (महाभरी वचा) अथवा अकर्करांको चूर्ण ३ ग्राम र मह ३ ग्राम मिसाई नित्य बिहान बेलुका २१, ३१ वा ४१ दिनसम्म सेवन गर्नाले उन्माद, अपस्मार र चित्तभ्रम नाश हुन्छन् । (परीक्षित)

महापैशाचिक घृत – जटामसी, हर्रो, भूतकेशी, ब्राह्मीको पात, काउसोको बियाँ, बोझो, त्रायमाण, अरणी, क्षीरकाकोली, चोरपुष्पी, कुटकी, सिमाली, वाराशीकन्द, सूप, ठूलो सूप, गुग्गुलु, शतावरी (कुरिलो) गुर्जो, रास्ना, मालकागुनु, वृश्चिकाली (सिस्नो), शालपर्णी यी प्रत्येक २०-२० ग्राम लिएर कुटी छानी चूर्ण बनाउनू र सिलौटोमा पानीसंग घोटी कल्क (लेदो) बनाउनू । कल्कको चौगुना १ किलो ८८० ग्राम घिउ र ७ लीटर ३६० मि.ली. पानी र कल्क सबलाई कराहीमा राखी मन्द आगोको आँचमा घृतपाकको विधि अनुसार पकाउनू ।

यो घृत ३-६ ग्राममा मिश्रीको चूर्ण मिसाई खान दिएर पछिबाट गाईको दूध पिउन दिनू । यसको सेवनले उन्माद, अपस्मार, भूतोन्माद आदि रोग नष्ट हुन्छन् । मेधा, स्मृति, बुद्धिलाई बढाउँछ, बालकहरूको शरीर पुष्ट हुन्छ । उन्माद र अपस्मार रोगका लागि यो प्रसिद्ध घृत हो ।

हिस्टीरिया उन्मादनाशक फल घृत – शतावरीको स्वरस ४ लीटर, बाच्छो भएकी गाईको दूध ४ लीटर, उत्तम घिउ १ कि. तयार राख्नू ।

मेदा, मजिठो, जेठीमधु, कूठ, हर्रो, बर्रो, अमला, बला, विदारीकन्द, काकोली, क्षीरकाकोली, अश्वगन्धा, ज्वानो, हलेदो, दारुहरिद्रा, हिंग, कुटकी, निलो कमल, दाख, सेतो चन्दन, रातो चन्दन यी प्रत्येकको चूर्ण ६-६ ग्राम लिएर कुठेर मसिनो पार्नू । अनि सबै चूर्णलाई पानीसंग सिलौटोमा पिनेर लेदो बनाउनू । पछि शतावरीको रस, दूध, घिउ र औषधिहरूको लेदोसमेत कलईदार कराहीमा राखी मन्द अग्निले पकाउनू । जब रस र दूध जति सुकेर घिउमात्र बाँकी रहन्छ तब उतारेर छान्नू र सिसीमा सुरक्षित राख्नू ।

यो घृत ६ ग्रामदेखि १२ ग्रामसम्म बराबर मिश्रीको चूर्णसंग खाएपछि गाईको दूध पिउन दिनू । यसको सेवन गर्नाले महिलाहरूको योनिरोग, उन्माद, हिस्टीरिया, तथा बाँझोपना नाश भएर जान्छन् । जो महिला हिस्टीरियादेखि आजित भैसकेकी छिन् र जसलाई सन्तान हुँदैन तिनका लागि यो रामबाण औषधि हो । (परीक्षित)

उन्मादगजाङ्कुश रस – शुद्ध पारो ४८ ग्राम लिएर खलमा राख्नू । त्यसलाई पहिले धतुरोको पातको रससंग १ दिन घोट्नू । अर्को पटक पिप्लाको काढाको भावना दिनू । त्यसपछि कुचिलाको काढासंग घोट्नू र ऊर्ध्वपातन यन्त्रमा

राखी उड्न दिनू। त्यसरी आएको पारोमा ६० ग्राम ताम्र भस्म मिसाई पानीसंग घोट्नू र चक्कीहरू बनाएर सुक्न दिनू। त्यसपछि पालाहरूमा पहिले शुद्ध गन्धकको मसिनो चूर्ण ३० ग्राम राखी माथिबाट उक्त चक्कीहरू राख्नू। त्यसमाथि फेरि शुद्ध गन्धक राख्नू र अर्को पालाले छोपी सन्धिमा कपडमिट्टि गरेर सुकाउनू। अब तिनीहरूलाई लघुपुटमा राखी पकाउनू। यसरी ७ पुट दिनू। अन्तमा पुट दिएको पारोका साथ शुद्ध गन्धक ६० ग्राम खलमा राखी घोटेर कज्जली पार्नू। त्यसमा शुद्ध धतुरोको बियाँ ६० ग्राम, शुद्ध वत्सनाभ विष ६० ग्राम को मसिनो चूर्ण बनाएर मिसाउनू। फेरि अभ्रक भस्म पनि ६० ग्राम मिसाएर पानी अलि-अलि राख्दै ३ दिनसम्म मर्दन गर्नू। गोली बन्न योग्य भएपछि १२५ मिलीग्रामका गोली बनाई सुकाउनू र सुरक्षित गरी राख्नू। यो औषधि १-१ गोली बिहान -बेलुका ६ ग्राम घिउ र ३ ग्राम मह मिसाएर खान दिनू। यसको सेवन गर्नाले सबै किसिमका उन्माद रोगहरू नष्ट हुन्छन्। विशेष गरी भूतोन्मादहरूको लागि यसले उत्तम काम गर्छ।

शर्बत गावजवान - गावजवान २०० ग्राम जति ल्याएर रातमा पानीमा भिजाइदिनू। बिहान त्यसलाई पकाएर पानी छानी लिनू। फेरि त्यस पानीमा १ किलो मिश्री राखी पकाउनू र बाक्लो हुन दिनू। त्यसपछि छानेर राख्नू। यो शर्बत २०-४० मि.ली. सम्म बिहान-बेलुका खान दिनू। यसले राम्रो निद्रा लाग्छ र मगजलाई आराम मिल्छ।

शर्बत अनन्नास - अनन्नास अर्थात् पाकेको भुईंकटहरको रस १ लीटर र मिश्री २ किलो मिसाएर पकाई चासनी बनाउनू र छानेर राख्नू। यसमा अलिकति गुलाबजल मिसाइदिनू। यस शर्बतको सेवनले मुटुमा तागत आउँछ।

यही तरीकाबाट सुन्तलाको रसबाट पनि शर्बत बनाउन सकिन्छ र यसको सेवनले पित्तको उन्माद नाश भई मन बलबान् हुन्छ। (परीक्षित)

गुलकन्द हरसिंगार - हरसिंगार अर्थात् पारिजातको फूलको डण्डी भाँचेर तिनको सेतो भाग मात्र १ किलो जति लिनू र २.५ किलो मिश्रीको धुलोमा मिसाएर मल्नू र ४० दिनसम्म जूनमा (जुनेली रातको किरण पर्ने गरी) सिसीमा राख्नू। यस गलकन्दको नित्य बिहान सेवन गर्नाले पित्तको उन्माद शान्त गरी मुटुलाई तागत दिन्छ। (परीक्षित)

महाविष्णु तेल - शतावरी (कुरिलो)को रस ४ लीटर, गाईको दूध ४ लीटर, कालो तिलको तेल ४ लीटर तयार गरी राख्नू। नागरमोथा, अश्वगन्धा, जीवक, ऋषभक, कचूर, काकोली, क्षीरकाकोली, जीवन्ती, जेठीमधु, देवदारु, पद्मक, सिंधे नुन, जटामसी, सुकमेल, दालचिनी, पत्थर फूल, कुठ, बोझो, सेतो चन्दन, रातो चन्दन, मजिठो, कस्तूरी, केशर, शालपर्णी, पृश्निपर्णी, माषपर्णी, मुद्गपर्णी, कौडिया

लोबान, गठौना (गठिवन), नखी, सूप यी प्रत्येक १२ ग्राम लिएर कुटी खूब मसिनो पार्नू अनि सिलौटामा पानीसंग घोटेर लेदो पार्नू। अब शतावरीको रस, गाईको दूध, तिलको तेल, पानी र उक्त लेदोलाई कलई लगाएको कराहीमा राखी मन्द अग्निमा पकाउनू। जब रस, दूध र पानी जति सुकेर तेलमात्र रहन्छ, तब उतारेर छानी बोतलमा सुरक्षित गर्नू। यस तेलको मालिसले सबै किसिमको वात वात रोगलाई निश्चय नै आराम गर्दछ। हिस्टिरियामा यस तेलको मालिस र फल घृतको सेवनले अपूर्व चमत्कार देखाउँछ। तर यस अवस्थामा एक महिनासम्म दुवैको नित्य सेवन हुनुपर्छ। वातरोगको लागि त रामबाण नै छ। (परीक्षित)

भूतोन्मादनाशक धूप – कपासको बियाँ, मयूरको प्वाँख, कण्टकारी, शिवको निर्मल (चढाएको फूल), मदनफल, दालचिनी, वंशलोचन, बिरालोको विष्ठा, धानको भुस, बोझो, मानिसको केशको रौं, कालो सर्पको काँचुली गाईको सींग, हिङ, मरिच यी सबै समान भाग कुटेर मिसाउनु र सिसीमा राख्नू। यो चूर्ण आगोमा राखी धूप भैं धुवाँ दिएमा पिशाच, राक्षस, देवताको आवेश तथा ज्वरहरू नष्ट हुन्छन्। भूत आदिका कारण भएको उन्मादमा यसबाट खूब लाभ हुन्छ। (चक्रदत्त) (अनेक पटक परीक्षित):

भालुको रौं, स्यालको रौं, लशुन, सल्लकी, हिङ, बोझो, खसीको मूत्र यी सबै समभाग कुटेर मिसाएर राख्नू। ग्रहबाधाको लागि यो धूप अति उत्तम छ। (परीक्षित)

४७. अपस्मार रोग (छारे रोग)

दोषहरूको प्रकोपद्वारा स्मरणशक्ति, ज्ञान र सत्त्वगुणको लोप भई जब मानिस धेरै बेरसम्म अन्धकारमा पसे जस्तो अनुभव गर्छ र मूर्च्छा हुन्छ, साथै आँखा पल्टाउने, हात गोडा फाल्ने गर्छ त्यस किसिमको रोगलाई अपस्मार भनिन्छ।

सामान्य लक्षण – अपस्मारको वेग सुरु हुँदा रोगीले एकाएक अन्धकार भएको देख्छ र जमिनमा ढल्छ। उसको आँखा र आँखिभौं टेढा हुन्छन्, मुखबाट ज्याल बग्छ, फिंज निस्कन्छ, उसले हात खुट्टा यताउता चलाउँछ। जब रोगको वेग वा चाप घट्छ तब उ स्वस्थ मानिस जस्तै उठेर बस्छ। यसलाई नेपाली भाषामा छारे रोग भनिन्छ, हिन्दीमा मिर्गी भनिन्छ।

डाक्टरीमा यसलाई इपिलेप्सी (Epilepsy) भनिन्छ। उनीहरूको भनाइ अनुसार यो रोग लाग्दा रोगी चीत्कार गर्दै ढल्छ, उसको मुखबाट ज्याल आउन थाल्छ। उसको स्पर्श थाहा पाउने शक्ति वा ज्ञान हुँदैन। शरीर बटारिएर आउँछ। आँखा,

टाउको, हात कसैले बटार्दै छ भन्ने लाग्छ । भित्रबाट रुञ्चे स्वर आउँछ । श्वास-प्रश्वासमा गाह्रो हुन्छ, श्वास रोकिन थाल्छ, कहिलेकाहीं रोकिन्छ । रोगीले दाँत कटकटाउँछ, जिभ्रो टोक्छ । थाहा नपाईकन मलमूत्र वा वीर्य पनि निस्कन्छ । रोगीको अनुहार मलिन हुन्छ । नाडीको गति स्वाभाविक नै रहन्छ तर पसिना आउँछ । यस्तो अवस्था केही सेकेण्डदेखि १० मिनेट सम्म रहन्छ । जब रोगको वेग सकिन्छ तब रोगी कमजोर भएर उठ्छ र सुत्न चाहन्छ । निदाएपछि उ छिटो उठ्दैन ।

हिक्मत अर्थात् यूनानी पद्धति अनुसार – मिर्गी रोगमा जिभ्रो पहेंलो हुन्छ तर त्यसको तलपट्टिका नसाहरू हरिया हुन्छन् ।

रोगीलाई नराम्रा सपना आउँछन् । बिर्सने बानी हुन्छ । मन उदास हुँदै जान्छ, अलि कति पनि रिस उठ्दा टाउको भारी भएर आउँछ । रोगीलाई हरेक चिजबाट डर लाग्न थाल्छ । उन्माद रोग जस्तै मनमा खराब विचारहरू आउँछन्, असन्तोष हुन्छ, सामान्य कुरामा पनि बिना कारण रिसाउने गर्छ ।

सम्प्राप्ति – चिन्ता शोक, क्रोध, आदिका कारण जब, पित्त र कफ दोष कुपित हुन्छन्, तब तिनीहरूले हृदय र मनोवह स्रोतमा विकृति ल्याई अपस्मार रोग उत्पन्न गर्छन् ।

पूर्वरूप – अपस्मार रोग सुरु हुने बेलामा मुटु बढी हल्लिने हुन्छ । टाउकोमा शून्यताको अनुभव हुन्छ, पसिना आउँछ, बढी चिन्ता हुन्छ । रोगी मूर्च्छा पर्छ, मन र इन्द्रियहरूद्वारा गरिने कामहरू राम्ररी हुन छोड्छन् निद्रा पनि हराउँछ ।

अपस्मारका भेदहरू – अपस्मार रोग चार किसिमको हुन्छ – वातज, पित्तज, कफज र सन्निपातज ।

वातज अपस्मारको लक्षण – यसमा अपस्मारको वेग सुरु हुँदा रोगीले आफ्ना अगाडि भएका वस्तुहरूलाई रुखो, रातो वा कालो रंगको देख्छ । बेहोश भएपछि कान्ने, दाँत कटकटाउने गर्छ । मुखबाट फिंज निकाल्छ, छिटो छिटो सास फेर्छ ।

पित्तज अपस्मारको लक्षण – अपस्मारको वेग आउन लाग्दा आँखा अगाडि सबै कुरा पहेंला देखिन्छन् । शरीरका अङ्ग आँखा, मुख आदिको रङ्ग पहेंलो हुन्छ र मुखबाट पहेंलो फिंज निस्कन्छ । उसको शरीर तातो हुन्छ र प्यास बढी लाग्छ । यसको वेग कम समयसम्म रहन्छ ।

कफज अपस्मारको लक्षण – यसमा रोगीको शरीर, मुख र आँखा सेता हुन्छन् र मुखबाट पनि सोतो फिंज निस्कन्छ । शरीर चिसो र भारी हुन्छ, रोमाञ्च भइरहन्छ । त्यसले आफ्नो अगाडिका वस्तुहरू सेता देख्छ । अपस्मारको वेग धेरै समयसम्म रहन्छ । त्यसैले मूर्च्छा परेको रोगी ढिलो उठ्छ ।

सन्निपातज अपस्मारको लक्षण – यसमा हृदयमा वेदना, प्यास र वाकवाकी लाग्ने वा ज्याल फिंज निस्कने जस्ता तीनै दोषका लक्षणहरू देखिन्छन्। सबै दोष कुपित हुनाले राता, पहेंला, सेता रूपहरू घरीघरी देखिन्छन्, अनि रोगी मूर्च्छा पर्छ।

असाध्य अवस्था – सन्निपातज अपस्मार असाध्य हुन्छ। रोगी अति कमजोर भएमा वातज, पित्तज, कफज यी दोषको प्रबलताबाट उत्पन्न अपस्मारहरू पनि असाध्य हुन्छ। उक्त अपस्मारहरू पुराना भए पनि असाध्य हुन्छन्।

जुन रोगीको शरीर निकै कमजोर छ र बारम्बार काम्छ, आँखिभौंहरू माथि पल्टन्छन्, आँखा टेढा वा विकृत हुन्छन्। त्यो रोगी बाँच्दैन।

अपस्मारको प्रकोपको समय – वातज अपस्मारको प्रकोप १२ दिनमा हुन्छ। यस समयमा रोगले अलि जोड देखाउँछ। पित्तज अपस्मारको प्रकोप १५ दिनमा हुन्छ। यस बीचमा जोड गर्न सक्छ। कफज अपस्मारको प्रकोप १ महिनामा हुन्छ।

अपस्मारको सामान्य चिकित्सा – यसमा कुपित दोषको अवस्था अनुसार संशोधन गरेर पछिबाट शमन औषधिहरू दिनुपर्छ। संशोधनका लागि वातज अपस्मारमा वस्तिकर्म, पित्तजमा विरेचन, कफजमा वमन गराउनुपर्छ। यस रोगमा अञ्जन, नस्य र धूपले धेरै आराम हुन्छ। अतः यिनीहरूको आवश्यक भए अनुसार उपयोग गर्नुपर्छ।

अपस्मारको प्रकोपको बेलामा रोगीले आफ्नो जिभ्रो टोक्ने गर्छ। यसबाट जिभ्रो काटिने डर हुन्छ। यसबाट बचाउन नरम कपडाभित्र कपास भरेर डल्लो बनाई प्रकोपको बेलामा रोगीको मुखमा राखीदिनुपर्छ। यसो गर्दा जिभ्रो सुरक्षित हुन्छ र मुख पनि खुला रहन्छ। कपडाको सट्टा रबड वा काठको टुक्रा पनि दाँतहरूको बीचमा राख्न सकिन्छ। अपस्मारको रोगीलाई प्रकोपको समयमा नस्य दिएर, अञ्जन गरेर अथवा धुनी दिएर होसमा ल्याउनुपर्छ। होसमा आइसकेपछि असली रोगनाशक औषधि दिनुपर्छ।

यस रोगमा प्रकोपको समयमा भिन्नै औषधि दिइन्छ, प्रकोप शान्त भएपछि अर्कै औषधि दिइन्छ। अपस्मारको रोगीको नाकमा अकरकराको मसिनो चूर्ण फुकेर चढाउनुपर्छ। उसलाई आछ्यूँ आयो भने रोग आराम हुने आशा हुन्छ। यो उत्तम परीक्षा हो।

विशेष चिकित्सा

वातज अपस्मारमा – काशको जरा, विदारीकन्द, उखुको जरा, कुशको जरा यी सबैको काढा ४ लीटर तयार पार्नू र १ किलो घिउ मिसाई पकाउनू। घिउ मात्र बाँकी भएपछि उतारेर छान्नू र सिसीमा राख्नू। यो घिउ सेवन गर्नाले वातज अपस्मार शान्त हुन्छ।

पित्तज अपस्मारमा – जेठी मधुलाई पानीसँग पिनेर २५० ग्राम लेदो तयार पार्नू। त्यो लेदोका साथ गाईको घिउ १ कि. अमलाको रस १६ लीटर कलईदार कराहीमा राखी पकाउनू। घिउमात्र बाँकी हुँदा उतारेर छान्नू। यस घिउको सेवनले पित्तको गर्मी शान्त भएर जान्छ।

अपस्मारनाशक सरल योगहरू – सुठो, मरिच र पिप्ला समभाग लिएर सिउँडीको दूधमा २० दिनसम्म भिजाएर राख्नू। त्यसपछि पानीसँग सिलौटोमा पिनेर सुकाइराख्नू। यसको नस दिनाले अपस्मार रोग हराउँछ। (परीक्षित)

आँकको जराको बोक्रालाई बाख्राको दूधमा पिनेर एउटा कपडामा राख्नू र अपस्मारको आक्रमण भएको बेलामा २-४ थोपा नाकमा राखी दिनू। यो नाकमा पर्ने बित्तिकै जादू जस्तै रोगीको होश खुल्नेछ। (परीक्षित)

रिठ्ठालाई चूर्ण बनाइराख्नू। यसको नस दिनाले अपस्मार रोग नष्ट भएर जान्छ। (परीक्षित)

६ ग्राम नौसादर र १.५ ग्राम एलुवा लिएर मसिनो चूर्ण बनाउनू र १ ग्राम तिलको तेल मिसाएर घोट्नू। यसको ३-४ थोपा नाकमा हाल्नाले अपस्मारमा आराम हुन्छ।

जटामसीको मसिनो चूर्ण बनाई नाकमा नस दिनाले, अथवा आगोमा राखी धुवाँ लाग्न दिनाले पुरानो अपस्मार पनि शान्त हुन्छ। सेतो प्याजको रस नाकमा राखेमा मिर्गीमा आराम हुन्छ।

चरकले कपिला (कैली) गाईको मूत्रको नस्य पनि अपस्मारमा उपयोगी हुन्छ भनेका छन्। कैथ (कपित्थ), शरद् ऋतुको मुग, नागरमोथा, खसखस, जौ, त्रिकटु यी समान भाग लिएर बाख्राको मूत्रमा पिनेर बत्ती बनाउनू। अपस्मारको वेग आई बेहोस भएको अवस्थामा यो बत्ती पानीमा घोटी रोगीको आँखामा अञ्जन गरिदिएमा होश खुल्छ।

यी सबै औषधिहरू अपस्मारको प्रकोपबाट हुने बेहोशी हटाउने उपाय हुन्।

खाने औषधिहरू – लशुन १० ग्राम, कालो तिल ३० ग्राम दुवैलाई मिसाई बिहान २१ दिनसम्म सेवन गर्नाले अपस्मार रोग हराएर जान्छ। (परीक्षित)

१० ग्राम लशुन र २० मि.लि. तिलको तेल मिसाएर खाए पनि अपस्मार हराउँछ। (अनेक पटक परीक्षित) यो औषधि धैर्यसाथ केही दिनसम्म सेवन गर्नुपर्छ।

शतावरीको चूर्ण दूधसँग अथवा ब्राह्मीको रस महसँग केही दिन सेवन गर्नाले सबै किसिमको अपस्मार नाश भएर जान्छ।

ब्राह्मीको पातको रस १० मि.लि. मा मह १० ग्राम मिसाउनू। यसको नित्य सेवनले मिर्गी (अपस्मार) निश्चय आराम भएर जानेछ। (खूब परीक्षित)

ब्राह्मीको पातको रस १२ मि. लि. अकरकराको चूर्ण ३ ग्राम र मह ३ ग्राम सबै मिसाई नित्य बिहान-बेलुका सेवन गर्नाले मिर्गी, उन्माद र चित्तभ्रम आदि रोगका लागि रामबाण औषधि हुन्छ। (खूब परीक्षित)

जेठी मधुको चूर्ण ६ ग्रामलाई कुभिण्डोको रस १२ मि.लि. मा मिसाई नित्य सेवन गर्नाले अपस्मार आराम भएर जान्छ ।

महसँग बोझ्नोको चूर्ण सेवन गर्ने र भोजनमा दूध-भात खाने गर्नाले पुरानो अपस्मार शान्त भएर जान्छ । (परीक्षित)

२१ ओटा जाइफल लिएर तिनमा प्वाल पार्नू र धागोमा उनेर माला बनाउनू । यो माला लगाउनाले अपस्मार नाश हुन्छ ।

अकरकरा ६० ग्राम, उखुको भिनेगर ६० मि.लि, मह ३६० ग्राम यी सबैलाई कराहीमा राखी मन्द आँचमा पकाउनू । जब बाक्लो हुन्छ अनि सिसीमा राख्नू । यसको मात्रा ६ ग्राम हो । यो बिहान तातो पानीसँग खानाले अपस्मार हराएर जान्छ । (परीक्षित)

सुँगुरको पुच्छरको रौंलाई मङ्गलबारका दिन दाहिने हातको कान्छी औंलामा औंठी सरह लगाउनाले अपस्मारमा आराम हुन्छ ।

विशिष्ट योगहरू

कल्याणचूर्ण – पिप्ला, पिप्लाको जरा, चाबो, चितु, सुठो, मरिच, वायुविडङ्ग, सानो पिप्ला, त्रिफला, जिरा, धनिया, करञ्ज, सिधें नुन, कालो नुन, अजमोदा सबै समभाग लिएर छुट्टाछुट्टै कुठटी छानी मिसाइराख्नू । यो चूर्ण ३-६ ग्राम मात्रामा तातो पानीको अनुपानका साथ सेवन गर्नू । यसको सेवन गर्दा अपस्मार, उन्माद, विषविकार यी नष्ट हुन्छन् । (खूब परीक्षित) यो चूर्ण अथवा ब्राह्मी घृत गोमूत्रमा पिनिएको सर्प्यूको बुकुवा लगाईदिंदा कैयन् अपस्मारका रोगीहरूलाई आराम भैसकेको छ ।

पञ्चगव्य घृत – गाईको पुरानो घिउ १ कि., गोमूत्र १ लिटर, पानी ४ लिटर, गोबरको रस १ लिटर, गाईको अमिलो दही १ किलो गाईको दूध १ लिटर सबलाई कलईदार कराहीमा राखी पकाउनू । घिउ मात्र हुँदा उतारेर छान्नू । यो घिउ ६ ग्राम मात्रामा तातो पानीमा मिसाई सेवन गर्न दिनू । यसको सेवनले अपस्मार ज्वर र कामला रोग नष्ट हुन्छ ।

कूष्माण्ड घृत – जेठीमधु आधा किलो लिएर कुटी छानी चूर्ण बनाउनू त्यसलाई सिलौटोमा पिनेर लेदो पार्नू । त्यसपछि गाईको घिउ २ किलो, कुभिण्डोको रस ३६ लिटर र जेठीमधुको लेदो कराहीमा राखी पकाउनू । जब रस जति डढेर घिउमात्र बाँकी रहन्छ, अनि उतारेर छान्नू । यसको सेवनले उन्माद शान्त हुन्छ । मात्रा- ३-६ ग्राम ।

महाचैतस घृत – सनपाटको बियाँ, निशोथ, अडेरको जरा, दशमूल (सबै मिसाएर), कुरिलो, रास्ना, पिप्ला, सैजनको जराको बोक्रा यी प्रत्येक औषधिहरू १००-१०० ग्राम लिएर मोटो चूर्ण बनाइराख्नू । अब सबैलाई २५ लिटर ५०० मि.लि.

पानीमा पकाउनू । १ चौथाई (६ लिटर ४०० मि.ली.) पानी बाँकी भएपछि उतारेर छानिराख्नू । कल्कका लागि विदारीकन्द, जेठीमधु, मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीरकाकोली, मिश्री, खजूर, कुरिलो, दाख, छोकडा, युञ्जात (पाँच औंले), गोखुर तथा चैतस घृतका अरू द्रव्यहरू (इन्द्रवारुणीको जरा, त्रिफला, रेणुका, देवदारु, एलवालुक, शालपर्णी, नगर, हलेदो, चुत्रो, अनन्तमूल (दुधे लहरो), कालो सारिवा, प्रियङ्गु (दैकाम्लो) निलो कमल, सुकमेल, मजिठो, दन्तीको जरा, अनारदाना, केशर, तालीसपत्र, बिंही, जाईको फूल, वायुविडङ्ग, पृश्निपर्णी, कुठ, सेतो चन्दन, पद्मक, देवदारु यी प्रत्येक द्रव्य ६-६ ग्राम लिएर कुटी छानी चूर्ण बनाउनू । त्यसपछि पानीसँग घोटी कल्क बनाउनू । अब पहिले बनाएको क्वाथ, यो कल्क र गाईको घिउ १ कि. ६९६ ग्राम कलईदार कराहीमा राखी पकाउनू । जब घिउमात्र बाँकी रहन्छ, तब उतारेर छानेर राख्नू । यस घिउको सेवनले अपस्मार, उन्माद ज्वर आदि शान्त हुन्छन् ।

४८. योषापस्मार (हिस्टिरिया)

महिलाहरूमा गर्भाशयको खराबी, मासिक स्रावमा अनियमितता, पतिबाट घृणा, निष्ठुर आचरण मिल्नाले अथवा भोगको सुख कम हुनाले, विधवा अवस्था आई शोक पर्नाले, अजीर्ण, कब्जियत रोग आदि भैरहनाले युवती स्त्रीहरूलाई एक प्रकारको अपस्मार जस्तो रोग लाग्दछ जसलाई संस्कृतमा योषापस्मार र अंग्रेजीमा 'हिस्टिरिया' भनिन्छ ।

पूर्वरूप – रोग सुरू हुने बेलामा पहिले छाती दुख्छ, हाई आइरहन्छ, शरीर र मनमा ग्लानि हुन्छ र रोगी बेहोश हुन जान्छ ।

लक्षण – विना कारण हाँस्नु, रुनु, कराउनु, आफ्ना नाताका, कुटुम्बका सदस्यहरूमाथि व्यर्थको दोष थोपार्नु, आफूलाई दोषी संझी क्षमा माग्नु आदि लक्षण हुन्छन् । कुनै रोगिणीलाई तल्लो पेटदेखि घाँटीसम्म गोला आएको अनुभव हुन्छ । तथा शरीरको कुनै भागमा दर्दको आभास हुन्छ । उसको मन कुनै सेतो चिज वा प्रकाशबाट चञ्चल भएर जानेगर्छ ।

हिक्मत अर्थात् यूनानी चिकित्सा अनुसार एक किसिमको अपस्मार गर्भाशयको दोषबाट पनि हुन्छ । रजोधर्म (मासिक स्राव) बन्द भएर जानाले वा मैथुन नगर्नाले अथवा धातु रोकिनाले जब गर्भाशयमा रज र धातुको अंश जम्मा भएर बिग्रेर जान्छ तब त्यसको सूक्ष्म अंश मस्तिष्कतर्फ पुग्छ र अपस्मार रोग उत्पन्न गराउँछ । यस्तो रोगमा महिलाको रजोधर्म बन्द हुन्छ, तल्लो पेट, कम्मर आदि दुख्ने गर्छ । यो रोग बहुधा गर्भवती महिलाहरूलाई हुन्छ र सन्तान जन्माइसकेपछि हराएर जान्छ । आर्तव अर्थात् मासिक स्राव हुने बेलामा यसको चाप बढी हुन्छ ।

यस रोगमा शरीरको कुनै भागमा असह्य वेदना हुने गर्छ। त्यहाँ कोही प्रवेश गरी बसेको छ यस्तो अनुभव हुन्छ तर त्यस दुखलाई वर्णन गर्न खोज्दा रोगीको बोली रोकिन्छ। कच्चा मनवाला रोगीलाई सबै भूतकै काम हो भन्ने लाग्छ। उसको मनमा जसको शङ्का हुन्छ उसैको नाम लिन्छ।

यस रोगमा पेट फुलेर डकार आउनु दु:खद लक्षण हो। कसैलाई खोकी पनि लाग्छ, कसैको स्वरभङ्ग हुन्छ अर्थात् बोली बस्छ, कसैलाई हिक्का चल्छ, कसैलाई तीव्र गतिमा श्वास चल्छ, कसैलाई अधिक मात्रामा पिसाब लाग्छ र उ निस्तेज भएर जान्छ। कसैको पिसाब नै रोकिन्छ। कसैलाई प्यासका कारण धेरै पानीबाट र कसैलाई धेरै मात्रामा पिशाब भएर होश खुल्छ। जबसम्म यस रोगले अपस्मार वा उन्मादको रूप लिदैन तबसम्म मृत्युको सम्भावना हुँदैन।

अपस्मार र हिस्टिरियामा भेद – हिस्टिरियामा सर्वथा बुद्धिको कमी हुँदैन, तर मिर्गीमा (अपस्मार) बुद्धि कम भएर जान्छ।

अपस्मारको वेग हुँदा सुरुमा रोगी कराउँछ तर हिस्टिरियामा यस्तो हुँदैन। हिस्टिरियामा मूर्च्छापछि गहिरो निद्रा लाग्छ, जिभ्रो टोकिदैन, अपस्मारमा छिटो होस आउँछ, जिभ्रो टोकिन सक्छ।

हिस्टिरियामा पेटमा माथिदेखि तलसम्म एउटा गोला उठेको भान हुन्छ। अपस्मारमा यस्तो हुँदैन। अपस्मारको आक्रमण तीव्र वेगले हुन्छ हिस्टीरियाको आक्रमण त्यति वेगले हुँदैन।

अपस्मारको आक्रमण हुँदा रोगी एकाएक जमीनमा लड्छ र उसलाई चोट लाग्छ, हिस्टिरियामा रोगी सावधानीका साथ लड्छ, उसलाई चोट पनि लाग्दैन।

अपस्मारको आक्रमण हुँदा रोगीको आँखा र घाँटी बाङ्गो हुनजान्छ, हिस्टिरियाको आक्रमण समय निश्चित हुँदैन।

अपस्मारको भर्गाशयसँग कुनै सम्बन्ध हुँदैन, हिस्टिरियाको गर्भाशयसँग सम्बन्ध हुन्छ

योषापस्मारको चिकित्सा

प्रकोपको अवस्थामा – अमोनिया (नौसादर) सुँघाउनू अथवा सुठो, मरिच र पिप्लाको चूर्ण बनाई गिजामा दल्नू। अथवा प्याज कुटेर रोग लागेकी महिलालाई सुँघ्न दिनू। जब रुग्ण महिला होशमा आउँछे तब निम्नलिखित मध्ये कुनै उत्तेजक औषधि तुरुन्त दिनू –

४ चम्चा द्राक्षासवमा बराबर पानी मिसाएर दिनू। अथवा १ चम्चा ब्राण्डी ३० मि.लि. पानीमा मिसाएर दिनू। अथवा हिङलाई पिनेर घिउ मिसाएर दिनू। अथवा १२५ मिलीग्राम कस्तूरी महमा मिसाएर खान दिनू। अथवा पिपरमिण्टको तेल ३–

४ थोपा महमा मिसाएर दिनू । अथवा एउटा सिंगै प्याजको रस महमा मिसाई ख्वाइदिनू ।

रोगको वेग शान्त भएपछि बारम्बार हुने रोगको प्रकोपलाई रोक्न यदि रोगीको शरीर कमजोर छ भने पौष्टिक औषधि र पौष्टिक पथ्य दिनू ।

रोगीको मनमा क्षोभ नहोस् आवेश आउन नपाओस् उसलाई रिस नउठोस् यसको उपाय गर्नू। १२५ मिलीग्राम जति हिङ जमेको घिउमा मिसाएर केही समयसम्म खान दिनू, यसले हित गर्छ। कब्जियत छ भने हिङ र मुसब्बर समभाग मिसाई १२५ मिलीग्रामको गोली पार्नू। यो १ गोली नित्य बिहान-बेलुका मनतातो पानीसँग खान दिनू ।

मासिक स्राव समयमा हुँदैन अथवा कम मात्रामा हुन्छ भने मासिक स्राव खुल्ने औषधि दिनू । केही समयसम्म दिनमा ३ पटक २ रायोभर उत्तम कस्तूरी खान दिनू । अथवा बिहान बेलुका 'जुन्दबेदस्तर' जसलाई अंग्रेजीमा Castorium भन्छन् त्यो रौं बराबर दिनू अथवा टिंक्चर कैस्टोरियम १-१ थोपा दिने गर्नू ।

हिङ यस रोगको लागि प्रसिद्ध औषधि हो । १२५ मिलीग्राम मात्रामा दिनमा १ पटक वा २ पटक सेवन गराउनुपर्छ ।

हल्का र छिटै पच्ने भोजन दिनुपर्छ। यस रोगमा शक्तिवर्धक र पौष्टिक आहारले अति लाभ दिन्छ । किनकि यसबाट सारा शरीर नै अति कमजोर भएर जान्छ ।

पथ्य कुराहरू – गहुँ, रातो चामल, दूध, ताजा घिउ, पुरानो घिउ, मरुभूमिका पशुपक्षीहरूको मासु, पुरानो कुभिण्डो, पर्वर, लुँडेको साग, नरिवल, दाख, हर्रो, स्वर्ण भस्म यी सबै हितकारी हुन्छन् ।

अपथ्य कुराहरू – शोक, भय र क्रोधको वशमा हुनु, बढी परिश्रम गर्नु, रातमा जागा बस्नु, भोकको वेग रोक्नु वा भोक लागेको बेलामा नखाइ बस्नु, असार महिनामा पैदल हिंड्नु आदि हानिकारक हुन्छन् ।

४९. शोथ रोग (जिउ सुनिने रोग)

विभिन्न कारणहरूबाट शरीरको कुनै एक भाग अथवा पूरै शरीर सुनिएर जाने रोगलाई शोथ भनिन्छ ।

शोथका कारणहरू

दुर्बल अर्थात् कमजोर मानिसले क्षारयुक्त, अमिलो, पिरो, तातो र भारी खानेकुराहरू, दही, नपकाएको काँचो अन्न, माटो, शाक, विरुद्ध आहार अथवा विषयुक्त खाने कुरा खानु, अर्श रोग हुनु, हिंडडुल आदि कामहरू नगर्नु, शरीरको

शोधन गर्नुपर्ने बेलामा शोधन नगर्नु, मर्महरूमा गडबडी हुनु, गर्भपात वा गर्भस्राव हुनु, वमन आदि पञ्चकर्महरू विधि नपुऱ्याई गर्नु यी सबै निज अर्थात् वायु आदि दोषहरूबाट उत्पन्न हुने शोथका कारण हुन्छन् ।

सम्प्राप्ति– उक्त कारणहरूबाट कुपित भएको वायुले दूषित रक्त, कफलाई लिएर शरीरका बाहिरी -माथिका नसाहरूमा लैजाँदा तिनीहरूद्वारा नसा व्याप्त भएर वायुको गति रोकिन्छ । त्यस अवस्थामा छाला र मासुको बीचमा रगतसहित तीनै ओटा दोषहरू जम्मा हुँदा शरीरको कुनै एक ठाउँ वा अङ्गमा अथवा सबैतिर शोथ उत्पन्न हुन्छ ।

दोषहरू आमाशयको भागमा जम्मा भएमा शरीरको पेटभन्दा माथिको भाग छाती आदिमा शोथ हुन्छ, पक्वाशयमा जम्मा भएमा शरीरको बीच भागमा शोथ हुन्छ, मलाशयमा जम्मा भएमा नाभिभन्दा तलका अङ्गहरूमा शोथ हुन्छ ।

सामान्य लक्षण – जुन अङ्गमा शोथ भएको छ त्यो भारी र अस्थिर हुन्छ, माथि उठेको देखिन्छ, त्यहाँ छाम्दा तातो हुन्छ, नसाहरू तन्किएर साना देखिन्छन्, रोमाञ्च हुन्छ र छालाको रङ्ग बदलिएर रातो वा कालो हुन्छ ।

शोथका भेदहरू – शोथ रोग ९ किसिमको हुन्छ – १. वातज, २. पित्तज, ३. कफज, ४. वातपित्तज, ५. वातकफज, ६. पित्तकफज, ७. त्रिदोषज (सन्निपातज), ८. अभिघातज र ९. विषज ।

पूर्वरूप – शोथ सुरु हुने बेलामा जुन अङ्ग सुनिन लागेको हो त्यो तातेर आउँछ, त्यहाँ भएका सिराहरू (नसाहरू) तन्किन्छन् र भारी भएको अनुभव हुन्छ ।

भेद अनुसार शोथका लक्षणहरू

वातज शोथ – यसमा छालाको रङ्ग रातो वा कालो हुन्छ, पातलो हुन्छ, त्यसमा कुनै कारण विना एकाएक सुनिएको ठाउँमा थिच्दा गड्छ र आफैं उठेर आउँछ । यो शोथ दिउसो बढ्छ राती घट्छ । तेलको मालिस र तातो सेक गर्दा कम हुन्छ ।

पित्तज शोथ – यसमा छाला कमलो, विशेष गन्ध आउने र कालो, पहेंलो वा रातो रङ्गको हुन्छ, सुनिएको ठाउँमा पोल्ने र बेसरी दुख्ने हुन्छ, त्यो ठाउँ पाक्ने सम्भावना बढी हुन्छ । साथमा भ्रम हुने, ज्वर आउने, बढी पसिना आउने, तिर्खा लाग्ने र बेहोश हुने हुन्छ । आँखा राता हुन्छन् ।

कफज शोथ – यसमा सुनिएको ठाउँ भारी, स्थिर (नचल्ने) र फुस्रो रंगको हुन्छ । यो शोथ बिस्तारै उत्पन्न हुन्छ र ढिलो गरेर कम हुन्छ । शोथ भएको अङ्गमा थिच्दा माथि (चाँडै) उठ्दैन । यो राती बढ्दै जान्छ । साथमा अन्न नरुच्ने, मुखबाट पानी आउने, निद्रा लाग्ने, बान्ता आउने हुन्छ । अग्नि मन्द हुन्छ– अपच हुन्छ ।

वातपित्तज शोथमा वातज र पित्तज दुवै शोथका कारण लक्षणहरू देखिन्छन् । वातकफजमा वातज र कफजका कारण र लक्षणहरू पाइन्छन् । पित्तकफजमा पित्तज र कफज शोथका कारण र लक्षणहरू हुन्छन् । त्रिदोषज शोथमा वातज, पित्तज, कफज यी तीनै शोथका लक्षणहरू देखिन्छन् ।

अभिघातज शोथ – तिखा हतियार आदिले काट्दा वा घोच्दा, लट्टी आदिले हिर्काउँदा, अग्लो ठाउँबाट लड्दा, चिसो र दूषित हावा शरीरमा लाग्दा, भलायो-काउसो आदिको रस आदि शरीरमा पर्दा यो शोथ रातो रङ्गको र निकै तातो हुन्छ र एक ठाउँबाट अरू भागमा फैलिँदै जान्छ । यसमा धेरैजसो पित्तज शोथका लक्षणहरू हुन्छन् ।

विषज शोथ – यो शोथ विषालु जीवहरू शरीरमा हिंड्नाले, तिनीहरूको पिसाब शरीरमा पर्नाले, विष नभएका प्राणीले पनि दाँत, दाह्रा, नङ् आदिले घाउ पार्नाले हुन्छ । विषयुक्त प्राणीहरूको मल, मूत्र, र शुक्रद्वारा दूषित लुगाहरूको सम्पर्क गर्नाले, विषका वृक्षहरू (विषालु ग्याँसहरू)को सम्पर्कले शरीरमा विष वा रासायनिक पदार्थहरू पर्नाले समेत हुनसक्छ ।

त्यसमा सुनिएको ठाउँ कमलो हुन्छ, शोथ तलतिर सर्छ र त्यो एकाएक उत्पन्न हुन्छ । त्यसमा पोल्ने, दुख्ने गर्छ । कहिलेकाहीं पाकेर पनि आउँछ ।

असाध्य लक्षण – पाण्डु आदि रोगहरूको उपद्रवको रूपमा नभैकन मानिसको शरीरमा गोडाबाट शोथ सुरु भयो माथि बढ्दै गएको छ भने त्यो असाध्य र घातक हुन्छ ।

त्यस्तै महिलाको शरीरमा शोथ मुखबाट सुरु भएर तलतिर जान्छ भने त्यो पनि घातक हुन्छ । शोथ मूत्राशयबाट सुरु भएर शरीरमा फैलिएमा पुरुष तथा महिला दुवैलाई घातक हुन्छ । शोथ कहाँबाट सुरु भएर त्यसको विचार गरेर मात्र चिकित्सा आरम्भ गर्नुपर्छ ।

शोथको सामान्य चिकित्सा – हर्रो, हलेदो, भारंगी, गुर्जो, चितु, दारुहरिद्रा, पुनर्नवा, देवदारु, सुठो, यी सबैको काढा बनाई पिउनाले पेट, हात, गोडा र मुखमा देखिएको शोथलाई तत्काल आराम गर्छ । (परीक्षित)

आँककको पात, पुनर्नवा, नीमको बोक्रा यी सबैको काँढाले सुनिएको ठाउँ सेक्ने गरी धुने गर्नाले शोथ नष्ट हुन्छ । अथवा गोमूत्रलाई तताएर सुनिएको ठाउँमा सेचन गर्नाले शोथ नष्ट हुन्छ । (परीक्षित)

अदुवाको रसमा पुरानो गुड मिसाई पिउने र पछिबाट बाख्राको दूध पिउने गर्नाले शोथ नष्ट हुन्छ ।

सेतो पुनर्नवाको रस प्रतिदिन १० मि.लि. पिउने गर्नाले शोथ नष्ट हुन्छ ।

शोथ रोगमा पहिले विरेचन औषधि दिएर शोधन गर्नुपर्छ। त्यसपछि सुठोको चूर्ण दूधसित सेवन गराउनुपर्छ। अथवा गुर्जोको चूर्ण दूधसँग सेवन गराउनुपर्छ। (परीक्षित)

सेतो फूल हुने हरियो र ताजा पुनर्नवा, नीमको हरियो बोक्रा, पर्वरको हरियो पात, सुठो, कुटकी , हरियो गुर्जो, देवदारु ठूलो हर्रो यी सबै ३-३ ग्राम लिएर अलि अलि कुट्नू र २०० मि.लि. पानीमा पकाउनू। जब ५० मि.लि. पानी बाँकी रहन्छ अनि छानी राख्नू। सेलाएपछि त्यसमा ६ ग्राम मह मिसाएर बिहान-बेलुका खान दिनू। यो काढा हरेक किसिमको शोथका लागि रामबाण औषधि हो। जुन ज्वरो अनेक प्रकारका कडा औषधि र कुनैन आदिबाट बिग्रेर हात-गोडा आदि अङ्गहरूमा शोथ उत्पन्न भएको छ त्यसका लागि हल्का भोजनका साथ यो काढा पिउने गर्नाले निश्चय नै आराम भएर जान्छ। फियो तथा कलेजोको रोगमा जब ज्वरो बिग्रेर जान्छ र शरीरमा शोथ पनि बढ्छ त्यस अवस्थामा यो काँढाले खूब फाइदा गर्छ। गर्भवती र सुत्केरी महिलाहरूको शोथमा, साना बालकहरूको कलेजोको रोगका कारण उत्पन्न शोथमा, ज्वरसहित अथवा विना ज्वरको शोथमा यो काँढा कहिल्यै फेल हुँदैन। (परीक्षित)

एरण्डको बोक्रा, विषखपरा (पुनर्नवा) र सुठो यिनलाई पानीसँग पिनेर मनतातो बनाई लेप गर्नाले शोथ नष्ट हुन्छ।

विशेष चिकित्सा -

वातज शोथको चिकित्सा - जुन शोथ औंलाले थिच्दा बस्छ र औंला हटाउने बित्तिकै जस्ताको तस्तै हुन्छ, जसमा मुटुको धडकन छिटो चल्छ, त्यो वातज शोथ हो। त्यसमा दशमूलको काँढा परीक्षित औषधि हो।

सुठो, अड्डेरको जरा, पुनर्नवा र बृहत् पञ्चमूल (बेल, गम्भारी, गिनेरी, पाटला, टटेलो) यिनको काँढा दिनू, आराम हुन्छ। (परीक्षित)

पित्तज शोथको चिकित्सा - १० ग्राम त्रिफलाको चूर्ण गोमूत्रका साथ सेवन गर्नाले अथवा १.५ ग्राम निशोथको चूर्ण गोमूत्रका साथ सेवन गर्नाले पित्तज शोथ शान्त हुँदै जान्छ।

पर्वरका पात, नीमको बोक्रा, दारुहरिद्रा, त्रिफला प्रत्येक समभाग राखी बनाएको काढामा शुद्ध गुग्गुलु मिसाई सेवन गर्नाले प्यास र ज्वरो सहित शोथ नष्ट भएर जान्छ। यस काँढाले पित्त र कफ दुवैको शोथलाई नष्ट गर्छ।

कफज शोथको चिकित्सा - पिप्ला, पुरानो मिश्री, सैजनको बोक्रा र आलस यी सबैलाई एकसाथ पिनेर लेप गर्नाले कफज शोथ आराम हुन्छ। गहत र सुठोलाई पानी वा गोमूत्रमा पिनेर सुनिएको ठाउँमा लेप वा सिञ्चन गर्नाले कफज शोथ आराम हुन्छ।

पुनर्नवा, सुठो, निशोथ, गुर्जो, अमलतास (राजवृक्ष)को गुदी, हर्रो, देवदारु यी सबै समभाग मिसाई पिनेर १२ ग्राम कल्क बनाउनू र गोमूत्रसँग पिउन दिनू कफज शोथ आराम हुन्छ । (परीक्षित)

त्रिदोषज शोथको चिकित्सा – पिप्ला जिरा, ठुलो पिप्ला, कण्टकारी, सुठो चितु, हलेदो, पिप्लाको जरा, पाठा, नागरमोथा यी सबै समभाग लिएर कुटी छानी चूर्ण बनाउनू । यो चूर्ण ३–४ ग्राम मात्रामा तातो पानीसँग सेवन गर्नाले त्रिदोषज तथा पुरानो शोथ पनि शान्त हुन्छ । (परीक्षित)

चिराइतो र सुठोलाई सिलौटोमा पानीसँग पिनेर तातो पानीसँग खान दिएमा त्रिदोषज शोथ नष्ट हुन्छ ।

बेलपत्रको रस निकाली कपडछान गरी नित्य २५ मि.लि. पिउने गर्नाले, अथवा गजपिप्पली (ठूलो पिप्ला), हलेदो, पाठा, कण्टकारी, सुठो, नागरमोथा, त्रिकटु (सुठो, मरिच, पिप्ला), जिरा, चितु र कुटकी यी सबैको समभाग लिएर चूर्ण बनाउने र ३–६ ग्राम मात्रामा तातो पानीसँग सेवन गर्नाले त्रिदोषक शोथ नष्ट हुन्छ ।

अथवा हलेदो, दारुहरिद्रा (चुत्रो), सेतो चन्दन, रातो चन्दन, लोध, पुनर्नवा, सुगन्धवाला, रसोंत, मरोडफली, सानो हर्रो, गेरु र पद्मक यी सबै पिनेर बनाएको कल्क (लेदो) सुनिएको ठाउँमा लेप गर्नाले त्रिदोषज शोथ नष्ट हुन्छ । (परीक्षित)

विषज शोथ नाश गर्ने उपायहरू – तिल र कालो माटो सँगै पिनेर लेप गर्नाले अथवा भैंसीको दूधबाट बनेको नौनी लगाउनाले अथवा तिललाई दूधसँग पिनेर नौनीघिउमा मिसाएर लेप गर्नाले भलायोबाट उत्पन्न शोथ नष्ट हुन्छ ।

५०. वृद्धि रोग (अण्डकोश आदि फुल्ने रोग)

शरीरमा रहेका अङ्गहरूमध्ये अण्डकोष बढेर अर्थात सुनिएर ठूलो भएर जाने भएमा अथवा पेटमा भित्र रहेको आन्द्रा कुनै कारणबाट आफ्नो ठाउँ छोडी तल सर्न गएमा त्यसलाई वृद्धिरोग भनिन्छ ।

रोगको सम्प्राप्ति – कुपित भएको वायु तलतिर गति हुँदा जब अण्डकोषहरूमा पुगेर त्यहाँ भएका नसाहरूलाई दूषित बनाई अण्डकोषहरूलाई फुलाइदिन्छ त्यस अवस्थामा वृद्धि रोग उत्पन्न हुन्छ ।

रोगका भेदहरू – वृद्धि रोग सात किसिमको हुन्छ – वातज, पित्तज, कफज, रक्तज, मेदोज, मूत्रज, अन्त्रज ।

वातज वृद्धिको लक्षण – वृद्धि भएको ठाउँ (अङ्ग)मा छाम्दा वायु

भरिएको थैलो जस्तो लाग्छ, त्यो भाग रुखो हुन्छ । त्यहाँ विशेष कुनै कारण नभए पनि दुख्ने, पोल्ने हुन्छ ।

पित्तज वृद्धिको लक्षण – यसमा सुनिएको ठाउँ पाकेको डुम्रीको फल झैं रातो हुन्छ जुन छाम्दा तातो हुन्छ र पाक्न सक्ने हुन्छ ।

कफज वृद्धिको लक्षण – यसमा सुनिएको भाग चिल्लो हुन्छ र चिलाउने र मन्द दुख्ने हुन्छ, छाम्दा चिसो र कठोर हुन्छ ।

रक्तज वृद्धिको लक्षण – यो वृद्धि हुँदा सुनिएको ठाउँमा काला फोकाहरू हुन्छन्, साथमा पित्तज वृद्धिका लक्षणहरू पनि हुन्छन् ।

मेदोज वृद्धिको लक्षण – यसमा सुनिएको ठाउँ कफज वृद्धि जस्तै भारी, चिल्लो हुन्छ किन्तु कोमल हुन्छ । त्यो हेर्दा पाकेको ताडको फल जस्तै निलो र गोलो हुन्छ ।

मूत्रज वृद्धिको लक्षण – पिसाबको वेग रोक्ने मानिसमा यो रोग हुन्छ । यसमा रोगी हिंड्न लाग्दा पानी भरिएको थैलोमा पानी चलेजस्तो अनुभव हुन्छ र दुख्ने गर्छ । त्यो भाग कोमल हुन्छ । अण्डकोषहरू यताउता सर्दा मूत्रकृच्छको जस्तै दुख्ने हुन्छ ।

अन्त्रवृद्धिको कारण र लक्षण – यो रोग वायु बढाउने आहार-विहार गर्नाले उत्पन्न हुन्छ । जस्तै चिसो पानीमा बस्नु, वेगहरू रोक्नु, वेग नभएको बेलामा बल गर्नु, नसक्ने किसिमको भारी बोक्नु, लामो बाटो पैदल हिंड्नु, जथाभावी अङ्गहरू चलाउनु आदि । यी कारणहरूबाट कुपित भएको वायुले जब आन्द्राको अलिकति भागलाई आफ्नो ठाउँबाट खस्काई तल लैजान्छ र वंक्षण सन्धिमा गाँठो जस्तो शोथ गराउँछ । त्यसको उपेक्षा गर्दा त्यो अण्डकोषसम्म पुग्छ । त्यस अवस्थामा पेट फुल्ने, दुख्ने, कांसने हुन्छ र अण्डकोष पनि फुलेको देखिन्छ । त्यसलाई थिच्दा त्यो आवाजका साथ भित्र पुग्छ, छोडेपछि फेरि तल सर्दै जान्छ । यो सुरुमा साध्य हुन्छ र तल पुगेपछि असाध्य हुन्छ ।

एकशिरा तथा वातशिराका लक्षणहरू – औंसी, पूर्णिमा, दशमी, अथवा एकादशी यी तिथिहरूमा कम्प लागेर जोर्नीहरू अथवा सारा शरीरमा दुख्ने भएर बडा जोरले ज्वरो आउँछ र त्यसैसँगै अण्डकोषहरू झन् बढेर आउँछन् । यदि एकापट्टिको कोष मात्र बढ्छ भने त्यसलाई एकशिरा भन्छन् । दुवैतिरका कोषहरू बढ्छन् भने त्यसलाई वातशिरा भन्छन् । यो रोग २-३ दिनमा आफैं आराम भएर जान्छ ।

वृद्धि रोगको सामान्य चिकित्सा – सबै किसिमका वृद्धिहरूमा तातो दूध (१०० मि.लि.)मा अडेरको तेल (१०-२० मि.ली.) मिसाएर पिउनाले एक महिनामा अवश्य लाभ हुन्छ । यस रोगमा अडेरको तेलको प्रयोग गर्नैपर्छ । अन्त्रवृद्धि

रोगमा जबसम्म आन्द्राहरू कोषमा झर्दैनन् तबसम्म नै चिकित्साबाट लाभ हुन्छ । यो रोगको चाप भएमा ट्रस (Truss) नामक यन्त्र कम्मरमा लगाउनुपर्छ ।

इन्द्रवारुणीको जराको चूर्ण ४ ग्राम १०० मि.लि. गाईको दूधमा मिसाई १० मि.लि. अडेरको तेलका साथ ७ दिनसम्म पिएमा अण्डवृद्धि रोग नष्ट हुन्छ ।

बोझो र सर्स्यूलाई पानी राखी पिनेर बनाएको लेदो लेप गर्नाले अण्डवृद्धि भएको कम हुँदैजान्छ । त्यस्तै सैजनको बोक्रा र सर्स्यू पिनेर बनाएको लेपले अण्डवृद्धिमा आराम हुन्छ ।

पलासको जराको बोक्रालाई छायामा सुकाई कुटेर मसिनो चूर्ण बनाउनू । यो चूर्ण ६-७ ग्राम मात्रामा नित्य सेवन गर्नाले अण्डकोषको शोथ र नाभिको पीडा शान्त हुन्छ ।

अण्डकोषमा चोट लागेको छ भने अलिकति बेसारलाई (१० ग्राम) अण्डाको पहेंलो भागमा फिटेर आगोमा तताएर लेप गर्नू । घाउ भएको छ भने बबूलको बोक्रा पानीमा पकाएर त्यही पानीले धुने गर्नू ।

अण्डकोषमा चिलाउने भएमा- शिरीषको बोक्रालाई पानी राखी पिनेर बनाएको लेदो लेप गर्नू । रास्ना, जेठी मधु, गुर्जो, अडेरको जरा, बला, गोखुर यी सबै राखी बनाएको काँढामा (५० मि.लि.) अडेरको तेल १० मि.लि. मिसाएर पिउनाले आन्द्रा तल झर्ने अन्त्रवृद्धि रोग आराम हुन्छ । यो त्यसका लागि उत्तम योग हो । (परीक्षित)

विशेष चिकित्सा -

वातज वृद्धिको चिकित्सा - २०० मि.लि. तातो दूधमा अडेरको तेल २० मि.लि मिसाएर १ महीनासम्म पिउनाले वातज वृद्धि अवश्य नै आराम हुन्छ । (परीक्षित)

शुद्ध गुग्गुलु ६ ग्राम, अडेरको तेल १० मि.लि., गोमूत्र १०० मि.लि. सबै मिसाएर केही दिनसम्म सेवन गर्नाले पुरानो वातज अण्डवृद्धि पनि आराम हुन्छ । (परीक्षित)

यसमा नारायण तेल पिउने, मालिस गर्ने र गुदद्वारमा वस्ति दिने गर्नाले लाभ हुन्छ ।

पित्तज वृद्धिको चिकित्सा - यसमा जुका लगाई रगत निकाली दिनाले साधारणतया आराम भएर जान्छ ।

रातो चन्दन, जेठीमधु, कमल, खसखस, नीलकमल यी सबैलाई दूधसँग पिनेर लेप गर्नाले पित्तज वृद्धिको दाह र शोथ शान्त हुन्छन् । (परीक्षित)

पाँच ओटा दूध आउने रुखहरू बर, पिपल, डुम्री, पाखुरी, प्लक्षको बोक्रा पानीसँग पिनी लेदो बनाउनू र त्यसमा घिउ मिसाएर लेपन गर्नू । तिनै बोक्राहरू पानीमा पकाएर चिसो पारी सेचन गर्नू (धुने पखाल्ने गर्नू), दाहसहितको पित्तको वृद्धिमा आराम हुन्छ । अनेक पल्ट परीक्षित)

कफज वृद्धिको चिकित्सा – देवदारुको काँढा गोमूत्रका साथ पिउने अथवा त्रिफलाको काँढा गोमूत्रका साथ पिउने गर्नाले यो कफज वृद्धिमा आराम हुन्छ ।

बोझो र सर्स्यू समान भाग लिएर पानीका साथ पिनेर तातो पारी लेपन गर्नू । कफज वृद्धि कम हुँदैजान्छ ।

अथवा शोभाञ्जनको (सैजन) बोक्राको चूर्ण घिउमा फिटी आगोमा तताएर लेप गर्नाले कफज वृद्धि शान्त हुन्छ ।

हर्रोलाई गोमूत्रमा पकाई पछिबाट घिउमा भुट्नू र सिंधे नुन मिसाई नित्य सेवन गर्न लगाउनू अण्डवृद्धिमा आराम हुन्छ ।

त्रिकटु र त्रिफलाको काँढा (५० मि.लि.)मा २ ग्राम यवक्षार र २ ग्राम सिंधे नुन मिसाई पिउनाले कफज अण्डवृद्धिमा आराम हुन्छ । यो काढाद्वारा विरेचन भएर रोग कम हुन्छ ।

रक्तज वृद्धिको चिकित्सा – पिना र मह मिसाई कुनै विरेचन औषधिका साथ दिएर विरेचन गर्ने तथा बारम्बार जुका लगाई रगत निकाल्ने गर्नाले रक्तज वृद्धि नष्ट हुन्छ ।

मेदोज वृद्धिको चिकित्सा – यस वृद्धिमा अण्डकोषहरू स्वेदन गरेर शिरोविरेचन औषधिहरूलाई गोमूत्रसँग पिनेर मनतातो बनाई लेप गर्नुपर्छ । छिंके झार, मरिच, पिप्ला, वायुविडंग, सैजनको बियाँ, सर्स्यू, सेतो अपराजिता, निलो अपराजिता, अपामार्गको बियाँ यी सबै शिरोविरेचन गर्ने औषधीहरू हुन् ।

मूत्रज वृद्धिको चिकित्सा – यसमा बाफद्वारा अण्डकोषहरूको स्वेदन गरेपछि पट्टी बाँध्नुपर्छ । त्यसपछि वातज वृद्धि अनुसार उपाय गर्नुपर्छ ।

विशिष्ट योगहरू –

वृद्धिनाशक महौषधि – शुद्ध पारद २ ग्राम, शुद्ध गन्धक २ ग्राम, त्रिफला ३ ग्राम, चितुको जरा ४ ग्राम, शुद्ध गुग्गुलु ५ ग्राम ठीक पार्नू । यिनमा पहिले पारद र गन्धकलाई खलमा घोटेर कज्जली बनाउनू । त्रिफला र चितुलाई कुटी छानी चूर्ण बनाई त्यसमा मिसाउनू । अब खलमा शुद्ध गुग्गुलु र अडेरको तेल राखी घोट्नू र त्यसमा पहिले मिसाएका पारद, गन्धक आदि राखी खूब घोट्नू । राम्ररी घोटिसकेपछि १–१ ग्रामका गोली पार्नू । आफ्नो बलाबल अनुसार २ गोलीदेखि ४ गोलीसम्म अदुवाको ६

मि.लि. रसमा घोटी चाट्नू। त्यसपछि सुठोको चूर्ण मिसाएको अडेरको जराको काँढा पिउनू। पिठ्यूँमा अडेरको तेल अथवा नारायण तेलको मालिस गर्न लगाउनू। यस औषधिबाट पखाला चलेमा घिउ राखेर मुग र पुरानो चामलको खिचडी खानू। यो वृद्धिरोगमा परीक्षित औषधि हो। अन्त्रवृद्धिमा पनि उत्तम काम गर्छ।

गन्धर्वहस्त तेल – अडेरको जरा ५ किलो, सुठो ४ किलो, जौ ४ किलो सबलाई कुटेर ६४ लिटर पानीमा पकाउनू। जब १६ लिटर पानी बाँकी हुन्छ अनि उतारेर छान्नू। अब यो १६ लिटर काँढाका साथ १६ लिटर गाईको दूध, १ लिटर अडेरको तेल, अडेरको जरा पिनेको लेदो १९६ ग्राम, अदुवा पिनेको लेदो १४४ ग्राम सबैलाई कराहीमा राखी पकाउनू। तेलमात्र बाँकी रहँदा उतारेर छान्नू। यस तेलको मात्रा २० मि.लि. हुन्छ। तातो दूधको अनुपान गर्नुपर्छ। पथ्यमा दूधभात दिनुपर्छ। यसको सेवनले अन्त्रवृद्धि अवश्य शान्त हुन्छ।

वृद्धि रोगका पथ्य अपथ्यहरू –

पथ्य – यस रोगमा जौ गहुँ, मुग, दूध, घिउ, तेल, करेलो, सूरण (ओल), मेथी, लशुन प्याज, यी पथ्य हुन्छन्। दिनमा पुरानो चामलको भात, मुग, मुसुरो, चना, रहरको दाल, भण्टा, आलु, पर्वर, गाजर, करेला, अदुवा, प्याज आदिको तरकारी अलि अलि दिनुपर्छ।

रातको समयमा गहुँ, जौको रोटी वा पुरीसँग माथि उक्त तरकारी मध्ये कुनै खान दिनुपर्छ।

केही मात्रामा दूध पनि खान सकिन्छ।

रोगीलाई उमालेर सेलाएको पानी पिउन दिनुपर्छ र त्यही पानीले स्नान गराउनुपर्छ। हर समय लंगौटी बाँधि राख्नुपर्छ।

अपथ्य – नयाँ चामलको भात, दही, माषको दाल, बढी गुलियो खाना र चिसो पानी यी सबै अपथ्य हुन्छन्। यसमा दिनमा सुत्नु, तेलको मालिस गर्नु, पिसाबको वेग रोक्नु, हात्ती घोडा आदिको सवारी गर्नु, उपवास, बढी भोजन यी सबै हानिकारक हुन्छ।

कुरण्ड रोगको लक्षण र चिकित्सा – भारी अर्थात् ढिलो गरी पच्ने र अमिलो पदार्थ बढी खाने बानीले वात आदि दोषहरू कुपित भएर वंक्षणसन्धिहरूमा गाँठो समान शोथ उत्पन्न गराउँछन्, त्यसलाई कुरण्ड रोग भनिन्छ। 'कुरण्ड' र 'बद' एकै ठाउँमा हुन्छन्। फरक यो छ कि कुरण्डमा दुख्ने हुँदैन, बदमा दुख्छ।

भारंगीको जरा पानीमा पिनेर लेपन गर्नाले कुरण्ड रोगमा आराम हुन्छ। सिंधे नुन र घिउ तामाको भाँडोमा राखेर घाम भएको ठाउँमा फेट्नू। फेट्ने बेलामा जुन

मयल आउँछ त्यो दिनरातमा ३-४ पटक कुरण्डमा लगाउनू । यसबाट गिल्टीहरू आराम भएर जान्छन् ।

लज्जावती (बुहारीझार)को जरा र गिद्धको विष्टा दुवैलाई पिनेर तातो पारी लेप गर्नाले कुरण्ड रोग अर्थात् पेट र गोडाको जोर्नीमा हुने गिल्टी आराम भएर जान्छ ।

५१. गलगण्ड रोग (गलगाँड)

ठूलो अथवा सानो घाँटीको अगाडि निस्केको अथवा तल केही झरेको डल्लोलाई गलगण्ड (गलगाँड) भनिन्छ ।

सम्प्राप्ति – कुपित भएका वायु र कफ तथा दूषित मेद धातु मिलेर जब घाँटीमा रहेको मन्या सिरामा क्रमशः बढ्छन् अनि तिनीहरूद्वारा गलगण्ड रोग उत्पन्न हुन्छ ।

यो रोग वातज, कफज र मेदोजका भेदले तीन प्रकारको हुन्छ ।

वातज गलगण्डको लक्षण – यसको रङ्ग कालो वा रातो हुन्छ र निला नसाहरूले घेरिएको हुन्छ । यो छुँदा खस्रो लाग्छ । यसमा सियो बिझे झैं दुख्छ । यो धेरै समयमा बढ्छ र प्रायः पाक्दैन । रोगीको मुखको स्वाद खल्लो हुन्छ र तालु र घाँटी सुकिरहन्छन् ।

कफज गलगण्डको लक्षण – यो एकै ठाउँमा स्थिर हुन्छ । जुन ठाउँमा निस्केको छ त्यही ठाउँ अनुसार यसको रङ्ग हुन्छ । यो ठूलो आकारको र छुँदा चिसो हुन्छ । यसमा दुख्ने कम हुन्छ तर बढी चिलाउँछ । यो धेरै समयमा बढ्छ र यसलाई पाक्न पनि बढी समय लाग्छ । रोगीको मुखको स्वाद गुलियो लाग्छ र तालु-घाँटी दुवैमा कफ लेसिइरहन्छ ।

मेदोज गलगण्डको लक्षण – यो फेदमा सानो र अगाडि ठूलो भएर लौका जस्तै घाँटीमा झुण्डिएको हुन्छ । यो चिल्लो, भारी, पाण्डु (सेतो) रङ्गको र नराम्रो गन्ध आउने हुन्छ, चिलाउने गर्छ । यसमा दुख्ने कम हुन्छ । रोगीको शरीर मोटाउँदा यो ठूलो देखिन्छ, रोगी दुब्लाएमा सानो हुनजान्छ । रोगीको मुख चिल्लो हुन्छ र घाँटी सधैं बज्ने हुन्छ । त्यसबाट घुर्र घुर्र आवाज आउँछ ।

गलगण्डको असाध्य लक्षण – जुन रोगीलाई सास फेर्न गाह्रो हुन्छ, जसको शरीर शिथिल भएको छ, खाने कुरामा रुचि हुँदैन, बोली राम्रो आउँदैन, शरीर दुब्लाउँदै गएको छ, रोग लागेको १ वर्षभन्दा बढी भएको छ त्यसको रोग असाध्य हुन्छ ।

गलगण्डको सामान्य चिकित्सा – सर्स्यू, सैजनको बियाँ, सनपाटको बियाँ, आलस, जौ मूलाको बियाँ यी सबै समभाग लिएर अमिलो दही अथवा महीका

साथ सिलौटोमा पिनेर कल्क (लेदो) बनाई गलगण्डमा लेप गर्नाले भर्खर निस्केको गलगण्डलाई आराम गर्छ । (परीक्षित)

सुँगुरको पुच्छरको सुरुको भागलाई आगोमा डढाउनू । अब त्यसलाई तोरीको तेलमा मिसाई नाकमा नस दिनू । यसबाट गलगण्ड निस्सन्देह आराम हुन्छ ।

सेतो फुल फुल्ने विष्णुक्रान्ता (अपराजिता)को जरा ६ ग्राम र घिउ १२ ग्राम लिनू । विष्णुक्रान्ताको जरालाई पिनेर त्यसमा घिउ मिसाउनू र केही दिनसम्म बिहानै खाने गर्नू । गलगण्ड नष्ट हुन्छ ।

तितो लौकाको पाकेको फलमा पानी वा मदिरा भरेर सात दिनसम्म राख्नू र त्यसपछि पिउनू । यस उपायबाट गलगण्ड तुरुन्त शान्त हुन्छ । (परीक्षित)

राजवृक्षको जरालाई चौलानीसँग मसिनो गरी पिनेर गलगण्डमा लेप गर्नाले रोग आराम हुन्छ ।

विशेष चिकित्सा – समुद्रफल, सैजनको बियाँ र दशमूलका सबै औषधिहरू पिनेर तातो पारी लेप गर्नाले वातज गलगण्डमा आराम हुन्छ ।

देवदारु र इन्द्रवारुणीको जरालाई पिनेर लेदो बनाई लेप गर्नाले कफज गलगण्डलाई आराम गर्छ ।

पिप्ला र सिउँडीको दूध सँगै पिनेर लेप गर्नाले अथवा चुन, फलामको मयल (किट), दन्ती र रसाञ्जनलाई पिनेर लेप गर्नाले मेदोज गलगण्डलाई आराम गर्छ ।

विशिष्ट औषधि योगहरू –

काञ्चनार गुग्गुलु – कोइरालोको बोक्रा ४०० ग्राम, हरो ८० ग्राम, बरा ८० ग्राम, अमला ८० ग्राम, सुठो ४० ग्राम, मरिच ४० ग्राम, पिप्ला ४० ग्राम, वरुण(सिप्लीकान)को बोक्रा ४० ग्राम, सुकमेल १० ग्रा, दालचिनी १० ग्राम र तेजपात १० ग्राम ठीक पार्नू । अनि सबैलाई छुट्टाछुट्टै कुटेर छानेपछि मिसाइदिनू । अब जति चूर्ण छ (८३० ग्राम) त्यति शुद्ध गुग्गुलु मिसाई खूब कुट्नू र घोट्नू । त्यसपछि घिउको सहायतालें ५०० मि.ग्रा. को गोलीहरू पार्नु र छायामा सुकाएर सिसीहरूमा सुरक्षित गरी राख्नू । यो औषधि १ गोली दिनदिनै बिहान गोरखमुण्डीको काँढा अथवा हर्रोको काँढा अथवा तातो पानीसँग खान दिनू । यो गलगण्ड र गण्डमालाको प्रसिद्ध औषधि हो ।

तुम्बी तेल – वायुविडंग, यवक्षार, सिंधे नुन, बोझो, रास्ना, चितु, त्रिकटु, हिङ सबै १००-१०० ग्राम लिएर चूर्ण बनाउनू र सिलौटोमा पानीसँग पिनेर लेदो बनाउनू । अब उक्त लेदोका साथ सर्स्यूको तेल ४ लिटर र पाकेको तुम्बीको रस १६ लिटर मिसाएर कराहीमा राखी पकाउनू । तेलमात्र बाँकी रहँदा उतारेर छान्नू । यो तेल नाकमा नस राख्नाले पुरानो गलगण्ड पनि आराम हुन्छ ।

पथ्य कुराहरू – यस रोगमा पुरानो चामल, पुरानो घिउ जौ, मुगको दाल, पर्वर, करेला, गुग्गुलु र शिलाजीत यी पथ्य हुन्छन् ।

५२. गण्डुमाला र अपची रोग (कण्ठमाला र गाँठा पाक्ने रोग)

गण्डुमाला –

काखीमा, काँधमा, घाँटीमा, घाँटीको पछाडि मन्या सिरा भएको ठाउँमा, तिघ्राको सन्धिमा कुपित कफ र दूषित मेदद्वारा साना-ठूला बयर वा अमला जत्रा डल्ला निस्कन्छन् । तिनीहरू धेरै समयमा बिस्तारै बढ्ने र पाक्ने हुन्छन् । त्यस्ता डल्लाहरूलाई गण्डुमाला भनिन्छ ।

अपची –

गण्डुमालाको रूपमा निस्केका डल्ला वा गिर्खाहरू मध्ये कुनै गिर्खाहरू पाकेर फुट्ने र निको हुने हुन्छन्, फेरि अरू नयाँ गिर्खा निस्कन्छन् । यसरी धेरै समयसम्म रोग रहने भएमा त्यसलाई अपची भनिन्छ ।

गण्डुमाला र अपची एकै रोगका दुई अवस्थाहरू हुन् । सुरुमा गाँठा मात्र देखिएको अवस्थालाई गण्डुमाला र ती गाँठाहरू पाक्दै, फुट्दै जाने र अरू नयाँ आउँदै जाने अवस्थालाई अपची भनिएको छ ।

गण्डुमाला र अपची दुवै सुरुमा उपद्रव नभएसम्म साध्य हुन्छन् । जब तिनका साथ पिनास, कोखा दुख्ने, खोकी, ज्वरो र वमन आदि उपद्रवहरू देखिन्छन् तब ती असाध्य हुन्छन् ।

गण्डुमाला र अपची चिकित्सा – लज्जावतीको रस २० मि.लि. नित्य पिउने गर्नाले गलगण्ड, गण्डुमाला, अपचीलाई आराम गर्छ । (परीक्षित)

वरुण[1]को जराको काढामा नाममात्र (थोरै)को मह र घिउ मिसाई पिउनाले धेरै पुरानो गण्डुमाला तथा अपचीलाई पनि आराम गर्छ । (परीक्षित)

काञ्चनारको बोक्रा २० ग्रामलाई पिनेर चौलानीसँग पिउने गर्नाले गण्डुमाला नष्ट हुन्छ । (परीक्षित)

काञ्चनार (कोइरालो)को बोक्रा २० ग्रामलाई २०० मि.लि. जति पानीमा पकाउनू । जब २५ मि.लि.पानी बाँकी रहन्छ तब छानेर त्यसमा ४ ग्राम सुठोको चूर्ण मिसाइ पिउन दिनू । यो गण्डुमालाको रामबाण औषधि हो ।

---

१. वरुण = सिप्लिकान ।

सर्स्यूं, सैजनको बियाँ, आलस, जौ, मूलाको बियाँ सबै समभाग लिएर अमिलो महीसँग पिनेर लेप गर्नाले गण्डमाला रोग आराम भएर जान्छ। सर्स्यूं, नीमको पात र भलायो तीनै थरीलाई समभाग लिएर एकै ठाउँमा पोली खरानी पार्नू। त्यो खरानी बाख्राको मूत्रसँग पिनेर लेप गर्नाले अपचीमा आराम हुन्छ। (परीक्षित)

निर्गुण्डी तेल – निर्गुण्डी[1] को रस ४ लिटर, कलिहारी[2] को कल्क २५० ग्राम, तिलको तेल १ लिटर सबलाई पकाएर तेल बनाउनू।

यस तेलको नस्य लिनाले गण्डमाला रोग नष्ट हुन्छ। (परीक्षित)

५३. ग्रन्थि रोग (गाँठो)

ग्रन्थि – अत्यन्त कुपित भएका वात आदि दोषहरूले रगत, मांस, मेद यी धातु र सिराहरूलाई दूषित पारेर माथि उठेको, गोलो आकारको र साह्रो शोथ उत्पन्न गर्छन्। त्यसलाई ग्रन्थि भनिन्छ।

ग्रन्थिरोग कारण अनुसार ५ प्रकारको हुन्छ - वातज, पित्तज, कफज, मेदोज, सिराज।

वातज ग्रन्थिको लक्षण – यो कालो रङ्गको र कोमल हुन्छ। वस्ति जस्तै फुलेको हुन्छ। यसमा तन्किएको, काटेको जस्तो, सियोले घोचेको, बेसरी बटारेको जस्तो तीव्र दुख्ने हुन्छ। यो फुट्दा सफा रगत निस्कन्छ।

पित्तज ग्रन्थिको लक्षण – यो ग्रन्थि रातो वा अलि पहेंलो रङ्गको हुन्छ। यसमा पोलेजस्तो, धुवाँ आए जस्तो वेदना हुन्छ। यो ग्रन्थि फुट्दा अत्यन्त तातो रगत निस्कन्छ।

श्लैष्मिक ग्रन्थि – यो ग्रन्थि छालाकै रङ्गको चिसो र ढुंगो जस्तै साह्रो हुन्छ। यो कम दुख्छ तर बढी चिलाउने हुन्छ। यो ढिलो गरी बढ्छ। फुट्दा यसबाट सेतो, बाक्लो पिप निस्कन्छ।

मेदोज ग्रन्थि – यो ग्रन्थि ठूलो हुन्छ। शरीर मोटाउँदा ठूलो देखिने तथा दुब्लाउँदा सानो देखिने हुन्छ। यो हेर्दा चिल्लो र दुख्ने हुन्छ। चिलाउने गर्छ। यो ग्रन्थि फुट्दा तिलको पिना अथवा घिउ जस्तो बोसो निस्कन्छ।

सिराज ग्रन्थि – कमजोर मानिसले बढी अनेक थरी व्यायामहरू गर्दा कुपित भएको वायुले रगत बग्ने नसाहरूलाई खुम्च्याई वा अँठ्याइदिने र सुकाउने

---

१. निर्गुण्डी = सिमाली
२. कलिहारी = लाङ्गली, केवरी।

गरेर माथि उठेको, गोलो गाँठो बनाइदिन्छ । त्यो सिराज ग्रन्थि यता-उति चल्ने र दुख्ने भएमा कष्टसाध्य हुन्छ । नचल्ने, ठूलो आकारको र नदुख्ने भएमा अथवा मर्महरूमा उत्पन्न भएमा असाध्य हुन्छ ।

५४. अर्बुद रोग (क्यान्सर)

आफ्ना कारणहरूबाट कुपित भएका वातादि दोषहरूले रगत मांस धातुलाई दूषित पार्छन् । तिनीहरू मिलेर शरीरको एक अङ्गमा गोलो आकारको, माथि उठेको, यताउति नसर्ने, कम दुख्ने, भित्रसम्म जरा फैलाएको, ठूलो आकारको, बढ्न धेरै समय लाग्ने तर नपाक्ने मासुको डल्लो उत्पन्न गराउँछन्, त्यसलाई अर्बुद रोग भनिन्छ ।

त्यो अर्बुद रोग ६ प्रकारको हुन्छ – वातज, पित्तज, कफज, रक्तज, मांसज र मेदोज । यी अर्बुदहरूका लक्षणहरू वातज, पित्तज, कफज आदि ग्रन्थि जस्तै हुन्छन् । रक्तज र मांसज अर्बुदका लक्षणहरू केही विशेष हुन्छन् ।

रक्तार्बुदको सम्प्राप्ति र लक्षण – कुपित दोषले रगत र त्यो रगत बग्ने सिराहरूलाई दूषित पार्छ । त्यसपछि ती सिराहरूमा संकोच गराई जम्मा हुने अवस्था ल्याउँछ । अनि नपाक्ने तर स्राव भइरहने खालको मासुको डल्लो बनाउँछ जुन मासुका साना अङ्कुरहरूले व्याप्त हुन्छ र छिटो बढ्ने हुन्छ । त्यसबाट लगातार रगत पनि बगिरहन्छ । यो रक्तार्बुद असाध्य हुन्छ । यस रोगमा बढी मात्रामा रगतको क्षय हुनाले रोगी पाण्डुवर्णको (फुस्रो देखिने) हुन्छ ।

मांसार्बुदको कारण, संप्राप्ति र लक्षण – मुट्ठी, लट्ठी आदिले हिर्काउँदा शरीर पीडित भएको बेलामा मांस धातु दूषित हुँदा यस्तो शोथ उत्पन्न हुन्छ जुन स्निग्ध, छाला जस्तै रङ्गको, नदुख्ने, नचल्ने र ढुंगो जस्तो सारो हुन्छ, पाक्ने गर्दैन । यो मासु बढी खाइरहने मानिसहरूमा मांसको दोषबाट उत्पन्न हुन्छ । यो पनि असाध्य हुन्छ ।

वातज आदि साध्य अर्बुद पनि स्राव भइरहने, मर्महरूमा निस्केका, नाक-कान आदि मार्गमा उत्पन्न अथवा स्थिर भएमा असाध्य हुन्छन् ।

पहिले जुन ठाउँमा अर्बुद उत्पन्न भएको छ त्यसमाथि अर्को अर्बुद निस्कियो भने त्यसलाई अध्यर्बुद भनिन्छ । एकै पटकमा दुई अर्बुदहरू उत्पन्न भएमा वा क्रमैले उत्पन्न भए पनि त्यसलाई 'द्विरर्बुद' भनिन्छ । यो पनि असाध्य हुन्छ ।

अर्बुद रोगमा कफ अथवा मेद धातुको दोष बढी हुनाले र दोषहरू स्थिर अवस्थामा रहने हुनाले कुनै पनि अर्बुदमा पाक हुँदैन ।

ग्रन्थि र अर्बुद रोगको चिकित्सा – नपाकेको ग्रन्थिमा पहिले शोथनाशक चिकित्सा गर्नुपर्छ, पाकेपछि त्यसलाई चिरेर पिप निकाली दिनुपर्छ र घाउ

ठीक भएपछि औषधि दिनुपर्छ। पित्तज ग्रन्थिमा पहिले जुका लगाउनुपर्छ। त्यसपछि दूध - पानी मिसाएर बिस्तारै भिजाउनुपर्छ। सज्जीखार (सोडा), मूलाको क्षार र शंखको चूर्ण सबैलाई पिनेर लेप गर्नाले ग्रन्थि र अर्बुद नष्ट हुन्छन्। (परीक्षित)

मूलाको क्षार, बेसारको भस्म र शंखको चूर्ण यी सबैलाई एक ठाउँमा पिनेर लेप गर्नाले अर्बुद रोगको नाश हुन्छ। (परीक्षित)

बरको दूध, कुठ, सिंधे नुन मिसाई लेप गरेर माथिबाट बरकै पातले बेरेको खण्डमा हाडमाथि उत्पन्न अर्बुद पनि नष्ट हुन्छ। (परीक्षित)

दन्तीको जरा, चितुको जरा, सिउँडीको दूध, आँकको दूध, गुड, भलायोको गेडा, हीराकसीस सबैलाई पिनेर लेप गर्नाले अत्यन्त बढेको गाँठो पनि पाकेर निस्की आराम भएर जान्छ। गाँठो पकाउनका लागि यो लेप रामबाण नै छ। (परीक्षित)

सैजनको बियाँ, मूलाको बियाँ, सर्स्यू, तुलसीको बियाँ, जौ, करवीरको जरा, यी सबैलाई महीसँग पिनेर लेप गर्नाले अर्बुद रोग आराम हुन्छ। (परीक्षित)

मुख आदि मर्मस्थानहरूमा गाँठो आदि आउँदा चिरफार गर्न डर लागेमा बालंगा (तूत मलंगा)को बियाँलाई पानीमा भिजाएर सफा टालोमा फिंजाई गाँठोमा टाँसी दिएमा त्यो आफैं टाँसिन्छ बाँध्नुपर्दैन। यसबाट घाउको पीडा तथा जलन शान्त भएर शोथ र रातोपन पनि हराउँछ र नपाकेको गाँठो बस्छ। पाकिसकेको भए नदुखीकन सहज तरीकाले फुटेर आराम हुन्छ।

५५.श्लीपद रोग (हात्तीपाइले)

जुन शोथ तल्लो पेट र तिघ्राको कापदेखि सुरु भएर गोडासम्म पुग्छ, जसका साथ ज्वरो पनि आउँछ त्यो श्लीपद रोग हो।

जुन ठाउँ सबै ऋतुहरूमा चिसो रहन्छ र जहाँ वर्षाको पानी धेरै समयसम्म जमिरहन्छ त्यस्तो ठाउँमा श्लीपद अर्थात् हात्तीपाइले रोग बढी हुन्छ[1]। यो रोग ३ किसिमको हुन्छ - वातज, पित्तज र कफज।

वातज श्लीपदको लक्षण - यसमा रोग लागेको ठाउँ (गोडाको भाग) कालो, सुख्खा, र फुटेको हुन्छ र त्यसमा बढी वेदना (दुख्ने) हुन्छ। यसमा एकाएक दुखाई उत्पन्न हुने, बढ्ने गर्छ र धेरै जसो ज्वरो पनि आउँछ।

---

१. आधुनिक चिकित्साशास्त्र अनुसार फाइलेरिस बैंक्रोफ्टाई भन्ने जीवाणु हुन्छ। यसका स्त्री र पुरुष दुवै जाति मिलेर लसीका-वाहिनीहरूमा बस्छन् र तिनीहरूले असंख्य अरू जीवाणुहरू जन्माउँछन्। क्यूलेक्स फेटिजेन्टस नामक लामखुट्टेको टोकाइबाट यो रोग सर्छ।

पित्तज श्लीपदको लक्षण – यसमा रोग लागेको शरीरको अङ्ग पहेंलो र कोमल हुन्छ । त्यहाँ पोल्ने, गर्छ, ज्वरो पनि आउँछ ।

कफज श्लीपदको लक्षण – यो चिल्लो, सेतो रङ्गको, स्थिर र भारी हुन्छ ।

यी तीनै थरी श्लीपदहरू कफको वृद्धिबाट उत्पन्न हुन्छन् किनकि श्लीपद रोगमा भारीपन र अङ्ग फुलेर ठूलो – मोटो देखिने हुन्छ, त्यो लक्षण कफ विना हुनसक्दैन ।

असाध्य लक्षण – जुन श्लीपद रोग धमिरोको गोलो जस्तै बढेर जान्छ र चारैतिर गाँठाहरूले घेरिन्छ, एकदम ठूलो भएर जान्छ र एक वर्षभन्दा बढी समय बितेको छ त्यो श्लीपद असाध्य हुन्छ ।

कफ प्रकृतिको मानिसमा कफ बढ्ने आहार-विहारको बढी सेवन गर्दा उत्पन्न श्लीपद असाध्य हुन्छ ।

रोगका सबै लक्षण देखिएको, चिलाउने र स्राव भैरहने कफ प्रधान श्लीपद पनि असाध्य हुन्छ ।

श्लीपदको सामान्य चिकित्सा – यस रोगमा लंघन (उपवास) गराउनु, पसिना निकाल्नु, जुलाफ दिनु, रगत निकाल्नु र कफनाशक उपाय गर्नु हितकारी हुन्छ ।

सिउँडीको पातलाई पिनेर त्यसमा नुन मिसाई नित्य खाने गर्नाले अथवा हलेदोको चूर्ण (बेसार) १० ग्राम, गुड २० ग्राममा मिसाई काञ्जीसँग नित्य पिउने गर्नाले यो रोग आराम भएर जान्छ ।

पिप्ला, हर्रो, बर्रो, अमला, देवदारु, सुठो, पुनर्नवा, प्रत्येक ८०-८० ग्राम र विधाराको बियाँ ५६० ग्राम सबैलाई पिनेर चूर्ण बनाउनू । यो चूर्ण ६ ग्राम नित्य काञ्जीसँग खानाले श्लीपद रोग, फियो बढेको र भस्मक रोग आराम हुन्छन् । यो औषधी पचिसकेपछि इच्छानुसार भोजन गर्नुपर्छ ।

सुठो, पुनर्नवा र रायोको बियाँ समभाग लिएर गोमूत्रसँग पिनेर लेप गर्नू । अथवा – अडेरको जरा, धतुरो, सिमाली, सैजनको बोक्रा, रायोको बियाँ समभाग लिएर पानीसँग पिन्नू र त्यसको लेप गर्नू । श्लीपद रोगमा आराम हुन्छ ।

विशिष्ट योगहरू –

श्लीपद गजकेशरी रस – त्रिकटु, शुद्ध वत्सनाभ, ज्वानु, शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, चितुको जरा, शुद्ध मनःशिला, शुद्ध टङ्कण, शुद्ध जयपाल सबै समभाग लिनू । पहिले शुद्ध पारद र गन्धकलाई खूब घोटी कज्जली तयार गर्नू । त्यसपछि अरू औषधीहरूको चूर्ण बनाई क्रमशः मिसाइदिनू । अब सबैलाई भृङ्गराजको रस, गोखुरको

काढा, ज्यामीरको रस, अदुवाको रसहरू क्रमैले खल गर्नू। राम्ररी खल भैसकेपछि २५० मिलीग्रामका गोलीहरू पार्नू। यो १ गोली बिहान-बेलुका तातो पानीसँग सेवन गर्नदिनू। यसबाट श्लीपद रोग आराम हुन्छ।

विडङ्गाद्य तेल – वायुविडंग, मरिच, आँककको जरा, सुठो, चितुको जरा, देवदारु, मुसब्बर, पाँचै नुन सबै १०० ग्राम प्रत्येक लिएर चूर्ण बनाउनू। त्यसपछि सिलौटोमा पानीसँग पिनी लेदो पार्नू। अब त्यो लेदोका साथ तिलको तेल ४ लिटर, पानी १६ लिटर मिसाई पकाउनू। जब तेलमात्र बाँकी रहन्छ तब उतारेर छान्नू। यस तेलको सेवन र मालिस गर्नाले हात्तीपाइले रोग आराम भएर जान्छ।

पथ्य र अपथ्य कुराहरू – यस रोगमा पुरानो साठी चामल, जौ, गहत, लशुन, अडेरको तेल, गोमूत्र, हितकारी हुन्छन्। दूधबाट बनेका पदार्थ कुराउनी, खिर, दही आदि, गुड र गुलियो खाना अपथ्य हुन्छन्।

५६. विद्रधि रोग (पिलो)

यो एक किसिमको शोथ हो। जुन शरीरको बाहिर वा भित्र दुवै ठाउँमा हुनसक्छ। यसमा पहिले दुख्ने-पोल्ने किसिमको शोथ (सुनिने) हुन्छ जुन पछि पाकेर फुट्छ र पिप आदि निस्केपछि निको हुन थाल्छ।

सम्प्राप्ति – आफ्ना कारणहरूले अत्यन्त कुपित भएका वायु, पित्त आदि दोषहरूले अस्थिमा (हाड) आश्रित भएर छाला, रगत, मासु र मेद धातुलाई दूषित बनाउँछन्। अनि बिस्तारै दुःख दिने शोथ गराउँछन्। जुन भित्रसम्म गडेको र निकै दुख्ने हुन्छ, गोलो वा तेर्सो आकारको हुन्छ। त्यसलाई विद्रधि भनिन्छ।

भेदहरू – यसमा मुख्य दुई भेद हुन्छन् – बाह्य विद्रधि र अन्तर्विद्रधि। बाह्य विद्रधि शरीरको कुनै पनि बाहिरी भाग (हात-गोडाको छाला-मासु)मा हुन्छ। अन्तर्विद्रधि शरीरभित्रका दस स्थानहरू(गुदद्वार, वस्तिमुख, नाभि, वृक्क आदि)मा हुन्छ। बाह्य विद्रधिका ६ भेद हुन्छन्- वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज, रक्तज र आगन्तुज।

वातज विद्रधिको लक्षण – यसको शोथ भएको भाग कालो वा रातो हुन्छ। यो कहिले सानो, कहिले ठूलो हुन्छ। यसमा बढी दुख्छ। यो अनेक किसिमबाट निस्कने र पाक्ने गर्छ।

पित्तज विद्रधिको लक्षण – यसको रङ्ग पाकेको डुम्रीको फलको जस्तो अथवा रातो मिसिएको फुस्रो हुन्छ। त्यो भाग बढी पोल्छ साथमा ज्वरो पनि आउँछ। यो उत्पन्न भई छिटै पाक्ने गर्छ।

कफज विद्रधिको लक्षण – यो माटाको पाला जस्तै ठूलो आकारको, पहेंलो - सेतो मिसिएको रङ्गको, चिल्लो र छाम्दा चिसो हुन्छ । यसमा कम दुख्छ । यो उत्पन्न हुन, बढ्न र पाक्न धेरै समय लाग्छ । उक्त विद्रधिहरू पाकेर फुट्ने बेलामा वातज विद्रधिको स्राव पातलो, केही रातो हुन्छ, पित्तज विद्रधिमा पहेंलो स्राव हुन्छ, कफज विद्रधिमा सेतो स्राव हुन्छ ।

सन्निपातज विद्रधिको लक्षण – यसको शोथ अनेक रङ्गको हुन्छ । यसमा दुखाइ पनि थरीथरी हुन्छ - घोच्ने, पोल्ने, चिलाउने, भारी हुने आदि । पाकेपछि हुने स्राव पनि अनेक रङ्गको हुन्छ । यसको शोथ ठूलो आकारको र निकै माथि उठेको हुन्छ । यो कहिले छिटो पाक्छ, कहिले ढिलो गरी पाक्छ । कहिले बाहिर, कहिले भित्रसम्म गडेको हुन्छ । यो असाध्य हुन्छ ।

रक्तज विद्रधिको लक्षण – यो अलि कालो रङ्गको र काला-फोकाहरूले ढाकिएको हुन्छ । यसमा अत्यन्त दुख्ने र पोल्ने हुन्छ । यो पित्त-विद्रधि जस्तै छिटो बढ्ने र पाक्ने गर्छ ।

आगन्तुज विद्रधिको लक्षण – ढुंगा र लट्ठी आदिले हिर्काउँदा चोट लाग्दा अपथ्य सेवन गर्ने मानिसको चोट लागेको ठाउँको उष्मा (तातोपन) कुपित वायुद्वारा फैलिन्छ र त्यसबाट पित्त र रगत पनि दूषित भएर विद्रधि उत्पन्न गर्छन् ।

यसमा रोगीको शरीर पोल्छ, ज्वरो आउँछ, तिर्खा बढी हुन्छ । यो पनि पित्तज विद्रधि जस्तै छिटो बढ्ने र पाक्ने हुन्छ ।

अन्तर्विद्रधिको लक्षण – आफ्ना कारणहरूबाट कुपित भएका दोषहरू छुट्टाछुट्टै अथवा सबै मिलेर शरीरका भित्री अंगहरूमा गुल्म अथवा धमिराको गोलो जस्तै चारैतिर उठेको विद्रधि उत्पन्न गर्छन् । ती विद्रधिहरू गुदद्वार, वस्तिको मुख (मूत्राशय) नाभि, पेट वंक्षण प्रदेश, वृक्क, प्लीहा, यकृत् (कलेजो) हृदय (मुटु) र क्लोम भन्ने १० अङ्गमा हुन्छन् । ती विद्रधिहरूको स्थान अनुसार यी विशेष लक्षणहरू उत्पन्न हुन्छन् ।

गुदद्वारमा विद्रधि भएमा अधोवायु (पाद) रोकिन्छ । वस्तिमा विद्रधि भएमा पिसाब कष्टका साथ कम मात्रामा निस्कन्छ । नाभिमा भए हिक्का र आटोप (पेटमा गुडगुड शब्द) हुन्छ । पेटमा भए वायुको प्रकोप हुन्छ । वंक्षणमा भए कम्मर र पिठ्यूँ बेसरी जकडिने-दुख्ने हुन्छ । वृक्कहरूमा भए करङ्गहरू खुम्चे झैं दुख्छ । मुटुमा भए सबै अङ्गहरू अत्यन्त दुख्छन् र खोकी लाग्छ । यकृत् (कलेजो)मा भए श्वास रोग र हिक्का हुन्छन् । क्लोममा भए बारम्बार पानी खान मन लाग्छ । यी विद्रधिहरूका अरू लक्षणहरू बाह्य विद्रधि जस्तै हुन्छन् ।

नाभिभन्दा माथिका अङ्गहरूमा उत्पन्न विद्रधिहरू पाकेर फुटेपछि तिनीहरूबाट आएको रगत र पिप मुखबाट निस्कन्छ । नाभिभन्दा तलका अङ्गमा उत्पन्न विद्रधिहरूको स्राव गुदद्वारबाट निस्कन्छ । तलबाट स्राव हुँदा रोगी बाँच्छ, माथि (मुख)बाट स्राव भएमा बाँच्दैन । हृदय, नाभि र वस्ति बाहेक अरू अङ्गहरूको स्राव बाहिर निस्कन लागेपछि रोगी (राम्रो उपचार भएमा) कुनै किसिमबाट बच्न सक्छ तर मुटु, नाभि र वस्तिको स्राव हुन लागेमा बाँच्दैन ।

स्तनविद्रधि(थुनेलो)को लक्षण – कुपित वायु आदि दोषहरूद्वारा गर्भवती अथवा सुत्केरी महिलाहरूका स्तनका शिरामा विकृति ल्याएर विद्रधि उत्पन्न भएमा त्यसलाई स्तनविद्रधि (थुनेलो) भनिन्छ ।

विद्रधिको सामान्य चिकित्सा – सबै किसिमका विद्रधिहरूमा जुका लगाएर रगत निकाल्नु उत्तम हुन्छ । साथमा हल्का विरेचन औषधी र हल्का भोजन दिनुपर्छ । पित्तज विद्रधि बाहेक अरूमा स्वेदन गर्न सकिन्छ । त्यसका लागि तातो बालुवा, इँट आदि कपडाले बेरेर सेक्ने गर्नुपर्छ । सैजनको जरा पिनेर लेप गर्ने र स्वेदन गर्ने उपायद्वारा विद्रधि बस्छ । बसेन भने पुल्टिस (तातो औषधीको लेप) लगाएर त्यसलाई पाक्न दिनुपर्छ र पाकेपछि फोरेर पिप निकाल्नुपर्छ । त्यसपछि घाउ निको पार्ने मलमहरू लगाउनुपर्छ ।

विशिष्ट चिकित्सा –

वातज विद्रधि चिकित्सा– रातो अडेरको जरालाई सिलौटोमा पिनेर त्यसमा घिउ अथवा तेल मिसाउनू र तातो बनाई विद्रधिमा लेप गर्नू ।

अथवा – गहुँ, मूँग र जौलाई उमालेर सिलौटोमा पिन्नू र त्यसमा घिउ मिसाएर विद्रधिमा लेप गर्नू । यसो गर्दा नपाकेको विद्रधि चाँडै नै बसेर जान्छ । यसमा पुनर्नवा, देवदारु, सुठो र दशमूलको काढासँग शुद्ध गुग्गुलु अथवा अडेरको तेल खान दिनुपर्छ ।

पित्तज विद्रधिको चिकित्सा – यसमा जेठीमधु, खसखस र चन्दनको चूर्ण बनाई दूधसँग पिनेर लेप गर्नुपर्छ । अथवा सयपल्ट धोएको घिउको लेप गर्नुपर्छ । त्रिफलाको क्वाथमा निशोथको चूर्ण मिसाएर खान दिनुपर्छ ।

कफज विद्रधिको चिकित्सा – यसमा त्रिफला, सैजन, वरुण (सिप्लिकान) र दशमूलको काढामा शुद्ध गुग्गुल अथवा गोमूत्र मिसाएर खान दिनुपर्छ ।

इँट, बालुवा फलाम तताएर कपडामा बाँधेर सेक्ने गर्नुपर्छ । अथवा भूस, बालुवा, गोबरलाई गोमूत्रमा मिसाई तताएर पोको पारी त्यसले सेक्नुपर्छ ।

रक्तज एवं आगन्तुज विद्रधिको चिकित्सा – रक्तज र आगन्तुज विद्रधिको चिकित्सा पित्तज विद्रधिको चिकित्सा समान नै गर्नुपर्छ ।

अन्तर्विद्रधिको चिकित्सा – हर्रो र सैजनको जराको रस मिसाई पिउनू अथवा सैजनको जरालाई पानीले पखाली खलमा पिनेर कपडछान गर्नू र मह मिसाई पिउनू । यसले अन्तर्विद्रधि शान्त भएर जान्छ । (खूब परीक्षित)

सैजनको काढामा हिङ र सिंधे नुन मिसाई नित्य बिहान पिउनाले अन्तर्विद्रधि निको हुन्छ । अथवा वरुणको क्वाथ(काँढा)मा हिङ, सिंधे नुन, शुद्ध कासीस र शुद्ध शिलाजीत सबैको चूर्ण मिलाई पिउनाले अन्तर्विद्रधि शान्त हुन्छ । (परीक्षित)

विद्रधि पकाउने, फोर्ने र भर्ने उपायहरू – उक्त उपायहरू गर्दा पिलो बसेन भने पकाउने उपाय गर्नुपर्छ । त्यसका लागि दन्ती, चितु, गोदन्ती, करञ्जको बोक्रा, र करवीर यी सबलाई काञ्जीमा पिनेर तातो पारेर विद्रधिमा लेपन गरेमा विद्रधि फुटेर पिप निस्केर जान्छ । (परीक्षित)

घाउ धुनका लागि पर्वरको पात, नीमको पात अथवा बरको रुखको बोक्राको काढा प्रयोग गर्नुपर्छ ।

विद्रधि पाकेर फुटेपछि त्यसको घाउ भर्न घाउको चिकित्सामा भनेको उपाय गर्नुपर्छ ।

धयेंरोको फूल, काफलको बोक्रा, हलेदो, दारुहरिद्राको बोक्रा, लोधको बोक्रा यी सबै समभाग लिएर पिनेर लेदो पार्नू । उक्त लेदो भन्दा चौगुना तिलको तेल र त्यसको चौगुना पानी राखेर कराहीमा मन्द आँचमा पकाउनू । तेलमात्र बाँकी भएपछि उतारेर छान्नू र सुरक्षित गरी राख्नू । यो तेलले विद्रधिको घाउलाई भर्छ र निको पार्छ ।

पथ्य कुराहरू – विद्रधिमा पुरानो चामलको भात, मूँग र मुसुरोको दाल, डुम्रीको गेडा, काँचो केरा, भण्टा आदि घिउमा पकाएर दिनू । राती रोटी र माथि उल्लिखित तरकारी दिनू । पानी उमालेर चिसो भएको दिनू ।

५७. व्रणशोथ र व्रण (फोडा र घाउ)

कुनै शरीरको भागमा पहिले शोथ भएर पछि त्यो बढ्ने र घाउ बन्ने अवस्था भएमा त्यसलाई व्रणशोथ भनिन्छ ।

व्रणशोथका तीन अवस्था हुन्छन् – आम, पच्यमान, पक्व । यसमा सुरुमा शरीरको कुनै एक भागमा सानो शोथ हुन्छ । छालाको रङ्ग जस्ताको तस्तै रहन्छ तर अलि तातो हुन्छ । त्यो ठाउँ अलि सारो हुन्छ । मन्द दुख्ने हुन्छ । यो आम अवस्थाको लक्षण हो ।

व्रणशोथ पाक्न थालेपछि छालाको रङ्ग फेरिएर रातो हुन लाग्छ, त्यो तन्किएर आउँछ । त्यस भागमा बेसरी, दुख्ने, पोल्ने हुन्छ । बिच्छिले टोकेको बेलामा

जस्तै रोगी छटपटाउँछ । बस्दा वा सुत्दा पनि आराम हुँदैन । ज्वरो आउने, प्यास बढी लाग्ने, खान पिउन मन नलाग्ने हुन्छ । यो पच्यमान अवस्थाको लक्षण हो । व्रणशोथ पाकेपछि त्यसको दुखाइ वा जलन कम हुँदै जान्छ, शोथ अलि कम हुन्छ, छाला खुम्चिए जस्तो देखिन्छ, सियोले घोचे जस्तो दुख्छ, बारम्बार चिलाउने गर्छ । ज्वरो आदि उपद्रवहरू शान्त भएर जान्छन् । औंलाले थिच्दा खाल्टोपर्छ, भोक लाग्न थाल्छ । यो पक्व अवस्थाको लक्षण हो ।

व्रणशोथमा तीनै दोषहरू कारण हुन्छन् । किनकि त्यसमा जुन दुखाइ हुन्छ त्यो वायुको प्रकोप नभै हुन सक्दैन, पित्त नभई त्यो पाक्दैन, कफ नभइकन पिप पनि बन्दैन । यसरी व्रणशोथ तीनै दोषहरूको प्रकोपबाट उत्पन्न हुन्छ ।

पाकेको फोडाबाट पिप निकालिएन भने त्यसले मासु, शिरा र स्नायुहरूलाई असर गर्छ र अरू नाडीव्रण आदि रोग उत्पन्न गर्छ ।

व्रण

शरीरमा हुने कुनै किसिमको घाउलाई व्रण भनिन्छ । सम्म मिलेको छाला छुट्टिनु, त्यसबाट स्राव हुनु र दुख्नु यी व्रणका मुख्य लक्षण हुन् ।

व्रण दुई किसिमका हुन्छन् – शारीर र आगन्तुक । वात आदि दोषहरूबाट हुने व्रण शारीर हुन्छ । हतियार, लट्ठी आदिले हिर्काउँदा चोट लागेर हुने व्रण आगन्तुक हुन्छ । शारीर व्रण कुपित दोष अनुसार चार किसिमको हुन्छ– वातज, पित्तज, कफज र रक्तज ।

वातज व्रणको लक्षण – यो व्रण छुँदा साह्रो हुन्छ, हेर्दा अलि रातो मिसिएको कालो देखिन्छ । यसबाट बिस्तारै अलि अलि स्राव हुन्छ । वेदना बढी हुन्छ । घाउमा सियोले घोचे जस्तो चस्कन्छ, फर्फराउने गर्छ ।

पित्तज व्रणको लक्षण – यो व्रणमा बढी पोल्ने, स्राव बढी मात्रामा र दुर्गन्धी हुने हुन्छ । कुनै हतियारले चिरे जस्तो दुख्छ । साथमा ज्वरो आउने, तिर्खा बढी लाग्ने, बेहोश हुने हुन्छ । व्रण (घाउ) निकै बिग्रिने हुन्छ ।

कफज व्रणको लक्षण – यो हेर्दा चिल्लो देखिन्छ । यो निश्चल, सेतो मिसिएको पहेंलो वर्णको हुन्छ । यसमा कम दुख्छ, स्राव कम तर पिच्छिल हुन्छ । यो पाक्न धेरै समय लाग्छ ।

रक्तज व्रणको लक्षण – यो रातो वर्णको हुन्छ । यसबाट रगतको स्राव भइरहन्छ ।

व्रणको अवस्था अनुसार अरू पनि अनेक भेदहरू हुन्छन् ।

जस्तै – दुष्ट व्रण, शुद्ध व्रण, रुढ व्रण आदि ।

दुष्ट व्रणको लक्षण – सही किसिमबाट उपचार नभएर बिग्रिएको घाउलाई दुष्ट व्रण भनिन्छ । यसमा घाउभित्र खाली ठाउँ धेरै हुन्छ । पिप र दूषित रगतको स्राव भइरहन्छ र नराम्रो गन्ध आउँछ । यो धेरै समयसम्म रहन्छ, चाँडै निको हुँदैन ।

शुद्ध व्रणको लक्षण – घाउबाट दूषित पदार्थ निस्केपछि निको हुन लागेको सफा घाउलाई शुद्ध व्रण भनिन्छ । यो हेर्दा जिभ्रोको तल्लो भाग जस्तै कमलो र चिल्लो हुन्छ, छालाको सतहमा सम्म मिलेको हुन्छ (माथि उठेको वा भित्र गडेको हुँदैन), यसमा दुखाइ कम हुन्छ, स्राव हुँदैन ।

व्रणशोथ एवं व्रणको चिकित्सा

बिमिराको जरा, बालछड (जटामसी), देवदारु, सुठो, रास्ना, अरुणी(गिनेरी) यी सबै समभाग राखी बनाएको कल्कद्वारा लेप गर्नाले वातज व्रणशोथ नष्ट हुन्छ ।

बर, डुम्री, पाखनबेद, बेल, रातो चन्दन, सेतो चन्दन, मजिठो, जेठीमधु, सूरण (ओल), गेरु यी सबैको चूर्णलाई सयपल्ट धोएको घिउमा मिसाई लेप गर्नाले व्रणको जलन, पीडा र शोथ शान्त हुन्छ । यो पित्तज व्रणका लागि श्रेष्ठ लेप हो ।

गहुँको पिठोको पुल्टिस बाँध्नाले फोडालाई पकाइदिन्छ । अपामार्ग, सोडा र यवक्षारको लेप गर्नाले अथवा हात्तीको दाँतलाई पानीमा घोटेर १ थोपा जति लगाईदिनाले अत्यन्त कठोर व्रणशोथ पनि नष्ट हुन्छ । उक्त व्रण फुटेर पिप निस्किसकेपछि पर्वर र नीमको काढाले त्यस व्रणलाई धुनुपर्छ ।

पिपल, वर, डुम्री यी सबैको बोक्रा र पाखनबेदको काढाले धुने गर्नाले व्रण शोथ र उपदंशका घाउहरू आराम हुन्छन् । तिल, सिधेनुन, नीमको पात, हलेदो दारुहरिद्रा (चुत्रो), निशोथ यी सबैको चूर्ण घिउमा मिसाई लेप गर्नाले घाउ शुद्ध भएर जान्छ । तिललाई पिनेर लगाउनाले अथवा नीमको पात पिनेर लेप गर्नाले व्रण सफा हुन्छ ।

स्राव भइरहेको व्रणमा तिललाई महसँग पिनेर लेप गर्नाले आराम भएर जान्छ । प्रियंगुको फूल (दहीकाम्लो), धयेंरो, जेठीमधु र लाहाको मसिनो चूर्ण छर्कनाले भयङ्कर व्रण पनि आराम भएर जान्छ ।

लसुन पिनेर लेप गर्नाले अथवा नीमको पात र हिङ पिनेर लेप गर्नाले व्रणमा जम्मा भएका कीराहरू मरेर जान्छन् ।

मानिसको टाउकोको हाडलाई गोमूत्रका साथ पिनेर लेप गर्नाले कहिल्यै कुनै उपायले निको नभएको घाउ पनि आराम भएर जान्छ ।

काफलको बोक्रालाई पानीमा पकाई काढा बनाउनू । त्यस काढाले घाउलाई धुनू । घाउ शुद्ध भएर जान्छ । (परीक्षित)

घाउ फुटेर त्यसबाट फोहोर पिप निस्कन्छ भने नीमको पात पिनेर बनाएको लेदोमा मह मिसाएर घोट्नू र घाउमा लगाउनू। पिप तथा अरू स्रावहरू बन्द गर्न यो रामबाण औषधी हो। (खूब परीक्षित)

कपूरलाई पानीमा घोलेर घाउ धुनाले घाउ शुद्ध भएर जान्छ। नीमको पात राखी पकाएको पानीले घाउ धुनु सर्वश्रेष्ठ हुन्छ।

ग्लिसरीन ३० मि.लि., शुद्ध गन्धकको चूर्ण ४ ग्राम र गुलाबजल १०० मि.लि. सबैलाई मिसाएर सिसीमा राख्नू। यो लगाउनाले मुखको घाउ, पोतोहरू शान्त हुन्छन्। यो औषधी लगाउनुभन्दा पहिले सिसी हल्लाउने गर्नू। (परीक्षित)

विशिष्ट योग –

व्रणराक्षस तेल – पारो, गन्धक, सिन्दूर, मनःशिला, बोक्रा झिकेको लशुन, वत्सनाभ विष, ताम्रभस्म यी प्रत्येक १०-१० ग्राम तयार पार्नू। पहिले पारो र गन्धकको कज्जली बनाउनू। अनि अरू सबै द्रव्यहरूको चूर्ण बनाई कपडछान गरेर त्यसमा मिसाउनू। त्यो चूर्ण र २०० मि.लि. तोरीको तेल मिसाएर तामाको तपेसमा राखी १५ दिनसम्म सूर्यको कडा घाम लाग्ने ठाउँमा राख्नू। दिनदिनै एकपटक त्यसलाई चलाइदिनू। त्यसपछि त्यो तेललाई नछानी कल्कसहित नै काँचको सिसीमा राख्नू। बिर्को लगाई सुरक्षित राख्नू। यसमा राख्ने पारद, गन्धक, मनःशीला, विष अशुद्ध नै राख्नू। यो तेल, दाद, विद्रधि, नाडीव्रण आदिका लागि रामबाण नै हुन्छ। (खूब परीक्षित)

बलादि तेल – बला र अपामार्गको जरालाई सिलौटोमा एक साथ पानीसँग पिन्नू र लेदो पार्नू। यो लेदोभन्दा चौगुना तिलको तेल र तेलभन्दा चौगुना पानी सबैलाई ठूलो भाँडामा राखी पकाउनू। तेलमात्र बाँकी भएपछि उतारेर छानी सुरक्षित राख्नू। यो तेल सबै प्रकारका व्रणहरूको घाउ भर्न रामबाण हो।

आगोले पोलेको घाउको उपचार – पिपलको सुकेको बोक्रा पिनेर पोलेको स्थानमा छर्नाले पोलेको घाउ आराम भएर जान्छ।

जौको खरानी र जवाखारलाई तेलमा मिसाई लेप गर्नाले आगोले पोलेका घाउ निको हुन्छ। मैन, काउसोको बियाँ, जिरा, मह, हर्रो यी सब समभाग लिएर चूर्ण बनाउनू र गाईको घिउमा मिसाए लेप गर्नू। पोलेको घाउ तत्काल आराम भएर जान्छ।

१ तोला (१२ ग्राम) सोडालाई १५ मि.लि. पानीमा घोल्नू र पोलेको घाउमा लेपन गर्नू। यसबाट पोलेको ठाउँमा डाबर आउँदैन, शोथ र जलन (पोल्ने) तत्काल शान्त हुन्छन्। (परीक्षित)

पोलेको ठाउँमा महको लेप गर्नाले शीघ्र दाहलाई शान्त गर्छ। (परीक्षित)

५८. नाडीव्रण (नासूर)

पाक्न लागेको अथवा पाकिसकेको व्रणलाई काँचो सम्झेर उपचार नगरेमा व्रणमा भएको पिप (आदि विकृत वस्तु) हाड, मासु, सन्धि, मर्मस्थान आदिमा पुग्छ । त्यो पूय (पिप) आफ्नो ठाउँबाट अरू बढी ठाउँमा पुग्ने हुनाले त्यस अवस्थालाई गति भनिन्छ । त्यसमा नाली जस्तै बाटो बनेर पिप बग्ने हुनाले नाडीव्रण भनिन्छ ।

यो नाडीव्रण पाँच किसिमको हुन्छ – वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज र शल्यज ।

वातज नाडीव्रणको लक्षण – यो रुखो र सानो मुखको हुन्छ । यसमा शूल पनि हुन्छ । यसबाट रातमा बढी स्राव हुन्छ र त्यो फिंज सहित हुन्छ ।

पित्तज नाडीव्रणको लक्षण – यसको घाउमा बढी पोल्छ । यसबाट दिनमा पहेंलो र तातो स्राव बढी हुन्छ । साथमा ज्वरो आउने र तिर्खा लाग्ने भइरहन्छ ।

कफज नाडीव्रणको लक्षण – यसको घाउ भएको ठाउँ साह्रो हुन्छ र चिलाउने गर्छ । त्यसबाट निकै बाक्लो र सेतो स्राव भइरहन्छ जुन रातमा बढी मात्रामा हुन्छ । यसमा दुखाइ हुँदैन ।

सन्निपातज नाडीव्रणको लक्षण – यसमा वातज आदि नाडीव्रणहरूमा वर्णित अनेक किसिमको दुखाइ र स्रावहरू हुन्छन् । साथमा जिउ पोल्ने, ज्वरो आउने, सास फेर्न गाह्रो हुने हुन्छ । मुख सुक्छ । रोगी मूर्च्छा पर्छ । यो कालरात्रि समान प्राण लिने (असाध्य) हुन्छ ।

शल्यज नाडीव्रण – शरीरभित्र रहेको काँडा आदि शल्यभित्र गड्दै जाँदा बनेको घाउ नाडीव्रणको कारण बन्छ । यसबाट फिंज सहितको, मही जस्तो बाक्लो, तातो र रगत मिसिएको स्राव हुन्छ र दुखिरहन्छ ।

नाडीव्रणको सामान्य चिकित्सा – सिउँडीको दूध, आँकको दूध र दारुहरिद्राको चूर्ण मिसाई बत्ती बनाएर नाडीव्रणमा राख्नाले नाडीव्रणहरू आराम भएर जान्छन् ।

मह र सिंधे नुन मिसाएर बत्ती बनाई घाउमा राख्नाले नाडीव्रण आराम भएर जान्छ । (परीक्षित)

शुद्ध गुग्गुलु, त्रिफला र त्रिकटु समभाग लिएर चूर्ण बनाउन् । यो चूर्ण घिउमा मिसाई १-१ ग्रामका गोलीहरू बनाउन् । यो १-२ गोली दिनदिनै गुर्जोको रस अथवा काढासँग खानाले र परहेज गर्नाले दुष्ट व्रण, नाडीव्रण, भगन्दर, अर्श आदि नष्ट हुन्छन् । (परीक्षित)

भँगेराको विष्ठालाई पिनेर लेप गर्नाले नाडीव्रणलाई आराम गर्छ । समुद्रफेनको खरानी नाडीव्रणमा भर्नाले आराम हुन्छ ।

सर्पको काँचुलीको खरानी बरको दूधमा मिसाएर त्यसमा कपास बेरेको सिन्को भिजाउनू र नाडीव्रणमा राख्नू । १० दिनपछि त्यसलाई झिक्नू । अवश्य नै लाभ भएको पाइनेछ ।

कण्टकारीको फूल पिनेर रस निकाल्नू । त्यो रसमा सिन्को चोपेर नाडीव्रणमा राख्नू । अवश्य लाभ हुन्छ ।

विशेष चिकित्सा

वातज नाडीव्रणको चिकित्सा – हिङ, हलेदो, बोझो, गोजिह्वा र पञ्चमूल यी सबैको चूर्ण बनाई सिलौटोमा पानीसँग पिन्नू र लेदो बनाउनू । उक्त लेदो र त्यसभन्दा चौगुना तिलको तेल र त्यसको चौगुना पानी मिसाएर पकाउनू । तेलमात्र बाँकी रहँदा उतारेर छान्नू । यस तेलबाट व्रण शुद्ध भएर भर्ने गर्छ ।

सिंधे नुन, चितु, आँक, मरिच, भृङ्गराज, नागकेशर, हलेदो, दारु हरिद्रा सबै समभाग लिएर लेदो बनाउनू । लेदोभन्दा चौगुना तिलको तेल र त्यसको चौगुना पानी मिसाएर तेल पकाउनू । यो तेल लगाउनाले वातबाट पैदा भएको नाडीव्रण आराम हुन्छ । (परीक्षित)

पित्तज नाडीव्रणको चिकित्सा – यसको व्रणलाई चिरेर नित्य हलेदो, रातो चन्दन र नीमको बोक्राको काढाले धुने गर्नुपर्छ ।

निशोथ, त्रिफला, हलेदो, लोध यी समभाग लिएर कुटी छानी पानीसहित पिनेर लेदो पार्नू । लेदोभन्दा चौगुणा घिउ र घिउभन्दा चौगुणा पानी र उक्त लेदो मिसाई पकाउनू । घिउमात्र बाँकी हुँदा उतारेर छान्नू । यस घिउमा दूध मिसाएर नाडीव्रणमा छर्ने गर्नू । यसबाट पिपको स्राव बन्द हुन्छ ।

कफज नाडीव्रणको चिकित्सा – पहिले दूध र घिउसँग गहुँको पिठोको पुल्टिस बनाई घाउमा बाँध्नू । त्यो नरम भएपछि चिर्नू । अब नीम, तिल, जयपाल, फिटकिरी र सिंधे नुनलाई पिनेर मिसाएको धुलो घाउमा भरिदिनू । नित्य नीमको पानीले धुने गर्नू ।

सिंधे नुन, बर्रो, मरिच, चितु, करेलो, हलेदो र दारुहरिद्रा यी सबै समभाग लिएर कुटी छानी पानीसँग पिनी लेदो पार्नू । उक्त लेदोको चौगुना तिलको तेल र त्यसको चौगुना पानीका साथ उक्त लेदो राखी पकाउनू । तेलमात्र बाँकी भएपछि उतारेर छान्नू । यस तेलको प्रयोगद्वारा कफज नाडीव्रण जतिसुकै भित्रसम्म पुगेको भए पनि आराम हुन्छ ।

शल्यज नाडीव्रणको चिकित्सा – व्रणलाई चिरेर त्यसको बाटो सफा गर्नू । त्यसपछि त्यसमा मह र घिउका साथ पिनेको नीमको पातको कल्क (लेदो) लेप गरिदिनू अथवा तिल पिनेर लेप गरिदिनू । यसबाट व्रण सुकेर जानेछ ।

जयपाल, खजूर, खयर, बेलको गुदी, बर यिनका काँचा फलहरूको काढा बनाउनू । नागरमोथा, प्रियंगुको फूल, सालधूप, रोहिष तृण, मोचरस, नागकेशर, लोध्र र धयेंरोको फूल सबै समभाग लिएर कुटी छानी पानी मिसाएर लेदो पार्नू । लेदोभन्दा चौगुणा तिलको तेल र तेलको चौगुना जमालगोटा आदिको काढा र उक्त लेदो मिसाई पकाउनू । तेलमात्र बाँकी भएपछि उतारेर छान्नू । यस तेलको प्रयोगले सबै किसिमका नाडीव्रण ठीक भएर जान्छन् ।

५९. भगन्दर रोग (गुदद्वारमा हुने नाडी व्रण)

गुदद्वारको २ अङ्गुलको भागमा अर्थात् त्यसको वरिपरि कुनै ठाउँमा खटिरा उत्पन्न भएर दुख्ने र त्यो फुटेर घाउ हुने रोगलाई भगन्दर भनिन्छ । त्यो घाउ पाकेर फैलिएमा त्यसबाट नाडीव्रण जस्तै रातो रङ्गको फिंज र पिप आदि निस्कन्छ ।

पूर्वरूप – भगन्दर रोग लाग्नुभन्दा पहिले कम्मरको हाडमा सियोले रोपेजस्तो चस्किन्छ, गुदद्वारको वरिपरि पोल्ने, चिलाउने, दुख्ने हुन्छ ।

यो रोग पाँच किसिमको हुन्छ – वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज र आगन्तुज ।

वातज भगन्दरको लक्षण – टर्रो र रुखो कुराहरू बढी खानाले कुपित भएको वायुले गुदद्वारमा पिडका (फोडा) उत्पन्न गर्छ । त्यसको उचित उपचार नगर्दा त्यो पाक्छ र अत्यन्त पीडा हुन्छ । फोडा फुट्दा रातो रङ्गको फिंज निस्कन्छ । त्यसमा व्रणको अनेक मुख हुनाले तिनीहरूबाट मल, मूत्र र वीर्य पनि निस्कन सक्छ । त्यसलाई शतपोनक[1] भगन्दर भनिन्छ ।

पित्तज भगन्दरको लक्षण – अत्यन्त पित्त बढाउने (पिरो, अमिलो) पदार्थहरूको बढी सेवनबाट कुपित पित्तले गुदद्वारमा रातो रङ्गको पिडका उत्पन्न गर्छ । त्यो पिडका चाँडै नै पाक्छ र त्यसबाट तातो र दुर्गन्धी पिप बग्छ । यो पिडका ऊँटको घाँटी जस्तै माथि उठेको हुनाले यसलाई उष्टग्रीव भनिन्छ ।

---

१. संस्कृतमा शतपोनक शब्दले पिठो आदि छान्ने चलनीलाई जनाउँछ ।

कफज भगन्दरको लक्षण – यसको पिडका सेतो रङ्गको र साह्रो हुन्छ । त्यसमा चिलाउने गर्छ, वेदना कम हुन्छ । यसबाट बाक्लो पिप आदिको स्राव भइरहन्छ । स्राव भइरहनाले यसलाई परिस्रावी भगन्दर भनिन्छ ।

सन्निपातज भगन्दरको लक्षण – यसको पिडका गाईको थुन जस्तै देखिन्छ । त्यसको अनेक किसिमको रङ्ग हुन्छ, दुखाइ र स्राव पनि फरक-फरक किसिमको र कडा हुन्छ । यसलाई शम्बूकावर्त भगन्दर भनिन्छ ।

आगन्तुज भगन्दरको लक्षण – गुदद्वारमा काँडा आदि गड्दा उत्पन्न घाउ बढेर नाडीव्रण बन्छ । त्यो बढ्दै जाँदा उपेक्षा भएमा त्यहाँ किराहरू उत्पन्न हुन्छन् । तिनीहरूले छाला र मासुलाई छेडेर घाउका अनेक मुख बनाउँछन् । ती मुखहरूबाट मल, मूत्र आदिको स्राव हुन्छ । त्यसलाई उन्मार्गी भगन्दर भन्छन् ।

सबै भगन्दरहरू वास्तवमा कष्टसाध्य नै हुन्छन् । तिनमा पनि सन्निपातज र शल्यज भगन्दर असाध्य हुन्छन् ।

भगन्दरको सामान्य चिकित्सा – भगन्दर रोगमा अतिशीघ्र चिकित्सा सुरु गर्नुपर्छ । चिकित्सकले सकभर त्यो पिडका पाक्न नपाओस्, बसेर जाओस् भन्ने कुरामा ध्यान दिनुपर्छ । वमन, विरेचन र रगत निकाल्ने आदि उपायहरूबाट त्यो पिडका (फोडा) नपाक्ने किसिमले चिकित्सा गरी राख्नुपर्छ ।

त्यो पिडका पाकिहाल्यो भने त्यसको पिप निकाली दिनुपर्छ र नाडीव्रणको जस्तै चिकित्सा गर्नुपर्छ । जस्तै - सिउँडीको दूध, आँकको दूध र दारुहरिद्राको चूर्ण मिसाई बत्ती बनाएर घाउमा राख्नुपर्छ, जसबाट घाउ भरिएर जाओस् ।

भगन्दरको सुरुमा देखिएको पिडकामा सुठो, गुर्जो, पुनर्नवा, बरको पात र पानी भित्रको ईट यी सबैलाई पिनेर लेप गर्नाले त्यो पिडका (खटिरा) बस्छ । (परीक्षित)

पुनर्नवा, गुर्जो, सुठो, जेठीमधु र बयरको पात समभाग लिएर मसिनो गरी पिन्नू र तातो पारेर भगन्दरको पिडकामा लेप गरी बाँधीदिनू । पिडका बस्छ । (परीक्षित)

६ ग्राम अफीम, ६ ग्राम मुसब्बर, २ ग्राम मुनक्का यी सबैलाई पानीसँग पिनेर गोली पारी पिडकामा राखेर बाँधी दिएमा भगन्दरको पिडका बस्छ । (परीक्षित)

उक्त उपायहरू गर्दा गर्दै पनि पिडका पाकेर आयो भने त्यसलाई फुटाएर निम्नलिखित औषधीहरूको प्रयोग गर्नुपर्छ –

तिल, बोझो, लोध, घरको धुवाँ, नीमको पात, हलेदो, दारुहरिद्रा, हर्रो सबै समभाग लिएर पानीसँग पिनी लेप गर्नाले भगन्दर शुद्ध भएर भरिएर जान्छ । (परीक्षित)

पुरानो गुड, निलो तुथो, बिरोजा, सरेस समभाग लिएर केही पानीमा घोटेर मलम बनाई कपडामा फिंजाएर भगन्दरको घाउमा लगाईदिनू । २-४ पटक मैं भगन्दर आराम भएर जानेछ । (खूब परीक्षित)

नवकार्षिक गुग्गुलु – त्रिफला ३० ग्राम, शुद्ध गुग्गुलु ५० ग्राम, पिप्ला १० ग्राम यी सबैलाई पिनेर मिसाउनू र ५०० मिलीग्रामका गोली पारी सुकाई सुरक्षित गरी राख्नू । (चक्रदत्त)

यो १-२ गोली दिनदिनै बिहान-बेलुका त्रिफलाको काढा वा तातो पानी वा गोमूत्रसँग सेवन गर्नाले भगन्दर र अर्श रोग आराम हुन्छन् । (परीक्षित)

प्रयोग गर्ने तेल

करवीराद्य तेल – करवीर, हलेदो, जयपाल, लाङ्गली, सिंधे नुन, चितु, बिमिरो, इन्द्रजौ समभाग लिएर लेदो पार्नू । लेदो भन्दा चौगुणा तेल र तेलभन्दा चौगुणा पानी र उक्त लेदो राखी तेल पकाउनू । यस तेलको घाउमा लगाउने किसिमले प्रयोग गर्दा भगन्दर आराम भएर जान्छ ।

पथ्य कुराहरू – सबै किसिमका शाली चामलहरू, मूँगको दाल, मासुको झोल, पर्वर, मुला, तिल, सर्स्यूंको तेल, घिउ र मह यी सबै पथ्य हुन्छन् ।

६०. भग्न (हाड भाँचिनु)

हाडहरू भाँचिने दुई अवस्था हुन्छन् – काण्डभग्न र सन्धिभग्न । लामा र ठूला हाडहरू बीच वा कुनै ठाउँबाट भाँचिएमा त्यसलाई काण्डभग्न भनिन्छ । जस्तै – हात, गोडा आदिका हाडहरू भाँचिनु ।

जोर्नीहरूमा चोट लागेर हाड तल-माथि सर्नु, दायाँ-बायाँ फर्किनु, थिलो-थिलो हुनु आदि अवस्थालाई सन्धिभग्न भनिन्छ ।

काण्डभग्नको लक्षण – यसमा हाड भाँचिएको ठाउँमा छुन सकिन्छ र छुँदा घोर पीडा हुन्छ, त्यो भाग सुनिएको हुन्छ । रोगीलाई उठ्दा, बस्दा कुनै पनि हालतमा चैन हुँदैन ।

सन्धिभग्नको लक्षण – जुन सन्धिमा भग्न छ त्यसलाई खुम्च्याउँदा, फैलाउँदा वा यता उता गर्दा घोर पीडा हुन्छ, भग्न भएको ठाउँ चारैतिर सुनिएको हुन्छ । त्यसमा रातको समयमा बढी दुख्छ ।

सानो बालकको अवस्थामा भाँचिएको हाड जोडिएर निको हुन १ महिना लाग्छ, युवावस्थामा २ महिनामा जोडिन्छ र त्यसपछिको उमेरमा ३ महिना समय लाग्छ ।

भग्नको चिकित्सा – भाँचिएको ठाउँलाई पहिले चिसो पानीले सिञ्चन गर्नुपर्छ । त्यसपछि झुकेको हाडलाई माथि ल्याएर आफ्नो ठाउँमा पुऱ्याउनुपर्छ, माथि उठेको

हाडलाई दबाएर मिलाउनुपर्छ। त्यसपछि काठका दुईटा खापा दुईतिर राखेर कपडाले बाँध्नुपर्छ। बाँध्दा बन्धन धेरै कस्सिएको अथवा खुकुलो पनि हुनुहुँदैन। बन्धन खुकुलो भएमा हाड राम्ररी जोडिन पाउँदैन। कसेर बाँध्दा त्यो ठाउँ सुनिने र बढी दुख्ने हुन्छ।

बन्धन गरिसकेपछि बन्धनलाई औषधीहरू राखी पकाएको र चिसो भएको काढा वा शीतल पानीले बन्धनको कपडालाई भिजाइराख्नू। अथवा नौसादरलाई पानीमा घोलेर त्यो पानीले बन्धनलाई भिजाइराख्नू।

बन्धनलाई जाडोको मौसममा ७-७ दिनमा, गर्मीमा ३-३ दिनमा र सामान्य मौसममा ५-५ दिनमा खोल्ने गर्नू। हाडहरू जोडिएपछि साठी चामलको पिठोमा घिउ मिसाएर लेप गर्नू। अथवा चामलको पिठोमा नुन मिसाएर लेप गर्नू। अथवा भुटेको स्वागलाई पानीमा घोलेर लेप गर्नू। यी उपायहरू गर्नाले भाँचिएको हाड जोडिन्छ।

खाने औषधी – लसुन, मह, पिपलको रुखको लाहा, घिउ र मिश्री प्रत्येक १-१ ग्राम लिएर मिसाउनू। यो ५ ग्राम नित्य चाट्ने गर्नाले भग्न रोग आराम हुन्छ। आफ्नो ठाउँबाट सरेको वा भाँचिएको हाड ठीक भएर आउँछ। (खूब परीक्षित)

बबूलको फलको चूर्ण ३ ग्राम र मह ६ ग्राम मिसाई दिनमा ३ पटक सेवन गर्नाले भाँचिएको हाड जोडिएर आउँछ। (परीक्षित)

भोजनमा दूध र घिउ अनिवार्य रूपमा राख्नाले निस्सन्देह हाड जोडिएर आउँछ।

आभा गुग्गुलु – बबूलको फल, त्रिफला, त्रिकटु यी समभाग लिएर चूर्ण बनाउनू। त्यसपछि चूर्ण बराबर शुद्ध गुग्गुलु लिएर घिउका साथ सबैलाई कुट्नू र ५०० मिलीग्रामका गोलीहरू बनाइराख्नू। यो औषधी २-२ गोली दिनदिनै बिहान-बेलुका दूध वा तातो पानीसँग सेवन गर्न दिनू। सन्धिभग्न रोग आराम भएर जान्छ। (परीक्षित)

लाक्षादि गुग्गुलु– लाहा, हडचूर, अर्जुनको बोक्रा, अश्वगन्धा र नागरबलाको जराको बोक्रा यी सबै समभाग लिएर चूर्ण बनाउनू। अनि त्यस चूर्णको बराबर शुद्ध गुग्गुलु लिएर त्यसमा चूर्णहरू मिसाउनू र राम्ररी कुट्नू। गोली बनाउन मिल्ने भएपछि ५०० मिलीग्रामका गोलीहरू बनाएर राख्नू।

यो औषधी २ गोली दिनदिनै बिहान -बेलुका महसँग खान दिनू। भाँचिएको हाड जोडिएर वज्रसमान हुन्छ र पीडा शान्त हुन्छ। (परीक्षित)

धुलो नुन र चिनी ६-६ ग्राम मिसाएर खानाले चोटको पीडा विलकुल आराम हुन्छ।

पथ्यहरू – मांसरस, चामलको भात, दूध, घिउ, नौनी यी पथ्य हुन्छन्।

अपथ्यहरू – नुन, क्षारहरू, अमिलो वस्तु, रुखो अन्न यी अपथ्य हुन्छन्।

व्यायाम, मैथुन, दिनमा सुत्नु, राती जागा बस्नु, घाममा बस्नु, यी पनि अपथ्य हुन्छन् ।

६१. कुष्ठरोग (कोर)

विभिन्न कारणहरूबाट शरीरमा रगत आदि धातुहरू र छालामा खराबी आई अङ्गहरूको शोभा हराउने, स्पर्श थाहा नहुने, फुट्ने, कत्ला देखिने, गल्ने अवस्थालाई आयुर्वेदमा कुष्ठरोग मानिएको छ ।

कुष्ठरोगको कारण – दूध र माछा आदि विरुद्ध आहारको सेवन गर्नु, वमन, मल-मूत्र आदिको वेग रोक्नु, परिश्रम गरेर पसिना आएको अवस्थामा तत्काल नुहाउनु वा चिसो पानी पिउनु, अजीर्णको अवस्थामा सहवास गर्नु, गुरुजनहरूको अपमान गर्नु यी कारणहरूबाट कुष्ठ रोग उत्पन्न हुन्छ ।

यसबाहेक वातरक्त रोगपछि अथवा अशुद्ध पारदको सेवनबाट पनि कुष्ठ हुन्छ ।

सम्प्राप्ति – माथि उल्लिखित कारणहरूबाट वात, पित्त र कफ तीनै ओटा दोष कुपित हुन्छन् र तिनीहरूले रस, रक्त, मांस र जललाई दूषित बनाई कुष्ठ रोग उत्पन्न गर्छन् ।

पूर्वरूप – जुन स्थानमा कुष्ठ हुन लागेको छ त्यो ठाउँको छाला अत्यन्त चिल्लो वा खस्रो हुन्छ । त्यहाँ पसिना बढी आउँछ अथवा आउँदै आउँदैन । छालाको रङ्ग फेरिन्छ, त्यहाँ पोल्ने, चिलाउने, घोच्ने, लाटो हुने हुन्छ । स्पर्शको ज्ञान हुँदैन । चाँडै नै त्यहाँ घाउ हुन्छ र त्यो धेरै समयसम्म रहन्छ । घाउ भरिए पनि त्यहाँ रुखोपन रहन्छ । अलिकति कारण पुग्दा झन् बढेर जान्छ ।

कुष्ठका दुई वर्ग हुन्छन् – महाकुष्ठ र क्षुद्रकुष्ठ ।

महाकुष्ठ ७ प्रकारका हुन्छन् – कापाल, औदुम्बर, मण्डल, ऋष्यजिह्व, पुण्डरीक, सिध्म, काकणक । क्षुद्रकुष्ठ ११ प्रकारका हुन्छन् - एककुष्ठ, चर्म, किटिभ, वैपादिक, अलसक, दद्रुमण्डल, चर्मदल, पामा, कच्छु, विस्फोट, शतारु, विचर्चिका । महाकुष्ठहरू

कापाल कुष्ठको लक्षण – यसको रङ्ग कालो र रातो हुन्छ, हेर्दा खपटा जस्तो देखिन्छ । यसमा छाला रुखो, खस्रो, पातलो हुन्छ । यसमा सियोले घोचे झैं दुख्छ । यो कष्टसाध्य हुन्छ ।

औदुम्बर कुष्ठको लक्षण – यसमा छालाको रङ्ग डुम्रीको गेडाको जस्तो (हरियो -पहेंलो) हुन्छ । रौंको रङ कैलो हुन्छ । यसमा पोल्ने, चिलाउने भइरहन्छ ।

मण्डल कुष्ठको लक्षण – यसमा छालाको रङ्ग केही रातो र केही सेतो हुन्छ । यो पसिनाले युक्त र चिल्लो हुन्छ । गोलो आकार लिएर यो कुष्ठ माथि उठेको हुन्छ । साथमा अरू पनि यस्ता गोलाहरू जोडिएका हुन्छन् ।

ऋष्यजिह्व कुष्ठको लक्षण – यो कुष्ठ भएको ठाउँ कडा हुन्छ । त्यसको किनारामा रातो र बीचमा केही कालो हुन्छ, त्यहाँ दुख्ने गर्छ । यसको स्वरूप ऋष्य भन्ने मृगको जिब्रो जस्तो हुन्छ ।

पुण्डरीक कुष्ठको लक्षण – यो कुष्ठ भएको ठाउँ वरिपरि रातो र सेतो रङ्ग हुन्छ जुन रातो कमलको जस्तो देखिन्छ । यो केही माथि उठेको हुन्छ ।

सिध्म कुष्ठको लक्षण – जुन कुष्ठ भएको ठाउँ सेतो वा रातो हुन्छ र लौकाको फूल जस्तै देखिन्छ, जुनमा पातलो हुनाले मिच्दा धुलो निस्कन्छ त्यसलाई सिध्म कुष्ठ भनिन्छ । प्रायः छातीमा हुन्छ ।

काकणक कुष्ठको लक्षण – यो कुष्ठ भएको ठाउँ राती गेडीको जस्तो रङ्गको हुन्छ अर्थात् यसको बीचको कालो र वरिपरि रातो हुन्छ अथवा बीचमा रातो र वरिपरि कालो रङ्गको हुन्छ । यो पाक्ने गर्छ र यसमा तीव्र वेदना हुन्छ । यसमा तीनै दोषका लक्षणहरू प्रबल हुन्छन् । यो असाध्य हुन्छ । क्षुद्र कुष्ठहरू

एककुष्ठको लक्षण – यसले धेरै ठाउँ घेर्छ र यो हेर्दा माछाको कत्ला जस्तै देखिन्छ । यो चक्राकार अथवा अभ्रकको पत्र जस्तो हुन्छ । यसमा पसिना आउँदैन ।

चर्म कुष्ठको लक्षण – यसमा छाला हात्तीको छाला जस्तो बाक्लो रुखो कालो हुन्छ ।

किटिभ कुष्ठको लक्षण – यो कुष्ठ भएको छाला कालो र घाउ भएको ठाउँ जस्तै खस्रो र साह्रो हुन्छ ।

विपादिका कुष्ठको लक्षण – यसमा हात गोडाको छाला फुट्ने र त्यहाँ तीव्र वेदना हुनेगर्छ ।

अलसक कुष्ठको लक्षण – यसमा छालामा राता र चिलाउने फोकाहरू हुन्छन् ।

दद्रुमण्डल (दाद) कुष्ठको लक्षण – यसमा छाला केही उठेको हुन्छ र त्यहाँ रातोपन र पिडकाहरू हुन्छन् । त्यहाँ चिलाउने गर्छ ।

चर्मदल कुष्ठको लक्षण – छालामा रातो, शूल जस्तै दुख्ने र चिलाउने फोकाहरू हुन्छन् जुन फुटेर जान्छन् र यसमा लुगा आदिले छुँदा घोट्दा बढी कष्ट हुन्छ ।

पामा (लुतो) कुष्ठको लक्षण – छालामा साना साना धेरै पिडकाहरू हुन्छन् । तिनीहरूमा चिलाउने, पोल्ने, भइरहन्छ, फुट्दा पानी जस्तो स्राव हुन्छ ।

कच्छू कुष्ठको लक्षण – पामा जस्तो छ त्यस्तै पिडकाका साथ हातहरूमा र चाकवरिपरि पोल्ने फोकाहरू हुन्छन् ।

विस्फोट कुष्ठको लक्षण – केही रातो वर्णका र छाला पातलो भएका फोकाहरू धेरै हुन्छन् ।

शतारुको लक्षण – यसमा केही काला वा रातो वर्णका धेरै व्रणहरू हुन्छन् । तिनमा दाह र वेदना हुन्छ ।

विचर्चिकाको लक्षण – यसमा केही कालो रङ्गको पिडका हुन्छ । जुन बढी चिलाउँछ । त्यसबाट बढी स्राव पनि हुन्छ ।

उकवतको लक्षण – यो दाद र खुजुली कै जातिको तर बढी दुःख दिने रोग हुन्छ । यसको रङ्ग गाढा खैरो हुन्छ । कसैको भनाइ अनुसार रोगद्वारा पीडित छालाको रङ्ग रातो हुन्छ र त्यसमा ससाना बिमिरा हुन्छन् । यस रोगलाई अंग्रेजीमा (Eczima) भन्दछन् । यो पनि एक प्रकारको खुजली (लुतो) हो जुन प्रायः हात र टाउकोमा हुन्छ । यो टाउकोमा भएमा केश झरेर जान्छन् । गिलो एक्जिमाबाट पिप बगिरहन्छ । त्यसलाई अंग्रेजीमा Weeping Eczima भन्छन् ।

धातुगत कुष्ठहरू – कुष्ठ रोगको प्रारम्भ रस, रक्त, मांस यी धातुहरू दूषित भएर हुन्छ । यो रोग बढेपछि अरू मेद आदि धातुहरू पनि दूषित हुन्छन् । प्रत्येक धातु दूषित हुँदा खास केही लक्षणहरू हुन्छन् । धातुगत कुष्ठ भन्नाले कुष्ठ रोग लाग्दा विशेष रूपमा प्रभावित धातु र त्यस कारण उत्पन्न कुष्ठ भन्ने अर्थ बुझिन्छ ।

रसगत कुष्ठको लक्षण – यसमा छालाको रङ्ग बदलिन्छ छाला रुखो हुन्छ, त्यसमा रोमाञ्च हुन्छ, लाटोपन देखिन्छ, पसिना बढी निस्कन्छ ।

रक्तगत कुष्ठको लक्षण – यसमा बढी चिलाउने र पिप बग्ने हुन्छ ।

मांसगत कुष्ठको लक्षण – अङ्ग मोटो हुन्छ, त्यसमा कठोरता आउँछ, पिडकाहरू उत्पन्न हुन्छन् । शरीरमा सियोले घोचेजस्तो दुख्छ, फोकाहरू हुन्छन् । मुख सुक्ने गर्छ ।

मेदोगत कुष्ठको लक्षण – यसमा हात कमजोर भएर जान्छ, हिंड्ने शक्ति हराउँछ, अङ्गहरूमा दुख्ने हुन्छ । घाउ एक ठाउँबाट अरू ठाउँमा सर्दै जान्छ । अरू रस-रक्तगत आदि कुष्ठका लक्षण पनि हुन्छन् ।

अस्थिगत र मज्जागत कुष्ठको लक्षण – यसमा नाकको डाँडी भित्र गड्छ, आँखा राता हुन्छन् । घाउहरूमा कीरा देखिन्छन् र बढ्दै जान्छन् । रोगीको स्वर बस्छ र बोली फरक सुनिन्छ ।

शुक्रगत कुष्ठको लक्षण – पति – पत्नी दुवैमा कुष्ठ रोग बढ्दै गएर तिनीहरूको वीर्य र रज दुवै दूषित हुन्छन् । त्यसैले गर्दा तिनीहरूका सन्तान पनि कुष्ठ रोगबाट पीडित हुन्छन् ।

कुपित दोषको बल अनुसार कुष्ठका विशेष लक्षणहरू – वातको प्रकोप हुँदा कुष्ठ भएको छाला कालो वा रातो, रुखो र खस्रो हुन्छ । त्यसमा बढी दुख्ने हुन्छ ।

पित्तको प्रकोप हुँदा कुष्ठमा पानी उम्लिएको जस्तो पीडाका साथ, पोल्ने, रातो हुने, स्राव बढी हुने हुन्छ । कफको प्रकोप हुँदा कुष्ठ गिलो, बाक्लो र चिल्लो हुन्छ । त्यसमा चिसो र भारीपन हुन्छ । चिलाउने गर्छ ।

असाध्य अवस्था – जुन रोगीको कुष्ठ फुटेर बग्ने गर्छ, नेत्र राता हुन्छन्, स्वर बसेको हुन्छ, वमन-विरेचन आदिबाट आराम हुँदैन त्यो असाध्य हुन्छ ।

श्वित्र र किलासको लक्षण – यो पनि कुष्ठ जस्तै छालामा हुने रोग हो र यसमा छालाको रङ्ग बिग्रन्छ । यो २ किसिमको हुन्छ । किलास र अरुण । जब श्वित्र रगतमा आश्रित हुन्छ, तब किलास भनिन्छ, जब मांसमा आश्रित हुन्छ तब अरुण कहलाउँछ ।

यस कुष्ठमा सुरुमा साना साना गोल आकारका दागहरू हुन्छन् । प्रायः यो कुष्ठ हात, मुख र छातीमा सुरु हुन्छ । यो दूध समान सेतो हुन्छ, कुनै कुनै सेतो दागमा रातो आभा पनि पाइन्छ । यो पाक्ने अथवा स्राव आउने हुँदैन । अन्तमा यस रोगीको केश पनि सेतो भएर जान्छ तर झर्दैन ।

भावप्रकाशमा यो लेखिएको छ वातबाट उत्पन्न श्वित्रमा लाली र रुखोपन हुन्छ र त्यो रगतमा आश्रित हुन्छ । पित्तबाट उत्पन्न श्वित्रमा कमलको पात झैं बीचमा सेतो र किनारामा रातो हुन्छ, त्यसमा जलन हुन्छ, यसले रौंहरूलाई नष्ट गरिदिन्छ तथा मांसमा आश्रित हुन्छ । कफबाट उत्पन्न श्वित्र सेतो, पुष्ट र भारी हुन्छ, यो चिलाउने गर्छ र मेदमा आश्रित हुन्छ । मैथुनद्वारा संसर्गले, रोगीले लगाएको कपडा आदि लगाउनाले यो रोग सर्नसक्छ ।

कुष्ठ र श्वित्रमा भिन्नता – कुष्ठ समस्त धातुहरूमा आश्रित हुन्छ, श्वित्र रगत, मांस, र मेदमा मात्र आश्रित हुन्छ । कुष्ठमा पाक र स्राव हुनसक्छ, श्वित्रबाट स्राव हुँदैन ।

कुष्ठको सामान्य चिकित्सा – यस रोगमा पूर्वरूप देखिने बित्तिकै चिकित्सा गराउन सुरु गर्नुपर्छ, विलम्ब गरेमा यो असाध्य भएर जान्छ ।

वातप्रधान कुष्ठमा पहिले घिउ खान दिएर स्नेहन गर्नुपर्छ, पित्तप्रधान कुष्ठमा पहिले विरेचन र रक्तमोक्षण गर्नुपर्छ । कफ प्रधान कुष्ठमा वमन गराउनुपर्छ ।

यस रोगमा शोधनको विशेष महत्त्व हुन्छ । अतः यसमा १५-१५ दिनमा वमन गराउनुपर्छ । महिनामा १ पटक विरेचन गराउनुपर्छ । ६-६ महिनामा रक्तमोक्षण गर्नुपर्छ । ३-३ दिनमा अवपीड नस्य दिनुपर्छ । यस रोगमा तीक्ष्ण द्रव्यको प्रयोगले हानि गर्छ, अतः बिस्तारै शोधन गर्नुपर्छ ।

विरेचन र रक्तमोक्षण गरेपछि घृतपान गराउनुपर्छ । त्यसपछि कुष्ठनाशक तिक्त-कषाय द्रव्य एवं रसायनहरूको प्रयोग गर्नुपर्छ ।

सामान्य कुष्ठनाशक योग – सोमराजी अर्थात् बाकुचीको बीजको चूर्ण १० ग्राम तातो पानीसँग सेवन गराउने र दूध - घिउसँग भोजन गर्ने गर्नुपर्छ ।

बाकुचीको चूर्ण १० ग्राम खाई तातो पानी पिउने त्यसपछि ३ घण्टासम्म घाममा बस्नाले सबै किसिमका कुष्ठहरू २१ दिनमा आराम भएर जान्छन् । (परीक्षित) यो औषधीको सेवन गर्दा भोजनमा केवल दूध पिउनुपर्छ, अरू खाद्य पदार्थ छोड्नुपर्छ ।

सिध्मकुष्ठनाशक योगहरू – कुठ, मूलाको बियाँ, प्रियंगुको फूल, सर्स्यू, हलेदो नागकेशर सबै समभाग लिएर पानीसँग पिनी लेप गर्नाले यो रोग नष्ट हुन्छ ।

गन्धकको चूर्ण र यवक्षारको चूर्ण सर्स्यूको तेलमा पिनेर लेप गरेमा यो रोग जान्छ । (परीक्षित)

मूलाको बियाँ, नीमको पात, सेतो सर्स्यू, घरको धुवाँ सबलाई पानी राखी पिनेर लेप गर्नू । केहीबेरपछि लेप सफा गरी नौनी घिउ मल्नू र तातो पानीले धुनू । यसरी तीन दिन गर्नाले यो रोग नष्ट भएर जान्छ ।

विपादिकानाशक योग – मह, मैन, सिंधे नुन, गुड, गोकुल धूप, गेरु, आँकको दूध, सालधूप यी सबैलाई मिसाई लेप गर्नाले पुरानो विपादिका र खुट्टाको छाला फुटेकोमा आराम गर्छ । (परीक्षित)

अलिकति चामललाई नरिवलको पानीमा भिजाइराख्नू । जब त्यसबाट दुर्गन्ध आउन थाल्छ तब त्यसलाई पिनेर लेप गर्नू । यसले धेरै पुरानो खुट्टाको छाला (पैतालामा) फुट्ने रोग नष्ट हुन्छ ।

दादनाशक योगहरू – चक्रमर्द (टाप्रे)को बियाँ, कुठ, सिंधे नुन, काञ्जी, सर्स्यूँ, बायुविडङ्ग यी सबैलाई पिनेर लेप गर्नू ।

अथवा – टाप्रेको बियाँ, अमला, सालधूप, सिउँडीको दूध यी सबैलाई काञ्जीमा पिनेर लेप गर्नू ।

अथवा – टाप्रेको बियाँ र हर्रो पानीसँग पिनेर लेप गर्नू ।

अथवा – सैजनको जरालाई पानीसँग पिनेर लेप गर्नू ।

अथवा – राजवृक्षको पातलाई महीमा पिनेर लेप गर्नू ।

अथवा काकमाची(कवै)को पात वा करवीरको पातलाई महीसँग पिनेर लेप गर्नू । दाद नष्ट भएर जान्छ ।

मनः शिलालाई पानीमा घोटेर लगाउनू । अथवा दादमा सल्लाको खोटो (सरेस) दल्नू, जबसम्म दाद नष्ट हुँदैन सरेस छुट्दैन । टाँसिएर रहन्छ ।

राल, गन्धक, शुद्ध स्वाग, फिटकिरी यी सबैलाई पिनेर घिउमा मिसाई लगाएमा पुरानो दाद पनि आराम भएर जान्छ ।

टाउकोको दादमा उपयोगी योग – मर्क्यूरिक क्लोराइड १२५ मि.ग्रा, टिंक्चर आयोडीन ३० मिलीलिटर मिसाएर दिनमा २ पटक दादमा लगाउनू । दाद हराइसके पनि जिंक अक्साइडको अथवा बोरिक एसिडको मलम लगाईराख्नू । यी औषधी आयोडिनको दाग नमेटिएसम्म लगाईराख्नू ।

कण्डूपामानाशक योग – गन्धकलाई तोरीको तेलमा मिसाएर लेप गर्ने अथवा १०० मि.ली. गोमूत्रमा बेसार १० ग्राम मिसाई सेवन गर्ने गर्नाले पामा (लुतो) नष्ट भएर जान्छ । सिंधे नुन, गोबर र हलेदो सबैलाई महमा मिसाई लेप गर्नाले कण्डू र पामामा आराम हुन्छ । (परीक्षित)

हरियो तुथो, आमलासार, गन्धक र कपूर १०-१० ग्राम पिनेर, सयपल्ट धोएको गाईको घिउमा मिसाएर हरेक दिन मल्ने र १ घण्टा घाममा बसेपछि नुहाउने गर्नाले चिलाउने लुतो अराम भएर जान्छ । नुहाउनुभन्दा पहिले गाईको गोबर दलिदिएमा झन् उत्तम हुन्छ । नुहाइसकेपछि कपूर मिलाएको चमेलीको तेल मल्नाले बडो आरामको अनुभव हुन्छ र लुतो छिट्टै आराम हुन्छ । (खूब परीक्षित)

तुथो ४ ग्राम, गन्धक ८ ग्राम, खुरासानी अजवायन ८ ग्राम सबैलाई कुटछान गरी धोएको घिउमा मिसाई लुतोमा मल्ने, १ घण्टासम्म घाममा बस्ने अनि गाईको ताजा गोबर दलेर नुहाउने गर्नू । नुहाइसकेपछि कपूर मिसाएको चमेलीको तेल मल्नू । भयङ्कर लुतो पनि ३ दिनमा हराउँछ । (परीक्षित)

नौसादर, स्वाग (टङ्कण), शुद्ध पारो, गन्धक, सिन्दुरे (कम्पिल्लक) बाकुची, मरिच, कपूर प्रत्येक १२-१२ ग्राम, निलो तुथो ३ ग्राम लिनू । पहिले पारद र गन्धकको कज्जली बनाउनू । त्यसमा अरू औषधीहरू कुटी छानी बनाएको चूर्ण मिसाइदिनू । अब यसलाई १०० पल्ट धोइएको गाईको घिउमा मिसाई मलम बनाउनू । यो औषधी दिनमा २ पटक लगाउनू र भैंसीको गोबर मलेर नुहाउनू । यो तरीकाले ३-४ दिन लगाउनाले गिलो अथवा सुख्खा दुवै किसिमको लुतो आराम भएर जान्छ । (परीक्षित) यो औषधी खाएको बेलामा क्षारयुक्त, अमिलो र पिरो कुरा खानु हुँदैन ।

नरिवलको तेल ६० मि.लि., कपूर ६ ग्राम र निलो तुथो १.५ ग्राम सबलाई मिसाई लगाउनाले लुतो हराएर जान्छ । (परीक्षित)

सिन्दूरादि तेल – सिन्दूर, गुग्गुलु, रसाञ्जन, निलो तुथो समभाग लिएर पानी मिसाई पिनेर लेदो पार्नू । लेदोभन्दा चौगुना बढी सर्स्यूंको तेल र तेलको चौगुना पानीका साथ उक्त लेदो सबलाई पकाई तेल तयार गर्नू । यो तेल लगाउनाले कण्डू, स्रावयुक्त पिडका वा सुख्खा पिडकामा आराम हुन्छ । (परीक्षित)

अर्को सिन्दूराद्य तेल – जिरा ४० ग्राम र सिन्दूर २० ग्राम लिएर पिनेर लेदो पार्नू । अब उक्त लेदोका साथ २४० मि.लि. तोरीको तेल र ९०० मि.लि. पानी राखी पकाउनू । तेलमात्र बाँकी भएपछि उतारेर छान्नू । यो पनि पामाका लागि परीक्षित योग हो । (चक्रदत्त)

चर्मदल कुष्ठनाशक योग – सेतो बोझोलाई पानीसँग पिनेर लेप गर्नाले चर्मदल कुष्ठ नष्ट हुन्छ ।

इन्द्रजौ गोमूत्रमा पिनेर लेप गरेपनि आराम हुन्छ । आँपको बियाँ भित्रको गुदीलाई सिंधे नुनका साथ तामाको भाँडामा घोटेर लेप गर्नाले चर्मदल कुष्ठ नष्ट हुन्छ ।

कच्छूकुष्ठनाशक योग – असुरोको पात, नीमको पात, हलेदो यी सबै समभाग लिएर गोमूत्रसँग पिनी लेप गर्नाले ३ दिनसम्ममा कच्छूरोग हराएर जान्छ ।

गन्धाबिरोजा, सालधूप, लोध, कम्पिल्लक (सिन्दुरे), मनःशिला, ज्वानु र गन्धक हरेक ५०-५० ग्राम पिनेर १ किलो घिउमा मिसाई केही दिनसम्म सूर्यको प्रकाश अर्थात् कडा घाममा राखेर पाक्नदिनू । यस घिउको मालिसले कच्छूकुष्ठमा आराम हुन्छ ।

हलेदोलाई गोमूत्रमा पिनी लेप गर्नाले कच्छूकुष्ठलाई आराम गर्छ । सिन्दूराद्य तेलको मालिस पनि लाभदायक हुन्छ ।

विचर्चिकानाशक योग – सिउँडीको हाँगो ल्याई त्यसको भित्र बीचमा खोक्रो पार्नू र त्यस प्वालमा सर्स्यू पिनेको लेदो भर्नू । अब त्यसलाई कोइलाको आगोमा पकाउनू । पाकेर रातो भएपछि झिकेर सेलाउन दिनू र पिनेर लेप गर्नू ।

अथवा सिउँडीको हाँगाभित्र घरमाथिको धुवाँ (ध्वाँसो) र सिंधे नुन भरेर पुटपाकविधि अनुसार पकाउनू । पाकेपछि त्यसको रस निकाली तोरीको तेल मिसाएर लेप गर्नू । विचर्चिका रोग नष्ट हुन्छ ।

किटिभ कुष्ठनाशक योग – चक्रमर्द (टाप्रे)को बियाँलाई सिउँडीको दूधमा भिजाई घाममा सुकाउनू । त्यसपछि गोमूत्रमा भिजाई घाममा राख्नू । अब त्यसलाई पिनेर लेप गर्नू । किटिभ रोग नष्ट हुन्छ ।

समस्त कुष्ठनाशक योगहरू – हर्रो, करञ्ज, हलेदो, सर्स्यू, बाकुची, सिंधे नुन, वायुविडङ्ग, सबै समभाग लिएर गोमूत्रसँग पिनी लेप गर्नू ।

अथवा – मनःशिला, हरिताल, मरिच, आँकको दूध र तेल यी सबै पिनेर लेप गर्नू ।

अथवा – अडेरको पातलाई महीसँग पिनेर लेप गर्नू ।

अथवा – कुटजको बोक्रा ६ ग्राम पिनेर मिश्री पानीसँग सेवन गर्नू । सबै किसिमका कुष्ठहरू आराम भएर जान्छन् ।

श्वित्र कुष्ठनाशक योग – यस रोगमा बारम्बार रगत निकाल्ने उपाय गर्नुपर्छ । जौको रोटी खयरको काढासँग भोजनमा दिनुपर्छ । खयर र अमलाको काढा २५-५० मि.लि. मा ५-१० ग्राम बाकुचीको बियाँको चूर्ण राखी नित्य पिउनाले शंख र चन्द्रमा झैं सेतो कुष्ठ पनि आराम भएर जान्छ । (परीक्षित)

बाकुचीको बियाँ १६० ग्राम, हरिताल ८० ग्राम, मनःशिला ६ ग्राम, चोपचिनी ६ ग्राम, चितुको जरा ६ ग्राम सबको चूर्ण बनाएर राख्नू । यो चूर्ण आवश्यक मात्रामा लिएर गोमूत्रमा पिनी लेप गर्नाले श्वित्र कुष्ठ आराम हुन्छ ।

काली कवैको जरा पिनेर १५ दिनसम्म लेप गर्नाले, हात्तीको दाँतलाई मालतीको क्षारसँग पिनेर लेप गर्नाले, अथवा कुकुरको हाड, केराको खरानी र कागको विष्ठा सबलाई मिसाएर ४० दिनसम्म लेप गर्नाले अत्यन्त उग्र सेतो कुष्ठ पनि आराम भएर जान्छ ।

फलामको चूर्ण, कालो तिल, रसाञ्जन,बाकुची, अमला यी सबैलाई भृङ्गराजको रसमा पिनेर लेप गर्नाले अथवा विषगर्भ तेल लगाउनाले श्वेत कुष्ठ आराम भएर जान्छ ।

सेतो फूल फुल्ने अरणी (गिनेरी)को जरालाई दूधमा घोटी १० ग्राम मात्रामा नित्य पिउनाले श्वेत कुष्ठमा आराम हुन्छ । (परी.)

मनःशिला र अपामार्गको भस्म समभाग लिएर पानीसँग पिनी लेप गर्नाले श्वेत कुष्ठमा आराम हुन्छ । हरताल, स्वाग, सेतो संखिया विष प्रत्येक ६-६ ग्राम र मुलाको बियाँ १२ ग्राम, बाकुची १२ ग्राम यी सबैको चूर्ण बनाई कागतीको रसमा २ दिन खल गर्नू र गोलीहरू पार्नू । यी गोलीलाई हरेक दिन कागतीको रसमा घोटेर सेतो दागहरूमा लगाउनू । यसबाट सेतो कुष्ठ शीघ्र आराम हुन्छ । (परीक्षित)

विशिष्ट योगहरू

पञ्चनिम्ब चूर्ण – नीमको पात, फल, फूल, जरा तथा बोक्रा समभाग लिएर चूर्ण बनाउनू । यो चूर्ण ३-६ ग्राम मात्रामा गोमूत्र वा गाईको दूधसँग सेवन गर्न दिनू । कुष्ठ, विसर्प र अर्श रोगमा आराम हुन्छ ।

पञ्चनिम्बावलेह – नीमको पात, फल, फूल, बोक्रा तथा जरा २०-२० ग्राम लिएर चूर्ण बनाई मिसाउनू । यो चूर्णलाई भृङ्गराजको रसको ७ भावना दिनू । अब हर्रो, बर्रो, अमला, सुठो, मरिच, पिप्ला, ब्राह्मी, गोखुर, भलायो, चितु, वायुविडङ्ग, वाराहीकन्द लौह भस्म, हलेदो, दारुहरिद्रा, बाकुची, राजवृक्ष, मिश्री, कुठ, इन्द्रजौ र पाठा समभाग (१० ग्राम) लिएर चूर्ण बनाई मिसाउनू । यस चूर्णमा

खयरसार, विजयसार र नीमको काढाको भावना दिनू र छायामा सुकाउनू । अब क्रमशः भृङ्गराजको रसको ७ भावना दिनू । त्यसपछि हर्रो आदिको चूर्णको १ भाग र माथि भनिएको पञ्चनिम्ब चूर्णको २ भाग एकै ठाउँमा मिसाइराख्नू ।

पहिले कुष्ठको रोगीलाई वमन-विरेचन आदि गराई शुद्ध पार्नू । त्यसपछि यो चूर्ण मह, पञ्चतिक्त घृत, खयरसारको काढा वा तातो पानीसँग खान दिनू । सुरुमा ६ ग्रामको मात्रा दिनू, पछि बिस्तारै मात्रा बढाई ४८ ग्राम सम्मको मात्रा दिनू । यो औषधी पचिसेकपछि हल्का र हितकारी भोजन दिनू । शास्त्रमा यसको खूब प्रशंसा गरिएको छ । यसबाट सबै किसिमका कुष्ठ, नाडीव्रण, प्रमेह र प्रदर रोग नष्ट हुन्छन् ।

पञ्चतिक्त घृत – नीम, पर्वर, कण्टकारी, गुर्जो, असुरो यी प्रत्येक ५०-५० ग्राम लिएर २ लिटर पानीमा काढा बनाउनू । जब आधा लिटर बाँकी रहन्छ तब उतारेर कराहीमा छान्नू । अब त्यसमा आधा किलो घिउ र त्रिफला चूर्ण आधा किलो मिसाई पकाउनू, घिउ मात्र बाँकी रहँदा उतारेर छान्नू र सुरक्षित गर्नू । यसबाट १०-२० ग्राम घिउ नित्य पिउनाले ८० प्रकारका वात रोग, ४० प्रकारका पित्त रोग, २० प्रकारका कफ रोग र १८ प्रकारका कुष्ठ रोगहरू आराम हुन्छन् ।

सोमराजी घृत – बाकुची २०० ग्राम, खयरसार ५० ग्राम, पर्वरको पात, हर्रो, बर्रो, अमला, त्रायमाण, घरको ध्वाँसो र कुटकी यी सबैलाई पानीसँग मसिनो गरी पिनेर शुद्ध गुग्गुल मिसाउनू र लेदो पार्नू । फेरि लेदोभन्दा चौबर घिउ, घिउभन्दा चौबर पानी र लेदो सबलाई मन्दाग्निमा पकाउनू । घिउमात्र बाँकी हुँदा उतारेर छान्नू । यस घृतले श्वित्र कुष्ठका साथै अरू कुष्ठ पनि आराम भएर जान्छन् ।

मरिचादि तेल – मरिच, हरिताल, मनःशिला, मोथे, आँकको दूध, करवीरको जरा, निशोथ, गोबरको रस, इन्द्रवारुणीको जरा, कुठ, हलेदो, दारुहरिद्रा, देवदारु, रातो चन्दन यी सबै १०-१० ग्राम र वत्सनाभ विष ४० ग्राम लिएर चूर्ण बनाई पानीसँग सिलौटोमा पिनी लेदो पार्नू । अब ६४० मि.लि. तोरीको तेल, गोमूत्र २५६० मि.लि. (२ लिटर ५६० मि.लि.) र माथिको लेदो सबैलाई फलामको कराहीमा राखी मन्द आँच दिँदै पकाउनू । तेलमात्र रहँदा उतारेर छान्नू । यस तेलको मालिसले सबै किसिमका कुष्ठ र दाद आराम भएर जान्छन् ।

सोमराजी तेल – बाकुची, हलेदो, दारुहरिद्रा, सेतो सर्स्यू, अमलतास (राजवृक्षको पात), कुठ, करञ्ज, टाप्रेको बियाँ प्रत्येक २०-२० ग्राम लिएर चूर्ण बनाउनू र सिलौटोमा पानीका साथ पिनेर लेदो पार्नू । उक्त लेदोका साथ तोरीको तेल १ लीटर, पानी ४ लीटर राखी पकाउनू र तेलमात्र बाँकी हुँदा उतारेर छान्नू र सुरक्षित गरी राख्नू । यस तेलको प्रयोगले नाडीव्रण, १८ प्रकारका कुष्ठ, वातरक्त आदि रोगहरू अराम हुन्छन् । (परीक्षित)

विष तेल (चक्रदत्त) – करञ्ज, हलेदो, दारुहरिद्रा, आँकको दूध, तगर, करवीर, बोझो, कुठ, अपराजिता, रातो चन्दन, मालती, छतिवन (सप्तपर्ण), मजिठो, सिमालीको पात प्रत्येक २०-२० ग्राम ल्याई चूर्ण बनाउनू र सिलौटामा पानीका साथ पिनेर लेदो पार्नू। साथमा वत्सनाभको चूर्ण पनि ५० ग्राम मिसाउनू। उक्त लेदोका साथ तोरीको तेल ६४० मि.लि., गोमूत्र २ लिटर ५६० मि.लि. राखी मन्द आँच दिई पकाउनू। तेल पाकेर तयार भएपछि छानेर राख्नू। यो तेल लगाउनाले श्वित्र कुष्ठ, कण्डू, पामा, दुष्ट व्रण आदिलाई आराम गर्छ।

श्वेत करवीराद्य तेल (चक्रदत्त) – सेतो करवीरको जरा, वत्सनाभ विष दुवै १०० ग्राम लिएर पिनी लेदो पार्नू। उक्त लेदोका साथ गोमूत्र ३ लिटर २०० मि.लि. तथा तिलको तेल ८०० मि.लि. कराहीमा राखी पकाउनू। तेल मात्र बाँकी हुँदा छानेर राख्नू। यो तेल लगाउनाले चर्मदल, सिध्म, पामा आदि कुष्ठहरू नष्ट हुन्छन्।

तालकेशर रस – शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, ताम्र भस्म, लौह भस्म, शुद्ध गुग्गुलु, चितु, शुद्ध शिलाजीत, शुद्ध कुचिला, हर्रो, बर्रो, अमला, प्रत्येक १-१ ग्राम लिनू। अभ्रक भस्म ४ ग्राम, करञ्जको बियाँ ४ ग्राम लिनू। पहिले पारद र गन्धकलाई खलमा राखी ३-४ घण्टा घोटेर कज्जली तयार गर्नू। फेरि माथि भनिएका भस्मबाहेक औषधीहरूको चूर्ण बनाइ राख्नू। कज्जलीमा पहिले भस्महरू मिसाउनू। पछि चूर्णहरू मिसाएर सुरक्षित गरी राख्नू।

यो औषधी २५०-३५० मि.ग्रा. मात्रामा १ भाग मह र २ भाग घिउ मिसाई खान दिनू। सेवन अवधिमा रातो शाली चामलको भात, दूध र दही पथ्य दिनू। जसका कान, औंला, नाक आदि गलिसकेका छन् त्यस्तो कुष्ठ रोगी पनि यसको सेवनले सुन्दर शरीरवाला भएर आउँछ।

६२. शीतपित्त (उदर्द, कोठ, उत्कोठ) रोग (चाला, डाबर उठ्ने रोग)

छालामा एकाएक चालाहरू उठेर चिलाउने, जिउ सुनिएर आउने रोगलाई शीतपित्त रोग भनिन्छ।

चिसो हावाको सम्पर्कबाट कुपित भएका कफ र वायु कुपित पित्तसँग मिलेर शरीरको भित्र-बाहिर सबैतिर सर्छन् र शीतपित्त रोग उत्पन्न गर्छन्।

पूर्वरूप – यो रोग लाग्दा सुरुमा बढी प्यास लाग्ने, अरुचि हुने, वाकवाकी लाग्ने, शरीर गल्ने र भारी लाग्ने हुन्छ। आँखा राता हुन्छन्।

शीतपित्तको लक्षण – यसमा अरिङ्गालले टोकेजस्तो शोथ छालामा हुन्छ । त्यसमा चिलाउने, सियोले घोचे झैं दुख्ने, ज्वरो आउने र जिउ पोल्ने हुन्छ, वमन पनि हुन्छ । यसलाई उदर्द पनि भनिन्छ । फरक यो छ शीतपित्तमा वायुको प्रकोप बढी हुन्छ ।

उदर्दको विशेष लक्षण – यसमा छालामा रातो वर्णका गोल आकारका चिलाउने चालाहरू देखिन्छन् जुन बीचमा अलि भित्र गडेका हुन्छन् । यो रोग धेरै जसो शिशिर ऋतुमा हुन्छ । यो कफको प्रकोपबाट उत्पन्न हुन्छ ।

कोठ र उत्कोठको लक्षण – यो रोग वमन गराउने औषधी ठीक ढंगले प्रयोग नगर्नाले अथवा वमन हुन लाग्दा रोक्नाले उत्पन्न हुन्छ । यसमा पित्त र कफको प्रकोप कारण हुन्छ । यसमा रातो रङ्का चिलाउने गोल मण्डलहरू (डाबरहरू) धेरै संख्यामा शरीरमा देखिन्छन् । कोठ चाँडै उत्पन्न हुन्छ र निको पनि हुन्छ । उत्कोठ एक पटक हराएपछि अर्को पटक पनि हुनसक्छ ।

सामान्य चिकित्सा – यसमा वमन र विरेचन गराउनुपर्छ । वमनका लागि पर्वरको पात र नीम-पातको काढा खान दिनुपर्छ । विरेचनका लागि त्रिफलाको काढामा पिप्ला र गुग्गुलु मिसाएर सेवन गराउनुपर्छ । तोरीको तेलले मालिस गरेर तातो पानीले नुहाउने गर्नुपर्छ ।

त्रिफलाको चूर्ण महमा मिसाई खानाले अथवा अदुवाको रसमा पुरानो गुड राखेर खानाले अथवा गुडका साथ ज्वानुको सेवन गर्नाले शीतपित्त रोग आराम हुन्छ ।

नवकार्षिक गुग्गुलु पनि उपयोगी हुन्छ ।

गाईको घिउ २५ ग्राममा मरिचको चूर्ण १.५ ग्राम मिसाई नित्य बिहानै खानाले शीतपित्त आराम भएर जान्छ ।

सुठो, मरिच र पिप्ला ५०-५० ग्राम लिएर चूर्ण बनाउनू । उक्त चूर्णको बराबर (१५० ग्राम) मिश्रीको चूर्ण मिसाएर राख्नू । यो प्रतिदिन खाने गर्नू । अथवा १० ग्राम गुडसँग १० ग्राम अमलाको चूर्ण सेवन गर्नू । अथवा सुठो, मरिच, पिप्ला, यवक्षार र ज्वानु समभाग लिएर चूर्ण बनाउनू र ३ ग्राम मात्रामा पानीसँग खाने गर्नू । शीतपित्तमा आराम हुन्छ । (परीक्षित)

ज्वानु र गेरुलाई सिरका वा भिनेगरमा पिनेर लगाउने अथवा घिउमा सिंधे नुन मिसाएर मालिस गर्ने गर्नाले डाबर उठेको हराएर जान्छ ।

हरिद्राखण्ड – हलेदोको चूर्ण ८० ग्राम, घिउ ६० ग्राम, गाईको दूध ४ लिटर, चिनी १.५ किलो सबलाई मिसाएर पकाउनू । पाकीसकेपछि उतारेर त्रिकटु, दालचिनी, तेजपात, सुकमेल, वायुविडंग, निशोथ, त्रिफला, नागकेशर, नागरमोथा यी सबैको १०-१० ग्राम चूर्णका साथ लौह भस्म १० ग्राम पनि मिसाउनू । यो औषधी ६-

१२ ग्राम मात्रामा तातो दूध वा पानीसँग खान दिनू । यसको सेवन गर्नाले शीतपित्त, उदर्द, कोठ, विचर्चिका आदि रोगहरू नष्ट हुन्छन् ।

पथ्यकुराहरू – यस रोगमा तितो रस हुने वस्तुहरूको सेवन, काँचो हलेदो, नीमको पात खानु, तातो पानीले नुहाउनु र तातो कपडाले शरीर छोप्नु पथ्य हुन्छ ।

अपथ्य कुराहरू – वमनको वेग रोक्नु, पूर्व वा दक्षिणको हावाको सेवन गर्नु, दिउसो सुत्नु, घाममा बस्नु, चिल्लो-अमिलो कुरा खानु, गरिष्ठ भोजन गर्नु यी सबै अपथ्य हुन्छन् ।

६३. स्नायुक रोग (नाडी व्रण जस्तै फोका हुने रोग)

दूषित अन्नपानीको सेवनले वायु कुपित भएर खुट्टाहरूमा फोकाहरू उत्पन्न गराउँछ । ती फोकाहरू फुटेपछि भित्र धागो जस्तो पदार्थ बन्छ । औषधीहरूको प्रयोगले यो धागो बाहिर आयो भने आराम भएर आउँछ । यदि भित्रै भाँचिएर गयो भने मानिसलाई त्यस ठाउँबाट लङ्गडो पारिदिन्छ । यो रोग मारवाड तथा मध्य प्रदेशका कैयन स्थानहरूमा बढी पाइन्छ ।

चिकित्सा – यूनानीपद्धति अनुसार स्नायुक रोगमा शरीरलाई मलहरूबाट सफा गरेर राख्नुपर्छ । रोग भएको ठाउँ नजिक जुका लगाउनुपर्छ र तेल पकाएर छिटा दिनुपर्छ ।

जसबाट धागो सहज रूपमा निस्कोस् ।

हिङलाई पिनेर चिसो पानीसँग सेवन गर्नाले यो रोग आराम भएर जान्छ ।

अथवा – मरेको घोडाको बंगारा पानीमा घोटेर लेपन गर्नाले अथवा धतुरोको पातमा घिउ पोतेर तातो पारी बाँधी दिनाले यो रोग आराम भएर जान्छ ।

राल (सालधूप) २० ग्राम, साबुन ४ ग्राम, अफिम १० ग्राम यी सबलाई कुटी पिनी तेलमा पकाएर मलम जस्तो बनाउनू र पानको पातमा लगाएर बिहान-बेलुका लगाउने गर्नू । ५ दिनमा स्नायुक रोग शान्त भएर जान्छ ।

६४. विस्फोटक रोग (शरीरमा फोका उठ्ने रोग)

पिरो, अमिलो बढी भएको र दूषित अन्नसेवन गर्नाले अथवा ऋतुहरूमा वायु-पानी आदि दूषित हुनाले मानिसहरूको शरीरमा वातादि दोषहरू कुपित हुन्छन् र रगत, मासु तथा हाडलाई दूषित बनाई छालामा पुग्छन् । अनि त्यहाँ ज्वरो आउने भएर

भयङ्कर आगोले पोले जस्ता फोका उत्पन्न हुन्छन् । तिनीहरूलाई विस्फोट भनिन्छ । यसमा पहिले ज्वरो आउँछ । पछि सारा शरीर अथवा शरीरको कुनै एक अङ्गमा आगोले पोले जस्ता फोकाहरू उत्पन्न हुन्छन् । ती फोकाहरूमा निकै जलन हुन्छ । ती कहिले छिटै पाक्छन् कहिले ढिलो गरी पाक्छन् ।

कुपित दोषहरूको प्रबलताको आधारमा यस रोगका ८ भेदहरू हुन्छन् – वातज, पित्तज, कफज, वातपित्तज, वातकफज, पित्तकफज, त्रिदोषज र रक्तज ।

वातज विस्फोटको लक्षण – यसमा टाउको दुख्ने, फोकाहरू पनि सियोले घोचे झैं दुख्ने हुन्छ । साथमा ज्वरो आउने, प्यास बढी लाग्ने, जोर्नीहरू दुख्ने हुन्छ । फोकहरू काला हुन्छन् ।

पित्तज विस्फोटको लक्षण – फोकाहरू पहेंला वा रातो वर्णका हुन्छन् । ज्वरो आउने, जिउ पोल्ने, दुख्ने हुन्छ । फोकाहरू पाक्ने र स्राव हुने हुन्छन् । प्यास बढी लाग्छ ।

कफज विस्फोटको लक्षण – यसमा हुने फोकाहरू पाण्डुवर्णका, चिलाउने र स्पर्श गर्दा कडा (साह्रा लाग्ने) हुन्छन् । तिनमा दुखाइ हुन्छन् । ढिलो गरी पाक्ने गर्छन् । साथमा अरुचि तथा वमन हुन्छ । शरीरमा जडताको अनुभव हुन्छ ।

वातपित्तज विस्फोटको लक्षण - यसमा फोकाहरूमा तीव्र वेदना हुन्छ । वातपित्तज विस्फोटमा बढी चिलाउने, भारीपन, चिसो छालाले ढाकेजस्तो भान भइरहन्छ । पित्तकफज विस्फोटमा चिलाउने, पोल्ने ज्वरो आउने र वमन हुने गर्छ ।

सन्निपातज विस्फोटको लक्षण – यसमा हुने फोकाहरू बीचमा गडेका र वरिपरि उठेका एवं साह्रा हुन्छन् । त्यो धेरै जसो पाक्दैन । तै पनि फोकाहरूमा रातोपन, पोल्ने भइरहन्छ । ज्वरो आउने, प्यास बढी लाग्ने, वमन हुने, मूर्च्छा पर्ने हुन्छन् । कुनै बेला बर्बराउने, काम्ने पनि हुन्छ । तन्द्रा हुन्छ । यो असाध्य हुन्छ ।

रक्तज विस्फोटको लक्षण – यसमा फोकाहरू राती गेडी वा मुँगाको रङ्गका हुन्छन् । अरू लक्षण पित्तज विस्फोटसँग मिल्छन् । यी असाध्य हुन्छन् ।

एक दोषक विस्फोट साध्य हुन्छ, द्विदोषज विस्फोट कष्टसाध्य हुन्छ, त्रिदोषज विस्फोट असाध्य हुन्छ ।

विस्फोटको चिकित्सा – यसमा दोषको अवस्थानुसार वमन, विरेचन, लंघन र पथ्य भोजन हितकारी हुन्छन् । जौ, शाली चामलको भात, मूँग, रहर, मुसुरो, सुठो र करेलो यी पथ्य हुन्छन् ।

बृहत् पञ्चमूल, लघु पञ्चमूल, रास्ना, दारुहरिद्रा, खस, धमासा, गुर्जो, धनियाँ, नागरमोथा यी सबैको काढा बनाई सेवन गर्नाले वातज विस्फोट नष्ट हुन्छ ।

दाख, गम्भारी, खजूर, पर्वर, नीम, असुरो, कुटकी, धानको लावा, धमासा (दुरालभा) यिनको काढा बनाई सेलाएपछि मिश्री मिसाएर सेवन गर्दा पित्तज विस्फोट शान्त हुन्छ ।

चिराइतो, बोझो, असुरो, हर्रो, बर्रो, अमला, इन्द्रजौ, नीम, पर्वर यिनको काँडामा मह मिसाएर पिउनाले कफज विष्फोटमा आराम हुन्छ । चिराइतो, नीम, जेठीमधु, नगरमोथा, असुरो, पर्वर, पित्त पापडा, खस, इन्द्रजौ, हर्रो, बर्रो, अमला यी सबको काढा बनाई सेवन गर्नाले सबै किसिमका विस्फोटहरू आराम भएर जान्छन् ।

विस्फोटकान्तक तेल – कमल, जेठीमधु, नागकेशर, वायुविडंग, लोध, हलेदो, दारुहरिद्रा, तगर, कुठ, सुकमेल, तेजपात, निलो तुथो, सालधूप सबै समभाग लिएर कुठेर पिनी लेदो बनाउनू । अब लेदोका साथ त्यसको चौबर घिउ र घिउको चौबर पानी कराहीमा राखी पकाउनू । घिउमात्र बाँकी हुँदा उतारेर छान्नू र सुरक्षित हुने गरी राख्नू ।

यो घृत विस्फोट भएको भागमा लगाउने गर्नाले विस्फोट शान्त हुन्छ ।

६५. क्षुद्र रोगहरू (अवशिष्ट विभिन्न रोग)

व्यङ्ग (कालो पोतो)को लक्षण – अधिक परिश्रम अथवा शोक चिन्ता आदि गर्नाले मुखमा कम उमेर मैं काला, राता वा सेता दागहरू देखिन थाल्छन् । तिनीहरूलाई संस्कृतमा व्यङ्ग वा नीलिका भनिन्छ, नेपालीमा कालो पोतो र हिन्दीमा झाई भनिन्छ ।

यूनानी पद्धतिमा लेखिए अनुसार फियो, कलेजो वा पेटको खराबीबाट अथवा घाम तथा तातो हावामा डुल्दा यो रोग हुन्छ ।

चिकित्सा – रोगको कारण बुझेर उपचार गर्नुपर्छ । साथमा अरू कुनै रोग भए त्यसको उपचार गर्नुपर्छ । घाम आदिबाट बच्नुपर्छ ।

आँककको दूधमा हलेदो पिनेर लगाउनाले नयाँ वा पुरानो पोतो ठीक हुन्छ । (परीक्षित)

२१ दिनसम्म तोरीको तेल २-२ थोपा दुवैतिर नाकमा राख्ने गर्नाले गालामा आएको बिमिरा वा दागहरू हराएर जान्छन् ।

कुङ्कुमादि तेल – केशर, चन्दन, तमालपत्र, खस, कमल, नीलकमल, गोरोचन, हलेदो, दारुहरिद्रा मजिठो, जेठीमधु, अनन्तमूल, लोध, कुठ, गेरु, नागकेशर,

स्वर्णक्षीरी, प्रियंगु, अगर, रातो चन्दन सबै १०-१० ग्राम लिएर पानीसँग पिनी लेदो पार्नू। अनि कालो तिलको तेल १ लिटर, पानी ४ लिटर र उक्त लेदो मिसाएर मन्द आँचको आगोमा पकाउनू। जब पानी जति सुकेर तेलमात्र बाँकी रहन्छ अनि उतारेर छानी लिनू। तेल पकाउँदा तेल डढ्नुहुँदैन। यसको विचार राख्नुपर्छ। यो तेल मुखमा लगाउनाले अनुहारका सबै रोग मेटिएर अनुहार सुन्दर देखिन्छ। (परीक्षित)

मजिठोलाई महसँगै पिनेर मुखमा लगाउनाले पोतो अवश्य ठीक हुन्छ।

बरको अङ्कुर (कोपिला) र मुसुरो दुवैलाई दूधसँग पिनेर मुखमा लगाउनाले पोतो ठीक हुन्छ। मुसुरोको दाललाई दूधमा पिनेर त्यसमा अलिकति कपूर र घिउ मिसाई मुखमा लेप गर्नाले मुख कमल समान सुन्दर भएर आउँछ। (परीक्षित)

भँगेराको विष्ठा सुकाएर पिनी छान्ने गरेर मुखमा मल्नाले मुख सुन्दर हुन्छ।

पहेंलो सर्स्यूं २०० ग्राम लिएर दूधमा राखी पकाउनू। जब दूध सुक्छ अनि सर्स्यूंलाई सुकाउनू। त्यो सुकेको सर्स्यूंबाट अलिकति पिनेर लेदो पारी मुखमा लगाउनाले अनुहार चम्किलो भएर आउँछ।

जौ, चामल, चना, मुसुरो, केराउ समभाग, बेसार आधा भाग लिएर मसिनोसँग पिन्नू। यस चूर्णलाई लेदो पारी मुखमा मल्नू। अनुहार बिलकुल सफा भएर आउँछ।

मुखदूषिका (डण्डीफोर) – यौवन अवस्थामा अनुहारमा जुन सिमलको काँडा जस्ता बिमिराहरू आउँछन् तिनीहरूलाई मुखदूषिका अथवा तारुण्यपीडिका भनिन्छ।

चिकित्सा – यसमा जुलाफ दिएर शीतल औषधीहरूको लेप लगाउनू। राजवृक्षको रुखको बोक्रा, अनारको बोक्रा, लोध, आमाहल्दी, नागरमोथा यी समभाग लिएर मसिनो गरी पिन्नू। यसलाई पानीमा मिसाएर नित्य मुखमा मल्नू र सुकेपछि धुने गर्नू। बयरको बियाँ, जेठीमधु, कुठ, समभाग लिएर पानीसँग पिनेर नित्य मुखमा मल्ने गर्नू।

अथवा – बोझो, लोध, सुठो, पिप्ला, मरिच सबै समभाग लिएर पानीमा पिनी लेप गर्नू। डण्डीफोरलाई निश्चय नै ठीक गर्छ। (परीक्षित)

सिमलको काँडालाई गाईको दूधमा पिनेर लेप गर्नाले डण्डिफोर ३ दिनमा हराएर जान्छ।

मषक (मुसा) र तिलकालक (कोठी)– शरीरमा हुने माषको गेडा जत्रा नदुख्ने कडा खालका काला र माथि उठेका साना डल्लाहरूलाई मषक वा माष (मुसा - मस्सा) भनिन्छ।

छालाभन्दा अलि उठेको कालो वा रातो जुन दाग हुन्छ त्यसलाई जतुमणि (लहसुन) भनिन्छ ।

छालामा हुने तिल जस्ता काला कोठीहरूलाई तिलकालक भनिन्छ ।

चिकित्सा – शरीरमा जति मुसा छन् त्यति नै ओटा मरिच गेडा लिएर शनिवारको दिन निमन्त्रण गर्नू र आइतवारका दिन बिहानीपख तिनलाई कपडामा बाँधेर चौबाटोमा फालिदिनू । मुसाहरू नष्ट हुन्छन् । (परीक्षित)

धनियाँ पिनेर लेप गर्नाले अथवा चुकन्दरको पात महमा मिसाई लेप गर्नाले मुसा नष्ट हुन्छन् ।

सिपीको भस्मलाई सिरकामा मिसाई मुसाहरूमा लेप गर्नाले मुसाहरू नष्ट हुन्छन् ।

मुसालाई जङ्गली गुइठाले कन्याएपछि त्यस ठाउँमा पानमा खाने चुन र सोडा पानीमा घोली ३ दिनसम्म लगाउनू मुसाहरू नष्ट हुन्छन् ।

पलित (असमयमा केश फुल्नु-सेतो हुनु) – शोक, परिश्रम, बढी क्रोध गर्नाले तीनै दोषहरू कुपित भएर केशलाई चाँडै नै सेतो बनाइदिन्छन् । त्यसरी असमय अर्थात् कम उमेरमा केश फुल्ने रोगलाई पलित भनिन्छ ।

चिकित्सा – भृङ्गराज, सेतो तिल, चितुको जरा सबलाई महीमा मिसाई खानाले पलित रोग नाश हुन्छ ।

अमला २० ग्राम, हर्रो २० ग्राम, बर्रो २० ग्राम, फलामको धुलो १० ग्राम, आँपको गिट्टा ५० ग्राम, सबलाई मसिनो गरी पिनेर राती फलामको भाँडोमा राख्नू । भोलिपल्ट बिहान कपालमा त्यसको लेप गर्नू । यसले असमयमा फुलेको केश कालो हुन्छ । पलित रोगलाई तत्काल आराम गर्छ ।

अमला र फलामको चूर्ण दुवैलाई पानी राखी मिसाएर लेप गर्नाले पलित रोग नाश हुन्छ ।

त्रिफला, नीलको पात, भृङ्गराज र फलामको चूर्ण सबै समभाग लिएर भेडाको मूत्रमा पिनी लेप गर्नू । केश कालो हुन्छ ।

नीमको बियाँलाई भृङ्गराजको रस र विजयसारको रसको भावना दिनू । त्यसपछि बियाँलाई कोलमा पेली तेल निकाल्नू । उक्त तेल नाकमा दिनदिनै २-२ थोपा राख्ने गर्नू । दूध-भात मात्र नित्य खानू । केश जरैदेखि काला हुन्छन् ।

मधुकाद्य तेल – जेठीमधुको चूर्ण पिनेर बनाएको लेदो ४० ग्राम, गाईको दूध १ लिटर २८० मि.लि., भृङ्गराजको रस १ लिटर २८० मि.लि. र तिलको तेल १६० मि.लि. यी सबैलाई कराहीमा राखी पकाउनू । तेलमात्र बाँकी

हुँदा उतारेर छानी राख्नू । यो मधुकाद्य तेल तयार हुन्छ । यसको नस लिनाले पलित रोग नष्ट हुन्छ ।

इन्द्रलुप्त (केश झर्ने रोग) – रोमकूपहरूमा आश्रित हुने (भ्राजक) पित्त कुपित भएर कुपित वायुका साथ मिलेर रौंहरू झार्छ । त्यसपछि कुपित भएको कफले पित्तका साथ मिलेर रोमकूपहरूलाई ढाकिदिन्छ र अरू रौंहरू पलाउन दिँदैन । त्यसो हुँदा केशहरू लगातार झर्ने र त्यस ठाउँमा अरू केश पलाउन छोड्ने हुँदा मानिसको टाउको खुइलिन्छ । त्यसरी टाउको खुइलिने रोगलाई इन्द्रलुप्त वा खालित्य भनिन्छ ।

चिकित्सा – मन:शिला, कासीस, निलो तुथो, मरिच समभाग लिएर पानीसँग पिनी रौंहरू झरेको ठाउँमा लेप गर्नू ।

अथवा – कुटकीलाई पर्वरको पातको रसमा पिनेर ३ दिन लगाएमा पुरानो रौं झर्ने रोग पनि ठीक हुन्छ ।

अथवा – हात्तीको दाँत डढाएर बनाएको मसीमा बाखाको दूध र रसाञ्जन मिसाएर लेप गर्नाले हत्केलामा समेत रौंहरू आउँछन् ।

गन्धकलाई पानीमा पिनेर मह मिसाई लगाएमा गञ्ज (केश खुइलिने रोग) ठीक हुन्छ ।

अमलालाई चुकन्दरको रसमा पिनेर टाउकोमा लगाउनाले ५-६ दिनमा रौं उम्रन्छ ।

केश लामो पार्ने उपाय – नीम र बयरको पातलाई पिनेर टाउकोमा लगाउनू र २ घण्टापछि धुने गर्नू । ३१ दिनमा केश खूब लामा लामा भएर आउँछन् ।

मुंग्रेलो (कलौंजी) पानीमा पिनेर कपालमा लगाउनाले ७ दिनमा केश लामा हुन्छन् । अमलालाई कागतीको रससित पिनेर केशका जराहरूमा लगाउनाले केश काला हुन्छन् । नुहाउँदा कालो तिलको पातलाई कुठेर केशमा लगाउनाले कपाल लामा हुन्छन् ।

अरुंषिका (कपालमा हुने खटिरा) – कफ, रगत र कृमिहरूको प्रकोप हुँदा टाउकोमा अनेक मुख भएका, बढी स्राव भइरहने खटिराहरू हुन्छन् । तिनलाई अरुंषिका भनिन्छ ।

चिकित्सा – टाउकोमा जुका लगाई दूषित रगत निकालिदिनू ।

पर्वर, नीम, असुरो यी सबका पात पिनेर लेप लगाउनू । अथवा – माटाको भाँडामा कुठलाई भुटेर पिन्नू र त्यसलाई तेलमा मिसाई लेप गर्नू । यसबाट खटिरामा पोल्ने, चिलाउने, दुख्ने हराउँछ ।

हरिद्राद्य तेल – दारुहरिद्रा, हलेदो, चिराइतो, त्रिफला, नीम र रातो चन्दन समभाग लिएर पिनी लेदो पार्नू। उक्त लेदोका साथ त्यसको चार गुणा तिलको तेल तथा त्यस तेलको चार गुणा पानी राखी तेल पकाउनू। जब तेल मात्र बाँकी रहन्छ अनि उतारेर छान्नू। यो तेल लगाउनाले अरुंषिका र अन्य घाउ खटिराहरू आराम हुन्छन्। (अनेक पल्ट परीक्षित)

वृषणकच्छू (अण्डकोष वरिपरिको काछ) – धुने-पखालने नगर्नाले अण्डकोषमा मयल जमेपछि त्यहाँ चिलाउन थाल्छ। त्यसलाई कन्याउँदा फोका उत्पन्न भएर पानी बग्न, दुख्न थाल्छ। त्यस्तो रोगलाई वृषणकच्छू भनिन्छ। यो रोग कुपित कफ र दूषित रगतका कारण हुन्छ।

राल, कुठ, सिंधे नुन, सेतो सर्स्यू सबलाई पानीसँग पिनेर लेदो बनाई अण्डकोष वरिपरि लगाउनू। यसले अण्डकोषको चिलाउने रोग तुरुन्त आराम हुन्छ।

कक्षा (कखौरी) – काखीमा उत्पन्न हुने र बढी दुख्ने खटिरालाई कक्षा भनिन्छ। यो पित्तको प्रकोपबाट उत्पन्न हुन्छ।

चिकित्सा– देवदारु, मनःशिला, कुठ तीन ओटैलाई पिनेर स्वेदन गरी लेप गर्नाले काखीमा भएको खटिरा नष्ट हुन्छ।

चकचुनीको पात र अडेरको पात समभाग लिएर पिनी नुनसमेत मिसाई तताएर लेप गर्नू र बाँधिदिनू। रोग निको हुन्छ।

दारुणक रोग (चायाँ)– वायु र कफको प्रकोपले केशको जरा सुख्खा र कडा हुन्छ अनि चिलाउँछ। त्यस ठाउँबाट भुस जस्तो चायाँ निस्कन थाल्छ। त्यसलाई दारुणक रोग भनिन्छ।

चिकित्सा – कागतीको रसमा चिनी मिसाई कपालमा लगाउनू र ५-६ घण्टापछि टाउको धुनू। चायाँ नष्ट हुन्छ। पोस्तदानालाई (अफिमको बियाँ) दूधमा पिनेर लेप गर्नाले दारुणक रोग ठीक हुन्छ।

आँपको गिट्ठा र हर्रो दुवै समभाग लिएर दूधसँग पिनी टाउकोमा लगाउनाले दारुण रोग निको हुन्छ।

गुञ्जाद्य तेल – राती गेडीलाई पिनेर लेदो पार्नू। लेदोभन्दा चौगुना तिलको तेल र तेलको चौगुना भृङ्गराजको रस र उक्त लेदो मिसाएर आगोमा पकाउनू। तेलमात्र बाँकी हुँदा उतारेर छानी सुरक्षित गरी राख्नू। यो तेल लगाउनाले दारुण रोग नष्ट हुन्छ।

राम्रो साबुनले कपाल धोएर तेल लगाए पनि चायाँ हराउँछ।

तृतीय खण्ड

१. मुखरोग (मुखको रोग)

मुखभित्र पर्ने ओठ, गिजा, दाँत, तालु, जिभ्रो र घाँटीमा हुने विभिन्न किसिमका रोगहरूलाई आयुर्वेदमा मुखरोग मानिएको छ ।

मुखरोगहरूको सामान्य कारण

सिमसार भू-भागमा हुने जीवजन्तुहरूको मासु, दूध, दही, माछा बढी खाने गर्नाले कफसहित अरू दोषहरू कुपित भएर मुखरोगहरू उत्पन्न हुन्छन् । आधुनिक समयमा सुर्ती, खैनी आदिको सेवन पनि मुखरोगको कारण हुन्छ ।

ओठ सम्बन्धी घाउको चिकित्सा

ओठमा घाउ छ भने धनियाँ, राल, गेरु, मैन यी समभाग मिसाएर घाउमा लेपन गराउनू । अथवा गेरु, धनियाँ, तेल, घिउ, सिंधे नुन र मैन समभाग मिसाएर लेप गराउनू ओठको घाउ आराम भएर जान्छ । अथवा उक्त औषधीहरूका साथ तेल वा घिउ पकाएर लगाए पनि लाभ हुन्छ ।

१०० पल्ट धोइएको घिउ लगाउनाले पनि ओठको घाउलाई आराम गर्दछ । यदि यस घिउमा कपूर पनि मिसाइयो भने तत्काल मैं खूबै फाइदा गर्छ । (परीक्षित)

दाँतसम्बन्धी रोगका कारणहरू

नित्य दाँत सफा नगर्नु, दाँत कोट्याउनु, भोजन पश्चात् दाँत सफा नगर्नु, अति तातो भोजन गर्नु, तातो कुरा खाएको लगत्तै अत्यन्त चिसो पानी पिउनु, अमिलो तथा गुलियो कुरा बढी खानु, दिनभरी पान चपाउनु, बारम्बार तमाखु, सुर्ती, खैनी खानु, दाँतको रोग लागेका आमाबाबुबाट जन्म हुनु यी दाँत चाँडै नै रोगी हुने कारण हुन् ।

सामान्य चिकित्सा

मह, पिप्लाको चूर्ण र घिउ मिसाई मुखमा राख्नाले दाँत हल्लिदै जाने कम हुन्छ ।

मह र तोरीको तेलले गलगल गर्नाले गिजाका सबै रोगहरू नष्ट हुन्छन् ।

खयरसार, लोध, मजिठो, कुठ, कुटकी यी सबै समभाग लिएर चूर्ण बनाउनू । यो चूर्णलाई मञ्जन जस्तै दाँतमा मल्नाले दाँतको मयल, दुखाई, गिजा फुलेको आदि रोग नष्ट हुन्छन् । दाँतबाट रगत बग्नेलाई यो रामबाण नै हुन्छ । (परीक्षित)

दाँत दुखेको बेलामा तातो पानीले कुल्ला गर्नुपर्छ । त्यसो गर्दा आराम भएमा सर्दीबाट दुखेको सम्झनुपर्छ । तातो पानी प्रयोग गर्दा दुखाई बढ्छ भने त्यसलाई गर्मीबाट दुखेको बुझ्नुपर्छ र चिसो पानीले कुल्ला गर्नुपर्छ ।

दाँत दुखेको बेलामा बेसार दाँतमा मलनाले आराम हुन्छ ।

अदुवाको पातलो बोक्रामा नुन छरी दुखेको दाँतमा च्यापी राख्नाले सर्दीबाट दुखेको आराम हुन्छ ।

यदि दाँत किराले खाइसकेको छ भने खाल्टोमा कपूर भरिदिनू । यसबाट किरा मरेर जान्छ । (खूब परीक्षित)

अकरकरा १ भाग, नौसादर ५ भाग, अफिम ५ भाग यी सबैलाई पिसेर किराले खाएको दाँतको छिद्रमा राख्नू । यसले किरा मरेर दाँत दुखेको आराम हुनेछ ।

अकरकरा र कपूर समभाग लिएर चूर्ण बनाएर मिसाइदिनू । यो चूर्ण दाँतमा मल्न लगाउनू । जबसम्म आराम हुँदैन, तबसम्म घण्टा-घण्टामा वा २-२ घण्टामा मल्ने भन्नू । मलेपछि मुख घोप्टो पारेर बस्नू जसबाट पानी निस्केर जाओस् । यो योग दाँतको सबै किसिमको दुखाइका लागि हजारौं पटक परीक्षित हो ।

पाँचै ओटा नुन, भुटेको निलो तुथो, सुठो, मरिच, पिप्ला, पिप्लाको जरा, हीराकासीस, माजूफल, बायुविडङ्ग सबै समभाग लिएर पिनी छान्नू र चूर्ण तयार गर्नू । यस मञ्जनको प्रयोगले सबै किसिमको दाँतको दुखाई हराउँछ । (परीक्षित)

बालकहरूको दाँत दुखाइमा

शिरीषका बियाँहरू सियोद्वारा धागोमा उनेर माला बनाउनू र गलामा टम्म पहिराइदिनू । यसले दाँत सजिलोसँग आउँछ । कपूरको माला वा सिपीको मालाले पनि यही काम गर्छ ।

चमेलीको सुकेको पात, पुनर्नवा, तिल, पिप्ला, भाँटीपत्रको पात, नागरमोथा, बोझो, सुठो, ज्वानु, हर्रो, सबै समभाग लिई चूर्ण बनाउनू । यसलाई घिउमा मिसाएर मुखमा राख्ने गर्नाले दाँतको दुखाइ र दुर्गन्ध नाश हुन्छ ।

हुक्कामा प्रयोग भैसकेको तमाखु, सुपारी, खयर, निलो तुथोको भस्म, मरिच, ठूलो हर्रो सबै समभाग लिएर चूर्ण बनाउनू । यो चूर्ण मञ्जनको रूपमा नित्य लगाउनाले दाँतका सबै रोगहरू नष्ट हुन्छन् । (परीक्षित)

अपूर्व दन्तमञ्जन

शुद्ध भलायो १०० ग्राम, साँभर नुन १० ग्राम दुवैलाई एउटा माटाको पालामा राखेर माथिबाट अर्को पालाले छोप्नू र दुवैको सन्धिमा मुलतानी माटोले लिप्नू र ४-

५ पटक कपडमिट्टी गर्नू । त्यसपछि उक्त सम्पुटलाई ५ किलो जंगली गुइँठाहरूको बीचमा राखी आगो बाल्नू । जब सबै गुइठा डढिसकेर आगो आफैं सेलाउँछ अनि सम्पुटलाई तोडेर भित्रको भलायो झिक्नू । त्यो भलायोमा लागेको नुन खुर्केर फालीदिनू र भलायोको मसिनो चूर्ण पारी त्यही चूर्णले नित्य दाँत मल्ने गर्नू । हल्लिएको दाँत छ भने मञ्जनपछि बयरको जराको बोक्राको काँढाले कुल्ला गर्नू । यो मञ्जन प्रयोग गर्नाले दाँत हल्लिएको, दाँतबाट रगत आएको, आदि दाँतका धेरै रोगहरू नष्ट हुन्छन् । (खूब परीक्षित)

अरू उपयोगी मञ्जनहरू

सुठो, हर्रो, नागरमोथा, खयर, कपूर, सुपारीको खरानी, मरिच, ल्वाँग, दालचिनी सबै १०-१० ग्राम र सेतो खरीको धुलो ९० ग्राम लिएर कुटी छानी चूर्ण बनाएर राख्नू । यो चूर्ण लिई मञ्जन गर्नाले दाँतका अनेक, रोग नष्ट हुन्छन् । (परीक्षित)

सुपारी, माजूफल, शुद्ध फिटकिरी, सेतो खयर, अलैंचीको बियाँ, शीतलचिनी, अकरकरा, कपूर, मरिच प्रत्येक १०-१० ग्राम र खरी माटो ५० ग्राम तयार गरीराख्नू । सबैलाई कुटी छानी चूर्ण बनाउनू । अनि मरिच र कपूरलाई मिसाउनू । त्यसमा अकरकरा, शीतलचिनी र अलैंचीको बियाँको चूर्ण मिसाउनू । त्यसपछि अरू बाँकी चूर्णहरू मिसाएर राख्नू । जसको दाँत हल्लिएको छ उसले रातमा यस चूर्णले दाँत माझी त्यसपछि तोरीको तेल दल्नू । दाँत ढुंगा समान जम्छ । दाँतका अनेकौं रोगका लागि यो उपयोगी दन्तमञ्जन हो । (परीक्षित)

जिभ्रो सम्बन्धी रोगहरू

जिभ्रोमा घाउ हुनु, जिभ्रो फुट्नु, स्वाद थाहा नहुनु, दुख्ने-पोल्ने हुनु यी जिभ्रोसम्बन्धी रोगका सामान्य लक्षण हुन् ।

चिकित्सा

जिभ्रो सम्बन्धी रोगमा पहिले रगत निकाल्नुपर्छ । त्यसपछि गुर्जो, पिप्ला र नीमको काँढा पकाई कुल्ला गर्नुपर्छ । यो उपाय जिभ्रोसम्बन्धी रोगहरूमा परीक्षित छ ।

वायुविडङ्ग, पिप्ला र रसाञ्जनको काँढा पकाई कुल्ला गर्ने अथवा तिनीहरूको चूर्ण जिभ्रोमा छर्की ज्याल काढ्ने गर्नाले जिभ्रोका रोगहरू नष्ट हुन्छन् । (परीक्षित)

ठुलो कागतीको केशरमा अलिकति सिउँडीको दूध मिसाई चपाउनाले जिभ्रोको जडता (स्वाद नपाउने) हराउँछ ।

हरियो धनियाँ वा पुदिनाको पात र मिश्री चपाउने र आएको ज्याल थुक्ने गर्नाले जिभ्रोमा आएको खटिरा हराउँछ । सूर्योदयभन्दा पहिले पाकेको केरा गाईको दहीसँग खानाले जिभ्रोको बिमिरा मेटिएर जान्छ । (परीक्षित)

मुसुरोलाई डढाएर त्यसको बराबर सेतो खयर मिसाई धुलो पार्नू । उक्त धुलो जिभ्रोमा छर्नाले मुख पाकेको आराम हुन्छ ।

जिभ्रोमा पोलेको अवस्थामा दहीलाई पानीमा घोलेर कुल्ला गर्नू र सेतो खयरको चूर्ण बनाई जिभ्रोमा लगाउनू ।

यी दुवै उपायहरू गर्नाले जिभ्रो पोल्ने बन्द हुन्छ ।

सेतो खयर र कलमी शोरा समान भाग लिएर चूर्ण बनाउनू र जिभ्रोमा छर्नू । जिभ्रोमा आएको खटिरा हराउँछ ।

मिश्री पिनेर त्यसमा केही कपूर मिसाउनू । त्यसलाई जिभ्रोमा छर्नू । जिभ्रोका खटिराहरू आराम भएर जान्छन् ।

तालुसम्बन्धी रोगहरूको चिकित्सा

कुठ, मरिच, बोझो, सिंधे नुन, पाठा, केवटी, मोथे यी सबै समभाग लिएर कुटी छानी चूर्ण बनाउनू । यो चूर्ण महमा मिसाई तालुमा कपासले लगाईदिएमा गलशुण्डी (टन्सिल निस्केको)मा लाभ हुन्छ ।

निर्गुण्डीको जरा चपाउने अथवा नीमको काँढाले कुल्ला गर्ने, गर्नाले पनि गलशुण्डीमा आराम हुन्छ ।

२. कण्ठरोग (घाँटीका रोग)

घाँटीका रोगहरूको चिकित्सा

मालकागुनु (ज्योतिष्मती), देवदारु, हलेदो, पाठा, रसाञ्जन, यवक्षार, पिप्ला यी सबै समभाग लिएर चूर्ण बनाउनू र महसँग पिनी गोलीहरू पार्नू । यी गोलीहरू मुखमा राखी चुस्ने गर्नाले सबै किसिमका कण्ठरोगहरू आराम भएर जान्छन् । (परीक्षित)

हर्रोको काँढामा मह मिसाई पिउनाले घाँटीका रोग शान्त हुन्छन् । अथवा - कुटकी, अतीस, देवदारु, पाठा, मोथे, इन्द्रजौ यिनको काँढामा गोमूत्र मिसाई सेवन गर्नाले घाँटीका समस्त रोगहरू आराम हुन्छन् । (परीक्षित)

लामो तोरियाँको बियाँ चिलिममा राखी तमाखु खाएजस्तै त्यसको धुवाँ पिउने गर्नाले ज्याल झरेर गला खुल्छ र गला सुनिएको आराम हुन्छ ।

कालक चूर्ण

घरको ध्वाँसो, यवक्षार, पाठा, त्रिकटु, रसाञ्जन, चाबो, त्रिफला, लौह भस्म र चितु यी सबैको चूर्ण बनाई मिसाइराख्नू। यो चूर्ण महमा मिसाई मुखमा लिइराख्नू। यसबाट सबै किसिमका घाँटी, दाँत र मुखका रोगहरू नष्ट हुन्छन्।

चमेलीको पात, दाख, गुर्जो, जवासा, दारुहरिद्रा, त्रिफला यिनको काँढामा मह मिसाई कुल्ला गर्नाले मुखपाक आदि मुखका रोगहरू शान्त हुन्छन्। (खूब परीक्षित)

कालो जिरा, कुठ, इन्द्रजौ यिनको चूर्ण मुखमा राख्नाले अथवा चमेलीको पात सधैं चपाउने गर्नाले मुखपाक आदि मुखका रोग नष्ट हुन्छन्।

जामुन, आँप, चमेली, हर्रो, अमला, नीम र पर्वरको पात यिनको काँढाले कुल्ला गर्नाले मुखपाक, दुर्गन्ध आदि समस्त मुखका रोगहरू हराउँछन्। (परीक्षित)

शीतलचिनी र मिश्री मुखमा राखी चुस्नाले मुखपाक आदि आराम हुन्छन्।

जिब्रोमा सेतो जमेको छ वा च्याल बढी आउँछ भने नित्य बिहान उठ्ने बित्तिकै कचूरको ताजा हरियो कन्द चपाएर थुकेपछि मुख धुनू। यसबाट च्याल आउनु आदि आराम भएर जान्छन्। (परीक्षित)

सेतो गुञ्जा (रत्ती) को पात वा जरा चपाउनाले मुखमा हुने खटिरा आराम हुन्छन्।

पथ्य कुराहरू

वमन, विरेचन, कुल्ला गर्नु, रगत निकाल्नु, स्वेदन गर्नु, नस्य दिनु, धुम्रपान, जौ, मुँग, गहत, करेलो, पर्वर, सानो मूला, कपूर, तातो पानी, घिउ आदि र कफनाशक पदार्थ मुखरोगमा लाभदायक हुन्छन्।

३. कर्णरोग (कानका रोग)

कानभित्र वा बाहिर हुने र कान दुख्ने, पाक्ने, पानी बग्ने अथवा शब्द नसुन्ने आदि लक्षण भएका रोगहरूलाई कर्णरोग भनिन्छ।

कर्णरोगहरूको सामान्य चिकित्सा

दाँतको दुखाइ ठीक पार्न कानमा कहिले पनि कुनै औषधी राख्नुहुँदैन। कानबाट पिप आदि बग्छ भने कपास राखेर रोक्नु हुँदैन, कपासले पुछेर निकाल्नुपर्छ। कान धुनुपरेमा जहिलेपनि तातो पानीको प्रयोग गर्नुपर्छ।

बालकको कानमा कहिले पनि थप्पड नहिर्काउनू। यसबाट कानको पर्दा तत्काल खराब हुन्छ।

यदि बहिरोपना छ भने मस्तकनेरको कपाल नकाट्नू। खुट्टा धेरैबेरसम्म चिसो नराख्नु पिठ्यूँमा हावा लाग्ने गरी नाङ्गो नराख्नू। यी कामहरूबाट श्रवणशक्ति कम हुन्छ।

कानको दुखाइमा – अदुवाको रस ६ मि.लि., मह ६ ग्राम, सिंधे नुन १२५ मिलीग्राम तिलको तेल ३ मि.लि. सबलाई मिसाएर कानमा भर्नाले कान बेसरी दुख्ने, कानभित्र कराउने, बहिरोपना आदि रोगमा आराम हुन्छ। अपामार्गको तेल पनि कानका रोगहरूमा लाभकारी हुन्छ। पपडिया (सेतो) खयरमा अलिकति तातो पानी मिसाएर कानमा राख्नाले कानको भयङ्कर दुखाइ पनि शान्त हुन्छ। भाँगलाई पिनेर तोरीको तेलमा डढाउनू र त्यो तेल छानेर कानमा राख्नू। यसबाट सर्दी र गर्मी हरेक किसिमको कानको दुखाइ ठीक भएर जान्छ।

बाखाको दूधमा सिंधे नुन मिसाई तातो पारी कानमा हाल्नाले कानको शूल तत्काल आराम हुन्छ। कान बज्ने र पिप आदि बग्न पनि छोड्छ।

कान चिलाएमा – तोरीको तेल र सिर्का (भिनेगर) मिसाई पकाएर छान्नू। त्यो तेल कानमा २-३ थोपा राख्नू। अथवा चमेलीको तेलमा अलिकति मुसब्बर खल गरी आगोमा तताएर कानमा टप्काउनू। कान चिलाएको आराम हुन्छ।

कानमा कीरा पसेमा

सिमालीको पातको रस अथवा प्याजको रस कानमा राख्नाले कानका कीरा मर्छन्। अथवा लाङ्गली (कलिहारी), हुलहुल (सुवर्चला) र त्रिकटु सबै समभाग लिई पिनेर कपडछान गरी कानमा हाल्नाले कानमा पसेको जुका, कीरा, कमिला, खजुरो आदि कीराहरू खस्छन्।

कानको घाउमा

नीमको तेलमा मह मिसाएर त्यसमा कपडाको बत्ती भिजाएर कानमा राख्नू। कानको घाउ आराम हुन्छ।

बहिरोपनमा

कम सुन्ने रोग नयाँ छ भने पहिले जुलाफ दिएर पछि मात्र औषधी दिनुपर्छ। पुरानो भएको रोग निको हुँदैन।

आँकको प्वाल नपरेको पातलाई आगोमा ततार्एर रस निकाली कानमा हाल्नाले १५ दिनमैं कम सुनिने ठीक भएर जान्छ ।

हरियो इन्द्रवारुणीको फललाई तिलको तेलमा पकाएर छानी सिसीमा राख्नू । यो तेल २-३ थोपा कानमा राख्नाले बहिरोपना हराउँछ ।

कानको बहिरोपनको लागि बिल्व तेल र अपामार्ग क्षार तेल उत्तम हुन्छ ।

विशिष्ट योगहरू

बिल्व तेल

बेलको गुदी गोमूत्रसँग पिन्नू र लेदोभन्दा चौबर तिलको तेल र तेलभन्दा चौबर बाख्राको मूत्र र त्यत्ति नै पानी र लेदो मिसाई तेल पकाउनू । यही बिल्व तेल हो । यसलाई कानमा हाल्नाले कानका सबै समस्याहरूका लागि विशेष हितकारी हुन्छ ।

गन्धकाद्य तेल

गन्धक, मनःशिला, हलेदो तीनै थरी ४०-४० ग्राम लिएर पिनी लेदो पार्नू । अनि ३२० मि.लि. तोरीको तेल, ३२० मि.लि. धतुरोको रस र उक्त लेदो सबैलाई आगोमा पकाउनू । तेलमात्र बाँकी रहँदा उतारेर छान्नू । यो तेलले कानको धेरै पुरानो समयदेखि पिपको स्रावलाई रोक्छ ।

शतावरी तेल

शतावरी, अश्वगन्धा, क्षीरकाकोली र अडेरको बियाँ समभाग लिएर पानीसँग पिनी लेदो पार्नू । उक्त लेदो १०० ग्राम, तिलको तेल ४०० मि.लि, पानी १ लि. ६०० मि.लि. राखी तेल पकाउनू । तेलमात्र बाँकी भएपछि छानेर राख्नू । यस तेलको मालिसले कानको जाली पुष्ट हुन्छ ।

भैरव रस

शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, शुद्ध वत्सनाभ विष, शुद्ध टङ्कण (स्वाग), कौडी भस्म, मरिचको चूर्ण सबै समभाग ठीक पार्नू ।

पहिले पारद र गन्धकलाई खल गर्नू । फेरि त्यस कज्जलीमा बाँकी औषधीहरू मिसाएर अदुवाको रस राख्दै खूबै घोट्नू र २५० मिलीग्रामका गोलीहरू पार्नू । यो १-१ गोली अदुवाको रससँग सेवन गर्नाले कर्णशूल, कर्णनाद(कान बज्ने), बहिरोपन र मन्दाग्निको रोग पनि नष्ट हुन्छन् ।

पथ्य कुराहरू - कानको रोग लागेको अवस्थामा पसिना निकाल्नु, जुलाफ दिनु, वमन, नस्य यी हितकारी हुन्छन् । गहुँ, शाली चामल, जौ, पुरानो घिउ करेला यी पथ्य हुन्छन् ।

अपथ्य कुराहरू - धेरै बोल्नु, दतिउन चपाउनु, कफकारक, गरिष्ठ कुराहरू खानु यी अपथ्य हुन्छन् ।

४. नासारोग (नाकका रोग)

नाकबाट सिंगान बग्नु, तातो बाफ वा पिप निस्कनु, नाक बन्द हुनु, पिनास हुनु, छ्यूँ आइरहनू यी नासारोगका सामान्य लक्षण हुन् ।

चिकित्सा - यदि पिनास चल्ने बित्तिकै रोगीले गुड (सख्खर), मरिच, दहीको सेवन सुरु गऱ्यो भने रोग तुरुन्त नष्ट हुन्छ ।

हरियो धनियाँ र सेतो चन्दन पिनेर सुँघ्नाले छ्यूँ आइरहने रोग नष्ट हुन्छ ।

यदि पिनास बिग्रेर नाकमा कीरा परेका छन् भने बाँसको कोमल अङ्कुरको रस ५० मि.लि., तारपीनको तेल १० मि.लि. दुवै मिसाएर नाकमा २-२ थोपा नस राख्नू । नाकमा भएका किरा झर्छन् ।

नाकको रोगमा सालको रुख, अर्जुनको रुख, डुम्रीको रुख, कुटजको रुख यी सबैको बोक्रा पकाएर बनाएको काँढाले नाक धुनू । यी चारै ओटा समभाग लिएर लेदो बनाउनू । तिनकै काँढा पनि पकाउनू । अब लेदोभन्दा चौबर घिउ र घिउभन्दा चौबर काँढा कराहीमा राखी पकाउनू । यो घिउ लगाउनाले नासपाक अर्थात् नाक पाक्ने रोग चाँडै आराम हुन्छ । (परीक्षित)

व्योषादि चूर्ण, वटी

सुठो, मरिच, पिप्ला, चितु तालीसपत्र, अमिली, अम्लवेत, चाबो, सेतो जिरा यी प्रत्येक १२-१२ ग्राम र सुकमेल, तेजपात र दालचिनी प्रत्येक ३-३ ग्राम लिनू । सबैलाई कुटी कपडछान गरी मिसाउनू । अब गुड २०० ग्राममा पानी राखी बाक्लो चासनी बनाउनू र उक्त चूर्ण मिसाई घोट्नू र ५०० मिलीग्रामका गोली बनाएर छायामा सुकाई सिसीमा राख्नू यो १ गोली दिनमा ४-५ पटक तातो पानीसँग खानू अथवा १ गोली मुखमा लिएर चुस्ने गर्नू । यसबाट रुघा, खोकी, पिनास नष्ट हुन्छ, रुचि बढ्छ, बोली सफा हुन्छ ।

नाकको रोगमा बन्द कोठामा बस्नु, नस्य लिनु, पसिना निकाल्नु, पुरानो जौ, शाली चामल, मुँग, गहतको रस, लशुन, हल्का भोजन यी पथ्य हुन्छन् ।

५. नेत्ररोग (आँखासंबन्धी रोगहरू)

आँखामा परेला, ढकनी (पलक), सेतो भाग, कालो भाग र सबको बीचमा सानो पारदर्शक नानी यी भागहरू हुन्छन् । यी सबै भागहरू मध्ये कुनै एक वा धेरै भागमा दुख्ने, पोल्ने, पिडका उत्पन्न हुने, मासु पलाउने भएमा अथवा आँसु बढी आउने, आँखा राता हुने, चिप्रा बढी लाग्ने, धमिलो देखिने, राती नदेख्ने भएमा त्यसलाई आँखाको रोग भनिन्छ । त्यस्तै जलविन्दु, मोती बिन्दु, अन्धोपन आदि अरू लक्षण पनि हुनसक्छन् ।

नेत्र रोगहरूको सामान्य चिकित्सा

आँखा सम्बन्धी रोगको उपचार गर्दा पहिले रोग साम वा निराम कुन अवस्थामा छ भन्ने विचार गर्नुपर्छ । साम अर्थात् आमसहित अवस्थामा आँखा बढी दुख्ने, रातो देखिने, त्यसमा सियोले घोचे जस्तो हुने वा शूल हुने हुन्छ । आँशु बग्छ । यस अवस्थामा पहिले लङ्घन गर्नुपर्छ । अञ्जन, घृतपान, काँढाको सेवन, भारी भोजन र स्नान गर्नुहुँदैन ।

निराम अवस्थामा आँखा दुख्न कम हुँदै जान्छ, अलि अलि चिलाउँछ, सुनिएको बस्दै जान्छ, आँसु कम हुँदै जान्छ, आँखाको रङ्ग सफा हुँदै जान्छ । यस अवस्थामा अञ्जन आदिको प्रयोग गर्नुपर्छ ।

खुट्टामा पुग्ने दुई नसाहरूको सम्बन्ध शिरसँग हुन्छ । यसै भएर गोडामा सिञ्चन, लेप मालिस गर्दा प्रयोग गरिएका तेल, घिउ आदि त्यस नसाको मार्गबाट शिरमा पुग्छन् । यसकारण आँखा स्वस्थ राख्न चाहने मानिसले गोडाहरू सधैं धोएर सफा राख्नुपर्छ । गोडामा मालिस पनि गर्नुपर्छ ।

आँखासम्बन्धी रोगहरूको उपचार गर्दा यी विधिहरूको प्रयोग हुन्छ ।

(१) आश्च्योतन (आँखामा औषधीको थोपा राख्ने)
(२) पिण्डी (आँखामा औषधीको कल्क (लेदो) डल्लोको रूपमा राख्ने)
(३) बिडालक (औषधीको कल्क आँखाबाहिर लेप गर्ने)

(४) तर्पण (आँखाभित्र पुग्ने गरी औषधीयुक्त घिउ आदि भर्ने)

(५) पुटपाक (औषधीको लेदो पकाएर निकालेको रसले आँखामा भर्ने)

(६) अञ्जन (आँखामा गाजल जस्तै औषधी लगाउने)

(७) सेक-परिषेक (आँखामा पानी वा औषधीको काँढा आदिको धारा दिनु, अथवा आँखा धुनु)

रोग अनुसार विभिन्न औषधीहरू

अडेरको पात, जरा, बोक्रा समभाग लिएर पिनी लेदो पार्नू ।

उक्त लेदो बाख्राको दूधमा पकाउनू र छानेर मनतातो भएपछि दिउसो पातलो धार पर्ने गरी आँखामा हाल्नू । वायुको प्रकोपबाट आँखा दुखेकोमा आराम हुन्छ । (परीक्षित)

भोजनपछि दुवै हातका हत्केला आपसमा रगडेर आँखामा फिराउनाले तिमिर रोग (धमिलो देख्ने) आराम हुन्छ ।

कालो तिललाई पिनेर कपालमा दल्ने र त्यसपछि स्नान गर्ने गरेमा आँखा स्वस्थ भएर आउँछन् र वायुको पीडा शान्त हुन्छ ।

नित्य अमलाको लेदोले कपाल मलेर नुहाउने अथवा त्रिफलाको काँढाले आँखा धुने गर्नाले नेत्ररोग शान्त भएर दृष्टिको शक्ति बढ्छ ।

त्रिफलाको काँढाको थोपा आँखामा हाल्नाले सबै किसिमको आँखाको पीडा आराम भएर जान्छ । (परीक्षित)

शिशु जन्मेकी महिलाको दूध आँखामा राख्नाले वातपित्तज अथवा रक्तपित्तज नेत्रपीडा शान्त हुन्छ । (परीक्षित)

अडेरको जरा, पात, बोक्रा तीनै थरीलाई पिनेर लेदो पार्नू त्यसको पेडा जस्तो टिकिया बनाई आँखामा राख्नू र पट्टी बाँध्नू । वायुको प्रकोपबाट आँखा दुखेकोमा आराम हुन्छ ।

अमलालाई पानीमा पिनेर टिकिया बनाई आँखामा राख्नू । पित्तको प्रकोपबाट आँखा दुखेकोमा आराम हुन्छ । (परीक्षित)

सहिजनको पात पिनेर बनाएको टिकिया आँखामा राखी पट्टी बाँध्नाले कफको प्रकोपबाट आँखा दुखेकोमा आराम हुन्छ ।

त्रिफलालाई पानी मिसाई पिनेर बनाएको टिकिया आँखामा राखी पट्टी बाँध्नाले तीनै दोषहरूबाट उत्पन्न भएको आँखाको दुखाइ आराम हुन्छ । (परीक्षित)

कागतीको रस फलामको भाँडामा राखी फलामकै डाडुले घोट्नू र त्यो रस आँखा बाहिर अलिअलि मात्रामा गाढा लेपन गर्नाले आँखाको दुखाइ तत्काल आराम भएर जान्छ। (परीक्षित)

हकीमी योगहरू

आँखा दुख्न थालेको छ भने हल्दीमा रङ्गाएको पहेंलो कपडा वा निलो कपडा आँखा अगाडि राखेमा दुखेको आँखालाई शान्ति दिन्छ।

त्यस अवस्थामा गुलियो र अमिलो खानुहुँदैन।

अफिम १ ग्राम, भुटेको शुद्ध फिटकिरी २ ग्राम, अमिलीको पात २० ग्राम सबलाई पिनेर कपडामा राखी पोटली बनाउनू। यस पोटलीलाई पानीमा भिजाएर आँखामा राख्नू र यसको पानी आँखामा पार्नू। आँखा दुखेको आराम हुन्छ।

फिटकिरी १ ग्राम, आलस गेडा २ ग्राम दुवै राखी पोटली बनाउनू र पानीमा भिजाउँदै आँखामा फेर्नू। आँखाको रातोपन हराउँछ। (परीक्षित)

नीमको कोपिलाहरू पिनेर रस निकाल्नू र तातो पार्नू। दायाँ आँखा दुखेको छ भने बायाँ कानमा त्यो रस ३-४ थोपा राख्नू। बायाँ आँखा दुखेमा दायाँ कानमा त्यो रस राख्नू। दुवै आँखा दुखेको खण्डमा दुवै कानमा रस राख्नू। बच्चाहरूको आँखा दुखेको आराम हुन्छ। (परीक्षित)

महिलाको दूधमा रसाञ्जन घोटेर आँखामा लगाउनाले आँखा दुखेको आराम हुन्छ।

रतन्धो भएमा

रसाञ्जन, हलेदो, दारुहरिद्रा, मालतीको पात, नीमको पात सबै समभाग लिएर गाईको गोबरको रसमा पिसेर गोलीहरू पार्नू। यो गोली पानीमा घोटी आँखामा लगाउनाले रतन्धोको रोग जान्छ।

गोबरको रसमा पिनेको पिप्ला आँखामा अञ्जनको रूपमा लगाउँदा रतन्धो आराम हुन्छ।

करेलाको पातको रसमा मरिचलाई पिनेर आँखामा लगाउनाले ३ दिनमा रतन्धो हराउँछ। (परीक्षित)

साबुन १ ग्राम, पिप्ला (सानो) ४ ओटा, मरिच २ दाना सबैलाई मसिनो गरी पिनेर आँखामा लगाउनाले रतन्धो नष्ट हुन्छ।

पलासको रुखको ताजा बोक्रा ल्याई कुटेर रस निचोर्नू। यो रस आँखामा लगाउनाले रतन्धो रोग नष्ट हुन्छ। (परीक्षित)

बाखाको कलेजोलाई आगोमा राखेर त्यसमाथि मरिच र सूप छर्नू। तातेपछि कलेजोबाट जुन पानी निस्कन्छ त्यसलाई ती दुवै औषधीले ग्रहण गर्छन्। अब ती औषधीलाई उतारेर सुकाउनू र चूर्ण बनाउनू। त्यो चूर्ण सुर्मा झैं आँखामा लगाउनाले रतन्धो छिट्टै हराउँछ।

आँखा र परेला चिलाएमा

माजूफल र जङ्गी हर्रो समभाग लिएर पानीसँग पिनी आँखामा लेप गर्नू। यो समस्या हराउँछ। सिसालाई बाँसको टुक्रामाथि रगड्नू। यसबाट जुन कालो आउँछ त्यसलाई औंलामा लिएर आँखामा लगाउनू। आँखा चिलाउन छोड्छ।

आँखामा फुलो आदि भएमा

आँखाका नसाहरूमा मल भरिँदै गएमा एउटा पर्दा जस्तो बनेर आउँछ, जसलाई फुलो अथवा माडा भनिन्छ। अर्को नाखूना भन्ने रोग आँखाको ठूलो कोयातिर हुन्छ जसलाई बोलचालको भाषामा जालो भनिन्छ। फुलो सेतो रङ्गको हुन्छ र आँखाको नानी नजिक हुन्छ।

उक्त रोगहरूको उपचारका लागि मस्तकको नसाबाट रगत निकाल्नुपर्छ। त्यसपछि आँखा सफा गर्ने औषधीको सेवन आदि गर्नुपर्छ।

१० ग्राम रातो चन्दन, १० ग्राम भुटेर शुद्ध गरेको फिटकिरी दुवैलाई कुटी-पिनी चूर्ण बनाउनू र घिउकुमारीको गुदीसँग खलमा घोटी गोलीहरू पार्नू। यो १-१ गोली पानीसँग घोटी आँखामा लगाउनाले आँखाको फुलो, जालो, नाखूना आदि आराम हुन्छ।

आँकको जरालाई पानीमा घोटेर अञ्जन गर्नाले नाखूनामा आराम हुन्छ।

नौसादर र फिटकिरी समभाग लिएर पिन्नू र मसिनो मलमल कपडाले छान्नू। यो चूर्ण आँखामा लगाउनाले फुलो, माडा, रतन्धो सबै आराम भएर जान्छन्।

मिश्री १० ग्राम, कलमी शोरा १० ग्राम, रसाञ्जन १० ग्राम, शुद्ध निलो तुथो २० ग्राम लिएर पहिले मिश्री र कलमी शोरालाई खूब खल गर्नू। त्यसपछि निलो तुथोको चूर्ण मिसाई खल गर्नू। अनि त्यसमा रसाञ्जनको चूर्ण पनि मिसाई यति खल गर्नू कि सुर्मा जस्तो भएर जाओस्। शेषमा पानी हालेर घोट्नू र गोलीहरू

पार्नू । आवश्यक भएको बेलामा १ गोली पानीमा घोटी आँखामा अञ्जन जस्तै गरी लगाईदिनू । धमिलो देख्ने, जालो, फुलो आदि रोगहरू आराम हुन्छन् । (परीक्षित) यो औषधी प्रयोग गरेको बेलामा अमिलो कुरा खानुहुँदैन ।

ढल्कानाशक योगहरू – आँखाबाट हर समय आँसु बगिरहने भएमा त्यसलाई ढल्का भनिन्छ । यस रोगमा पहिले जुलाफ दिएर पछि अरू औषधीहरू दिनुपर्छ । जङ्गी हर्रो, माजूफल, ठूलो हर्रो, जटामसी सबै समभाग लिएर चूर्ण बनाउनू र पानीसँग मसिनो गरी पिनेर गोली बनाइराख्नू । आवश्यक हुँदा यो गोली पानीसँग घोटी आँखाभित्र तथा वरिपरि पनि लेपन गर्नू । आँसु बग्न छोड्छ ।

ठूलो हर्रोको बियाँ २ भाग, बर्रो ३ भाग र अमला १ भाग यी सबैलाई पिनेर गोली पार्नू । यो गोलीलाई पानीमा घोटी आँखामा लगाउनू । आँसु बगिरहन छाड्छ र चिलाउने पनि हराउँछ ।

कञ्जापननाशक योगहरू – जन्मसिद्ध कञ्जापन असाध्य हुन्छ । तैपनि काली महिलाको दूध बालकलाई ख्वाउनाले अथवा इन्द्रवारुणीको फलमा सलाई रोपेर आँखामा लगाउनाले कञ्जापनलाई आराम गर्छ । अथवा–गाजरको बोक्रा मसिनो गरी पिनेर आँखामा लगाउनाले कञ्जापनलाई आराम गर्छ ।

आँखाको घाउको चिकित्सा

यो नाकछेउको आँखाको कोयामा हुन्छ । यसमा थिच्दा आँखाबाट पिप निस्कन्छ ।

पिप सफा गरेर मलम लगाउनुपर्छ । सेतो खरी दुई टुक्रा लिएर अडेरको तेलमा घोट्नू । जब बाक्लो भएर आउँछ अनि त्यसमा कपडाको बत्ती भिजाएर घाउमा राख्नू । आँखामा उत्पन्न नासूरको (नाडीव्रण) घाउ निको हुन्छ । समुद्रफेनलाई पानीमा घोटी बत्ती बनाई आँखामा राख्नू । खयर र मुसब्बर समभाग पिनेर घाउमा लगाउनू । अथवा सफा महलाई आगोमा पकाउनू । जब गाढा हुन्छ अनि त्यसमा अलिकति समुद्रफेन मिसाईदिनू र उतार्नू । यसमा बत्ती चोपी नासूरमा राख्नू । नासूर आराम भएर जान्छ ।

मोतियाविन्दुनाशक योग

बोझो, हिङ, सुठो र सूप समभाग लिएर मसिनो चूर्ण बनाउनू । यो चूर्ण ३–४ ग्राम नित्य महसँग सेवन गर्नू । मोतियाविन्दु बढ्न पाउँदैन र आराम भएर जान्छ । यो औषधी रोगको आरम्भ मैं थाल्नुपर्छ ।

अथवा - रोगको आरम्भमा निर्मलीको बियाँ महमा घोटेर आँखामा लगाउनाले मोतयाविन्दुमा आराम हुन्छ ।

अथवा- नौसादरलाई खुब मसिनो गरी पिनेर कपडछान गर्नू र आँखामा लगाउनू । लाभ हुन्छ ।

मोतियाविन्दु भएको मानिसले दूध र माछा कुनै पनि खानु हानिकारक हुन्छ ।

सामान्य योगहरू

पुनर्नवाको जरा दूधमा घोटी अञ्जन गर्नाले आँखा चिलाएको हराउँछ, महमा घोटेर लगाएमा बढी आँशु आउन रोकिन्छ,

घिउसँग पिनेर लगाउँदा फुलो हराउँछ, तिलको तेलमा घोटेर लगाउँदा तिमिर रोग (धमिलो वा अँध्यारो देखिने) नष्ट हुन्छ ।

काञ्जीमा घोटेर लगाउँदा रतन्धो हराउँछ । अर्थात् यो दोस्रो मसीरा नै हो । (परीक्षित)

बरोंको गिट्ठालाई महिलाको दूधमा घोटेर नित्य सन्ध्या समयमा आँखामा लगाउनाले आँखाका समस्त रोगहरू हराएर जान्छन् ।

गोरखमुण्डीको पञ्चाङ्गलाई छायामा सुकाएर पिन्नू । अनि त्यो चूर्ण बराबर मिश्रीको चूर्ण र घिउ बराबर मात्रामा मिसाएर राख्नू । यो औषधी ६ ग्राम बिहान-बेलुका गाईको दूधसँग खाने गर्नू । यसबाट आँखाको हेर्ने शक्ति बढ्छ, दाँत बलिया हुन्छन् र केश पनि फुल्दैनन् ।

शुद्ध निलो तुथो ३ ग्राम, अमलाको बोक्रा (गुदी) १२ ग्राम, मरिच १ ग्राम, नीमको कोपिला ६ ग्राम, समुद्रफेन ६ ग्राम र कपूर ६ ग्राम यी सबैको चूर्ण बनाई ज्यामीरको रसमा घोटेर गोली पार्नू र सुकाएर राख्नू । यो गोलीलाई पानीमा घोटी आँखामा लगाउनाले आँखाका सबै रोगहरू नष्ट हुन्छन् । यो औषधी जालो, धमिलो देख्ने र कमजोर आँखाका लागि विशेष लाभकारी छ ।

दृष्टिप्रसादनी शलाका - शुद्ध सिसालाई आगोमा बारम्बार तताएर त्रिफलाको रस, अदुवाको रस, घिउ, भृङ्गराजको रस, गोमूत्र, मह र बाखाको दूधमा क्रमशः डुबाउनू । यी सातै पदार्थमा ७-७ पटक अथवा २१-२१ पटक त्यसरी तताउँदै डुबाउँदै गरिदिएको खण्डमा उत्तम शलाका (सलाई) तयार हुन्छ । यो शलाका आँखामा लगाउनाले आँखासम्बन्धी सबै रोगहरू नष्ट भएर जान्छन् ।

त्रिफला, त्रिकटु, सिंधे नुन, जेठी मधु, शुद्ध निलो तुथो, रसाञ्जन, पुण्डरिया (प्रपौण्डरीक), वायुविडङ्ग, लोध, ताम्र भस्म यी सबै समान भाग लिएर चूर्ण बनाउनू । अब एउटा खलमा राखी शीतको (शीतल) जलका साथ घोट्नू र बत्तीहरू बनाउनू । यी बत्तीलाई दूधमा घोटेर अञ्जन गर्नाले तिमिर (अँध्यारो देखिने) रोगमा हित गर्छ । पलासको फूलको रसमा घोटेर अञ्जन गर्नाले आँखाको फुलो निको हुन्छ । दूधमा घोटेर लगाएमा माडा हराउँछ ।

परमोत्तम शलाका – १ किलो उत्तम सिसा लिएर आगोमा तताउनू र पग्लेपछि त्रिफलाको काँढामा बिस्तारै खन्याउनू । यसरी १०० पटकसम्म तताएर पगाल्ने र त्रिफलाको काँढामा खन्याउने काम गर्नू । फेरि ५० पटक अदुवाको काँढामा डुबाउनू, ५० पटक घिउमा डुबाउनू, २५ पटक गोमूत्रमा डुबाउनू, २५ पटक महमा र अन्तमा २५ पटक दूधमा डुबाउनू । अनि यस सिसाबाट शलाका (सलाई) बनाउनू । यो शलाका नित्य ४ पटक आँखामा लगाउनाले आँखाबाट पानी आउन छोड्छ, आँखा दुख्दैन, दृष्टि (हेर्ने शक्ति) बुढचौलीसम्म कायम रहन्छ ।

नेत्रको ज्योति बढाउने उपायहरू – धेरैजसो वृद्धावस्थामा मस्तिष्कको कमजोरी र अग्निमन्दताका कारण नेत्रको ज्योति कम भएर जान्छ । मस्तिष्कमा जम्मा भएको मललाई नस्य आदि प्रयोगबाट निकाली मस्तिष्कलाई बलवान् बनाउने औषधी लगाउने र खाने गर्नाले यो रोग घट्छ । कपालमा दिनमा धेरै पटक काइँयो फेर्ने गर्नाले लाभ हुन्छ ।

नेत्रको ज्योतिको लागि बढी मैथुन र कब्जियत गर्ने अन्नहरूको सेवनबाट हानि हुन्छ । गोरखमुण्डीको अर्क २०-३० मि.लि. मात्रामा नित्य सेवन गर्नाले आँखाको ज्योति कायम रहन्छ, मन्दी आउँदैन ।

मुण्डीको सर्बत – २०० ग्राम मुण्डीको फूल लिएर १ लिटर ६०० मि.लि. पानीमा राती भिजाइदिनू । बिहान त्यसलाई पकाउनू । जब ५०० मि.लि. पानी बाँकी रहन्छ अनि उतारेर छान्नू । अब त्यस पानीमा ६०० ग्राम मिश्री राखी फेरि पकाउनू । पाक्ने समयमा दूध र पानी मिसाएर ५०-५० मि.लि. मात्रामा ४-५ पटक १०-१० मिनेटको अन्तरालमा राख्नू । पाक्ने समयमा माथि जुन तर जम्मा हुन्छ त्यसलाई बिस्तारै पनियोले सोरेर फाल्दै जानू । जब यो तर लाग्न छोड्छ र काँढा बाक्लो भएर आउँछ तब उतारेर कपडछान गरी बोतलमा भरेर कार्क लगाई सुरक्षित गर्नू । यो मुण्डीको सर्बत तयार हुन्छ । यो सर्बत नित्य २०-४० मि.लि. मात्रामा सेवन गर्नाले मष्तिष्कमा तागत आउँछ र आँखाको ज्योति पनि बढ्छ ।

५०० ग्राम सूपलाई कुटी छानी चूर्ण पार्नू। अनि यो चूर्ण बराबर मिश्रीको धुलो मिसाई कुनै भाँडोमा सुरक्षित गरी राख्नू। यो चूर्ण ६-८ ग्राम मात्रामा राती सुत्ने बेलामा पानी वा दूधसँग ३ महिनासम्म खानू। आँखाको ज्योति खूब बढेर आउँछ। यो औषधी कहिल्यै पनि फेल खाँदैन।

६. शिरोरोग (टाउको संबन्धी रोगहरू)

कुनै पनि कारणबाट टाउकोको दायाँ, बायाँ, अगाडि वा पछाडि कुनै वा सबै भागमा दुख्ने भएमा शिरोरोग भनिन्छ। यस रोगका ११ प्रकार हुन्छन् - वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज, रक्तज, क्षयज, कृमिज, सूर्यावर्त, अनन्तवात, अर्धावभेदक र शङ्खक। वास्तवमा यी सबै त्रिदोषज भए पनि प्रबल दोषको आधारमा वातज, पित्तज आदि नामले चिनिन्छन्।

वातज शिरोरोगको लक्षण- अकस्मात् टाउको दुखेर आउँछ। त्यो दुखाइ रातमा बढी भएर जान्छ। टाउकोमा कपडाले बाँध्दा अथवा तेल लगाएर सेक्दा दुख्न छोड्छ।

पित्तज शिरोरोगको लक्षण - बलेको अँगारले ढाके जस्तो टाउको अत्यन्त तात्छ। आँखा र नाकबाट तातो बाफ वा धुवाँ निस्कन्छ। चिसो उपचार गर्नाले अथवा रातमा दुखाइ कम हुन्छ।

कफज शिरोरोगको लक्षण - टाउको कफले ढाकेको, भारी, चिसो र जकडिएको भान हुन्छ। आँखा वरिपरि सुनिएको हुन्छ।

सन्निपातज शिरोरोगको लक्षण - यसमा वातज, पित्तज र कफज तीनै किसिमका शिरोरोगका लक्षणहरू हुन्छन्।

रक्तज शिरोरोगको लक्षण - यसमा पित्तज शिरोरोगका समान लक्षणहरू हुन्छन्। तर टाउकोमा वेदना बढी हुनाले छुँदा छाम्दा झन् बढ्छ।

क्षयज शिरोरोगको लक्षण - शिरमा भएका रगत, वसा, कफ र वायुको क्षय हुँदै गएमा क्षयज शिरोरोग हुन्छ। यसमा भयङ्कर कष्ट दिने पीडा हुन्छ। स्वेदन, वमन, धूम, नस्य र रक्तमोक्षण गर्दा रोग झन् बढ्छ। टाउकोमा सियोले रोपे जस्तो दुख्छ, घुमेको अनुभव हुन्छ, आँखा चञ्चल हुन्छन्। मूर्च्छा र ग्लानि हुन्छ। यो कष्टसाध्य हुन्छ।

कृमिज शिरोरोगको लक्षण

यो रोग रोग उत्पन्न गर्ने किराहरू शिरमा पुग्दा उत्पन्न हुन्छ। यसमा टाउकोमा सियोले रोपेजस्तो अत्यन्त तीव्र वेदना हुन्छ। किराहरूले गिदी खान लागेजस्तो गरी टाउकोमा फरफराएको भान हुन्छ। नाकबाट पिपका साथ पानी निस्कन्छ कहिलेकाहीं किरा पनि निस्कन्छन्।

सूर्यावर्त शिरोरोगको लक्षण- यसमा बिहान टाउको दुख्न थाल्छ र त्यो आँखीभौंतिर सर्छ। सूर्यजति जति आकाशमा बढ्छन् त्यति नै टाउको दुख्ने पनि झन् झन् बढ्दै जान्छ र मध्याह्नमा खपि नसक्नु हुन्छ। मध्यान्हपछि सूर्य तलतिर लाग्दै जाँदा दुखाइ कम हुन्छ र सूर्यास्तपछि हराउँछ। यो सन्निपातज शिरको रोग हो र कष्टसाध्य हुन्छ।

अनन्तवात शिरोरोगको लक्षण - कुपित तीनै थरी दोषहरूले घाँटीको दायाँ बायाँ हुने मन्या नाडीहरूलाई प्रभावित पारी घाँटीको पछाडि तीव्र वेदना उत्पन्न गर्छन्। यो वेदना पछि आँखीभौं र शङ्खदेश (कम्पारो) सम्म पुग्छ र त्यहीं बढी दुख्ने गर्छ। यसमा गालाको एक भागमा कम्पन हुन्छ, च्यापु नचल्ने र अड्किने हुन्छ। साथमा आँखासम्बन्धी रोग पनि हुन्छन्।

अर्धावभेदक (आधा टाउको दुख्ने) शिरोरोगको लक्षण - रुक्ष भोजन आदि कारणहरूबाट कुपित भएको वायु एकलै अथवा कफका साथ मिलेर बलवान् हुन्छन् र आधा टाउकोलाई प्रभावित हुने गरी समाउँछ। त्यसबाट मन्या नाडी, आँखीभौं, शङ्ख प्रदेश (कम्पारो), कान, आँखा, निधार यी सबै अङ्गहरूको दायाँ वा बायाँ भागमा हतियारले काटेजस्तो अथवा आगोले पोले जस्तो तीव्र वेदना हुन्छ। रोग धेरै बढेर गएमा यसले आँखा वा कानको शक्ति नष्ट गरिदिन्छ। यसलाई अर्धकपाली वा अद्धा दुख्ने भन्छन्।

शङ्खक शिरोरोगको लक्षण - कुपित वायु, पित्त र रक्त दोषहरू मिलेर शङ्खदेशमा (कम्पारोमा) अत्यन्त दुख्ने र पोल्ने, रातो वर्णको भयङ्कर शोथ उत्पन्न गर्छन्। यस रोगको वेग विष जस्तै तीव्र हुन्छ र यसले टाउको, घाँटी सबै जकडिकन ३ दिन भित्रमा रोगीको ज्यान लिन्छ। कदाचित् ३ दिनपछि रोगी बाँचेको अवस्थामा सावधानीका साथ उपचार गर्नुपर्छ।

अरू रोगहरूमा हुने शिरोरोगहरू - द्वन्द्वज ज्वरोमा प्रायः टाउकोमा बडा तोडको दुखाइ हुन्छ। यदि मलेरियाको विष शरीर मै रहन गयो भने टाउको दुख्ने स्थायी भएर जान्छ। पुरानो ज्वरोमा टाउको दुख्ने बिहान बेलुका मात्र हुन्छ।

दिसा सफा नहुने र अजीर्ण भइरहने अवस्थामा पनि टाउको दुख्छ । रुघाखोकीले टाउको दुख्न सक्छ ।

क्षयरोगको सुरुमा कसैकसैलाई नियमित रूपमा टाउको दुख्ने गर्छ र सियोले रापे जस्तै तीव्र दुखाइ हुन्छ । प्रायः चक्कर लाग्छ, पसिना बढी आउँछ ।

स्नायुहरूको कमजोरीबाट जुन टाउको दुख्छ त्यो मन्द हुन्छ र धेरै समयसम्म निरन्तर रहन्छ । आँखा, दाँत, कान र नाकका रोगहरूका कारण पनि टाउको दुख्छ । दृष्टिको कमजोरीका कारण प्रायः निधारमा दुख्ने गर्छ । यसमा अरू चिकित्साबाट लाभ हुँदैन, नेत्र विशेषज्ञलाई जचाउनुपर्छ । मस्तकसम्बन्धी रोगका कारण पनि टाउको दुख्न सक्छ । मस्तकभित्र अर्बुद, फोडा आदि छ भने टाउकोमा कडा दुखाइ हुन्छ, रोगीलाई वमन हुन्छ र बिस्तारै दृष्टि कम हुँदैजान्छ ।

यकृत् अर्थात् कलेजोको रोगमा पनि टाउको दुख्छ । यसमा पित्तको लक्षण पाइन्छ । महिलाहरूमा गर्भाशयका खराबीका कारण टाउको दुख्न सक्छ । धेरै जसो महिलाहरूमा रजःस्राव (महिनावारी) हुने बेलामा भयङ्कर टाउको दुख्छ ।

वातज शिरोरोगको चिकित्सा – यस रोगमा दशमूल आदि वातनाशक औषधीहरूका साथ पकाएको दूधले टाउकोमा सेचन गर्नुपर्छ अर्थात् धारा दिनुपर्छ । रातमा मुँग, माष, गहत भुटेर खुर्सानी आदि तीक्ष्ण पदार्थ मिसाई भोजन गर्नुपर्छ । तातो दूध पिउनुपर्छ ।

कुठ, अडेरको जरा र सुठोलाई महीसँग पिनेर तातो पारी कपालमा लगाउनाले वातज शिरोरोग नष्ट हुन्छ । (परीक्षित)

ल्वाँग ५ ओटा, सुठो २५० मिलीग्राम, केशर २५० मिलीग्राम यिनलाई पानीसँग पिनी तेलमा मिसाएर पकाएपछि तातै अवस्थामा लेप गर्नाले वातज शिरोरोग नष्ट हुन्छ ।

पित्तज शिरोरोगको चिकित्सा – यसमा रोगीलाई स्नेहन गरेर उत्तम विरेचन दिनुपर्छ । घिउ अथवा दूधसँग निशोथको चूर्ण उपयुक्त मात्रामा सेवन गराएमा दिसा खलास हुन्छ र टाउको दुख्न छोड्छ ।

कफज शिरोरोगको चिकित्सा – यसमा लङ्घन गराउनुपर्छ र तातो पानी आदिबाट स्वेदन गराउनुपर्छ । पिप्ला, सुठो, नागरमोथा, जेठी मधु, सोया, नीलकमल र कुठ अथवा पिप्ला, मोथे, सुठो, जेठीमधु, कुरिलो, कमल, चितु यी औषधीहरू पिनेर लेप गर्नाले कफज शिरोरोग नष्ट हुन्छ । (परीक्षित)

वातपित्तज शिरोरोगको चिकित्सा – लघु पञ्चमूल दूधमा पकाएर नस लिनाले शिरोरोग ठीक हुन्छ ।

वातकफज शिरोरोगको चिकित्सा – बृहत् पञ्चमूल दूधमा पकाएर नस लिनुपर्छ । श्वासकुठार रस महमा मिसाएर खान दिनुपर्छ ।

त्रिदोषज शिरोरोगको चिकित्सा – दुवै पञ्चमूल दूधमा पकाएर नस लिएमा ठीक हुन्छ । काँचो बेल र सुठोलाई दूधमा पकाई नस्य दिनाले अथवा सुठोको चूर्ण २ ग्राम १०० मि.लि. दूधमा पकाएर नस्य दिनाले यो रोग शान्त हुन्छ । **अथवा** – त्रिकटु, पुस्करमूल देवदारु, रास्ना, हलेदो, अश्वगन्धा यी सबैको काढा बनाई नस्य दिनाले त्रिदोषज शिरोरोग नष्ट हुन्छ ।

रक्तज शिरोरोगको चिकित्सा – यसमा विशेष गरी रक्तमोक्षण गर्नुपर्छ । एकपटक शीतल क्रिया र अर्को पटक गरम क्रिया पालैपालो गरी गर्नुपर्छ ।

क्षयज शिरोरोगको चिकित्सा – यसमा रक्त आदि धातुहरूमध्ये जुन धातुको क्षय भएको छ त्यो क्षयको निर्णय गरेर उक्त धातु पुष्ट हुने बृंहण उपचार गर्नुपर्छ । त्यसका लागि वातशामक दशमूल, बला आदि द्रव्यहरूको क्वाथ र मधुर गणका द्रव्यहरू (द्राक्षा, यष्टिमधु आदि)को कल्क राखी पकाएको घिउ खान दिनुपर्छ । त्यही घिउको नस्य पनि दिनुपर्छ ।

कृमिज शिरोरोगको चिकित्सा – त्रिकटु, करञ्जको बियाँ, सहिजनको बियाँ सबैलाई एकै ठाउँमा पिनेर बाखाको मूत्रमा मिसाई नस लिनाले किराहरूका कारण उत्पन्न शिरको पीडा नष्ट हुन्छ । (परीक्षित)

अपमार्गको बियाँ, त्रिकटु, हलेदो, छिंके झार, हिङ, वायुविडंग सबै समभाग लिएर चूर्ण बनाउनू र पानी मिसाई कल्क बनाउनू । त्यसको चार गुना तिलको तेल र १६ गुना गोमूत्र राखी तेल पाकको विधि अनुसार तेल पकाउनू । यस तेलको नस्य दिंदा किराहरूबाट उत्पन्न शिरोरोग नष्ट हुन्छ ।

यस रोगमा रगतको नस्य दिनाले शिरमा जम्मा भएका किरा बाहिर निस्कन्छन् ।

वायुविडङ्ग, खाने सोडा, दन्ती र हिङ यी सबै समभाग लिएर लेदो पार्नू । अनि तेलपाकको विधि अनुसार चार गुना सर्स्यूको तेल र गोमूत्र मिसाई तेल पकाउनु र यसको नस दिनु । (परीक्षित)

बाँसको कोमल पालुवाको रस ५० मि.लि.मा तारपीनको तेल १२ मि.लि. मिसाई नस्य दिएमा शिर दुखाउने किराहरू बाहिर झर्छन् ।

सूर्यावर्त शिरोरोगको चिकित्सा – यसमा घिउमा सख्खर मिसाएर बिहानै खान दिनुपर्छ। घिउमा पकाएको र दूधले मुछेको मैदाको रोटी खान दिनुपर्छ। दूध र घिउ मिसाएर खाने बानी गर्नुपर्छ। दूध-घिउ मिसाएर नस्य पनि दिनुपर्छ। विरेचन औषधी दूध र घिउका साथ खान दिनुपर्छ। यी उपायहरू सफल नभएमा शिरावेध गर्नुपर्छ। नस्यका लागि भृङ्गराजको रसलाई बाखाको दूध मिसाइ घाममा तताएर प्रयोग गर्न सकिन्छ।

अर्धावभेदक शिरोरोगको चिकित्सा – वायुविडङ्ग र कालो तिल समभाग लिएर दूधमा पिनी नस दिने र लेप गर्ने गर्नाले यो रोग नष्ट हुन्छ।

नाकद्वारा दूध मात्र अथवा मिश्री मिसाएको दूध पिउनाले आधा कपाल दुख्ने रोग शान्त हुन्छ। अथवा नरिवलको पानी, चिसो पानी अथवा घिउ पिउनाले यो रोग नष्ट हुन्छ।

केशरलाई घिउमा भुटेर मिश्री मिसाई नस्य दिनाले वात-रक्त दुवैको प्रकोपबाट उत्पन्न शिरोरोग तथा आधा कपाल दुख्ने रोग नष्ट हुन्छ। (खूब परीक्षित)

घिउमा सिंधे नुन मिसाएर नस दिने अथवा ३ दिनसम्म त्यसलाई सुँघ्ने गर्नाले यो रोग फेरि हुँदैन।

शिरीषको जरा, फल, बोक्रा र बियाँ यी सबैको चूर्ण बनाई नस दिनाले आधा कपाल दुख्न छाड्छ त्यस्तै बोझो र पिप्लाको चूर्ण बनाई नस दिए पनि लाभ हुन्छ।

तिलको तेलमा नुन मिसाई तताएर नस्य दिनाले आधा कपाल दुख्ने रोग हराउँछ।

हकीमी योगहरू

सेतो करवीरको पात छायामा सुकाउनू र चूर्ण बनाउनू। त्यो चूर्ण चामल जति जतापट्टि टाउको दुखेको छ उतैतिर नाकमा राखी फुकिदिनू। यसबाट खूब छयूँ आउने, पानी बग्ने भएर टाउको दुख्न छोड्छ।

मरिच र कुखुराको विष्ठा (सूली) समभाग लिएर पिन्नू र चूर्ण बनाइराख्नू। बाँयातिर दुखेको छ भने दाँयातिर नाकमा त्यो चूर्ण नस राख्नू। दायाँतिर दुखेको छ भने बायाँतिर नाकमा नस राख्नू। पुरानो भन्दा पुरानो रोग पनि शान्त भएर जान्छ। सुठोलाई दूधमा पकाएर सुँघ्नाले कुनै पनि प्रकारको टाउको दुखेकोमा आराम हुन्छ।

शंखक शिरोरोगको चिकित्सा – सूर्यावर्त रोगमा गरिने उपायहरूमा स्वेदनलाई छोडी सबै उपायहरू शंखक रोगमा गर्नुपर्छ। शतावरी (कुरिलो), कालो तिल, जेठीमधु, निलो कमल, दूबो, पुनर्नवा सबै समभाग लिएर पिनी लेदो बनाएर

सुनिएको ठाउँमा लेप गर्नुपर्छ । चिसो पानीको पट्टी दिने, चिसो दूधको धारा दिने गर्नुपर्छ । दारुहरिद्रा, हलेदो, मजिठो, नीमको पात, खसको जरा, पद्मक यिनलाई पानी मिसाई पिनेर लेदो बनाउनु र कञ्चटमा लेप लगाउनुपर्छ ।

अनन्तवात शिरोरोगको चिकित्सा – यसमा सूर्यावर्त रोगकै जस्तो उपचार गर्नुपर्छ । त्रिफला, हलेदो, गुर्जो, चिराइतो र नीमको काँढामा गुड मिसाई नस दिनाले क्षणभरमा कञ्चट, कान, आँखा आदि दुख्न छोड्छ ।

अथवा केशरलाई घिउमा भुटेर मिश्रीको चूर्ण मिसाई नसको रूपमा प्रयोग गर्नुपर्छ । यो नस्य सूर्योदय हुने बेलामा दिनुपर्छ ।

केशरलाई घिउमा फुराएर बाखाको दूधमा पकाउन् र मिश्री मिसाएर खान दिन् । यो सूर्यावर्त, अनन्तवात आदि रोगहरूका लागि परीक्षित योग हो ।

मूत्रपिण्ड वा यकृत्को विकारबाट टाउको दुखेको अवस्थामा पाचनको सुधार गर्ने, पिसाब ल्याउने र जुलाफ हुने औषधी दिनुपर्छ । महिलाहरूलाई गर्भाशय सम्बन्धी रोगबाट टाउको दुखेमा तातो पानीमा कम्मरसम्म डुब्ने गरी बस्नुपर्छ ।

समस्त शिरोरोगनाशक योगहरू – जेठीमधुको चूर्ण ७५० मिलीग्राम, शुद्ध वत्सनाभको चूर्ण ६० मिलीग्राम दुवैलाई गाजल जस्तै मसिनो बनाएर मिसाएर राख्नू । यो चूर्ण सर्स्यूको गेडा जति मात्रामा नाकमा नस राख्नाले सबै किसिमको टाउको दुखेको सञ्चो हुन्छ ।

त्रिफला, हलेदो, गुर्जो, चिराइतो, नीमको बोक्रा समभाग राखी पकाएको काँढामा सख्खर मिसाई पिउनाले सबै किसिमका शिरोरोगहरू नष्ट हुन्छन् ।

केशरलाई घिउमा भुटेर मिश्री मिसाई सुँघ्नाले सबै किसिमका शिरका रोग नष्ट हुन्छन् । (परीक्षित)

विशिष्ट योगहरू

शिरःशूलान्तक रस – शुद्धपारद र शुद्धगन्धक समभाग (१०-१० ग्राम) खलमा राखी घोटेर बिना चमकको कज्जली तयार पार्नू । अनि त्यसमा लौह भस्म २० ग्राम मिसाउन् । त्यसपछि क्रमशः निशोथ २० ग्राम, शुद्ध गुग्गुलु ८० ग्राम, त्रिफला ४० ग्राम र कुठ, जेठीमधु, पिप्ला, सुंठो, गोखुर, वायुविडंग र दशमूल हरेक ६-६ ग्राम सबैको चूर्ण बनाएर मिसाउन् । अब त्यसमा दशमूलको काँढा राख्दै दिनभरि खल गर्नू र रातमा खुला ठाउँमा राख्नू । बिहान फेरि घिउ राखेर खल गर्नू र १-१ ग्रामका गोलीहरू बनाएर सुकाइराख्नू । यो २-२ गोली मह, पानी अथवा बाखाको दूधसँग निल्नाले सबै किसिमका शिरका रोगहरू आराम भएर जान्छन् ।

षड्विन्दु तेल– अडेरको जरा, तगर, सूंप, जीवन्ती, रास्ना, सिंधेनुन, दालचिनी, वायुविडङ्ग, जेठीमधु, सुठो प्रत्येक समभाग लिएर चूर्ण बनाई मिसाइराख्नू। उक्त चूर्ण १६० ग्राम बाख्राको दूधसँग पिनेर लेंदो पार्नू। उक्त लेदोको साथ कालो तिलको तेल १ लिटर २८० मि.लि., बाख्राको दूध १ लिटर २८० मि.लि. भृङ्गराजको रस ५ लिटर १२० मि.लि. राखी मन्द आँचमा पकाउनू। तेलमात्र बाँकी भएपछि छानेर सिसीमा राख्नू।

यो तेल नाकका दुवै प्वालहरूमा ६-६ थोपा राख्नू र केही बेर आराम गर्नू। यसबाट सबै किसिमका शिरका रोगहरू आराम हुन्छन्। केशहरू झर्ने, फुल्ने कम भएर जान्छ, आँखाको ज्योति बढ्छ। (परीक्षित)

अपामार्ग तेल – अपामार्गको बियाँ, त्रिकटु, हलेदो, छिंके झार, हिङ र वायुविडंग प्रत्येक ३० ग्राम लिएर कुटी छानी चूर्ण बनाएपछि पानीसँग पिनी लेदो पार्नू। त्यसका साथ तिलको तेल १ लिटर, गोमूत्र ४ लिटर राखी तैलपाक विधि अनुसार तेल पकाउनू र छानेर सुरक्षित गर्नू। यस तेलको नस्य लिनाले शिरोरोग उत्पन्न गर्ने किराहरू नष्ट हुन्छन्।

७. स्त्रीरोग (महिला संबन्धी सामान्य रोग)

महिलाहरूको शरीरमा पुरुषभन्दा भिन्न रूपमा रहेका गर्भाशय, योनि, स्तन्य यी अङ्गहरूसँग सम्बन्धित रोगहरूलाई स्त्रीरोग मानिन्छ। तिनीहरूमा यौवन अवस्थामा हुने मासिक स्राव नियमित रूपमा नहुनु, बढी मात्रामा हुनु, पीडाका साथ हुनु, योनिको बनोटमा खराबी आउनु, यौन चाहना अस्वाभाविक मात्रामा निकै बढ्नु वा कम भएर जानु आदि लक्षणहरू हुन्छन्। त्यस बाहेक गर्भवती भएको बेलामा र सुत्केरी भएको अवस्थामा पनि केही रोगहरू हुन्छन्। ती रोगहरू पनि स्त्रीरोग अन्तर्गत नै मानिन्छन्।

प्रदर रोग – महिलाहरूमा महिनैपिच्छे ३-४ दिन स्वाभाविक रूपमा हुने रगतको स्राव दूषित भएर बढी मात्रामा हुन लागेमा त्यसलाई प्रदर, रक्त प्रदर, अथवा असृग्दर रोग भनिन्छ।

कारणहरू – विरुद्ध अन्नको सेवन, अजीर्ण भइरहनु, बढी मैथुन, गर्भपात हुनु, बढी समयसम्म लगातार वाहन वा सवारीमा हिड्नु, खानपीन पोषिलो र पर्याप्त नहुनु, शक्तिभन्दा बढी भारी बोक्नु, चोटपटक लाग्नु, दिउसो सुत्ने बानी आदि कारणहरूबाट प्रदर रोग उत्पन्न हुन्छ।

भेदहरू – प्रदर रोग ४ प्रकारको हुन्छ – वातज, पित्तज, कफज र त्रिदोषज ।

सामान्य लक्षण – मासिक स्राव हुने स्वाभाविक समय नपुग्दै रगतको स्राव हुनु, बढी मात्रामा रगत जानु, चार-पाँच दिनपछि पनि रगतको स्राव भइरहनु यी प्रदरका सामान्य लक्षण हुन् । सबै प्रदरहरूमा शरीर दुख्ने, जिउ असजिलो हुने भइरहन्छ । रगत बढी गएपछि शरीर दुब्लाउने, रिङ्गटा लाग्ने, बेहोश हुने हुनथाल्छ । शरीर पोल्न थाल्छ, बढी प्यास लाग्छ, बर्बराउने हुनसक्छ । शरीरको रङ्ग फुस्रो हुन्छ । तन्द्रा (उँघ्ने) भइरहन्छ । अनेक किसिमका वायुसम्बन्धी रोगहरू (कम्मर दुख्ने, जोर्नीहरू दुख्ने, शरीर काम्ने, काम गर्न गाह्रो हुने, चाँडै थाक्ने आदि) उत्पन्न हुन्छन् ।

कफज प्रदरको लक्षण – यसमा आम रसले सहित, चिप्लो, केही सेतो र मासु पखालेको पानी जस्तो स्राव भइरहन्छ ।

पित्तज प्रदरको लक्षण – यसमा पहेंलो, निलो, कालो वा रातो रङ्गको र तातो स्राव तीव्र वेगका साथ हुन्छ । साथमा पित्तविकारका लक्षणहरू (जिउ पोल्ने, प्यास बढी लाग्ने आदि) हुन्छन् ।

वातज प्रदरको लक्षण – यसमा रातो रङ्गको, चिल्लो नभएको फिंजसहितको रगत अलि अलि मात्रामा स्राव भइरहन्छ । त्यो हेर्दा मासु पखालेको पानी जस्तै देखिन्छ । साथमा वायुसम्बन्धी लक्षणहरू (जीउ दुख्ने, हाइ आउने आदि) हुन्छन् ।

त्रिदोषज प्रदरको लक्षण– यसमा घिउ, मह, हरिताल जस्तै अनेक रङ्गको अथवा मज्जा जस्तो र सिनु जस्तै दुर्गन्धयुक्त स्राव हुने गर्छ । यो असाध्य हुन्छ ।

असाध्य प्रदरको लक्षण – जुन महिलाको योनिबाट लगातार रगतको स्राव भइरहन्छ र त्यसबाट रगतको कमी भएर दुर्बलता आउँछ । साथमा बढी प्यास लाग्छ, शरीरमा दाह हुने, ज्वरो आउने हुन्छ, उनको प्रदर रोग असाध्य हुन्छ ।

शुद्ध रज अर्थात् मासिक स्रावको लक्षण – मासिक रजको स्राव एक महिनाको अन्तरमा हुने, त्यसमा चिप्लोपन, तातोपन नभैकन, शरीरमा पीडा पनि नहुने भएमा, स्राव अत्यन्त बढी वा कम मात्रामा नभएमा र पाँच दिनसम्म मात्र[1] स्राव

---

१. मासिक स्रावमा जाने रगत ३ वा ५ जति दिनसम्म भए पनि त्यो शुद्ध हुनुपर्छ, साथमा जलन, पीडा आदि लक्षण हुनुहुँदैन । जुन महिलाको रगत जोडले बग्छ उसलाई तीन दिन पहिले नै बन्द भएर जान्छ, मध्यम रूपले बग्यो भने ५ दिनमा रोकिन्छ । कसैकसैलाई थोरै मात्रामा ५ दिनभन्दा बढी पनि झर्छ । त्यो रज शुद्ध भएमा बढी दिनसम्म भए पनि रोग मानिंदैन । १६ दिनपछि पनि रक्तस्राव हुन्छ भने निश्चय नै रोग मानी उपचार गर्नुपर्छ ।

भएमा त्यो शुद्ध भनी बुझ्नुपर्छ । शुद्ध रजको रङ्ग खरायोको रगत अथवा लाहाको घोल जस्तो हुन्छ, त्यो परेर भिजेको लुगा पानीले धोएपछि दाग रहँदैन र सफा भएर जान्छ ।

प्रदर रोगको सामान्य चिकित्सा – अशोकको बोक्रा ४० ग्राम लिएर एउटा हाँडीमा राखी माथिबाट १ लिटर २८० मि.लि. पानी थपी मन्दाग्निले पकाउनू, जब ३२० मि.लि. पानी बाँकी रहन्छ अनि त्यसमा ३२० मि.लि. गाईको दूध राखी फेरि पकाउनू । पाक्दा पाक्दा जब दूध मात्र बाँकी रहन्छ अनि उतार्नू । त्यसलाई २ मात्रा गरेर बिहान खाली पेटमा ख्वाउनू । यदि पाचनशक्ति कम छ भने मात्रा कम गर्नू । यो प्रदरका लागि रामबाण औषधी हो ।

पाकेको डुम्रीको गेडा लिएर सुकाउनू । त्यसपछि कुटी छानी चूर्ण बनाउनू । त्यसमा समभाग मिश्री पिनेर मिसाउनू र कुनै भाँडोमा सुरक्षित गरी राख्नू । यो चूर्ण ३–६ ग्राम मात्रामा बिहान बेलुका दूध अथवा पानीसँग खान दिनू । रक्त प्रदर निश्चय नै निको हुन्छ । (परीक्षित)

पाकेको केरा दूधमा मुछेर केही दिनसम्म लगातार खाएमा योनिबाट बढी मात्रामा हुने रक्तस्राव रोकिन्छ । पाकेको केरा र अमलाको रस लिएर दुवैभन्दा दुई गुणा सख्खर मिसाइदिनू । यो औषधी केही दिनसम्म लगातार सेवन गरेमा रोग निश्चय नै ठीक हुन्छ । बिहान बेलुका १–१ ओटा पाकेको केरा ६–६ ग्राम घिउसँग खानाले १५ दिनमैं रोग निको हुन्छ ।

बिहान–बेलुका ५–५ ओटा गुलाफको ताजा फूललाई ३–३ ग्राम मिश्रीसँग खानु र माथिबाट गाईको दूध पिउन दिनू । १४ दिनमैं रोग आराम हुनेछ । यसबाट प्रदर, धातु विकार, पिसाबमा जलन र रातोपन, कब्जियत आदि रोग पनि नष्ट हुन्छन् ।

कुरिलोको रस १०–२० मि.लि. मात्रामा ५ ग्राम मह मिसाएर पिउनाले पित्तको प्रदर ठीक हुन्छ । नीमको बोक्राको रस (१० मि.लि.)मा सेतो जीराको चूर्ण (२ ग्राम) राखी ७ दिनसम्म पिउनाले प्रदरलाई ठीक गर्छ ।

काकजङ्घा[1] को जराको रस (१० मि.लि.)मा लोधको चूर्ण (२–३ ग्राम) र मह (३ ग्राम) मिसाई पिउनाले श्वेत प्रदर अवश्य निको हुन्छ । काकजङ्घाको जरा (१० ग्राम) पिनी चौलानीसँग पिउनाले पनि श्वेत प्रदर ठीक हुन्छ ।

कपासको जरालाई चौलानीमा पिनेर सेवन गरेमा श्वेत प्रदर ठीक हुन्छ ।

---

१. काकजङ्घाको पात अपामार्ग जस्तै हुन्छ, बोट पनि त्यति नै अग्लो हुन्छ । यसको रस कानमा राख्दा कर्णनाद र बहिरोपन ठीक हुन्छ ।

रामतोरियाको सुकेको जरा १०० ग्राम, सुकेको पिंडालु१० ग्राम लिएर कुटी छानी चूर्ण बनाउनू । यो चूर्ण बिहान-बेलुका ६-६ ग्राम मात्रामा खाएपछि १ पाउ जति गाईको दूधमा १० ग्राम मिश्री मिसाई सेवन गर्नू । दूध नपाइएमा मिश्री पानीसँग सेवन गर्नू । कुनै औषधीले ठीक नभएको महिला पनि १५-२० दिन यस औषधीको सेवन गर्दा श्वेत प्रदरबाट मुक्त भएका छन् । (कैयौं पल्ट परीक्षित)

भूमि अमलाको बियाँलाई चौलानी[1] मा पिनेर छानी पिउनाले प्रदर रोग, लिङ्गबाट हुने रक्तस्राव र घोर अतिसारलाई पनि ठीक गर्छ । असुरोको स्वरस अथवा गुर्जोको स्वरस पिउनाले पित्तसम्बन्धी प्रदरलाई ठीक गर्दछ ।

वंशलोचन, नागकेशर, सुगन्धवाल यी तीनैलाई समभाग लिएर कुटी छानी चूर्ण बनाउनू । उक्त चूर्ण ३ ग्रामको मात्रामा चौलानीसँग खानाले प्रदर रोग निको हुन्छ । अथवा- नागकेशरलाई मात्र चौलानीसँग पिनेर चिनी मिसाई पिउनाले पनि प्रदर रोग शान्त हुन्छ । (परीक्षित)

अशोक घृत

अशोकको बोक्रा १ किलो लिएर ८ लिटर पानीमा पकाउनू । चौथाई पानी (२ लिटर) बाँकी हुँदा उतारेर छान्नू । त्यस काँढामा घिउ १ किलो, जिराको काँढा १ लिटर, चौलानी १ लिटर, बाखाको दूध १ लिटर, भृङ्गराजको रस १ लिटर मिसाई ठीक पार्नू । अब जीवनीय गणका औषधीहरू (जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीरकाकोली, मुद्गपर्णी, माषपर्णी, जीवन्ती, जेठीमधु), चिरौंजी, फालसा, रसाञ्जन, जेठीमधु, अशोकको जराको बोक्रा, दाख, कुरिलो, तण्डुलीयक (लुँडे)को जरा, प्रत्येक २०-२० ग्राम लिएर कुटी पिनी लेदो पार्ने, त्यो लेदोका साथ उक्त काढाहरू, घिउ, दूध सबै कराहीमा राखी मन्द अग्निमा पकाउनू । जब घिउ मात्र बाँकी रहन्छ तब उतारेर छानी सफा भाँडोमा सुरक्षित गरी राख्नू ।

यो घृत १० ग्राम मात्रामा बिहान-बेलुका दूध वा मनतातो पानीसँग खान दिनू । यसको सेवनले सबै किसिमको प्रदर रोग, योनि रोग, कम्मर दुख्ने, सारा शरीरदुख्ने, मन्दाग्नि, अरुचि, पाण्डुरोग, दुर्बलता, श्वास, कामला आदि स्त्रीका रोगहरू नष्ट हुन्छन् ।

प्रदरान्तक रस - शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, बंग भस्म, चाँदी भस्म, यशद भस्म, कौडी भस्म यी प्रत्येक ३-३ ग्राम र लौह भस्म ३६ ग्राम लिनू । पहिले पारद र गन्धकलाई खलमा खूब घोटी कज्जली पार्नू । त्यसपछि अरू भस्म राख्दै मिसाउँदै

---

१. **चौलानी बनाउने विधि**-२५ ग्राम पुरानो चामल लिएर कुटी २-२ वा ३-३ टुक्रा पार्नू । अनि त्यसलाई २ कप पानीमा भिजाइदिनू । १-२ घण्टापछि खूब मलछान गरेर पानीको प्रयोग गर्नू यही चौलानी हो ।

जान्। सबैलाई मिसाएपछि घिउकुमारीको रस राखी १ दिन पूरै घोट्नू र १२५ मिलीग्रामका गोलीहरू बनाएर सुकाएपछि सुरक्षित गरी राख्नू।

यो औषधी १ गोली बिहान - बेलुका दूबोको रस अथवा अमलाको रस र महसँग खान दिनू। अथवा अशोकको बोक्रा राखी पकाएको दूधसँग खान दिनू। अथवा तण्डुलीयक (लुँडे) को जराको रससँग गोली निल्न लगाउनू। यसबाट सबै किसिमका प्रदर रोगहरू शान्त हुन्छन्।

सोम रोग

पुरुषहरूमा बहुमूत्र रोग भएजस्तै स्त्रीहरूमा सोमरोग हुन्छ। यसमा योनिबाट सोम धातु (शरीरको पोषक तत्त्व) बढी मात्रामा हुने पिसाबका साथ बगेर जान्छ।

लक्षणहरू - महिलाको योनिबाट निर्मल, गन्धरहित, शीतल र सफा सेतो तथा पीडा-रहित पानी दिनका दिन बढी मात्रामा बगिरहन्छ। रोगीले पिसाबको वेगलाई रोक्न सक्दैन। उसको मुख र तालु सुक्छ। बेहोशी हुन्छ, हाइहाइ आइरहन्छ। छाला रुखो भएर आउँछ। खाद्य पदार्थबाट कहिले पनि तृप्ति हुँदैन। धेरै दुर्बल हुनाले रोगी शिथिल हुँदै जान्छ। रोग पुरानो भएपछि सबै बल नष्ट हुँदा रोगिणीको मृत्यु हुन्छ।

सामान्य चिकित्सा - भिण्डी (रामतोरिया)को जरा, सुकेको पिंडालु, सुकेको अमला, विदारीकन्द हरेक ४०-४० ग्राम, माषको चूर्ण (पिठो) २० ग्राम, जेठी मधु २० ग्राम सबैलाई कुटी छानी चूर्ण तयार गर्नू। यो चूर्ण ३-६ ग्राम मात्रामा बिहान मिश्री मिसाएको गाईको दूधसँग खान दिनू। सोम रोग अवश्य ठीक हुन्छ। (परीक्षित)

पाकेको केरा, अमलाको रस, मह, मिश्री सबैलाई मिसाएर खानाले सोमरोग तथा मूत्रातिसार अवश्य ठीक हुन्छ।

शतावरीको चूर्ण फाँकेर माथिबाट दूध पिउनाले सोमरोग शान्त भएर जान्छ।

अमलाको वियाँलाई पानीमा पिनेर मह र चिनी मिसाई पिउनाले सोमरोग ठीक हुन्छ।

६ ग्राम नागकेशरलाई महीमा पिनेर ३ दिनसम्म पिउने र महीसँगै भात खाने गर्नाले श्वेत प्रदर र सोम रोग ठीक हुन्छ।

माषको पिठो, पाकेको केरा, जेठीमधु, विदारीकन्द, शतावरी (कुरिलो)को जरा, सबै समभाग लिएर चूर्ण बनाई मह र मिश्री मिसाएर बिहान - बेलुका खाने र पछि दूध पिउने गर्नाले सोमरोग नष्ट हुन्छ।

यदि पीडा पनि छ भने मद्यमा सुकमेल र तेजपातको चूर्ण मिसाएर पिउनुपर्छ।

८. योनिरोग (महिलाको जननेन्द्रिय संबन्धी रोगहरू)

महिलाहरूको जननेन्द्रियको रूपमा रहेको योनि तथा त्योसँग सम्बन्धित गर्भाशयमा पनि खराबी उत्पन्न भई विभिन्न रोगका लक्षणहरू देखिन्छन्। तिनीहरूलाई योनिरोग भनिन्छ। योनिरोगहरू २० प्रकारका हुन्छन्।

(१) उदावर्ता, (२) वन्ध्या, (३) विप्लुता, (४) परिप्लुता, (५) वातला, (६) लोहित क्षया, (७) वामिनी, (८) प्रस्रंसिनी, (९) पुत्रघ्नी, (१०) पित्तला, (११) अत्यानन्दा, (१२) कर्णिनी, (१३) अचरणा, (१४) अतिचरणा, (१५) श्लेष्मला, (१६) षण्ढी, (१७) अण्डली, १८) विवृता, (१९) सूचीवक्त्रा, (२०) त्रिदोषजा।

योनिरोगका कारणहरू – महिलाहरूको खान-पान तथा व्यवहारको दोष, आर्तवमा उत्पन्न दोष, बीजदोष र दैव अर्थात् पूर्वजन्मको पापकर्महरू छुट्टाछुट्टै अथवा मिलेर योनिरोगका कारण हुन्छन्।

योनिरोगका भेदानुसार लक्षणहरू –

(१) **उदावर्ता** – यसमा योनिबाट निस्कने स्रावमा फिँज हुन्छ र त्यो कष्टका साथ निस्कन्छ।

(२) **वन्ध्या** – यसमा मासिक स्राव नै हुन छोड्छ।

(३) **विप्लुता** – यसमा योनिमा सधैं दुख्ने हुन्छ।

(४) **परिप्लुता** – यसमा पनि दुख्ने भइरहन्छ। मैथुन गरेपछि झन् बढी दुख्ने हुन्छ।

(५) **वातला** – यसमा योनिको भाग कठोर र जकडिएको हुन्छ। त्यसमा शूल र तोद भइरहन्छ। उदावर्तादेखि वातलासम्मका योनिरोगहरूमा विशेषरूपमा वायुको प्रकोप र वेदना हुन्छ।

(६) **लोहितक्षया** – यसमा मासिक स्राव जलनका साथ र बढी मात्रामा हुन्छ। त्यसो हुँदा शरीरको रगतको क्षय (कमी) हुनजान्छ।

(७) **वामिनी** – यसमा मैथुनपछि, योनिबाट रजको स्राव हुँदा वायुका साथ वीर्य पनि निस्केर जान्छ।

(८) **प्रस्रंसिनी** – यसमा क्षोभ हुँदा अर्थात् मैथुन आदिबाट घर्षणपछि योनि शिथिल भएर बारम्बार आफ्नो ठाउँबाट बाहिर खस्कन्छ। सन्तान जन्मिन बढी गाह्रो हुन्छ।

(९) **पुत्रघ्नी** – यसमा वायुद्वारा रजको क्षय हुनाले बारम्बार गर्भ तुहिने हुन्छ। यी लोहितक्षयादेखि पुत्रघ्नीसम्मका योनिरोगहरूमा पित्तको प्रधानता हुन्छ।

(१०) **पित्तला** – यो रोग हुँदा योनिभित्र पोल्ने गर्छ, योनिको मुखमा बिबिरा आएर पाक्छन् र ज्वरो पनि आउँछ ।

(११) **अत्यानन्दा** – यो रोगमा महिलालाई मैथुनबाट सन्तोष हुँदैन । यस्ती महिला एकै दिनमा कैयौं मानिससँग मैथुन गराएपनि सन्तुष्ट हुन्न । एकै पुरुषमा निर्भर नहुनाले गर्भ पनि रहँदैन ।

(१२) **कर्णिनी** – यसमा कुपित कफ र रगतद्वारा योनिमा कमलको चारैतिर कन्द भएजस्तै गिर्खा हुन्छ ।

(१३) **अचरणा** – यो रोग लागेकी महिला मैथुनको समयमा पुरुषभन्दा पहिले नै स्खलित हुन्छिन् ।

(१४) **अतिचरणा** – यो रोगमा धेरै पटक मैथुन गरेपछि मात्र स्खलन हुन्छ । अचरणा र अतिचरणा यी दुवै रोग लागेको अवस्थामा गर्भ रहँदैन ।

(१५) **श्लेष्मला** – यसमा योनि अत्यन्त पिच्छिल र अत्यन्त चिसो हुन्छ । त्यसमा बढी चिलाउँछ । अत्यानन्दादेखि श्लेष्मलासम्मका रोगहरूमा कफको विशेष प्रकोप हुन्छ ।

(१६) **षण्डी** – यो रोग भएमा महिलाको मासिक स्राव हुन छोड्छ, स्तनहरू साना हुन्छन्, मैथुन गर्दा योनिको स्पर्श खर (खस्रो वा सुख्खा) हुन्छ ।

(१७) **अण्डली** – पुरुषको लिङ्ग अत्यन्त मोटो भएमा त्यसद्वारा (कम उमेरकी) तरुणीको संभोगबाट यो रोग हुन्छ । यसमा योनि सुनिएर अण्डाकार भई बाहिर निस्कन्छ ।

(१८) **विवृता** – यो रोगमा योनिको द्वार ठूलो हुन्छ ।

(१९) **सूचीवक्त्रा** – यसमा योनिमार्ग अत्यन्त साँगुरो हुन्छ ।

(२०) **त्रिदोषजा** – यसमा वात आदि सबै दोषहरूका कारण र लक्षण पाइन्छन् । षण्डी आदि पहिलेका चार योनिरोगहरूमा पनि सबै दोषहरूको प्रकोपको लक्षण पाइन्छ ।

योनिकन्द रोग

दिउसो सुत्ने, बढी रिसाउने, बढी व्यायाम वा परिश्रम गर्ने, अति मैथुन गर्ने गर्नाले नङ दाँत आदिबाट कोतर्ने आदिबाट वातादि दोषहरू कुपित भएर जब योनिमा बडहर जस्तो गोल आकारको ठूलो डल्लो उत्पन्न गरिदिन्छन् । यसको रङ्ग पिप मिसिएको रगत जस्तो हुन्छ । यो प्रायः वृद्ध महिलाहरूमा हुन्छ ।

वातिक योनिकन्द रुखो, रङ्ग बदलिएको र छाला फुटेको हुन्छ। पैत्तिक योनिकन्द रातो वर्णको र दाहयुक्त हुन्छ, साथमा ज्वर पनि हुन्छ। कफज योनिकन्द निलो फूलको रङ्गको हुन्छ र त्यसमा विशेष रूपमा कण्डू (चिलाउने) हुन्छ। त्रिदोषज योनिकन्दमा सबै दोषहरूका लक्षण पाइन्छन्।

योनिरोगहरूको सामान्य चिकित्सा – योनिरोगहरूमा विशेष गरी वातनाशक उपायहरू गर्नुपर्छ। जस्तै – औषधी पानीले योनि धुनु, योनिमा औषधीपानीको पिचकारी दिनु (उत्तरवस्ति), औषधीयुक्त तेलमा कपास भिजाएर योनिमा राख्नु (पिचु), औषधीको बत्ती बनाएर योनिभित्र राख्नु, खानलाई औषधी दिनु आदि।

विशेष चिकित्सा – वातज योनिरोगमा गुर्जो, त्रिफला र दन्तीको जरा यी सबैको काँढाले योनिलाई धुनुपर्छ। त्यसपछि निम्नलिखित तेल बनाई त्यसमा कपास भिजाई जबसम्म रोग निको हुँदैन। तबसम्म योनिमा राख्नुपर्छ।

कुठ, सिंधे नुन, देवदारु, तगर, कण्टकारीको फल यी प्रत्येक ५०-५० ग्राम लिएर थिच्नू र लेदो पार्नू। अनि एउटा भाँडामा ४ लिटर पानी राखी उक्त औषधीका साथ पकाउनू। त्यसैमा १ लिटर कालो तिलको तेल पनि राख्नू र पाक्न दिनू। पानी जति सुकेर तेल मात्र बाँकी हुँदा उतारेर छान्नू र बिर्को भएको सिसीमा सुरक्षित राख्नू। पाँचै किसिमका वातज योनिरोगहरूमा माथि उल्लेखित गुर्जो आदिको काँढाले योनिलाई धोएपछि यो तेल योनिमा लगाउनू। यो अनेक पल्ट परीक्षित योनिरोगको रामबाण औषधी हो। नआत्तिईकन आराम नभएसम्म दुवै काम (योनि धुने र कपास उक्त तेलमा भिजाएर राख्ने) गर्दै जानाले ९० प्रतिशत स्त्रीहरूमा आराम भएको छ।

पित्त सम्बन्धी योनिरोगहरूमा योनिलाई शीतल पित्तनाशक औषधीहरूको काँढा आदिले धुने, तिनमा भिजेको कपास राख्ने आदि उपायहरू गर्नुपर्छ। शतावरी घृत र बला तेलको प्रयोग गर्दा राम्रो हुन्छ।

कफ सम्बन्धी योनिरोगहरूमा सबै रुक्ष र गरम उपचार गर्नपर्छ। चिसो उपचार गर्नुहुँदैन।

प्रसंसिनी योनिरोगमा बाहिर निस्केको भागमा घिउ लगाई दूधका बाफ दिनू र हातले भित्र पसाइदिनू। त्यसपछि निम्नलिखित वेसवारले त्यसको मुख बन्द गरी पट्टी बाँधिदिनू।

बेसवार – सुठो, मरिच, पिप्ला, धनियाँ, जिरा, अनारको बोक्रा, पिप्लाको जरा यी सबै समभाग लिएर कुटी छानी बनाएको चूर्णलाई बेसवार भन्छन्।

योनिमा दाह वा जलन छ भने नित्य अमलाको रसमा चिनी मिसाई पिउन दिनुपर्छ।

योनिबाट दुर्गन्ध आउँछ अथवा त्यसमा गिलोपन रहन्छ भने बोझो, असुरो, तितो परवर, प्रियंगु फूल र नीम यी सबैको पोटली बाँधी चूर्ण बनाई योनिमा राख्न लगाउनू ।

कर्णिका योनिरोगमा गर्भाशयमा मासुको डल्लो जस्तो बनेको छ भने नीम आदि शोधन द्रव्यहरूको बत्ती बनाई योनिमा राख्ने भन्नू ।

गुर्जो, हर्रो, अमला, जयपाल यी सबैको काँढा बनाई त्यसको धारा दिएर योनि धुन लगाउनू योनि चिलाउने कम हुन्छ ।

खयर, हर्रो, जाइफल, निमको पात र सुपारीलाई मसिनो गरी पिनेर छान्नू । फेरि यस चूर्णलाई मूँगको झोलमा मिसाएर सुकाउनू । यो चूर्ण कपडामा पोटली बाँधी योनिमा राख्ने गर्नाले योनि खुम्चेर आउँछ र पानी बग्न छोड्छ ।

जिरा, कालो जिरा, पिप्ला, मुग्रेलो, सुगन्धित बोझो (कुलिंजन), असुरो, सिंधे नुन, यवक्षार र ज्वानू यी सबै समभाग लिएर कुटी छानी चूर्ण बनाउनू र हल्का आगोमा तताई त्यसमा चिनी मिसाएर लड्डू पार्नू । यो लड्डू आफ्नो पाचन शक्ति अनुसार १-२ ओटा नित्य खानाले योनिसम्बन्धी सबै रोगहरू नाश हुन्छन् । यसका साथै योनिमा लगाउने औषधी पनि लगाएमा छिट्टै फाइदा गर्छ ।

कुनै हाँडीमा मुसाको मासु र पानी राखी पकाउनू र छान्नू । त्यो झोलको एक चौथाइ (१/४) तिलको तेल मिसाई मन्द आँचमा फेरि पकाउनू । पानी जति सुकेपछि तेलमात्र बाँकी हुँदा उतारेर छान्नू र सिसीमा राख्नू । यस तेलमा कपास भिजाएर योनिमा राख्नाले योनिअर्श, योनिकन्द रोगहरू निश्चय नै ठीक हुन्छ । जबसम्म लाभ हुँदैन, धैर्यका साथ लगाईराख्नू । (परीक्षित)

योनिमा मुसाको बोसोको लेप गर्नाले बाहिर निस्केको योनिभित्र पसेर जान्छ ।

पिप्ला, मरिच, माष, कुरिलोको जरा, कुठ, सिंधे नुन, सबैलाई कुटीछानी चूर्ण बनाउनू । यो चूर्णलाई सिलौटोमा पानीका साथ पिनेर बुढी औंला जति मोटा बत्तीहरू बनाउनू र छायामा सुकाउनू । यो बत्तीलाई नित्य योनिमा राख्न लगाउनू । यसबाट कफसम्बन्धी योनिरोगहरू जस्तै अत्यानन्दा, कर्णिका, चरणा र अतिचरणा अवश्य ठीक हुन्छन् । योनि बिल्कुल शुद्ध हुन्छ । (राम्रोसँग परीक्षित)

धातक्यादि तेल – धयेंरो, अमला, कमलको पात, कालो सुर्मा, जेठीमधु, आँपको गिट्ठा, जामुनको गिट्ठा, कासीस, लोध, काफल, तिन्दुकफल (तिंजु), फिटकिरी, अनारको बोक्रा, डुम्रीको काँचो फल यी सबै एक-एक गरी १५-१५ ग्राम लिनू र कुटी छानी चूर्ण बनाइ राख्नू । अब त्यसलाई १ लिटर २५० मि.लि. बाख्राको पिसाबमा मुछी लेदो पार्नू । त्यसपछि एउटा कराहीमा १ लिटर तिलको तेल र १ लिटर २५० मि.लि. गाईको दूधका साथ उक्त लेदो राखी पकाउनू । जब दूध र मूत्र जति डढेर खाली तेलमात्र बाँकी रहन्छ अनि उतार्नू र छानेर एउटा सिसीमा सुरक्षित राख्नू ।

यो तेललाई ढाड, कम्मर तथा पिठ्यूँमा मालिस गरेमा, कपास तेलमा भिजाई योनिभित्र राख्न लगाएमा वा पिचकारीमा तेल भरेर योनिभित्र पुऱ्याएमा विप्लुता, परिप्लुता, योनिकन्द, योनिशोथ, व्रण आदिमा आराम दिन्छ। यो योनिरोगको रामबाण औषधी हो।

योनिसङ्कोचन योगहरू – मदनफल, जेठीमधु, कपूर यी सबै समभाग लिएर मसिनो हुने गरी पिनेर छान्नू। फेरि यो चूर्णलाई मसिनो मलमलको कपडामा पोको पारी स्त्रीको योनिमा राख्न दिनू। यो क्रिया केही दिनसम्म गर्नाले खुकुलो भैसकेको योनि खुम्चिन्छ। (परीक्षित)

काउसोको जराको काँढाले केही दिनसम्म योनि धुनाले योनि खुम्चेर जान्छ। भण्टा (बैगुन)लाई सुकाएर कुटी छानी चूर्ण बनाउनू। त्यो चूर्ण योनिमा राख्नाले योनि खुम्चेर जान्छ।

आँककको जरा ल्याएर स्त्रीले आफ्नो पिसाबमा पिनेर लेदो पार्नू र योनिमा लेप गर्नू। २ घण्टापछि मैथुन गरेमा योनि बढी मात्रामा खुम्चेको अनुभव हुन्छ।

पलासको फूललाई छायामा सुकाउनू र सुकेपछि कुटी छानी समभाग मिश्री मिसाई १ मात्रा (५ ग्राम) नित्य चिसो पानीसँग सात दिन वा बढी समयसम्म सेवन गर्नू। योनि खुम्चिसकेको अनुभव हुनेछ।

बकाइनोको बोक्रालाई सुकाएर कुटी छानी चूर्ण बनाउनू। त्यो चूर्ण नित्य अलिअलि मात्रामा योनिमा राख्नाले योनि खुम्चेर आउँछ। चिनियाँ गुँद ६ ग्राम लिएर मसिनो हुने गरी पिन्नू। २० ग्राम फिटकिरीलाई आगोमा फुराउनू। जब फिटकिरी पानी जस्तो भएर आउँछ तब त्यसमा पिनेको गुँदलाई पानीमा मिसाएर राख्नू। चिसो भएपछि फेरि पिन्नु र त्यसमा धयेंरोको फूलको चूर्ण मिसाएर राख्नू यो चूर्ण योनिमा राख्नाले अद्भुतको चमत्कार देखिन्छ। (परीक्षित)

भाँगको पोटली बनाएर ३-४ घण्टा योनिमा राख्नाले सय पटकसम्म सुत्केरी भएकी महिलाको योनि पनि कन्याको जस्तो हुन्छ।

मोचरस (सिमलको खोटो)लाई कुटी छानी बनाएको चूर्ण पनि योनिमा ३-४ घण्टा राख्नाले धेरै पटक सुत्केरी भएकी महिलाको पनि योनि खुम्चेर जान्छ।

रोमनाशक औषधी – कपूर, भलायो, शंखको धुलो, सज्जीखार, ज्वानो, अजमोद यी सबैलाई तेलमा पकाएर त्यसमा हरिताल पनि पिनेर मिसाई दिनू। यो तेल लगाएमा क्षणभरमा रौंहरू झरेर जान्छन्।

चुन ढुंगाको टुक्रा २ भाग, हरिताल १ भागलाई पिनेर रौं मा मल्नू। यसमा अलिकति अण्डाको सेतो भाग पनि मिसाएर प्रयोग गर्दा पोल्ने हुँदैन, केश वा रौं पनि उडेर जान्छ। गुप्त स्थानको केशमा यस औषधीको प्रयोग गर्नुहुँदैन। यसले हानि गर्न सक्छ।

रजोदोष वा मासिक स्रावको विकार – स्वस्थ महिलाहरूको १२ वर्षदेखि ५० वर्षको उमेरसम्म महिनामा १ पटक ३-४ दिनसम्म मासिक स्राव (महिनावारी) हुन्छ । त्यसबेलामा १६ दिनसम्म गर्भाशयको मुख खुला रहन्छ । यसैले उक्त १६ दिनलाई ऋतुकाल भनिएको छ । यस अवधिमा सहवासबाट गर्भ रहन सक्छ । पछि गर्भाशयको मुख बन्द हुने हुँदा गर्भ रहँदैन । ऋतुकालमा नै पुरुषको वीर्य र स्त्रीको डिम्ब मिलेर गर्भ रहन्छ । जुन स्त्रीको रजोधर्म (महिनावारी) ठीक समयमा हुँदैन । तिनमा गर्भ रहन सक्दैन र तिनलाई अनेक थरीका रोगहरूको सामना गर्नुपर्छ । प्रकृति, अवस्था र बलअनुसार महिनावारी हुँदा कसैको स्राव कम कसैको बढी हुनु स्वाभाविक हो । त्यस बाहेक ३ दिनभन्दा बढी खून गइरहेमा रोग मानिन्छ ।

यदि कुनै स्त्रीलाई महिना पुगेको ३-४ दिनपछि मासिक स्राव (महिनावारी) हुन्छ र अलिकति रगत लुगामा लागेर बन्द हुन्छ अथवा तल्लो पेट काटेझैं दुखेर अलिकति रगत निस्कन्छ अथवा १-२ दिनसम्म स्राव भएर रोकिन्छ भने तिनमा रगतको कमी छ भन्ने बुझ्नुपर्छ । यदि ३ दिनभन्दा बढी स्राव हुन्छ अथवा दोस्रो महिना लाग्नुभन्दा २-४ दिन पहिलेदेखि नै स्राव हुन्छ भने रगतमा गर्मी छ भनी जान्नुपर्छ ।

रगतको कमी भएको अवस्थामा औषधी र पोषिलो भोजन दिएर रगत बढ्ने उपाय गर्नुपर्छ । धेरै दिनसम्म रगतको स्राव भइरहेमा प्रदर रोग जस्तै उपचार गर्नुपर्छ । रगतको कमीबाट रजोधर्म रोकिएको अवस्थामा रोगिणीको शरीर कमजोर र पहेंलो हुन्छ । यस्तो अवस्थामा उसिनेको अण्डा, खसीको मासु, दूध-घिउ, गुलियो कुरा बढी खान दिनू । पकाएको दूधमा मिश्री मिसाई खान दिनू । बढी आराम गराउनू र शीतलो ठाउँमा बस्न लगाउनू । स्नान गर्नू, प्रसन्न रहनू, पूरा निद्रा हुने गरी सुत्नू ।

१५ मरिचका दाना मिश्री राखेको दूधसँग चपाएर निल्नू । अथवा २०० मि.लि. तातो दूधमा १० ग्राम घिउ, ६ ग्राम मह, १० ग्राम मिश्री, १५ दाना मरिचको चूर्ण मिसाई बिहान बेलुका सेवन गर्नू । यसबाट अवश्य रगतको वृद्धि हुन्छ । (परीक्षित)

अश्वगन्धा, कालो मुसली, सेतो मुसली, समभाग लिई गाईको दूधमा पकाउनू । दूध सुकेर गएपछि घाममा सुकाउनू । फेरि त्यसलाई पिनेर चूर्ण बनाइराख्नू र समभाग सख्खर मिसाउनू । यसबाट हरेक दिन २०-२५ ग्राम लिएर गाईको दूधसँग खाने गर्नू । यो औषधीले दुब्ला स्त्रीहरूलाई मोटो पारिदिन्छ । (परीक्षित)

हरेक दिन दूधमा रोटी टुक्रा पारी भिजाएर खाने गर्नाले पनि शरीर मोटाउँछ ।

सर्दीका कारण रगत गाढा भएर अथवा दोषहरू मिलेर रजोधर्म बन्द भएको छ भने स्त्रीको शरीर सुस्त रहनेछ र शरीरको रङ्ग सेतो हुनेछ । शरीरमा निला नसा

देखिन्छन् । पिसाब बढी हुन्छ, आमाशयमा गडबडी हुनाले कफमिश्रित दिसा आउँछ । यस अवस्थामा दोषलाई नरम पार्ने पदार्थ 'पारद' का विभिन्न योग आदि युक्तिपूर्वक सेवन गराउनू, रगत गाढा भएर उत्पन्न रोग ठीक हुन्छ ।

गर्भाशयको मुख बन्द भएर मासिक धर्म बन्द भएको छ भने गर्भाशयमा जलन हुन्छ । यस्तो अवस्था प्रायः गर्भाशयको सुख्खापन, अजीर्ण अथवा सर्दी-गर्मीका कारण हुनसक्छ । गर्मी र सुख्खाका कारण रोग भएको अवस्थामा ठण्डा गर्ने औषधि दिनुपर्छ ।

यदि सूजनका कारण रजोधर्म बन्द भएर गएको छ भने त्यसको चिकित्सा शोथ रोगमा भने बमोजिम गर्नू । बेसारको धुलोलाई घिउमा मिसाउनू र त्यसमा कपाससहित सिन्को वा धागो भिजाई त्यसलाई गर्भाशयको मुखसम्म पुग्ने गरी योनिमा राख्नू । यसले गर्भाशयको शोथ बस्छ र अरू लाभ पनि हुन्छन् ।

गर्भाशयमा घाउ भएको अथवा नसाहरू बन्द भएको स्थितिमा मासिक धर्म बन्द भएको छ भन्ने यस्तो रोग निको हुन सम्भव हुँदैन । महिलालाई हानि नहोस् भन्नाका लागि रगत निकाल्ने उपाय गर्नू ।

गर्भाशयको मुखमा मासु पलाएर आएको अथवा अन्य कुनै यस्तै कारणबाट रजोधर्म बन्द भएर गएको छ, मैथुन पनि गर्न सकिन्न भने मासुको डल्लोलाई (Cyst) गरिने जस्तो उपचार गर्नू । यस्ती रोगिणीलाई रजोधर्मको समयमा अतिपीडा र नसा तन्किने हुन्छ । मोटोपनका कारण गर्भाशयको मुखमा चाप परेर रजोधर्म बन्द भएर गएको छ भने मोटोपनको चिकित्सा गर्नू, रक्तदान गर्न लगाउनू । पिसाब बढी जाने औषधी दिनू, भोजनभन्दा पहिले व्यायाम गर्न लगाउनू । खाली पेट स्नान गर्न, मोटो कपडा लगाउन र भुइँमा सुत्न भन्नू । चिन्तामा पारिदिनू अर्थात् मानसिक परिश्रम गराउनू ।

गर्भाशय आफ्नो स्थानबाट पल्टेर रजोधर्म बन्द भएको छ भने वन्ध्या चिकित्सामा लेखिएको उपाय गर्नू ।

यदि गर्भाशयमा गर्मीका कारण खराबी छ भने मासिक स्रावको रगत कालो र गाढा हुनेछ । त्यसमा जलन पनि हुनेछ । यदि सर्दीको कारण खराबी छ भने मासिक स्राव ढिलो गरी निस्कन्छ र जलन पनि हुँदैन । सुख्खापनका कारण रोग भएमा पिसाबको मार्गतिर योनिमा सुख्खा हुन्छ । मासिक स्राव पनि कम मात्रामा आउँछ । यदि चिल्लोपना बढी भएर रोग लागेको छ भने गर्भाशयबाट चिप्लो पदार्थ निस्किरहन्छ र गर्भ पनि ३ महिनाभन्दा बढी टिक्न सक्दैन ।

यदि कुनै घाउका कारणबाट रोग छ भने गर्भाशयबाट बगेर आउने पदार्थको परीक्षणबाट निधो हुन्छ ।

यदि बढी दुब्लो भएर मासिक धर्म हुँदैन भने त्यस्तालाई रक्तवृद्धिको उपाय गर्नुपर्छ र शरीरलाई अलि मोटो पार्नुपर्छ। यदि गर्भाशयमा वायु जमेर मासिक धर्म भैरहेको छैन भने तल्लो पेट फुलिरहन्छ र मैथुनका समय मूत्रमार्गबाट आवाजका साथ वायु निस्कन्छ। त्यसका लागि वायुनाशक औषधी खान दिनू, तल्लो पेटमा बार लगाउनू।

यदि गर्भाशय आफ्नो ठाउँबाट सरेको छ र यसैका कारण मासिक स्राव हुँदैन, गर्भ पनि रहँदैन भने मैथुनका समयमा योनिमा दुख्ने हुन्छ।

योनिको मुखमा अथवा योनि र गर्भाशयको बीचमा अथवा गर्भाशयको मुखमा कुनै चिज उत्पन्न भएर मासिक स्राव हुने बेलामा रगत आउन सकेको छैन भने त्यस अवस्थामा पुरुषले स्त्रीसँग सहवास गर्न सक्छ। तर योनिकै मुखमा कुनै चिज उत्पन्न भएको छ भने त्यस अवस्थामा योनिमा लिङ्गको प्रवेश असम्भव हुन्छ र सहवास हुनसक्दैन। यस रोगलाई **ऋतुक** भन्छन्। यसमा बढेको पदार्थलाई निर्मलीकृत शस्त्रले काट्नू र घाउमा मलम औषधी लगाईदिनू।

मासिक धर्म राम्ररी नहुँदा गर्भाशयमा शोथ र वेदना (दुख्ने) हुन्छ। भोक लाग्दैन, अपच हुन्छ, वाकवाक लाग्ने, प्यास बढी हुने हुन्छ। आमाशयको भागमा पोल्ने गर्छ। छारेरोग हुनसक्छ। त्यस्तै पक्षाघात, खोकी, दम, जलोदर, घाँटी र पिठ्यूँमा दुख्ने, आँखा, कान, नाक दुख्ने, एक किसिमको पित्त ज्वर आदि हुन जान्छन्।

यस्तो अवस्थामा तीन किसिमका लक्षणहरू हुन्छन्

(क) मासिक स्राव हुने बेलामा रगतै निस्कँदैन।

(ख) थोरै मात्रामा रगत निस्कन्छ।

(ग) मासिक स्राव पीडाका साथ हुन्छ।

जसमा रगत बिल्कुलै देखा पर्दैन त्यसको कारण बढी चिन्ता गर्नु, गर्भ रहनु, चोट-पटक लाग्नु आदि हुन्छन्। रगत कम जाने अवस्थाको कारण बढी सन्तान हुनु अथवा बढी समयसम्म स्तनपान गराउनु हुन्छ। त्यसमा कमजोरी, थकाई, कम्मर तथा तल्लो पेटका दुखाई, अनुहारमा फिकापन हुन्छ।

जसमा मासिक स्राव कष्टका साथ हुन्छ त्यसमा ऋतुकाल भन्दा ३-४ दिन पहिले ढाड दुख्न थाल्छ, आलस्य र बेचैनी हुन्छ। टाउको दुख्ने, गाला रातो हुने, मुटु काम्ने हुन्छ। पेट भारी हुन्छ।

यसको पीडा रजोधर्म हुनुभन्दा ४-५ दिन पहिलेदेखि नै हुनथाल्छ र रजोधर्म सुरु हुने बित्तिकै दुख्न छोड्छ। यसको एक कारण कब्जियत हुन्छ।

एउटा बनावटी ऋतुकाल पनि हुन्छ। यसमा रजकम खस्छ र ज्यालसहित रगत जान्छ। योनिबाट सेतो पानी आउँछ। अथवा रजको सट्टा कुनै अर्को पदार्थ निस्कन्छ।

मासिक धर्म जारी गर्ने औषधी – कालो तिल ३ ग्राम, त्रिकटु ३ ग्राम, भारङ्गी ३ ग्राम यी सबैको काँढा बनाई गुड अथवा सख्खर मिसाई नित्य बिहान-बेलुका पिउन लगाएमा मासिक धर्म हुन थाल्छ । यदि शरीरमा रगतको कमी छ भने दूध, घिउ, मिश्री आदि रगत बढाउने पदार्थ खुवाएपछि उक्त काँढा पिउनाले रजोधर्म छिटै हुन थाल्छ । त्यस्तो अवस्थामा माषको दाल, दही, गुड आदि बढी सेवन गर्नुपर्छ, रुखो पदार्थ खानु हुँदैन । यो परीक्षित औषधी हो ।

तितो तुम्बी (लौका) को बियाँ, दन्ती, ठूलो पिप्ला, पुरानो गुड, मदनफल, सुराबीज, जवाखार (यवक्षार) यी सबै समभाग लिएर कुटी छानी चूर्ण बनाउनू । अब त्यो चूर्णलाई सिउँडीको दूधमा पिनेर कान्छी औंला समान बत्ती बनाएर छायामा सुकाउनू । यी बत्तीहरू मध्ये एक-एक बत्ती नित्य योनिभित्र राख्ने गरेमा २-३ दिनमा मासिक धर्म खुल्छ ।

साथमा खाने औषधी – मालकागनी, रायो, विजयसार, सेतो बोझो सबै समभाग लिएर कुटी छानी चूर्ण बनाइराख्नू । यो चूर्ण ३ ग्राम मात्रामा बिहान-बेलुका चिसो पानी अथवा काँचो दूधसँग खाएमा निश्चय नै रजोधर्म खुल्छ । (अनेक पल्ट परीक्षित)

यदि रक्त अल्पता छ भने पहिले रक्तवृद्धिका लागि चिकित्सा गर्नुपर्छ अनि मात्र रजोधर्मको निम्ति औषधी गर्नुपर्छ । यसमा अनार खुवाउनू लाभदायक हुन्छ ।

घरमा धेरै दिनदेखि बाँधी राखेको आँपको पातको तोरणबाट पातहरू ल्याई पानीमा पकाएर छानेर पिउनाले नष्ट भएको रजोधर्म फेरि हुनथाल्छ ।

जवारिश कलौंजी (मुंग्रेलो) को सेवनले रजोधर्म जारी हुन्छ, पेट दुखेको आराम हुन्छ, पिसाब सफा गराउँछ, गर्भाशयको पीडालाई शान्त गर्छ । (कैयौं पटक परीक्षित)

कालो जिरा २४ ग्राम, अडेरको गुदी १०० ग्राम, सुठो १२ ग्राम, सबलाई पानी राखी पिन्नू र आगोमा पकाएर मनतातो भएपछि पेटमा लेप गर्नू । केही दिनपछि रजोधर्म हुन थाल्छ, तल्लो पेट दुख्न छोड्छ ।

अलिकति गुड लिएर त्यसमा केही घिउ मिसाइदिनू र एउटा कराहीमा राखी आगोमा तताउनू । जब पग्लेर बत्ती बनाउन लायकको हुन्छ अनि त्यसमा केही गन्धाविरोजा पनि मिसाइदिनू र कान्छी औंला समानका बत्तीहरू बनाइराख्नू । त्यो बत्ती गर्भाशयको मुखमा राख्नाले रजोधर्म खुल्छ ।

कालो तिल, सुठो, मरिच, पिप्ला, भारङ्गी, गुड सबै समभाग लिएर काढा बनाउनू । यो काढा २५ मि.ली. नित्य खानाले २० दिनमा निश्चय नै रोकिएको रजोधर्म खुल्छ र रोगनाश भएर पुत्रप्राप्ति (सन्तानको जन्म) हुन्छ ।

योगराज गुग्गुलु सेवन गर्नाले वीर्य र आर्तवसम्बन्धी रोग नष्ट हुन्छ ।

यदि मासिक धर्म ठीक समयभन्दा निकै अघि वा पछि भयो भने खराबी भएको बुझ्नुपर्छ । यसबाट कमजोरी हुन्छ ।

नीमको बोक्रा २४ ग्राम, सुठो ४ ग्राम दुवैलाई कुठी छानी २४ ग्राम पुरानो गुड मिसाएर ३०० मि.ली. पानीमा घोली एउटा हाँडी वा सफा भाँडोमा मन्द आँच दिई पकाउनू । जब १/४ एक चौथाइ (७५ मि.ली.) बाँकी रहन्छ अनि उतारेर छानी पिउन दिनू । यो काढा केही दिन निरन्तर सेवन गरेमा मासिक धर्म जारी हुन्छ । (परीक्षित)

मूलाको बियाँ, गाजरको बियाँ, मेथी यी तीनलाई ५०-५० ग्राम मात्रामा लिएर कुठी छानी चूर्ण बनाउनू । यो चूर्ण ५ ग्राम मात्रामा तातो पानीसँग खान दिएमा मासिक धर्म सुरु हुन्छ अथवा ३-४ दिनमा जारी हुन्छ । गर्भ रहेको भए तुहिन्छ । (परीक्षित)

कपासको बियाँको तेलमा १-२ ग्राम जति सुकमेल, जिरा, बेसार र सिंधे नुन मिसाएर कान्छी औंला बराबरको बत्ती बनाई योनिमा बराबर राख्न लगाउनाले मासिक धर्म खुलेर हुनेछ । यो क्रिया २५ दिनसम्म बराबर गरेमा मासिक धर्म ठीक समयमा नहुने, कहिले अघि कहिले पछि हुने आदि रोग नष्ट हुन्छन् र ठीक समयमा मासिक धर्म हुन्छ । (परीक्षित)

जुन स्त्रीको जवानीमैं रजोधर्म बन्द भएको छ उसले इन्द्रवारुणीको जरालाई सिलौटोमा पिनेर कान्छी औंला बराबरको बत्ती बनाएर आफ्नो योनि वा गर्भाशयको मुखमा राख्नू । यस क्रियाले केही दिनमा रजोधर्म खुलेर हुन थाल्छ । यसबाट विधवाहरूको थामिएको गर्भ पनि तुहिन्छ । यस कामका लागि यो योग अति उत्तम छ । उक्त बत्ती कान्छी औंला जति लामो र त्यति नै मोटो हुनुपर्छ । (परीक्षित)

गुड (चाकु) सँग कालो तिलको (२५ ग्राम) काढा बनाई सेलाएपछि पिउन दिनू । यसरी केही दिनसम्म बराबर पिउनाले धेरै समयदेखि बन्द रहेको मासिक धर्म पनि ठीकसँग हुन थाल्छ ।

यदि मासिक धर्मको समयमा महिलाको कम्मर दुख्छ भने सुठो ५ ग्राम, वायुविडंग ५ ग्राम र गुड ४० ग्राम यी सबै पानी राखी पकाएर खान दिनू । रोग ठीक हुन्छ ।

९. बन्ध्यत्व (बाँझी हुनु)

स्त्रीको रज (डिम्ब), गर्भाशय तथा पुरुषको वीर्य यी सबै शुद्ध र निर्दोष भएमा गर्भ रहन्छ । यदि स्त्रीलाई कुनै किसिमको योनिरोग, रजको दोष अर्थात् गर्भाशयसम्बन्धी कुनै रोग भयो भने गर्भ रहँदैन । यसैले पहिले यी रोगहरूको मुक्ति गराएर पछि मात्र गर्भवती हुने उपाय वा औषधी गर्नुपर्छ ।

महिलालाई उक्त कुनै रोग भएको अवस्थामा पहिले त गर्भ नै रहँदैन, कुनै किसिमले गर्भ रह्यो भने पनि असमयमा तुहेर जान्छ, अथवा जन्मने बेलामा मरिसकेको हुन्छ वा जन्म लिएर पनि मरेर जान्छ। यस अवस्थामा रोगिणी झनै कमजोर भएर जान्छे।

स्त्री निरोगी भए पनि पुरुषको वीर्यमा कुनै दोष छ अथवा वीर्य निकै कमजोर, पातलो छ, रुकावट नभएको छ भने गर्भ रहँदैन। यसैले गर्भधारणका लागि स्त्री रोगरहित हुनु र पुरुषको वीर्य गाढा, निर्दोष र पुष्ट हुनु आवश्यक हुन्छ। अतः पहिले स्त्रीको रज र पुरुषको वीर्य कुनमा दोष छ भनी परीक्षा गर्नुपर्छ।

वीर्यको परीक्षा – जसको वीर्य पानी भरिएको कचौरामा राख्ने बित्तिकै एकै पल्ट पिधंमा बस्छ त्यसको वीर्य निर्दोष हुन्छ। जसको वीर्य पानीको सतहमा नै रहन्छ र पिसाबमा फिंज उत्पन्न हुँदैन त्यसको वीर्य दोषयुक्त हुन्छ। पिसाबमा फिंज उठ्नु पुरुषत्वको चिन्ह हुन्छ।

बाँझोपन ३ प्रकारको हुन्छ – जन्मबन्ध्या, मृतबन्ध्या र काकबन्ध्या। जन्मबन्ध्याको गर्भ नै रहँदैन। मृत बन्ध्याको गर्भ रहन्छ तर त्यो बाँच्दैन। गर्भ अवस्थामा वा जन्मेपछि बच्चा मर्छ। काकबन्ध्याको एउटा सन्तान भएपछि अर्को हुँदैन।

वीर्यशुद्धिको औषधी – सिमलको जरा ६० ग्राम, बलाको बीज ६० ग्राम, कामराज ६० ग्राम सबै लिएर कुटी छानी चूर्ण बनाउनू। यो चूर्ण ६ ग्राम मात्रामा बिहान-बेलुका फाँकेर मिश्री मिसाएको दूध खाने गर्नू। यसरी कमसेकम ४० दिनसम्म खानू। तेल, खुर्सानी, अमिलो आदि गरम कुरा नखानू, मैथुन पनि परहेज गर्नू। लाभ हुन्छ। (परीक्षित)

रजशुद्धिको औषधी – बबूलको गुँद ३६ ग्राम, सुकमेलको बियाँ ३६ ग्राम, नागौरी अश्वगन्धा ६० ग्राम, शतावरी ६० ग्राम सबै कुटेर छान्नू। यो चूर्ण ३-४ ग्राम मात्रामा फाँकेर पछि गाईको दूध १ पाउ खाने भन्नू। जबसम्म लाभ हुँदैन तबसम्म अथवा कम्तीमा ४० दिनसम्म सेवन गराउनू। यसको सेवनबाट रज निश्चय नै शुद्ध हुन्छ। तातो कुरा र मैथुन बार्नुपर्छ। (परी.)

गर्भप्रद औषधी – अश्वगन्धालाई कुटी छानी चूर्ण बनाउनू। यसको मात्रा ३-६ ग्राम हुन्छ। मासिक धर्म हुनुभन्दा पहिलेदेखि सेवन गर्न दिनू। पथ्यमा दूध - भात खान दिनू। गर्भवती स्त्रीले पलाशको १ पातलाई दूधमा पिनेर पिउने गर्नाले बलवान् पुत्र जन्मिन्छ। कैयौं पटक चमत्कार देखिएको छ।

शिवलिंगीको बियाँलाई दूधमा पिनेर महिलाले दिनदिनै पिउने गरेमा उसलाई पुत्रै पुत्र हुन्छन्, पुत्री कहिल्यै पनि हुँदैन।

सानो पिप्ला, सुठो, मरिच, नागकेशर समभाग लिएर कुटी छानी चूर्ण बनाउनू । यो चूर्ण ६ ग्राम जति लिएर गाईको घिउमा मिसाएर ऋतुस्नानपछि चाट्नू र त्यसै रातमा सहवास गर्नू । यसबाट बाँझी स्त्रीलाई पनि पुत्र हुन्छ । यदि एक पटकमा काम नभए ३-४ पल्ट प्रयास गर्नू । स्त्रीलाई कुनै प्रकारको प्रदर आदि योनिरोग नभए अवश्य गर्भ रहनेछ । कुनै रोगको शङ्का लागेमा पहिले २१ दिनसम्म माथि उल्लेख भए अनुसार अश्वगन्धा खान दिनुपर्छ । त्यसपछि माथिको अश्वगन्धाको प्रयोग र सानो पिप्ला आदिको प्रयोग मध्ये कुनै एउटाको सेवन गरी सहवास गर्नाले गर्भ रहन्छ । यस कामका लागि बाच्छी भएकी गाईको दूध लिनुपर्छ ।

नागकेशर र सुपारी दुवै समभाग लिएर कुटी छानी चूर्ण बनाउनू । यो चूर्ण ३-६ ग्राम मात्रामा सेवन गर्नू । यसको सेवनले अनेकौं स्त्रीहरूको गर्भ रहेको छ ।

पुत्रजीवकको जरा र देवदारु दुवैलाई दूधमा पिनेर पिउनाले दीर्घायु पुत्रको जन्म हुन्छ ।

मुनिहरूले लक्ष्मणाबारे अवश्य पनि पुत्रलाभ गराउने औषधी भनेर वर्णन गरेका छन् । यसले बाँझोपनलाई नाश गर्छ । यसको वृक्ष हिमालय र अन्य पर्वतहरूमा पाइन्छ । वनतुलसी जस्तै अग्लो, मोटो र त्यस्तै आकारको वृक्ष हुन्छ । वनतुलसीका पातहरू दागरहित हुन्छन्, तर लक्ष्मणाका पातहरूमा रगत जस्तै राता दागहरू हुन्छन् । शरद् ऋतुमा फुल्ने र फल्ने गर्छ । अतः असोज-कार्तिक महिनामा यसलाई बडा होशियारीका साथ टिप्नुपर्छ । शनिवारका दिन साँझमा रुख भएको ठाउँमा गएर निमन्त्रण दिएपछि पुष्य, हस्त वा मूल नक्षत्र परेका दिनमा टिपेर ल्याउनू । ल्याउने बेलामा पछि फर्केर नहेर्नू । त्यसलाई ल्याई धोई पखाली रस निकाल्नू र सन्तानको चाहना हुने महिलाको नाकमा राख्नू ।

यसको अभावमा सेतो फल हुने कण्टकारीलाई स्त्रीले आफ्नै दूधमा पिनेर त्यसको रस निकाल्नू र पुत्रको इच्छा भए दाहिने नाकबाट र पुत्रीको इच्छा भए बायाँ नाकबाट पिउन लगाउनू । लक्ष्मणाको प्रयोग पनि यस्तै किसिमले गर्नुपर्छ । गर्भ रहेपछि नाकमा लक्ष्मणा आदिको रस राख्नु पुंसवन कर्मको विधिमा पर्छ ।

बरको कोपिला, पहेँलो काँगियोको फूल, गुलसकरी (बलाभेद), सेतो कण्टकारीको जरा, अपामार्ग, जीवक, ऋषभक र लक्ष्मणा यी बाँझोलाई पुत्र दिलाउने औषधीहरू हुन् तर लक्ष्मणा यी सबैमा मुख्य हो । यसको अभावमा सेतो कण्टकारी र बरको कोपिला आदिले काम लिनुपर्छ । सेतो कण्टकारीको चमत्कार त अनेक पल्ट देखिसकिएको छ । गर्भ बसिसकेपछि गर्भपुष्टिको उपाय गर्नुपर्छ ।

गर्भ रहेको लक्षण – अनेक चतुर नारीहरू गर्भ रहेको कुरा तत्काल अनुभव गर्छन्, सबैले बुझ्न सक्दैनन् । गर्भ रहेको खण्डमा यी लक्षणहरू देखा पर्छन्

– मन प्रसन्न हुन्छ, शरीरमा केही भारीपन रहन्छ कोखामा फरफराएको जस्तो हुन्छ, गर्भाशयमा पुगेको पुरुषको वीर्य फर्केर बाहिर आउँदैन, रजोधर्मपछि १६ दिनसम्म अलिअलि खस्ने पानी बन्द भएर जान्छ, मुटु धड्कन्छ, तिर्खा लाग्छ, भोजनको इच्छा हुँदैन, रोमाञ्च हुन्छ, उँघ्ने-अल्छी लाग्ने हुन्छ ।

योनिरोगबाट पीडित महिलालाई पहिले योनिरोग नाशक फलघृत सेवन गराई स्वस्थ बनाउनुपर्छ । योनिरोग आराम भएपछि भरद्वाज मुनिद्वारा वर्णित फलघृतको सेवन गराउनुपर्छ । त्यस बीचमा पुरुषले पनि वृष्यतम घृत वा अरू कुनै पुष्टिकारक औषधीको सेवन गर्नुपर्छ । जब पुरुष र स्त्री दुवैको वीर्य र रज शुद्ध एवं पुष्ट भएर आउँछ अनि मात्र पहिले भनिएको अश्वगन्धाको योग वा सानो पिप्ला आदिको योग सेवन गराई गर्भाधान गराएमा ९०% (नब्बे प्रतिशत) सफलता मिल्छ ।

योनिरोगनाशक फलघृत – गुर्जो, त्रिफला, रास्ना, हलेदो, दारुहरिद्रा (चुत्रो), शतावरी (कुरिलो), दुवै किसिमको सहचर (सेतो पहेंलो फुल्ने सैरेयक) श्योनाक (टटेलो), मेदा, पुनर्नवा यी सबैलाई समभाग लिई सिलौटोमा पिनेर (२५० ग्राम) लेदो तयार पार्नू । त्यो लेदोका साथ गाईको घिउ १ किलो, गाईको दूध ४ लिटर कलइदार कराहीमा राखी जङ्गली गुइँठाको मन्द आगोमा पकाउनू । घिउ मात्र बाँकी भएपछि उतारेर छान्नू । यो घिउ योनिरोगका लागि रामबाण औषधी हुन्छ । यसको सेवन गर्दा योनिको शूल शान्त हुन्छ । आँग बाहिर आउने, फैलिने आदि सबै किसिमका योनिरोगहरू आराम भई गर्भधारण गर्ने शक्ति आउँछ । योनिरोगमा हित गर्ने यो अति उत्तम घृत हो । (परीक्षित)

भरद्वाज मुनिद्वारा वर्णित फलघृत – कुष्ठ, मोथे, हलेदो, दारुहरिद्रा, कुटकी, पिप्ला, इन्द्रवारुणी, काकोली, क्षीरकाकोली, त्रिफला, कमल, मेदा, रास्ना, वायुविडङ्ग, देवदारु, हिङ, सारिवा (अनन्तमूल), कालोल सारिवा, सूप, बोझो, जेठीमधु, प्रियङ्गु, अजमोदा, महामेदा, चन्दन, रातो चन्दन, चमेली (जाइ)को फूल, वंशलोचन, काफलको बोक्रा र मिश्री प्रत्येक द्रव्य १०-१० ग्राम लिएर कुठी छानी चूर्ण बनाउनू । त्यो चूर्णलाई सिलौटो वा खलमा पानी राखी घोटेर लेदो पार्नू । त्यो लेदोका साथ गाईको घिउ १ किलो, गाईको दूध ४ लिटर मिसाएर कलइ लगाएको कराहीमा राख्नू । अनि जङ्गली गुइँठा बाली त्यसको मन्द आँचमा पकाउनू । जब दूध जति सुकेर घिउ मात्र बाँकी रहन्छ अनि उतारेर छानी भाँडामा राख्नू । यो भरद्वाज मुनिले (पहिलो पटक) बनाएको फलघृत हो । यो घिउ पकाउँदा एकै रङ्गको र बाच्छो जिउँदो भएकी (स्वस्थ) गाईको दूध र घिउ राख्नुपर्छ र जङ्गली गुइँठाको आगोमा पकाउनुपर्छ । यसमा लक्ष्मणाको जरा पनि कल्कको रूपमा राख्नुपर्छ ।

पुरुषले नित्य यो घृत १०-२० ग्राम मात्रामा पिउने गऱ्यो भने वाजीकरणको काम गर्छ । बाँझी महिलाले खाने गरेमा पुत्रको जन्म हुन्छ । जुन स्त्रीहरूको गर्भ तुहिने गर्छ अथवा एउटा सन्तानपछि अर्को जन्मँदैन अथवा जन्मेपछि मरेर जान्छ तिनीहरूलाई यो घृतसेवन गराउनाले बलवान् र दीर्घायु पुत्र जन्मन्छ । (परीक्षित)

बृहत् फलघृत – मजिठो, जेठीमधु, कुठ, त्रिफला, सख्खर, बला, मेदा विदारीकन्द, काकोली, क्षीरकाकोली, अश्वगन्धा, अजमोदा, हलेदो, दारुहरिद्रा, हिङ, कटुकी, निलो कमल, राती फुल्ने कमल, दाख, चन्दन, रातो चन्दन यी सबै १०-१० ग्राम लिएर कुटी छानी पानी मिसाई लेदो पार्नु । उक्त लेदोका साथ गाईको घिउ १ किलो, शतावरीको रस ४ लिटर र गाईको दूध ४ लिटर मिसाई मन्द आगोमा आँचमा पकाउनू । जब शतावरी (कुरिलो)को रस र गाईको दूध जति सुकेर घिउमात्र बाँकी रहन्छ अनि उतारेर छानी सुरक्षित गर्नू । यो घृत अत्यन्त बलवर्धक हुन्छ । यसले योनिरोग र हिस्टिरियामा उत्तम काम गर्छ । बाँझोपनलाई नाश गरी पुत्रलाभ गराउँछ । पुरुषले खायो भने अत्यन्त बलवान् हुन्छ । स्त्रीले खाने गरेमा सुन्दर स्वस्थ छोरो जन्मन्छ । गर्भ नरहने, मरेको बच्चा जन्मने, छोरी मात्र जन्मने समस्या हराउँछ । यसको सेवनले योनिरोग, रजको दोष, गर्भस्राव आदि ठीक हुन्छ । कसैले यसमा लक्ष्मणाको मूल (जरा) पनि राख्छन् ।

वृष्यतम घृत – 'विधारा' (२५० ग्राम) लिएर कुटी छानी पानीसँग घोट्नू र लेदो पार्नू । यो लेदोलाई गाईको घिउ १ किलो र गाईको दूध (४ लिटर) मा मिसाएर मन्द आँचमा पकाएर दूध जति सुकेपछि उतारेर छानी भाँडामा सुरक्षित गरी राख्नू । यो घिउ पुत्र चाहने पुरुषका लागि अति उत्तम हुन्छ । यसको सेवन पुरुषले मात्र गर्नुपर्छ । यसबाट वीर्य पुष्ट हुन्छ । (परीक्षित)

शतावरी घृत – शतावरीको रस १६ लिटर बाच्छो भएकी गाईको दूध १६ लिटर लिनू । मेदा, मजिठो, जेठीमधु, कुठ, त्रिफला, बला, सेतो विदारीकन्द, क्षीरकाकोली, अश्वगन्धा, ज्वानो, हलेदो, दारुहरिद्रा, हिङ, कुटकी, निलो कमल, दाख, चन्दन, रातो चन्दन सबै २०-२० ग्राम प्रत्येक लिएर कुटी छानी पानीका साथ घोटी लेदो पार्नू । अनि बाच्छो सहितकी गाईको घिउ ४ किलो, त्यो लेदो र दूध सबै मिसाई मन्द आँचमा पकाउनू । जब रस र दूध जति सुकेर घिउ मात्र बाँकी रहन्छ तब उतारेर छान्नू र भाँडामा सुरक्षित गरी राख्नू । यस घिउको सेवनले स्त्रीहरूको योनिरोग, उन्माद, हिस्टिरिया र बाँझोपन नष्ट हुन्छ । (अनेकौं पल्ट परीक्षित)

बरको अङ्कुर वा लक्ष्मणालाई दूधमा पिनेर दाहिने नाकबाट (स्त्रीले) पिउनाले छोरीको जन्म हुन्छ ।

पुत्रजीवकको बियाँ, पात र जरालाई दूधमा पिनेर पिउनाले मृतवत्सा (सन्तान भएर मर्दै जाने) दोष ठीक हुन्छ । लक्ष्मणाको जरा र सुदर्शनको जरालाई कन्याको हातबाट पिन्न लगाई घिउ र दूधमा मिसाएर ऋतुकालमा पिउनाले मृतवत्सा दोष ठीक हुन्छ ।

बला, मिश्री, नागबला, जेठीमधु, काकडासिंगी, नागकेशर समभाग लिएर कुटी छानी चूर्ण बनाउनू । त्यो चूर्ण ६-१२ ग्राम मात्रामा घिउ, दूध र महमा मिसाएर खानाले बाँझीलाई पनि गर्भ रहन्छ । (परीक्षित)

शिवलिङ्गीको बियाँ र जिरा ऋतुस्नानपछि दूधसँग पिउनाले गर्भ रहन्छ ।

वाराहीकन्द, खयर र शिवलिङ्गीको बियाँ समभाग लिएर चूर्ण बनाउनू । यो चूर्ण (३-६ ग्राम मात्रामा) ऋतुस्नानपछि खानाले अवश्य गर्भ रहन्छ र सन्तान छोरो नै जन्मिन्छ ।

विदारीकन्दको चूर्ण तीन ग्राम र स्वर्णभस्म १५ मिलिग्राम मिसाएर खानाले पुत्र जन्मन्छ, अश्वगन्धाको जरा (चूर्ण ३ ग्राम)सँग चाँदीको भस्म (१२५ मिलीग्राम) बाच्छीसहितकी गाईको दूधसँग खानाले बाँझीलाई पुत्र हुन्छ । यसमा कुनै शङ्का छैन । (परीक्षित)

जुन बाँझीलाई कुनै पनि प्रयासबाट गर्भ रहँदैन उसले यो योग ३ दिनसम्म सेवन गरोस् । अवश्य पनि गर्भ रहनेछ ।

शिवलिङ्गीको बियाँलाई बाच्छो भएकी गाईको दूधसँग पिनेर चाँदीको भस्म (१२५ मिलीग्राम) मिसाई खानाले बाँझीलाई पनि पुत्र हुन्छ । यसमा शङ्का छैन ।

ऋतुस्नानपछि नागकेशरलाई अतिबलासँग पिनेर दूधसँग सेवन गरेमा अवश्य चिरञ्जीवी पुत्र उत्पन्न हुनेछ ।

गर्भरोधक औषधीहरू

वर्तमान समयमा बढ्दो जनसंख्यालाई कम पार्न र परिवारलाई राम्ररी सञ्चालन गर्न सानो परिवारको चलन सर्वत्र आएको छ । महिलाको स्वास्थ्यको हकमा पनि सानो परिवार सुविधाजनक हुन्छ । यसै भएर प्राचीन समयमा गर्भ रहन नदिने उपायहरूको बारे विचार गरिएको थियो ।

एक-दुई सन्तान जन्मेपछि अथवा एकपछि अर्को सन्तान जन्मने समयमा २-३ वर्षको अन्तर पार्न गर्भरोधक उपायहरू गर्नुपर्ने हुन्छ । ती उपायहरू प्रायः महिलाहरूद्वारा गरिने र खाने वा लगाउने औषधीका रूपमा छन् -

खाने औषधीहरू

स्त्रीले आफ्नो मासिक धर्म हुने समयमा पिप्ला, वायुविडंग र शुद्ध स्वाग (टङ्कण) समभाग लिएर चूर्ण बनाई राख्नू । अनि ऋतुस्नानपछि १-१ मात्रा (३ ग्राम)

बिहान-बेलुका फाँकी पानी वा दूध सेवन गर्नुपर्छ । यो चूर्ण ऋतुकालको ५ दिन र त्यसपछिको ३ दिन गरी (जम्मा ८ दिन) सेवन गर्नुपर्छ । (परीक्षित)

४० ग्राम हर्रोको भित्री बियाँमा मिश्री मिसाएर राख्नू र तीन दिनसम्म प्रतिदिन २५-३० ग्राम मात्रामा खाने गर्नू । यसो गर्दा मासिक धर्म पनि हुँदैन र गर्भ पनि रहँदैन ।

पलासको बियाँको खरानी चिसो पानीसँग खानाले गर्भ रहँदैन । उक्त खरानीमा हिङ मिसाएर दूधसँग खाए पनि गर्भ रहँदैन ।

तालीसपत्र र शुद्ध गेरु दुवै २०-२० ग्राम लिएर चूर्ण बनाइराख्नू । त्यो चूर्ण चिसो पानीसँग ४ दिन खानाले गर्भ रहँदैन । महिलाले रजोधर्मको पहिलो दिनदेखि लगातार १९ औं दिनसम्म हलेदो र पिप्लाको चूर्ण बनाई (३ ग्राम मात्रामा सेवन गरेमा गर्भ रहँदैन ।

मैथुनपश्चात् योनिमा मरिच पिनेर राख्नाले गर्भ रहँदैन । महिलाले ३ ग्राम ३७५ मिलीग्राम नील खाएमा कहिले पनि गर्भ रहँदैन ।

महिलाले चमेलीको एउटा कोपिला निलेको खण्डमा वर्ष भरी गर्भ रहँदैन । त्यस्तै अडेरको १ बियाँको गुदी खाएमा १ वर्ष र दुईटा बीउको गुदी खाएमा २ वर्ष गर्भ रहँदैन । मैथुनको समयमा योनिमा नुन राख्नाले गर्भ रहँदैन ।

माजूफललाई पानीमा पिनेर त्यसमा कपास चोपी मैथुन भन्दा पहिले योनिमा राख्नाले गर्भ रहँदैन र मैथुन पश्चात् गर्भाशयमा दुख्ने गर्छ भने त्यो पनि ठीक हुन्छ ।

गर्भिणी रोगको चिकित्सा -

ज्वरमा - रातो चन्दन, अनन्तमूल, लोध, दाख, मिश्री यी सबै राखी पकाएको काढा पिउनाले गर्भिणीको ज्वर शान्त हुन्छ ।

सुठोको चूर्ण बाखाको दूधसँग खानाले गर्भिणीको विषम ज्वर आराम हुन्छ ।

अतिसार-ग्रहणी रोगमा - आँप र जामुनको बोक्रा १०-१० ग्राम लिएर काढा पकाउनू । अनि त्यसमा धानको लावाको चूर्ण मिसाएर खानाले गर्भिणीको ग्रहणीरोग तत्काल शान्त हुन्छ ।

अजीर्ण र आध्मानमा - गर्भिणीको पेट अजीर्णले फुलेको छ भने बोझो र लशुन पिनेर लेदो पार्नू । त्यस लेदोलाई दूधमा हालेर पकाउनू । त्यसपछि हिङ र कालो नुन मिसाएर पिउन दिनू । यसले पेट फुलेको समाप्त हुनेछ ।

गर्भिणीको दाह आदिमा - शीतल हुने उपाय गर्नुपर्छ ।

गर्भस्राव र गर्भपात - महिला गर्भवती भएको दिनदेखि चार महिनासम्ममा रगतको रूपमा अचानक स्राव हुन थालेमा त्यसलाई गर्भस्राव भनिन्छ । पाँचौं

महिनापछि गर्भले शरीरको आकार लिन थाल्छ तर त्यो अधूरो हुन्छ । त्यस अवस्थामा गर्भ बाहिर निस्कनुलाई गर्भपात भनिन्छ ।

गर्भावस्थामा मैथुन, धेरै हिंड्नु, हात्ती-घोडाको सवारी, भयग्रस्त हुनु, तीक्ष्ण - तातो, पिरो, सुख्खा खाने कुराहरूको सेवन आदि कारणबाट गर्भस्राव वा गर्भपात हुन्छ ।

पूर्वरूप – गर्भिणीलाई एकाएक शूल र योनिबाट रगतको स्राव हुन थाल्यो भने गर्भस्राव अथवा गर्भपात हुन लागेको बुझ्नुपर्छ । गर्भपात हुने बेलामा जलन हुन्छ, कोखामा शूल चल्छ, पछाडी कम्मरतिर दुख्छ, योनिबाट रगत बग्छ, अजीर्ण हुन्छ र पिसाब रोकिन्छ ।

गर्भको स्थानान्तरण – जब गर्भ एक स्थानबाट अर्को स्थानमा जान्छ तब आमाशय र पक्वाशयमा क्षोभ हुन्छ, कोखामा शूल चल्छ, पिठ्यूँमा दुख्ने हुन्छ, पेट फुल्छ, जलन हुन्छ, पिसाब पनि रोकिन्छ ।

यदि कुनै महिलालाई गर्भपात हुने रोग नै छ भने हरेक महिनामा गर्भरक्षक औषधीको सेवन गराएर गर्भपातबाट संरक्षण दिनुपर्छ । यदि गर्भवती कम उमेरकी छ, दुखाई सहन योग्य छैन, गर्भ मरेर जाने वा कुनै जटिल रोग लाग्ने सम्भावना छ भने यस्तो अवस्थामा गर्भपात गराइदिनु उचित हुन्छ ।

गर्भपातको चिकित्सा – कुमारी कन्याले कातेको धागो लिएर गर्भवतीको टाउको देखि खुट्टासम्म नाप्नू । यस नापको २१ (एक्काइस) तार लिनू अर्थात् एक्काइस पटक बेर्नू । अब कालो धतुरोको जरा ल्याई सात टुक्रा पार्नू । ती सात टुक्राहरूलाई त्यही धागोले बेग्लाबेग्लै बीचमा ठाउँ खाली राखी बाँध्नू र त्यो धागो गर्भवतीको कम्मरमा बाँधिदिनू, कदापि गर्भपतन हुँदैन ।

भीमसेनी कपूरलाई गुलाब जलमा पिनेर योनिमा दल्नाले गर्भपात हुन पाउँदैन ।

डुम्रीको जरा वा जराको बोक्राको काढा पिउनाले गर्भपतन वा गर्भस्राव रोकिन्छ । यदि गर्भ चलायमान छ भने गाईको दूधमा काँचो डुम्रीको गेडा पकाएर पिउन दिनुपर्छ ।

विदारीकन्द, अनारको पात, काँचो हलेदो, त्रिफला, सिंघाडाको पात, जाती (जाइ-चमेली)को फूल, शतावरी, निलो कमल, सेतो कमल यी सबै २०-२० ग्राम लिएर सिलौटोमा पिनी लेदो पार्नू लेदोको चौबर तिलको तेल र त्यसको चौबर पानी राखी तेलको विधिले तेल पकाउनू । यस तेलको मालिसले गर्भशूल, गर्भस्राव आदि नष्ट हुन्छन्, हुन लागेको गर्भपतन पनि रोकिन्छ । यसलाई गर्भविलास तेल भन्छन् । (परीक्षित)

शीघ्र प्रसव गराउने उपाय – राजवृक्षको बोक्रा १८ ग्राम लिएर काढा बनाउनू र महिलालाई खान दिनू । बच्चा सुखपूर्वक जन्मन्छ । (परीक्षित)

· कालो अथवा अरू कुनै प्रकारको सर्पको काँचुली आगोमा राखी त्यसको धुवाँ स्त्रीको योनिमा दिएमा बालक र सालनाल सजिलोसँग निस्केर आउँछन् तर यसको विषले प्रायः बालक मर्ने गर्छ। अतः जब बालक पेटमै मरिसकेको अवस्था हुन्छ त्यसमा मात्र यो उपाय गर्नुपर्छ। मरेको बच्चा र सालनाल निकाल्नका लागि यो परीक्षित उपाय हो। यसबाट पनि बच्चा निस्केन भने नर्सले हात पसाई बच्चालाई निकाल्नुपर्छ। गर्भिणीको बायाँ तिघ्रामा चुम्बक पत्थर राखे पनि बच्चा सुखपूर्वक जन्मन्छ। (परीक्षित)

गर्भिणीलाई हिङ खान दिएमा बच्चा सजिलै जन्मन्छ। पिप्ला र बोझोलाई पानीसँग पिनेर अडेरको तेलमा मिसाई स्त्रीको नाभिमा लेप गर्नाले बच्चा सुखपूर्वक जन्मन्छ। इन्द्रवारुणीको जरालाई मसिनो पारी पिनेर घिउमा मिसाई योनिमा राख्नाले बच्चा सुखपूर्वक जन्मन्छ। गाईको दूध १०० मि.लि. मा २०० मि.लि. पानी मिसाई पिउन दिए पनि बच्चा कुनै कष्ट विना जन्मन्छ।

अपामार्गको जरा योनिमा राख्नाले बच्चा सुखले जन्मन्छ। सूर्यमुखी फूलको जरालाई धागोमा बाँधेर हात वा टाउकोमा बाँध्नाले बच्चा छिटै जन्मन्छ। (परीक्षित)

पेटभित्र मृत बालकको पहिचान – यदि गर्भ पत्थर जस्तो कडा भएको भान हुन्छ, गर्भिणीले कोल्टो फेर्दा गर्भ ढुंगा जस्तो यता-उता भएर जान्छ, गर्भिणीको नाभि अपेक्षाकृत चिसो हुन्छ, छाती कमजोर भएको छ, आँखाको सेतो भागमा कालोपना देखिन थालेको छ अथवा नाक, कान र टाउको सेतो भएर आए पनि ओठमा लाली नै छ, हात खुट्टा चिसो हुँदै गएका छन् श्वास लगातार छिटो चल्न थालेको छ भने पेटमा बच्चा मरिसकेको भन्ने सम्झनुपर्छ। यस अवस्थामा गर्भपतन गराएर गर्भिणीको जीवनको सुरक्षा गर्नुपर्छ। मृत बच्चाको चारैतिर रहने जालो वा झिल्ली पेटमा अधिक समयसम्म रहन गएमा महिलाको मृत्यु हुने भय रहन्छ अतः त्यसलाई चाडै नै निकाल्ने उपाय गर्नुपर्छ।

पेटभित्र बालक मृत भएको अवस्थामा गर्भ पतन हुने उपायहरू निम्नानुसार गर्नुपर्छ –

गाजरको बियाँ, तिल, चिरौंजी यी तीनैथरी समभाग लिएर गुडका साथ दिएमा निश्चय नै गर्भपात हुन्छ।

आलसको तेल पकाएर त्यसमा गुड मिसाई खान दिएमा ३-४ दिनमा गर्भपात भएर जान्छ। इन्द्रवारुणीको जरालाई पिनेर बत्ती बनाई योनिमा राख्नाले गर्भपतन हुन्छ। अथवा इन्द्रवारुणीको पातको रस निकालेर पिचकारीद्वारा गर्भाशयमा पुऱ्याउनाले अथवा कपडाको बत्ती बनाई उक्त रसमा भिजाएर योनिमा राख्नाले गर्भ पतन हुन्छ।

तोरीको तेलमा साबुन मिसाएर त्यसमा कपासको डल्लो भिजाई गर्भाशयको मुखमा राख्नाले गर्भ निस्कन्छ।

सहिजनको बोक्रा र पुरानो गुड पकाएर पिउनाले गर्भको पतनका साथ सालनाल पनि निस्कन्छ ।

खाली पेटमा १० ग्राम शोरा (कलमी) खाएमा गर्भपतन हुन्छ । जब गर्भपात हुन्छ अनि घिउमा कपास भिजाई गर्भाशयमा राख्नू । यसो गर्नाले दुख्दैन ।

गोखुर ६ ग्राम, खर्बुजाको बियाँ १२ ग्राम, सूप १२ ग्राम २५० मि.लि. पानीमा पकाई चौथाइ बाँकी भएपछि छानी मिश्री मिसाएर खान दिनू । यसबाहेक खानलाई केही नदिनू । शुद्ध पानीको ठाउँमा कपासको हरियो गाँठ र बाँसको हरियो गाँठ (जरा) प्रत्येक ८०-८० ग्राम राखी पकाएको पानी खान दिनू । जुन महिलाको मृत बच्चा निस्कन्छ उसलाई यही पिउन दिन्छन् र खानलाई केही दिनसम्म कुनै कुरा दिँदैनन् । यो पानीको सेवनले विष चढ्न पाउँदैन ।

ओखरको बोक्रा, कपासको बियाँ, मूलाको बियाँ, गाजरको बियाँ, सोयाको बियाँ, मुगरेलो सबै समभाग लिएर मोटो मोटो हुने गरी कुट्नू , अब सबैको बराबर पुरानो गुड लिएर सबलाई हाँडीमा एकसाथ पकाउनू । जब एक चौथाइ पानी बाँकी रहन्छ अनि छानेर पिउन दिनू । यसले गर्भपतन गराइदिन्छ । (परीक्षित)

१०. सूतिका रोग (सुत्केरी संबन्धी रोगहरू)

बच्चालाई जन्म दिएको दिनदेखि १.१/२ महीनासम्म स्त्रीलाई प्रसूता वा सूतिका भनिन्छ । सूतिका अवस्थामा हुने रोगलाई सूतिकारोग भन्छन् ।

जोर्नी तथा अङ्गहरू दुख्नु, ज्वरो, खोकी, प्यास, शरीरमा भारीपन, शोथ, शूल, अतिसार, प्रलाप र काम्नु यी सबै सूतिका रोगका लक्षण हुन्छन् ।

सूतिका अवस्थामा भारी भोजन, आगो ताप्नु, मल मूत्रको वेग रोक्नु, परिश्रम, मैथुन, चिसो हावाको सम्पर्क यी हानिकारक हुन्छन् ।

मक्कल शूल – बच्चा तथा सालनाल योनिबाट बाहिर आउने बित्तिकै नर्सले प्रसूताको योनिलाई तत्काल भित्रतिर नथिचेमा अथवा उचित उपचार नगरी ढिला गरेमा प्रसूताको योनिमा वायुले प्रवेश गर्छ । वायु कुपित हुनाले हृदय र तल्लो पेटमा शूल चल्छ, अजीर्ण हुन्छ, नाभिको तल फुलेर आउँछ । कोखाहरूमा, मूत्राशयमा अथवा मूत्राशयको माथिल्लो भागमा गाँठो उत्पन्न हुन्छ, यस गाँठोका कारण नाभि, मूत्राशय र पेटमा दुख्ने हुन्छ, पिसाब रोकिन्छ, यसलाई पूर्णशूल वा मक्कल शूल भनिन्छ ।

चिकित्सा – यवक्षारको मसिनो चूर्ण ५०० मिलीग्राम बनाई १ ग्राम मात्रामा मनतातो पानी अथवा घिउसँग खानाले यस रोगलाई आराम गर्छ ।

सुठो, मरिच, पिप्ला, दालचिनी, तेजपात, सुकमेल, नागकेशर, धनियाँ सबै समभाग लिएर चूर्ण बनाई पुरानो गुडमा खान दिनू । यसले शूललाई आराम गर्छ ।

सूतिका रोगमा उपयोगी औषधीहरू

सौभाग्य शुण्ठी पाक – सुठो ३२० ग्रामलाई कुटेर छानी चूर्ण बनाउनू । अनि त्यो चूर्णलाई गाईको ३२० ग्राम घिउमा मन्द आगोको आँचमा भुट्नू । रातो हुन थालेपछि गाईको दूध १ लिटर २८० मि.लि. मा चिनी २ किलो राखी पकाउनू । पाक्न लागेपछि त्यसमा धनियाँ १२० ग्राम, सूप २०० ग्राम, वायुविडङ्ग, सुठो, मरिच, पिप्ला, नागरमोथा, तेजपात, नागकेशर, दालचिनी, सुकमेल सबै ४०-४० ग्राम लिई बनाएको चूर्ण मिसाई पाक्न दिनू । पाकिसकेपछि सफा भाँडोमा राख्नू । यसको सेवनले सूतिका रोगसम्बन्धी उपद्रवहरू शान्त हुन्छन् ।

सूतिकाविनोद रस – अभ्रक भस्म २ ग्राम, शुद्ध तुथो २० ग्राम, सुठो १० ग्राम, मरिच २० ग्राम, पिप्ला ३० ग्राम, जाइपत्री २० ग्राम ठीक पार्नू र कुटी छानी सबैलाई मिसाएपछि सिमालीको रसमा ३ घण्टासम्म घोट्नू । त्यसपछि २५० मिलिग्राम मात्राका गोलीहरू बनाई छायामा सुकाएर सिसीमा सुरक्षित गरी राख्नू ।

यो औषधी १-१ गोली बिहान-बेलुका मह वा गाईको दूध अथवा दशमूलको काढासंग खान दिनू । यसबाट सबै किसिमका सूतिकारोगहरू शान्त हुन्छन् ।

सूतिका गजकेशरी रस – शुद्ध पारो, शुद्ध गन्धक, शुद्ध वत्सनाभ विष, अभ्रक भस्म, स्वर्णमाक्षिक भस्म, त्रिकटुको चूर्ण सबै समभाग लिएर मिसाइराख्नू । यो औषधी २५०-५०० मिलीग्राम मात्रामा उचित अनुपानसँग खान दिनू । सूतिकाहरूका सबै किसिमका रोग नष्ट हुन्छन् ।

थुनेलो भएमा – घिउकुमारीको रस र हलेदो मिसाई आगोमा तताएर थुनहरूमा लेप गर्नू । सुनिएको तत्काल बस्छ ।

थुनहरू पाकेमा नीमको तेल लगाउनू । अवश्य ठीक हुनेछ ।

कर्कोटक र जटामसीको जरा पानीसँग पिनी बनाएको कल्क (लेदो) थुनमा लेप गर्नाले जादू गरे झैं थुन पाकेकोमा आराम हुन्छ ।

दूधसम्बन्धी रोगहरूको लक्षण र चिकित्सा – बालक जन्मेपछि त्यसको पहिलो आहार आमाको दूध हुन्छ । आमाको स्वास्थ्य राम्रो भएमा उनको दूध पनि बालकका लागि स्वाथ्यकर हुन्छ । आमाको स्वास्थ्य कमजोर तथा खान-पिन र व्यवहार पनि राम्रो नभएमा उनको दूधले बालकको (स्वास्थ्यका लागि) हित गर्दैन । अतः बालकको स्वास्थ्यका लागि आमाको स्वास्थ्य र उनको दूधको अवस्थाको पनि

विचार राख्नुपर्छ । त्यही आधारमा कुनै खराबी देखिएमा चाँडै नै तिनको उपचार गर्नुपर्छ ।

दूषित दूधको पहिचान – आमाको दूध पानीमा हाल्दा पानीमा नघुलेर सतहमा देखिन्छ भने वायुद्वारा दूषित भनी बुझ्नुपर्छ । दूध खाने बच्चाको स्वर बसेको छ, शरीर दुब्लाएर गएको छ, मल-मूत्र र अधोवायु रोकिएर गएको छ भने दूध वायुद्वारा दूषित भएको बुझ्नुपर्छ ।

दूध बाक्लो, लेसिलो छ र पानीमा हाल्दा तल डुब्छ भने त्यो कफद्वारा दूषित भनी बुझ्नुपर्छ । त्यस्तो दूध खाने बालकको मुखबाट च्याल आउँछ, खाएको दूध ओकल्छ, त्यो बालक धेरै समयसम्म सुत्ने हुन्छ ।

पित्तद्वारा दूषित दूधको रङ्ग अलि पहेंलो हुन्छ र त्यसबाट नराम्रो गन्ध आउँछ । त्यस्तो दूध खाने बालकको शरीरमा बढी पसिना आउँछ, दिसा पातलो हुन्छ, प्यास बढी लाग्छ, शरीर तातो हुन्छ र पित्तसम्बन्धी उपद्रवहरू पनि हुन्छन् ।

दूषित दूधको उपचार – आमाको दूध वायुद्वारा दूषित छ भने आमालाई ३ दिनसम्म दशमूलको काढा खान दिनुपर्छ ।

आमाको दूध पित्तद्वारा दूषित छ भने गुर्जो, कुरिलो, पर्वरको पात, नीमको पात, रातो चन्दन र अनन्तमूलको काढा बनाएर खान दिनू ।

आमाको दूध कफद्वारा दूषित छ भने आमालाई त्रिफला, मोथे, चिराइतो, कुटकी, भार्गी, देवदारु, बोझ्नोको काढा बनाएर खान दिनू ।

पर्वरको पात, नीमको पात, विजयसाल, देवदारु, पाठा, मरोडफली, गुर्जो, कुटकी र सुठो यी सबैको काढा बनाएर खान दिएमा कुनै पनि दोषद्वारा दूषित दूध शुद्ध हुन्छ ।

दूध बढ्ने उपायहरू – कुनै महिलाहरूमा सुत्केरी भएपछि पर्याप्त दूध नआउँदा बालकको राम्रो पोषण हुन पाउँदैन । त्यस अवस्थामा दूधको कमी हुने कारणको खोजी गरी उचित उपायहरू गर्नुपर्छ । महिलाको दूध कम हुनुमा कमजोरी अथवा उचित मात्रामा पोषिलो भोजन नमिल्नु मुख्य कारण हुन्छ । अतः दूध कम भएको अवस्थामा पोषिलो भोजनको व्यवस्थाका साथ निम्न लिखित औषधीहरूको सेवन गराउनु पर्छ । सेतो जिरा, साठी (घैया) चामल दुवैलाई दूधमा पकाएर केही दिनसम्म खाएमा थुनमा दूध बढेर आउँछ । (परीक्षित)

कमलगट्टा (कमलको बियाँ)को चूर्ण दूध र दहीसँग खानाले स्तनमा पर्याप्त दूध आउँछ ।

विदारीकन्दको रस पिए पनि दूध निकै बढेर आउँछ । जिराको धुलो दूधमा मिसाएर पिउनाले खूब दूध आउँछ । शतावरीलाई दूधमा पिनेर पिउनाले दूध बढ्छ । तातो दूधसँग पिप्लाको चूर्ण खानाले बढी मात्रामा दूध आउँछ ।

११. बालरोग (बालकका रोग)

बालकहरू तीन प्रकारका हुन्छन् – क्षीरप (दूधे बालक), क्षीरान्नाद (दूध र अन्न खाने बालक) र अन्नाद (अन्न खाने बालक) ।

क्षीरप अवस्थाका बालकहरू आमाको दूध दूषित भएमा रोगी हुन्छन् । बालक अवस्थामा प्राय हुने विशेष रोगहरूमा तालुकण्टक, महापद्मक, कुकूणक, नाभितुण्डी, गुदपाक, अहिपूतन, अजगल्लिका, पारिगर्भिक र दन्तोद्भेदज रोगहरू पर्छन् । यसबाहेक ठूला मानिसहरूलाई हुने रोग पनि बालकहरूलाई हुन्छन् ।

तालुकण्टक रोगको कारण र लक्षणहरू – कुपित वायु र पित्त मिलेर तालुको मांसलाई दूषित बनाई तालुकण्टक रोग उत्पन्न गर्छन् ।

यसमा तालु तलतिर झरेर आउँछ । यसकारण बालकले आमाको दूध चुस्न सक्दैन, चुसे पनि कम मात्रामा चुस्छ । यस अवस्थामा दिसा पातलो हुन्छ, तिर्खा लागिरहन्छ, आँखा, घाँटी र मुखमा दुख्ने हुन्छ । बच्चाले घाँटी एकतिर फेर्छ, बान्ता पनि गर्छ । यसमा ज्वरो पनि आउँछ, कानको जरा र नाक तातो हुन्छ र लत्रिन्छ । मलद्वारबाट बराबर स्राव भइरहन्छ ।

चिकित्सा – हर्रो, बोझो, कुठ सबै समभाग लिई पानीसँग पिनी लेदो पारी मह मिसाई आमाको दूधसँग बि.बे.खान दिनू तालुकण्टक रोगमा फाइदा गर्छ । उक्त लेदोलाई आमाको दूध वा चौलानीसँग पनि दिन सकिन्छ । (परीक्षित)

महापद्मक रोग – वात आदि तीनै दोष कुपित भएर बालकको टाउको वा वस्ति प्रदेश (मूत्राशय) यी दुई भागमा विसर्प[1] जस्तै लक्षण भएको रोग उत्पन्न गर्छन् । रोग भएको ठाउँ रातो कमल जस्तै रातो हुन्छ । यो शङ्ख अर्थात् कम्पारोबाट हृदयसम्म र हृदयबाट गुदद्वारसम्म सर्दै जान्छ । यो प्राणनाशक हुनाले असाध्य मानिन्छ ।

चिकित्सा – सारिवा (दूधे लहरो), रातो कमल, निलो कमल, नागरमोथा, खस, सेतो चन्दन, मजिठो, जेठीमधु, सर्स्यू यी सबैलाई मसिनो गरी पिनेर लेप गर्नाले विसर्प आराम भएर जान्छ ।

---

१. विसर्प रोग रक्त, मांस र छाला दूषित भएर उत्पन्न हुन्छ । यो ८ प्रकारको हुन्छ । कसैमा रातो रातो मोटो खस्रो गाँठो लहरै निस्कन्छ । कसैलाई जुन ठाउँमा रोग उत्पन्न भएको छ त्यहाँको छाला निलो, रातो वा निभ्न लागेको अंगार जस्तो हुन्छ । त्यहाँ आगोले पोलेजस्तो डाबर हुन्छ जुन छिटो छिटो अन्त सर्दै जान्छ । यसमा रोगी बेहोश हुँदै जान्छ, उसलाई चैन रहँदैन, कसैकसैमा पहेंलो रातो विमिरा तथा शोथ (सूज) भएर आउँछ । कसैमा गहतको दाना समान खटिरा हुन्छन् । साथमा ज्वर, अतिसार, वमन आदि उपद्रव पनि हुन्छन् ।

घरको धुवाँ, बेसार, कुठ, राल (सालधूप), इन्द्रजौ सबलाई पिनेर लेप गर्नाले विसर्प रोगको शमन हुन्छ ।

तितो पर्वर, त्रिफला र बेसारको काढा पिउनाले विस्फोटक ज्वर नष्ट हुन्छ ।

बर, डुम्री, पिपल, पाखुरी, वेत, जामुनु यी सबैका बोक्रा, बेसार, मजिठो, चन्दन, खस, पद्मक (पैयुँ) यी सबलाई पिनेर लेप गर्नाले बालकहरूको घाउको डाहा, लाली फोका, पीडा आदि शान्त हुन्छन् ।

कुकूणक रोगको लक्षण – आमाको दूधको दोषका कारण बालकहरूको आँखाको ढकनीमा यो रोग उत्पन्न हुन्छ । यसमा बालकको आँखा बढी चिलाउने गर्छ । आँखाबाट लगातार स्राव भइरहन्छ । उसले निधार, आँखा, नाक आदि बारम्बार मिच्ने गर्छ । सूर्यको किरण वा घामतिर हेर्न सक्दैन, आँखा पनि पूरै खोल्दैन ।

चिकित्सा – त्रिफला, पुनर्नवा, कण्टकारी यी सबैलाई पानी सँग पिनेर मनतातो पारी आँखाको परेलामा लेप गर्नाले कुकूणक रोग नष्ट हुन्छ ।

नाभितुण्डीको लक्षण – बालकको जन्म भएपछि नाल काट्दा असावधानी भएमा वायुको प्रकोप भई नाभि फुलेर आउँछ र त्यहाँ पीडा हुन्छ । त्यसलाई नाभितुण्डी भनिन्छ ।

चिकित्सा – माटाको डल्लोलाई आगोमा तताएपछि दूधमा मुछेर मनतातो अवस्थामा नाभिमा लेप गर्नू । नाभि सुनिएको बस्छ ।

चन्दनको मसिनो चूर्ण बनाई नाभिमा छर्कनू । नाभि पाकेकोमा आराम हुन्छ ।

नाभि उथल भएर गएको (माथि उठेको) छ भने हरियो धनियाँ पिनेर बनाएको लेदो त्यस ठाउँमा लेप गर्नुपर्छ ।

गुदपाकको लक्षण– पित्तको प्रकोपका कारण बालकको गुदद्वारमा घाउ उत्पन्न भएर पाक्छ ।

चिकित्सा– यसमा पित्तनाशक चिकित्सा गर्नुपर्छ । विशेष गरी रसाञ्जन खान दिने र घाउमा त्यसको लेप बनाएर लगाउने गर्नुपर्छ । (परीक्षित)

अहिपूतन रोगको लक्षण – बालकले दिसा-पिसाब गरेपछि गुदद्वार सफा नगरेमा अथवा पसिना आएको नपखालेमा कफको प्रकोप र रगतको दोषका कारण त्यहाँ चिलाउन थाल्छ ।

चिलाएको ठाउँ कन्याउँदा छिट्टै त्यहाँ फोका उठ्ने र स्राव निस्कने हुन्छ र घाउ बन्छ । त्यस्तो रोगलाई अहिपूतन भनिन्छ ।

चिकित्सा – शंख, सेतो सुर्मा, जेठीमधु यी सबैलाई चूर्ण बनाई पानीसँग घोटी लेप गर्नाले अहिपूतन रोगमा आराम हुन्छ ।

अजगल्लिकाको लक्षण – बालकहरूको शरीरमा कफ र वायुको प्रकोप भएर चिल्ला देखिने, छालाकै जस्तो रङ्ग भएका, नदुख्ने, मूँगको गेडा जत्रा पिडकाहरू उत्पन्न हुन्छन् । तिनीहरूलाई अजगल्लिका भनिन्छ ।

चिकित्सा – अजगल्लिका पाक्न नपाउँदै सुरुकै अवस्थामा रोग भएको ठाउँबाट जुका लगाई रगतको निष्कासन गर्नुपर्छ । पाकेपछि व्रण अर्थात् घाउ जस्तै उपचार गर्नुपर्छ ।

पारगर्भिकको लक्षण – काखमा एउटा बालक छँदैमा अर्को बालक जन्मने गरी आमा गर्भवती भएमा बालकले गर्भवती आमाको दूध खान्छ । त्यसरी दूध खाने बालकमा कहिलेकाहीं खोकी लाग्ने, अग्नि मन्द हुने, बान्ता हुने, उँघ्ने, खान मन नगर्ने जस्ता लक्षण देखिन्छन्, पेट पनि फुलेर ठूलो देखिन्छ । यस्तो लक्षण हुने रोगलाई पारिगर्भिक अथवा परिभव भनिन्छ ।

चिकित्सा – यसमा अग्नि दीपन हुने उपाय गर्नुपर्छ ।

दन्तोद्भेदजन्य रोगहरू – बालकको पहिलो पटक दाँत निस्कने बेलामा प्रायः अनेक किसिमका रोगहरू उत्पन्न हुन्छन्, जस्तै – ज्वरो आउनु, पखाला, खोकी, वमन, टाउको दुख्नु, आँखा दुख्नु, विसर्प हुनु आदि । तिनीहरूलाई दन्तोद्भेदजन्य रोग भनिन्छ ।

चिकित्सा – यसमा कुपित दोषको अवस्था अनुसार औषधी दिनुपर्छ । चातुर्भद्र चूर्णको सेवन महसँग गर्न दिनु पर्छ ।

बालकहरूमा हुने सामान्य रोग एवं उपचार

दूधको वमन – बालकले आमाको दूध खाने बित्तिकै वमन गर्छ । जब यो बारम्बार दिनदिनै हुनथाल्छ अनि त्यसलाई रोग मान्नुपर्छ । यसमा सुरु-सुरुमा फाटेको दूध अथवा दही जस्तो वमन हुन्छ । त्यसमा अमिलो किसिमको दुर्गन्ध आउँछ । केही दिनपछि पानी जस्तो पातलो बान्ता आउँछ । बच्चाले जे पनि खान्छ त्यो बान्ता भएर जान्छ । त्यसको पेट फुल्छ, पेटमा घूँ घूँ आवाज आउँछ । कहिले कब्जियत हुन्छ, कहिले पखाला चल्छ । शरीर कमजोर हुँदै जान्छ, शरीरको रङ्ग पहेंलो हुन जान्छ । छाला रुखो र चिसो हुन्छ । बच्चा जिद्दी भएर जान्छ ।

चिकित्सा – दालचिनी, सुकमेल, तेजपात र नागकेशरलाई कुटी छानी चूर्ण बनाएर मिसाइराख्नू । यो चूर्ण महमा मिसाई चटाउनाले बालकहरूको वमन नष्ट हुन्छ ।

कुटकीको मसिनो चूर्ण महमा मिसाई चटाउनाले बालकहरूको धेरै पुरानो वमन र हिक्का नष्ट हुन्छ । (परीक्षित)

आँपको कोयोभित्रको गुदी, धानको लावा, सिंधे नुन यी सबै समभाग लिएर बनाएको चूर्ण महमा मिसाई चटाइदिनाले बालकहरूको दूध वमन हुन छोड्छ ।

जेठीमधु र पिप्लालाई पिनेर बिमिरोको रसमा मिसाई चटाउनाले बालकहरूको वमन रोकिन्छ ।

शुद्धस्वर्ण गैरिकलाई महमा मिसाई चटाउँदा पनि बालकको वमन शान्त हुन्छ ।

ज्वरको चिकित्सा – नागरमोथा, हर्रो नीम, तितो पर्वरको पात, जेठीमधु, यिनको काढा बनाएर मनतातो भएपछि खान दिनू । मात्रा- १०-२० मि.लि., दिनको ३ पटक । सबै किसिमका ज्वर आराम हुन्छन् । (परीक्षित)

नागरमोथा, पिप्ला, उत्तिस,[1] काकडसिंगी चारैलाई पिनेर छानी समभागमा मिसाएर राख्नू । यो चातुर्भद्र चूर्ण हो । यो चूर्ण महमा मिसाई चटाउनाले बालकको ज्वर, अतिसार, खोकी, वमन, श्वास यी सबै आराम भएर जान्छन् । यो योग बालकहरूका लागि अमृत हो । यो अनेक पटक परीक्षित पेटेन्ट औषधी हो । यस योगबाट ज्वरो र खोकी निश्चय नै आराम हुन्छ । यदि खोकीको चाप छ र खोकी कम हुँदैन जस्तो लाग्यो भने यसमा जवासा पनि मिसाइदिनू । यदि पखालाको चाप छ भने नागरमोथाको ठाउँमा धनियाँ मिसाउनू ।

कुटकीको चूर्ण बनाई त्यसलाई मिश्री र मह मिसाई चाट्नाले अथवा कुटकीलाई पानीमा पिनेर बच्चाको पूरा शरीरमा लेप गर्नाले पनि ज्वर शान्त भएर जान्छ ।

नागरमोथा, काकडासिंगी र उत्तिस समभाग लिएर कुटी-छानी चूर्ण बनाउनू र महमा मिसाई बालकलाई चटाउनू । बालकहरूको ज्वर, खोकी र वमनलाई निश्चय नै ठीक पार्दछ । (परीक्षित)

मुखस्राव र मुखपाकको चिकित्सा – सारिवा, तिल, लोध र जेठीमधु यी सबैको काढाले मुख धुनाले अथवा धुलो बनाई मुखमा लगाउनाले मुखमा स्राव कम हुँदै जान्छ । (परीक्षित)

---

१. उत्तिस (अतिविषा)लाई 'शिशु भैषज्य' पनि भनिन्छ । यसलाई चढ्दै गरेको जरोमा दिए पनि हानि गर्दैन । यसलाई तुलसीको साथमा दिनाले बालकहरूको मलेरिया अवश्य नै जान्छ । उत्तिस पुष्टिकारक पनि हो, भोक जगाउँछ, ताकत दिन्छ । गर्भवतीलाई पनि कुनै हानि नपुऱ्याई ज्वरलाई नाश गर्दछ ।

आँपको कोयोभित्रको गुदी, फलामको भस्म, सोनागेरु (स्वर्णगैरिक), रसाञ्जन यी सबैलाई पिनेर महमा मिसाएर लेप गर्नाले मुखपाक (जिभ्रो, ओठ आदिमा खटिरा आएको अवस्था) हराउँछ । (परीक्षित)

पिपलको बोक्रा र पातलाई पिनेर महमा मिसाई लेप गरे पनि मुखपाकमा आराम हुन्छ । (परीक्षित)

मुखको घाउको चिकित्सा – बालकको मुखभित्र घाउ भएको छ भने सेतो रत्ती (गुञ्जा)को पात, शीतल चिनी र मिश्री मुखमा राखी चुस्न लगाउनू । अथवा रत्ती (लालगेडी)को जरा चपाउन लगाउनू । अथवा पानीमा मह मिसाएर कुल्ला गराउनू ।

पेटको रोगको चिकित्सा – बालकको पेटमा किरा (जुका) छ अथवा अपच हुन्छ भने प्याजको रस निकालेर १०-२० थोपा खान दिनू ।

बालकको पेट दुखेको छ भने करेलाको पातको रस आधा चम्चामा अलिकति बेसार (आधा ग्राम जति) मिसाई खान दिनू । वमन भएर र १-२ पल्ट पखाला चलेर पेट सफा भएर जानेछ ।

अजीर्ण (अपच) छ भने कागतीको रसमा केशर घोटी चटाउनू ।

दिसा रोकिएको छ भने कागतीको रसमा जाइफल घोटेर चटाइदिनू । पेटमा जुका आदि कीरा छन् भने केशर र कपूर दुवै १-१ चामल (६० मिलीग्राम) जति दूधसँग खान दिनू । अथवा-तोरी, सर्स्यूको पिनालाई तातो पारेर पेटमा बाँध्नू । अथवा – आँकको पातमा घिउ दलेर तातो पार्नू र पेटमा राखेर बाँध्नू । अथवा - हिङलाई पानी राखी पिन्नू र नाभिवरिपरि लेप गर्नू । आराम हुन्छ ।

माटो खाने बानी भएमा – पाकेको केरा महमा मिसाएर खान दिनू । केशर, पिप्ला, जेठीमधु, निशोध यी सबैको काढा पकाउनू । त्यसमा चिल्लो माटो मिसाएर सुकाएर राख्नू । यसै प्रकारले ४ पटक माटोमा काढा राख्दै सुकाउँदै गर्नू । पछि यो माटो बच्चालाई ख्वाउनू । यो खानाले पहिले खाएको माटो निस्केर जान्छ ।

पेट दुखेको छ भने – एलुवा (मुसब्बर), बेसार, फिटकिरी, नौसादर र स्वाग सबलाई गोमूत्रसँग पिनेर मनतातो बनाएर लेप गर्नू । आराम हुन्छ ।

अजीर्ण वा अपचमा – सिंधे नुन, सुठो, हिङ र भारङ्गीलाई चूर्ण बनाई घिउसँग मिसाएर खान दिनू । बालकहरूको पेट फुलेको र वायु भरिएर दुखेकोमा आराम हुन्छ ।

बालकहरूको अतिसारमा – मजिठो, धयेंरोको फूल, सारिवा र पठानी लोधको काढालाई चिसो पारी मह मिसाई पिउन दिनाले बालकहरूको अतिसार (पखाला) आराम गर्दछ । (परीक्षित)

धयेंरोको फूल, लोध, बेलगिरी, नागरमोथा, मजिठो, नेत्रबाला (सुगन्धवाल) यी सबैको काढा पिउन दिएमा अथवा चूर्ण बनाई महसँग खान दिएमा बालकहरूको अतिसारलाई रामबाण औषधी हुन्छ । (अनेकौं पल्ट परीक्षित)

काँचो बेल, धयेंरोको फूल, नेत्रबाला, लोध, गजपिप्पली, यिनको काढा बनाई चिसो भएपछि मह मिसाई खान दिनू । अथवा सबैको चूर्ण बनाई महमा मिसाई चटाउनू । अतिसार निको हुन्छ । (अनेकौं पल्ट परीक्षित)

सुठो, उत्तिस, नागरमोथा, सुगन्धवाल र इन्द्रजौ यी सबैको काढा बनाई खान दिनाले बालकहरूको सबै किसिमको अतिसार निको हुन्छ । यो त्यसको रामबाण औषधी हो ।

सुगन्धवालको चूर्णमा मिश्री, मह मिलाएर चौलानीसँग पिउन दिनाले सबै किसिमको बाल अतिसार, तिर्खा, वमन, ज्वर नष्ट भएर जान्छन् । अलिकति प्याजको रसमा १ बाजरा (१० मिलीग्राम) बराबर अफिम घोलेर खान दिनाले पखाला बन्द हुन्छ ।

बढी तिर्खा लाग्ने भएमा – प्रियंगु (दहिकाम्लो), रसाञ्जन, नागरमोथा यी सबै मसिनो पारी कुटी छानी महमा मिसाएर चटाउनाले बालकहरूको बढेको तिर्खा, वमन र पखाला सब आराम भएर जान्छन् । (परीक्षित)

अनारको दाना, जिरा, नागकेशर, मसिनो गरी पिनेर मिश्री र मह मिसाई चटाउनाले बालकहरूको बढेको तिर्खा शान्त भएर जान्छ । (परीक्षित)

दिसा रोकिएमा गराउने उपाय – बच्चालाई दिसा गराउनुछ भने छोकडा (छोहडा)लाई रातमा पानीमा भिजाइदिनू । बिहान त्यसलाई पानीमा मिच्नू र छोक्रा फालिदिनू । पानी खानदिनू । यसले दिसा लाग्छ ।

अथवा– अलिकति गुलाफको फूल र चिनी ख्वाई पानी पिउनदिनू । दिसा खलास हुन्छ ।

अथवा – पाखनबेदको जरा बालकको बल अनुसार मात्रामा (१२५-२५० मिलीग्राम) दूधमा घोटेर खान दिनू ।

हिक्का रोगमा – जामुनु, तिंदु दुवैको फल र फूललाई पिनेर नाम मात्राको घिउ र महसँग दिनाले बालकहरूको हिक्कालाई नष्ट पार्छ ।

पिप्ला, जेठीमधुलाई मसिनो गरी पिनेर मह तथा मिश्री मिसाएर बिमिरोको रससँग सेवन गराएमा हिक्का र बमनलाई शान्त गर्छ ।

अथवा – कुटकीको चूर्ण महमा मिसाएर चटाए पनि हिक्का रोगमा आराम मिल्छ । (परीक्षित)

खोकीमा – काकडासिंगी, नागरमोथा, उत्तिस यी सबैको चूर्ण बनाई महमा मिसाएर चटाउनाले खोकी, ज्वरो र वमन नष्ट हुन्छन् ।

नागरमोथा, उत्तिस, जवासा, पिप्ला, काकडासिंगी सबैको चूर्ण बनाई (२५०-५०० मि.ग्रा. मात्रामा) महमा मिसाई चटाउनाले पाँचै प्रकारको खोकी आराम भएर जान्छ । (परीक्षित)

धनिया र मिश्री पिनेर चौलानीसँग खान दिनाले खोकी श्वास रोगमा आराम मिल्छ । (परीक्षित)

बच्चाकी आमालाई पिप्ला राखेको र घिउमा भूटेको माषको दालको झोल खान दिनू । घोर सुख्खा खोकी पनि आराम हुन्छ ।

कण्टकारीको फूलका केसरलाई पिनेर मह मिसाई चाट्न दिएमा धेरै दिनको पुरानो खोकीलाई पनि आराम गर्छ । (परीक्षित)

सुठो, मरिच, सिंधे नुन र गुडको काढा बनाई मनतातो भएपछि खान दिनाले खोकी आराम हुन्छ ।

अथवा – दाख, पिप्ला र सुठोको चूर्ण घिउमा र महमा मिसाई चटाउनाले बालकहरूको सबै प्रकारको खोकी आराम हुन्छ ।

निमोनिया भएमा – यस रोगमा ज्वरो र खोकी हुन्छ । सास छिटो चल्छ, सास फेर्दा करङ् भित्र पस्ने - फुक्ने हुन्छ । यो रोग दुई किसिमको हुन्छ । तिनीहरूमध्ये एउटा मलको गर्मीबाट उत्पन्न हुन्छ । यसमा ज्वर हुन्छ तर यो त्यति चिन्ताजनक हुँदैन । यसमा भित्रको जोडलाई असर गर्ने तुथो र जयपाल आदि दिनुहुँदैन । बरु राजवृक्षको गुदी, उन्नाव, दाख वा बनप्सा दिएर चाँडै नै मल निकाल्नुपर्छ ।

अर्को किसिमको रोगमा कफको चाप रहन्छ । यसमा ज्वर र ऊर्ध्वश्वासको समस्या हुन्छ । यसलाई **डब्बाको रोग** पनि भन्छन् ।

यसमा – कम्पिल्लक (सिन्दुरे) ८ ग्राम, हिङ १ ग्राम दुवैलाई पिनेर दहीसँग खल गरी मरिच जत्रो गोली बनाएर राख्नू । दूधे बालकलाई यो १ गोली तातो पानीसँग खान दिनू । यसले यो रोगलाई आराम गर्छ ।

बालकको पेटमा अडेरको तेल दलेर माथिबाट बकाइनोको पात तातो पारी बाँध्नाले डब्बा रोगमा आराम हुन्छ । करेलाको पात, असुरोको पात, पाकेको नागरपान, जामुनको बोक्रा सबैको रस निकालेर त्यस रसमा बोझो घोटी ७ दिनसम्म खान दिनू । डब्बा रोग आराम भएर जान्छ । (परीक्षित)

बालकको मूत्राघातमा – पिप्ला, सुठो, मिश्री, मह, सुकमेल, सिंधे नुन सबलाई पिनेर चटनी बनाई चटाइ दिएमा बालकको पिसाबको जलन आदि सबै कष्ट आराम हुन्छन् ।

शोथ भएमा – नागरमोथा, कुभिण्डोको बियाँ, देवदारु, इन्द्रजौ सबलाई पानी राखी पिनेर दिएमा बालकको शरीर सुन्निएको कम भएर जान्छ ।

मरिचलाई पिनी चूर्ण बनाई नौनीघिउमा मिसाई सेवन गराउनाले बालकहरूको शरीरको शोथ मेटिन्छ ।

सुकेनाश भएमा – जुन बालक दुर्बल छ तर जठराग्नि अत्यन्त बढी हुनाले निरन्तर खान खोज्छ उसलाई विदारीकन्द, गहुँ र जौको पिठो तीनै ओटालाई घिउमा भुटेर खान दिनू र पछिबाट मह तथा मिश्री राखेको दूध पिउन दिनू । बालक सुक्न छोड्छ र पुस्ट हुँदै जान्छ ।

सिंधे नुन, त्रिकटु, ठूलो करञ्ज, पाठा, पहाडी करञ्ज सबलाई पिनेर मह र घिउ मिसाई सेवन गराउनाले बालक सुकेर जान छोड्छ ।

घाउ भएमा – नीमको पात, दारुहल्दी (चुत्रो), जेठीमधु सबै समभाग लिएर चूर्ण बनाउनू र घिउमा फिटेर मलम बनाउनू । घाउलाई नीमको पात राखी पकाएको पानीले धोएर उक्त मलम लगाउनू । यसरी केही दिन लगातार लगाएमा जस्तो घाउ पनि अवश्य आराम भएर जान्छ ।

यदि ठूलो खटिरा फुटेर बग्न थालेको छ भने नीमको पातलाई पिनेर र महमा मिलाएर लगाउनू । त्यो निको भएर जान्छ । (परीक्षित)

नहरू वा बाला भएमा – नहरू वा बाला (स्नायुक रोग) निस्केर आयो भने नीमको पात पिनेर लेप गर्नाले आराम हुनेछ ।

बिबिरा भएमा – बालकको शरीरमा बिबिरा छन् भने पाखनबेदलाई पानीमा घोटेर लेप गर्नू । ठूलो खटिरा छ भने अमलाको खरानी घिउमा फिटी लेप गर्नू । खटिराहरू धेरै ठाउँमा छन् भने अमला दहीमा भिजाएर अथवा घोटेर लगाउनू । अथवा – नीमको बोक्रालाई पानीमा घोटेर लगाउनू ।

लुतो भएमा – घरको धुवाँ, बेसार, कुठ, रायोको गेडा, इन्द्रजौ सबलाई मोहीमा पिनेर लेप गर्नाले सिघ्म, पामा, विचर्चिका आदि छालाका रोग नष्ट हुन्छन् ।

चन्दन, खस, पद्मकलाई पिनेर लेप गर्नाले छालाका रोग नष्ट हुन्छन् । बोझो, कुठ र वायुविडंगको काढा पकाएर त्यसले कुमसम्म बालकलाई स्नान गराउनाले विचर्चिका, लुतो र दादमा आराम हुन्छ ।

तिल र चामललाई एक ठाउँमा पिनेर लेप गर्नाले अथवा भार्गी वा जेठीमधुलाई पिनेर नाभिमा लेप गर्नाले बालकका छालासम्बन्धी धेरै रोग नष्ट हुन्छन् ।

ओठ फुट्नु – सुख्खा हावा आदि कारणबाट ठूलो मानिस र बालकहरूको ओठ फुट्ने गर्छ । यस्तो अवस्थामा घिउमा नुन मिसाएर दिनको २-३ पटक नाभिमा दल्नुपर्छ ।

अथवा – तर्बूजाको बियाँलाई पानीमा पिनेर ओठ र जिब्रोमा मल्नाले ओठ र जिब्रो फुटेकोमा आराम हुन्छ ।

खुट्टाको पैताला फुट्ने भएमा – स्त्रीको दूध, गुड, घिउ, मह र गेरु समभाग लिएर लेप गर्नू । खुट्टा नरम र कमल जस्तो भएर जान्छ ।

कपालमा जुम्रा भएमा – नीमको बियाँ पानीमा पिनेर टाउकोमा दल्नू र १ घण्टापछि धुने गर्नू ।

आँखाका रोगहरूमा – बच्चाको आँखामा रातोपन छ भने प्याजको रसमा मिश्री मिसाई अञ्जन गर्नू । अथवा रातो चन्दन घोटेर आँखामा लगाउनू । बालकको आँखा दुख्छ भने प्याजको रस आँखामा राख्नू । धनियाँलाई कपडाको पोटलीमा बाँधेर पानीमा भिजाउनू । यो भिजाइएको पोटलीलाई बारम्बार दुख्दै गरेको आँखामा लगाउनू । आराम मिल्छ ।

आँखामा जलन भएमा – गुलाफजल आँखामा ४-५ थोपा राख्ने गर्नू । अथवा-केशरलाई घोटेर आँखामा अञ्जन गर्नू । लोध १ ग्राम, फिटकिरी (फुराएको) १ ग्राम, अफीम ०.५ ग्राम, अमिलीको पात ४ ग्राम सबलाई पिनेर पोटली बनाउनू र पानीमा भिजाउँदै आँखामा परेलामाथिबाट फेर्ने गर्नू । यसबाट आँखाको पीडा अवश्य शान्त हुन्छ । अमिलीको पात, शिरीषको पात, बेसार, फिटकिरी सबै २.२५ ग्राम (प्रत्येक) लिएर मसिनो गरी पिन्नू र पोटली बनाएर पानीमा भिजाउँदै आँखामा फेर्नू । केही थोपा आँखामा पनि राख्नू । आँखाको पीडा शान्त हुन्छ ।

बरको दूध आँखामा लगाउनाले आँखा दुखेकोमा तुरुन्त आराम हुन्छ ।

रतन्धो भएमा – रातमा आँखा नदेख्ने व्यथा छ भने प्याजको रस आँखामा लगाउनू । अथवा समुद्रफलको गुदी बाखाको मूत्रमा पिनेर अञ्जन गर्नू ।

अथवा अदुवाको रस निकाली आँखामा थोपा थोपा गरी राख्नू , अथवा मरिचको चूर्ण थूकमा मिसाएर अञ्जन गर्नू ।

बहिरो भएमा – कुनै बालक कानले कम सुन्छ भने सेतो खयरलाई कुटी कपडछान गरी तातो पानीमा घोलेर त्यसलाई पिचकारीद्वारा कानमा हाल्नू र पछिबाट कान सफा गर्नू । कुनै घाउ आदिको कारण बहिरो भएको छ भने यसले फाइदा गर्नेछ ।

दाँत निस्कन गाह्रो भएमा – चुनलाई महमा मिसाएर दाँतको फेदमा लगाउनाले दाँतहरू आरामसाथ जमेर जान्छन् ।

अथवा – धयेंरोको फूल, पिप्ला, अमलाको रस यिनलाई पिनेर मिसाई दाँतमा लगाउनाले बालकको पहिलो दाँत आरामसाथ निस्कन्छ ।

केराको फूलबाट जुन मसिनो तन्तु, परागकण आदि निस्कन्छ त्यसलाई जम्मा पारेर रस निकाल्नू । त्यस रसमा मिश्री मिसाएर नित्य १ पटक बालकलाई ४-६

मि.ली. जति खान दिनू । यही रस दिनमा १५-२० पटक गिजामा लागाईदिनू । यसले बालकको दाँत निस्कने समयको रोग मेटिन्छ, ज्वर आदिमा पनि आराम हुन्छ ।

बालकले दाँत कटकटाएमा – काकडासिंगी र सागौनलाई दूधमा पकाई त्यो दूध बालकको पैतालामा लेप गर्नाले चाँडै नै बालकहरूको निद्रामा दाँत कटकटाउने रोग हराएर जान्छ ।

तोते बोली भइरहेमा – बालक ठूलो भएपछि पनि स्पष्ट बोल्न सक्दैन, तोते बोली बोल्छ भने उसलाई लगातार केही दिनसम्म (१ महीना) लघु ब्राह्मीको ताजा पातको रस पिउन दिनू । यसले जिभ्रोलाई पातलो र नरम पार्छ ।

मुबारकी रोगमा – बालकको पेटमा मल गाँठो जस्तो परेर बसेको छ, पेट फुलेको छ, कोखा दुख्छ, गालामा सुनिएको छ, पिसाब पहेंलो छ र कमजोरी पनि छ भने त्यसलाई मुवारकी रोग लागेको बुझ्नुपर्छ ।

चिकित्सा – खयरको भित्री बोक्रा ३ ग्राम, गोरोचन ०.५ ग्राम बराबर दुवैलाई गाईको दूधमा घोटेर ३ दिनसम्म सेवन गराउनू । अवश्य लाभ हुनेछ ।

पेट ठूलो भएमा – पेट धेरै नै बढेको छ भने चिसो पानीमा मह मिसाएर नित्य बिहान सेवन गराउनू ।

लू लागेमा – लू (तातो हावा) शरीरमा लागेको छ अथवा आगोको राप धेरै समयसम्म लागेको छ भने एउटा प्याजलाई भुट्नू (वा आगोमा पोल्नू), एउटा काँचो प्याज लिनू । अनि दुवैलाई सिलौटामा पिनेर त्यसमा २ ग्राम जिरा र २ ग्राम मिश्री मिसाएर बिरामीलाई खान दिनू ।

अथवा – धनियाँलाई पानीसँग पिनेर सर्बत बनाई खान दिनू । अथवा-आँप खाने गर्नू । काँचो आँपलाई पोलेर मिच्नू र मिश्री, जिरा, नुन मिसाएर खान दिनू । आराम हुन्छ ।

कानको दुखाइमा – कान दुखेको छ अथवा कानमा कुनै लामखुट्टे आदि पसेको छ भने काली कवैको पातको रस ४-५ थोपा कानमा राख्नू । अथवा कसौंदीको पातको रस राख्नू ।

कानमा खजुरो पसेको छ भने मरोडफलीको जरालाई अडेरको तेलमा घोटेर कानमा राख्नू । किरा मरेर फुलेर माथि आउँछ । खालि तोरीको तेलले पनि यस्तै काम गर्छ ।

बालकको डर र रोदन रोक्न – पिप्ला र त्रिफलाको चूर्णलाई घिउ र महमा मिसाई चटाउनाले बालकको रुञ्चेपना र डरमा आराम हुन्छ ।

बच्चा छिटो बढ्ने उपाय – प्याज र गुड मिसाई ख्वाउने गर्नू, बालक चाँडै बढ्नेछ । बालकको चैतन्य (स्मरणशक्ति) बढाउनू छ भने मखखन र छोकडा खान दिनू ।

कमजोर बालकलाई बलियो पार्ने उपाय – बालक कमजोर छ भने उसको बल अनुसार छ मासादेखि ३ तोलासम्म (६–३ ग्राम) छोकडा लिएर धोई पखाली सफा गर्नू र भित्रको बियाँ फाली गुदी जति दूधमा भिजाई दिनू । केहीबेरपछि छोकडालाई पिनेर कपडामा राखी रस निचोर्नू । यो रस बालकलाई दिनको ३ पटक ख्वाउनू । बालकलाई खूब बल आउँछ ।

सावधानी – १ महिनाभन्दा कमको बच्चालाई यो रस दिन हुँदैन ।

१२. विषजन्य रोग (विषको प्रभावबाट हुने रोग)

जुन वस्तुको सम्पर्क वा मुखबाट सेवन गर्दा तत्काल वा पछिबाट कडा रोग लाग्न सक्छ अथवा मृत्यु हुनसक्छ त्यसलाई विष भनिन्छ । विषको सेवन अथवा सम्पर्कबाट हुने रोगहरूको निदान र उपचारबारे वर्णन गर्ने आयुर्वेदको अङ्गलाई **अगदतन्त्र** भनिन्छ ।

विषको उत्पत्ति – विषको उत्पत्ति ब्रह्माजीको क्रोधबाट भएको मानिन्छ । यसैले यो अग्निको समान तातो र तीक्ष्ण हुन्छ । चरकले विषलाई अम्बुयोनि अर्थात् पानीबाट उत्पन्न भने पनि यसको गुण उष्ण र तीक्ष्ण मानेका छन् । विष पानीबाट उत्पन्न भनेको अर्थ यो हो कि जलबाट उत्पन्न भएको हुनाले विषले वर्षा ऋतुमा बढी असर गर्छ । बर्षातमा सर्पको विष तेज भएर आउँछ ।

विषका प्रकारहरू – विष २ प्रकारको हुन्छ स्थावर र जङ्गम । वनस्पति र खनिजको रूपमा हुने विष स्थावर हुन्छ । सर्प, बिच्छी आदि जीवजन्तुमा हुने विष जङ्गम मानिएको छ ।

स्थावर विषका अधिष्ठानहरू – स्थावर विषहरू विशेष मात्रामा पाइने वनस्पतिका अङ्ग अथवा खनिजहरूलाई स्थावर विषको अधिष्ठान भन्छन् । स्थावर विषका १० अधिष्ठान हुन्छन्– मूल (जरा), पत्र (पात), फल, फूल, बोक्रा, दूध, सार, निर्यास (खोटो), धातु र कन्द ।

जङ्गम विषका अधिष्ठानहरू – जीवजन्तुको शरीरमा रहेको विषसँग सम्बन्धित अङ्गलाई जङ्गम विषको अधिष्ठान मानिएको छ । ती १८ किसिमका हुन्छन्– दृष्टि, निःश्वास, नङ, मूत्र, विष्ठा (मल), वीर्य, आर्तव, न्याल, मुखको पकड, अपानवायु, गुदद्वार, हाड, पित्त, शूक तथा लाश ।

दिव्य सर्प (शेषनाग, वासुकि आदि) को दृष्टि र श्वासमै विष हुन्छ । पृथ्वीका सर्पहरूमा बंगारामा विष हुन्छ । बाघ, बिरालो आदि जीवका पञ्जा र दाँतमा विष हुन्छ । चिपिट आदि कीराहरूको मल र मूत्रहरूमा विष हुन्छ । मुसाहरूको वीर्यमा

विष हुन्छ । माकुराको ऱ्यालमा विष हुन्छ । बिच्छीको पछिल्लो डंकमा विष हुन्छ । चित्रशिर आदिको मुखको पकडमा विष हुन्छ । विषबाट मरेका जीवहरूको हाडमा विष हुन्छ । कनसुत्लोको काँडा वा झुसमा विष हुन्छ । भमरा, अरिङ्गाल, बारुलो मौरी आदिको चिल्ने भागमा विष हुन्छ । विषालु जुकाको मुखको पकडमा विष हुन्छ । सर्प आदि विषालु जीवहरूका लाशमा पनि विष हुन्छ ।

स्थावर विष अन्तर्गत विभिन्न पत्र, पुष्प आदि विषहरूमा बढी प्रसिद्ध कन्दविष नै छन् । कन्द विष १३ प्रकारका छन्- कालकुट, वत्सनाभ, सर्षप, पालक, कर्दमक, मुस्तक, शृङ्गिक, प्रपौण्डरिक, हलाहल र मूलक, वैराटक, सक्तुक, ब्रह्मपुत्र । यी महाविष मानिन्छन् ।

कन्दविषहरूको सेवनबाट हुने रोगका लक्षणहरू

कालकुठ विष खाएमा – स्पर्शको ज्ञान हुँदैन । कम्प तथा शरीरको स्तम्भ (जकडिने) हुन्छ ।

वत्सनाभ विषबाट – ग्रीवास्तम्भ (घाँटी कक्रक्क जकडिने) हुन्छ । मलमूत्र र आँखा पहेंला हुन्छन् ।

सर्षप विषद्वारा – तालुमा विगुणता (उठ्ने, दुख्ने आदि) हुन्छ, अजीर्ण हुन्छ, गाँठा उत्पन्न हुन्छन् ।

पालक विषबाट – घाँटी कमजोर हुन्छ, बोल्न गाह्रो हुन्छ ।

कर्दम विषबाट – मुखबाट ऱ्याल चुहुन्छ, मल रोकी रोकी आउँछ, आँखा पहेंला हुन्छन् ।

वैराटक विषबाट – शरीरका अङ्गहरू तथा टाउको दुख्ने हुन्छ ।

मुस्तक विषबाट – अङ्गहरूमा शिथिलता र कम्प हुन्छ ।

शृङ्गिक विषबाट – अङ्गहरूमा दुख्ने, दाह र पेट फुल्ने हुन्छ ।

प्रपौण्डरिक विषबाट – आँखा राता हुन्छन्, पेट फुल्छ ।

मूलक विषबाट – शरीरको रङ्ग बिग्रन्छ, बान्ता हुन्छ, हिक्का र शोथ हुन्छ, बेहोश बनाउँछ ।

हलाहल विषबाट – श्वास ढिलो हुने गरी रोकिएर चल्छ, शरीर मलिन हुन्छ ।

महाविषबाट – मुटुमा गाँठो परेको अनुभव हुन्छ, भयङ्कर शूल हुन्छ ।

कर्कटक विषबाट – मानिस माथि उफ्रन थाल्छ, हाँस्ने र दाँत कटकटाउने गर्छ ।

स्थावर विषहरूको सामान्य लक्षण – स्थावर विषहरूको सेवन गर्दा ज्वरो आउने, हिक्का हुने, दाँत सिरिङ्ग हुने, घाँटीमा केही अड्के जस्तो भई निल्न

गाह्रो हुने, मुखबाट फींज आउने, बान्ता हुने, अन्न नरुच्ने, खोकी, दम हुने र मूर्च्छा हुने यी लक्षणहरू हुन्छन् ।

उपविषहरू – स्थावर अन्तर्गतकै विषहरूलाई रसशास्त्रमा महाविष र उपविष भनी दुई वर्गमा बाँडिएको छ । महाविष अन्तर्गत कन्दविषमा वर्णन गरिएका हलाहल, कालकुट आदि विषहरू पर्छन् । उपविषहरू ११ ओटा मानिएका छन् – आँकको दूध, सिउँडीको दूध, लाङ्गली(केवरी)को जरा, करवीरको दूध र जरा, गुञ्जा (राती गेडीको बीज), अफिम, धतुरो, भाँग, जयपाल, भलायो र कुचिला ।

कृत्रिम विष – कैयौं विषहरू मिसाएर बनाएको विषलाई कृत्रिम विष भनिन्छ । विष नभए पनि कुनै कारणबाट (परस्पर मिसाउने आदि) विष जस्तै असर गर्ने वस्तुलाई गर विष भनिन्छ ।

सामान्य विषनाशक योगहरू – तातो पानी प्रशस्त मात्रामा खान दिएर वमन गराएपछि बारम्बार घिउ पिउन दिएमा सबै विषहरूको असर हराउँछ । विषनाशक औषधीहरू घिउ र महसँग तत्काल खान दिनुपर्छ ।

– अमिलो रस खान दिनुपर्छ ।

– मरिच पिनेर शरीरमा मल्नुपर्छ । अथवा शिरीषको बोक्रा, जरा, पात, बियाँ यी सबैलाई गोमूत्रमा पिनेर शरीरमा मल्नुपर्छ ।

– खस, बालछड, सुकमेल, मरिच, सुगन्धवाल, अलैंची, पिप्ला, गेरु, सबको काढामा मह मिसाई खवाउनाले विषदोष नष्ट हुन्छ ।

विष खाएको अवस्थामा सबैभन्दा पहिले उत्तम उपाय वमन गराउनु नै हुन्छ ।

ताजा हरियो तण्डुलीयक (लुँडे)को जरा १० ग्राम लिएर पिनी निकालेको रस गाईको घिउसँग खानाले विष उत्तेर जान्छ ।

गाईको घिउ ४० ग्राम, सिंधे नुन (लाहौरी) ८ ग्राम दुवैलाई मिसाई पिउन दिनाले सबै किसिमको विष उत्तेर जान्छ । सर्पको विष पनि शान्त हुन्छ ।

कण्टकारीको जरा पिनेर निकालेको रस खाएमा विष उत्तेर जान्छ । दरियाई नरिवल १ ग्राम जति पिनेर खानाले सबै किसिमको विष उत्तेर जान्छ ।

कपासको बियाँलाई कुटी-छानी गाईको दूधमा पकाएर खानाले सबै प्रकारका विषहरूको असर शान्त हुन्छ ।

ज्वानु खाए पनि सबै प्रकारका विषहरू शान्त हुन्छन् । तितो तुम्बीको पात वा जरा पानी राखी पिनेर बनाएको रस खान दिएमा वमन भएर विष निस्केर जान्छ । (परीक्षित)

विष खाएको व्यक्तिलाई शीतल ठाउँमा राख्ने, शीतल जल (चिसो पानी) छर्कने र शीतल उपचार गर्ने गर्नाले लाभ हुन्छ ।

१३. स्थावर (खनिज एवं वनस्पति संबन्धी) विषको लक्षण र चिकित्सा

वत्सनाभ विषको लक्षण – वत्सनाभ विष खाएमा ओठ, जिभ्रो र मुखमा झमझमाउँछ, पोल्ने गर्छ । मुखबाट ऱ्याल निस्कन थाल्छ र वमन हुन्छ । शरीर काम्छ । आँखा अगाडि अँध्यारो देखिन्छ । कानमा सन-सन आवाज आउँछ । श्वासको गति मन्द हुन्छ । सास निस्कदा चिसो भएर निस्कन्छ । नाडी कमजोर हुन्छ, हात-गोडा चिसा हुन्छन् । अन्तमा मांसपेशीहरू तन्किने भएर, मुटुको गति रोकिएर जाँदा मृत्यु हुन्छ ।

विषको चिकित्सा – पहिले वमन गराउनुपर्छ । त्यसपछि आधा आधा घण्टामा कडा कफी खान दिनुपर्छ ।

गुदद्वारमा साबुन मिसाएको हल्का तातो पानीले पिचकारी दिएर आन्द्रा सफा पार्नुपर्छ[1] ।

घिउ पिउन दिनुपर्छ ।

सुठोलाई जुनसुकै प्रकारले (चूर्ण, काढा आदि) खाए पनि वत्सनाभको विकारलाई नष्ट पार्छ ।

अर्जुन वृक्षको बोक्राको चूर्ण १-३ ग्राम मात्रामा असमान घिउ र महसँग चटाएमा विषको विकारलाई नष्ट गर्छ ।

दूधका साथ निर्विषीको पूरा मात्रा (२ ग्राम) खान दिनू ।

जहरमोहरा भन्ने औषधी घोटेर चाट्नू र विषको असर भएको ठाउँमा लगाउनू । स्थावर र जङ्गम दुवै विषमा यसले रामबाणको काम गर्छ ।

संखियाको विषलक्षण – औषधीको रूपमा यसको मात्रा १ मिलीग्रामभन्दा कम हुन्छ । योभन्दा बढी खाएमा यसले आधा घण्टाभित्रमा विषको लक्षण देखाउँछ । संखिया खाएको केही बेरपछि नै घाँटीमा दुख्न थाल्छ । त्यसपछि मुखदेखि पेटसम्म पोल्छ । वाकवाकी लाग्छ र वमन हुनथाल्छ । अनि जोडले पेटमा शूल उठ्छ र पखाला चल्न थाल्छ । तिर्खा बढी लाग्छ, पानी खाँदा झन् बढी बान्ता हुन थाल्छ । बान्तामा पहिले खाएको कुरा निस्कन्छ, अनि क्रमशः हरियो – पहेंलो बान्ता हुन्छ । पछिबाट श्लैष्मिक कलाको अंश र रगत पनि आउन थाल्छ । अन्तमा श्वास रोकिएर जान्छ, शरीर चिसो भएर मृत्यु हुन्छ ।

---

१. विष मुखमा पर्ने बित्तिकै थाहा पाइयो अथवा विष आमाशयमा नै छ भने तुरुन्त वमन गराउनू । बढी समय भैसकेको छ र विष पक्वाशय (ठूलो आन्द्रा)मा पुगिसेकको छ भने जुलाफ दिनू अथवा साबुन मिश्रित मनतातो पानीले पिचकारी दिनू ।

संखियाको विषको चिकित्सा

संखियाको विष पर्ने बित्तिकै वमन गराउनू । विष परेर बढी समय गुज्रीसकेको छ भने पखाला चलाउनू ।

२०-३० ग्राम पपडिया खयर पानीमा घोलेर खान दिएमा संखिया विष बान्ताबाट जान्छ । पेटमा यो औषधी पर्ने बित्तिकै आराम हुँदै जान्छ ।

१ ग्राम कपूर ३०-४० मि.ली. गुलाबजलमा मिसाएर खान दिएमा संखिया विष उत्रेर जान्छ ।

नीमको पातको रस पिउनाले विष र पेटका किराहरू नष्ट हुन्छन् । (परीक्षित)

घिउका साथ स्वाग पिनेर खान दिएमा सबै किसिमका विषहरू शान्त हुन्छन् ।

वमन गराउनका लागि रायोको गेडाको चूर्ण १-२ चम्चा मनतातो पानीमा मिसाएर ख्वाउनू । यसबाट वमन हुन्छ ।

अथवा – जिंक सल्फेट १ ग्राम केही पानीमा मिसाएर खान दिएमा वमन हुन्छ ।

आँकको विषको लक्षण – आँकको दूध छालामा पर्दा छाला रातो हुन्छ । त्यही दूध आँखामा परेमा आँखामा फुलो पार्ने, आँखा पाक्ने हुनसक्छ । स्थायी अन्धो पनि पार्न सक्छ ।

आँकको दूध खाएमा मुख तितो हुन्छ, घाँटी र पेटमा पोल्न थाल्छ । वाकवाकी लाग्ने बान्ता हुने हुन्छ । पखाला पनि लाग्न सक्छ । आँखाको नानी फैलिन्छन्, धनुष्टङ्कार जस्तै जिउ तन्किने हुन्छ । बरबराउने, बेहोश हुने हुन्छ । अन्तमा मृत्यु हुन्छ ।

आँकको विषको चिकित्सा – आँकको दूध खाएर भएको असरमा पलाशको बियाँको काढा खान दिनुपर्छ ।

सिउँडीको विषलक्षण – सिउँडीको दूध छालामा लागिरहेमा पोल्ने, रातो हुने गर्छ । बढी मात्रामा खाँदा पहिले बान्ता हुन्छ । पछि पखाला लाग्छ । हुँदाहुँदै दिसामा रगत आउन थाल्छ र रोगीको मृत्यु हुन्छ ।

सिउँडीको विषको निवारण – चिसो पानीमा मिश्री मिसाई खान दिएमा सिउँडीको विषको असर हराउँछ ।

लाङ्गली (कलिहारी) को परिचय र विषलक्षण

यसको सुन्दर देखिने र धेरै वर्ष टिक्ने, रुखमा अडिएर बढ्ने लहरो हुन्छ । यसको डाँठ पातलो, २० फुटसम्म लामो हुन्छ । यो प्रत्येक वर्ष कन्द जस्तै भरिलो धेरै वर्ष रहने भूमिगत काण्डबाट उम्रेर आउँछ । उक्त भौमिक काण्ड हलो जस्तै बाङ्गो,

ठाउँ ठाउँमा खुम्चिएको र टुप्पोमा तिखो हुन्छ । यसका फूलहरू पहिले हरिया, अनि पहेंला र अन्तमा राता हुन्छन् । यसको भूमिगत काण्ड अत्यन्त विषाक्त हुन्छ ।

यसलाई संस्कृतमा गर्भघातिनी भनिन्छ ।

यसको जराको चूर्ण ४-५ ग्राम भन्दा बढी खाएमा पेटमा शूल उठ्ने, बान्ता हुने र पखाला चल्ने हुन्छ । पछि मुटुको गति रोकिएर मृत्यु हुन्छ ।

लाङ्गलीको विषको निवारण – गाईको दूधबाट बनेको दही मथेर बनाएको महीमा मिश्री मिसाई पिउन दिएमा लाङ्गलीको विषको प्रभाव हराउँछ ।

अथवा – कपडामा दही राखेर निचोर्नू । पानी जति गएपछि बाक्लो दही बाँकी रहन्छ । त्यसमा मह र मिश्री मिसाएर खान दिनू । लाङ्गलीको सेवनबाट भएको विकार शान्त हुन्छ ।

करवीरको परिचय – यसका बोटहरू प्राय बगैंचामा लगाईन्छन् । फूलको रङ्ग अनुसार यो ३ किसिमको हुन्छ सेतो, रातो र पहेंलो । यसको पात, डाँठ, जरा सबै विषाक्त हुन्छन् ।

करवीरको विषलक्षण – यसको मुखबाट सेवन गरेमा पेट दुख्ने, बान्ता हुने, फिंजसहित ज्याल चुहुने हुन्छ । रोगी बेचैन हुन्छ । यसको नाडी मन्द र कमजोर हुन्छ । कुनै पनि वस्तु निल्न गाह्रो हुन्छ, सास छिटो चल्छ । च्यापु अड्किन्छ, मांसपेशीहरू फर्फराउँछन् । धनुष्टंकार जस्तै शरीर तन्किन्छ तर एकातिर कम अर्कोतिर बढी तनाव हुन्छ । तन्द्रा, संन्यास भएर मृत्यु हुन्छ ।

करवीरको विषशान्त हुने उपाय – पहिले वमन गराउनू । पछि ताजा दूधले कुल्ला गर्न लगाउनू । काँचो दूध र मख्खन (नौनीघिउ) खान दिनू । टाउकोमा चिसो पानी राख्नू र चिसो पानीमा बस्न लगाउनू ।

धतुरोको विषलक्षण – यो कडा विष हो । यसको बियाँमा विषको विशेष अंश हुन्छ । १ ग्रामभन्दा बढी (१००-१२५) बियाँ खाएमा मानिसको मृत्यु हुनसक्छ । मृत्युभन्दा पहिले यसको असरले मुख र घाँटी बेसरी सुक्छ र निकै तिर्खा लाग्छ । मुख रातो भएर आउँछ । आँखाका नानीहरू फैलिन्छन्, दृष्टिमा ह्रास हुन्छ । छाला सुख्खा र तातो हुन्छ ।

रोगीलाई रिंगटा चल्छ, गोडा लर्बराउँछन्, बेचैनी पनि हुन्छ । ऊ अस्पष्ट -अरूले नबुझ्ने किसिमबाट बर्बराउँछ । उसले हावामा कुनै चिज समात्न खोजे झैं हात चलाउँछ । लगभग १ घण्टापछि रोगी बर्बराउन छोडेर उँघ्न थाल्छ । निको नहुने अवस्थामा बिस्तारै बेहोस भएर जान्छ र सास रोकिएर उसको मृत्यु हुन्छ ।

धतुरोको विषशान्त गर्ने उपाय – सुरुको अवस्थामा वमन गराउनू । टाउकोमा चिसो पानीको धार दिनू । ४० ग्राम कपासको बियाँको गुदी ख्वाई दूध खान दिनू ।

अथवा – शङ्खपुष्पीको जरोलाई पानीमा पिनेर ख्वाउनाले धतुरोको विषशान्त हुन्छ । (परीक्षित)

कपासको बियाँ र फूलको काँढा खान दिएमा धतुरोको विष निश्चय नै शान्त हुन्छ ।

नुनलाई पानीमा मिलाएर खान दिएर वमन गराएपछि धेरै मात्रामा गाईको घिउ पिउन दिनाले धतुरोको विषशान्त हुन्छ ।

बैगनको बियाँको रस पिउनाले अथवा दूधमा मिश्री मिसाई पिउनाले धतुरोको विषलक्षण शान्त हुन्छ ।

राती गेडी (रत्ती)को विषलक्षण – राती गेडीका गेडाहरू खाएको खण्डमा वाकवाक लाग्ने, बान्ता हुने, पखाला चल्ने र पेटमा शूल हुने गर्छ । त्यसपछि रक्तसञ्चारमा गडबडी भएर बेहोसी हुन्छ । छालामा यसको सम्पर्क भएमा त्यस ठाउँमा दुख्ने, सुनिएर आउने, तन्तुहरू गल्ने हुन्छ, रिंगटा लाग्छ । आक्षेप र मृत्यु हुन्छ ।

राती गेडीको विषशान्त गर्ने उपाय – लुँडेको रसमा मिश्री मिसाएर पिएपछि दूध पिउन दिएमा राती गेडीको विषको विकार शान्त हुन्छ ।

भलायोको विषलक्षण – भलायोको फल अथवा तेल आगोमा हाल्दा त्यसको धुवाँ शरीरमा पऱ्यो भने शोथ र घाउ हुन्छ । भलायोभित्रको तरलपदार्थ शरीरमा लाग्यो अथवा मुखमा पऱ्यो भने तत्काल शोथ र घाउ हुन्छ । रस लागेको ठाउँमा कालो फोका उठ्छ । त्यहाँ चिलाउँछ । चिलाएको ठाउँमा कन्याउँदा औंला र नङमा पनि फोका निस्कन्छन् । चिलाउने बाहेक ज्वरो आउने, मैलो पिसाब कष्टका साथ हुने, दिसा बस्दा दुख्ने पनि हुन्छ ।

मुखबाट बढी खाइएमा मुख र घाँटीमा फोका उठ्छन् । त्यसपछि पाचनप्रणालीका अन्ननली, आमाशय आदिमा शोथ हुन्छ । अनि स्याँ स्याँ हुने, ओठ आदि निलो हुने, मुटुको चाल तीव्र हुने हुन्छ । संन्यास भएपछि मृत्यु हुन्छ ।

भलायोको विषशान्त गर्ने उपाय – नरिवलको गुदी, सेतो तिल र जौले यसको विषलाई नाश गर्छन् ।

भलायोको धुवाँ अथवा रस लागेर पोलेको ठाउँमा कालो तिल पिनेर दूधमा वा दहीमा मिसाएर लेप गर्नू । अथवा अमिलीको रसमा नरिवलको गुदी पिनेर बनेको लेदोले लेप गर्नू । भलायो खएर नराम्रो असर भएकोमा – दूध, दही अथवा नरिवलको पानी खान दिनू ।

अथवा – ओखरको गुदी खान दिनू ।

अथवा – अमिलीको पातको रस खान दिनू ।

भाँगको विषलक्षण – भाँगको बढी मात्रामा सेवन भएमा सुरुमा

आनन्दको अनुभव हुन्छ, खूब भोक लाग्छ, खाने कुरा रुच्छ, बोलिराख्न मन लाग्छ। त्यसपछि यौनसम्बन्धी भ्रमहरू हुन थाल्छन्। कसैमा रिस बढ्न सक्छ। पछिबाट रिंगटा लाग्ने, आलस्य बढ्ने, आँखाको नानी फैलिने हुन्छ। रोगीलाई गहिरो निद्रा लाग्न सक्छ। उठ्दा अवसाद बाँकी रहँदैन। कसै-कसैमा अत्यन्त बेहोसीपछि सास रोकिएर मृत्यु हुन्छ।

भाँगको नशाहरण गर्ने उपाय - वमन गराउन्, विरेचन पनि गराउन्। दही बढी मात्रामा खानाले भाँगको नशा हराउँछ। सुठोको चूर्ण ३ ग्राम, गाईको दही २५० ग्राम मिसाएर खान दिएमा भाँगको नशा हराउँछ।

बेहोस भएको अवस्थामा होसमा ल्याउन अमोनिया सुँघाउन्। अमिली, अमिलो अनारको रस, कागतीको अचार खान दिए पनि भाँगको असर कम हुँदै जान्छ।

अथवा - घिउमा मिश्री मिसाएर चाट्न दिए पनि भाँग, गाँजाको नशा नष्ट हुन्छ। (परीक्षित)

जयपालको परिचय - यो दुई प्रकारको हुन्छ - दन्ती र द्रवन्ती। यी दुवै मूल औषधिको रूपमा विरेचनका लागि प्रयोग गरिन्छ। द्रवन्तीको बीजलाई जयपाल अथवा जमालगोटा भनिन्छ। यसको तेल Croton oil नामले पाइन्छ। यसले कडा पखाला गराउँछ। यसको बढी मात्रामा सेवनबाट विषलक्षण उत्पन्न हुन्छ।

जयपालको विषलक्षण- जयपालको तेल छालामा पर्दा स्फोट (फोका) हुन्छन्। यसको बियाँ ४ वा त्यसभन्दा बढी खाएमा पेट पोल्ने, दुख्ने हुन्छ। त्यसपछि वमन र तीव्र पखाला हुन्छ। गुदद्वारमा अत्यन्त पोल्छ। निपात भएर रोगीको मृत्यु हुन्छ।

जयपालको विषशान्त गर्ने उपाय - धनियाँ, मिश्री र दही मिसाएर खानाले जयपालको विषलक्षण शान्त हुन्छ।

अलिकति तातो पानी खान दिएमा पखाला तुरुन्त रोकिन्छ। यसबाट पखाला रोकिएन भने दुई चार चामल बराबर (३०-१२० मिलीग्राम) अफिम खान दिएपछि घिउ राखेको दूध पिउन दिनू। गर्मीको मौसममा दूध चिसो अवस्थामा र हिउँदमा अलि तातो पारेर खान दिनू।

अथवा - घिउ नझिकेको दही फेटेर बनाएको मही ख्वाए पनि विषलक्षण शान्त हुन्छ।

अफिमको परिचय - अफिमको बोट सानो हुन्छ। यसको काँचो फललाई साँझमा ब्लेडले तेर्सो गरी काट्दा त्यसमा दूध जस्तो रस निस्कन्छ। त्यो त्यहीं जम्मा

हुन्छ । बिहान त्यसलाई निकालेर जम्मा पार्छन् । त्यसैलाई अफिम भनिन्छ । अफिममा हुने तत्त्वहरूबाट मार्फीन, हेरोइन, कोडीन आदि औषधिको निर्माण गरिन्छ । अफिमको प्रयोग अम्मलको रूपमा पनि गरिन्छ ।

अफिमको विषलक्षण – अफीम २०० मि. ग्रामभन्दा बढी एकैपटकमा खाएमा विषको लक्षण देखिन थाल्छ । यो ३० मिनेट देखि १ घण्टाभित्र देखिन्छ । सुरुमा आनन्दको अनुभव, बढी हाँसो, भ्रम हुन्छ । मुटुको गति तीव्र हुन्छ, सासमा अफिमको गन्ध आउँछ । साना बच्चाहरूमा आक्षेप हुनसक्छ ।

केही बेरपछि टाउको दुख्ने, रिंगटा लाग्ने हुन्छ । हात-गोडा भारी हुन्छन् । चनाखोपन घट्दैजान्छ र रोगी निदाउँछ । त्यसलाई झकझकाएर बिउँझाउन सकिन्छ । त्यस बेलामा आँखाका नानीहरू खुम्चन्छन्, मुख र ओठको रङ्ग फेरिन्छ । सम्पूर्ण शरीर चिलाउँछ । प्रायः नाडी र सासको गति सामान्य हुन्छ ।

बढी मात्रामा अफिम खाएको छ भने त्यसपछि बेहोसीको अवस्था आउँछ । त्यसमा बिरामीलाई ब्युँझाउन सकिन्न । उसका पेशीहरू शिथिल हुन्छन् । शरीरको प्रतिक्रिया गर्ने गुण हराउँछ । आँखाको नानी खुम्चिएर एकदम सानो हुन्छ । त्यसमा प्रकाशको कुनै असर हुँदैन । मृत्युभन्दा केही मिनेट पहिले आँखाको नानी अलि ठूलो हुन्छ तर त्यसमा पनि प्रकाशको कुनै असर हुँदैन । रक्तचाप घट्दै जान्छ, नाडीको गति पहिले कम दुर्बल हुन्छ, पछि बेहोस भएको अवस्थामा मन्द तर पूर्ण हुन्छ । सासको गति मन्द र अनियमित हुन्छ । अन्तमा शरीर चिसो हुन्छ, रोगी निसास्सिएर मर्छ ।

अफिमको विषशान्त गर्ने उपाय – पुरानो कागजहरू डढाई त्यसको खरानी पानीमा घोलेर पिउनाले वमन भएर विषशान्त हुन्छ ।

अथवा – घिउ खान दिएर वमन गराउनुपर्छ ।

ओखर खाएमा अथवा अडेरको जरा पिनेर पानी मिसाई पिएमा अफिमको नशा हराउँछ ।

अथवा – गाईको घिउ र ताजा दूध पिउनाले अफिमको नशा हराउँछ ।

बिहींको रसमा दूध मिसाई खानाले अफिमको विषलाई नाश गर्छ ।

कपासको बियाँ र फिट्किरीको चूर्ण खाए पनि अफिमको नशा हराउँछ ।

अफिम खाएको रोगीलाई ध्यान दिनुपर्छ, धेरै बेर सुत्न दिनुहुँदैन, सुतेकै अवस्थामा मृत्यु हुन सक्छ ।

कुचिलाको परिचय – यसको अग्लो रुख हुन्छ । त्यसमा गोल आकारका, सुन्तला रङ्गका फल हुन्छन् । प्रत्येक फलमा टाँक जस्ता फुस्रो पहेंलो रङ्गका २-५ बियाँ हुन्छन् । तिनलाई कुचिलाको रूपमा प्रयोग गरिन्छ । त्यो नचपाई निल्दा कुनै असर

हुँदैन । चपाएर टुक्रा अथवा धुलोको रूपमा खाएमा १५ मिनेटदेखि १ घण्टा भित्रमा विषको लक्षण देखिन्छ ।

कुचिलाको विषलक्षण – अनुहार र घाँटीका पेशीहरू कडा भएर कक्रक्क अड्किन्छन् । त्यसपछि पूरै शरीरका पेशीहरू तन्किन्छन् र शरीर धनु जस्तो हुन्छ । त्यस बेलामा टाउको र कुर्कुचो मात्र जमीनमा हुन्छ, अरू शरीर माथि उठेको हुन्छ । मुख निलो हुन्छ, सास रोकिन्छ । मुखबाट रगत मिसिएको फिंज निस्कन्छ । आँखा तन्किन्छन्, मुख हेर्दा रिसाएको बाँदर जस्तो देखिन्छ । लगभग १ मिनेटपछि पेशीहरू केही शिथिल भएर अलि सञ्चो भए जस्तो देखिन्छ । तर केही छिनमैं फेरि पहिले जस्तै जिउ तन्किन्छ । यसरी बारम्बार भइरहँदा शरीर बेसरी दुख्छ । आक्षेपका कारण सास रोकिएर मृत्यु हुन्छ ।

कुचिलाको विषशान्त गर्ने उपाय – रोगीलाई अँध्यारो र आवाज नआउने ठाउँमा राख्नुपर्छ । आक्षेप शान्त हुने उपाय गर्नुपर्छ ।

घिउ खान दिएर वमन गराउनुपर्छ । आक्षेप शान्त गर्न अफिम, कपूर आदि सेवन गराउनुपर्छ ।

कपूरको पानी खान दिनाले अथवा मिश्री-दूध खान दिनाले कुचिलाको विषको असर कम हुन्छ ।

कपूर १ ग्राम र घिउ १०-१२ ग्राम मिसाएर खान दिएको खण्डमा विषको असर हराउँछ ।

अथवा – समुद्री नरिवल पानीमा घोटी त्यो पानी खान दिनुपर्छ । कुचिलाको विष शान्त हुन्छ ।

क्लोरल हाइड्रेट पनि कुचिलाको असर कम पार्ने औषधि हो ।

रक्सीको नशाहरण गर्ने उपाय – काँक्रो खानाले रक्सीको नशा हराउँछ । कुभिण्डोको रसमा दही, चिनी मिसाएर खान दिए पनि आराम हुन्छ ।

अथवा – घिउ र चिनी खान दिनुपर्छ ।

पारोको विषमा – जवासालाई पानी राखी पिनेर आएको रस खान दिएमा पारो र काँचो सिम्रिकको विष शान्त हुन्छ ।

अथवा – अडेरको तेल (Caster oil) ५ मि.ली. गाईको दूध आधा पाउ (१०० मि.ली)मा मिसाइ पिउनाले पारो र काँचो सिम्रिकको दोष शान्त हुन्छन् ।

पारोको दोषमा शुद्ध गन्धक सेवन गर्नु सबैभन्दा उत्तम उपाय हुन्छ ।

काँचो हरितालको विषमा – तत्काल वमन गराउनू । ढिलो गरी थाहा पाइयो भने हर्रोको (फलको) बोक्रालाई दूध र घिउ मिसाई पिउन दिनू ।

निलो तुथो बढी खाएको छ भने – घिउ र दूध मिसाएर खान दिनू। बीच-बीचमा बासी पानी पनि ख्वाउँदै गर्नू।

गर विष – धेरै किसिमका विषहरूको मिश्रणबाट जुन विष बन्छ त्यसलाई गर विष भनिन्छ। मूर्ख नारीहरू आफ्ना पतिलाई वशमा राख्न वीर्य, रज वा शरीरका मयल आदिका साथ मन्द विषहरू ख्वाइदिन्छन्। त्यसबाट शरीर बिस्तारै दुर्बल हुँदै जान्छ, धातुहरूको क्षय हुन्छ। ज्वरो आउँछ, शरीर पहेंलो हुँदै जान्छ, अरुचि हुन्छ, मर्मस्थानहरूमा पीडा हुन्छ। गर अथवा कृत्रिम विषबाट रोगी तत्काल मर्दैन केही महिना वा वर्षमा रोगी भएर मर्छ।

गर विषको औषधि – असुरो, नीम र पर्वर यी तीनैको पातको काढा बनाउनू। त्यसमा हर्रोलाई पानी राखी पिनेर बनाएको लेदो मिसाउनू। अनि लेदो जति छ त्यसको चौगुना गाईको घिउ र त्यसको चौगुना असुरो आदिको काँढा लिनू। सबैलाई यौटै भाँडामा राखी मन्द अग्निमा पकाउनू। काँढा जति सुकेर घिउमात्र बाँकी भएपछि उतारेर छानी लिनू र सफा सिसीमा सुरक्षित गरी राख्नू। यो 'वृषादि घृत' हो। यस घृतको सेवनले गर विष निश्चय नै शान्त हुन्छ।

मिश्री, मह, स्वर्णमाक्षिक भस्म, स्वर्णभस्म सबैलाई मिसाई चाट्नाले अति उग्र किसिमको गरविष पनि नष्ट हुन्छ[1]।

शिरीषको जराको बोक्रा, शिरीषको फूल, शिरीषको बियाँ यी सबैलाई गोमूत्रमा पिनेर सेवन गर्नाले विषको बाधा हटेर जान्छ।

बोझो, मरिच, मनःशिला, देवदारु, करञ्ज, हलेदो, दारुहरिद्रा, शिरीष र पिप्ला यी सबैलाई एकसाथ पिनेर आँखामा अञ्जन गरेमा गर विष शान्त हुन्छ।

१४. जङ्गम (विषालु जीव संबन्धी) विषको लक्षण र चिकित्सा

सर्प बिच्छी आदि विषालु जीवहरूले टोक्दा अथवा छुँदा असर हुने विषलाई जङ्गमविष भनिन्छ। जङ्गमविष हुने प्राणीहरूमा सबैभन्दा बढी असर गर्ने विष सर्पहरूमा हुन्छ।

---

१. स्वर्ण भस्म ३० मिलीग्राम, स्वर्णमाक्षिक भस्म १२५ मिलीग्राम, मह ५ ग्राम र मिश्री ५ ग्राम लिनुपर्छ। दिनको १-२ पटक सेवन गर्नुपर्छ।

सर्पको सामान्य परिचय – सर्प ५ प्रकारका हुन्छन्-भोगी, मण्डली, राजिल, निर्विष र वैकरञ्ज। वर्षा ऋतु लाग्ने बेला असार मासमा सर्पहरूले कामोन्मत्त भई मैथुन गर्छन्। त्यस समयमा कसैले तिनलाई देख्यो भने क्रोधित भएर त्यसलाई नटोकी छोड्दैनन्। यसैले असारमा सर्पिणी गर्भवती हुन्छे र कार्तिक महिनामा करिब २४० अण्डा दिन्छे कतिपय अण्डा उसले आफैं खाइदिन्छे र बाँकी अण्डाहरूलाई ६ महिना ओथारो बसेर बच्चाहरू निकाल्छे।

अण्डाबाट बाहिर आएको सातौं दिनमा बच्चाको रङ्ग आफ्ना मातापितासँग मिलेर जान्छ। सातापछि नै दाँत पनि निस्कन्छ र २१ दिनमा तालुमा विष पनि पैदा हुन्छ। २५ दिनमा बच्चा विषालु हुन्छ र ६ महिनापछि त्यसले काँचुली फेर्न थाल्छ।

जुन बखतमा सर्पले टोक्छ त्यै समयमा उसको बंगाराबाट विष निस्कन्छ र फेरि फर्केर जम्मा पनि हुनसक्छ। सर्पको दाँतमाथि विषको थैली हुन्छ। जब सर्पले टोक्छ त्यस बेलामा विष थैलोबाट बंगारा हुँदै घाउमा पर्छ। भनिन्छ सर्पका ३२ दाँत र ४ विषयुक्त बंगारा हुन्छन्। ती बंगाराहरूमा हर समय विष रहँदैन, तर जब सर्प क्रोधित हुन्छ त्यसबेलामा विषको थैलाबाट विष बंगारामा आएर जम्मा हुन्छ। ती बंगाराहरूको नाम मकरी, काली, कालरात्रि र यमदूती हुन्छ।

सर्पका किसिमहरूको परिचय –

१. **भोगी (दर्वीकर)** – फण हुनु र तीव्र वेगका साथ हिंड्नु यसको पहिचान हो। यसको प्रकृति वायुप्रधान हुन्छ। यसले टोकेको ठाउँ कालो भएर जान्छ।

२. **मण्डली वा छिर्बिरे सर्प** – यसको शरीरमा छिर्बिरे (अनेक रंगका) बुट्टा हुन्छन्। यो मन्द चालले कम वेगका साथ हिंड्छ। यस जातका सर्पहरूमध्ये कैयौंमा राता, काला वा सेता थोप्ला हुन्छन्। कुनै सर्पहरूमा फूल जस्ता, कुनैमा बाँसको पात जस्ता, कुनैमा हरिणाको खुर जस्ता थोप्ला हुन्छन्। यी सर्पहरूको पेटको भाग मोटो र बाँकी भाग पातलो हुन्छ। जसको शरीरको थोप्लो चम्किलो हुन्छ त्यो अति विषालु हुन्छ। यिनको मुख्य पहिचान शरीरमा छिर्बिरे बुट्टा, मोटो पेट र मन्द चाल हो। प्रकृति पित्त प्रधान हुन्छ।

३. **राजिल वा धारीदार सर्प** – यिनको शरीर सफा, चिल्लो तथा हेर्दा सुन्दर हुन्छ। यिनमा कसैको शरीरमा तेर्सो, कसैको शरीरमा सोझो र कसैको शरीरमा विन्दुसहितका रेखा हुन्छन्। इनको प्रकृति कफप्रधान र विष शीतल हुन्छ।

४. **निर्विष सर्प** – यी सर्पहरूमा विषको मात्रा अति कम हुन्छ अथवा हुँदै हुँदैन। अजिंगर, दुईमुखे सर्प र पानीको सर्प यही जातमा पर्छन्। दुईमुखे सर्पको दुवैतिर मुख हुन्छन्। शरीर गोल हुन्छ। इनको टोकाइमा विष या त चढ्दै चढ्दैन, चढ्यो भने पनि कम मात्रामा हुन्छ। अजिंगरले टोक्दैन तर मनुष्य र पशुहरूलाई पूरै निलिदिन्छ।

५. वैकरञ्ज (दोगला) सर्प – दुई जातिका सर्पहरूको संसर्गबाट यी उत्पन्न हुन्छन् । जस्तो कि राजिल जातिको सर्प र भोगी जातिकी सर्पिणीले सङ्गम गरेपछि दोगला सर्पले जन्म लिन्छ । बच्चामा आमा-बाबु दुवैको लक्षण पाइन्छ ।

यिनले दुई दोष वा तीनै दोषहरूलाई कुपित बनाउँछन् ।

सर्पहरूको विषको लक्षण – भोगी अर्थात् दर्वीकर (फण हुने गोमन आदि) सर्पले टोकेको अवस्थामा जोर्नीहरू दुख्ने, हाई हाई आउने हुन्छ । छाला तथा आँखा आदि काला हुने आदि वायुका विकार हुन्छन् ।

मण्डली सर्पले टोक्दा छाला, आँखा, नङ, दाँत र मल सबै पहेंला अथवा रातोपन लिएका हुन्छन् । शरीरमा दाह हुन्छ, बढी प्यास लाग्छ । चिसो कुरा खान र शरीरमा लगाउने चाहना हुन्छ । ज्वरो आउने मूर्च्छा पर्ने हुन्छ ।

नाक, मुख, कान, आँखा, गुदद्वार, योनि, लिङ्ग आदिबाट रगत बग्न थाल्छ । सबै कुरा पहेंला देखिन्छन् ।

राजिल सर्पले टोकेको अवस्थामा छाला, आँखा, नङ आदि सबै सेता भएर जान्छन् । जाडो भएर ज्वरो आउँछ । रौंहरू ठाडा हुन्छन्, शरीर ऐठिन थाल्छ । सर्पले टोकेको ठाउँको आसपासमा र शरीरका अरू भागमा सुनिएर आउँछ । मुखबाट बाक्लो कफ आउँछ । वमन हुन्छ । आँखामा बारम्बार चिलाइरहन्छ, कण्ठ सुकेर जान्छ र घाँटीबाट घर्रघर्र आवाज आउँछ । सास मुस्किलले फेरिन्छ । आँखा अगाडि अन्धकार देखिन्छ ।

सर्पदंशका प्रकारहरू –

१. सर्पित – सर्पले टोकेको ठाउँमा १-२ वा बढी दाँतहरू गडेको गहिरो घाउ पाइन्छ । त्यसमा केही रगत बगेको र त्यो भाग सुनिएको देखिन्छ । सर्पको विष शरीरमा पूरा तवरले पुग्छ । इन्द्रियहरूमा चाँडै विकार सुरु हुन्छ ।

यस्तो दंश (टोकाइ) प्राणनाशक हुन्छ ।

२. रदित – यसको अर्थ चिथोरिएको हुन्छ । यसमा सर्पले टोकेको ठाउँमा निला, पहेंलो तथा राता रेखाहरू देखिन्छन् । ती रेखाहरूबाट केही रगत निस्केको हुन्छ । यसमा केही विष हुन्छ । उत्तम चिकित्साले मानिस बाँच्न सक्छ ।

३. निर्विष – सर्पले टोकेको ठाउँमा दाँत गडेको चिन्ह तथा रगत निस्केको लक्षण भए पनि त्यो भागमा सुनिएको छैन, इन्द्रियहरू र शरीरको प्रकृतिमा कुनै विकार उत्पन्न भएको छैन भने त्यो दंश निर्विष (विष नभएको) बुझ्नुपर्छ ।

४. सर्पाङ्गाभिहत – बढी डराउने मानिसको शरीरमा सर्पले मुख मात्र लगायो तर टोकेको छैन, खोस्रिएको लक्षण पनि छैन किन्तु त्यो मानिसले भ्रम भएर

आफूलाई सर्पले टोकेको सम्झन्छ । त्यस अवस्थामा भयका कारण वायु कुपित भई त्यो भाग कदाचित् सुनिन सक्छ । भयबाट मूर्च्छा हुनसक्छ प्रकृति पनि बिग्रेर जान्छ । त्यस अवस्थामा रोगीलाई सम्झाउनुपर्छ र सर्पले टोकेको होइन भनी विश्वास दिलाउनुपर्छ ।

सर्पले टोकेको मानिसको परीक्षण – अनेक पटक सर्पले टोकेपछि मानिस एकदम मूर्च्छा पर्छ, उसको नाडी चल्दैन । विष कडा भएमा श्वासको गति पनि रोकिन्छ तर वास्तवमा त्यो मरिसकेको हुँदैन । त्यस्तो अवस्था बुझ्न रोगीको राम्ररी परीक्षण गर्नुपर्छ र आवश्यक उपचार पनि गर्नुपर्छ ।

परीक्षण गर्ने विधि – उज्यालो ठाउँमा बेहोस रोगीलाई सुताएर उसको आँखा खोली आँखाको नानीमा आफ्नो प्रतिबिम्ब हेर्नू । प्रतिबिम्ब देखियो भने त्यो व्यक्ति जिउँदै छ भन्ने बुझ्नू ।

त्यस्तै अँध्यारो ठाउँमा उसको आँखा अगाडि ज्योति राख्नू । उक्त ज्योतिको बिम्ब उसको आँखामा देखियो भने उ मरेको छैन भनी बुझ्नुपर्छ ।

बेहोस मानिसको आँखाको नानीमा चमक छ भने ऊ जीवित छ । तल्लो पेट, चाक, लिङ्ग, योनिको छिद्र तथा गुदद्वारको भित्र पछाडितिर तल मुटुबाट एउटा नसो आएको हुन्छ, जबसम्म रोगी जीवित हुन्छ तबसम्म त्यो नसो हल्लिरहन्छ, चलिरहन्छ । कुशल नाडीको परीक्षकले उक्त नसामा औंला राखेर नाडी चलेको वा नचलेको विचार गर्न सक्छ ।

सर्पविषको चिकित्सा – सर्पले टोकेको ठाउँ (हात, गोडा)मा तत्काल एकपछि अर्को ३-३ औंलाको अन्तरमा छिटो गरी कुनै डोरीले बाँधि दिनुपर्छ । यो क्रिया विष अगाडि बढ्नुभन्दा पहिले नै गर्नुपर्छ । विषमाथि चढिसकेपछि बाँधेर काम लाग्दैन ।

सर्पले टोकेको ठाउँभन्दा ४-६ अंगुलमाथि डोरीले बाँधिसकेपछि आसपासमा रौंहरूमा चेतना छ कि छैन भनी जाँच्नुपर्छ । जहाँको रौंमा चेतना छैन त्यहीं विष छ भनी बुझ्नुपर्छ । किनकि जब विष रौंको जरामा पुग्छ अनि त्यसको चेतना हराउँछ । र विष अगाडि बढ्ने बित्तिकै त्यो रौं फेरि उठेर आउँछ अगाडि जुन ठाउँमा विष पुग्छ त्यहाँको रौं ढल्छ । अर्को कुरा यो पनि छ जहाँसम्म विष चढिसकेको हुन्छ, त्यहाँसम्म रगत कालो भएर जान्छ र नसाहरू निला हुन्छन् । यो कुरा जानीसकेपछि टोकेको ठाउँको माथिपट्टि बाँध्नुपर्छ । जसबाट रगतको सञ्चार कम भएर विष अगाडि बढ्न नपाओस् । अब सर्पले टोकेको ठाउँमा चिन्ह बनाई चक्कू अथवा शुद्ध ब्लेडले काटी रगत निचोरिदिनुपर्छ । रोगीलाई सुत्न दिनुहुँदैन, उसँग कुरा गरिराख्नुपर्छ ।

निर्विषी घोटेर सर्पले टोकेको ठाउँमा (घाउमा) लेप लगाउनू । त्यही लेदो १ चम्चा जति बिरामीलाई खान पनि दिनू । आराम हुन्छ ।

सर्पले टोकेको मानिसलाई घिउ र मह अथवा घिउ मिसाएर औषधि दिनू, किनकि विषमा घिउले निकै फाइदा गर्छ ।

अदुवा, पिप्ला मरिच र सिंधे नुन यी सबैलाई पिनेर छान्नू र सबैको चूर्णलाई सर्पले टोकेको मानिसलाई घिउ, मह र मख्खनमा मिसाई खान दिनू। यसबाट क्रोधले भरिएको नागले टोकेको पनि आराम हुन्छ। (परीक्षित)

तण्डुलीयक अर्थात् लुँडेको जरालाई चौलानीसँग पिनेर पिउनाले मनुष्य तत्काल निर्विष भएर जान्छ।

जयपालको बियाँलाई नीमको पातको रसमा २१ भावना दिनू। यो भावना दिएको बियाँलाई मानिसको न्यालमा घोटी आँखामा अञ्जन गर्नू (गाजल जस्तै गरी लगाउनू)। यसबाट सर्पको विष नष्ट भएर जान्छ।

घरको धुवाँ, हलेदो, दारुहरिद्रा, लुँडेको जरा सबैलाई एकैपल्ट पिनेर घिउ र दहीमा मिसाएर सेवन गर्नाले सर्पको टोकाइमा आराम हुन्छ। सिंधे नुन १ भाग (१० ग्राम), मरिच १ भाग, नीमको पात २ भाग (२० ग्राम) सबलाई पिनेर चूर्ण बनाई १ ग्राम मात्रा लिनू र मह-घिउसँग सेवन गराउनू। स्थावर - जङ्गम सबै किसिमको विषको हरण हुन्छ।

सर्प वा बौलाहा कुकुरले टोकेको ठाउँमा तुरुन्त पिसाब गरिदिनू। विषको असर कम हुन्छ।

आँककको पातको जुन सेतो भाग हुन्छ त्यसलाई नङले खुर्किनू र एक भाँडोमा जम्मा पार्नू। फेरि त्यसमा आँककै दूध मिसाई घोट्नू र चनासमानको गोलीहरू पार्नू। सर्पले टोकेको व्यक्तिलाई २०-२० मिनेट अथवा ३०-३० मिनेटमा १-१ गोलीको सेवन गराउनू। ६ गोलीपछि मुख गुलियो भएर आउनेछ तर सातौं गोली तितो लाग्नेछ। गोली तितो लाग्न थालेपछि विष हरण भैसकेको बुझ्नू। त्यसपछि अरू गोली दिनुपर्दैन। (परीक्षित)

शिरीषको पातमा सेतो मरिच छर्नू र पातलाई दलेर सुकाइदिनू। यसै प्रकारले ७ दिनसम्म ७ पटक गर्नू। अनि सुकाएर सुरक्षित गर्नू। सर्पले टोकेको मानिसलाई यो औषधि खान दिनू। नाकमा नसको रूपमा राख्नू र आँखामा अञ्जन पनि गर्नू। विषको हरण हुन्छ। (परीक्षित)

सेतो करवीरको सुकेको फूल ६ ग्राम, कडा सुर्ती ६ ग्राम सुकमेलको बियाँ २ ग्राम सबलाई मसिनो हुने गरी पिनेर कपडछान गर्नू। यो चूर्णको नस दिनाले सर्पको विषनाश भएर जान्छ। (परीक्षित)

सेतो पुनर्नवाको जरा ६ ग्राम -१२ ग्रामसम्म पानीमा पिनेर घोल बनाउनू। यो घोल दिनको २-३ पटक खान दिनू। अथवा त्यही जरो पानीले राम्ररी पखालेर मुखमा राखी चुस्न लगाउनू। त्यही जरोलाई पिनेर सर्पले टोकेको ठाउँमा लेप लगाईदिनू। रोगी ठीक भएर जान्छ।

जहरमोहरा[1] लाई सिलौटो वा खलमा गुलाबजलका साथ घोटेर १ पटकमा एउटा गहुँको गेडा जति सर्पले टोकेको मानिसलाई चटाउनू र यसैलाई सर्पले टोकेको ठाउँमा लेप गर्नू। यसलाई चाटेपछि वमन हुनेछ। वमन भएपछि फेरि चटाउनू। यसै प्रकारले बारम्बार वमन हुनेबित्तिकै चटाउने गर्नू। जब वमन रोकिन्छ अनि विषनष्ट भयो भनी बुझ्नुपर्छ। जब पेटमा विष रहँदैन तब यसलाई चटाउँदा वमन हुँदैन। यो स्थावर, जङ्गम सबै किसिमका विषहरूमा परीक्षित औषधि हो।

सर्प आदिको विषबाट बच्ने उपाय – मेषको संक्रान्ति (वैशाख) का दिन मुसुरोको दाल र नीमको पात मिसाई खाएमा १ वर्षसम्म कुनै पनि विषको भय रहँदैन।

हरेक दिन बिहान नीमको पात चबाउनाले सर्पको विषको भय हुँदैन।

जुन समयमा सूर्य वृषराशिमा हुन्छ त्यस समयमा (ज्येष्ठमा) शिरीषको एउटा बियाँ खानाले सर्पले टोक्ने डर हुँदैन। रायो र नौसादर मिसाई घरमा छरिदिनाले सर्प त्यस घरलाई छोडी भागेर जान्छ र कहिल्यै पनि आउँदैन। वैशाखको महिनामा मुसुरोको गेडो र नीमको पातसँगै शिरीषको जरालाई पिउनाले १ वर्षसम्म विष तथा विषमज्वरको भय हुँदैन।

कार्बोलिक एसिड छरी दिनाले यसको गन्धबाट सर्प भागेर जान्छ।

बिच्छीको परिचय र विषलक्षण –

बिच्छी तीन किसिमको हुन्छ – (१) मन्द विष हुने, (२) मध्यम विष हुने र (३) महाविष (कडा विष) हुने। महाविष हुने बिच्छी कालो, सेतो वा गाजलको रङ्गको, अग्निसमान कान्ति भएको हुन्छ। त्यसको शरीर एक वा दुई पर्वले सहित हुन्छ। कुनै बिच्छीको पेट कालो र कुनैको रातो हुन्छ।

बिच्छीले टोक्दा आगोले पोलेजस्तो डाह हुन्छ, हजारौं सियोहरूले घोचे जस्तो दुख्छ। विषका साथ दुखाइ शरीरको माथितिर सर्दै जान्छ। अङ्गहरू भाँचिएका हुन् कि भने जस्तो दुखाइ हुन्छ। पछि गएर दुखाई बिच्छीले टोकेकै ठाउँमा भइरहन्छ।

चिकित्सा – बिच्छीले टोकेको स्थानभन्दा माथि ४-४ औंला फरक पारी २-३ ठाउँमा डोरीले बाँध्नुपर्छ र ⊣⊢ यस्तो चिह्न आकारको घाउ ब्लेडद्वारा बनाई रगत निकाल्नुपर्छ। त्यसमाथि औषधि लगाउनुपर्छ।

---

१. यो एक किसिमको पहेंलो मिसिएको सेतो रङ्गको पत्थर हो। नीमको पात र जहरमोहरा दुवै मिसाएर पिन्नू। यदि नीमको तितो हराएर गयो भने जहरमोहरा असली हो। यो आयुर्वेदिक औषधि बेच्ने पसलमा पाउन सकिन्छ।

४.५ ग्राम हिंगलाई ३० मि.लि. मद्य(मदिरा)मा मिसाई पिउन दिएमा बिच्छीको विष नष्ट हुन्छ ।

अलि- अलि सिंधे नुन ख्वाउनाले बिच्छीले टोकेको मानिसलाई शान्ति मिल्छ । (परीक्षित)

ओखर खान दिए पनि आराम हुन्छ ।

इन्द्रवारुणीको हरियो फलको गुदी ६ ग्राम खान दिएमा अतिशीघ्र आराम हुन्छ ।

सिंधे नुनको धुलो घिउमा मिसाई खानाले अथवा टोकेको ठाउँमा लेप लगाउनाले बिच्छीको विष नष्ट हुन्छ । एक वा दुई जयपाल (जमालगोटा)को बियाँलाई पानीमा पिनेर बिच्छीले टोकेको ठाउँमा लगाईदिनाले महाविष बिच्छीको विष पनि शान्त भएर जान्छ । (परीक्षित)

लसुनको रस ३० मि.ली. र मह ३० मि.ली. मिसाएर पिउनाले अवश्य आराम हुन्छ ।

मुला र नुन पिनेर बिच्छीले टोकेको ठाउँमा लगाईदिनाले विष ओर्लेर आउँछ । मुला र काँक्रोको सदा सेवन गर्नेलाई बिच्छीको विषले केही लछार्दैन ।

शिरीषको बियाँ र पिप्लालाई चूर्ण बनाउनू । यस चूर्णमा आँकको दूध राखी हातले मल्नू र २-३ घण्टा त्यसै छोडी दिनू । त्यसपछि छायामा सुकाउनू । यसै रीतले ताजा आँकको दूधमा ३ भावना दिनू र सुकाएर सिसीमा सुरक्षित गरी राख्नू । कसैलाई सर्प, बिच्छी, माकुरा अथवा मुसाले टोक्यो भने यस औषधिलाई पानीमा मिसाएर टोकेको ठाउँमा लगाउनू, आराम हुनेछ । अनेकौं पल्टको परीक्षित औषधि हो ।

सेतो पुनर्नवाको पात र डाँठका साथ अपामार्गको पात- डाँठलाई मिसाएर चूर्ण पारी बिच्छीले टोकेको ठाउँमा दल्नू, विष नष्ट हुनेछ ।

अपामार्गको जरालाई पानी राखी सिलौटोमा पिन्नू र बिच्छीले टोकेको ठाउँमा लगाउनू । केही जरा मुखमा राखी चुस्न वा चपाउन लगाउनू । जस्तै भयानक बिच्छी किन नहोस् त्यसको विष तुरुन्त नष्ट हुन्छ । यो औषधि कहिल्यै फेल खाँदैन, अनेकौं पल्ट परीक्षा गरिएको छ । जादू गर्छ । अपामार्गको जरा मात्र २-३ पटक टोकेको ठाउँमा लगाईदियो भने पनि विष रहँदैन, मामूली किराले टोके जस्तो भएर जान्छ मुसाको लिड पानीमा पिनेर दंशको स्थानमा लगाउनाले विष नष्ट भएर जान्छ । (परीक्षित)

जिरालाई पानीसँग पिन्नू र त्यसमा अलिकति घिउ र सिंधे नुनको धुलो मिसाएर आगोमा तताउनू । त्यसमा मह मिसाई मनतातो बनाएपछि बिच्छीले टोकेको ठाउँमा लगाउनू । यस लेपबाट बिच्छीको विष अवश्य नष्ट हुन्छ । फेल खाँदैन । (अनेक पल्ट परीक्षित)

पलासको बियाँलाई आँकको दूधमा पिनेर लेप गरे पनि बिच्छीको विष नष्ट हुन्छ । हुलहुल (सुवर्चला)को पातको चूर्ण बिच्छीले टोकेको मानिसलाई सुँघाइदिएमा तत्काल आराम भएर जान्छ । (परीक्षित)

निर्मलीको बियाँलाई पानी राखी घोट्नू र बिच्छीले टोकेको ठाउँमा लेप लगाउनू । तत्काल विष नष्ट हुन्छ । (परीक्षित)

इमिली (अमिली)को बियाँलाई पानीमा पिनेर लगाउनाले तत्काल आराम भएर जान्छ ।

काली तुलसीको रसमा नुन मिसाएर २-३ पटक लगाएमा बिच्छी र सर्पको विष नष्ट भएर जान्छ । विषालु जीव अरिंगाल आदिको विषलाई तुलसी रामबाण हुन्छ ।

मुसोको विष-परिचय र विषलक्षण

मुसोको विष त्यसको वीर्य, लिड, पिसाब, नङ र दाँतमा हुन्छ । मुसोको वीर्य, लिंड आदिको स्पर्श शरीरसँग भएमा अथवा कसैलाई मुसाले टोकेमा विष शरीरमा फैलिएर जान्छ । यसको विषबाट ज्वरो आउने, अरुचि हुने हुन्छ । रोमाञ्च हुन्छ । छालामा गोल दाग उत्पन्न हुन्छन् । रक्तविकार तथा सिफलिस जस्ता लक्षण देखिन्छन् । बिस्तारै जीवनीशक्तिको ह्रास हुँदैजान्छ ।

चिकित्सा - शिरीषको जरालाई मह वा चौलानी अथवा बाखाको मूत्रसँग सेवन गर्न लगाएमा मुसोको विष नष्ट गर्छ । (परीक्षित)

तण्डलीयक अर्थात् लुँडेको जरा ल्याई पानी राखी पिनेर लेदो पार्नू । लेदोको चौबर गाईको घिउ र घिउको चार गुणा गाईको दूध राखी मन्द अग्निमा पकाउनू । दूध जति सुकेपछि उतारेर छान्नू र सुरक्षित गरी राख्नू । यस घिउको सेवन गर्न लगाएमा मुसाको विषविकारमा तत्काल आराम हुन्छ ।

मुसाहरूबाट बच्ने उपाय- मुसाहरू फिटकिरीको गन्धले भाग्छन् । जहाँ मुसाहरूको चलखेल छ त्यहाँ फिट्किरी फिंजाइदिनू, मुसा भागेर जान्छन् ।

एउटा मुसालाई समातेर निलो रङ्गले रङ्गाइदिनू र छोडीदिनू । उसलाई देखेर बाँकी सबै मुसा भागेर जान्छन् ।

भाँगको बियाँ र करवीरको पातलाई गहुँको पिठोमा मुछेर गोली पारी मुसाको चलखेल हुने ठाउँमा राखिदिनू । त्यो खाएपछि मुसा मर्छन् ।

लामखुट्टेको दंश - यसको टोकाइबाट टोकेको ठाउँमा अलिकति सुनिने, मन्द दुख्ने र चिलाउने हुन्छ । कुनै लामखुट्टेको टोकाइबाट मलेरिया र टाइफाइड ज्वरो पनि आउन सक्छ ।

उपचार एवं रोकथाम – बदामको तेल शरीरमा दलेर सुतेमा लामखुट्टेले टोक्दैन ।

छडीला र फिट्किरीको धुवाँले लामखुट्टे भाग्छ । लामखुट्टेले टोकेको ठाउँमा प्याजको रस लगाउनाले शीघ्र आराम हुन्छ ।

गन्धक अथवा करवीरको पात अगुल्टोमा राखी धुवाँ दिनाले उपियाँ भाग्छन् । करवीरको पातको रस वा पकाएको काँढा भित्ता वा भुइँमा छर्नाले पनि उपियाँ भाग्छन् ।

ससाना किरा फटचाङ्ग्राले टोकेको ठाउँमा कपूर मिसाएको पानी लगाईदिनाले विष चढ्दैन र सुनिएको पनि बस्छ । २ तोला खयर (२० ग्राम), १० ग्राम कपूर, ५ ग्राम सिन्दूर यी सबैलाई पिनेर कपडछान गर्नू । फेरि घिउ वा नौनी घिउलाई १०१ पटक काँसको थालीमा धुनू । फेरि उक्त चूर्णलाई घिउमा राम्ररी मिसाउनू । यस मलमलाई लामखुट्टे आदिले टोकेको ठाउँमा दल्नू । यसबाट एकै दिनमा सुनिएको अथवा चिलाएको आराम भएर जान्छ । अरू पनि सबै घाउहरूका लागि रामबाण हुन्छ । चिलाउने लुतोका पहेंला बिमिराहरू यसबाट तुरुन्त मेटिन्छन् । जलन शान्त गर्नका लागि यो रामबाण नै हुन्छ । (परीक्षित)

खजुरोको विषलक्षण एवं उपचार –

यसले शरीरमा टोक्छ र टाँसिएर पनि बस्छ । यसका सयओटा ससाना खुट्टा हुन्छन् । यसैले यसलाई शतपदी (खजुरो) पनि भन्छन् । यसले टोक्दा विशेष किसिमको दुखाई हुन्छ, सास फेर्न गाह्रो हुन्छ । मिठाईप्रति रुचि बढेर जान्छ । यो शरीरमा टाँसियो र छोडेको छैन भने यसको अगाडि ताजा मासुको टुक्रा राखी दिनू । शरीरलाई छोडेर मासुमा गई टाँसिन्छ । अथवा-टाँसिएको ठाउँमा चिनी छर्नू ।

तोरीको तेल लगाई दिनाले खजुरोको विष नष्ट हुन्छ । बेसार, दारुहरिद्रा, गेरु, मनःशिलाको लेपले पनि यसको विष नष्ट हुन्छ । बेसार, दारुहरिद्रा र सिंधे नुन सबैलाई पिनेर घिउमा मिसाई लेप गर्नाले पनि यसको विष नष्ट हुन्छ ।

माहुरी तथा अरिंगालको विषलक्षण र चिकित्सा – यिनले टोकेको ठाउँमा पोल्छ र सुनिएर पनि आउँछ । सूप र सिंधे नुन पिनेर त्यसमा घिउ मिसाइ लेप गरेमा मौरीको विष नष्ट हुन्छ, सिंधे नुन मात्र मले पनि विष चढ्दैन ।

पिप्लालाई पानी राखी पिनेर बनाएको कल्क (लेदो) माहुरीले टोकेको ठाउँमा लेप गर्नाले शीघ्र आराम हुन्छ ।

घिउ, सिंधे नुन, तुलसीको पातको रस तीनै ओटालाई मिसाएर टोकेको ठाउँमा लेप गर्नाले तत्काल शान्ति हुन्छ । (परीक्षित)

कपूरलाई सिरका वा अमिलोमा मिसाएर लेप गर्नाले अरिंगालको विष नष्ट हुन्छ । (परीक्षित)

गन्धकलाई पानी राखी पिनेर लेप गरे पनि अरिंगालको विष नष्ट हुन्छ। अरिंगालले टोक्नासाथ घिउ लगाई सेकिदिनू। यसबाट विषको वेग बढ्न पाउँदैन। परीक्षित उपाय हो।

मरिच, सिंधे नुन, सौंचर नुन, सुठो यी सबैको चूर्ण बनाई नागरपानको रसमा घोटी लेप गर्नाले शीघ्र आराम पाइन्छ। (परीक्षित)

सुवर्चला अर्थात् हुलहुलको बियाँ २० ग्राम पिनेर खानाले सबै किसिमका कीराहरूको विष नष्ट हुन्छ।

अरिंगालले टोकेको ठाउँमा अर्क कपूर अथवा आँकको दूध लगाउनु पनि लाभदायक हुन्छ। अर्क कपूरको प्रयोग परीक्षित हो।

कमिलोको विषलक्षण र बच्ने उपाय – कमिलाले टोकेको ठाउँमा शोथ र वेदना हुन्छ। तोरीको तेलदेखि साना ठूला सबै कमिलाहरू डराउँछन्। तोरीको तेल छर्नाले कमिला भागेर जान्छन्। कमिलाले टोकेको ठाउँमा पनि माहुरीले टोकेको ठाउँमा लगाउने औषधिले नै आराम गर्छ।

बिरालोको टोकाइमा – टोकेको ठाउँमा प्याज र पुदिना पिनेर लगाउनुपर्छ र पुदिना खान दिनुपर्छ।

अथवा – कालो तिललाई पानी राखी पिनेर बनाएको लेप लगाउनुपर्छ।

न्याउरी मुसाको टोकाइमा – गर्भवती न्याउरी मुसाले टोकेमा मानिस मर्छ। न्याउरी मुसाले सितिमिति मानिसलाई टोक्दैन। कुनै बेला टोक्यो भने टोकेको ठाउँमा खूब दुख्छ। त्यसपछि सारा शरीरमा छिटै दुखाइ फैलिन्छ।

न्याउरी मुसाले टोकेको ठाउँमा लशुनको लेप गर्नू अथवा केराउको पिठो पानीमा घोलेर लेप गर्नू।

मानिसले टोकेमा – जैतूनको तेल (Olive oil)मा मैन मिसाएर टोकेको ठाउँमा लगाउनू। **अथवा**– मुर्दासङ्गलाई पानीमा पिनेर लेप गर्नू। अथवा– गोभी (काउली) को पात पिनेर मह मिसाई लेप गर्नाले मानिसले टोकेको घाउ आराम भएर जान्छ।

माउसुलीको टोकाइमा – माउसुलीले टोक्दा यसको दाँत शरीरभित्रै रहन जान्छ। यसैले हरसमय दुख्ने भइरहन्छ, ज्वरो आउँछ, अत्यास हुन्छ।

उपचारका लागि दाँत निकाल्ने उपाय गर्नुपर्छ।

बौलाहा कुकुरको टोकाइमा

पहिचान – कुकुर बौलाहा भएमा उसको पुच्छर सोझो जान्छ – मुखबाट च्याल बगिरहन्छ, घाँटी बाङ्गो हुन्छ, त्यो अन्धो र बहिरो भएर जान्छ। अरू कुकुरहरू

उसलाई देख्ने बित्तिकै भाग्छन् । त्यो कुकुरले जुन मानिस वा जनावरलाई टोक्छ, त्यो पनि बौलाहा भएर जान्छ ।

बौलाहा कुकुरको टोकाइबाट हुने विषलक्षण –

बौलाहा कुकुर वा स्यालले टोकेमा मानिसलाई निकै चिन्तामग्न तथा बुद्धिहीन बनाइदिन्छ, मुख सुक्छ, बढी प्यास लाग्छ, उज्यालो सहन हुँदैन । एकलै बस्न रुचाउने भएर जान्छ, शरीर रातो रङ्गको हुन्छ, अन्तमा रुन थाल्छ । त्यो मानिस पानीदेखि डराउन थाल्छ, किनकि उसलाई पानीमा कुकुरको आकृति देखिन्छ । उसलाई चिसो पसिना आउँछ, बेहोस भएर मर्छ । पानीदेखि डराउने, ऐना देखि डराउने र कुकुर जस्तै भुक्ने रोगी प्रायः मर्छ । अतः पहिले नै रोगीको परीक्षा-चिकित्सा सुरुगरी हाल्नुपर्छ । वास्तवमा बौलाहा कुकुरको शङ्का हुने बित्तिकै त्यसको चिकित्सा सुरु गर्नु र साथमा परीक्षा पनि गर्दै जानु राम्रो हुन्छ ।

बौलाहा कुकुरको टोकाइ निधो गर्ने उपाय (परीक्षा) – ओखरको गुदी कुकुरले टोकेको ठाउँमा १ घण्टासम्म राख्नू । त्यसपछि त्यसलाई झिकेर कुखुरालाई दिनू । त्यो खाएर कुखुरो मर्छ भने कुकुर बौलाहा हो भनी बुझ्नू । त्यस्तै एउटा रोटीको टुक्रालाई कुकुरले टोकेको घाउमा लगाएर अर्को कुकुरको अगाडि फालिदिनू । कुकुरले त्यो टुक्रा खाएन अथवा खाएर मऱ्यो भने टोक्ने कुकुर बौलाहा रहेछ भनी बुझ्नू ।

चिकित्सा – घाउबाट रगत निचोरीदिनू । रगत निस्केर गएपछि उक्त घाउलाई घिउ तातो पारी पोलीदिनू । त्यसपछि सर्प चिकित्सामा वर्णित अगद आदि विषनाशक योग तथा मह र घिउ मिसाई खान दिनू । अथवा- पुरानो घिउ भए पनि पिउन दिनू । सेतो पुनर्नवा र धतुरोको जरा अलि अलि सेवन गराउनू । तिलको तेल तताएर घाउमा लगाउनू, अथवा तिल पिनेर घाउमा लगाउनू । अथवा आँकको दूधको लेप लगाईदिनू । रोगीलाइ केही पागलपन उत्पन्न गर्ने औषधि दिइयो भने पागलपन उत्पन्न भई कुकुरको विषशान्त भएर जान्छ । यसका लागि अपामार्गको जरा १० ग्राम, धतुरोको जरा ५ ग्राम र चामल ५ ग्राम यी तीनै थरीलाई चौलानी राखी पिनेर डल्लो पार्नू । फेरि त्यस डल्लोलाई ५-७ ओटा धतुरोको पातमा बेरेर फुरौला जस्तै पकाउनू र रोगीलाई ख्वाइदिनू । यो औषधि पच्ने समयमा यदि रोगीमा पागलपनको लक्षण देखिन थाल्यो भने उसलाई पानी नभएको चिसो ठाउँमा हात-खुट्टा बाँधेर राखिदिनू । यस किसिमको औषधिबाट उन्माद आदि विकारहरू शान्त भएर जान्छन् । यदि अझै केही विकार बाँकी भएमा ३ वा ५ दिनपछि फेरि यसै औषधिको आधा मात्रा दिनू । दोस्रो पटकको औषधिले सबै विकार नष्ट हुनेछन् ।

जब सबै विकारहरू नष्ट भैसक्छन् अनि रोगीलाई स्नान गराएर तातो दूधका साथ साँठी चामलको भात दिनू। यो औषधिले आफैं विषलाई कुपित गराई शान्त गरिदिन्छ।

अथवा - सबभन्दा पहिले घाउमा तत्काल दीपकको तेल लगाईदिनू। त्यसपछि रातो खुर्सानी पिनेर घाउमा लेप लगाउनू र माथिबाट माकुराको जालो कागज जस्तै फिँजाएर राख्नू। अब कसेर पट्टी बाँधिदिनू। आराम हुनेछ। यो उपाय फेल खाँदैन। परीक्षित हो।

अथवा - लशुनलाई सिरकामा पिनेर घाउमा लेप गर्नू।

अथवा - कुचिलालाई गोमूत्रमा पिनेर लेप गर्नू।

शुद्ध कुचिला, शुद्ध वत्सनाभ विष, शुद्ध स्वाग, समभाग लिएर पिन्नू। यसबाट १-१ रत्ती (१२५ मिलीग्राम) रोगीलाई सेवन गराएमा २१ दिनमा आराम भएर जानेछ। सेतो जिरा, कालो जिरा र मरिच यी सबै पिनेर १ महिनासम्म सेवन गराएमा बौलाहा कुकुरको विषशान्त भएर जान्छ।

तितो जङ्गली तोरियाँको गुदी ५० ग्राम लिनू र त्यसलाई २०० मि.ली. पानीमा आधा घण्टा भिजाइदिनू। पछि यसलाई मलछान गरी बल अनुसार २५-५० मि.ली. मात्रामा ५ दिनसम्म नित्य बिहान सेवन गराउनू। यसबाट वमन तथा पखाला चलेर विष निस्केर जानेछ। बौलाहा कुकुरको जस्तोसुकै विष भए पनि यस औषधिले अवश्य आराम भएर जानेछ। वर्षातको मौसम सकिन्जेल पथ्य राख्नु आवश्यक हुन्छ। (परीक्षित)

आँककको दूधको लेपन कुकुर तथा बिच्छीको दंशमा अवश्य आराम दिन्छ। अनेक पल्ट परीक्षित छ।

बिरामीलाई पुरानो घिउ खान दिनू। कुचिलालाई मदिरामा पकाएर बोक्रा फालेर त्यसबाट रोगीलाई नित्य १ रत्ती (१२५ मिलीग्राम) ख्वाउनू, आराम हुनेछ। अथवा-कुचिलालाई पानी राखी पिनेर गुड (सख्खर) मिसाई रोगीलाई खान दिनू। कुचिलाको मात्रा बढी नहोस् भन्ने ख्याल गर्नू। अवश्य आराम हुनेछ। (अनेक पल्ट परीक्षित)

धतुरोको शुद्ध बियाँ[1] पहिलो दिन एउटा, दोस्रो दिन २ ओटा यसै हिसाबले २१ दिनसम्म १-१ बढाउने र फेरि १-१ घटाई १ मा पुऱ्याउने गराउनू। यसरी सेवन गरेमा बौलाहा कुकुरको विष निश्चय नै शान्त हुन्छ।

उडुस भगाउने उपाय - घर लिप्ने वा पोल्ने बेलामा चून वा कमेरो माटोमा अलिकति गन्धक मिसाइदिनू। उडुसहरू भित्तामा रहँदैनन्।

---

१. धतुरोको बियाँलाई १२ घण्टासम्म गोमूत्रमा भिजाइ राख्नू। फेरि निकालेर सुकाउनु र त्यसको भुस पन्छाउनु, शुद्ध हुन्छ।

घरमा गन्धकको धुवाँ लाग्न दिनू। अथवा- कोदोको काँढामा निलो तुथो मिसाएर घरमा सबैतिर छर्कनू। उडुसले कोदो र गन्धकको गन्ध सहँदैन; त्यसैले भाग्छ।

बाघ र चितुवाको नङको घाउ - बाघ र चितुवाले नङले बनाएको घाउमा विष हुन्छ। त्यसमा पहिले पछना लगाई (ब्लेड आदिले खुर्केर) विष निकाल्नुपर्छ। त्यसपछि औषधि लगाउनुपर्छ। चियापत्ती पकाएर त्यही फिक्का चियाले घाउ धोइदिनू, शीघ्र आराम हुनेछ।

व्वाँसो, बाघ, भालू आदिले टोकेको ठाउँमा तेल दल्नू। अथवा उखु, शालधूप, सर्स्यूं, धतुरोको पात, आँकको पात र अर्जुनको फूल यी सबै मिसाएर आगोमा हाल्नू। त्यसको धुवाँ घाउमा पार्नू। यसबाट सबै किसिमका विषहरू नष्ट हुन्छन्।

ॐ आरोग्यम् ॐ आरोग्यम् ॐ आरोग्यम्

समाप्त

अंग्रेजी (डाक्टरी) तौलहरू (तुलनात्मक)

अंग्रेजी तौल		पुरानो तौल	मेट्रिक तौल
१ ग्रेन	=	१/२ रत्ती (लगभग)	
२ ग्रेन	=	१ रत्ती	१२१.५० मिलीग्राम
१८ ग्रेन	=	१० लाल वा १ माशा	९७२.०० मिलीग्राम
६० ग्रेन=१ ड्राम	=	३ माशा	२.९५ ग्राम
८ ड्राम = १ औंस	=	२.१/२ तोला	
१६ औंस = १ पौण्ड	=	४० तोला	
१ मिनिम	=	१ थोपा	
१/२ ड्राम	=	३० थोपा	
१ ड्राम	=	६० थोपा	३.५ मिलीलिटर
८ ड्राम	=	१ औंस	२८ मिलीलिटर
१६ औंस=१ पौण्ड	=	१/२ सेर (लगभग)	५.४४ किलोग्राम
११.१/४ग्रेन	=	१ आना	७२९ मिलीग्राम
९० ग्रेन	=	आधा तोला	५.८३ ग्राम
१८० ग्रेन	=	१ तोला (कम्पनी रूपैयाँ)	११.६६ ग्राम
		१ माशा	१.१६६ ग्राम
		१ लाल	०.११६६ ग्राम
		१ छटाक	५० ग्राम
		८० तोला = १ सेर (देशी)	९३३ ग्राम
		७६ तोला = १ सेर (नेपाली)	८८६.३४ ग्राम
		२२८ तोला = १ धार्नी	२.६५९ ग्राम
१२ औंस	=	१ मुट्ठा = ५ तोला	
२० औंस	=	१ माना	
१ ड्राम =६० थोपा	=	१ चिया चम्चा	
२ ड्राम =१२० थोपा	=	१ डिनर वा मझौला चिया चम्चा	
४ ड्राम =२९० थोपा	=	१ टेबुल स्पून वा ठूलो चम्चा	
१० औंस =१ ग्लास	=	२५ तोला	
१ इञ्च	=	१ अंगुल (अनुमानित)	
९ इञ्च	=	१ बित्ता	
१२ इञ्च	=	१ फुट	
१८ इञ्च	=	१.१/२ फुट=१/२ गज=१ हात	
३ फुट =१ गज	=	२ हात	

परिशिष्ट-२

जडीबुटीहरूका संस्कृत, देशी (हिन्दी) र नेपाली नामहरू

	संस्कृत	देशी (हिन्दी) नाम	नेपाली नाम
१.	अर्जुन	अर्जुन	खरी
२.	अतिबला	कंघी	अतिबला
३.	अग्निशिखा	बिच्छूबूटी	सिस्नो
४.	अपराजिता	कोयल	नील कोइली
५.	अरणी	अरनी (अगेथू)	गिनेरी
६.	अम्लवेतस	अमलवेत	पदमचाल
७.	आकाशबल्ली	अमरबेल	आकाशबेली
८.	इङ्गुदी	हिंगोट	च्यूरी
९.	उदुम्बर	गूलर	डुम्री
१०.	कट्फल	कायफल	काफल
११.	कण्टकारी	कटेरी (छोटी)	कण्टकारी
१२.	कदम्ब	कदम्ब	कदम
१३.	कपिकच्छु	केवाँच	काउसो
१४.	कपित्थ	कैथ	कैथ
१५.	कम्पिल्लक	कबीला	सिन्दुरे
१६.	करञ्ज	करञ्ज	कुबेराक्ष
१७.	करवीर	कनेर	करवीर
१८.	कसेरुक	कसेरु	कसूर
१९.	काकमाची	काकमाची, मकोय	कवै
२०.	काञ्चनार	कचनार	कोइरालो
२१.	कासमर्द	कसौंदी	कासमर्द
२२.	कासीस	हीराकसीस	कासीस
२३.	कुटज	कुरची	कुटज, वनखिर्रो
२४.	कुलत्थ	कुलथी	गहत
२५.	केतकी	केवडा	केतकी
२६.	कोद्रव	कोद्रव	कोदो
२७.	कृष्णबीज	मिर्चई, इश्कपेचा	काला दाना, भुरुङ्
२८.	खाखसबीज	खसखस	पोस्तादाना

२९.	गजपिप्पली	बडी पीपर	ठूलो पिप्ला
३०.	गुड	गुड	चाकु
३१.	गुडुची	गिलोय	गुर्जो
३२.	गुञ्जा	घुँघची	रातीगेडी
३३.	गुन्द्र	गूँदपटेर	गुन्द्री
३४.	चक्रमर्द	चकवड	टाप्रे
३५.	चन्द्रशूर	चंसूर	चम्सूर
३६.	चव्य	चव्य	चावो
३७.	चाङ्गेरी	तीनपतिया	चरिअमिलो
३८.	चित्रक	चीता	चितु
३९.	जयपाल	जमालगोटा	अजयपाल
४०.	जम्बू	जामुन	जामुनु
४१.	जलकुम्भी	जलकुम्भी	जलकुम्भी
४२.	जातीपुष्प	चमेली	जाई
४३.	जूर्णक	ज्वार	जुनेलो
४४.	ज्योतिष्मती	मालकागनी	मालकागुनु
४५.	तण्डुलियक	चौलाई	लुँडे
४६.	तिन्दुकफल	तेंदु	तिंदु/तिंजु
४७.	त्रपुस	खीरा	काँक्रो
४८.	ददुघ्न	दादमर्दन	टाप्रे
४९.	दारुहरिद्रा	दारुहल्दी	चुत्रो
५०.	दूर्वा	दूब	दुबो
५१.	धर्त्तूर	धतुर	धतुरो
५२.	धन्वयासा	धमासा	दुरालभा
५३.	धातकी	धाय	धाइरो, धा ँरो
५४.	नखरञ्जक (रक्तगर्भ)	मेंहदी	मेहदी
५५.	नल	-	निगालो
५६.	नागबला	गंगेरन	नागबला
५७.	नागपाषाण	जहरमोहरा	झारमौरो
५८.	निर्गुण्डी	संभालू	सिमाली
५९.	निम्बुक	मीठा नीबू	चाक्सी
६०.	निर्यास	गूँद	चिनियाँ गूँद
६१.	पद्मक(?)	पदम	आरुपाते
६२.	पारीष	पाखर	पाखुरी
६३.	पिण्डालुपत्र	अरुवीका पात	कर्कलो

६४.	पिप्पली	पीपर	पिप्ला
६५.	पुनर्नवा	विषखपरा, गदहपुर्ना	गजपूर्नी, आँखे झार
६६.	पेरोजक	फिरोजा	यू
६७.	प्रियंगु	प्रियङ्गु	दही काम्लो
६८.	पृश्निपर्णी	पिठवन	पृश्निपर्णी
६९.	बट	बड	बर
७०.	बला	खरेंटी	बलु
७१.	बहुबीजा	टमाटर	गोलभेंडा
७२.	बोल	बोल	बोल
७३.	ब्रह्मदण्डी	उँटकटेरा	ब्रह्मदण्डी
७४.	ब्राह्मी	ब्राह्मी	घोटताप्रे
७५.	बृहती	बडीकटेरी	बिंही
७६.	भृङ्गराज	भाँगरा	भृङ्गराज
७७.	मन्दार	मन्दार	पारिजात
७८.	महाभरी वचा	कुलिञ्जन	सुगन्धित बोझो
७९.	-	माक्रिया	चिलाउने
८०.	मातुलुङ्ग	बिजौरा नीबू	बिमिरो
८१.	मालती	मालती	वनमालती
८२.	मायाफल	माजूफल	माजूफल
८३.	मिष्टालाबु	लौका/कद्दु	लौका
८४.	मुष्टक	नागरमोथा	मोथे
८५.	मुस्ता	मोथा	मोथे झार
८६.	मूर्वा	मुर्हरी	भोर्ला
८७.	मोचरस	सेमलका गोंद	सिमलको खोटो
८८.	मृग	बारहसिंगा	जरायो
८९.	यष्टीमधु	मुलेठी	जेठीमधु
९०.	युञ्जात	सालपञ्जा	पाँचऔंले
९१.	रसाञ्जन	रसौंत	चुत्रोको खोटो
९२.	राजमाष	लोबिया	भटमास
९३.	राजवृक्ष	अमलतास	राजवृक्ष
९४.	राल(शाल-निर्यास)	राल	शालधूप
९५.	रुदन्ती	लाना	रुदिलो
९६.	लज्जालु	लाजवन्ती	बुहारीझार
९७.	लज्जावती	छुइमुई	बुहारीझार
९८.	लताकस्तूरी	मुश्कदाना	लताकस्तूरी

९९. लामज्जक	लामज्जक	गन्धवैना
१००. लाक्षा	लाख	लाहा
१०१. लोणिका	नूनिया	लुँडे
१०२. लौह	लोहा	कान्तिसार लोह (?), फलाम
१०३. वनप्सा	वनफ्शा	वनप्सा
१०४. वरुण	वरना	सिप्लिकान
१०५. विड्लवण	काला नमक	बिरे नुन
१०६. वैदूर्य	लहसुनिया	लशुने
१०७. वृश्चिकाली	विच्छूघाँस	सिस्नो
१०८. शण	सनाई	सनै
१०९. -	शहतूत	किम्बू
११०. शतपुष्पा	सौंफ	सूप
१११. शतावरी	शतावरी	कुरिलो
११२. शालनिर्यास	राल	शालधूप
११३. शालपर्णी	सरिवन	शालपर्णी
११४. शाल्मलिनिर्यास (मोचरस)	सेमलका गोंद	सिमलको खोटो
११५. शैलपुष्प	छडीला	शैलेय
११६. शोभाञ्जन	सहिजन	सैजन
११७. शंखपुष्पी	शंखाहुली	शङ्खपुष्पी
११८. शंखिनी	शंखिनी	कालमेघ
११९. श्यामाक	सावाँ	साहा
१२०. श्योनाक	सोनापाठा	टटेलो
१२१. श्वेत कण्टकारी(लक्ष्मणा)	सफेदकटेरी	शिवकण्टकारी
१२२. श्वेतपाटला	पाडर	पाडरी
१२३. सप्तपर्ण	छतिउन	छतिवन
१२४. सरल	चीड	सल्लो
१२५. सर्षप	सर्सों	सर्स्यूं
१२६. सहदेवी(महाबला)	सहदेई	महाबला
१२७. सारिवा	अनन्तमूल	(दूधे लहरो), अनन्तमूल
१२८. सुवर्चला	हुलहुल	हुलहुल
१२९. सूक्ष्मैला	छोटी इलायची	सुकमेल
१३०. सैरेयक	कटसरैया	कुरबक
१३१. सोमराजी	बाकुची	बाकुची
१३२. स्नुही	थूहर	सिउँडी
१३३. हरिद्रा	हलदी	बेसार
१३४. हरीतकी	हरीतकी	हर्रो

परिशिष्ट-३

यस ग्रन्थमा प्रयुक्त केही शब्दहरूको अर्थ

१. **अर्क**- जडीबुटीहरू पकाई बाफ जम्मा गरेर तयार गरिने तरल औषधी ।

२. **अग्नि** - खाएको अन्न-पानी आदि पचाउने, त्यसलाई धातुहरू र मलको रूपमा छुट्याउन मद्दत गर्ने आगो जस्तो पाचन गर्ने, ताप उत्पन्न गर्ने तत्त्व । यसको मात्रा र काम अनुसार ४ भेदहरू हुन्छन्- सम, विषम, तीक्ष्ण र मन्द ।

३. **अग्निमान्द्य** - पाचक रसको गुण र मात्रा कम भएको रोगको अवस्था । यसमा खान नरुच्ने, खाएको अन्न नपच्ने हुन्छ ।

४. **अग्निवेशतन्त्र** - पुनर्वसु आत्रेयका शिष्य अग्निवेशद्वारा लिखित आयुर्वेद ग्रन्थ । यही ग्रन्थ पछि चरकद्वारा सम्पादनपछि चरकसंहिता नामबाट प्रसिद्ध भएको मानिन्छ ।

५. **अजगल्लिका** - बालकहरूको शरीरमा साना पिडका हुने रोग ।

६. **अजीर्ण** - खाएको कुरा समयमा नपच्ने अथवा पूरै नपच्ने रोग ।

७. **अण्डकोष वृद्धि** - अण्डकोषमा पानी भरिएर सुनिने रोग ।

८. **अतिसार** - झाडापखाला । बारम्बार पातलो दिसा आइरहने रोग ।

९. **अनन्तवात** - टाउको सम्बन्धी रोग । यसमा घाँटी पछाडि, आँखिभौं आदिमा क्रमशः दुख्ने हुन्छ । दुखाई बढ्दै जाने हुन्छ ।

१०. **अन्तर्वेग** - ज्वरोको असर भित्र गडेको अवस्था ।

११. **अन्नद्रवशूल** - खानाअघि, पच्ने बेला जुनसकै बेलामा पेट बेसरी दुख्ने रोग ।

१२. **अनुलोमन** - मलहरू पकाएर शरीरबाट बाहिर निकाल्ने द्रव्य ।

१३. **अपची**- गण्डमालाकै विशेष अवस्था । एकथरि गाँठो पाकेर हराउने, अर्को फेरि आउने हुन्छ ।

१४. **अपतन्त्रक** - शरीर धनुष जस्तै तन्केर बाङ्गो हुने रोग ।

१५. **अपतानक** - कुपित वायुबाट उत्पन्न रोग । यसमा आँखा नचल्ने हुन्छन्, होस पनि हराउँछ ।

१६. **अपथ्य** - खाँदा वा प्रयोग गर्दा शरीरलाई हानि पुऱ्याउने वा रोग उत्पन्न गर्ने पदार्थ ।

१७. **अपस्मार** - छारे रोग । यसमा एकाएक आँखा अगाडि अन्धकार देखिने र मूर्च्छा पर्ने हुन्छ । मुखबाट फींज आउँछ ।

१८. **अभ्यङ्ग** - तेल-घ्यू आदि चिल्लो पदार्थ शरीरमा दल्नु, मालिस गर्नु ।

१९. **अभिघातज** - चोट पटकको परिणाम स्वरूप हुने (रोग) ।

२०. **अभिचारज** - टुना-मुना आदि अरूलाई हानि पुऱ्याउने उपायबाट भएको ।

२१. **अभिशापज** - देवता, गुरु, मान्यजनको श्रापबाट उत्पन्न भएको ।

२२. **अभिषङ्गज** - विषको सेवन, औषधिको तीव्र गन्ध, कामवासना, रिस आदिबाट हुने (ज्वरो आदि) रोग ।

२३. **अभिष्यन्द**- आँखा पाक्ने रोग ।

२४. **अम्ल** - अमिलो स्वाद ।

२५. **अम्लपित्त** - पित्तको मात्रा बढेर अमिलो डकार वा मुखबाट अमिलो पानी आउने, पेट पोल्ने रोग ।

२६. **अरिष्ट** - मृत्युको पूर्व सूचना दिने लक्षण । जस्तै-बेहोसी, उपचारको असफलता, रोगको वृद्धि आदि ।

२७. **अरुंषिका** - कपालमा हुने खटिरा ।

२८. **अरोचक** - अन्न खान नरुच्ने रोग ।

२९. **अर्दित** - कुपित वायुको असरबाट मुख बाङ्गो हुने रोग ।

३०. **अर्धावभेद** - आधा टाउको दुख्ने रोग ।

३१. **अर्बुद**- शरीरको कुनै एक भागमा धातुहरूमा बढेर डल्लोको रूपमा बढ्दै जाने रोग । टचूमर, क्यान्सर यी अर्बुदका विभिन्न अवस्था हुन् ।

३२. **अर्श** - अल्काइ, हर्षा, भनिने रोग । यसमा गुदद्वार सुनिने, दुख्ने, त्यसबाट रगत आउने हुन्छ ।

३३. **अलसक** - अजीर्णबाट हुने रोग ।

३४. **अवबाहुक** - काँध र हात दुख्ने रोग ।

३५. **अश्मरी** - पित्ताशय, मिर्गौला अथवा मूत्राशयमा हुने पत्थरीको रोग ।

३६. **अष्टाङ्गहृदय** - वाग्भट नामक आचार्यद्वारा लेखिएको पद्यमय ग्रन्थ ।

३७. **असात्म्यज** - शरीरले नसहने कुरा खाएमा हुने वमन ।

३८. **असाध्य रोग** - उपचार गर्दा निको नहुने वा पूरै नहट्ने रोग ।

३९. **अंसशोष** - काँधमा बढी दुख्ने रोग ।

४०. **अहिपूतन** - बालकहरूको गुदद्वारमा फोका उठी स्राव हुने घाउ ।

४१. **आध्मान** - कुपित वायु जम्मा भएर पेट फुल्ने, तन्किने भइरहने रोग ।

४२. **आनूप** - प्रशस्त नदी, ताल, छाँगो आदि भएका, जमिन चिसो र मलिलो भएको, घाम कम लाग्ने सिमसार भूभाग ।

४३. **आभ्यन्तर कृमि** - शरीरभित्र आमाशय, आन्द्रा, रगत आदिमा रहने रोगकारक जीवाणुहरू ।

४४. **आम अजीर्ण** - कफको प्रकोपबाट हुने अजीर्ण ।

४५. **आम दोष** - अग्नि मन्द भएको अवस्थामा अन्नादिको पाक राम्रो नभएर बन्ने दूषित पदार्थ र त्यसबाट हुने रोग ।

४६. **आमवात** - कुपित वायु र आमदोष मिलेर हुने रोग । यसमा घुँडा, कुम आदि जोर्नीहरू सुनिने, दुख्ने हुन्छ ।

४७. **आमाशयगत वायु** - कुपित वायुले आमाशयमा असर गरेको अवस्था ।

४८. **आर्तव** - महिलाहरूमा महिना-महिनामा हुने स्राव । यो १३-१४ वर्षको उमेरदेखि सुरु भएर ४५-५० वर्षको उमेरसम्म भइरहन्छ । गर्भावस्थामा यो स्राव हुँदैन ।

४९. **आश्रय** - रहने वा बस्ने ठाउँ, आधार ।

५०. **आहार** - जीवन धान्नका लागि खान-पिनमा प्रयोग गरिने अन्न आदि ।

५१. **आक्षेपक** - शरीरका मांसपेशी एकाएक तन्किने-खुम्चिने भैरहने रोग ।

५२. **इन्द्रलुप्त** - केश(रौं) झर्ने रोग ।

५३. **इन्द्रियगत वायु** - कुपित वायु आँखा, कान आदि ज्ञानेन्द्रियहरूमा पुगेर रोग उत्पन्न भएको अवस्था ।

५४. **इक्षुमेह** - प्रमेहको भेद । यसमा पिशाबमा चिनीको अंश हुन्छ ।

५५. **उदकमेह** - प्रमेहको एक भेद । यसमा सफा पिशाब बढी निस्कन्छ ।

५६. **उपधातु** - धातु जस्तै शरीरको बनोटभित्र पर्ने वस्तु । आमाको दूध, मासिक स्राव, वसा, छाला आदि उपधातु मानिएका छन् ।

५७. **उदर रोग** - पेटभित्रका कलेजो, फियो, पेटलाई ढाक्ने जालो आदिमा रोग लागेर पेट बढेर जाने वा पानी भरिने रोग ।

५८. **उदावर्त** - मूत्र (पिशाब), दिसा आदि मलहरू बाहिर निस्कन नपाएर तिनको चाप माथितिर परेको अवस्थामा हुने रोग ।

५९. **उन्माद** - बौलाउनु । यसमा स्मरण शक्तिको ह्रास, भ्रम, अनिद्रा, प्रलाप यी लक्षण हुन्छन् ।

६०. **उपदंश** - जननेन्द्रियमा हुने संक्रमणजन्य रोग ।

६१. **उपनाह** - औषधि पिनेर बनाएको लेदोलाई तताएर दुखेको वा सुनिएको ठाउँमा

लगाउने उपचारको प्रक्रिया ।

६२. **उपशय**- खान-पिन, शरीरको सञ्चालन वा औषधि यी सबै मध्ये रोग लागेको अवस्थामा आराम दिने खालको खानपिन आदि ।

६३. **उष्ण** - तातो ।

६४. **उष्णवीय** - शरीरमा ताप बढाउने गुण भएको ।

६५. **ऊर्ध्ववात** - बारम्बार डकार आइरहने रोग ।

६६. **ऋतु-तुल्यता** - वसन्त, ग्रीष्म आदि ६ ऋतुहरूमध्ये जुन ऋतुमा कुनै दोष कुपित हुने भनिएको छ त्यही ऋतुमा उक्त दोषसँग सम्बन्धित रोग हुनु । जस्तै वसन्तमा कफको रोग हुनु ।

६७. **कक्षा** - काखीमा आएको फोडा वा पिलो ।

६८. **कट** - पिरो ।

६९. **कफ** - तरल पदार्थको रूपमा शरीरको पोषणका लागि उपयोगी तत्त्व । यो पनि पाँच किसिमको हुन्छ-अवलम्बक, तर्पक, बोधक, श्लेषक, क्लेदक ।

७०. **कफनाशक** - चिल्लो-गुलियो आदि कफ बढाउने कारणहरूबाट बढेको कफलाई बाहिर निकाल्ने, कम पार्ने वा नष्ट गर्ने पदार्थ ।

७१. **कफवर्धक** - कफ बढाउने पदार्थ । चिल्लो, गुलियो खाने कुरा ।

७२. **कर्णरोग**- कानसम्बन्धी रोग ।

७३. **कर्णशूल**- कान दुख्ने रोग ।

७४. **कर्णपाक**- कान पाक्ने रोग ।

७५. **कर्णनाद**- कान कराउने रोग ।

७६. **कम्पवात** - शरीर काम्ने रोग ।

७७. **कल्क** - ताजा अथवा सुकेको औषधिलाई पानी राखी पिनेर बनाएको लेदो ।

७८. **कलायखञ्ज** - हिंड्दा खोच्याएर, लडखडाउँदै हिड्नुपर्ने अवस्था ।

७९. **कषाय** - टर्रो ।

८०. **कामला** - कमलपित्त, पहेंले रोग । यसमा आँखा, छाला, पिशाब सबै पहेंलो भएर जान्छन् ।

८१. **कालमेह** - प्रमेहको भेद । यसमा पिशाब कालो रंगको हुन्छ ।

८२. **कार्श्य**- शरीर दुब्लो हुँदै जाने रोग ।

८३. **कास** - खोकी लाग्नु ।

८४. **कुकूणक** - बालकहरूको आँखामा हुने रोग ।

८५. कुपित वायु - वायु बढेर आफ्नो मुख्य स्थान (पक्वाशय) बाट शरीरका अरू भागहरूमा पुगेको अवस्था । वायु जस्तै पित्त वा कफ पनि बढेर अन्त गएमा ती अवस्थाहरूलाई कुपित पित्त अथवा कुपित कफ भनिन्छ ।

८६. कुब्जत्व - कुप्रो हुनु ।

८७. कुम्भकामला - पुरानो कामलाको अवस्था ।

८८. कुष्ठ- कुष्ठरोग । छालाको रंग बिग्रिने, स्पर्श शक्ति हराउने रोग ।

८९. कोठ- शरीरमा डाबरहरू, चालाहरू देखिने रोग ।

९०. कोष्ठाश्रय कामला - कामलाको एक भेद ।

९१. क्वाथ - काढा । औषधिको रूपमा प्रयोग हुने जडीबुटी कुटेर पानी राखी पकाएको औषधिको सार आएको पानी ।

९२. कृमि - पेटमा जुका, चुर्ना, अङ्कुशे जुका आदि बढेर देखिने रोग ।

९३. कृमिज छर्दि - पेटमा जुका पर्दा हुने वमन ।

९४. कृत्रिम विष - विभिन्न विषहरूको मिश्रण ।

९५. क्रोष्टुकशीर्ष - घुँडा सुनिएर दुख्ने रोग ।

९६. क्षतोदर - आन्द्रामा घाउ वा तीखो वस्तुले छेड्दा प्याल परेर उत्पन्न हुने पेटको रोग । यसलाई परिस्राव्युदर पनि भनिन्छ ।

९७. क्षय - शरीरका घटकहरू आफ्नो स्वाभाविक मात्रा भन्दा कम हुँदै गएको अवस्था । (वृद्धि र क्षय सामान्य हदसम्म सधैं भइरहन्छ र शरीरमा सन्तुलनको स्थिति रहन्छ । वृद्धि अथवा क्षय सामान्य हदभन्दा बढी भएमा रोगहरू उत्पन्न हुन्छन्)

९८. क्षारमेह - प्रमेहको भेद । यसमा पिशाब क्षार मिसिएको पानी समान हुन्छ ।

९९. क्षौद्रमेह - प्रमेहको भेद । यसैलाई मधुमेह पनि भनिन्छ ।

१००. खञ्जता - एउटा गोडा नचल्ने भएको रोग ।

१०१. खल्ली - हात, गोडा, जाँघका मांसपेशीहरू बाउँडिने र दुख्ने रोग ।

१०२. गद्गद - भकभकाउने अवस्था हुनु ।

१०३. गठिवन वा गठौना- तालिसपत्रजातीय सुगन्धित वनस्पति

१०४. गण्डमाला- घाँटीको दायाँ-बायाँ धेरै गाँठाहरू देखिने रोग ।

१०५. गर्भप्रद - गर्भ रहने उपाय ।

१०६. गर्भनिरोधक - गर्भ रहन नदिने उपाय ।

१०७. गर विष - अन्नका साथ मिसिएको ढिलो असर गर्ने विष ।

१०८. **गलगण्ड**- घाँटीको बीचभागमा सुनिएर डल्लोजस्तो देखिने रोग ।

१०९. **गुदपाक** - बालकहरूको गुदद्वारमा घाउ हुने रोग ।

११०. **गुरु** - भारी, ढिलो गरी वा मुस्किलले पच्ने, शरीरमा भारीपन ल्याउने पदार्थ ।

१११. **गुल्म** - गानुगोला, वायुगोला । नाभिको दायाँ-बायाँ तल-माथि कुनै एक ठाउँमा डल्लो भएजस्तो देखिने, तलमाथि सर्ने र दुख्ने रोग ।

११२. **ग्रन्थि**- शरीरको कुनै भागमा उत्पन्न साह्रो डल्लो ।

११३. **ग्रहणी** - पाचन गर्ने अङ्ग दुर्बल र पाचक रसको मात्रा कम भएर कहिले बाक्लो, कहिले पातलो दिसा हुने रोग ।

११४. **ग्रहणीदोष** - पाचन अंगमा रोग लागेर पाचन प्रक्रिया बिग्रिने र कहिले पातलो, कहिले बाक्लो दिसा हुने रोग ।

११५. **ग्राही** - पातलो दिसा लागेको बेलामा जलको अंश कम पार्दै दिसा बाँध्ने औषधि ।

११६. **गृध्रसी** - कुपित वायुका कारण हुने फिलोदेखि पैतालासम्म बेसरी दुख्ने रोग ।

११७. **छिद्रोदर** - क्षतोदरको अर्को नाम ।

११८. **छेदन** - शरीरमा जम्मा भएका अथवा टाँसिएर रहेका कफ आदि मलहरूलाई बलैले उखेलेर निकाल्ने द्रव्य । जस्तै - यवक्षार, मरिच आदि ।

११९. **जङ्गम विष**- सर्प, विच्छी आदि जीव जन्तुहरूको टोकाइबाट सर्ने विष ।

१२०. **जांगल देश** - घाम चर्को लाग्ने, हावा बढी चल्ने, जमिन सुख्खा भएको, पानी कम भएको सुख्खा भूभाग ।

१२१. **जिह्वा** - जिभ्रो । रोगको निदानका लागि जिभ्रोको रंग, रसिलो वा सुख्खापन आदिको विचार गरिन्छ ।

१२२. **जिह्वास्तम्भ** - कुपित वायुद्वारा जिभ्रो नचल्ने भएको रोगको अवस्था ।

१२३. **ज्वर** - ज्वरो । शरीरको ताप बढ्ने रोग ।

१२४. **तन्द्रा** - उँघ्नु ।

१२५. **तालुकण्टक** - बालकहरूमा हुने तालुसम्बन्धी रोग । यसमा तालु तलतिर झर्छ ।

१२६. **तिक्त** - तितो ।

१२७. **तीक्ष्ण अग्नि** - गरिष्ठ र बढी मात्रामा खाएको अन्न पानी चाँडै पचाउने अग्नि । पित्तको प्रकोपको अवस्थामा अग्नि तीक्ष्ण हुन्छ ।

१२८. **तूनी** - कुपित वायुको असरबाट मलाशयदेखि गुदद्वारसम्म अथवा मूत्राशयदेखि लिङ्गसम्म तीव्र वेदना हुने रोग ।

१२९. **तृष्णा** - बढी प्यास लाग्नु, तिर्खा ।

१३०. **दण्डापतानक** - शरीर दाउरा जस्तै नचल्ने कक्रक्क पर्ने रोग ।

१३१. **दन्तवेष्ट**- गिजा पाक्ने, रागत पिप निस्कने रोग ।

१३२. **दन्तहष**- चिसो पानी, अमिलो नसहने र दाँत दुख्ने रोग ।

३३३. **दन्तोद्भेदजन्य रोग** - बालकहरूको दाँत निस्कने बेलामा हुने रोग ।

१३४. **दाह** - शरीरको कुनै एक भाग वा सबैतिर पोल्ने रोग ।

१३५. **दारुणक** - कपालमा चायाँ पर्ने रोग ।

१३६. **दीपन** - भोक जगाउने, रुचि उत्पन्न गर्ने द्रव्य ।

१३७. **दौहृदज छर्दि** - गर्भवती महिलालाई हुने वमनको समस्या ।

१३८. **दूष्य** - वायु, पित्त अथवा कफ यी तीन दोष बढेको वा घटेको अवस्थामा तिनीहरूको संसर्गबाट दुषित भएर जाने धातु र मलहरू ।

१३९. **देश** - मानिस तथा अन्य जीवहरूको बसोबास भएको भूभाग अथवा शरीर । भूभाग तीन किसिमको हुन्छ - जांगल, आनूप र साधारण ।

१४०. **दोष** - बढेको वा घटेको अवस्थामा शरीरका धातु, मल तथा अर्को दोषलाई दूषित पार्ने र रोगको उत्पत्ति गराउने तत्त्व । वायु, पित्त र कफ यी शरीरका दोष मानिएका छन् । रज र तम मनका दोष हुन्छन् ।

१४१. **धातु** - शरीरको बनोटभित्र पर्ने विभिन्न दृश्य (हेर्नसकिने) भागहरू । ती सात ओटा हुन्छन् । जस्तै - रस, रक्त (रगत), मांस (मासु), मेद (बोसो), अस्थि (हाड), मज्जा (हाडभित्रको मासी) शुक्र (वीर्य) ।

१४२. **धातुक्षय** - रगत आदि धातुहरू घटेको अवस्था ।

१४३. **धातुवैषम्य** - शरीरका घटक तत्त्वहरू (दोष, धातु, र मल) आफ्नो स्वाभाविक मात्रा भन्दा बढी भएर अथवा घट्दै गएर रोगको कारण बन्ने अवस्था । जस्तै रगत बढ्नु अथवा घट्नु ।

१४४. **धातुसाम्य** - शरीरका सबै घटकहरू आफ्नो स्वाभाविक मात्रा र स्वरूपमा रहेको अवस्था । यसैलाई स्वास्थ्यको कारण मानिन्छ ।

१४५. **नाडी** - शरीरमा रहेका धमनीहरू (Arteries) । यी धमनीहरूमा शुद्ध रगतको प्रवाह भैरहन्छ र यिनमा स्पन्दन (गति) पनि हुन्छ । जीवित अवस्थामा यो गति नियमित हुन्छ । मृत्यु हुँदा स्पन्दन हुन छोड्छ । रोगको निदानका लागि हत्केलाको तल हुने धमनीको गति छामेर विचार गरिन्छ । त्यसैलाई नाडी-परीक्षा भनिन्छ । नाडी धमनीको पर्याय शब्द हो ।

१४६. **नाभितुण्डी** - बालकहरूको नाभिको भागमा सुनिने वा पाक्ने रोग ।

१४७. **निराम ज्वर** - आमदोष हटिसकेको ज्वर ।

१४८. **नील प्रमेह(नीलमेह)** - प्रमेहको भेद । यसमा पिशाब निलो वा खरानी रंगको हुन्छ ।

१४९. **नेत्रपरीक्षा** - आँखाको जाँच ।

१५०. **नाडीव्रण**- घाउ बढेर भित्र नाली जस्तो बन्ने रोग ।

१५१. **नाभिपाक**- बालकको नाभि पाक्ने रोग ।

१५२. **नासारोग**- नाकसम्बन्धी रोग ।

१५३. **निदान** - रोगको कारण तथा रोगको पहिचानमा मद्दत गर्ने पूर्वरूप, लक्षण, उपशय र सम्प्राप्ति ।

१५४. **नेत्ररोग**- आँखासम्बन्धी रोग ।

१५५. **पक्षाघात (पक्षवध)** - शरीरको दायाँ वा बायाँ सबै अङ्गहरू नचल्ने रोगको अवस्था ।

१५६. **पङ्गुत्व** - दुवै गोडा नचल्ने भएर हिंड्न नसकिने रोगको अवस्था ।

१५७. **पथ्य** - खाँदा वा प्रयोग गर्दा शरीरलाई हित गर्ने, स्वस्थ राख्ने पदार्थ ।

१५८. **पलित** - केश फुल्ने रोग ।

१५९. **पक्वाशयगत वायु** - कुपित वायु पक्वाशयमा पुगी रोग उत्पन्न गर्न लागेको अवस्था ।

१६०. **परिणामशूल** - खाना पच्न लागेको बेलामा बेसरी पेट दुख्ने रोग ।

१६१. **पाचन** - पाचन प्रक्रिया राम्रो पार्ने द्रव्य (औषधि) ।

१६२. **पाददाह** - गोडा पोल्ने हुनु ।

१६३. **पादहष** - गोडामा झमझमाउनु ।

१६४. **पाण्डु** - रगत दूषित भएर शरीर सेतो-फुस्रो देखिने र बल घट्दै जाने रोग ।

१६५. **पारिगर्भिक** - बालकले गर्भवती आमाको दूध खाइरहँदा पनि शरीर पुष्ट नहुने र अपच आदि भैरहने रोग ।

१६७. **पार्श्वशूल** - करङ् भएका ठाउँमा बेसरी दुख्ने हुनु ।

१६८. **पित्त** - शरीरमा पाचन प्रक्रिया, तापको उत्पादन, तेज, प्रतिभा आदिको कारण बन्ने तत्त्व । यो पाँच किसिमको हुन्छ - पाचक, रञ्जक, भ्राजक, आलोचक, साधक ।

१६९. **पित्तकारक** - पित्त बढाउने ।

१७०. **पिनास**- पिनास ।

१७१. पिष्टमेह - प्रमेहको भेद । यसमा चौलानी जस्तो सेतो पिशाब जान्छ ।

१७२. पूर्वरूप - रोग लाग्नुभन्दा पहिले त्यसको पहिचानमा मद्दत वा संकेत गर्ने लक्षण । जस्तै-ज्वरो आउनुभन्दा पहिले हाइ आउनु आदि ।

१७३. प्रकोप (कोप) - दोष आफ्नो ठाउँमा बढ्दै जाँदा अन्त अरू अंगहरूमा पुगेको अवस्था ।

१७४. प्रकृति - गर्भको उत्पत्ति हुनुभन्दा पहिले माता र पिताको रज तथा वीर्यका संरचनामा जुन दोषको मात्रा बढी हुन्छ, त्यही दोष अनुरूप मानिसको शरीरको स्वरूप, विचार र कामगराइ हुन्छ । त्यसरी वंशानुगत रूपमा मानिएको शरीरको बनोट आदिमा फरक देखिने स्वाभाविक विशेषतालाई प्रकृति भनिन्छ ।

१७५. प्रतिनिधि द्रव्य - रोगको उपचारमा उपयोगी कुनै औषधि नपाइएमा त्यसको सट्टा प्रयोग गर्न सकिने समान गुण भएको औषधि ।

१७६. प्रतिश्याय- रुघा, सर्दी ।

१७७. प्रभाव - औषधिमा रहेको विशेष किसिमको काम गर्ने शक्ति ।

१७८. प्रमेह - बढी मात्रामा बारम्बार दूषित किसिमको पिशाब जाने रोग । यसमा पिशाबको रंग सफा भएपनि बढी हुने, कि त पहेंलो, रातो आदि हुने हुन्छ ।

१७९. प्रमेह पिडका - प्रमेह रोग लागेको मानिसमा हुने पिडका अर्थात् पिलो ।

१८०. प्रत्यष्ठीला - पेटमा तेर्सो परेको गाँठो देखिने रोग ।

१८१. प्रलाप - बर्बराउनु । अस्पष्ट आवाज बारम्बार निकाल्नु ।

१८२. प्रवाहिका - आउँ-मासी । सेतो र चिप्लो अथवा रगत मिसिएको दिसा भइरहने, पेट कुटुक्क दुख्ने रोग ।

१८३. प्लीहोदर - फियो सुनिएर पेट ठूलो हुने रोग ।

१८४. फाण्ट - तातो पानीमा सुकेको जडीबुटी आदिको धुलो राखी सेलाएपछि मिचेर कपडाले छानेर प्रयोग गरिने पेय औषधि ।

१८५. फेनमेह - प्रमेहको भेद । यसमा पिशाबमाथि फिंज जम्मा हुन्छ ।

१८६. बद्धगुदोदर वा बद्धोदर - कुनै बाह्य वस्तु वा भित्री कारणबाट आन्द्रामा बाटो छेकिएमा हुने रोग ।

१८७. बहिर्वेग - ज्वरो बाहिर आएको अवस्था ।

१८८. बाधिय- कान नसुन्ने वा कम सुन्ने रोग ।

१८९. बाल्य - बालकको अवस्था । जन्मदेखि १६ वर्षसम्म ।

१९०. बालरोग- बालकहरूमा हुने रोग ।

१९१. बालशोष- बालक दुब्लाउँदै जाने रोग ।

१९२. **बाह्य कृमि** - छालामा असर पार्ने जुम्रा आदि जीवहरू ।

१९३. **बीभत्सज छर्दि** - फोहोरमैला आदि देख्दा हुने वमन ।

१९४. **ब्रह्मचय** - संयमपूर्ण जीवन ।

१९५. **ब्रह्मसंहिता** - ब्रह्माद्वारा रचिएको आयुर्वेदको पुस्तक । यसमा १००० अध्याय र १ लाख श्लोक थिए भन्ने सुश्रुत संहितामा उल्लेख पाइन्छ ।

१९६. **भग्न**- हाड भाँचिएको अथवा आफ्नो ठाउँबाट खस्केको अवस्था ।

१९७. **भगन्दर**- गुदद्वारमा भएको घाउ बढेर नाडीव्रण बनेको अवस्था ।

१९८. **मज्जामेह** - प्रमेहको भेद । यसमा मज्जाजस्तो पिशाब हुन्छ ।

१९९. **मदात्यय** - मदिरा तथा अन्य लागू पदार्थको अतिसेवनबाट उत्पन्न हुने रोग ।

२००. **मधुर** - गुलियो स्वाद ।

२०१. **मधुरगणका वनस्पतिहरू**- जीवन्ती, जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा विदारीखण्ड, यष्टिमधु, दाख, गंभारी आदि ।

२०२. **मन्द अग्नि** - कम मात्रामा र हलुका खाना पनि पचाउन गाह्रो हुने कमजोर किसिमको अग्नि । पित्तको क्षय र कफको वृद्धि हुँदा अग्नि मन्द हुन्छ ।

२०३. **मधुमेह** - पिशाबमा चिनी जाने रोग । डायबिटीज रोग ।

२०४. **मध्य** - बीचको अवस्था । १६ वर्षदेखि ७० वर्षसम्म ।

२०५. **मन्यास्तम्भ** - गर्दन घुमाउन नमिल्ने गरी दुख्ने रोग ।

२०६. **मल** - अनावश्यक र हानिकारक तत्त्वहरूको रूपमा शरीरबाट निस्कने दिसा, पिशाब, पसिना, सिंगान, खकार, चिप्रा, आदि ।

२०७. **मषक** - मुसा । शरीरमा देखिने मरिच जत्रा नदुख्ने गाँठाहरू ।

२०८. **महापद्मक** - बालकहरूको टाउको अथवा मूत्राशयमा उत्पन्न भई तलतिर सर्ने खटिरा जस्तो रोग ।

२०९. **माञ्जिष्ठमेह** - प्रमेहको भेद - यसमा पिशाब रातो रंगको हुन्छ ।

२१०. **मिन्मिन** - नाके बोली हुनु ।

२११. **मुखदूषिका** - डण्डीफोर ।

२१२. **मुख परीक्षा** - रोगीको अनुभवको आधारमा मुखको स्वाद स्वाभाविक वा बिग्रेको बुझ्ने काम ।

२१३. **मुखपाक**- जिभ्रोमा खटिरा आउने, मुख गन्हाउने रोग ।

२१४. **मुखरोग**- मुखसम्बन्धी रोग ।

२१५. **मूकत्व** - बोल्न नसक्ने लाटो हुनु ।

११६. **मूर्च्छा**- चेतना नष्ट भएर वहोस भएर जाने रोग ।

२१७. **मूत्रकृच्छ** - पिशाब गर्दा कम मात्रामा हुने, बढी पोल्ने दुख्ने रोग ।

२१८. **मूत्राघात** - पिशाब रोकिने रोग ।

२१९. **मेदोरोग** - शरीरमा बोसो बढेर हुने रोग ।

२२०. **यकृत्**- कलेजो

२२१. **यकृद्विकार** - कलेजो सम्बन्धी रोग ।

२२२. **योनिकन्द** - योनिमा डल्लो उत्पन्न हुने रोग ।

२२३. **योनिभ्रंश**- महिलाहरूको आङ्खस्ने रोग ।

२२४. **योनिसङ्कोचन** - योनिमार्ग खुकुलो भएको अवस्थामा त्यसलाई दरो पार्ने औषधि ।

२२५. **योषापस्मार** - महिलाहरूमा हुने हिस्टीरियाको रोग ।

२२६. **रक्तगत वायु** - रक्त(रगत) सँग कुपित वायुको सम्बन्ध भएको अवस्था ।

२२७. **रक्तज गुल्म** - महिलाहरूको मासिक स्रावको गडबडीबाट हुने गोलाको रोग ।

२२८. **रक्तपित्त** - नाक, मुख, कान वा लिङ्ग, गुदद्वार, योनि आदि कुनै एक वा बढी मार्गहरूबाट बारम्बार दूषित रगत बग्ने रोग ।

२२९. **रक्तप्रमेह(रक्तमेह)** - प्रमेहको भेद । यसमा पिशाब रगत जस्तै रातो हुन्छ ।

२३०. **रजोशुद्धि** - महिलाको मासिक स्रावमा जाने रगतलाई शुद्ध पार्ने, दोषहरू हटाउने काम ।

२३१. **रस** - कुनै पनि वस्तुमा हुने र जिभ्रोद्वारा अनुभव हुने स्वादको गुण ।

२३२. **रसगत वायु** - रस धातुसँग कुपित वायुको सम्बन्ध भएको अवस्था ।

२३३. **रसशेष अजीर्ण** - अपूर्ण पाचनको एक अवस्था ।

२३४. **रसाज्ञान** - खाएको अन्नको स्वाद थाहा नपाउनु ।

२३५. **राजयक्ष्मा** - क्षयरोग । खोकी, ज्वरो, कोखा दुख्ने, दम उठ्ने यी धेरै लक्षण भएको रोग ।

२३६. **रुक्ष** - रुखो, घ्यू-तेल वा पानीको अंश कम वा नभएको ।

२३७. **रेचन** - मललाई बाहिर निकाल्नु ।

२३८. **लघु** - हलुंगो, सजिलै छिटो पच्ने । शरीरलाई हल्का अनुभव गराउने पदार्थ ।

२३९. **लंघन** - शरीरमा बढेका धातुहरूलाई कम पार्न गरिने उपवास आदि उपचार ।

२४०. **लवण** - नुनिलो स्वाद ।

२४१. **लक्षण** - शरीरमा देखिने अथवा रोगीले अनुभव गरिने दुखाई, काममा गडबडी आदि । जस्तै - ज्वरको लक्षण ताप बढ्नु, अतिसारको पातलो दिसा बारम्बार भैरहनु ।

२४२. **लालमेह** - प्रमेहको भेद । यसमा च्याल जस्तो भएर पिशाब निस्कन्छ ।

१४३. **लिङ्गनाश**- मोतियाबिन्दुको रोग ।

२४४. **वर्ण-परीक्षा** - शरीरको रंगको जाँच ।

२४५. **वमि (छर्दि)** - बान्ता भइरहने रोग ।

२४६. **वय** - मानिसको उमेर अनुसारको शारीरिक अवस्था । यसका तीन मुख्य भाग हुन्छन्- बाल्य, मध्य, वृद्ध ।

२४७. **वस्तिशूल** - मूत्राशय वरिपरि दुख्ने हुनु ।

२४८. **वसामेह** - प्रमेहको भेद । यसमा पिशाब बोसो जस्तो (चिप्लो) हुन्छ ।

२४९. **वातनाशक** - शरीरमा वायु बढ्दा उत्पन्न हुने दुखाई, कम्पन आदि रोगका लक्षण कम पार्ने वा हटाउने पदार्थ ।

२५०. **वातकण्टक** - बढी हिंडाईबाट गोलीगाँठो बेसरी दुखेको अवस्था ।

२५१. **वाताष्ठीला** - नाभिभन्दा तल गाँठो देखिने रोग ।

२५२. **वातरक्त** - दूषित रगत र कुपित वायुबाट हुने रोग ।

२५३. **वातव्याधि** - वायु कुपित भएको अवस्थामा हुने रोग । यस अन्तर्गत शरीरका विभिन्न अंग नदुख्ने, नचल्ने हुन्छन् ।

२५४. **वायु** - शरीरको सञ्चालन, रगत आदि धातुहरू, विभिन्न स्रावहरूको प्रवाह तथा चिन्तन, जीवन आदिको कारण भएको शरीरको घटक तत्त्व । यो ५ किसिमको हुन्छ । प्राण, अपान, समान, उदान, र व्यान ।

२५५. **विदग्ध अजीर्ण** - पित्तको प्रकोपबाट हुने अजीर्ण ।

२५६. **विद्रधि**- शरीरको बाहिरी छाला र मासुमा अथवा भित्रका कलेजो आदि अंगहरूमा हुने ठूलो घाउ ।

२५७. **विपाक** - शरीरमा कुनै औषधि वा खाने कुरा गएपछि पाचन प्रक्रियाबाट त्यसको गुणमा परिवर्तन हुने प्रक्रिया ।

२५८. **विरुद्ध द्रव्य** - द्रव्यको गुण आदि शरीरसँग नमिल्ने हुनाले हानि गर्न सक्ने द्रव्य ।

२५९. **विलम्बिका** - अजीर्णबाट हुने विशेष रोग ।

२६०. **विश्वाची** - दुवै हात आफ्नो काम (समाउने, उठाउने आदि) गर्न नसक्ने भएको रोगको अवस्था ।

२६१. **विषम अग्नि** - कुनै समयमा राम्ररी पचाउने, कुनै बेलामा कम पचाउन सक्ने अग्नि । वायु कुपित हुँदा अग्नि विषम हुन्छ ।

२६२. **विष्टब्ध अजीर्ण** - वायुको प्रकोपबाट हुने अजीर्ण ।

२६३. **विष्ठा** - दिसा ।

२६४. विस्फोटक- शरीरभरि फोका देखिने, पोल्ने रोग ।

२६५. विसूचिका - अजीर्णको अवस्था तीव्र भई झाडा-बान्ता हुने, जिउ सियोले घोचे झैं दुख्ने रोग ।

२६६. विहार - विभिन्न किसिमका शरीरलाई हित गर्ने अथवा हानि पुऱ्याउने कामहरू ।

२६७. वीर्य - शरीरमा असर गर्ने औषधिको तत्त्व वा शक्ति ।

२६८. वीर्यशुद्धि - वीर्यको दोष हटाउने काम ।

२६९. वीर्यस्तम्भन - चाँडै वीर्य स्खलन भएको अवस्थामा त्यसलाई स्वाभाविक अवस्थामा ल्याउने औषधि ।

२७०. व्रण- सामान्य घाउ ।

२७१. वृद्ध - ७० वर्षपछिको अवस्था ।

२७२. वृद्धि - शरीरका घटक (दोष, धातु वा मलहरू) आफ्नो स्वाभाविक मात्रा भन्दा बढी हुँदै जानु ।

२७३. वृद्धि रोग - अण्डकोषमा पानी भरिएर फुल्ने रोग । अथवा पेटको जालो कमजोर हुँदा आन्द्राको भाग तलतिर सर्ने रोग (हर्निया) ।

२७४. वृष्य - वीर्य बढाउने, कामोत्तेजक द्रव्य ।

२७५. वृषणकच्छू - अण्डकोष वरिवरि काछ भएर चिलाउने रोग ।

२७६. व्यङ्ग - कालो पोतो ।

२७७. शंखक - कम्पारोमा हुने र अत्यन्त दुख्ने शोथ ।

२७८. शब्द परीक्षा - रोगीले बोल्दा उसको आवाज स्वाभाविक भए-नभएको जाँच गर्नु ।

२७९. शनैर्मेह - प्रमेहको भेद । यसमा पिशाब बिस्तारै निस्कन्छ ।

२८०. शाखाश्रय कामला - कामलाको एक भेद ।

२८१. शिरोरोग- शिरको पूरै भाग अथवा आधा भाग आदि दुख्ने रोग ।

२८२. शीत - चिसो ।

२८३. शीत प्रमेह - प्रमेहको भेद । यसमा चिसो पिशाब हुन्छ ।

२८४. शीतपित्त- शरीरमा चाला उठ्ने, चिलाउने रोग ।

२८५. शीतवीर्य - शरीरलाई शीतलता, शान्ति दिलाउने वस्तु ।

२८६. शुक्रमेह - प्रमेहको भेद । यसमा पिशाब गर्दा वीर्य पनि निस्कन्छ ।

२८७. शूल - पेटका विभिन्न अङ्गका साथै शरीरका अरू अङ्गहरूमा एकाएक बेसरी सुइरोले रोपे झैं दुख्ने रोग ।

२८८. **शोथ** - शरीरको कुनै एक भाग वा पूरै शरीर सुनिएर आउने रोग ।

२८९. **श्लीपद**- हात्तीपाइले रोग ।

२९०. **श्वास** - दम उठ्नु, स्याँ-स्याँ हुनु, सास फेर्न गाह्रो हुनु ।

२९१. **सञ्चय** - दोषहरू आफ्नै ठाउँमा जम्मा हुँदै बढ्दै गएको अवस्था ।

२९२. **संग्राहक** - ग्राही । दिसा बाक्लो पार्ने द्रव्य ।

२९३. **सन्धिगत वायु** - कुपित वायु सन्धि(जोर्नी)हरू मा पुगेर असर गरेको अवस्था ।

२९४. **सम्प्राप्ति** - रोगको कारण भएको दोष आदिको बढ्ने, शरीरमा फैलिने, धातुहरूलाई दूषित पारी रोग उत्पन्न गर्ने प्रक्रिया ।

२९५. **संहनन** - शरीरका सबै हात-गोडा, टाउको, मध्य भाग आदि अङ्गहरूको बनोटको विशेषता । अङ्गहरू लामा, पुष्ट, कसिला भएको अवस्थालाई उत्तम संहनन भनिन्छ । धेरै मोटो वा धेरै दुब्लो, पुड्को, अङ्गहरू नमिलेको - बाङ्गो आदि भएमा संहननको दोष मानिन्छ ।

२९६. **सर्पदंश** - सर्पको टोकाई, त्यसले टोकेको ठाउँमा देखिने लक्षण ।

२९७. **सम अग्नि** - उचित मात्रामा रही ठीक समयमा अन्न आदि पचाउने अग्नि । स्वस्थ व्यक्तिको अग्नि सम हुन्छ ।

२९८. **सद्योव्रण**- हतियारले हिर्काएर, लडेर, किचिएर आदि कारणहरूबाट उत्पन्न ताजा घाउ ।

३९९. **सात्म्य** - जुन खाने कुरा, औषधि अथवा सम्पर्कमा आउने वस्तु खाँदा, लगाउँदा वा कुनै रूपमा प्रयोग गर्दा सजिलै पच्ने, स्वस्थ बनाउने हुन्छ त्यसलाई सात्म्य भनिन्छ । यसलाई पथ्य, उपशय र हित पनि भनिन्छ ।

३००. **साध्य रोग** - उपचार गर्दा निको हुनसक्ने रोग ।

३०१. **सान्द्रमेह** - प्रमेहको भेद । यसमा पिशाब केही समयपछि पिंधमा जम्छ ।

३०२. **साधारण** - घाम, पानी, हावा सबै सन्तुलित भएको भूभाग ।

३०३. **साम ज्वर** - आमदोष सहितको ज्वर ।

३०४. **सार** - शरीरका घटक धातुहरूमध्ये कुनै एक दुई अथवा धेरै धातुहरू पुष्ट भएको अवस्था । शरीरको जुन धातु बढी पुष्ट हुन्छ त्यही धातु सार मानिन्छ । रक्त (रगत) धातु राम्री पुष्ट भएको व्यक्तिलाई रक्तसार भनिन्छ । जसका सबै धातुहरू पुष्ट हुन्छन् त्यो एक दुई धातु पुष्ट हुने मानिस भन्दा बढी बलियो र रोगहरूबाट मुक्त हुन्छ ।

३०५. **सिकतामेह** - प्रमेहको भेद । यसमा बालुवा जस्ता कणहरू पिशाबमा देखिन्छन् ।

३०६. सिरागत वायु - अशुद्ध रगत बग्ने नसाहरूमा कुपित वायु पुगेर असर गरेको अवस्था ।

३०७. सिराग्रह - कुपित वायुले घाँटीका नसाहरूमा असर गर्दा हुने रोग

३०८. सुराकिट्ट - रक्सी बनाउँदा तल थिग्रेको बाक्लो भाग ।

३०९. सुरामेह - प्रमेहको भेद । यसमा भाँडामा राखेको पिशाब माथि सफा तल गाढा (बाक्लो) हुन्छ ।

३१०. सुश्रुत संहिता - महर्षि विश्वामित्रका छोरा र दिवोदास काशिराजका शिष्य सुश्रुतद्वारा लेखिएको आयुर्वेद ग्रन्थ । यसमा १८६ अध्याय छन् । शल्य, शालाक्य, अगदतन्त्र, रसायन, वाजीकरण आदि सबै आयुर्वेदका अङ्गहरूको यसमा वर्णन छ ।

३११. सूजाक - एक किसिमको सरुवा यौनरोग ।

३१२. सूतिकारोग- सुत्केरी अवस्थामा हुने रोग ।

३१३. सूर्यावत - सूर्य उदाएदेखि दुख्न थाल्ने, मध्याह्नमा बेसरी दुख्ने त्यसपछि क्रमशः दुख्न छोड्ने रोग ।

३१४. सोम रोग - प्रायः महिलाहरूमा हुने पिशाब सम्बन्धी रोग ।

३१५. स्तनविद्रधि - स्तनमा शोथ भएर पाक्ने रोग, थुनेलो ।

३१५. स्त्रीरोग- महिलासम्बन्धी रोग ।

३१६. स्थावर विष- खनिज तथा वनस्पतिको रूपमा पाइने विष ।

३१७. स्निग्ध - चिल्लो भएको ।

३१८. स्पर्श परीक्षा - छालाको ताप घटे-बढेको, कुनै अङ्ग दुखेको सुनिएको आदि बुझ्न छामेर गरिने जाँच ।

३१९. स्रंसन - पेटमा जम्मा भएको मल (दिसा)लाई नपचाइकन शरीरबाट बाहिर निकाल्ने द्रव्य । जस्तै - राजवृक्ष ।

३२०. स्वेद - पसीना ।

३२१. स्वरभेद - स्वर बस्नु । बोल्दा आवाज अस्पष्ट वा फरक हुनु, घाँटी दुख्नु ।

३२२. स्वरस - ताजा वनस्पति (औषधिको रूपमा प्रयोग हुने वस्तु) कुटेर निकालेको रस ।

३२३. हस्तिमेह - प्रमेहको भेद । यसमा धाराको रूपमा पिशाब बढी मात्रामा हुन्छ ।

३२४. हनुग्रह - कुपित वायुका कारण च्यापु नचल्ने भएको रोगको अवस्था ।

३२५. हलीमक - कामलाकै विशेष अवस्था । यसमा छालाको रंग हरियो, मन्द ज्वर, बलको विशेष क्षय हुन्छ ।

३२६. **हारिद्रमेह** - प्रमेहको भेद । यसमा पिशाब बेसार राखेको पानी जस्तै पहेंलो हुन्छ ।

३२७. **हिक्का** - हिक्क-हिक्क आवाज आउने गरी घरि-घरि बाडुकी लाग्ने रोग ।

३२८. **हीन सत्त्व** - मनको बल कम भएको अवस्था ।

३२९. **हृद्रोग, हृदयरोग** - मुटुसम्बन्धी रोग । मुटु बढी ढुकढुक गर्नु, मुटु दुख्ने हुनु आदि ।

३३०. **हृदयशूल** - मुटु र त्यसको आसपासमा तीव्र वेदना हुनु ।

ALPHABETICAL LIST OF MEDICINAL PLANTS MENTIONED IN THE TEXT WITH BOTANICAL NAMES

	Nepali Name		Botanical Name
१	अकरकरा	(Akarkara)	Spilanthes calva
२	अकरकला	(Akarkala)	Tanacetum longifolium
३	अगस्ती	(Agasti)	Sesbania grandiflora
४	अजवाइन	(Ajawain)	Trachyspermum ammi
५	अतिस	(Atis)	Aconitum heterophyllum
६	अदुवा	(Aduwa)	Zingiber officinale
७	अनार	(Anar)	Punica granatum
८	अपामार्ग	(Apamarg)	Achyranthes aspera
९	अफिम	(Aphim)	Papaver somniferum
१०	अमलतास	(Amaltas)	Cassia fistula
११	अमला	(Amala)	Phyllanthus emblica
१२	अर्क	(Arka)	Calotropis gigantea
१३	अर्जुन	(Arjun)	Terminalia arjuna
१४	अरण्डी	(Arandi)	Ricinus communis
१५	अश्वगन्धा	(Aswagandha)	Withania somnifera
१६	अलसी	(Alasi)	Linum usitatissimum
१७	अशोक	(Ashok)	Saraca asoca
१८	असुरो	(Asuro)	Justicia adhatoda
१९	आलस	(Aalas)	Linumusitatissimum
२०	आँक	(Aank)	Calotropis gigantea

२१	आँप	(Aanp)	Mangifera indica
२२	ओखर	(Okhar)	Juglans regia
२३	अंजीर	(Anjir)	Ficus carica
२४	श्रीखण्ड	(Srikhanda)	Santalum album
२५	इन्द्रजौ	(Indrajau)	Holarrhena pubescens
२६	इन्द्रायणी	(Indrayani)	Trichosanthes bracteata
२७	इसवगोल	(Isabgol)	Plantago major (wild)
			Plantago ovata (cultivated)
२८	उखु	(Ukhu)	Saccharum officinarum
२९	एरण्ड	(Arand)	Ricinus communis
३०	कटेरी	(Kateri)	Solanum xanthocarpum
३१	कटुकी	(Katuki)	Picrorhiza scrophulariiflora
३२	कन्टकारी	(Kantakari)	Solanum surattense
३३	कपास	(Kapas)	Gossypium arboreum
३४	कपूर	(Kapur)	Cinnamomum camphora
३५	कमलगट्टा	(Kamalgatta)	Nelumbo nucifera
३६	कमिला	(Kamila)	Mallotus philippensis
३७	करबीर	(Karabir)	Nerium indicum
३८	काउसो	(Kauso)	Mucuna pruriens
३९	काकडसिंगी	(Kakadsingi)	Rhus succedanea
४०	कागती	(Kagati)	Citrus aurantifolia
४१	काफल	(Kaphal)	Myrica esculenta
४२	कामला	(Kamala)	Mallotus philippensis
४३	कालोतील	(Kalotil)	Sesamum indicum
४४	कालोतुलसी	(Kalo tulasi)	Ocimum basillicum
४५	कालो निशोथ	(Kalo nishoth)	Operculina turpenthum
४६	कालोजीरा	(Kalo jira)	Bunium persicum

४७	कुचिलो	(Kuchilo)	Strychnos nux-vomica
४८	कुट	(Kut)	Saussurea lappa
४९	कुटज	(Kutaj)	Holarrhena pubescens
५०	कुभिण्डो	(Kubhindo)	Benincasa hispada
५१	कुरिलो	(Kurilo)	Asparagus racemosus (wild)
			Asparagus officinalis (cultivated)
५२	केरा	(Kera)	Musa paradisiaca
५३	केशर	(Keshar)	Crocus sativus
५४	काँकजंघा	(Kankajangha)	Leea aequata
५५	काँक्रा	(Kankra)	Cucumis sativus
५६	खयर	(Khari)	Acacia catechu
५७	खर	(Khar)	Saccharum spontaneum
५८	खुर्सानी	(Khursani)	Capsicum annuum
५९	खुर्सानी अजवान	(Khursani Ajawan)	Hyoscyamus niger
६०	गग्गुल	(Gaggul)	Canarium sikkimense
६१	गज पपील	(Gaja peepal)	Scindapsus officinalis
६२	गहुँ	(Gahun)	Triticum aestivum
६३	गहत	(Gahat)	Dolichos biflorus
६४	गाजर	(Gazar)	Daucus carota
६५	गुर्जो	(Gurjo)	Tinospora sinensis
६६	गुलर	(Gular)	Ficus glomerata
			Stephanis urens
६७	गुलाफ	(Gulaf)	Rosa alba
६८	गोखुर	(Gokhur)	Tribulus terrestris
६९	गोखुरु	(Gokhuru)	Tribulus terrestris
७०	गोरखकांकडी	(Gorakhkankadi)	Solena heterophylla

७१	गोरखमुण्डी	(Gorakhmundi)	Sphaeranthus indicus
७२	गोलकाँक्री	(Golkankri)	Solena heterophylla
७३	गोक्षुर	(Gokshur)	Tribulus terrestris
७४	गंदालना	(Gandalna)	Pleurospermum dentatum
७५	घिउ कुमारी	(Ghiukumari)	Aloe vera
७६	चना	(Chana)	Cicer arietinum
७७	चव्य	(Chabya)	Piper chaba
७८	चामल	(Chmal)	Oryza sativa
७९	चिता	(Chita)	Plumbago zeylanica
८०	चितु	(Chitu)	Plumbago zeylanica
८१	चिराइतो	(Chiraito)	Swertia chirayita
८२	चोबचीनी	(Chobchini)	Smilax lanceifolia
			Smilax ovalifolia
८३	चोया	(Choya)	Arundinaria falcata
८४	चौलानी	(Chaulani)	Amaranthus bilatus
			Amaranthus gangeticus
८५	छोहरा	(Chhohara)	Phoenix dactylifera
८६	जटामसी	(Jatamasi)	Nadostachys grandiflora
८७	जमालगोटा	(Jamalgota)	Croton tiglium
८८	जाइपत्री	(Jaipatri)	Myristica fragrans
८९	जाइफल	(Jaiphal)	Myristica fragrans
९०	जिरा	(Jira)	Cuminum cyminum
९१	जेठीमधु	(Jethimadhu)	Glycyrrhiza glabra
९२	जौ	(Jau)	Hordeum vulgare
९३	जंगली गोभी	(Jangaligobhi)	Brassica oleracea var. capitata
९४	टिमुर	(Timur)	Zanthoxylum armatum

९५	ठूलो हर्रो	(Thulo harro)	Terminalia chebula
९६	डुङ्गरे	(Dungare)	Ligularia sibirica
९७	डुम्री	(Dumri)	Ficus glomerata
९८	तज	(Taja)	Cinnamomum tamala
९९	तालिसपत्र	(Talispatra)	Abies spectabilis
			Taxus baccata
१००	तिल	(Til)	Sesamum indicum
१०१	तितेकरेला	(Tite karela)	Momordica charantia
१०२	तुम्बी	(Tumbi)	Diospyros melanoxylon
			Lagenaria siceraria
१०३	तुलसी	(Tulasi)	Ocimum sanctum
१०४	तेजपात	(Tejpat)	Cinnamomum tamala
१०५	तोरी	(Tori)	Brassica campestris
१०६	थोहर	(Thohar)	Euphorbia neriifolia
१०७	दशमूल	(Dashamul)	Eranthemum roseum
१०८	दाख	(Dakh)	Vitis venifera
१०९	दालचिनी	(Dalchini)	Cinnamomum zeylanicum
			Cinnamomum tamala
११०	दारुहल्दी	(Daruhaldi)	Berberis aristata
१११	धतुरो	(Dhaturo)	Datura stramonium
११२	धनियाँ	(Dhaniya)	Coriandrum sativum
११३	नरिवल	(Nariwal)	Cocos nucifera
११४	नागकेशर	(Nagleshar)	Mesua ferrea
११५	नागरमोथा	(Nagarmotha)	Cyperus scariosus
११६	नारंगी	(Narangi)	Citrus sinensis
११७	नीम	(Neem)	Azadirachta indica
११८	निर्गुण्डी	(Nirgundi)	Vitex nigundo

११९	निर्विसी	(Nirbishi) (Khaptad)	Cyananthus lobatus
१२०	निर्विसी	(Nirbishi) (Ayurveda)	Delphinium denudatum
१२१	निर्मली	(Nirmali)	Strychnos nux-vomica
	निशोथ	(Nisoth)	Operculina turpenthum
१२२	प्याज	(Pyaj)	Allium cepa
१२३	पदमचाल	(Padamchal)	Rheum australe
१२४	परवल	(Parwal)	Chrysanthes dioica
१२५	पत्रज	(Patraj)	Cinnamomum tamala
१२६	पान	(Pan)	Piper betle
१२७	पानीअमला	(Paniamala)	Nephrolepis cordifolia
१२८	पाषणभेद	(Pakhanbed)	Bergenia ciliata
१२९	पिंडालु	(Pindalu)	Colocasia esculenta
१३०	पिप्ला	(Pipla)	Piper longum
१३१	पिपरमेन्ट	(Piparment)	Mentha arvensis
			Mentha spicata
१३२	पीपल	(Peepal)	Ficus religiosa
१३३	पुदिना	(Pudina)	Mentha spicata
१३४	पुनर्नवा	(Punarnawa)	Boehraavia diffusa
१३५	पोस्तदाना	(Postadana)	Papaver rhoeas
१३६	बोझो	(Bacha)	Acorus calamus
१३७	बज्रदन्ती	(Bajradanti)	Potentilla fulgens
१३८	बदाम	(Badam)	Arachis hypogea
			Prunus amygdalus
१३९	बन्दाकोभी	(Bandakobhi)	Brassica oleracea var.capitata
१४०	बनगोभी	(Bangobhi)	Brassica oleracea var.capitata
१४१	बबुल	(Babul)	Acacia nilotica
१४२	बर	(Bar)	Ficus benghalensis

१४३ बहिदाना	(Bahidana)	Solanum nigrum
१४४ बालछड	(Balchhad)	Nardostachys grandiflora
१४५ विजयसाल	(Bijayasal)	Pterocarpus marsupium
१४६ विदारीकन्द	(Bidarikanda)	Euphoribia hirta
		Melanocenchris jacquemontii
१४७ बेडु	(Bedu)	Ficus palmata
१४८ बेल	(Bel)	Aegle marmelos
१४९ बेलगिरी	(Belgiri)	Aegle marmelos (Fruit pulp)
१५० बोझो	(Bojho)	Acorus calamus
१५१ बंग	(Banga)	Cannabis sativa
१५२ भाङ्ग	(Bhang)	Cannabis sativa
१५३ भिल्वा	(Bhilwa)	Aegle marmelos
१५४ भृङ्गीराज	(Bhringiraj)	Maharanga emodi (Khaptad)
		Eclipta prostrata
१५५ भूतकेशी	(Bhutkeshi)	Selinumtenuifolium
१५६ मटर	(Matar)	Pisum sativum
१५७ मनकादाख	(Manakadakha)	Ribes nigrum
१५८ ममिरी	(Mamiri)	Parnassia nubicola
१५९ मरीच	(Mareech)	Piper nigrum
१६० माजुमफल	(Majumphal)	Quercus infectoria
१६१ मालकांगुनी	(Malkanguni)	Celastrus paniculata
१६२ मास	(Mas)	Vigna mungo
१६३ मिठविष	(Mithabish)	Aconitum ferox
१६४ मुङ्ग	(Mung)	Vigna radiata
१६५ मुङ्गी	(Mungi)	Vigna radiata
१६६ मुण्डी	(Mundi)	Mitragyna parvifolia
		Sphaeranthus indicus

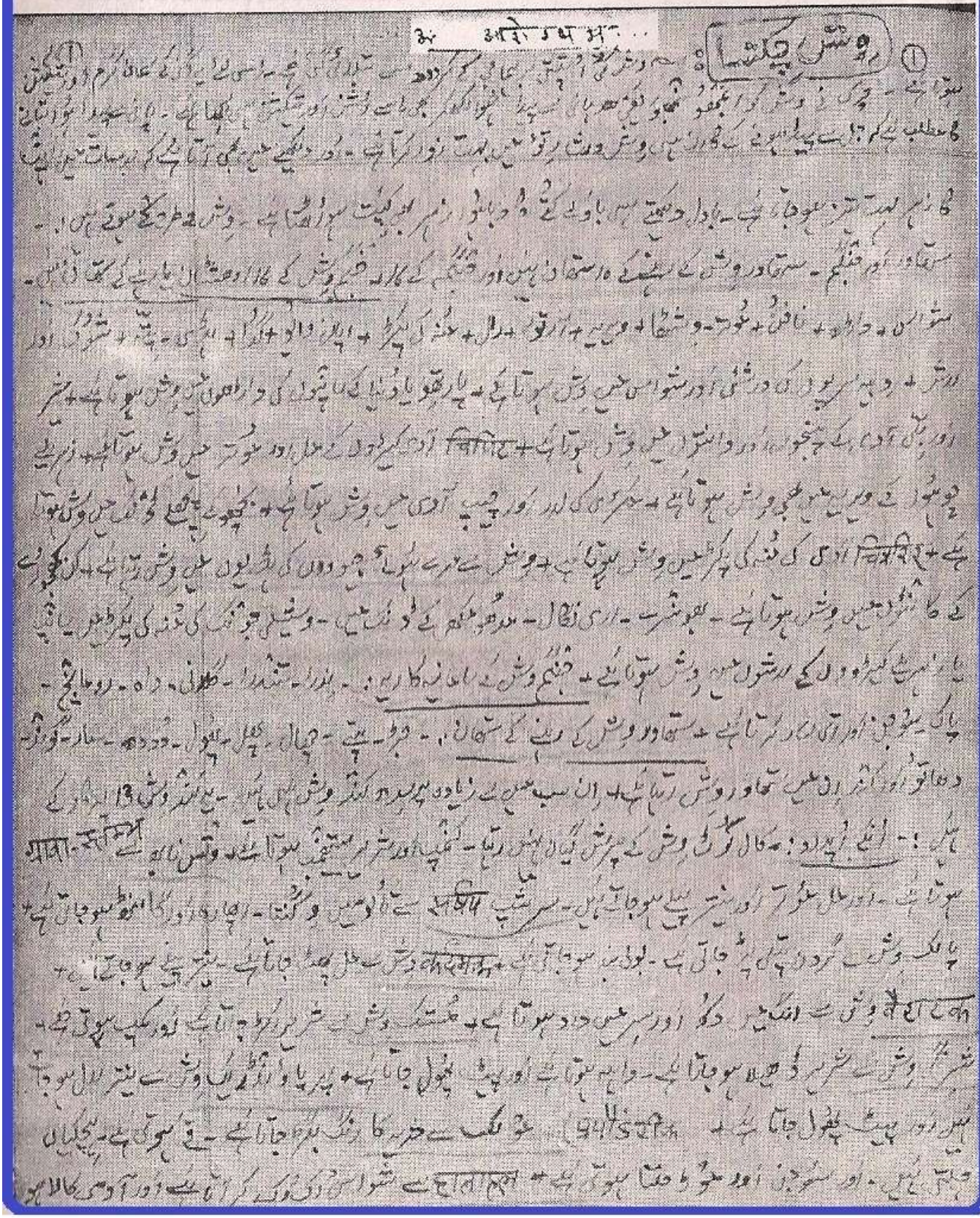
१६७	मुलहठी	(Mulhathi)	Glycyrrhiza glabra
१६८	मूला	(Mula)	Raphanus sativus
१६९	मुसुरो	(Musuro)	Lens culinaris
१७०	मेथी	(Methi)	Trigonella foenum-graecum
१७१	रतीगेडी	(Ratigedi)	Abrus precatorius
१७२	रसोत	(Rasot)	Berberis aristata
१७३	रामतोरियाँ	(Ramtoriyan)	Abelmoschus esculentus
१७४	रायो	(Rayo)	Brassica juncea
१७५	रिट्ठा	(Rittha)	Sapindus mukorossi
१७६	रुद्राक्ष	(Rudraksha)	Elaeocarpus sphaericus
१७७	ल्वाङ्ग	(Lwang)	Syzygium aromaticum
१७८	लसुन	(Lasun)	Allium sativum
१७९	लालचन्दन	(Lalchandan)	Pterocarpus santalinus
			Daphnephyllum himalense
१८०	लोध	(Lodh)	Symplocos racemosa
१८१	लौका	(Lauka)	Lagenaria siceraria
१८२	वच	(Bacha)	Acorus calamus
१८३	वनभाङ्ग	(Banbhang)	Cannabis sativa
१८४	बयर	(Bayar)	Zizyphus mauritiana
१८५	बर्रो	(Barro)	Terminalia bellirica
१८६	बाबरी	(Babari)	Mentha spicata
१८७	वायूविडंग	(Bayubidanga)	Embelia ribes
१८८	ब्राम्ही	(Bramhi)	Centella asiatica
१८९	बृहत्फल	(Brihatphal)	Lagenaria vulgaris
			Cucumis trigonus
१९०	बोझो	(Bojho)	Acorus calamus
१९१	वंशलोचन	(Bansalochan)	Bambusa arundinacea

१९२	शिरीष	(Siris)	Albezia lebbek
१९३	शिषम	(Sisam)	Dalbergia sissoo
१९४	शंखपुस्पी	(Sankhapushpi)	Evolvulus alsinoides
१९५	शंखाहुली	(Sankhahuli)	Indigofera linifolia
१९६	सतावरी	(Satawari)	Asparagus racemosus
१९७	सतुवा	(Satuwa)	Paris polyphylla
१९८	सनाई	(Sanai)	Crotalaria juncea
१९९	सनाइपति	(Sanaipatti)	Crotalaria juncea (Leaf)
२००	सर्पगन्धा	(Sarpagandha)	Rauvolfia serpentina
२०१	सर्सिउँ	(Sarasyun)	Brassica campestris var. sarson
२०२	सहदेवी	(Sahadevi)	Sida rhombifolia
२०३	सानो अलैंची	(Sano alainchi)	Elettaria cardamomum
२०४	साल	(Sal)	Shorea robusta
२०५	सानो कन्टकारी	(Sanokantakari)	Solanum xanthocarpum
२०६	सिंदुरे	(Sindure)	Mallotus philippensis
२०७	सिमल	(Simal)	Bombax ceiba
२०८	सिउंडी	(Siundi)	Euphorbia royleana
			Euphobia neriifplia
२०९	सुठो	(Sutho)	Zingiber officianale
२१०	सुनपाती	(Sunpati)	Rhododendron anthopogon
२११	सुप	(Sup)	Foeniculum vulgare
२१२	सुपारी	(Supari)	Areca catechu
२१३	सुर्ती	(Surti)	Nicotiana tabacum
२१४	सूर्यमुखी	(Suryamukhi)	Helianthus annuus
२१५	सेतो सिमल	(Setosimal)	Ceiba pentandra
२१६	हर्रो	(Harro)	Terminalia chebula
२१७	हरिद्र	(Haridra)	Curcuma domestica

२१८ हलेदो	(Haledo)	Curcuma domestica
२१९ हाथजोडी	(Hathajodi)	Dactylorhiz hatagirea (Khaptad)
		Martynia annua (Hindi)
२२० हिङ्ग	(Hinga)	Ferula assafoetida
२२१ त्रिफला	(Triphala)	Terminalia bellirica : Barro
		Terminalia chibula : Harro
		Phyllanthus emblica : Amala

परिशिष्ट-५

बाबाको स्वहस्तलिखित आरोग्य विज्ञानको उर्दू पाण्डुलिपिबाट उद्धृत गरिएको केही अंश



ब्रह्मज्ञानी परमपूज्य श्री १००८ खप्तडबाबा-तत्पूरुषका करकमल बाट पोखिएको अमृतको ग्रन्थहरुः-

१. विचार-विज्ञान
२. स्वास्थ्य-विज्ञान
३. धर्म-विज्ञान, प्रथम खण्ड
४. धर्म-विज्ञान, द्वितीय खण्ड
५. धर्म-विज्ञान, तृतीय खण्ड
६. धर्म-विज्ञान, चतुर्थ खण्ड
७. धर्म-विज्ञान, सार संक्षेप
८. म र मेरो कर्तव्य
९. नारी धर्म तथा पुरुष धर्म
१०. आत्मज्ञान
११. वेदान्त विज्ञान
१२. योग-विज्ञान
१३. The Science of Thought
१४. The Science of Yoga
१५. Essentials of Vedanta

खप्तड आश्रम प्रकाशन समितिक
वि.सं. २०५२।११।२०

